

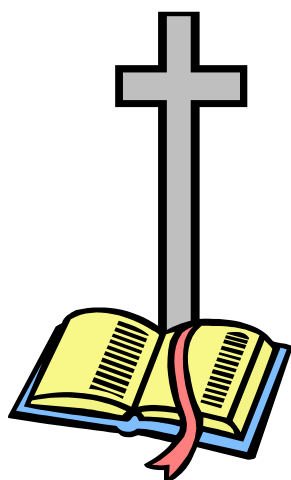
बाइबिल अवलोकन

1 कुरिन्थियों 10:11-12

ये बातें उनके साथ उदाहरण के रूप में हुई थी और हमारे लिए जिन पर युगों की पूर्ति का समय आ चुका है, चेतावनी के रूप में लिखी गई हैं।

2 तीमुथियुस 3:16-17

सारे पवित्र शास्त्र ईश्वर-श्वासित हैं और शिक्षण के लिए उपयोगी हैं, ताड़ना, सुधारना और धार्मिकता का प्रशिक्षण देना, ताकि परमेश्वर का भक्त हर एक अच्छे काम के लिए पूरी तरह से सुसज्जित हो।



इब्रानियों 4:12

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है। किसी भी दोधारी तलवार से तेज, यह यहां तक कि यह आत्मा और प्राण, जोड़ों और मींग को छेद कर विभाजित करता है ; यह दिल के रवैए और विचारों का न्याय करता है।

रेव. डॉ. जेरी शमोयेर

jerry@schmoyer.net

© 2014

बाइबिल अवलोकन

प्रस्तावना

परिचय

बाइबिल अवलोकन सारांशित

बाइबिल की किताबों के साथ बाइबिल अवलोकन कार्यक्रम

बाइबिल पुस्तकें और विषय

1. रचना

उत्पत्ति: शुरुआत

2. आदम और हव्वा

3. नूह और जलप्रलय

4. बाबेल

5. अब्राहाम

अयूब : पीड़ित

6. ईसहाक

7. याकूब

8. यूसुफ

9. मूसा

निर्गमन: छुटकारा

लैव्यवस्था: पवित्र जीवन

गिनती : विश्वास से चलना

व्यवस्थाविवरण: आज्ञाकारिता

10. यहोशू

यहोशू: विजय

11. शमूएल

न्यायीयों: हार और उद्धार

रूथ: रिश्तेदार -छुडानेवाला

12. शाऊल

1 शमूएल: अंदर देखो

13. दाऊद

2 शमूएल: पाप के प्रभाव

भजन सहिता : पूजा

14. सुलैमान

1 राजा: मूर्तिपूजा

सुलैमान का गीत: विवाहित प्रेम

नीतिवचन: बुद्धि

सभोपदेशक: खाली

15. विभाजन

2 राजा: न्याय

1 और 2 इतिहास: विश्वासयोग्यता

16. भविष्यदक्ता

ओबद्याह: प्रतिशोध

योएल: प्रभु का दिन

योना: आज्ञाकारिता

आमोस: जवाबदेही

होशे: वफादार प्यार

यशायाह: परमेश्वर उद्धार है

मीका: आशा

नहूम: न्याय

सपन्याह: प्रभु का दिन

हबक्कूक: धैर्य

17. अशशूर की कैद

18. बाबल की कैद

यिर्मयाह: अंतिम मौका

विलापगीत : दुः ख

19. दानिय्येल

दानिय्येल : संप्रभुता

यहेजकेल: महिमा

20. एज्रा (वापसी)

एज्रा: वापसी

एस्तेर: ईश्वरीय देखभाल

नहेमायाह: नवीनीकरण

हागै: प्राथमिकताएं

जकर्याह: इतिहास

मलाकी: पश्चाताप

21. 200 मौन वर्ष

22. यीशु

मत्ती: यीशु -राजा

मरकुस: यीशु -दास

लूका: यीशु -मनुष्य

यहुन्ना : यीशू -परमेश्वर

क- जन्म

ख- बपतिस्मा और परीक्षा

ग- चमत्कार

घ- चेले और शिक्षाएं

ङ- क्रूस पर चढ़ाया जाना

च- पुनरुत्थान

छ- स्वर्ग पर चढ़ना और वर्तमान

23. पतरस

प्रेरितों के काम : प्रारंभिक कलीसिया

याकूब: सच्चा विश्वास

1 पतरस: दुःख पीड़ा

2 पतरस: विश्वास बनाए रखें

24. पौलूस

पौलूस, पृष्ठभूमि

पहली मिशनरी यात्रा

यरूशलेम परिषद

गलातियों : मसीही स्वतंत्रता

दूसरी मिशनरी यात्रा

1 थिस्सलुनीकियों: फिर से आ रहा है

2. थिस्सलुनीकियों: जल्द ही आ रहा है

तीसरी मिशनरी यात्रा

1 कुरिन्थियों: सांसारिक ज्ञान

2 कुरिन्थियों: ईश्वरीय सेवकाई

रोमियों: उद्धार

रोम की यात्रा

इफिसियों: मसीह में

फिलिप्पियों: आनंद

कुलुस्सियों: मसीह सर्वोच्च है

फिलेमोन: मसीही सौजन्य

अंतिम यात्रा

1 तीमुथियुस: कलीसिया क्रम

तीतुस : रोजमर्याद का जीवन

2 तीमुथियुस: विश्वासयोग सेवा

प्रारंभिक कलीसिया

इब्रानियों: मसीह सर्वोच्च है

1 यहुन्ना : सभाग्यता

2 यहुन्ना : सत्य पर चलो

3 यहुन्ना : आतिथ्य

यहूदा: स्वधर्मत्याग

प्रकाशितवाक्य: भविष्यवाणी

25. कलीसिया

26. स्वर्गरोहण

27. क्लेश

और हज़ार वर्ष समय काल

निष्कर्ष

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी शमॉयर, डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उसने 1975 में थियोलॉजी में मास्टर डिग्री और 2006 में सेवकाई में डाक्टर डिग्री प्राप्त की है।

उसने 2016 तक 35 वर्षों तक यू.एस.ए. में एक चर्च पादरी के रूप में कार्य किया। वह मसीही प्रशिक्षण संगठन के संस्थापक हैं जहां वह विवाह, परिवार और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है, और सेवकों/पासबानों को परामर्श और सलाह देने में सक्रिय है। उसने 2006 से भारत में पादरियों की सेवा की है।

उसने 1979 से नैन्सी नाम की एक नर्स से शादी की है। वे अपने बहुत बड़े परिवार और कई पोते-पोतियों का आनंदमय जीवन जीता है।

उसके साथ Jerry@ChristianTrainingOrganization.org पर संपर्क किया जा सकता है।

प्रस्तावना

चौखटे। हम आमतौर पर उन्हें नहीं देखते हैं, लेकिन उनके बिना संरचनाएं गिर जाती हैं। इमारतों को एक ठोस ढांचे की जरूरत है। इसी प्रकार समूहों और संगठनों को भी ठोस ढांचों की जरूरत होती है। परमेश्वर ने हमारे शरीर को भी एक मजबूत ढांचे, हमारे कंकाल तंत्र के साथ बनाया है। क्या आप सोच सकते हैं कि अगर परमेश्वर ने हमारे शरीर में हड्डियाँ नहीं रखी होतीं तो हम कैसे होते? एक ढांचा स्थिरता और संरचना देता है।

ना केवल ढांचे आवश्यक हैं, वह प्राथमिकता में लिया जाना चाहिए ताकि अन्य चीजें उनके चारों ओर बनाई जा सकें और उनके द्वारा कायम रखी जा सकें। व्यवसायों और सरकारों के साथ-साथ घरों और दुकानों में भी एक आंतरिक संरचना को प्राथमिकता मिलनी चाहिए ताकि बाकी सब कुछ उसके उचित स्थान पर रखा जा सके।

ऐसा होने पर, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि परमेश्वर ने अपने वचन को संरचना दी है। उसने इसे एक ढांचे पर बनाया है जो इसे आकार देता है और इसे प्रवाह और दिशा देता है। दुर्भाग्य से कई मसीही लोग बाइबिल की संरचना को नहीं समझते हैं। वे एक भाग का अध्ययन करेंगे, लेकिन यह देखे बिना कि यह परमेश्वर की योजना के प्रवाह में कहाँ फिट बैठता है और इतिहास के अन्य समयों के साथ कैसे जुड़ा हुआ है, वे इसका पूरा अर्थ खो देते हैं। एक घर या इमारत का निर्माण करते समय, आप केवल सामने की दीवार का निर्माण नहीं करते हैं, बल्कि दरवाजे और खिड़कियों के साथ इसे पूरा करते हैं, और फिर जब यह पूरा हो जाता है तो दूसरी तरफ की दीवार पर काम शुरू करते हैं। एक अच्छा ठोस ढांचा जो पूरी संरचना को धारण कर सकता है, सबसे पहले उसका निर्माण किया जाना चाहिए, और फिर उसमें विवरण जोड़ा जाना चाहिए जब तक कि भवन पूरा नहीं हो जाता। बाइबल को समझने का भी वास्तव में यही एकमात्र तरीका है।

परमेश्वर के वचन को जानने और लागू करने के लिए पहले व्यक्ति को इसकी संरचना की पूरी समझ होनी चाहिए। समय गुजरने के साथ इसका विकास होता है और इसका प्रवाह बनता है। इतिहास के माध्यम से परमेश्वर की योजना कैसे प्रवाहित होती है, इसे सही ढंग से समझने के लिए हमें बाइबिल के इतिहास की रूपरेखा को जानना चाहिए। पवित्रशास्त्र के संदर्भ को जानने के लिए, पुस्तक के समग्र प्रवाह से शुरू करना, अत्यधिक महत्व है। केवल तभी एक व्यक्ति बाइबल की प्रत्येक पुस्तक के उद्देश्य को जान सकता है और यह यह जन सकता है कि यह बाकी पुस्तकों से कैसे संबंधित है। व्यक्तिगत अंशों को भी समझने का भी यही आधार है।

इस पुस्तक को लिखने की मेरी इच्छा है कि मैं आपको संपूर्ण बाइबल का एक अवलोकन, एक रूपरेखा पेश कर सकूँ। मुझे परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना अच्छा लगता है, लेकिन किसी भी किताब की तरह, मुझे पहले व्यक्तिगत रूप से लेखकों के उद्देश्य को समझना होगा। यह मेरी प्रार्थना है कि यह पुस्तक आपको उस सबसे अद्भुत पुस्तक को बेहतर ढंग से समझने और उसकी सराहना करने में मदद करेगी, वह पुस्तक जो अन्य सभी पुस्तकों से बड़ी है, परमेश्वर का वचन, हमारी बाइबल।

इस पुस्तक का उपयोग कैसे करे

इस पुस्तक को अपनी बाइबल के साथ पढ़ें। यह आपके बाइबल पढ़ने के विकल्प के रूप में नहीं है, बल्कि इसे बेहतर ढंग से समझने में आपकी मदद करने के तरीके के रूप में है। किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढें जिसे आप सिखा सकते हैं जो आप सीख रहे हैं। अपने बच्चों और परिवार, अपने मित्रों और अपनी कलीसिया पर सत्तों को प्रसारित करें। आप एक समय पर एक बाइबल शिक्षा क्लास कर सकते हैं। यदि आवश्यक हो तो आप प्रत्येक अवधि पर कई सत्र बना सकते हैं। याद करने के लिए सहायता के रूप में, फ्लैश कार्ड का उपयोग करें, जो इस पुस्तक का हिस्सा हैं। उनकी नियमित रूप से समीक्षा करें ताकि घटनाओं के प्रवाह को अच्छी तरह से जाना जा सके। यदि आप एक पास्टर हैं, तो आप प्रत्येक समयावधि में एक धर्मोपदेश का प्रचार कर सकते हैं, यह दिखाते हुए कि यह किस प्रकार से संबंधित है और कैसे उस पर निर्माण करता है जो इस से पहले था। आप प्रत्येक समय अवधि के दौरान एक मुख्य व्यक्ति को चुन सकते हैं और उसके जीवन का अध्ययन कर सकते हैं, और समय अवधि की व्याख्या करने के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं।

मैं आपको इस पुस्तक और अपनी बाइबल को पढ़ते समय नोट्स लिखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। आप बाद में उनको देख/पढ़ सकते हैं, यह याद करने के लिए कि परमेश्वर आपको क्या दिखा रहा था, आपने जो सीखा उसकी समीक्षा करें और उपदेशों के लिए बाइबिल अध्ययन की सामग्री खोजें। परमेश्वर का वचन परमेश्वर के बच्चों के लिए बुद्धि, प्रोत्साहन, ज्ञान और आराम का कभी न खत्म होने वाला स्रोत है।

इसे करने के कई तरीके हैं। एकमात्र जो गलत तरीका है वो है इसे बिल्कुल करना ही नहीं। हमें परमेश्वर के वचन पर भोजन करना है, क्योंकि यह हमारी आत्मा को पोषण देता है (यूहन्ना 21:15-17)। केवल इसी तरह से हम आत्मिक रूप से विकसित और परिपक्व हो सकते हैं (1 कुरिन्थियों 3:1-3)।

परिचय

संरचना के अस्तित्व और कार्य के लिए एक ढांचे का होना आवश्यक है। मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना की रूपरेखा, संरचना, रूपरेखा को देखने में मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ, जैसा कि उसके वचन में प्रकट किया गया है। किसी भी इमारत को लम्बी अविधि तक टिके रहने के लिए उसकी बुनियाद पक्की होनी चाहिए। जितनी बड़ी इमारत होगी, उतनी ही सुरक्षित /मजबूत उसकी बुनियाद भी होनी चाहिए। नींव का मतलब पूरा घर नहीं है, बस इसकी शुरुआती कार्य है, बल्कि एक अच्छी तरह से निर्मित नींव बाकी पूरी इमारत की सफलता की कुंजी है। बाइबल में पुराना नियम हमारी सारी समझ का आधार है जो हमें इसके बाद प्राप्त होती है। यीशु के जीवन और शेष बाइबल को ठीक से समझने के लिए सृष्टि के समय और यीशु के जन्म के दौरान जो कुछ हुआ उसकी एक ठोस जानकारी और समझ का होना बहुत महत्वपूर्ण है।



यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान वह ढांचा है जो पुराने नियम नाम की नींव पर निर्मित होता है। मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना को केवल उत्पत्ति से लेकर मलाकी तक के प्रकाश में ही ठीक से समझा जा सकता है। यीशु का जीवन किसी इमारत की संरचना/ढांचे की तरह है। यह उन मुख्य स्तंभों और बीमों को उनकी सही स्थिति में रखता है जो शेष निर्माण को बनाए रखेंगे। इसके बाद जो कुछ भी आता है वह इस ढांचे द्वारा समर्थित है। शेष नए नियम को समझने के लिए यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की सही समझ आवश्यक है।

जब हमें चारों सुसमाचारों की सही समझ हो जाती है तो हम शेष नए नियम की ओर बढ़ सकते हैं। प्रेरितों के काम से लेकर प्रकाशितवाक्य तक के कार्य यीशु नाम के ढांचे पर निर्मित होते हैं। दीवारें, खिड़कियां, दरवाजे और छत इमारत को तो पूरा कर देते हैं लेकिन यह अनदिखत आंतरिक ढांचे पर टिके होते हैं। इसलिए, यीशु की शिक्षाओं को शेष नए नियम में लागू किया जाता है और जीवन का आधार बनाया जाता है। वे जीवन में सुरक्षा और आनंद लाते हैं, जैसे कि दीवारें और छत एक इमारत के लिए लाते हैं। वे वह हिस्सा हैं जो बाहर के सभी लोगों द्वारा देखा जाता है। वे लोग नींव या ढांचे को नहीं देखते, केवल बाहरी दीवारें देखते हैं। इसलिए, जब लोग हमें देखते हैं तो वे देखते हैं कि हमारे दैनिक जीवन में मसीही जीवन जीया जा रहा है। हम उन्हें दिखाते हैं कि पुराने नियम की सच्चाइयों और सिद्धांतों पर निर्मित यीशु के ढांचे का परिणाम एक ऐसे जीवन में होता है जो परमेश्वर की महिमा करता है।

इस किताब में मैं चाहता हूँ कि आप बाइबल को, हाँ, पूरी बाइबल को समझें। हम नींव यानि, पुराने नियम के साथ आरंभ करेंगे। तब हम उस पर यीशु के जीवन और सुसमाचारों का निर्माण करेंगे। अंत में हम देखेंगे कि कैसे शेष नया नियम हमें दिखाता है कि कैसे यीशु में रहना है और उसे दुनिया के सामने कैसे प्रकट करना है।

यह एक रोमांचक यात्रा है, जो आपके समय और प्रयास के लायक है। इस जीवन में आप जो कुछ भी करते हैं वह एक दिन समाप्त हो जाएगा, लेकिन जो कुछ आप परमेश्वर और उसके वचन के बारे में सीखते हैं वह हमेशा के लिए अनंत काल तक बना रहेगा (यशायाह 40:8; 1 पतरस 1:25)। मैं जानता हूँ कि जब आप उसका वचन सीखेंगे, परमेश्वर आपको इस जीवन में और अनंत काल तक आशीष देगा।

बाइबल अवलोकन सारांशित

आपको बाइबल का सारांशित विवरण सिखाने का मेरा तरीका यह होगा कि इसे 27 खंडों में विभाजित किया जाए और प्रत्येक समयावधि का एक-एक करके अध्ययन किया जाए। इनमें से 21 पुराने नियम में और 6 नए नियम में हैं। नीचे आप को उनका परिचय देने के लिए एक सारांश दिया गया है।

शुरुआत में परमेश्वर ने आकाश, पृथ्वी, पेड़, जानवर और पानी बनाया। यह उसकी **रचना** थी। फिर उन्होंने **आदम और हवा** को बनाया। शैतान बगीचे में आया और हवा से झूठ बोला। पाप संसार में आया। पाप इतना बढ़ गया कि परमेश्वर ने **जलप्रलय** भेज दी। लोगों ने जलप्रलय सबक ना सीखा और **बाबल के मीनार** का निर्माण करने लगे, जहाँ परमेश्वर ने फिर से पाप का न्याय किया।

तब परमेश्वर ने एक व्यक्ति को एक राष्ट्र बनाने के लिए चुना जिसके माध्यम से वह दुनिया तक पहुंचने के लिए काम करेगा। **अब्राहाम** को चुना गया था। **इसहाक** नाम का उसका एक पुत्र था और इसहाक का एक पुत्र था जिसका नाम **याकूब** था। याकूब का पुत्र, **यूसुफ**, मिस्र ले जाया गया। आखिरकार उनका पूरा परिवार वहीं चला गया। वे 400 वर्षों तक बंधुआई में रहे। तब परमेश्वर ने उनको मिस्र की दासता से छुड़ाने के लिए **मूसा** नाम के एक मनुष्य को भेजा। **यहोशू** मूसा का उत्तराधिकारी बना और लोगों को वादे की धरती में ले गया।

फिर, 400 वर्षों तक, परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुवाई करने के लिए न्यायियों को भेजा। इनमें गिदोन, समसून और दबोरा जैसे लोग शामिल थे। अन्तिम न्यायी, जो अनेक भविष्यद्वक्ताओं में भी पहला था, उसका नाम **शमूएल** था। जब वह बूढ़ा हो गया तो लोगों ने उनके लिए एक राजा बनाने पर जोर दिया, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें **शाऊल** को उनका पहला राजा होने की अनुमति दी। शमूएल ने उसका भी और साथ ही उसके स्थान पर **दाऊद** का भी अभिषेक किया। तीसरा राजा दाऊद का पुत्र **सुलैमान** था। उसने परमेश्वर के हैकल का निर्माण किया, लेकिन उच्च करों और अन्य मुद्दों के कारण उत्तरी 10 जनजातियों ने विद्रोह कर दिया और राष्ट्र दो भागों में **विभाजित** हो गया। इस्राएल के उत्तरी 10 गोत्रों में अधर्मी राजाओं की एक श्रृंखला थी। दक्षिणी 2 जनजातियाँ, यहूदा भी बहुत बेहतर नहीं थीं। परमेश्वर ने **भविष्यद्वक्ताओं** को लोगों को चेतावनी देने के लिए भेजा कि वे उसकी ओर फिरे नहीं तो विनाश और कैद से पीड़ित होंगे। 250 वर्षों के बाद उत्तर **आशूर की बंधुआई** में चला गया। दक्षिण ने 150 साल बाद **बाबुल की कैद** में प्रवेश किया। बंदी बनाए गए लोगों में से एक **दानियेल** था।

यहूदा की 70 वर्षों की बंधुआई के बाद, परमेश्वर ने **एज्रा** को कुछ यहूदियों को देश में वापस ले जाने और हैकल का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी। बाद में **नहेमायाह** लोगों के एक और समूह को वापस ले आया और उन्होंने शहरपनाह का पुनर्निर्माण किया। यीशु के जन्म तक यहूदी **400 साल** तक वहाँ रहे।

यीशु के शिष्यों में से एक **पतरस** नाम का व्यक्ति था। वह यरूशलेम की आरंभिक कलीसिया में एक अगुवा बन गया। परमेश्वर ने **पौलूस** को अन्य देशों और लोगों के समूहों में अपना सुसमाचार फैलाने के लिए बुलाया। **कलीसिया** का विकास जारी रहा, और आज भी ऐसा ही होता है।

परमेश्वर के कार्यक्रम की अगली घटना **मेघारोहण** है, जब यीशु आकाश में लौटता है और अपने विश्वासियों को अपने साथ रहने के लिए स्वर्ग ले जाता है। उसके बाद सात साल का **क्लेश** पृथ्वी पर न्याय लाएगा। इसके बाद 1,000 साल का **सहस्राब्दी** और फिर **अनंत काल** आता है।

बाइबल की किताबों के साथ बाइबल की घटनाओं का अवलोकन

1. रचना - उत्पत्ति 1
2. आदम और हव्वा - उत्पत्ति 2-4
3. नूह और जलप्रलय - उत्पत्ति 5-10
4. बाबेल - उत्पत्ति 11
5. अब्राहाम - उत्पत्ति 12-25, अय्यूब
6. इसहाक - उत्पत्ति 21-28, 35
7. याकूब - उत्पत्ति 25-37, 46-50
8. यूसुफ - उत्पत्ति 37-50
9. मूसा - निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्या, व्यवस्थाविवरण
10. यहोशू - यहोशू
11. शमूएल - न्यायियों, रूथ
12. शाऊल - 1 शमूएल
13. दाऊद - 2 शमूएल, भजन संहिता
14. सुलैमान - 1 राजा, नीतिवचन, सभोपदेशक, सुलैमान का गीत
15. विभाजन - 2 राजा, 1 और 2 इतिहास
16. भविष्यवक्ताओं - उत्तर (इज़राइल) के लिए: होशे, आमोस,
- दक्षिण में एलियाह, एलीशा
(यहूदा) के लिए योएल, यशायाह, मीका, सपन्याह, हबक्कूक
- नीनवे (अश्शूर) के लिए: योना, नहूम
- एदोम के लिए: ओबद्याह
17. आशूर की कैद (उत्तर)
18. बेबुल की कैद (दक्षिण) - यिर्मयाह, विलाप
19. दानिय्येल - दानिय्येल, यहजकेल
20. एज्रा (वापसी) - एज्रा, हागै, जकर्याह, नहेमायाह, मलाकी, एस्तेर

21. 400 मौन वर्ष

22. यीशु - मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना

क- जन्म

ख - बपतिस्मा और प्रलोभन

ग - चमत्कार

घ - शिष्य और उपदेश

ङ- सूली पर चढ़ाया जाना

च- पुनरुत्थान

छ - स्वर्ग चढ़ना और वर्तमान

23. पतरस क- पतरस - प्रेरितों के काम 1-7; 1 और 2 पतरस

ख - फिलिप, पतरस , पौलूस - प्रेरितों के काम 8-12 (याकूब)

24. पौलूस - प्रेरितों के काम 13-28-, रोमियों से फिलेमोन तक

क- पौलूस, पृष्ठभूमि

ख - पहली मिशनरी यात्रा - प्रेरितों के काम 13-14

ग - यरूशलेम परिषद - प्रेरितों के काम 15 (गलातियों)

घ - दूसरी मिशनरी यात्रा - प्रेरितों के काम 16-18 (1, 2 थिस्सलुनीकियों)

ङ- तीसरी मिशनरी यात्रा - प्रेरितों के काम 19-20(1, 2 कुरिन्थियों, रोमन)

च - रोम की यात्रा - प्रेरितों के काम 21-28 (इफिसियों, कुलुस्सियों, फिलिप्पियों, फिलेमोन)

छ - अंतिम यात्राएं (1 तीमुथियुस, तीतुस, 2 तीमुथियुस)

ज - प्रारम्भिक कलीसिया (इब्रानियों, 1, 2, 3 जॉन, जूड, रहस्योद्घाटन)

25. कलीसिया

26. स्वर्गरोहण

27. क्लेश और सहस्राब्दी - क्लेश, सहस्राब्दी, अनंत काल

बाइबल की किताबें और विषय

उत्पत्ति	शुरुआत
निर्गमण	पाप मुक्ति
लैव्यव्यवस्था	पवित्र जीवन
गिनती	विश्वास से चलना
व्यवस्थाविवरण	आज्ञाकारिता
यहोशू	विजयी
न्यायियों	हार और उद्धार
रूथ	रिश्तेदार -छुड़ाने वाला
1 शमूएल	अन्दर देखना
2 शमूएल	पाप के प्रभाव
1 राजा	मूर्ति पूजा
2 राजा	प्रलय
1 इतिहास	विश्वासयोग्यता
2 इतिहास	विश्वासयोग्यता
एजरा	वापसी
नहेमायाह	नवीनीकरण
एस्तर	भविष्य की देखभाल
अयूब	कष्ट, दुःख
भजन संहिता	आराधना
नीतिवचन	बुद्धि
सभौपदेशक	परमेश्वर के बिना जीवन खाली है
सुलेमान का गीत	विवाहित प्रेम
यशायाह	परमेश्वर मुक्ति है
यिर्मयाह	अंतिम अवसर
विलापगीत	दुख, गम
यहेज्किएल	वैभव
दानियेल	संप्रभुता
होशे	वफादार प्यार
योएल	प्रभु का दिन
अमोस	जवाबदेही
ओबद्याह	प्रतिकार/कठोर सज़ा
योना	आज्ञाकारिता
मीका	आशा
नहूम	न्याय
हबक्कूक	धैर्य
सपन्याह	प्रभु का दिन

हागौ	प्राथमिकताए
जकर्याह	इतिहास
मलाकी	पचखाप
मत्ती	यीशु - राजा
मरकुस	यीशु - दास
लूका	यीशु - मनुष्य
यहुन्ना	यीशु - परमेश्वर
प्रेरितों के काम	प्रारम्भिक कलीसिया
रोमियों	मुक्ति
1 कुरिन्थियों	सांसारिक बुद्धि
2 कुरिन्थियों	एक ईश्वरीय सेवकाई
गलातियों	मसीही स्वतंत्रता
इफिसियों	मसीह में
फिलिप्पियों	हर्ष
कुलुस्सियों	मसीह सर्वोच्च है
1 थिस्सलुनीकियों	यीशु फिर आ रहा है
2 थिस्सलुनीकियों	यीशु जल्द आ रहा है
1 तीमुथियुस	कलीसिया का क्रम
2 तीमुथियुस	वफादार सेवा
तीतुस	रोजना जीवन
फिलेमोन	मसीही सौजन्य
इब्रानियों	मसीह सर्वोच्च है
याकूब	सच्चा भरोसा
1 पतरस	कष्ट, दुःख
2 पतरस	भरोसा रखें
1 यहुन्ना	सहभयता
2 यहुन्ना	सत्य में चलो
3 यहुन्ना	सत्कार
यहूदा	स्वधर्मत्याग
प्रकाशितवाक्य	भविष्यवाणी

बाइबिल अवलोकन -1

निर्माण



मुख्य घटना: संसार का निर्माण

मुख्य लोग: परमेश्वर

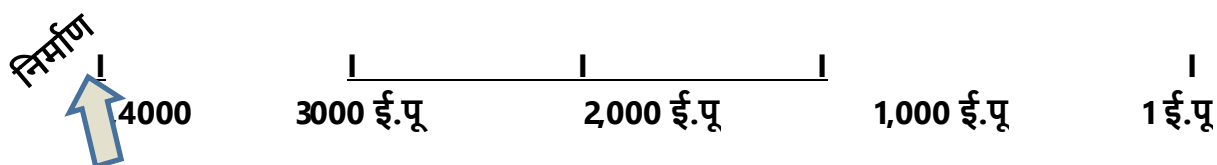
बाइबल की पुस्तकें: उत्पत्ति 1

बाइबिल आयत : उत्पत्ति 1:1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।

समय: 4,700 ई.पू

भौगोलिक स्थान: ब्रह्मांड

निर्माण



आइए हम शुरुआत से आरम्भ करें - उत्पत्ति 1 अध्याय- यह वह स्थान है जहाँ हम उस नींव को शुरू करते हैं जिस पर हम पूरी बाइबल से होते हुए निर्माण करेंगे। किसी भी पुस्तक का प्रारंभिक अध्याय महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह उसके लिए जो आगामी होता है उसके लिए मंच तैयार करता है। शेष पुस्तक को समझने के लिए पृष्ठभूमि की जानकारी महत्वपूर्ण है। पहले अध्याय को छोड़कर कहीं और शुरू करना हमेशा आश्चर्य का कारण बनता है कि कुछ तो खो गया है, जो कुछ भी बताया गया होता है पढ़ने वाले को कुछ पता नहीं चलता है। पहले अध्याय पर अधिक ध्यान देना महत्वपूर्ण है, फिर ही शेष पुस्तक अधिक समझ में आती है। बाइबल के साथ भी ऐसा ही है। उत्पत्ति, बाइबल का पहला 'अध्याय',

बहुत महत्वपूर्ण है। शेष पुस्तक पर जाने से पहले सुनिश्चित करें कि आप वास्तव में उत्पत्ति की पुस्तक को समझते हैं।

सब कुछ परमेश्वर से शुरू होता है। उत्पत्ति पहली आयत, परमेश्वर के साथ शुरू होती है। उत्पत्ति 1:1 परमेश्वर हमेशा से अस्तित्व में रहा है, जिसे हमारी सीमित समझ के साथ समझना हमारे लिए कठिन है। परमेश्वर कभी भी बाइबल में अपने अस्तित्व को समझाने या साबित करने का प्रयास नहीं करता है। हमारे आस-पास के संसार में पर्याप्त प्रमाण हैं क्योंकि प्रकृति स्वयं दिखाती है कि इसे अस्तित्व में लाने के लिए इसके आपने आप से और इसके बाहर भी कोई ना कोई बड़ी शक्ति होनी चाहिए (रोमियों 1:20; भजन संहिता 19:1-6)। जब हम अपने आस-पास की दुनिया में जटिल नमूने देखते हैं तो हम जानते हैं कि इसे इससे बड़े किसी व्यक्ति द्वारा तयार किया गया होगा। जब हम किसी घड़ी को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि इसे किसी ने डिजाइन किया होगा, क्योंकि कुछ इतना जटिल हो ही नहीं सकता था की आपने आप बन जाए। हमारे आसपास की दुनिया के बारे का भी यही सच है।

हम जानते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है क्योंकि हम उसे अपने आस-पास के संसार में देखते हैं, परन्तु हम यह भी जानते हैं कि वह अस्तित्व में है क्योंकि उसने हमारे दिलों में सही और गलत के बुनियादी मानकों को लिखा है (रोमियों 1:19, 32; 2:15; सभोपदेशक 3:11)। हमारे हृदयों में एक खाली स्थान है जिसे केवल परमेश्वर ही भर सकता है, और हम तब तक व्यर्थ खोजते हैं जब तक कि हम उसे अपने जीवन में उस स्थान को भरने की अनुमति नहीं देते। लोग परमेश्वर को इस कारण अस्वीकार नहीं करते क्योंकि उनके पास उसके अस्तित्व के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं, वे अस्वीकार इस लिए करते हैं क्योंकि वे खुद को उसे प्रस्तुत नहीं करना चाहते हैं और ब्रह्मांड के एक सच्चे ईश्वर के प्रति जवाबदेह नहीं होना चाहते हैं, जिसके पास उनको जवाबदेह ठहराने के पूर्ण मानक हैं।

बाइबल परमेश्वर के द्वारा परमेश्वर का एक स्पष्ट, अधिक विस्तृत प्रकाशन प्रदान करने के लिए दी गई थी। यह दुनिया के लिए ईश्वर की ओर से एकमात्र आधिकारिक, सच्चा और प्रेरित प्रकाशन है। यदि परमेश्वर ने स्वयं को और अपने सत्य को बाइबल में हमारे सामने प्रकट नहीं किया होता, तो हम उसे जानने और उसका अनुसरण करने में सक्षम नहीं होते। क्योंकि वह परमेश्वर है, वह एक ऐसी पुस्तक को प्रेरित करने में सक्षम है जो उसके बारे में बताती है। क्योंकि वह परमेश्वर है, वह सदियों सदियों से इसे सटीक रखने में सक्षम है। परमेश्वर स्वयं को बाइबल के माध्यम से प्रकट करना चाहता है। बाइबल कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जिसे मनुष्य यदि चाहता तो लिख सका होता, या यदि चाहे तो लिख सकता है। यह उन बहुत सी बातों के बारे में बात करता है जिनके बारे में मनुष्य कुछ नहीं जानता: सृष्टि, एक परमेश्वर, त्रिएकता, अनंत काल, स्वर्ग, नरक और भविष्य। विज्ञान और इतिहास के बारे में बाइबल की सभी बातें पूरी तरह सच साबित हुई हैं। सैकड़ों और सैकड़ों पूर्ण भविष्यवाणियाँ यह भी दिखाती हैं कि बाइबल अलौकिक है। कोई भी संभवतः इतनी अधिक और इतनी सटीक भविष्यवाणियाँ नहीं कर सकता था। इनमें से कोई भी कभी भी गलत या अधूरी नहीं रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बाइबल आज हमारे लिए परमेश्वर का प्रेरित प्रकाशन है।

बाइबल में परमेश्वर की व्याख्या नहीं की गई है, लेकिन उसकी महिमा पहली आयत से स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है। वह बस बोला और सारी **सृष्टि** अस्तित्व में आ गयी (उत्पत्ति 1), विशाल ब्रह्मांड से लेकर छोटी से छोटी गंध तक। उन्होंने दुनिया को हमारे लिए सुखद बनाने के लिए रंग और सुंदरता, गंध और स्वाद, संगीत और हंसी को इसमें जोड़ा। यह सब लगभग 7,000 साल पहले हुआ था। परमेश्वर ने सब कुछ 24-घंटे के 6 दिनों में बनाया और फिर उसने 7वें दिन विश्राम किया (उत्पत्ति 1:1-2:3)। परमेश्वर

को ऐसा करते हुए देखने वाला कोई नहीं था, पर उसने आदम को बाद में इसके बारे में बताया। आदम ने सेथ को बताया जिसने इसे मूसा जिसने शायद इसे लिखा था उसके आने तक आगे बढ़ाया।

नीचे उत्पत्ति की पुस्तक की रूपरेखा है, जो हमें सभ चीजों की शुरुआत के बारे में सिखाती है।

उत्पत्ति की रूपरेखा

I. बुनियादी घटनाएँ (मानव जाति) 1-11

क- निर्माण 1-2

ख- गिरना 3-4

ग- जल्परलय 5-9

घ- बाबेल 10-11

II. बुनियादी लोग (यहूदी जाति) 12-50

क- अब्राहाम 12-25:18

ख- इसहाक 25:19-26

ग- याकूब 27-36

घ- यूसुफ 37-50

अगले 2 पृष्ठ आपको उत्पत्ति की पुस्तक का अवलोकन प्रदान करेंगे। बाइबल की प्रत्येक पुस्तक के लिए इस तरह का एक पृष्ठ होगा ताकि आप स्वयं पुस्तक का एक छोटा सारांश पढ़ सकें।

उत्पत्ति शुरुआत



शीर्षक : "शुरुआत" के लिए ग्रीक

लेखक: मूसा

लेखन की तिथि: लगभग 1440 ई.पू

लेखन का स्थान: रेगिस्तान का जंगल

आच्छादित समय : निर्माण से 1804 ई.पू तक

प्राप्तकर्ता: यहूदी

संकेत वचन: और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी पर वार करेगा।" उत्पत्ति 3:15

मुख्य शब्द : "पीढ़ी" (19 बार)

उद्देश्य: सभी चीजों की शुरुआत दिखाने के लिए, विशेष रूप से इज़राइल।

विषय : सभ चीजों की उत्पत्ति।

कई साल पहले एलेक्स हेली नाम के एक शख्स ने "जड़ें" नाम की एक किताब लिखी जिसने पूरे देश का ध्यान खींच लिया था। यह उसकी पृष्ठभूमि की उसकी खोज के बारे में था, जहां से वह आया था। "जड़ें " एक उपयुक्त शीर्षक था। हम सभी को जड़ें चाहिए। यह जानने से कि हम कहां से आए हैं, हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि हम कहां हैं और किधर जा रहे हैं।

शुरुआत -मूसा ने एक पुस्तक लिखी जिसे "जड़" भी कहा जा सकता था। इसके बजाय इसे "उत्पत्ति" कहा जाता है। उत्पत्ति यूनानी शीर्षक है, जो यूनानी भाषा में पुस्तक के पहले शब्दों से लिया गया है: "शुरुआत में।" उत्पत्ति शुरुआत की एक किताब है। इसमें हम ब्रह्मांड की शुरुआत, जीवन, ईश्वर और ट्रिनिटी के प्रकाशन , अनुग्रह, मनुष्य, सब्ब, विवाह, घर, पाप, प्रलोभन, कबूलनामा , क्षमा, गर्व, शैतान, मसीह, चुनाव, भविष्यवाणी, विश्वास, न्याय को देखते हैं। , पीड़ा, हत्या, परिवार, आराधना, पुरस्कार, प्रार्थना, शाश्वत सुरक्षा, साक्षी, भण्डारीपन, मृत्युदंड, प्रेम, पाप प्रकृति, और भी बहुत कुछ। वस्तुतः हर चीज

की शुरुआत उत्पत्ति में होती है। एकमात्र जिसकी शुरुआत के बारे में नहीं बताया गया है, वह है परमेश्वर की शुरुआत, क्योंकि उसकी कोई शुरुआत है ही नहीं।

क्योंकि उत्पत्ति बहुत महत्वपूर्ण है, इस पर काफी भारी हमला किया जाता है। किसी भी किताब के सामने और पीछे के हिस्से सबसे ज्यादा घिसे पिटे होते हैं। इन पुष्ठों का सबसे अधिक दुरुपयोग होता है। बाइबल में का भी यही सच है। उत्पत्ति (सृष्टि) के पहले तीन अध्याय और प्रकाशितवाक्य के अंतिम तीन अध्याय (यीशु की वापसी और अनंत काल) का भी सबसे अधिक दुरुपयोग सहन करते हैं। वहीं शैतान हमला करता है। यदि वह उनमें से किसी एक को बदनाम कर सकता है तो बाकी पूरी किताब की सच्चाई को कम आंका जाता है।

एक में दो पुस्तकें- वास्तव में उत्पत्ति दो पुस्तकों की एक पुस्तक है। पहले 11 अध्याय ब्रह्मांड और पृथ्वी पर राष्ट्रों की शुरुआत के बारे में बात करते हैं। अध्याय 12 - 50 राष्ट्र इस्राएल से संबंधित है। 11 छोटे अध्यायों में 2300 साल के इतिहास को दर्ज किया गया है। हमारी दुनिया को आकार देने वाली प्रमुख घटनाओं को जल्दी से कवर किया जाता है: निर्माण, पतन, जलप्रलय और बबेल। शेष पुस्तक केवल 300 वर्षों को कवर करती है और चार पुरुषों पर केंद्रित है: अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ। पहले 11 अध्यायों में परमेश्वर उस चरण को निर्धारित करता है जिसे वह वास्तव में प्राप्त करना चाहता है: अब्राहम व इस्राएल की शुरुआत। यह एक ऐसी फिल्म देखने जैसा है जो दूर के एक गाँव के साथ ग्रामीण इलाकों के मनोरम दृश्य से शुरू होती है। सड़क पर चलने वाले एक आदमी पर ध्यान केंद्रित करने तक शहर पर ध्यान केंद्रित करते हुए, कैमरा इस सब पर पैन करता है। कैमरा फिर उस पर ज़ूम करता है और उसके सड़क पर और फिर एक घर तक में उसका पीछा करता है। कहानी धीमी हो जाती है और मनुष्य के जीवन में होने वाली घटनाओं का अनुसरण करती है। उत्पत्ति इस तरह से है। परमेश्वर उन सभी विवरणों को देने की कोशिश नहीं कर रहा है जो हम सृष्टि और पतन के बारे में चाहते हैं। वह बस इनके होने को रिकॉर्ड करता है जो हो रहा है फिर आगे बढ़ता है।

इतिहास और विज्ञान- उत्पत्ति में विज्ञान के बारे में बहुत कुछ है, और इसमें जो कुछ भी शामिल है वह सत्य है। हालाँकि, उत्पत्ति एक विज्ञान पुस्तक नहीं है क्योंकि यह विज्ञान के सभी क्षेत्रों को कवर करने या आने वाले सभी प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास नहीं करती है। इतिहास की भी यही सच्चाई है। उत्पत्ति में इतिहास के बारे में बहुत कुछ है, और इसमें जो कुछ भी शामिल है वह सत्य है। लेकिन यह इतिहास की किताब नहीं है, क्योंकि इसमें बहुत सारा इतिहास छूट जाता है। परमेश्वर का उद्देश्य विज्ञान या इतिहास का विस्तृत विवरण देना नहीं है, बल्कि अब्राहम और इस्राएल के लिए पृष्ठभूमि तैयार करना है। संपूर्ण बाइबल की तरह उत्पत्ति की पुस्तक का ध्यान छुटकारे पर है। उत्पत्ति 1 - 11 मनुष्य को छुटकारे की आवश्यकता को दर्शाता है, लेकिन 12 - 50 यीशु मसीह के व्यक्तित्व में इस्राएल के माध्यम से छुटकारे के परमेश्वर के प्रावधान की शुरुआत को दर्शाता है।

मूल रचना- आदि में ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। बाइबल में वास्तव में तीन पुस्तकें हैं जो "शुरुआत में" जैसे शब्दों से शुरू होती हैं। यूहन्ना 1:1 यीशु को किसी और चीज से पहले परमेश्वर होने के लिए संदर्भित करता है। उत्पत्ति 1:1 सृजित ब्रह्मांड की शुरुआत है, और 1 यूहन्ना 1:1 पृथ्वी पर यीशु के जीवन की शुरुआत है। ईब्रानी शब्द "सृजित" (बारा) ईश्वर को कुछ भी नहीं से कुछ बनाने के लिए संदर्भित करता है। पद 2 में एक भिन्न शब्द (आसा) का अर्थ है मौजूदा सामग्री से कुछ बनाना।

क्या अन्य ग्रहों पर जीवन है?- पृथ्वी को शेष आकाशमंडलों से अलग बताया गया है (भजन सहिता 115:16 भी देखें)। मेरा मानना है कि पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर हमारे जैसे जीवन है (जो परमेश्वर की छवि में हैं), क्योंकि व्यक्तित्व (मन, भावनाओं और इच्छा) के साथ बनाया गया कोई भी जीवन एक

स्वतंत्र इच्छा का मालिक होगा और इसलिए इसे पाप के लिए प्रयोग कर सकेगा (जैसे मनुष्य और गिरे हुए स्वर्गदूतों ने किया)। पूरे ब्रह्मांड में शैतान की पहुंच है और वह परमेश्वर द्वारा बनाई गई किसी भी चीज की परीक्षा लेगा। परमेश्वर ने केवल एक बार पाप के लिए मरने के लिए स्वर्ग छोड़ा, और यह इस पृथ्वी पर था। उसने हम में से जो इस पृथ्वी पर रहते हैं, उनके पापों को ले लिया। इसलिए ब्रह्मांड में किसी और के लिए कोई छुटकारा नहीं है। परमेश्वर ने विशाल ब्रह्मांड का निर्माण हमें यह दिखाने के लिए किया कि वह कितना महान हैं, ना कि बहुत सारे जीवन रूपों के लिए। यदि उसने अन्य जीवन की रचना की होती, तो उसे हमारी आवश्यकता नहीं होती जैसे वह करता है।

क्या निर्माण के दिन भूवैज्ञानिक युग थे?- कुछ लोगों ने यह कहकर विकासवाद और सृष्टि को समेटने का प्रयास किया है कि ईश्वर ने सृष्टि के 'दिनों' के लिए विकासवादी युगों का इस्तेमाल किया। यह ईब्रानी शब्द के लिए सही नहीं हो सकता है जिसका अनुवाद 'दिन' (योम) बाइबिल में लगभग 1300 बार किया गया है, जिनमें से 99% स्पष्ट रूप से 24 घंटे के दिन का उल्लेख करते हैं। कुछ का अर्थ जो लंबी अवधि (जैसे "परमेश्वर का दिन") को संदर्भित करता है, संदर्भ से स्पष्ट है। साथ ही बाइबल सृष्टि के दिनों को "सुबह और शाम" और "दिन और रात" के रूप में वर्णित करती है, 24 घंटे के दिनों का वर्णन करने के सामान्य तरीके। निर्गमन 20:8-11 में 'योम' का प्रयोग 6 बार किया गया है। दो निर्माण दिनों और 4 से 24 घंटे के दिनों को संदर्भित करते हैं। सब्ब सृजन विश्राम 'दिन' पर आधारित है। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यहां वर्णित सभी दिन दो पूरी तरह से अलग समय अवधियों को संदर्भित करने के बजाय एक ही लंबाई के हैं।

आप देखिए, सृष्टि के दिन संभवतः भूवैज्ञानिक युग नहीं हो सकते। केवल 3 दिनों का ही पृथ्वी पर कोई प्रभाव (3, 5, 6) था और 3 से अधिक भूवैज्ञानिक युग थे। साथ ही जिस तरह से परमेश्वर ने चीजों को बनाया और जिस तरह से विकास कहता है कि वे कैसे आगे बढ़े, इसका क्रम अक्सर बहुत अलग होता है (हम भविष्य के लेखों में इनके उदाहरण देखेंगे)। रोमियों 5:12 कहता है कि पाप से पहले कोई मृत्यु नहीं थी, तो मनुष्य से उन लाखों वर्षों के लिए सभी मृतक (और यहां तक कि विलुप्त) जानवरों का क्या हिसाब होगा?

टेरारियम प्रभाव- उत्पत्ति 1:6-8 "विस्तार" को चार बार संदर्भित करता है। यह पृथ्वी के चारों ओर एक छत्र है जो पूरी पृथ्वी पर टेरारियम जैसा प्रभाव पैदा करता है। इसने पृथ्वी को सूर्य के विकिरण से बचाया और हर जगह एक समान जलवायु का निर्माण किया। इस प्रकार वहां, डायनासोर की आबादी को जीवित रखने के लिए पर्याप्त वनस्पति थी। बारिश नहीं थी, यह आवश्यक नहीं था। सब कुछ वैसा ही रहा। जब भीषण जलप्रलय आई तो इस छत्र हटा दिया गया और इससे बनने वाला पानी धरती पर गिर पड़ा। इस प्रकार अंटार्कटिका में डायनासोर मुंह में उष्णकटिबंधीय वनस्पति लिए बर्फ में जमे हुए पाए गए हैं।

जड़ें- वैसे, आपकी जड़ें कहां हैं? मेरा मतलब शारीरिक रूप से नहीं है, मेरा मतलब आध्यात्मिक रूप से है। क्या आप अपनी जड़ें यीशु नाम जमीन पर गढ़ी हुई पते हैं? यही एकमात्र नींव है जो टिकेगी, जो धुलती नहीं है। सुनिश्चित करें कि आपकी जड़ें यीशु में मजबूत रूप से जुड़ी हुई हैं!

बाइबिल अवलोकन -2

आदम और हवा



मुख्य घटना: अदन में आदम और हवा

मुख्य लोग: आदम, हवा

बाइबल की पुस्तकें: उत्पत्ति 2-4

बाइबल आयत : उत्पत्ति 2:7 यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया, और वह मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।

समय: 4,700 ई. पू

भौगोलिक स्थान : अदन, संसार

आदम और
↑

4000

3000 ई.पू

2,000 ई.पू

1,000 ई.पू

1 ई.पू

दूसरी ऐतिहासिक घटना जिसको हम बाइबल केन्द्रों पर अपने अवलोकन में शामिल करेंगे वह है **आदम और हवा**। परमेश्वर ने पहले आदम को बनाया, फिर हवा को। उसने उन्हें अपनी छवि में सिद्ध रूप

और उसकी सेना ने मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना का विरोध करने के लिए हर संभव प्रयास किया और करना जारी रखा... परमेश्वर की अंततः शैतान पर विजय होगी। यह अदन में आदम और हव्वा को पहले से ही बताया गया था: "मैं तेरे और इस स्त्री के बीच, और तेरे वंश और इस की संतान के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी पर वार करेगा" (उत्पत्ति 3:15)। यह यीशु के बारे में पहली भविष्यवाणी है (यशायाह 7:14)।

बाइबल के हमारे अवलोकन में यह दूसरा चरण, जिसे आदम और हव्वा कहा जाता है, आदम और हव्वा को वाटिका से निकाले जाने के साथ समाप्त होता है (उत्पत्ति 3:22-24)। अपराधबोध, शर्म और भय मानव जाति में प्रवेश कर गया। अब पुरुष को जीविका के लिए जमीन पर काम करना होगा और महिला को प्रसव के दर्द के साथ-साथ अपने पति के अधिकार में भी रहना होगा। पाप भी पृथ्वी पर एक अभिशाप लाया। बीमारी और रोग फैलने लगे। परमेश्वर का अनुग्रह इस बात में देखा जाता है कि उसने आदम और हव्वा को अदन से हटा दिया, जहां वे हमेशा के लिए पाप और उससे अलग होकर रहते।

जब आदम ने परमेश्वर की अवज्ञा की तो **आध्यात्मिक मृत्यु** और शारीरिक मृत्यु भी मानव जाति में प्रवेश कर गई। आदम और हव्वा के बाद पैदा हुए सभी मनुष्य पाप की प्रवृत्ति के साथ पैदा हुए हैं, एक पाप स्वभाव के साथ (मत्ती 15:19)। परमेश्वर ने मनुष्य से अपनी भौतिक उपस्थिति वापस ले ली क्योंकि पाप ने उनके बीच एक बाधा डाल दी थी। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह एक छुड़ाने वाले की उसकी प्रतिज्ञा (उत्पत्ति 3:15) में, उन्हें ढकने के लिए जानवरों की खाल के कोट बनाने में, उन्हें शारीरिक रूप से अधिक समय तक जीने और तुरंत ना मरने की अनुमति देने में, उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने और उन्हें जीवन के वृक्ष से अलग करने में देखा जाता है। हमेशा के लिए जीना एक आशीर्वाद नहीं होगा, क्योंकि इसका मतलब यह होता कि मनुष्य एक पापी दुनिया में फंस जाता और परमेश्वर से अलग हो जाता। मृत्यु भेजने में ईश्वर की कृपा दिखाई देती है ताकि मनुष्य फिर से अनंत काल के लिए उसके साथ फिर से जुड़ सके।

हमारे बाइबल अवलोकन के इस भाग में उद्धार का **एक सुंदर चित्र** है। यह दिखाता है कि मनुष्य पापी है (उत्पत्ति 3:6) और वह अपने स्वयं के पाप को ढक नहीं सकता (उत्पत्ति 3:7; इफिसियों 2:8-9)। वास्तव में, मनुष्य पाप में असहाय है और परमेश्वर से अलग है (उत्पत्ति 3:8-13)। पाप दण्ड लाता है (उत्पत्ति 3:14-19; रोमियों 6:23)। मनुष्य ईश्वर से भागता है। यह परमेश्वर है जो मनुष्य को प्रेम और दया दिखाने के लिए खोजता है (उत्पत्ति 3:8)। केवल वही पाप और शैतान पर विजय प्राप्त कर सकता है (उत्पत्ति 3:15)। इस विजय प्राप्ति के लिए भुगतान निर्दोष लहू बहाने के द्वारा किया जाता है (उत्पत्ति 3:31; 4:3-5)। यह पहली मृत्यु या पीड़ा है, और यह एक निर्दोष जानवर द्वारा यह दिखाने के लिए है कि मनुष्य के पाप को ढकने के लिए क्या आवश्यक है। वास्तव में यह ट्रिनिटी का दूसरा व्यक्ति था (आपने जन्म से पहले यीशु) जो अदन में मनुष्य के साथ था। किसी ने कभी भी पिता परमेश्वर को नहीं देखा है (यूहन्ना 6:46) और पवित्र आत्मा कभी भी मूर्त रूप नहीं लेता बल्कि यीशु के प्रति ध्यान आकर्षित करने का कार्य करता है। इस प्रकार पहला निर्दोष लहू बहाया गया, जो यह जानता था कि यह पाप के लिए क्रूस पर उसकी आने वाली मृत्यु का पूर्वाभास देता है। यह कैसा प्यार और प्रतिबद्धता को दिखाता है! उसने यह सब किया (रोमियों 8:12-21), हमें केवल इस मुफ्त उपहार को स्वीकार करना चाहिए (इफिसियों 2:8-9)। हमें अपने पाप के लिए परमेश्वर या दूसरों को दोष नहीं देना है (उत्पत्ति 3:12-13) लेकिन इसे स्वतंत्र रूप से स्वीकार करना है (1 यूहन्ना 1:9)। जैसे आदम और हव्वा ने यीशु को उस के द्वारा प्रदान की गई जानवरों की खाल पहनाने की अनुमति दी, हमें भी, उसे हमें उसकी धार्मिकता से ढकने की अनुमति देनी चाहिए। पाप के लिए हमारा वस्त्र अंजीर के पत्तों से भी बुरा है; यह गंदे चिथड़े हैं (यशायाह 64:6)। वही प्यार करने वाला, क्षमा करने वाला परमेश्वर जो आदम और हव्वा को उनके पापों में ढूंढ़ने आया था, हमारे

यहां हमें दूढ़ता है (प्रकाशितवाक्य 3:20)। क्या आप उसका स्वागत करेंगे और अपने पाप के लिए उस आवरण को स्वीकार करेंगे जो वह और केवल वह ही प्रदान करता है? उसके प्रस्ताव को ना टालें। उसके मुफ्त उपहार को अस्वीकार ना करें। उसे अभी स्वीकार करो।

बाइबिल अवलोकन-3

नूह और जलप्रलय



मुख्य घटना: संसार भर में जलप्रलय

मुख्य लोग: नूह और उसका परिवार

बाइबल की पुस्तकें: उत्पत्ति 5-10

बाइबल आयत : उत्पत्ति 6:8-10 परन्तु नूह ने यहोवा की दृष्टि में अनुग्रह पाया। .. नूह अपने समय के लोगों में धर्मी और निर्दोष था, और वह परमेश्वर के साथ चलता था।

समय: 3,000 ई. पू.

भौगोलिक स्थान: विश्व, पर्वत अरारात

जलप्रलय

4000 ई .पू 3000 ई .पू 2000 ई .पू 1000 ई. पू 1 ई .पू

बाइबल के हमारे अवलोकन में यह तीसरी समयावधि है। यह आदम और हव्वा के अदन को छोड़ने के साथ शुरू होता है (उत्पत्ति 3:22-24) और जलप्रलय के अंत के साथ समाप्त होता है (उत्पत्ति 8:14)। इस दौरान इंसान पर जीवित रहने के लिए जमीन पर काम करने की जिम्मेदारी आ जाती है। महिलाओं को प्रसव में पीड़ा होती है और पत्नियां अपने पति के अधिकार के अधीन होंगी।



अदन के पतन से लेकर नूह के दिनों में जलप्रलय तक लगभग 2,000 वर्ष बीत गए। यह लगभग 3000 ईसा पूर्व था जब परमेश्वर का धैर्य समाप्त हो गया था और यह जलप्रलय के रूप में न्याय आने का समय था।

मानवजाति परमेश्वर की आज्ञा मानने में विफल रही थी। जन्म लेने वाले पहले व्यक्ति, कैन ने अपने ही भाई हाबिल की हत्या कर दी। लोगों ने तब तक पाप करना जारी रखा जब तक कि परमेश्वर ने नूह के दिनों में दुनिया का न्याय करने के लिए दुनिया भर में बड़ी जलप्रलय नहीं भेजी। फिर भी, उसका अनुग्रह इस रूप में देखा गया कि उसने उन सभी के लिए उद्धार का मार्ग प्रदान किया जो उस पर अपना विश्वास रखेंगे। उसने नूह और उसके परिवार को जलप्रलय के दौरान जहाज में सुरक्षित रखा। हमेशा एक न एक वफादार अल्पसंख्यक, एक अवशेष होता ही था, जो परमेश्वर के प्रति सच्चा बना रहता था।

नूह से मिलें

नूह को इसलिए बचाया गया क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी और वह उसकी दृष्टि में धर्मी था (उत्पत्ति 6:9; 7:1)। परमेश्वर ने उसे 520 फीट (170 मीटर) लंबी, 45 फीट (15 मीटर) चौड़ी और 75 फीट (25 मीटर) ऊंची एक बड़ी किशती बनाने के लिए कहा। इस बड़े कंटेनर में 600 रेलरोड कारें भरी जा सकती हैं। इसे बनने में 120 साल लगे। जब यह बनकर तैयार हुआ तब नूह 600 वर्ष का था। नूह, उसकी पत्नी, उसके तीन पुत्र (शेम, हाम और येपेत) और उनकी पत्नियाँ सब किशती में चले गए। वे प्रत्येक अशुद्ध पशु में से दो और शुद्ध पशु के सात जोड़े अपने साथ ले गए (उत्पत्ति 7:2)। तब परमेश्वर ने पापी मनुष्य को नष्ट करने के लिए एक विश्वव्यापी जलप्रलय भेजा लेकिन नूह और उसका परिवार जहाज में सुरक्षित थे। परमेश्वर अपने लोगों का न्याय नहीं करता, हम दण्ड से सुरक्षित हैं (रोमियों 8:1)।

40 दिनों तक बारिश हुई और उसके बाद पूरे एक साल तक पृथ्वी पानी से ढकी रही। पानी एक मील गहरा था। यह इस समय के दौरान था कि पृथ्वी को महाद्वीपों में सुधार किया गया था जैसा कि वे आज हैं। नमी की छतरी जो पृथ्वी के चारों ओर एक टेरायियम की तरह बना रहती थी, गायब हो गई जब उसका सारा पानी पृथ्वी पर आ गया, इसलिए मनुष्य और पशु पर जो उसकी सुरक्षा थी समाप्त हो गई। उस

समय लोग 950 वर्ष तक जीवित रहते थे, कभी-कभी इससे भी अधिक। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवीय टोपियां जम गईं। उष्ण कटिबंधीय जलवायु के बिना हर जगह वनस्पति उतनी तेजी से ना बढ़ी जितनी जलप्रल से पहले थी। इसलिए डायनासोर जैसे बड़े जानवरों के पास खाने के लिए पर्याप्त नहीं था और वे जल्द ही विलुप्त हो गए।

जलप्रल के बाद परमेश्वर ने अपने इन्द्रधनुष को आकाश में इस प्रतिज्ञा के रूप में रखा कि वह फिर कभी पूरी दुनिया का जलप्रल से न्याय नहीं करेगा। नूह ने परमेश्वर को लहू की बलि चढ़ाकर अपना आभार प्रकट किया। वह जलप्रल के 350 साल बाद तक जीवित रहा। पुराने नियम में यह तीसरी विशिष्ट समयावधि थी।

बाइबिल अवलोकन-4

बाबेल



मुख्य घटना: बाबेल की मीनार

मुख्य लोग: निम्रोद

बाइबिल की पुस्तकें: उत्पत्ति 11

बाइबिल आयत : उत्पत्ति 11:4 तब उन्होंने कहा, "आओ, हम अपने लिए एक नगर बनाएँ, जिसका एक मीनार आकाश तक पहुँचे, कि हम अपना नाम करें, और सारी पृथ्वी पर बिखर ना जाएँ।।"

समय: 2,600 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएं:

सिंधु घाटी कोट दुनी, फिर परिपक्व हड़प्पा द्रविड़ सभ्यता का दक्षिण भारत में शुरू होना।

चीन साम्राज्य का गठन

सुमेरिया में फनआकार लेखन

मिस्र पुराना साम्राज्य

माया संस्कृति की शुरुआत

मिस्र में बना महान पिरामिड

भौगोलिक स्थान: बाबेल

जलप्रल

बेबल

4,000 ई.पू 3,000 ई.पू 2,000 ई.पू 1,000 ई.पू 1 ई.पू



पुराने नियम की चौथी बड़ी घटना बाबेल की मीनार पर केंद्रित है। यह अवधि नूह और उसके परिवार के द्वारा जहाज छोड़ने के साथ शुरू होती है (उत्पत्ति 8:15) और अब्राम के लिए परमेश्वर की बुलाहट के साथ समाप्त होती है (उत्पत्ति 11:32; 12:1)। परमेश्वर ने नूह के साथ जो वाचा बाँधी थी, उसका पालन करने के लिए मनुष्य जिम्मेदार था। उसे पृथ्वी को अपने अधीन करना था। परमेश्वर ने अब कहा कि मानव जाति मांस खा सकता है (लेकिन उसमें खून नहीं) और मौत की सजा का प्रयोग कर सकता है। हालांकि, फिर से आदमी असफल रहा। उनके विद्रोह और अवज्ञा की परिणति बाबेल के मीनार के निर्माण के साथ हुई। परमेश्वर ने उनकी भाषा बदलने और लोगों को तितर-बितर करने के द्वारा उनकी अवज्ञा का न्याय किया, लेकिन उसने भाषाओं के अनुवाद के लिए अनुमति दी ताकि लोग इसके बाद भी एक दूसरे के साथ संवाद कर सकें।

निमरोद से मिलें

जलप्रल के बाद निमरोद ऐसा पहले व्यक्ति हैं जिसको नाम से ज्यादा भी कुछ दिया गया है। उसके नाम का अर्थ है "विद्रोह करना।" परमेश्वर कहता है कि वह "पृथ्वी पर बहुबली" है (उत्पत्ति 10:8)। अपने अभिमान और आत्म-इच्छा के द्वारा उसने खुद को दूसरों पर श्रेष्ठता की स्थिति पाने के लिए जोर दिया। उसे "यहोवा के साम्हने पराक्रमी शिकारी" भी कहा जाता है (उत्पत्ति 10:9)। "साम्हने" का अर्थ है "विरोध में" और परमेश्वर के खिलाफ उसके विद्रोह को दर्शाता है। उसने साहसपूर्वक परमेश्वर के अधिकार की अवहेलना करने की पहल की। वह पुरुषों का शिकारी बन गया, खेल के लिए पुरुषों को दूढ़ना और उन्हें मारना! सत्ता की उसकी लालसा उसे इंसान से ज्यादा जंगली जानवर जैसा बनाती है। उसके पास लोग थे जो परमेश्वर की नहीं बल्कि उसकी पूजा करते थे। वह अमानवीय, अत्याचारी, क्रूर और ईश्वर विरोधी था। उसने दो महान सभ्यताओं की स्थापना की: बाबुल और नीनवे (उत्पत्ति 10:10-12)। इन दोनों ने तत्कालीन ज्ञात संसार पर सैकड़ों और सैकड़ों वर्षों तक शासन किया। निमरोद का उद्देश्य सभी को बिखरने से बचाने का यह था कि वे रह सकें अपने शासक के रूप में उसकी पूजा कर सकें।

सच में निमरोद मसीह विरोधी की तस्वीर है जो दुनिया को उसी तरह एक कर देगा। उसके दोनों नामों का अर्थ "विद्रोही और अधर्मी" है (2 थिस्सलुनीकियों 2:8)। दोनों में से प्रत्येक का मतलब था एक हत्यारा (भजन सहिता 5:6), एक विश्व शासक राजा (दानियेल 11:36), ने बेबुल की शुरुआत की या उसका नेतृत्व किया (यशायाह 14:4; प्रकाशितवाक्य 17:3-5), बहुबली था (2 थिस्सलुनीकियों 2:9), और घमण्ड से प्रेरित था (2 थिस्सलुनीकियों 2:4)। परमेश्वर के अधिकार को हड़पने का प्रत्येक प्रयास न्याय के साथ

समाप्त होगा। प्रकाशितवाक्य 17 और 18 यहाँ तक कि इस साम्राज्य को मसीह-विरोधी का 'बाबुल' भी कहते हैं।

निमरोद के समय तक संसार में एक ही भाषा बोली जाती थी (उत्पत्ति 11:1), जिसे आदम ने अपनी रचना के समय तुरन्त जान लिया था और वैसे ही हवा ने जन लिया। भाषा विशेषज्ञ आज कहते हैं कि सभी भाषाओं का पता एक मूल भाषा से लगाया जा सकता है। निमरोद ने इसका लाभ उठाते हुए सभी को एक साथ रहने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे अपनी सभ्यता के केंद्रीय केंद्र के रूप में एक महान मंदिर का निर्माण कर सकें, ताकि एक साथ वे अधिक पूरा कर सकें, उससे अधिक यदि वे सभी अलग-अलग दिशाओं में जाते हैं जैसा कि परमेश्वर ने आदेश दिया था (उत्पत्ति 1:28; 9):1)। उन्हें परमेश्वर के बजाय एक-दूसरे पर और विशेष रूप से निमरोद पर निर्भर रहना था। उपासना का मुख्य स्थान "आकाश तक पहुँचनेवाले मीनार" से बनाया जाना था। मूल इब्रानी यह नहीं कहता है कि वे इसे इतना लंबा बनाने की कोशिश कर रहे थे कि परमेश्वर को छू सके, बस यह कि इसके शीर्ष का संबंध स्वर्ग से था। एक अधिक प्रशंसनीय व्याख्या यह है कि उन्होंने सूर्य, चंद्रमा और सितारों की पूजा करने के लिए शीर्ष पर एक मंदिर बनाया। निमरोद ने परमेश्वर के उद्धार की योजना को तारों में गुमराह कर दिया ताकि यीशु के बजाय उसके स्वयं पर ध्यान केन्द्रित कर दिया जा सके। पुरातत्वविदों को इस प्रकार के कई मंदिर मिले हैं, जिन्हें जिगुरातस कहा जाता है, जो सभी स्वर्ग की पूजा पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। यह ज्योतिष की शुरुआत है। यही कारण है कि परमेश्वर ने उनकी भाषाओं को बदल दिया और उन्हें बिखेर दिया: इसलिए नहीं कि वे एक ऊँची इमारत बनाना चाहते थे, बल्कि इसलिए कि वे परमेश्वर के बजाय शैतान के सिर पर एक संयुक्त दुनिया बनाने के लिए उसके सुसमाचार के संदेश को विकृत कर रहे थे। यही कारण है कि उसने इसका इतनी गंभीरता से न्याय किया (उत्पत्ति 11:5-9), और ऐसा क्लेश के दौरान फिर से होगा।

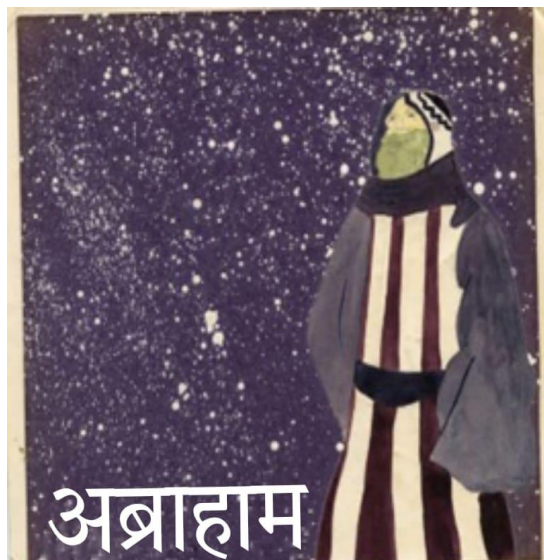
इस समय ऐसा लगता है कि पृथ्वी पर लगभग 70 परिवार खण्ड थे (लगभग 800 से 1,000 लोग) थे। ये उत्पत्ति 10 में सूचीबद्ध 70 राष्ट्र बन गए। जो शेम के वंशज थे वे मुख्य रूप से मध्य एशिया में बस गए और यहूदी, अशूरी, फारसी, अरब, कसदी, भारतीय, चीनी और अंततः अमेरिकी भारतीय बन गए। हाम के वंशज अफ्रीका और मिस्र में बस गए और नीग्रो, मिस्र, कनानी और हिती बन गए। येपेथ के वंशज मुख्य रूप से यूरोप में बस गए और यूनानी, रोमन, ट्यूटन, एंग्लो-सैक्सन और यूरोपीय बन गए।

क्या इसका मतलब यह है कि हमारे पास माप, पैसा, यहां तक कि भाषा का एक विश्व मानक नहीं होना चाहिए? इस हद तक कि ये ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं जिसका उपयोग शैतान परमेश्वर के बजाय स्वयं पर ध्यान आकर्षित करने के लिए कर सकता है, वे गलत हैं। इस हद तक कि उन्होंने मसीह-विरोधी के लिए चीजों को स्थापित किया ताकि वे आ सकें और अपना एक विश्व साम्राज्य स्थापित कर सकें, वे गलत हैं। जिस हद तक हम ईश्वर के बजाय मनुष्य और उसके समाधानों पर भरोसा करते हैं, वे गलत हैं। कुछ ऐसा भी जो अभी करता है या संभावित रूप से परमेश्वर से ध्यान हटा सकता है वह गलत है। उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए और सबसे ऊपर उसकी पूजा की जानी चाहिए। प्रथम स्थान उसी का ही है। प्रधानता उसी ही की होनी चाहिए। उसके पवित्र नाम को मुबारक कहें !

हालाँकि, परमेश्वर मनुष्य को नहीं त्यागता है। वह अब एक आदमी, अब्राहाम और उससे आने वाले यहूदी राष्ट्र के माध्यम से मानव जाति तक पहुँचने की कोशिश करता है।

अवलोकन -5

अब्राहाम



मुख्य घटना : अब्राहाम , ऊर से फ़िलिस्तीन

मुख्य लोग: अब्राहम, सारह (अय्यूब)

बाइबल की किताबें: उत्पत्ति 12-25 (अय्यूब)

बाइबल आयत : उत्पत्ति 15:6 अब्राहाम ने यहोवा की प्रतीति की, और उसने इसे उसकी धार्मिकता के रूप में दर्ज किया।

समय: 2,200 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएं: चीन XI राजवंश शासन

सिंधु घाटी सभ्यता अपने चरम पर

भौगोलिक स्थान: ऊर, फ़िलिस्तीन

बाबेल

	जलप्रल	अब्राहाम		
4000 ई.पू	3000 ई .पू	2000 ई .पू	2000 ई .पू	1 ई .पू



अब्राहाम (जिसे बाद में अब्राहाम कहा गया) को परमेश्वर की बुलाहट मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार के एक नए चरण की शुरुआत करती है (उत्पत्ति 12:1)। अब्राहाम का जन्म आदम के करीब 4500 साल बाद और यीशु से करीब 2200 साल पहले हुआ था। उसका जन्म बाबेल की मीनार के लगभग 400 साल बाद हुआ था। उसकी कहानी उत्पत्ति 12 में शुरू होती है। यह हमारी पाँचवीं समयावधि है जब हम बाइबल के इतिहास की यात्रा करते हैं। परमेश्वर सारी मानवजाति तक पहुँचने की कोशिश करने के बजाय अब वह अपना ध्यान एक व्यक्ति पर केंद्रित करता है जिसके द्वारा वह एक राष्ट्र, इस्राएल के लोगों को शुरू करेगा। उनके माध्यम से वह उनके उदाहरण के द्वारा और उन्हें अपना वचन, बाइबल देकर शेष दुनिया तक पहुंचना चाहता है। वह अपने वादा किए मसीहा को भी इस जाति के द्वारा भेजेगा

(उत्पत्ति 3:15)। पुराने नियम की हमारी नींव को विकसित करने के लिए हमें यह समझना जरूरी है। यहूदी अभी भी परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं और एक दिन फिर से प्रमुखता के लिए बहाल किए जाएंगे।

हमारे बाइबल अवलोकन में पहली चार घटनाओं में 2,000 वर्ष शामिल हैं। उत्पत्ति के केवल 11 अध्याय हमें उनके बारे में बताते हैं। अब कहानी धीमी हो जाती है। अगली चार घटनाएँ, अब्राहाम, इसहाक, याकूब और यूसुफ, केवल 300 वर्षों को शामिल करती हैं, लेकिन उत्पत्ति (12-50) में 39 अध्यायों में दुबारा दर्ज की गई हैं।

उत्पत्ति के पहले 11 अध्याय इतिहास प्रति परमेश्वर के लम्बे चौड़े-कोण वाले लेंस हैं, जो उन 4500 वर्षों को संक्षिप्त रूपरेखा के रूप में कवर करते हैं। जब खाता अब्राहाम तक पहुँचता है तो यह धीमा होकर रेगने लगता है और परमेश्वर अपने क्लोज़-अप लेंस पर स्विच कर देता है। परमेश्वर ने उसका इस्तेमाल अपने चुने हुए राष्ट्र, यहूदियों को शुरू करने के लिए किया। वह अय्यूब या मलिकिसिदक, जैसे उत्कृष्ट विश्वासियों का उपयोग कर सकता था जो उस समय में भी जीवित थे। उसने अब्राहाम को चुना, जो सबसे कमजोर था, इसलिए उसने जो किया उसके लिए उसे सारा सम्मान और महिमा मिलेगी। इसलिए वह अक्सर हमें उन कामों को करने के लिए बुलाता है जो हमें असंभव लगते हैं, ताकि जो पूरा होता है उसका श्रेय उसे मिले।

अब्राहाम से मिलें

अब्राहाम का जीवन परीक्षाओं की एक श्रृंखला थी जिसका उपयोग परमेश्वर उसे आत्मिक रूप से बढ़ने में मदद करने के लिए करता था। वे उसके लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के अवसर थे। कुछ में वो फेल हुआ, कुछ में वो पास हुआ।

1.ऊर को छोड़ दे (उत्पत्ति 11:24 - 12:9) परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह ऊर को छोड़ दे, जो उस समय का सबसे उन्नत शहर था जहां चंद्रमा की पूजा की जाती थी। वह वहां 60 साल से रहता था और उसका वहां से चले जाना मुश्किल था। उसने वह पहला परीक्षण पास किया क्योंकि वह 600 मील दूर हारान के लिए सीधे निकल पड़ा था। हालाँकि वह इसमें भी विफल रहा कि उसने अपने पिता और भतीजे को साथ ले लिया, जो कि परमेश्वर के आदेश के खिलाफ था और जिससे उसको बहुत परेशानी हुई। उसे हारान में 15 वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी जब तक कि उसके बीमार पिता की मृत्यु समय से पहले ही हो गई (प्रेरितों के काम 7:2-4)। फिर वह 400 मील फिलिस्तीन चला गया। इस समय तक वह 75 वर्ष का हो चुका था।

2.अकाल (उत्पत्ति 12:10-20) अब्राहम के आने के कुछ ही समय बाद देश में अकाल पड़ा, परमेश्वर पर भरोसा करने और ठहरने के बजाय वह भोजन की तलाश में मिस्र (संसार की एक तस्वीर) की ओर चल पड़ा। उसे हमेशा डर की समस्या रहती थी। उसने यहाँ तक अपनी जान बचाने के लिए यह तक कह दिया कि सराय उसकी बहन थी। यदि परमेश्वर ने उन्हें फिरौन से नहीं बचाया होता तो इस नए राष्ट्र का अंत हो जाता जिसे परमेश्वर बना रहा था। जब अब्राहम विश्वासयोग्य नहीं भी था तब भी परमेश्वर विश्वासयोग्य था।

3.धन (उत्पत्ति 13:1-4) परमेश्वर ने उसे मिस्र में बहुत धनी बना दिया था, परमेश्वर की बजाये धन पर भरोसा करने का प्रलोभन था लेकिन अब्राहम इसमें विश्वासयोग्य था (भजन 118:8-9; नीतिवचन 28:25)।

4.बहुत से संघर्ष (उत्पत्ति 13:5-18) जल्द ही लूत और अब्राहम के लिए भूमि पर्याप्त नहीं थी इसलिए अब्राहम ने लूत को उपलब्ध भूमि चुनने का पहला विकल्प दिया, भले ही वह सब अब्राहम की थी। लूत ने अपने लिए सर्वश्रेष्ठ भूमि को चुना - सदोम।

5.लूत पकड़ा गया (उत्पत्ति 14:1-16) लूत एक बहुत ही पापी नगर में रहता था। जब शत्रुओं ने सदोम को हराया, तो अब्राहम को यह निर्णय लेना था कि क्या वह लूत को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालेगा। उसने ऐसा किया।

6.शक्ति और धन (उत्पत्ति 14:17-24) तब सदोम के राजा ने अपने लोगों को बचाने के लिए अब्राहम को धन देने की कोशिश की, लेकिन अब्राहम जानता था कि परमेश्वर चाहता है कि वह केवल उसी पर निर्भर रहे, इसलिए उसने उन्हें मलिकिसिदक के समर्थन और प्रोत्साहन के साथ ठुकरा दिया (भजन 40:4)।

7.पुत्र प्राप्ति की प्रतिज्ञा (उत्पत्ति 15:1-21) यद्यपि शारीरिक रूप से अब्राहम की पत्नी सारह बहुत बूढ़ी थी, परमेश्वर ने कहा कि अब्राहम का एक वारिस (पुत्र) होगा। विश्वास करना मुश्किल था, खासकर जब समय बीत गया और कुछ नहीं हुआ। परमेश्वर अब्राहम को पूरी तरह से उस पर भरोसा करना सिखा रहा था (भजन सहिता 27:14; 37:5)।

8.हाजरा (उत्पत्ति 16:1-4) प्रतीक्षा करते हुए, सारह एक ऐसी योजना लेकर आई जो सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य थी। अब्राहम को अपनी दासी से एक पुत्र उत्पन्न करना और उसे अपना समझना था। यह समस्या को हल करने का एक अच्छा तरीका लग रहा था, इसलिए, परमेश्वर द्वारा प्रदान किए जाने की प्रतीक्षा करने के बजाय, दुर्भाग्य से अब्राहम ने वही किया जो उसने सुझाया था।

9. इश्माएल (उत्पत्ति 16:5-16) हाजिरा से एक पुत्र होने से कोई फायदा नहीं हुआ। परिवार में लगातार ईर्ष्या और उथल-पुथल चल रहा था। सारह ने अब्राहम से कहा, कि उन्हें निकाल बाहर कर दे, और उस ने उसकी सुनी।

10. आज्ञा मानना (खतना) (उत्पत्ति 17:1-27) अब्राहम 99 वर्ष का हो चुका था, और उसके अभी भी कोई पुत्र नहीं था। वह एक बच्चे के पिता के लिए बहुत बूढ़ा था, और सारह गर्भ धारण करने के लिए बहुत बूढ़ी थी। फिर भी, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि उसके आने वाले पुत्र की उसकी प्रतिज्ञा में विश्वास के चिह्न के रूप में उसके सभी पुरुषों का खतना किया जाए। यहां तक कि उसने उसका नाम तक भी बदल दिया। अब्राहम ("महान पिता") अब्राहाम ("कई राष्ट्रों का पिता") बन गया। सारा ("विवादास्पद") सारा ("राजकुमारी") बन गई। अब्राहाम ने विश्वास में उत्तर दिया और उसकी आज्ञा का पालन किया।

11. अगले वर्ष पुत्र (उत्पत्ति 18:1-15) अब परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ और भी विशिष्ट हो गईं। उसने कहा कि अगले साल उनके पास एक बेटा होगा। सारा को संदेह हुआ, लेकिन अब्राहाम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और इसलिए इस परीक्षा को पास कर लिया।

12. मध्यस्थता (उत्पत्ति 18:16-33) परमेश्वर ने अब्राहम को दिखाया कि सदोम और अमोरा का उनके पापों के लिए न्याय किया जाएगा। लूट भी मर गया होता, लेकिन अब्राहाम ने उसके लिए मध्यस्थता की, यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर उसे अपनी दया से छोड़ सकता है यदि वह चाहता है। परमेश्वर ने वादा किया था कि वह करेगा।

13. सारा के बारे में झूठ (उत्पत्ति 20:1-17) यह पुनः परीक्षण # 2 के समान था: सारा को अपनी बहन कहकर अपनी रक्षा करना (इसलिए जब उसे फिरोन के हरम में ले जाए तो अब्राहाम मारा नहीं जाएगा) या फिर मिस्र से बाहर रहकर परमेश्वर पर भरोसा करता ! वह फिर से असफल हो गया।

14. इश्माएल को बाहर निकल देना (उत्पत्ति 21:1-21) हालांकि, अब्राहाम अपने सभी पुनर्परीक्षणों में असफल नहीं हुआ। जब सारा ने फिर से हाजिरा को और इश्माएल को बाहर निकाल देने के लिए उसे कहा, तो वह परमेश्वर के पास गया, जो कुछ भी परमेश्वर ने कहा वह करने के लिए तैयार था। उसने कहा कि उनके जाने का समय हो गया है और वह उनकी देखभाल करेगा, जो उसने किया। अंत में अब्राहाम परमेश्वर को सारा के दबाव और अपने स्वयं के भय से प्रथम स्थान पर रखने और जो सही था वह करने में सक्षम था।

15. इसहाक का बलिदान (उत्पत्ति 22:1-19) परमेश्वर में अब्राहाम के विश्वास की वास्तव में परीक्षा हुई जब परमेश्वर ने उसे इसहाक को लेने और उसे परमेश्वर के लिए बलिदान करने के लिए कहा। यह लगभग उसी स्थान पर अपने इकलौते पुत्र, यीशु को बलिदान करते हुए स्वयं परमेश्वर की एक तस्वीर थी। अब्राहाम के लिए, हालांकि, एक स्थानापन्न मेढ़ा प्रदान किया गया था ताकि उसे अपने बेटे को मारना न पड़े। लेकिन जब परमेश्वर का पुत्र उसी क्षेत्र में सूली पर लटकाया गया तो कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि यीशु शेष दुनिया के लिए विकल्प था। अब्राहाम को अपने बेटे को मौत के घाट नहीं उतारना था, लेकिन पिता परमेश्वर ने ऐसा किया, ताकि वह हमारा विकल्प बन सके।

16. सारा की मृत्यु (उत्पत्ति 23:1-20) अब्राहाम की पत्नी, सारा, जब वह 127 वर्ष की थी, तब उसकी मृत्यु हो गई। क्योंकि जो कुछ परमेश्वर ने उससे वादा किया था, उसके पास उसे दफनाने के लिए जमीन भी नहीं थी! उसे विश्वास करना था कि परमेश्वर सबसे अच्छा जानता था जब उसने अपने जीवन साथी को लिया। अब्राहाम को इसहाक के लिए माता और पिता दोनों बनने के लिए भी उस पर भरोसा करना था। परमेश्वर उसके साथ था, यहाँ तक कि उसे एक और पत्नी, कईतूरा भी प्रदान कर रहा था।

17. इसहाक की पत्नी (उत्पत्ति 24:1-9) इसहाक के लिए एक पत्नी के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना कठिन था, लेकिन अब्राहाम ने उसकी अगुवाई का अनुसरण किया और एलीआजर को अपने गृह क्षेत्र

में एक ऐसी पत्नी को खोजने के लिए भेजा जो परमेश्वर में विश्वास रखती थी। परमेश्वर ने रिबका को इसहाक के लिए प्रदान किया।

18. मृत्यु (उत्पत्ति 25:1-11) अब्राहाम 175 वर्ष तक जीवित रहा। उसकी अंतिम परीक्षा मृत्यु का सामना करते समय परमेश्वर पर भरोसा करना, मृत्यु के समय और अनंत काल के लिए अपनी आत्मा के साथ उस पर भरोसा करना था। उसे परमेश्वर पर विश्वास था और वह शांति से मर गया (यशायाह 26:4; भजन संहिता 9:9-10)।

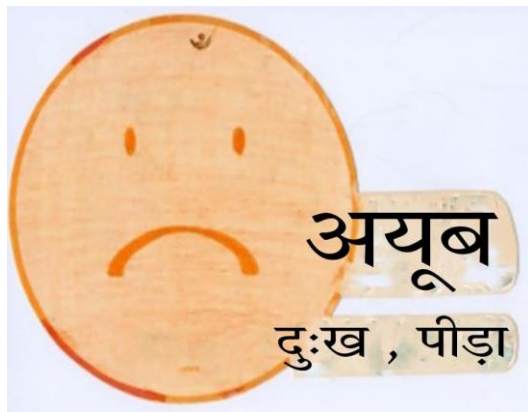
19. पूरा जीवन आप कह सकते हैं कि अब्राहाम का पूरा जीवन एक परीक्षा था। उसने कुछ को पास किया और कुछ में फेल हुआ। वह जितना असफल हुआ उससे कहीं अधिक पास हुआ और परमेश्वर उसके लिए अच्छा और दयालु था। परमेश्वर ने अब्राहाम को अपने "विश्वास और प्रसिद्धि के घर," इब्रानियों 11:8-19 में विश्वास के एक उदाहरण के रूप में शामिल किया। यहूदी आज भी उन्हें "विश्वासयोग्य के पिता" के रूप में जानते हैं।

आप क्या कहते हैं? आप उन अवसरों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया दे रहे हैं जो परमेश्वर आपको उस पर भरोसा करने के लिए देता है? अगर परमेश्वर आपके जीवन में स्कोर रख रहा था, तो आपका पास-फेल अनुपात कैसा है? वर्तमान में कैसा है, कोई सुधार? याद रखें, उसकी मदद से आप सब कुछ कर सकते हैं (प्रेरितों के काम 1:8; रोमियों 15:13; इफिसियों 3:16)।

अब्राहाम के नाम पर इस समय अवधि के दौरान, अब्राहाम की वाचा (उत्पत्ति 15) में किए गए परमेश्वर के वादों पर भरोसा करते हुए, मनुष्य विश्वास में जीने के लिए जिम्मेदार है। मनुष्य फिर असफल होता रहा। अब्राहाम को परमेश्वर के समय पर भरोसा नहीं था और हाजरा द्वारा इश्माएल प्राप्त किया। अब्राहाम को पुनर्स्थापित करने और अपने लोगों से किए गए अपने वादों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह उसकी दया में देखा जाता है।

अय्यूब लगभग उसी समय के दौरान अब्राहाम के रूप में रहता था इसलिए हम इस समय अवधि में अय्यूब को भी शामिल करेंगे। उसके जीवन की कहानी उस पुस्तक में वर्णित है जिसमें उनका नाम अय्यूब है।

अयूब :



कष्ट

शीर्षक : मुख्य पात्र के नाम पर

लेखक: अयूब (19:23-34) या मूसा

दिनांक: 2000 ईसा पूर्व (अब्राहाम का समय)

लेखन की तिथि: लगभग 2000 ई.पू

लेखन का स्थान: ऊज (मध्य पूर्व)

शामिल समय काल : अयूब के जीवन का बाद का हिस्सा

प्राप्तकर्ता: अज्ञात

मुख्य आयत : 1:21 "मैं अपनी माता के पेट से नंगा निकला, और नंगा ही चला जाऊंगा। यहोवा ने दिया और यहोवा ने ले लिया है; यहोवा के नाम की स्तुति हो सकती है।"

मुख्य शब्द: "दुख" (11 बार); "धर्मी" (21 बार); "उत्तर दिया और कहा" (32 बार)

उद्देश्य: इस प्रश्न पर पकड़ बनाने के लिए: "धर्मी क्यों कष्ट उठाते हैं?"

विषय: दुख के कारण और उद्देश्य ।

मैं अपनी एक बहन (कोई भाई नहीं था) के साथ साथ बड़ा हुआ, जो एक बहुत ही खास महिला के रूप में विकसित हुई। वह यीशु में विश्वास करने वाली महिला थी और बहुत ही मिलनसार और प्यार करने वाली थी। वह जो कुछ भी जानती थी, उसमें उसने बहुत ही अच्छा काम किया। उसके दो छोटे पूत्र और एक अच्छा पति था जिन्हें उसकी ज़रूरत थी। लेकिन उसे कैंसर हो गया और 33 साल की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई। हर कोई यही पूछता था : "जूड़ी ही क्यों ?" उन्होंने इसके उत्तर में कोशिश की ताकि उन्हें यह समझने में मदद मिल सके जो परमेश्वर क्या कर रहा था, लेकिन "क्यों?" का कोई जवाब नहीं है।

प्रश्न। वह उत्तर केवल परमेश्वर ही जानता है -- और वह चुप रहता है। यहाँ तक कि प्रश्न पूछना भी गलत हो सकता है जब आरोप लगाने या विद्रोही नजरिए में पूछते हैं, मनो कि जैसे परमेश्वर को चुनौती देते और यह सोचते हैं कि वह जो करता उसमें उसकी गलती है। लोगों के साथ बुरा क्यों होता है? यह एक विश्व्यापी प्रश्न है, और बहुत पुराने समय से है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक, पहली लिखी गई, इस प्रश्न से संबंधित है। क्यों अच्छे लोग पीड़ित होते हैं?

अय्यूब के संघर्ष - इस "दुःख के इस शानदार आदमी" की कहानी अय्यूब के एक बहुत अमीर, जाने-माने, सम्मानित और ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में शुरू होती है। उसे अपने समय के उत्कृष्ट व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है (अय्यूब 1:1-5)। हालाँकि, शैतान, जहाँ और जब भी वे लगा सके परमेश्वर के लोगों पर दोष लगाता है, परमेश्वर से शिकायत करने के लिए कुछ ढूँढ़ लेता है।

"शैतान" नाम का मूल अर्थ यही है - विश्वासियों पर दोष लगाने वाला (प्रकाशितवाक्य 12:10)। वह अय्यूब पर यह दोष लगाता है कि अय्यूब का परमेश्वर की सेवा करने का करण और कोई नहीं बल्कि यह है क्योंकि परमेश्वर उसे इतना सुखद और समृद्ध जीवन दे रहा है (1:6-11)। अपने सम्मान और महिमा के लिए, परमेश्वर शैतान को अय्यूब (1:12) पर हमला करने की अनुमति देता है, यह साबित करने के लिए कि अय्यूब का प्रेम सच्चा है और स्वार्थी नहीं है।

एक बात ध्यान में रखें कि शैतान परमेश्वर के लोगों के लिए उसकी अनुमति के बिना कुछ भी नहीं कर सकता है। हमारे सामने आने वाला प्रत्येक परीक्षण "पिता द्वारा फ़िल्टर किया गया" होता है।

यहाँ तक कि , शैतान अय्यूब की सारी दौलत और संपत्ति (1:13-17) और यहाँ तक कि उसके बच्चों के जीवन को भी छीन लेता है, जिनसे वह बहुत प्यार करता है और जिनकी वह बहुत परवाह करता है (1:4-5, 18-19)। अय्यूब ने महसूस किया कि जो कुछ उसके पास था वह सब कुछ परमेश्वर की ओर से मिला था और परमेश्वर का अय्यूब को बिना किसी स्पष्टीकरण दिए सब कुछ वापस लेने का अधिकार था (1:20-22)। यह जीवन में सच्चे विश्वास और सही दृष्टिकोण का एक प्रेरक प्रमाण है। याद रखें, अय्यूब को पता नहीं था कि ऐसा क्यों हो रहा है। उसने परमेश्वर पर उतना ही भरोसा किया और उससे उतना ही प्यार किया जितना उस समय करता था जब उसने आशीर्ष दी थी और उस समय भी जब उसने उन्हें वापस ले लिया। मुझे लगता है यहां हमें मुख्य रूप से यह याद रखना है कि जो हमारे पास है वह हमारा नहीं है, बल्कि परमेश्वर का है।

इतने के बाद भी शैतान नहीं रुका , और अय्यूब पर यह आरोप लगाने लगा कि वास्तव में अय्यूब को उन चीज़ों की कोई परवाह ही नहीं थी , क्योंकि 'जब तक तुम्हारा स्वास्थ्य है, तुम्हारे पास सब कुछ है' (2:1-5)। फिर से परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब की परीक्षा लेने की अनुमति दी, इस बार शैतान ने उसके जीवन में शारीरिक पीड़ा उत्पन्न कर दी (2:6-7)। शैतान ने सबसे अधिक कष्टदायी कष्टों को अय्यूब के जीवन में उत्पन्न किया , जिससे कि बेचारा अय्यूब बस राख में बैठ गया, और कुछ मामूली राहत पाने के लिए अपनी पस-भरे जख्मों को खुजाता (2:7-8)। यहाँ तक कि उसकी पत्नी, जिसे शायद इसी उद्देश्य के लिए जीवित छोड़ दिया गया था, उसने भी उसे परमेश्वर को श्राप देने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि परमेश्वर उसे मार डाले और उसे उसके दुख से बाहर निकाल दे (2:9)। फिर भी, वह परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम और भक्ति में विश्वासयोग्य रहा (2:10)।

अय्यूब के सलाहकार - अय्यूब की अधिकांश पुस्तक, अध्याय 3-37, कविता रूपी है (यही कारण है कि अय्यूब को बाइबिल में अन्य काव्य पुस्तकों के साथ रखा गया है)। अय्यूब के तीन दोस्त उसे यह मानने के लिए मजबूर करने की कोशिश करने आए हैं कि अगर उसने वास्तव में पाप नहीं किया होता तो वह

इस तरह से पीड़ित नहीं होता। फिर एक चौथा आता है और उसका अर्ध-पक्ष रखता है, लेकिन पूरी तरह से नहीं। यह उसके लिए परमेश्वर की सजा होनी चाहिए, वे जोर देते हैं। कल्पना कीजिए कि आपके घर में अभी-अभी विस्फोट हुआ है, जो आपके पास मौजूद हर संपत्ति को नष्ट कर रहा है। परिवार में सब मारे गए लेकिन आप मरने से बच तो गए और आप अस्पताल में हैं, दर्द से लथपथ हैं, हर तरफ से पस निकल रही है। पास्टर और कुछ दोस्त (छे महीने) कई हफ्तों तक यहां आकर आपको यह मानने के लिए मजबूर करने की कोशिश करते हैं कि परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि आप इतने सड़े हुए पापी हैं। उनके आने से आप को कितना सक्कून मिलेगा ?

अय्यूब अपनी बेगुनाही का बचाव करता है, यह जानते हुए कि परमेश्वर अपने लोगों को दण्ड नहीं देता (रोमियों 8:1)। अक्सर आज हम भी सोचते हैं कि जब हम या हमारा कोई जानने वाला कठिन समय से गुजर रहा होता है तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि परमेश्वर हमें सजा दे रहा होता है। वह सत्य नहीं है। जब हम पाप से नहीं हटेंगे तो परमेश्वर हमें अनुशासित करता है (इब्रानियों 12:5-11) परन्तु वह हमारे जीवन में परीक्षाओं को आने देता है जब हम विश्वासयोग्य होते हैं ताकि हम उस पर और अधिक भरोसा करें और और भी अधिक विश्वासयोग्य बनें और इस प्रकार उसमें बने रहें उसे (यूहन्ना 15)। वह हमें यह नहीं बताता कि ये चीजें अभी क्यों होती हैं, लेकिन जब हम स्वर्ग में पहुंचेंगे तो हम देखेंगे कि वह जानता था और वही करता था जो सबसे अच्छा और सही था (यूहन्ना 13:7)।

अब हमें उस पर भरोसा करना चाहिए (रोमियों 8:28)। जैसे कि एक छोटा बच्चा नहीं जानता कि एक प्यार करने वाला माता-पिता डॉक्टर को उसे पट्टी करने या काटने की अनुमति क्यों देता है, इसलिए हम नहीं जानते कि परमेश्वर हमारे साथ ऐसा क्यों होने देता है। सिर्फ इसलिए कि हम इसका कारण नहीं जानते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि कोई कारण है ही नहीं है, हालांकि। हम जानते हैं कि जीवन में वादीयों के माध्यम से उस पर विश्वास करने के लिए, बेशक परमेश्वर हमें बहुतायत से आशीष और प्रतिफल देगा (2 कुरिन्थियों 4:16-17; रोमियों 8:18)। इस जीवन में ऐसा हो या ना हो, लेकिन स्वर्ग में जरूर होगा।

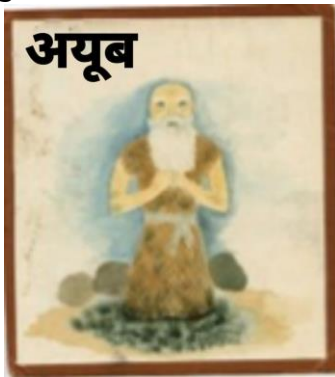
अय्यूब का भरोसा उसकी स्थिति के लिए अय्यूब को दोष देने की कोशिश में कई अध्याय बिताने के बाद, परमेश्वर आता है और, कटाक्ष से टपकती आवाज में, उन्हें दिखाता है कि उनके पास दूसरा अनुमान लगाने की कोशिश करने का कोई व्यवसाय नहीं है। अय्यूब 38-41 पढ़िए जब आप सोचने लगते हैं कि क्या परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है! परमेश्वर अय्यूब के सलाहकारों से कहता है कि उन्हें अय्यूब के पास आना होगा और उससे उनके लिए प्रार्थना करने के लिए कहना होगा अन्यथा वे परमेश्वर के क्रोध के पूर्ण प्रकोप को देखेंगे (42:7-9)। इस बात ने उन्हें वास्तव में विनम्र किया होगा! तब परमेश्वर ने अय्यूब की सारी संपत्ति को दुगना कर दिया (42:10-16)। उसने उसके बच्चों को भी बदल दिया। उसे उन्हें दोगुना नहीं करना पड़ा, क्योंकि उसके अन्य बच्चे अभी भी स्वर्ग में रह रहे थे। इस प्रकार वास्तव में उनके बच्चों की संख्या भी दुगनी थी।

अय्यूब कभी नहीं जानता कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया, और न ही हम आज जानते हैं। शायद अच्छे लोगों के साथ बुरी चीजें शैतान को दिखाने के लिए होती हैं कि वे सही कारणों से परमेश्वर से प्रेम करते हैं, शायद यह परमेश्वर पर अधिक भरोसा करना सीखना है या पूरी तरह से उसके अनुग्रह पर निर्भर होने के लिए होती हैं (जैसा कि पौलूस के शरीर में कांटे के साथ हुआ था - 2 कुरिन्थियों 12 :7), या परमेश्वर की महिमा के लिए जब हम और अन्य उसके प्रावधान और छुटकारे को देखते हैं, या शायद यह हमें दूसरों के प्रति जो पीड़ित हैं अधिक संवेदनशील बनाने के लिए होता है (2 कुरिन्थियों 1:3-24)। कारण

कुछ भी हो, हम जानते हैं कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और हमें गहराई से प्यार करता है (रोमियों 8)। वह जो कुछ भी करता है वह उसकी महिमा और हमारे लाभ के लिए होता है।

परमेश्वर पीड़ा क्यों देते हैं? अंततः सभी दुखों को ईश्वर की महिमा और इससे गुजरने वाले के लिए विकास का मार्ग होता है। परमेश्वर इसका उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए भी करता है, विचार, जैसे कि परमेश्वर और शैतान के बीच संघर्ष दिखाना (अय्यूब 1-2), परमेश्वर का संदेश (होशे) प्रस्तुत करने के लिए, परमेश्वर की आज्ञाकारिता सिखाने के लिए (इब्रानियों 5:8; फिलिप्पियों 2:8), परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहना सीखना (2 कुरिन्थियों 12:7-10), हमें मसीह के करीब लाना (1 पतरस 1:7-8; यशायाह 49:2), परमेश्वर की शक्ति को प्रदर्शित करता है (यूहन्ना 13:16; 16):33; 1 पतरस 1:13) और दुःखी लोगों की सहायता करने में हमारी सहायता करता है (2 कुरिन्थियों 1:3-4)।

हमें दुख-तकलीफों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखानी चाहिए? दुख से गुजरते समय सुनिश्चित करें कि



आप परमेश्वर की इच्छा में हैं (1 पतरस 4:19) और भरोसा रखें कि परमेश्वर हमारे लाभ के लिए ऐसा कर रहा है (यूहन्ना 15:2; रोमियों 8:28)। हम यह नहीं जानेंगे कि ये बातें क्यों होती हैं जब तक समय नहीं आता (यूहन्ना 13:7)। इसे उस पर भरोसा करने और उसके करीब आने के अवसर के रूप में उपयोग करें (इब्रानियों 13:5)। उसने हमारे लिए क्रूस पर जो किया, उसके द्वारा उसका प्रेम सिद्ध हुआ है, इसलिए इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है।

अय्यूब की रूपरेखा

I. अय्यूब के संघर्ष (दुख) 1-2

क- अय्यूब की परिस्थितियाँ 1:1-5

ख- अय्यूब की आपदाएं 1:6 - 2:10

II. अय्यूब के सलाहकार (उत्तर) 3-42

1. चक्रकाल 4-14

2. चक्रकाल 15-21

3. चक्रकाल 22-32

क- अय्यूब की दुहाई/पुकार 3

ख - अय्यूब के आलोचक

ग - अयूब का दिलासा देने वाला (एलिहू) 32-37

घ- अयूब का सृष्टिकर्ता 38-42

III. अयूब का विश्वास

क - अयूब की पुष्टि 42:7

ख - अयूब के सहायक 2:11-13

III. अयूब का विश्वास 42

ख - अयूब की दिलासा 42:10

(एलीफज, बिलदा द, जोफार) 4-31

बाइबिल अवलोकन -6

इसहाक



मुख्य घटनाएँ: इसहाक का जन्म, बलिदान

मुख्य लोग: इसहाक, रिबका

बाइबल की पुस्तकें: उत्पत्ति 21-28,35

बाइबिल आयत : उत्पत्ति 17:19 "सारह तुम्हारे लिए एक

पुत्र को जन्म देगी , और तुम उसका नाम इसहाक रखोगे। मैं उसके साथ और उसके बाद उसकी सन्तान के साथ एक सदा की वाचा की स्थापना करूंगा। "

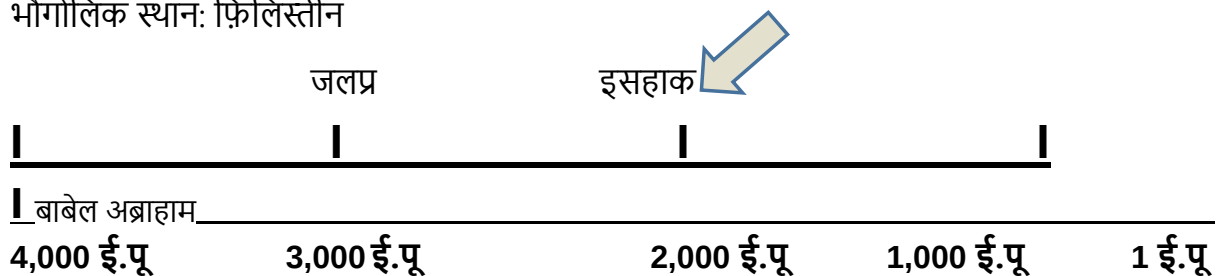
समय: 2,100 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएं:

मिस्र, पुराना साम्राज्य मध्य साम्राज्य में बदल जाता है

हिती सभ्यता शुरू होती है

भौगोलिक स्थान: फ़िलिस्तीन



परमेश्वर द्वारा अब्राहाम के साथ किये गए वादे आगे उसके पुत्र इसहाक को दिए गए , हमारे अध्ययन में यह छठा अवलोकन है । परमेश्वर ने इब्राहीम से वादा किया था कि उसके और सारह के बहुत बूढ़े होने पर भी एक बेटा होगा, और उनके साथ ऐसा हुआ (इब्रानियों 11:17-19)। इसहाक ने महान विश्वास के समय को दिखाया, जब उसने अपने पिता अब्राहाम पर अपने जीवन को बलिदान के रूप में अर्पित करने पर भरोसा किया (उत्पत्ति 22)। उनके जीवन में कई बार बड़ी अवज्ञा का समय भी आया था।

मारने के बाद किसी तरह उसे फिर से जीवित कर देगा (इब्रानियों 11:17-19)। इसहाक के लिए अपने पिता को अपनी जान लेने की अनुमति देना बहुत कठिन रहा होगा, लेकिन उसे अपने पिता के साथ-साथ ईश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानने की शिक्षा के साथ बड़ा किया गया था। इसलिए वह स्वेच्छा से वेदी पर लेट गया - उसके पिता इतना बूढ़ा हो चुका था कि उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते थे। जैसे ही वह चाकू के नीचे आने और अपना जीवन को समाप्त होने का इंतजार कर रहा था तो कुछ बहुत ही अजीब हुआ। परमेश्वर अब्राहाम से बोला और कहा कि उसे इसहाक को मारने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसने एक विकल्प का प्रबंध किया हुआ था, पास की झाड़ियों में फंसा हुआ एक मेढ़ा। वे दोनों एक विकल्प के प्रावधान के लिए परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

मोरिया पर्वत पर बलिदान के लिए इसहाक का समर्पण मसीह का एक प्रतीक है जो मृत्यु के प्रति आज्ञाकार था (फिलिप्पियों 2:5-8)। अब्राहाम पिता परमेश्वर का एक चित्र था जिसने अपने निज पुत्र को नहीं छोड़ा परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया (यूहन्ना 3:16; रोमियों 8:32)। इसहाक के स्थान पर चमत्कारिक रूप से झाड़ी में फंसा हुआ और बलिदान किया गया मेढ़ा यीशु का एक प्रतीक है जिसे सभी मानव जाति के स्थान पर बलिदान के रूप में चढ़ाया गया था (इब्रानियों 10:5-10)। अब्राहाम का आश्वासन कि वे आराधना करने जाएंगे और एक साथ वापस लौटेंगे (उत्पत्ति 22:5) मृत्यु से पुनरुत्थान को चित्रित करता है (इब्रानियों 11:17-19)। पूरी बाइबल में परमेश्वर अपने प्रेम और शक्ति को दिखाता है, और उसके पास इस बात के कई प्रतीक हैं कि यीशु पृथ्वी पर आने पर क्या - क्या करेगा। पूरा पुराना नियम यीशु की ओर इशारा करता है। यह इमारत की नींव है, और इसलिए इन बातों को समझने से हमें यीशु को समझने में मदद मिलती है और यह भी कि वह पाप को दूर करने और उद्धार प्रदान करने के लिए क्या करेगा।

इसहाक के जीवन की अगली बड़ी घटना उसकी माँ की मृत्यु के तुरंत बाद रिबका से उसका विवाह था। जब वह मरी तब वह सैंतीस वर्ष का था। इब्राहीम ने एक भरोसेमंद सेवक को मेसोपोटामिया भेजा कि वह उसके ही रिश्तेदारों में से इसहाक के लिए एक पत्नी के लिए परमेश्वर की इच्छा तलाश करे। इसहाक चालीस वर्ष का था जब उसने रिबका से विवाह किया (उत्पत्ति 24)। उसने उसे अपनी माँ के खोने के गम से बहुत दिलासा दिलाया।

कई वर्षों बाद उसके पिता अब्राहाम ने अपनी संपत्ति बांट दी, इसहाक को अपनी संपत्ति दे दी, जबकि हाजिरा और केतुराह द्वारा जन्मे उसके पुत्रों को उपहारों के साथ भेज दिया गया। इश्माएल और इसहाक ने अब्राहाम को मकपेला की गुफा में दफनाया और इसहाक बेर-लहै-रोई में चला गया (उत्पत्ति 25:5-11)।

रिबका और इसहाक बच्चे पैदा करना चाहते थे, लेकिन शादी के लगभग बीस साल बाद तक, प्रार्थना के सीधे उत्तर में, उन्हें दो बेटे, याकूब और एसाऊ प्राप्त हुए (उत्पत्ति 25:21-26)। ऐसा लगता है कि रिबका और इसहाक वर्षों से अलग हो गए हैं, और शायद उन्होंने अपने बेटों की ओर रुख किया ताकि उनकी शादी में जो कमी आ गई थी, उसे पूरा किया जा सके। इसहाक ने एसाऊ के मर्दाना, बाहरी चरित्र के कारण उसमें बहुत प्रसन्नता व्यक्त की। याकूब, एक शांत किस्म का, रिबका के करीब आ गया था। दुर्भाग्य से इसहाक के बचपन में का विश्वास उसके बाद के वर्षों में उतना मजबूत नहीं लगता जितना उस समय था जब वह एक जवान था। हमारी बड़ती आयु के साथ, परमेश्वर से दूर जाने का खतरा हमेशा बनता और बढ़ता रहता है। परमेश्वर चाहता है कि उसके बच्चे अंत तक वफादार रहें, मजबूत बने रहें और हमेशा अपने विश्वास में बढ़ते रहें। यदि आप आपने आप को, इसहाक की तरह, पाते हैं कि आपका

विश्वास और आज्ञाकारिता तब मजबूत थी जब आप उनसे जवान थे, तो इस पाप का अंगीकार करें और परमेश्वर से आपको उसके साथ अपने पूर्व संबंध में पुनर्स्थापित करने के लिए प्रार्थना करें। फिर प्रत्येक दिन उसकी बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने में समय व्यतीत करें, और उसकी आज्ञाकारिता में पवित्रता का जीवन व्यतीत करें।

इसहाक के विश्वास की कमी तब भी देखी जाती है जब एक अकाल ने भूमि पर प्रहार किया और, प्रावधान के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय, उसने अपने परिवार को भोजन खोजने के लिए वादे के देश से बाहर निकाला। वह अपने पिता और स्वयं के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को जानता था, लेकिन उसे परमेश्वर की सुरक्षा पर पूरा भरोसा नहीं था। उसने अपने डर का अधीन गया और गरार देश को चला गया, फिर रिबका को इस लिए अपनी बहन बताने लगा, कि लोग उसे मारने की कोशिश कर सकते हैं अगर वे जान लेंगे कि वह उसकी पत्नी थी। उसके पिता ने यही काम दो बार किया था। दुर्भाग्य से वह उसके उदाहरण का अनुसरण कर रहा था। जब पलिशती राजा अबीमेलेक, जहां वे चले गए थे, को सच्चाई का पता चला, तो उसने इसहाक को कड़ी फटकार लगाई लेकिन उन्हें देश में रहने दिया (उत्पत्ति 26:1-11)।

आखिरकार उसके भेड़-बकरी और झुंड इतने बड़े हो गए कि इसहाक और उस देश में रहने वाले अन्य लोगों के लिए जगह नहीं थी। परमेश्वर स्पष्ट रूप से उसे आशीश दे रहा था। वह अंततः बर्शेबा वापस चला गया जहाँ परमेश्वर फिर से उसके सामने प्रकट हुआ और वाचा की सभी आशीषों को फिर से बताया। परमेश्वर की ओर से क्या ही अद्भुत आशीष है!

जब वह 100 और एसाऊ 40 वर्ष का था, तब एसाऊ ने कनान की बेटियों जूडिथ और बासमत को ब्याह लिया, लेकिन इनसे रिबका और इसहाक को दुःख पहुँचा (उत्पत्ति 26:34-35)।

जैसे-जैसे इसहाक बूढ़ा होता गया उसकी आँखों की रौशनी कम होने लगी। यह सोचकर कि उसकी मृत्यु निकट होगी, उसने एसाऊ से एक विशेष भोजन बनाने का अनुरोध किया ताकि वह उसे खा सके और आनंद ले सके और मरने से पहले उसे आशीर्वाद दे सके। इसहाक जानता था कि परमेश्वर की आशीष को खरीदा या बेचा नहीं जाना था, और वह यह भी जानता था कि यह याकूब के पास जाना है (उत्पत्ति 25:23)। वह उस विश्वास से नहीं जी रहा था जैसा कि उसने अपनी युवावस्था में किया था। रिबका को इस योजना के बारे में पता चला कि वह याकूब को दरकिनार कर एसाऊ को आशीर्वाद देगा। उसने इसहाक को बरगलाया ताकि वह अनजाने में याकूब को आशीर्वाद दे। इससे एसाऊ इतना क्रोधित हो गया कि उसने इसहाक के मरते ही याकूब को मार डालने की धमकी दी। इसलिए याकूब को मेसोपोटामिया भेजा गया ताकि वहाँ उनके परिवार से एक पत्नी प्राप्त हो (उत्पत्ति 27:41-28:6)।

कई वर्ष बाद, जब याकूब दो पत्नियों और तेरह बच्चों के साथ घर लौटा, तो उसने पाया कि इसहाक हेब्रोन में रहता है। यहीं पर इसहाक की 180 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई और उसे उसके पुत्रों ने उसे दफनाया था (उत्पत्ति 35:27-29)।

इसहाक का जीवन एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जो युवा होने पर अपने विश्वास में मजबूत होता है लेकिन फिर धीरे-धीरे परमेश्वर से दूर हो जाता है। परमेश्वर ने, अपनी विश्वासयोग्यता में, उसे उसके जीवन के अंत में अंधेपन के वर्ष दिए, जहां उसके पास बैठने और परमेश्वर से बात करने के अलावा और कुछ नहीं था। उसने इसहाक को अपने पास वापस लाने के लिए इसका इस्तेमाल किया, लेकिन यह कितना बेहतर होता अगर वह पहले कभी उससे अलग नहीं हुआ होता। शायद आप जीवन में कठिनाई का

सामना कर रहे हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर आपका ध्यान आकर्षित करने और आपको अपने करीब लाने के लिए इसका उपयोग करने की कोशिश कर रहा हो?

बाइबिल अवलोकन-7

याकूब



मुख्य घटनाएँ: याकूब का जन्म, एसाऊ के साथ संघर्ष, लाबान

मुख्य लोग: याकूब, एसाऊ, राखिल, लाबान

बाइबल की पुस्तकें: उत्पत्ति 25-37, 46-50

बाइबल आयत : उत्पत्ति 32:28 तब उस मनुष्य ने कहा, तेरा नाम अब याकूब ना रहेगा, परन्तु इजराइल होगा, क्योंकि तू ने परमेश्वर से और मनुष्यों से संघर्ष करके जय पाई है।

समय: 2,000 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएं:

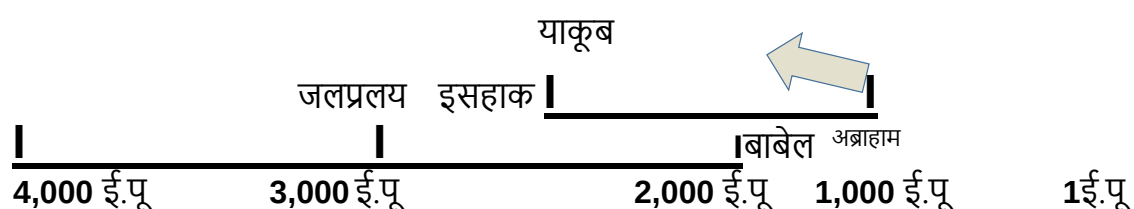
इंग्लैंड में स्मारक का बनना

तुर्की में हिती सभ्यता का विस्तार होना

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन

मिनोअन सभ्यता का क्रेते में बड़ना

भौगोलिक स्थान: फ़िलिस्तीन, पद्म , अराम



परमेश्वर ने अब्राहाम और इसहाक के माध्यम से राष्ट्र इज़राइल से जो वादे किए थे, वे याकूब को दिए गए, जो बाइबल के हमारे अवलोकन में सातवीं समयावधि है। याकूब को बाद में इज़राइल कहा गया, जो आखिर पूरे राष्ट्र का नाम बन गया।



याकूब से मिलें

याकूब अपने पिता की प्रार्थना का उत्तर था (उत्पत्ति 25:21) परन्तु वह अपनी माता का प्रिय पुत्र बन गया (उत्पत्ति 25:28)। वास्तव में, याकूब उसका उपनाम है, क्योंकि जब उसके भाई का जन्म हुआ था तो वह उसकी एड़ी को पकड़े हुआ था (उत्पत्ति 25:26) मनो कि जैसे वह उसको हथिआने की कोशिश कर रहा था जो उसके भाई का था और वो बनने की कोशिश कर रहा था जो उसका भाई था। उसने जन्म के बाद उनके दोनों में जन्म अधिकार (उत्पत्ति 25:29-34) और अपने पिता की आशीष के साथ भी ऐसा किया (उत्पत्ति 27:1-29)। बाद भले ही में परमेश्वर ने उसका नाम बदलकर इज़राइल कर दिया (उत्पत्ति 32:28)।

अपने दादा अब्राहाम की तरह, याकूब ने बहुत यात्रा की। वह बर्शेबा से बेतेल (उत्पत्ति 28:10-22), फिर शकेम (उत्पत्ति 33:18-20), फिर बेतेल (उत्पत्ति 35:6-7) और हेब्रोन (उत्पत्ति 35:27) को गया। जहाँ वह रहता था, अब्राहाम की तरह, वह भी वेदियाँ बनता था क्योंकि वह अब्राहाम और इसहाक के परमेश्वर की आराधना और सेवा करता रहा। आखिरकार वह अपने बेटे यूसुफ के साथ मिस्र चला गया। वहाँ वह बहुत बूढ़ा होकर मर गया (उत्पत्ति 46-49)।

याकूब का जीवन अधिकांश शांत और असमान था। हालांकि, जब वह मेसोपोटामिया में हारान को गया था, तो कुछ समय बहुत उत्साहभरा और कारोबार का जीवन था। वह अपने पिता द्वारा इसाऊ मिलने वाली आशीष को उससे चुरा लेने के कारण अपने भाई इसाऊ के क्रोध से बच रहा था। वह अपने मामा लाबान के घर गया (उत्पत्ति 28:10)। रास्ते में, बेथेल में, उसने एक सीढ़ी का सपना देखा जो पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँचती है, जिस पर स्वर्गदूत ऊपर और नीचे आते जाते हैं। परमेश्वर ने उसके साथ उन वादों को दोहराया जो उसने अब्राहाम, उसके दादा और इसहाक, उसके पिता के साथ किए थे।

हारान में रहते हुए उसने राहेल और लेह : दो बहनों से विवाह किया। लेह : से उसके चार पुत्र हुए: रूबेन, शिमोन, लेवी और यहूदा। राखिल को इससे जलन होती थी और उसके बच्चे नहीं थे, इसलिए उसने अपनी दासी बिल्हाल को उसके लिए बच्चे पैदा करने के लिए दे दिया। उससे याकूब के दान और नप्ताली पैदा हुए। लिआ: ने भी वैसा ही किया, और याकूब को अपनी दासी जिल्पा को दे दिया, जिससे उसके पास गाद और आशेर पैदा हुए। फिर लेह से इस्साकार और जबूलून पैदा हुए। अन्त में राखिल के बच्चे पैदा हुए और उसके बच्चे यूसुफ और बिन्यामीन थे। उनकी एक बेटी दीना भी थी। इन बारह पुत्रों में से इस्राएल के बारह गोत्र उत्पन्न हुए। लेवी याजकीय गोत्र बन गया, इसलिए उसे गोत्रों में नहीं गिना गया। उसके स्थान को भरने के लिये यूसुफ के दोनों पुत्र, यानि उसके पौते, इफरैयीम और मनश्शे, एक एक गोत्र हो गए। यूसुफ का कोई गोत्र नहीं था, परन्तु उसके प्रत्येक पुत्र में से एक था।

हारान में यब्बोक नदी के तट पर अपने लंबे प्रवास से लौटते हुए, उस का स्वयं का परमेश्वर के साथ एक और सामना होता है। वह एसाउ के साथ अपने आगामी पुनर्मिलन से भयभीत था (उत्पत्ति 32:7)। उसने खुद को अचानक परमेश्वर के साथ एक शारीरिक कुश्ती मैच में लगा हुआ पाया, जो उसके साथ उसकी आत्मा में चल रही आंतरिक कुश्ती को दर्शाता है। अपने जीवन में पहली बार ऐसा हुआ जब वह अपने बल पर किसी चीज पर विजय नहीं पा सका। परमेश्वर की महान शक्ति के प्रति समर्पण करते हुए, उसने वह शांति पाई, जिसकी वह तलाश कर रहा था। इस वजह से परमेश्वर ने उसका नाम बदलकर इज़राइल कर दिया जिसका अर्थ है "परमेश्वर का राजकुमार।" याकूब ने उस स्थान को पनीएल कहा - क्योंकि उसने परमेश्वर को आमने-सामने देखा और जीवित रहा (उत्पत्ति 32:30)।

इन अनुभवों का प्रभाव याकूब पर बना रहा और उसने उसे परमेश्वर के एक व्यक्ति के रूप में ढाला। अपने जीवन के अंत में, जब वह काफी बूढ़ा था (उत्पत्ति 47:28), उसने अपने बारह पुत्रों को अपने बिस्तर के चारों ओर बुलाया कि उन्हें बताए कि अंत के दिनों में उन पर क्या होगा (उत्पत्ति 49:1)। उसने उनसे उनके जन्म के क्रम में बात की। उसके सबसे मजबूत शब्द रूबेन, जेठा, जिसे उसने अपने पाप के कारण चेतावनी दी थी (उत्पत्ति 49:3-4), और शिमोन और लेवी, जिन्हें उसने उनके क्रोध और क्रूरता के लिए शाप दिया था (उत्पत्ति 49:5-7)। परमेश्वर की ओर से उसकी सबसे बड़ी आशीष यहूदा को दी गई थी, जिसकी प्रशंसा उसके भाई करेंगे और जिसका गोत्र राजसत्ता का स्रोत होगा (उत्पत्ति 49:8-12)।

इस दृश्य के बाद, याकूब की मृत्यु हो गई और उसका शव ले लिया गया (उत्पत्ति 49:33; 50:2)। उसके स्वयं के अनुरोध से उसके शरीर को वापस कनान देश में ले जाया गया और उसे मकपेला के खेत की गुफा में परिवार के कब्रिस्तान में दफनाया गया (उत्पत्ति 49:29-32; 50:13)। हम उनके जीवन से सीख सकते हैं कि परमेश्वर को हमारी आत्मनिर्भरता को तोड़ने देने का महत्व क्या है ताकि हम केवल उस पर निर्भर रहना सीखें। यह कठिन है लेकिन बहुत जरूरी है।

अपने पिता इसहाक के विपरीत, जिसने मजबूत विश्वास में शुरुआत तो की, लेकिन अपने अखीरी वर्षों में परमेश्वर के प्रति उतना आज्ञाकारी नहीं रह गया था, याकूब ने धोखे का उपयोग करके अपने तरीके से छेड़छाड़ करना शुरू कर दिया और अपना रह बना लिया। लेकिन उसके जीवन के अंत में उसकी आस्था और भक्ति बढ़ी और वह विश्वास के एक मजबूत व्यक्ति बन गया।

बाइबल अवलोकन 8.

यूसुफ



मुख्य घटनाएँ: यूसुफ, सभ यहूदियों का मिस्र में होना

मुख्य लोग: यूसुफ, उसके भाई लोग, फिरौन

बाइबल की पुस्तकें: उत्पत्ति 37-50

बाइबल आयत : उत्पत्ति 50:20 तू ने मुझे हानि पहुँचाना चाहा, परन्तु परमेश्वर ने इसे भलाई के लिए चाहा जो अभी हो रहा है, अर्थात् बहुतों के प्राणों को बचाना है।

समय: 1,900 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएं:

हम्मुराबी का बाबल साम्राज्य की स्थापना करना, असीरिया का सत्ता में बढ़ना।

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन, मिस्र

यूसुफ याकूब का दूसरा सबसे छोटा लेकिन मनपसंद पुत्र था। हमारे बाइबिल अवलोकन में इस 8 वीं अवधि के दौरान पुराने नियम की कहानी उस पर केंद्रित है जब वह मिस्र में गुलामी के लिए बेच दिया गया था। इससे अकाल के दौरान पूरे राष्ट्र के लिए मिस्र में शरण पाने का मार्ग तैयार हो गया। मसीह की जन्म रेखा तो उसके भाई यहूदा से होकर निकलती है, लेकिन हम इस समय आपने अवलोकन अवधि को यूसुफ का नाम देते हैं क्योंकि इस समय हमारा ध्यान उस पर केन्द्रित है।



यूसुफ से मिले

हर कोई अपने परिवार में दूसरों से प्यार और स्वीकृति प्राप्त करना चाहता है, लेकिन जब आपके भाई आपको पसंद नहीं करते हैं तो आप क्या करते हैं? यह किसी गम्भीर दुश्मनी की स्थिति में होने की बात नहीं है, लेकिन एक ऐसी स्थिति जिसमें यूसुफ खुद को पता है। वह याकूब का ग्यारहवां पुत्र था, लेकिन वह उसकी पसंदीदा पत्नी राखल में से पहला था (उत्पत्ति 33:2, 7)। इसलिए वह अपने पिता का पसंदीदा बच्चा बन गया। यूसुफ हारान में पैदा हुआ था, जब याकूब अभी भी लाबान की नौकरी कर रहा था (उत्पत्ति 30:22-25)।

क्योंकि वह राखल का पहला बच्चा था, और क्योंकि परमेश्वर ने उसे कई विशेष तरीकों से अशीषत किया था, उसका पिता उसे उसके भाइयों से अधिक पसंद करता था। यहाँ तक कि उसने अपना पक्षपात दिखाने के लिए उसे एक विशेष कुर्ता भी दिया था (उत्पत्ति 37:2-4)। उसके भाई अपनी ईर्ष्या के कारण यूसुफ को नापसंद करने लगे। उनके पिता को उनके बुरे आचरण की सूचना देने कारन वे उसे और भी अधिक नापसंद करने लगे। लेकिन जिस बात ने उन्हें वास्तव में परेशान किया, वो थी उसके सपने जो इस बात की भविष्यवाणी करते थे कि एक दिन पूरे परिवार पर उसकी नेतृत्वता होगी (उत्पत्ति 37:5-11)।

इस वजह से उसके भाइयों को यूसुफ को एक गुलाम के रूप में मिस्र जाने वाले एक काफले के हाथों में बेचने का अवसर मिल गया। अपने धोखे को छिपाने के लिए, उसके भाइयों ने अपने पिता को यह विश्वास दिलाकर सच्चाई को छुपाया कि यूसुफ को किसी जंगली जानवर ने मार डाला था। मिस्र में वह फिरौन के एक अधिकारी पोतीपर को बेच दिया गया, और वह एक दास बन गया।

परमेश्वर उसके साथ था और गुलामी में भी उसे आशीष दी थी। वह एक बहुत ही भरोसेमंद सेवक बन गया और अपने मालिक के सभी मामलों का निर्देशन करने लगा। हालाँकि, जब पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को बहकाने की कोशिश की और उसने मना कर दिया, तो उसने झूठ बोलकर और उसकी इज़त पर हाथ डालने का दोष लगाया। मामले को ठंडा करने के लिए, उसे यूसुफ को जेल में डालना पड़ा। परन्तु वहाँ भी परमेश्वर ने उसे आशीष दी और बड़ी बुद्धि दी, कि शीघ्र ही बन्दीगृह के प्रधान ने अपना दैनिक कार्य उसके हाथ में कर दिया (उत्पत्ति 39:1-23)।

जेल में रहते हुए उसने अपने दो साथी कैदियों के सपनों की सही व्याख्या की, लेकिन दो साल लग गए जब तक कि किसी को उसकी याद आई और फिरौन के सपनों की व्याख्या करने के लिए उसे महल में लाया गया (उत्पत्ति 40)। परमेश्वर ने उसे सपनों का अर्थ बताया। सात वर्ष बहुतायत के होंगे जब खेतों में अच्छी उपज होगी। इसके बाद सात साल का भयंकर अकाल और भुखमरी होगी। यूसुफ ने फिरौन को सलाह दी कि वह उपज के वर्षों से अतिरिक्त भोजन को भण्डार कर ले ताकि देश को बुरे वर्षों में जीवित रखने में मदद मिल सके। यूसुफ की अंतर्दृष्टि और बुद्धि के कारण, फिरौन ने उसे सभी के ऊपर मुखिया बनाया, केवल फिरौन के बाद वही दूसरा अधिकारी था, ताकि वह इस महत्वाकांक्षा की योजना को लागू और लागू कर सके। फिरौन ने उसे पत्नी के रूप में मिस्र के एक पुजारी की बेटी दी।

हालत ठीक वैसे ही बन गए जैसे यूसुफ ने भविष्यवाणी की थी। साल डर साल अकाल और भी बदतर होता गया और बहुत सी देशों से लोग आकर फिरौन से भोजन मोल लेते थे, जैसा कि मिस्रियों ने खुद भी किया। परिणामस्वरूप, फिरौन और भी अधिक धनी और शक्तिशाली हो गया। इन्हीं वर्षों के दौरान यूसुफ के दो पुत्र हुए, मनश्शे और इफराईम (उत्पत्ति 41:47-52)।

इस सब के पीछे परमेश्वर था, जो इसका उपयोग चीजों को स्थापित करने के लिए कर रहा था ताकि यूसुफ के भाइयों को भोजन की आवश्यकता हो और उन्हें इसे लेने के लिए मिस्र जाने के लिए मजबूर होना पड़े। परमेश्वर ने इसका उपयोग उसके भाइयों को दीन करने, उन्हें यूसुफ के साथ फिर से मिलाने और अब्राहाम, इसहाक और याकूब के परिवार को बचाने के लिए किया। परमेश्वर को उन्हें कनान से भी स्थानांतरित करना पड़ा जहां वे अन्य-जातीयों में विवाह कर रहे थे और जल्द ही उसके लिए एक अलग राष्ट्र ना रहने की कगार पर आ जाते। मिस्र में उन्हें अस्वीकार कर दिया गया था और उन्हें अकेले रहना पड़ा था, केवल यहूदियों में ही विवाह करने पर सिमित कर दिया जैसा कि परमेश्वर ने इसे चाहा था, जब तक कि वे पचीस लाख लोगों का एक बड़ा, मजबूत राष्ट्र नहीं बन गए, जब मूसा ने उन्हें मिस्र से स्वतंत्र करने के लिए उनका नेतृत्व किया।

परमेश्वर ने यूसुफ को अपने काम के लिए एक विशेष तरीके से इस्तेमाल किया, लेकिन वह एक दर्दनाक जीवन था जो उसने जीया था। अत्यधिक कष्टों के बावजूद उसे वफादार रहना पड़ा। परमेश्वर ने इन सबका उपयोग किया, यहाँ तक कि अपने भाइयों के द्वारा ठुकराए जाने पर, उस भलाई को लाने के लिए जिसकी उसने योजना बनाई थी (रोमियों 8:28)। तुम ने तो मुझे हानि पहुँचाना चाहा, परन्तु परमेश्वर ने भलाई ही के लिए बहुतों के प्राणों का बचाव करने की इच्छा की" (उत्पत्ति 50:20)। वह सच्चाई आज भी आपके जीवन पर लागू होती है।

कई मायनों में यूसुफ यीशु का एक प्रतीक था। दोनों को उनके पिताओं द्वारा विशेष रूप से प्रेम किया गया था (उत्पत्ति 37:3; मत्ती 3:17; 12:18), शासक होने के लिए भविष्यवाणी की गई थी (उत्पत्ति 37:5-11; दानियेल 7:13-14; मीका 4:7; 5:2), और आपने भाइयों (उत्पत्ति 37:4-5, 11; यूहन्ना 7:3-5; 15:18-19) द्वारा अस्वीकार कर दिए गए थे जिन्हें उन्होंने क्षमा कर दिया था (उत्पत्ति 45:5, 10-15; लूका 23:34)। प्रत्येक को उनके पिता द्वारा एक विशेष मकसद पर भेजा गया था (उत्पत्ति 37:13, 18-20; मत्ती 21:37-38; मरकुस 12:6-7), फिर अस्वीकार कर दिया गया और उनके खिलाफ साजिश रची गई (उत्पत्ति 37:18-28); यूहन्ना 11:47-53; प्रेरितों के काम 2:22-23)। दोनों मिस्र गए (उत्पत्ति 37:28; मत्ती 2:13-15), उन्हें दास बनाया गया (उत्पत्ति 39:1; फिलिप्पियों 2:7) और वे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा वास किए गए थे (उत्पत्ति 41:38; लूका 4:1; प्रेरितों के काम के कामों के काम) 10:38)। प्रत्येक को अपने आसपास के लोगों को जीवन देने के लिए नियुक्त किया गया था (उत्पत्ति 41:55-57; प्रेरितों के काम 4:12; 1 यूहन्ना 5:11-12)। परमेश्वर ने उनके साथ की गई बुराई को अपनी भलाई के लिए इस्तेमाल किया (उत्पत्ति 45:5-

8; 50:20; प्रेरितों के काम 3:12-18) और दोनों ही उद्धारकर्ता थे (उत्पत्ति 47:25; प्रेरितों के काम 13:23)। यीशु निष्पाप और सिद्ध था (1 पतरस 2:22) और यूसुफ बाइबल में उन बहुत कम लोगों में से एक है जिनके बारे में किसी पाप का उल्लेख नहीं है।

यूसुफ के बाद मिस्र में यहूदी

यहूदी मिस्र में लगभग 400 वर्ष तक रहे, जब तक कि मूसा उन्हें छुड़ाने के लिए नहीं आया। परमेश्वर ने उन्हें वहाँ रखा ताकि वे शुद्ध रहें (देश में अन्यजातियों के साथ विवाह करने से) और उन्हें एक ऐसी जाति में बनाने के लिए जो उसकी सेवा करेगी। दुर्भाग्य से यह उनके लिए एक दर्दनाक प्रक्रिया थी, जैसा कि अक्सर हमारे लिए होता है।

इस्राएल में एक पर्यटक ने एक चरवाहे को अपने भेड़ों के झुंड को भेड़शाला में लाते हुए देखा। सभी अपने आप चल रही थी, लेकिन एक, जिसे वह उसने अपनी गोद उठाया हुआ था इसलिए क्योंकि उसका एक पैर टूट चुका था। यह पूछे जाने पर कि पैर कैसे टूट गया, चरवाहे ने कहा कि उसने इसे खुद तोड़ा है क्योंकि भेड़ जिद्दी थी और चरवाहे से दूर भटकती रहती थी। अपने पैर के टूटने के साथ, भेड़ हर चीज के लिए चरवाहे पर निर्भर होने लगी थी: भोजन, पानी और चलना फिरना। चरवाहे ने कहा कि जब तक उसका पैर ठीक नहीं हो जाता, तब तक भेड़ चरवाहे पर भरोसा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना सीख चुकी होगी, नाकि अपने आप भटकना। परमेश्वर अपने लोगों के साथ वही करता है - फर्क सिर्फ इतना है कि हम इतनी जल्दी नहीं सीखते! वह पूरे इतिहास में, आज तक यही करता रहा है। इसका एक स्पष्ट उदाहरण मिस्र में यहूदियों के साथ जो हुआ वो है।

मिस्र में मिस्र को छोड़ इज़राइल के इतिहास के साथ पृथ्वी पर कोई भी राष्ट्र इतना मिश्रित नहीं है। बुनयादी समय काल से लेकर आज तक, मिस्र और इज़राइल निकटता से जुड़े हुए हैं। जब परमेश्वर ने अब्राहाम, इसहाक, याकूब और यूसुफ से एक राष्ट्र बनाया, तो उसने उनसे कहा कि वे शुद्ध रहें, अविश्वासियों से विवाह न करें। यह उसके लिए अपने लोगों से एक राष्ट्र को विकसित करने के लिए आवश्यक था। लेकिन इसके बजाय उन्होंने अपने आस-पास के अन्यजातियों के साथ विवाह किया और जैसे वे अपने परिवारों में मूर्तियों और अन्य देवताओं को लाए, परमेश्वर में उनका विश्वास फीका पड़ गया। इस प्रकार परमेश्वर को उन्हें उनके खुद से बचाने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ा।

यूसुफ और अकाल के रासते, उसने उन सभी 70 लोगों को मिस्र में स्थानांतरित कर दिया (निर्गमन 1:1-5)। वहाँ उन्हें शुद्ध रहना था और केवल आपस में ही विवाह करना था, क्योंकि मिस्रवासी उनके प्रति बहुत पक्षपाती विचारधारा रखते थे और उनके बीच विवाह तो कर ही नहीं सकते थे। यह उनके लिए, अपने चरवाहे की आज्ञा मानने और उस पर निर्भर रहने को शिक्षित करने का परमेश्वर का एक प्रेममय तरीका था (इब्रानियों 12:5-10; प्रकाशितवाक्य 3:19)। वास्तव में, यह इस्राएल राष्ट्र के लिए एक "समय समाप्त" क्षण। उड़ाऊ पुत्र को अपना पाठ कठिन तरीके से सीखने के लिए संसार में जाना पड़ा। अक्सर हमें भी ऐसा करना पड़ता है।

मिस्र में अंततः यूसुफ और उसके समकालीनों की मृत्यु हो गई (निर्गमन 1:6) और इज़राइल जाति 400 वर्षों में 70 लोगों से 2500000 लोगों की संख्या तक बढ़ गयी (निर्गमन 1:7)। परमेश्वर ने कहा था कि वह उनमें से एक महान राष्ट्र बनाएगा, और परमेश्वर हमेशा अपने वादों को पूरा करता है। हालाँकि, मिस्र कोई पिकनिक मनाने की जगह नहीं था, बल्कि उन्हें शुद्ध और परिपक्व करने के लिए एक भट्टी सा था। वे वहाँ आध्यात्मिक रूप से विकसित होने के लिए रखे गए थे। जब उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो परमेश्वर धीरे-धीरे ताप को और अधिक बढ़ाने लगा था।

योजना 1: श्रम शिविर जब मिस्र में एक नए राजवंश का उदय हुआ जो बाहरी लोगों के प्रति अंदरूनी विरोधता रखता था, जिसके उत्पीड़न का यहूदियों ने समाघात महसूस किया (निर्गमन 1:8)। बाइबिल में, मिस्र एक प्रतीक है, शैतान (फिरौन) के नियंत्रण में विश्व व्यवस्था की एक तस्वीर है। यह भौतिक धन और शक्ति (इब्रानियों 11:26) और शारीरिक ज्ञान और झूठे धर्म (निर्गमन 8:7; 1 राजा 4:30) का स्थान है। यह अपने कलियों, लहसुन और प्याज से साथ शरीरिक मन को आकर्षित करता है। वहां पर परमेश्वर का मन्ना (आसमानी भोजन) नहीं मिलता है। यह परमेश्वर के लोगों को सताता है (व्यवस्थाविवरण 4:20) और अंततः परमेश्वर के न्याय के द्वारा उखाड़ फेंका जाता है (निर्गमन 12:29; 15:4-7)।

फिरौन ने यहूदियों पर जुल्म करके विदेशियों से अपनी नफरत की आग को ठंडा किया। बेशक शैतान हमेशा यहूदी-विरोधी के पीछे की ताकत है जैसे वह मसीहीयों के उत्पीड़न के पीछे की ताकत है। यदि वह सीधे परमेश्वर का मुकाबला नहीं कर सकता है, तो वह उन लोगों पर हमला करता है जिनसे परमेश्वर प्यार करता है - उसके बच्चे।

उन्हें बड़ने से रोकने के लिए (और मिस्र के शत्रुओं के साथ सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए) फिरौन ने उन्हें दासता की कठोर श्रम में डाल दिया (निर्गमन 1:9-14)। यह उन्हें कमजोर करेगा, उन्हें हतोत्साहित और अव्यवस्थित करेगा, और इस से मिस्र की अर्थव्यवस्था को भी मदद मिलेगी। परमेश्वर ने यहूदियों के साथ ऐसा होने दिया ताकि वे सहायता के लिए उसकी ओर फिरे। उसने यह सब उनके लाभ के लिए होने दिया, क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था (भजन संहिता 119:67, 95)।

इन सबके पीछे परमेश्वर ही था। उसने पहले से ही भविष्यवाणी की थी कि वे मिस्र में दास होंगे (उत्पत्ति 15:13)। मिस्र से उनको बंधे रखने के बंधनों को ढीला करने के लिए, कष्ट के तेज ब्लेड का उपयोग किया जाना चाहिए।

उन्हें मिस्री संसार से छुड़ाने और परमेश्वर के लोगों के रूप में अपना स्थान लेने में उनकी सहायता करने में फिरौन परमेश्वर का हथियार था।

एक छोटी बच्ची ट्रेन में यात्रा करती हुई बिना परवाह और चिंता के, सीटों में ऊपर-नीचे कूद रही थी। अचानक ट्रेन एक लंबी, अंधेरी सुरंग में जाती है। वह घबरा गई और तेजी से तुरंत अपने पिता की गोद में भाग गई।

कभी न कभी हम सभी को परमेश्वर की गोद में वापस जाने की जरूरत को देखने के लिए एक सुरंग की जरूरत होती है। मिस्र में दासता एक ऐसी ही घटना थी, फर्क बस यह था कि वे परमेश्वर के पास वापस नहीं आए। फिर भी, परमेश्वर ने अपने वादों को पूरा किया और वे लगातार मजबूत होते गए (निर्गमन 1:12), इसलिए फिरौन एक और योजना लेकर आया।

योजना 2: सूक्ष्म नरसंहार फिरौन दाइयों को सभी नर शिशुओं को मारने का आदेश देकर गर्मी को बढ़ाता है (निर्गमन 1:15-16)। जन्म लेते समय उनकी सांसों को बंद करना और उन्हें मृत पैदा करना एक साधारण बात थी। पुरुषों को मारने से फिरौन के लिए काम करने के लिए स्त्रियां दास के रूप में होंगी, लेकिन उनके खिलाफ लड़ने के लिए कोई सैनिक नहीं होगा। स्पष्ट रूप से इसके पीछे शैतान था - मसीह की वंशावली को नष्ट करने की कोशिश कर रहा था (उसी तरह जैसे उसने बेथलहम में बच्चों को मार डाला था)।

योजना ने काम ना किया, हालांकि, दाइयों ने परमेश्वर को फिरौन से पहले रखा और नर बच्चों को ना मारा (निर्गमन 1:17-19)। परमेश्वर शैतान के विरोध को सीमित करता है, और इसे अपने उद्देश्यों के लिए

उपयोग करता है (रोमियों 8:28)। परमेश्वर अपने उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग करते हुए, अपने लोगों के विरुद्ध शैतान के प्रयासों को नियंत्रित और सीमित करता है। यहाँ इसका उद्देश्य यहूदियों को परमेश्वर की ओर फिरने के लिए प्रेरित करना था।

लोगों का बढ़ना जारी रहा , जैसा कि उसने वादा किया था, और दाइयों को परमेश्वर द्वारा उनकी आज्ञाकारिता के लिए पुरस्कृत किया गया था (निर्गमन 1:20-21)। लेकिन फिरौन/शैतान के साथ अभी तक कुछ नहीं किया गया है!

योजना 3 : नरसंहार को पूरी तरह से खत्म करने के बाद फिरौन ने आग बुझा दी, और यह आदेश दिया कि जन्म लेने वाले प्रत्येक पुरुष को नील नदी में डाल दिया जाए। सभी यहूदियों को परमेश्वर की ओर वापस लाने के लिए , धीरे-धीरे दबाव और खराब होता जाता है। परमेश्वर अपने बच्चों के जीवन में दर्दनाक अनुभव आने देता है, जब वे उससे दूर हो जाते हैं, ताकि वे उसकी ओर फिरें।

एक दिन एक मजदूर एक इमारत की ऊँची सीढ़ी पर फँस गया। उसे नीचे खड़े लोगों में से किसी का ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता थी ताकि वे उसके लिए कोई मदद भेज सकें। उसने पुकारा और किसी ने ना सुना। उसने एक छोटा कंकड़ गिराया लेकिन इस पर किसी का ध्यान ना गया। जिस व्यक्ति को यह गिरकर लगा , उसे भी कुछ ज्यादा महसूस नहीं हुआ। वह बड़ी और बड़ी वस्तुओं को तब तक गिराता रहा जब तक कि यह किसी से जोर से नहीं लगा और उसने ऊपर नहीं देख लिया। परमेश्वर भी यहूदियों के साथ यही कर रहा था। वह उन पर बड़ी और बड़ी वस्तुओं को गिरा रहा था ताकि वे ऊपर देखें और उनका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो। वह आज हमारे साथ भी ऐसा ही करता है। आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसे कितनी बड़ी वस्तु छोड़नी होगी? क्या वह अब आपका ध्यान किसी चीज़ के द्वारा अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है ?

दुर्भाग्य से यहूदियों को उसकी ओर देखने में 80 साल और लगेंगे। तब वे परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार होंगे और मिस्र से मूसा के पीछे हो लेंगे।

कृपया समझें कि सभी कष्ट ईश्वर की ओर से अनुशासन का रूप नहीं है। आपको अपने दिल में पता होना चाहिए कि क्या आपके और परमेश्वर के बीच चीज़ें सही हैं या फिर कु ऐसा है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है। उसकी आत्मा आपको किसी भी गलत चीज़ के लिए दोषी ठहराएगी। सुनिश्चित करें कि आप उस बात को युक्तिसंगत, औचित्यपूर्ण या उसकी व्याख्या नहीं करते हैं जिसके लिए उसकी आत्मा आपको दोषी ठहरा रही है। अगर वह आपको कुछ नहीं दिखा रहा है तो कबूल करने के लिए कुछ भी नहीं है, लेकिन अगर आपके और परमेश्वर के बीच कुछ है तो कृपया इसे अभी स्वीकार करें। याद रखें, "जो लोग प्रभु से प्रेम रखते हैं, उनकी भलाई के लिए सब बातें मिलकर काम करती हैं" (रोमियों 8:28)।

बाइबिल अवलोकन 9

मूसा



मुख्य घटनाएँ: मूसा, मिस्र से छुटकारा

मुख्य लोग: मूसा, हारून, फिरौन

बाइबल की पुस्तकें: निर्गमन-व्यवस्थाविवरण

बाइबल आयत : निर्गमन 33:11 यहोवा मूसा से आमने-सामने बातें करता, जैसे मनुष्य अपने मित्र से बातें करता है।

समय: 1,500 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएं:

भारत में ब्रह्मा की पूजा शुरू होती है

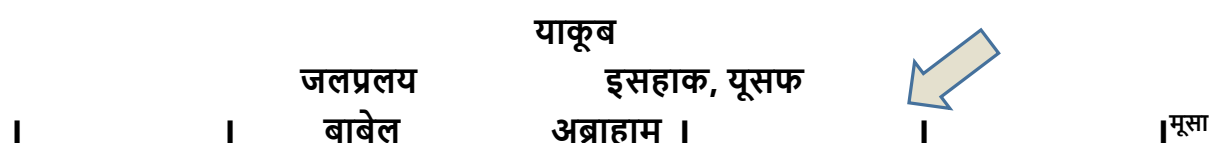
यूनान में माइसीनियन सभ्यता

चीन में शांग राजवंश

मेक्सिको में सूर्य पिरामिड का बनना

मिस्र फिर से मिला जाता है , फैलता है

भौगोलिक स्थान: मिस्र, सीना पर्वत, जंगल



4,000 ई.पू

3,000 ई.पू

2,000 ई.पू

1,000 ई.पू

1 ई.पू



बाइबिल के इतिहास में इस नौवीं समयावधि के दौरान बहुत कुछ हुआ जिसे मूसा नाम से जोड़ा गया है। बाइबिल की शेष संरचना को समझने के लिए कई महत्वपूर्ण आधारभूत सत्य हैं जिनका सीखा जाना जरूरी है। इस दौरान यहूदी मिस्र से चले गए और उनका एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाया और उनका राजा बन गया लेकिन उन्होंने अक्सर उसे अस्वीकार किया और उसकी अवज्ञा की। परिणामस्वरूप वे 40 वर्षों तक जंगल (नक्शे में पर छोटा गोला) में भटकते रहे।

इस समय के दौरान विशेष दिलचस्प यह है कि फसल और अखमीरी रोटी का पर्व इसी दौरान शुरू होता है। वे सब हमारे लिए यीशु और उसके कार्य के बारे में सिखाते हैं और प्रभु भोज के लिए नींव रखते हैं जिसे हम आज भी ग्रहण करते हैं।

इस समय के दौरान साथ ही तम्बू, याजक पद, भेंट और पर्वों के साथ व्यवस्था भी दी गई थी। व्यवस्था देने के साथ, यहूदियों के साथ परमेश्वर का व्यवहार बदल गया। अब वे व्यवस्था के अधीन हैं (निर्गमन 19:1), जो तब तक जारी रहेगी जब तक यीशु मूसा के समय से 1,500 वर्ष बाद क्रूस पर व्यवस्था को पूरा नहीं कर देता (रोमियों 10:4; व्यवस्थाविवरण 18:18; मत्ती 5:17)। मनुष्य अब कानून को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है, लेकिन बार-बार विफल हो जाता है। अंततः उनका कैद में जाना ही उनका न्याय होगा। उत्तरी दस गोत्र, इस्राएल को अशशूर ले जाया जाएगा। कुछ साल बाद दक्षिणी दो गोत्र, यहूदा, को बाबुल ले जाया जाएगा।

फिर भी इस दौरान परमेश्वर की कृपा देखने को मिली। पश्चाताप करने वालों के लिए क्षमा उपलब्ध थी। बलिदान प्रणाली यह दिखाती थी कि एक निर्दोष विकल्प के लहू ने हमारे पापों के लिए भुगतान किया है। परमेश्वर के लंबे धैर्य ने अनुग्रह दिखाया, जैसे उसने राष्ट्र को बने रहने दिया और उसकी सुरक्षा की, भले ही वे इसके लायक नहीं थे। भविष्यवक्ताओं के माध्यम से परमेश्वर ने मसीहा के आने और अंत में पृथ्वी पर उसके शाश्वत शासन की कई भविष्यवाणियां कीं।



मूसा से मिलें

इस समयावधि में मुख्य व्यक्ति, मूसा, बाइबल के सबसे उत्कृष्ट व्यक्तियों में से एक है। वह एक ऐसा व्यक्ति हैं जो अध्ययन के योग्य हैं क्योंकि उस से कई सबक सीखे जा सकते हैं।

पहले चालीस वर्षों में मूसा के पिता, अमरान (निर्गमन 6:20; गिनती 26:59) और उसकी माँ, योकाबेद (निर्गमन 6:20; गिनती 26:59), दोनों ही यहोवा के बहुत ही धर्मी अनुयायी थे। उसकी एक बहन थी, मरियम, जो उसके जन्म के समय 12 वर्ष की थी (निर्गमन 2:4) और एक भाई, हारून, जो उससे तीन वर्ष बड़ा था (निर्गमन 2:7-10; 7:7)। मूसा का जन्म मिस्र में गुलामी में लगभग 1525 ई. पू में हुआ था (निर्गमन 2:2)।

उसके माता-पिता ने उसे 3 महीने तक छुपाया (निर्गमन 2:2; प्रेरितों के काम 7:20; इब्रानियों 11:23) लेकिन फिर उन्हें उसकी देखभाल के लिए उसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर छोड़ना पड़ा। फिरौन की बेटी हत्शेपसट (प्रेरितों के काम 7:20-22) द्वारा थिब्स में उसका पालन-पोषण होते हुए, परमेश्वर ने आश्चर्यजनक रूप से सब कुछ प्रदान किया। उसकी जन्म माँ उसके जीवन के पहले कई वर्षों तक उसके साथ थी (लूका 22:25-26)। मिस्र के राजकुमार और सिंहासन के उत्तराधिकारी के रूप में, उसके पास सबसे अच्छी शिक्षा थी। वह नेतृत्व और विद्वता कौशल में बहुत कुशल हो गया। उसके पास वह सब कुछ था जो कोई माँग सकता था - सब कुछ लेकिन आत्म-संयम! कुछ लोग कह सकते हैं कि वह ऐशो आराम में खराब हो गया था। मूसा ने देखा कि उसकी माँ जो चाहती है उसे पाने के लिए अपने क्रोध का उपयोग करती है। अपने बचपन के दौरान, जब उसे आत्म-संयम सीखना चाहिए था (विलापगीत 3:26-27), वह बस वही करना सीख रहा था जो वह चाहता था।

फिर वह समय आया जब उसे निर्णय लेना था: या तो मिस्र के साथ रहो और अगला फिरौन बनो या फिर परमेश्वर के लोगों, यहूदियों के साथ जाने के लिए सब कुछ छोड़ दो (इब्रानियों 11:24-26)। उसके लिए अपनी दृढ़-इच्छाशक्ति वाली मिसरी माँ को "नहीं" कहना बहुत कठिन था। वह उसे अगला फिरौन बनने के लिए तैयार कर रही थी, जो उसे मिस्र में धार्मिक व्यवस्था का सर्वोच्च अधिकारी भी बनाता। दुर्भाग्य से उसने यह अपनी ताकत से करने की कोशिश की, क्योंकि उसे जीवन में सब कुछ इसी तरह करने की आदत थी। जब उसने एक मिस्री को एक यहूदी को पीटते हुए देखा तो उसका क्रोध भड़क उठा और उसने हिंसा के साथ प्रतिक्रिया की (प्रेरितों के काम 7:23-29)। जबकि परमेश्वर ने क्रोध को अच्छा कार्य करने के लिए एक सकारात्मक प्रेरक होने के लिए बनाया है (इफिसियों 4:26), यह, दर्द, चोट, हताशा या भय जैसी अधिक बुनियादी भावना के लिए एक दूसरी भावना है, एक गलत प्रतिक्रिया है।

मूसा अपनी मन मर्जी के अनुसार हालातों को ना बदलते देख कर निराश था, इसलिए उसने स्थिति को नियंत्रित करने की कोशिश करने के लिए क्रोध का इस्तेमाल किया। वह पाप था। परिणामस्वरूप उसने हत्या कर दी और वहां से भाग गया (प्रेरितों के काम 7:25-29; निर्गमन 2:15)। वह 40 वर्ष का था और उसने अपने को घर से दूर, सब कुछ खो कर अपने को खली और खोया हुआ पाया - यह सब उसके क्रोध के कारण था।

दूसरे चालीस वर्ष जब वह मिद्यान पहुंचा तो उसने पाया कि युवतियों का फायदा उठाया जा रहा है और उनके साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है (निर्गमन 2:15-21)। इस बार उसकी प्रतिक्रिया धर्मी आक्रोश थी, नाकि एक आत्मकेंद्रित क्रोध, और उसने दुर्व्यवहार करने वालों को खदेड़ दिया और महिलाओं की रक्षा की। इसके कारण परमेश्वर ने उसे उस परिवार के साथ परिवार की सबसे बड़ी बेटी, सिप्पोरा को उसकी पत्नी के रूप में रखा (निर्गमन 2:21-22)। उनके दो बेटे थे (निर्गमन 18:3-4)। वह जंगल में अकेले भेड़ों को देखने में बहुत समय बिताता था। परमेश्वर इस समय का उपयोग उसे अनुशासन सिखाने, उसे विनम्र करने और उसे धैर्य और संतोष सीखने के लिए कर रहा था। परमेश्वर के साथ अकेले समय के दौरान मूसा ने उसके बारे में बहुत कुछ सीखा, और उन चीजों को लिखने के लिए प्रेरित किया गया जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही थीं। उसने शायद इसी समय उत्पत्ति और अय्यूब की पुस्तकें लिखी थीं। परमेश्वर प्रेमपूर्वक और धैर्यपूर्वक उस पर और उसके द्वारा कार्य कर रहा था।

अंततः फिरौन जो उसे मारना चाहता था मर गया और दूसरे ने उसका स्थान ले लिया (निर्गमन 2:23-25)। यहूदी गुलामी में कराह रहे थे, और परमेश्वर से याचना कर रहे थे कि उनके लिए एक छुड़ानेवाला भेज दे। एक दिन परमेश्वर ने मूसा को उन्हें मिस्र से बाहर ले जाने के लिए बुलाया, लेकिन वह ऐसा नहीं करना चाहता था। वह, परमेश्वर की योजना पर वह 5 बहाने और आपत्तियों ले कर आया, लेकिन अंत में हार गया जब परमेश्वर स्वयं मूसा पर क्रोधित हो गया (निर्गमन 3:1-4:18)!

ऐसा लगता है कि जब परमेश्वर और भी क्रोधित हो गया जब उसने वापसी शुरू की, क्योंकि उसने अपने दूसरे बेटे का खतना करने के मामले में पूरी तरह से उसकी बात नहीं मानी थी (निर्गमन 4:20-26)। इस वजह से परमेश्वर ने मूसा को शारीरिक रूप से पीड़ित किया, वह सोचने लगा कि वह मर ही रहा है। इससे पहले कि मूसा परमेश्वर की आज्ञाकारिता में राष्ट्र का नेतृत्व कर सके, उसे इस तरह से अपने परिवार का नेतृत्व करना था (1 तीमथियुस 3:4-5)। परमेश्वर चाहता है कि जो उसकी सेवा करते हैं वे पवित्र हों (1 पतरस 1:15-16)। अपने पति की जान बचाने के लिए जिप्पोरा को लड़के का खतना करना पड़ा। ऐसा करने के बाद वह अपने घर वापस जाने के लिए निकल गई। बाद में उसका पिता उसे मूसा से मिलने के लिए ले आया लेकिन विद्वान इस बात से असहमत होते हैं कि उनमें कभी कोई मेल-मिलाप

हुआ या नहीं (निर्गमन 18:1-5)। हालांकि इस दौरान वह अकेले ही चला गया। 80 वर्ष की आयु में वह वापस मिस्र चला गया!

तीसरे चालीस वर्ष परमेश्वर स्वयं मूसा के साथ था, और उसने उसके भाई हारून को उसकी सहायता के लिए भेजा (निर्गमन 6:28-30), लेकिन फिरौन ने निश्चित रूप से सहयोग नहीं किया (निर्गमन 7:1-13)। जल्द ही यहूदी भी उससे नाराज़ हो गए (प्रेरितों के काम 7:39-43)। वह बीच में ही फंस गया! परमेश्वर ने 10 विपत्तियों की एक श्रृंखला भेजी, जो उन सभी के पहलौठे की मृत्यु के साथ समाप्त हुई, जिन्होंने परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए समर्पण नहीं किया था, और इस तरह यहूदियों को मिस्र छोड़ने की अनुमति दी गई थी (निर्गमन 7:14-12:42)। मिस्रियों को नष्ट करने के लिए परमेश्वर ने लाल समुद्र में एक जाल का उपयोग किया और यहूदी स्वतंत्र थे (निर्गमन 13:17-15:21)! आपको लगता है कि वे लोग आभारी और प्रसन्न होंगे, लेकिन वे नहीं थे! वे हर बात की शिकायत करते रहे (निर्गमन 14:22-16:12)।

जब यहूदी सीनै पर्वत पर पहुंचे, तो मूसा परमेश्वर की व्यवस्था लेने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। जब वह नीचे आया तो यहूदियों ने भयानक, अनैतिक उपासना के साथ बाल की पूजा करने के लिए एक सोने का बछड़ा बना लिया था। परमेश्वर उन पर क्रोधित हुआ, और ऐसा ही मूसा भी था। उसने परमेश्वर से दया करने और उन्हें बख्शने के लिए प्रार्थना की, और परमेश्वर ने वैसा ही किया। उसने उन पर अपना गुस्सा निकाला, हालांकि - पहले उसने परमेश्वर की खुदी हुई तख्तियों को तोड़ा (उसने फिर से मूसा को दे दिया, लेकिन इस बार उसे इनको खुद बनाना पड़ा)। मूसा ने मूर्ति को मिट्टी में मिला दिया और उस चूर्ण को उस जल में डाल दिया जो उन्हें पीने को था।

आखिरकार यहूदी वहाँ से कादेश बर्ने में चले गए, जहाँ वे परमेश्वर पर भरोसा करने और देश में प्रवेश करने से डरते थे, इसलिए उन्हें 40 वर्ष तक भटकना पड़ा। परमेश्वर अभी भी उनके साथ था और उनके लिए प्रावधान प्रदान करता था, लेकिन राष्ट्र के अविश्वास रूपी पाप से उसकी संगति टूट गई थी। जब कोरह ने विद्रोह किया, तो परमेश्वर ने उसे और उसके पूरे परिवार को निगलने के लिए शीघ्र ही पृथ्वी को खोल दिया। इस दौरान अच्छी चीजें भी हो रही थीं। मूसा ने इस दौरान निर्गमन और गिनती की पुस्तकें लिखीं। फिर भी, यह समय की बर्बादी थी क्योंकि इस्राएल शारीरिक था, परमेश्वर के साथ संगति से बाहर था। तब यह फिर हुआ। फिर से। यहूदियों ने पर्याप्त पानी नहीं होने की शिकायत की। वे हमेशा किसी ना किसी बात की शिकायत करते रहते थे। मूसा को यह हृदय से ज्यादा लगने लगा और फिर से उन पर अपना आपा खो दिया (गिनती 20)। परिणामस्वरूप उसे वादा की गई भूमि में प्रवेश करने की अनुमति ना मिली। हालांकि, परमेश्वर ने उसे यह देखने दिया था। मूसा 120 वर्ष की आयु में मर गया, अपने क्रोध के कारण परमेश्वर के सिद्ध स्थान में प्रवेश नहीं कर सका। अपने क्रोध पर ध्यान दें - यह आपको परमेश्वर की सिद्ध इच्छा से भी दूर रखेगा (इफिसियों 4:1-2, 26, 31; कुलुस्सियों 3:12-13)।



निर्गमन :

छुटकारा

शीर्ष : यूनानी मतलब "प्रस्थान, बाहर, बाहर का रास्ता"

लेखक: मूसा

लेखन की तिथि: लगभग 1440 ई.पू

लेखन का स्थान: रेगिस्तान का जंगल

शामिल समयकाल : 1875 ईसा पूर्व से 1444 ईसा पूर्व तक

प्राप्तकर्ता: यहूदी लोग

मुख्य आयत : इसलिए मैं उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाने, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में ले आने को आया हूँ, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, जो कनानियों, हितीयों और अमोरियों, परिज्जीयों, हिव्वीयों और यबूसीयों का घर है।(निर्गमन 3:8)

मुख्य शब्द: "छुड़ाना , आजाद करना " (10 बार)

उद्देश्य: यह दिखाने के लिए कि इस्राएल मिस्र से कैसे निकला (उत्पत्ति 15:12-16 का पूरा होना) और उसने परमेश्वर की व्यवस्था को कैसे प्राप्त किया।

विषय: विश्वासी का छुटकारे निर्गमन द्वारा चित्रित किया गया है ।

कुछ साल पहले एक लड़के ने लकड़ी से किशती का एक माडल बनाया था। उसने इसकी नक्काशी करने में, रगड़ने में और रंग करने में कड़ी मेहनत की। वह इसे अपने घर के पास एक धारा पर चलाना पसंद करता था। हालांकि, एक दिन, यह उससे दूर हो गई , और उसे नीचे की ओर चली गई । उसने इसे वापस लाने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं हो पाया। हार से बहुत दुखी होकर घर चला गया। कई दिनों बाद, शहर से गुजरते हुए, उसने अपनी किशती को एक खिलौने की दुकान की खिड़की में

देखा, जिसकी कीमत की पर्वी उससे जुड़ी हुई थी। उसे जल्दी ही कुछ छोटे मोटे काम मिल गए, और वह तब तक कड़ी मेहनत करता रहा जब तक कि वह अपनी किशती को वापस खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे बचाने में सक्षम नहीं हो गया। उस लड़के ने जो किया वह बाइबल का शब्द "छुटकारे" को दर्शाता है। इसका अर्थ है "वापस खरीदना" जो मूल रूप से आपका था। यह शब्द मूल रूप से एक गुलाम मालिक के लिए इस्तेमाल किया जाता था जिसे अपने भगोड़े गुलाम को वापस खरीदना होता था। परमेश्वर ने हमारे लिए जो किया है, उसका यह एक आदर्श चित्र है। हम सृष्टि के द्वारा उसके हैं, लेकिन विद्रोह करके और पाप में भाग गए, इसलिए उसको हमें वापस खरीदने के लिए कीमत चुकानी पड़ी (यीशु को क्रूस पर) ("हमें छुड़ने के लिए")।

उत्पत्ति और निर्गमन उत्पत्ति मनुष्य की असफलता को दर्शाती है। उत्पत्ति मनुष्य के चलने और परमेश्वर के साथ बात करने से शुरू होती है, लेकिन पाप प्रवेश करता है, और पुस्तक के अंत तक मनुष्य मिस्र में फिरौन (शैतान का एक प्रतीक) (परमेश्वर रहित विश्व व्यवस्था का एक प्रतीक) के बंधन में फंसा हुआ दिखाई देता है। निर्गमन में हम परमेश्वर को मनुष्य के बचाव के लिए आते हुए देखते हैं, उसे बंधन से बाहर निकालने के लिए, उसे "मुक्त" करने के लिए। यह लहू (फसह का मेमने) और शक्ति (लाल सागर द्वारा छुटकारे) द्वारा किया जाता है।

फसह का मेमना जिस तरह उत्पत्ति 12 उत्पत्ति की पुस्तक में मुख्य अध्याय है (अब्राहाम के चुने जाने के बारे, सभी को परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए छोड़ने, और परमेश्वर की अनन्त प्रतिज्ञाओं को उसे और उसके वंशजों को सूचीबद्ध करने के बारे बताता है), इसी तरह से निर्गमन 12 इस पुस्तक का प्रमुख अध्याय है। यह फसह के मेमने के बारे, छुटकारे के लिए निर्दोष खून बहाए जाने के बारे में बताता है। यह यीशु का एक सुंदर चित्रण है, इस चित्रण की पूर्ति (1 पतरस 1:18-19; यूहन्ना 1:29, 36; 1 कुरिन्थियों 5:7)। जरूरी था कि मेमने सिद्ध और बेदाग हो, अपनी जवानी के प्रमुख स्तर हो। यह वही है जो निसान की 14 तारीख को दोपहर के करीब 3 बजे लोगों के विकल्प के रूप में मर गया (ठीक उसी दिन और जिस समय यीशु की क्रूस पर मृत्यु हुई)। फिर लहू को विश्वास करने वालों के घरों की चौखट पर लगाया गया। मेमने की मृत्यु से तब तक छुटकारा नहीं हुआ जब तक कि इसे व्यक्तिगत रूप से स्वीकार और लागू नहीं किया गया। जो अंदर थे वे न्याय से सुरक्षित थे। चौखट, चौखट के ऊपर, और दलहीज (जहां मेमना मारा गया था) पर खून एक क्रूस के नमूने में था। अंदर उन्होंने मेमने का मांस (मसीह से पोषण) खाया।

जब मृत्यु के दूत ने उस लहू को देखा जो उसके ऊपर से गुजरता हुआ आगे चला गया, क्योंकि यह इस बात की एक तस्वीर थी कि मृत्यु पहले ही आ चुकी थी। दोषी लोगों के स्थान पर विकल्प की मृत्यु हो गई। इस प्रकार वे मेमने के लहू के द्वारा "मुक्ति" किए गए। परमेश्वर ने अनंत मूल्य की कीमत के साथ वह वापस खरीदा जो मूल रूप से सृष्टि द्वारा उसका ही था। इस देश के शुरुआती दिनों में, अग्रदूतों को अक्सर महान जंगली घास की आग से नष्ट कर दिया जाता था जो मैदानी इलाकों में मीलों पार फैल जाती थी और अपने रास्ते में आने वाले सब कुछ और हर चीज को नष्ट कर देती थी। यह उन्होंने भारतीयों से सीखा कि जब उन्हें पता चला कि ऐसी आग आ रही है तो उन्हें अपने घर के चारों ओर की सभी घासों में आग लगा देनी चाहिए। इस प्रकार जब मुख्य आग गरजती हुई आई तो वे सुरक्षित थे क्योंकि, जैसा कि भारतीयों ने कहा, "जहाँ आग लगी हो वहाँ आग नहीं आ सकती।" यह परमेश्वर के न्याय के बारे में भी सच है। जब हम यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं तो हम परमेश्वर के किसी भी न्याय से हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाते हैं (रोमियों 8:1)।

खमीर क्योंकि रोटी को फूलने का समय नहीं था, उन्होंने जल्दी से बिना खमीर के रोटी पकाई और उसे खा लिया। बाइबल में खमीर का उपयोग पाप के प्रतीक के रूप में किया गया है (मत्ती 16:6, 11-12; 1 कुरिन्थियों 5:6-8; गलतियों 5:9)। सदियों से यहूदियों ने मिस्र से इस छुटकारे को अंगूर का रस (मेमने के खून की एक तस्वीर) पीकर और मात्ज़ो (अखमीरी रोटी) खाकर मनाया है। यह उनके लिए परमेश्वर के महान छुटकारे की यादगार था, जो पुराने नियम का मुख्य चमत्कार था। उत्पत्ति 1 से निर्गमन 11 इसे इंगित करता है और निर्गमन 13 से मलाकी के अंत तक पुराना नियम इस घटना को अपने लोगों के लिए परमेश्वर के कार्य के मुख्य आकर्षण के रूप में देखता है।

नए नियम में यीशु इस रस को अंगूर और अखमीरी रोटी को लेता है और कहता है कि यह अब शारीरिक छुटकारे के लिए नहीं बल्कि पाप और शैतान से आत्मिक उद्धार के लिए है एक प्रतीक है। यीशु सिखाता है कि इनकी वास्तविक पूर्ति उसके अपने शरीर और लहू में थी, और यह कि अब हमें इसे प्रभु भोज के रूप में मनाना है, जो परमेश्वर के सभ से महानतम छुटकारे की याद दिलाता है (मरकुस 14:22-24)।

तम्बू निर्गमन की पुस्तक में दूसरा महान शिक्षण का उपकरण तम्बू है। यह भी सब कुछ यीशु के बारे में दिखाता है।

निर्गमन की रूपरेखा

I. आवश्यकता: दासता (बंधन सहने वाले परमेश्वर के लोग) 1-6

क- मिस्र में बंधन 1

ख- उद्धारकर्ता का जन्म (मूसा) 2

ग- उद्धारकर्ता की पुकार (मूसा) 3-6

II. प्रावधान: उद्धार (परमेश्वर की कृपा छुटकारे को प्रकट करती है) 7-18

क- अविश्वास पर निर्णय (10 विपत्तियाँ) 7-10

ख. छुटकारे की कीमत (फसह) 11-12

ग- छुड़ाए गए लोगों का उद्धार (लाल सागर के माध्यम से) 13-15

घ- छुड़ाए गए लोगों की यात्रा (सीने पर्वत तक) 16-18

III. परिणाम: पवित्रीकरण (परमेश्वर की महिमा का आराधना में प्रकट होने) 19-40

क- छुड़ाए गए लोगों का जीवन (कानून और समारोह) 19-24

ख- छुड़ाए गए लोगों की आराधना (तम्बू) 25-31, 35-40

ग- छुड़ाए गए लोगों की विफलता (गोल्डन बछड़ा) 32-34

लैव्स्था: पवित्र जीवन



शीर्षक: "लेवीयों से संबंधित" यूनानी

लेखक: मूसा

लेखन की तिथि: 1444 ई.पू.

लेखन का स्थान: सीने पर्वत

समय शामिल: 1444 ई.पू. में कुछ सप्ताह

प्राप्तकर्ता : यहूदी, खासकर लेवीवंशी

मुख्य वचन: तू मेरे लिये पवित्र होना, क्योंकि मैं यहोवा पवित्र हूँ, और मैं ने तुझे अन्यजातियों में से मेरी अपनी प्रजा होने के लिए अलग किया है। लैव्स्था 20:26

मुख्य शब्द: पवित्र/पवित्र करना (131x); बलिदान (300x);

शुद्ध / अशुद्ध (200x); प्रायश्चित (36x)

उद्देश्य: इस्राएल को पवित्र जीवन जीने का निर्देश देना, परन्तु लेवीयों को सेवा करना सिखाना।

विषय : पवित्र लोग पवित्रता की भावना से पवित्र परमेश्वर की आराधना करते हैं।

कोई भी कानूनों और नियमों की किताब पढ़ना पसंद नहीं करता है। जब तक किसी के पास कोई विशेष कारण ना हो, यह बहुत ही अरोचक अध्यन होता है। लैव्यव्यवस्था को पढ़ने में भी ऐसा ही हो सकता है। इसे पढ़ना आपके स्थानीय शहर के नियमों को पढ़ने जैसा , बिल्डिंग कोड और कानूनों को पढ़ने जैसा है। रोमांचक लगता है कि नहीं ? उत्पत्ति का पढ़ना एक अच्छा पाठ है, और निर्गमन रोमांचक शुरू होता है, लेकिन जब तक हम लैव्यव्यवस्था में पहुँचते हैं तब तक हम अक्सर नीचे गिर जाते हैं और कभी भी बाइबल को पूरा नहीं पढ़ते हैं। कितनी शर्म की बात है। कानून पढ़ना रोमांचक तो नहीं है, लेकिन कानूनों और नियमों के बिना हम कहां पर होंगे?

उत्पत्ति, निर्गमन और लैव्यव्यवस्था उत्पत्ति समस्या को दर्शाती है: मनुष्य पापी है और यही उसे परमेश्वर से अलग करता है। निर्गमन समाधान दिखाता है: परमेश्वर उसकी ओर से निर्दोष लहू बहाकर छुटकारा प्रदान करता है। फिर क्या? यदि बाइबल निर्गमन 12 के बाद समाप्त हो जाती है, तो हम मान लेते हैं, और कि ऐसा ही ठीक है, कि उद्धार के साथ काम समाप्त था। हम यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं और बस इतनी ही बात है। हालाँकि बाइबल वहाँ समाप्त नहीं होती है। होने व करने को और भी बहुत कुछ है, और वह है परमेश्वर के लिए एक पवित्र जीवन जीना। जब मनुष्य अपनी आवश्यकता (उत्पत्ति) को देखता है और परमेश्वर के प्रावधान (निर्गमन) को स्वीकार करता है, तब उसे परमेश्वर के लिए एक पवित्र जीवन (लैव्यव्यवस्था) जीना होता है। हम जो कुछ भी करते हैं उसमें हमें परमेश्वर की आराधना और सेवा करनी होती है। बाकी बाइबल निर्देश देती है कि यह कैसे करना है। लैव्यव्यवस्था ने छुड़ाए हुए यहूदियों को सिखाया कि परमेश्वर की सेवा में कैसे पवित्र जीवन जीना है।

बलिदान पुराने नियम की बलिदान प्रणाली परमेश्वर द्वारा याद दिलाने वाला एक कार्य था कि पाप का भुगतान निर्दोष रक्त बहाए जाने के द्वारा किया जाना था। यह मुक्ति (मेरे के लहू को लागू करना) और फिर उद्धार (बलिदान) के बाद पाप के कृत्यों से शुद्ध होने की दैनिक आवश्यकता के बारे में की सचाई है। इन बलिदानों ने यीशु को इस रूप में चित्रित किया कि वह निर्दोष और सिद्ध था। ध्यान देने योग्य एक महत्वपूर्ण सत्य यह है कि : जानबूझकर किये गए , होशो हवाश में किये गए , इरादतन किए गए पाप के लिए क्षमा का कोई प्रावधान नहीं था। बलिदान केवल अज्ञानता में हुए पापों के लिए था। परमेश्वर अन्य पापों को क्षमा तो करता , परन्तु केवल उसकी अपनी दया से। आज हमें क्षमा की आश्वासन दीया गया है (1 यूहन्ना 1:9)।

याजकीय सेवकाई याजक परमेश्वर और मनुष्य के बीचवया होता था (जो यीशु की एक और तस्वीर है)। उसके सभी वस्त्र और उनके रंग यीशु के बारे में सिखाते थे, जैसा कि तम्बू सिखाता था। लैव्यव्यवस्था में याजकों के कर्तव्यों और कार्यों का विवरण दिया गया है।

प्रायश्चित का दिन प्रायश्चित का दिन, निर्गमन 16, पुस्तक का मुख्य अध्याय है। "प्रायश्चित" का अर्थ है ढकना, हटाना, मिटा देना। इस दिन परमेश्वर द्वारा राष्ट्र के पापों को क्षमा किया जाता था। दो बकरों को लिया जाता , एक को मार दिया गया और उसका खून इकट्ठा कर लिया गया। कुछ रक्त महायाजक द्वारा ले जाया गया था, उसके टखने के चारों ओर एक रस्सी बंधी होती थी कि अगर कहीं परमपवित्र स्थान में परमेश्वर ने बलिदान को स्वीकार नहीं किया और उसे मार डाला तो वे उसे खींच कर बाहर निकाल सकें। जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं तो हम आश्वासन के साथ प्रवेश करते हैं कि वह सुनेगा और हमें स्वीकार करेगा केवल उसके कारन जो यीशु ने क्रूस पर क्या किया था (इब्रानियों 10:19)। शेष लहू दूसरी बकरी पर छिड़का जाता था , जिसे जंगल में भेज दिया जाता था। यह 'बलि का बकरा' पापों को उठाये ले जाने चित्रित करता है।

कानून, कानून और अधिक कानून लैव्यवस्था की पुस्तक मनुष्य का एक दूसरे के साथ और परमेश्वर के संबंधों को नियंत्रित करने के लिए बनाये गए सभी प्रकार के कानूनों से भरी हुई है। यौन नियम, मृत्युदंड, स्वच्छता (स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी भावनाएं), और अन्य कानून सभी लोगों के खुद के लाभ के लिए हैं। कानून उनकी सुरक्षा और उनके आनंद के लिए हैं, ना कि जीवन को कठिन बनाने और 'जिन्दगी के अनंद को' छीनने के लिए। साप्ताहिक और वार्षिक दावतें भी परमेश्वर के अपने लोगों को उसकी सच्चाई सिखाने के तरीके का हिस्सा होती थी। वे सभी यह दिखाते हैं कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता में पवित्र, प्रतिबद्ध जीवन जीना कितना महत्वपूर्ण है। आज हम अनुग्रह के अधीन रहते हैं, व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु परमेश्वर को अभी भी अपने लोगों से पवित्रता और आज्ञाकारिता की आवश्यकता है।



लैव्यवस्था की रूपरेखा

I. परमेश्वर का मार्ग: पवित्र बलिदान (याजक) 1-10

क- स्वेच्छिक बलिदान (भुना, अनाज, शांति) 1-3

ख- अनिवार्य बलिदान (पाप, अतिचार) 4-7

ग- याजकीय 8-10

II. परमेश्वर के साथ काम करना: पवित्र सेवा (पर्व) 11-27

क- व्यक्तिगत पवित्रता (पवित्रता के नियम) 11-15

ख- राष्ट्रीय पवित्रता 16-20

ग- याजकीय पवित्रता 21-23

घ- भविष्य की पवित्रता 24-27

गिनती :

विश्वास से चलना



शीर्षक: जनगणना से (पुस्तक की शुरुआत और अंत।)

लेखक: मूसा

लेखन की तिथि: लगभग 1405 ई.पू

लेखन का स्थान: मोआब

शामिल किया गया समय: 39 वर्ष (1440-1405)

प्राप्तकर्ता: यहूदी

मुख्या आयत : गिनती 10:29 मूसा ने मिद्यानी रूएल के पुत्रा होबाब से, जो मूसा का ससुर था , कहा, हम उस स्थान के लिथे कूच कर रहे हैं, जिसके विषय में यहोवा ने कहा, मैं यह तुमें दूंगा। हमारे संग आओ और हम तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, क्योंकि यहोवा ने इस्राएल से अच्छी वस्तुओं की प्रतिज्ञा की है।”

मुख्य शब्द: "जंगल" (45 बार)

उद्देश्य: यह दर्ज करने के लिए कि जब यहूदी सीने पर्वत से चले तब क्या हुआ और कैसे वे अपने अविश्वास के कारण जंगल में मर गए।

विषय : मनुष्य की बेवफाई के बावजूद परमेश्वर की वफ़ादारी। मनुष्य को विश्वास से चलना है।

बहुत बार पुराने नियम को केवल इतिहास के रूप में देखा जाता है - पुरानी कहानियों का एक समूह जिनकी आज के लिए कोई प्रासंगिकता नहीं है। परन्तु यह सच नहीं है। परमेश्वर ने पुराने नियम को आज हमारी बाइबल के भाग के रूप में रखा है क्योंकि यह कई मायनों में अमूल्य है। एक बात तो है , सभी ऐतिहासिक कहानियाँ आज से संबंधित हैं और हमें सिखाती हैं। पौलुस ने स्वयं कहा था कि निर्गमन और गिनती की घटनाओं को हमारे आज के लिए उदाहरण के रूप में दर्ज किया गया है ताकि हम इन से

सीख सकें (1 कुरिन्थियों 10:1-12)। अगर हम इनसे सीखने की चूक कर जाते हैं तो हम खुद ब खुद आपने आप को वही गलती करने के लिए तह करते हैं ।

I. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता (गिनती 1-12) गिनती की पुस्तक लोगों की जनगणना के साथ शुरू होती है। इसका उद्देश्य लड़ने वाले पुरुषों की एक सेना जुटाना है क्योंकि युद्ध सामने है। उत्पत्ति मनुष्य के पाप और लाचारी को दिखाती है (वह पाप से नहीं लड़ सकता)। निर्गमन से पता चलता है कि परमेश्वर मनुष्य के छुटकारे के लिए लड़ रहा है (जो उद्धार हम अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते)। लैव्यव्यवस्था सिखाती है कि कैसे एक पवित्र जीवन (लड़ाई की तैयारी) जीना है। गिनती से पता चलता है कि लड़ाई शुरू हो गई है। हम पाप के साथ लड़ाई में हैं। हमें ऐसे आगे बढ़ना है जैसे एक मसीही गीत में लिखा है " यीशु के सिपाही आगे कदम मार "।

परमेश्वर ने लोगों को जिम्मेदारी सौंपी (गिनती 2-4)। परमेश्वर व्यवस्थित है। परमेश्वर के प्रत्येक व्यक्ति को एक कार्य सौंप दिया जाता है, और यदि वे अपना कर्तव्य नहीं करते हैं तो दूसरों को भी कष्ट होता है।

तब लोगों को शुद्ध किया जाता है (गिनती 5) और पवित्र किया जाता है (गिनती 6 - 10), जाने के लिए तैयार। हालाँकि वादा किए गए देश के रास्ते में वे फिर से शिकायत करने लगते हैं (गिनती 11-12)। परमेश्वर ने इससे घृणा की (भजन संहिता 95:10-11)। जब किसी को गुलामी से छुड़ाया गया और स्वास्थ्य, भोजन और एक वादा किया गया घर दिया गया तो कोई कैसे शिकायत कर सकता है? हमारे पास तो इससे और भी बेहतर है, जब हम शिकायत करते हैं तो परमेश्वर को इससे कितनी नफरत होनी चाहिए! यह सिर्फ उसकी प्रशंसा करने की कमी, स्वार्थ, आत्म-केंद्रितता और पाप को दर्शाता है!

II. मनुष्य की विफलता (गिनती 13-20:13) अब बड़ी परीक्षा आती है - परमेश्वर पर भरोसा रखें कि वह उन्हें वह भूमि देगा जिसका उसने वादा किया है। दानवों (जो निश्चित रूप से परमेश्वर से बड़े नहीं हैं) से उनका डर उन्हें परमेश्वर पर भरोसा करने और भूमि में प्रवेश करने से रोकता है। आपके जीवन में कौन से 'दानव' आपको परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानने से रोकते हैं? क्या वे परमेश्वर से बड़े हैं?

यहूदी डर गए, उन्होंने अवज्ञा की, विद्रोह किया, मूसा और हारून को मारने की कोशिश की, और नए अगुओं को चुनने लगे जो उन्हें वापस मिस्र देश में ले जाने के लिए उनकी अगुवाई करें। अपनी घृणा में, परमेश्वर ने कहा कि वे भूमि में प्रवेश करने में सक्षम नहीं होंगे। वास्तव में, यह मूसा की विनती और याचना ही थी जिस पर परमेश्वर दया आई और उसे पूरे राष्ट्र को नष्ट करने से रोक लिया। उन्हें तब तक बिना सोचे-समझे आश्चर्य करना पड़ता था जब तक कि मिस्र से निकले सभी वयस्कों (40 से अधिक) की मृत्यु नहीं हो जाती और बच्चे बड़े नहीं हो जाते। तब परमेश्वर उन्हें स्वयं निर्णय लेने का अवसर देता। यह 40 साल और लाखों जीवन की बर्बादी थी, यह सब हुआ अवज्ञा के कारण था!

मूसा ने खुद ज्यादा बेहतर प्रदर्शन नहीं किया। क्रोध के साथ एक जीवन भर की समस्या का अंत उसके साथ फिर से क्रोध करने में हुआ (अध्याय 20) और यही उसके लिए वादा किए गए देश में प्रवेश ना करने में सक्षम होने का कारण था। क्रोध जो नियंत्रित नहीं किया जाता है, भयानक परिणाम लाता है, जैसा कि मूसा का जीवन दिखाता है।

III. मनुष्य की विफलता के लिए परमेश्वर का प्रावधान (गिनती 20:14-36) मनुष्य की निरंतर विफलता के बावजूद, परमेश्वर वफादार बना रहा। उसने एदोम, अराद, श्योन और ओग से यहूदियों की रक्षा की (गिनती 20-21)। उसने उन्हें अज्ञात खतरे से बचाया (बालाम - गिनती 22-26)। एक और जनगणना के बाद नई पीढ़ी को युद्ध में अपनी बारी के लिए तैयार करना (गिनती 26) और निर्देश देना कि कैसे भूमि को विभाजित किया जाए (गिनती 26, 31-34) मूसा (गिनती 27) की जगह, यहोशू को नेतृत्व के लिए पदोन्नत किया जाता है। मूसा के पास इस नई पीढ़ी के लिए कुछ अंतिम उपदेश होंगे, जो इस बात की समीक्षा करेंगे कि पहले जो हुआ है और उन्हें वही गलतियाँ न करने के लिए चुनौती देना है। वह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक है।

गिनती की रूपरेखा

I. परमेश्वर की आस्था (पुरानी पीढ़ी) 1-12

क- सीने पर्वत पर प्रतीक्षा करना 1-10:10

1. लोगों की गिनती होती है 1
2. लोग डेरा डालते हैं 2-4
3. लोगों की सफाई की जाती है 5
4. लोगों को पवित्र किया जाता है 6-10:10

ख. कादेश-बरनिया तक पैदल चलना 10:11-12

1. लोगों का काफ़ला बनता है 10:11-11
2. लोग शिकायत करने लगते हैं 11-12

II. मनुष्य की विफलता (मृत्यु) 13-20:13

कादेश-बरनिया में भूलते भूलते

क- भगवान की अवज्ञा/तौहीन (12 जासूस) 13-14

ख- परमेश्वर की ओर से अनुशासन (कोरह, मूसा पाप करता है) 15-20:13

III. मनुष्य की विफलता के लिए परमेश्वर का प्रावधान (नई पीढ़ी) 20:14-36

क- मोआब तक चलना (हारून, यहूदी मरते हैं) 20:14-21

ख- मोआब में प्रतीक्षारत 22-36

1. बालाम सव्धाम्त्याग करता है 22-24
2. इस्राएल ने सव्धाम्त्याग किया 25
3. इस्राएल की गिनती होती है, को निर्देशित किया जाता है 26-30
4. यार्दन के पूर्व 31-33
5. यार्दन के पश्चिम 34-36

व्यवस्थाविवरण



आज्ञाकारिता

शीर्षक: "दूसरा कानून" (यूनानी)

लेखक: मूसा (1:1-6)

लेखन की तिथि: लगभग 1405 ई.पू

लेखन का स्थान: मोआब

आज्ञाकारिता

समय शामिल : 1405 ईसा पूर्व में 2 महीने (समीक्षा पिछले 39 साल)

प्राप्तकर्ता: इज़राइल

मुख्य आयत : व्यवस्थाविवरण 10:12-13 और अब, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से और क्या मांगता है, अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानने, उसके सब मार्गों पर चलने, उस से प्रेम रखने, और उसके साथ अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करने को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण के साथ, और यहोवा की उन आज्ञाओं और विधियों को मानना जो मैं आज तुझे तेरे भले के लिये देता हूँ?

मुख्य शब्द: "सुनो" (50 बार); "करो, रखो, निरीक्षण करो" (177 बार); "प्यार" (21 बार)

उद्देश्य: पुरानी पीढ़ी चली गई है। मूसा जल्द ही मर जाएगा। वह नई पीढ़ी को परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को याद रखने और पिछली असफलताओं से सीखने का निर्देश देता है ताकि वे प्रेम में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें।

विषय: अतीत में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के कारण प्रेम से प्रेरित होकर उसका आज्ञापालन करें।

बाइबिल में आपकी पसंदीदा किताब कौन सी है? आमतौर पर हम भजन संहिता, नीतिवचन, यूहन्ना, इफिसियों, प्रकाशितवाक्य या ऐसी ही किसी पुस्तक को चुनते हैं। हालाँकि, यदि आपने यीशु से पूछा होता, तो हो सकता है कि आपको पूरी तरह से एक अलग उत्तर मिलता। हो सकता है, वह कहता "व्यवस्थाविवरण!" आखिरकार, वह इसके बड़े हिस्से को दिल से जुबानी जानता था। जब शैतान ने उसे

प्रलोभन में डाला तो उसने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से आयातों को उद्धृत किया - तीन बार! पिछली बार कब आपने व्यवस्थाविवरण को प्रलोभन पर विजय पाने के लिए उद्धृत किया था?

मूसा के अंतिम शब्द उसके क्रोध और अवज्ञा के पापों के कारण, मूसा अन्य यहूदियों के साथ वादा के देश में प्रवेश नहीं कर सकता। इससे पहले कि वह मर जाए और वे यहोशू के अधीन वादे के देश में प्रवेश करें, परमेश्वर ने मूसा को लोगों से बात करने की एक श्रृंखला का अवसर दिया। मूल रूप से वह उन्हें बताता है कि, क्योंकि परमेश्वर हमेशा उनके प्रति वफादार रहा है (तब भी जब वे उसके प्रति वफादार नहीं थे), यहूदियों को प्यार से उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। यदि हम सुने और सीखें तो इतिहास आपने आप में एक महान शिक्षक साबित हो सकता है, जिसमें हमें देने के लिए बहुत अधिक ज्ञान होगा।

मूसा यही चाहता था कि यह पीढ़ी करे। उसने उन्हें अपने माता-पिता की गलतियों से सीखने के लिए और परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित किया। परमेश्वर के नियम हमारे अपने भले के लिए हैं। वे खान-खेतों में खानों को इंगित करने वाले संकेतों की तरह होते हैं। परमेश्वर जानता है कि क्या क्या चीज नुकसान पहुंचा सकती है और बर्बाद कर सकती है, और इस लिए अपने लोगों को इन चीजों से बचने के लिए चेतावनी देता है।

जबकि आज्ञाकारिता हमारे अपने लाभ के लिए है और विपत्ति के बजाए आशीष लाती है, मूसा चाहता है कि लोग परमेश्वर के लिए आपने प्रेम के कारण उसकी आज्ञा का पालन करें (व्यवस्थाविवरण 6:5)। एक बच्चे के लिए यह कहना कि वह अपने माता-पिता से प्यार करता है, एक बात है, इसे आज्ञाकारिता से दिखाना बिल्कुल दूसरी बात है। परमेश्वर के बच्चों के साथ भी ऐसा ही है। मूसा ने सीने पर्वत पर परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था की समीक्षा की, क्योंकि यह पीढ़ी पिछले 39 वर्षों से परमेश्वर की अवज्ञा में जी रही है। लोग कानून का पालन करने और प्रेम से परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए सहमत हैं। वे अतीत से सीखना चाहते हैं और फिर वही गलतियाँ दुहराना नहीं चाहते हैं।

मूसा कुछ नए नियम भी देता है जो सामने आने वाली परिस्थितियों और हालातों को मात करता है, जिन्हें अन्य कानूनों द्वारा हल नहीं किया जाता है। वह न केवल उन्हें बताता है कि क्या करना है बल्कि यह कि क्यों करना है। तब परमेश्वर मूसा को अपने साथ स्वर्ग में ले जाता है। शैतान ने उसके शरीर को पाने की कोशिश की (यहूदा 9) लेकिन मीकाएल स्वर्गदूत ने उसे छिपा दिया। शायद शैतान यहूदियों को इसे खोजने और मूसा के परमेश्वर के बजाए मूसा के शरीर की पूजा करने को उकसाता। मूसा यीशु के पुनरुत्थान के शरीर में परिवर्तन के समय प्रकट होता है, और जब हम उसके साथ स्वर्ग में जुड़ते हैं तो हम उसे इस तरह देखेंगे।

परमेश्वर के प्रति आपकी आज्ञाकारिता कैसी है? क्या आप अपनी और दूसरों की अतीत में हुई गलतियों से सीखते हैं?

क्या आप प्यार में आज्ञा मानते हैं? आदम और हव्वा ने हर समय आज्ञा नहीं मानी। हाबल ने मानी। केन ने नहीं मानी। नूह ने मानी। अब्राहम, इसहाक और याकूब ने कभी तो मानी और कभी ना मानी। यूसुफ ने मानी। यहूदियों ने नहीं मानी। हारून ने नहीं मानी। मरियम ने नहीं मानी। यहोशू और कालेब ने मानी। परमेश्वर आपके जीवन के बारे में क्या कहेगा? यह अब आप पर निर्भर है। प्रेम पर आधारित आज्ञाकारिता को अपने जीने का मुख्य लक्ष्य बनाएं और आप गलत नहीं हो सकते!

व्यवस्थाविवरण की रूपरेखा

I. पीछे मुड़कर देखना (अतीत में घूमना याद करना) 1-4

क- यात्रा की समीक्षा 1-3

ख- आध्यात्मिक अनुप्रयोग 4

II. 5-26 को देखते हुए (वर्तमान में कानून का पूर्वाभ्यास)

क- पुराने कानून पर एक नई दृष्टि 5-7

ख- आज्ञाकारिता का महत्व 8-11

ग- औपचारिक कानून 12-16

घ- दीवानी कानून 17-20

ङ- सामाजिक कानून 21-26

III. ऊपर की ओर देखते हुए (भविष्य में वाचा की पुष्टि करना) 27-34

क- वाचा का अनुसमर्थन 27-30

ख- विदाई और मूसा की मृत्यु 31-34

कानून की योजना और उद्देश्य

हम "कानून" के बारे में बहुत बात करते हैं, लेकिन वास्तव में इसका क्या मतलब है? जब परमेश्वर यहूदियों को मिस्र के बन्धन से मुक्त करके और उन्हें अपना बनाकर उनका राजा बना, तब उसने उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी और आपने प्रति उनकी जिम्मेदारियों के विषय में उनके साथ एक वाचा बाँधी। इस तरह हर राजा अपने देश अपनी सरकार चलाता था। परमेश्वर ने लोगों की देखभाल करने के लिए अपनी तरफ से बेशर्त प्रतिज्ञा की थी, और उनसे अपनी सेवा कराने के लिए एक कार्य प्रणाली स्थापित की (निर्गमन 19:5-6)। यहूदी पर व्यवस्था का पालन करने की जिम्मेदारी थी क्योंकि वे परमेश्वर का अनुसरण करते थे (निर्गमन 19:1)। यह उद्धार अर्जित करने का कोई तरीका नहीं था, परन्तु यह उन्हें उनके उद्धार की आवश्यकता को दिखाता था, क्योंकि वे परमेश्वर के ऊँचे स्तरों पर खरे नहीं उतर सकते थे (गलातियों 3:24)। वे कभी भी इस वाचा में अपने हिस्से का पालन करने में सक्षम नहीं हो सके और इसलिए इस प्रणाली की जगह अनुग्रह की एक नई वाचा रख दी गयी है (यिर्मयाह 31:31-34; इब्रानियों 8:8-13)। मूसा को दी गई व्यवस्थाओं की धारारों में आज्ञाएँ थी (निर्गमन 20:1-17), इस्राएलियों के सामाजिक जीवन को निर्धारित करने वाली विधियाँ (निर्गमन 21-23), और वे जो इस्राएल की आराधना को निर्देशित करती हैं (निर्गमन 25-31)। इसमें तम्बू, परमेश्वर का महान शिक्षण उपकरण शामिल था जो उसके लोगों को आने वाले मसीहा के बारे में दिखाने के लिए था। याजकीय, बलिदान प्रणाली और पर्व और पवित्र दिन भी उस व्यक्ति की ओर इशारा करने वाले थे जो आकर इस सभी आवश्यक व्यवस्था को पूरा करने वाला था। निर्दोष लहू बहाए जाने के द्वारा क्षमा करना व्यवस्था का केंद्र था, जो आने वाले मसीहा की ओर इशारा करता था (उत्पत्ति 3:15)। दीवानी और सरकारी नियम एवं स्वास्थ्य और स्वच्छता सिद्धांत भी इसमें शामिल थे।

जीवन के एक मार्ग के रूप में मिली मूसा की यह प्रणाली दस आज्ञाओं सहित, मसीह की मृत्यु के साथ समाप्त हो गई (यूहन्ना 1:17; रोमियों 10:4)। परमेश्वर के लोगों को प्रभु की व्यवस्था को बनाए रखना और उसका अध्ययन करना जरूरी था (व्यवस्थाविवरण 4:2; 6:6-7), उसके नाम का आदर करना (व्यवस्थाविवरण 8:6; 10:12), उसके आभारी और धयावादी होना (व्यवस्थाविवरण 8:10), और आज्ञा का पालन करना जरूरी था। , प्रेम करो, और आपने छुड़ाने वाले परमेश्वर की सेवा करना जरूरी था (व्यवस्थाविवरण 10:14-16; 6:4-5; 11:1, 13-14)।

पहला फसह

किसी भी अन्य जानवर की तुलना में भेड़ों का उल्लेख बाइबिल में अधिक किया गया है - लगभग 750 बार। यह स्वाभाविक है क्योंकि यहूदी चरवाहों की तरह भटक

रहे थे, एक ऐसा व्यवसाय जो फिलिस्तीन के सूखे मैदानों के लिए उपयुक्त था। भेड़ का उपयोग भोजन (दूध, पनीर, मक्खन और मीट) और कपड़ों (ऊन, खाल) के लिए किया जाता था। भेड़ स्वभाव से असहाय होती हैं और पानी, चारागाह, मार्गदर्शन और रक्षा के लिए चरवाहे पर निर्भर रहती हैं। उनका उपयोग अक्सर एक उदाहरण के रूप में किया जाता है कि कैसे परमेश्वर हमारी देखभाल करता है (यूहन्ना 10:1-18; भजन संहिता 23)।

'परमेश्वर का मेमना' तब यह कोई संयोग नहीं है कि यीशु का पहला वर्णनात्मक नाम मेमना था। यह तब हुआ जब वह पहली बार अपनी सेवकाई में सार्वजनिक हुआ। उसे राजा, प्रभु यहां तक कि परमेश्वर के रूप में नहीं देखा गया था, जबकि वह ये सब कुछ था। उसे "परमेश्वर के मेमने" के रूप में देखा गया था (यूहन्ना 1:29, 36)। जब यीशु उस स्थान पर आया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था, तब यूहन्ना ने उसे यही (परमेश्वर का मेमना) कहा था। 'मेमना' क्यों? क्योंकि यह उसका वर्णन करता है कि वह क्यों आया है। निश्चित रूप से, उसे यीशु, उद्धारकर्ता और मसीह/मसीहा कहा गया था, लेकिन ये सभी उस कार्य को संदर्भित करते हैं जो उसने परमेश्वर के मेमने के रूप में किया था। यीशु का अर्थ है 'बचाता है', उद्धारकर्ता का अर्थ है 'छुड़ाने वाला', और मसीह/मखसूस /अभिषिक्त' जो मृत्यु के लिए उसका 'अभिषिक्त' होने का उल्लेख करता है। उसे 'परमेश्वर का मेमना' कहकर सभी लोग समझ जाएंगे कि वह वही था जो सभी के पापों का भुगतान करने आया था। उन्हें यह कैसे पता चलेगा? क्योंकि वे फसह के मेमने के बारे में सब कुछ जानते थे।

जानवरों की बलि जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो उनके पाप को छिपाने के लिए निर्दोष का खून बहाया गया था। यह स्वयं परमेश्वर था (परमेश्वर पुत्र, त्रिएकता का दूसरा व्यक्ति, वही है जो पुराने और नए नियम दोनों में मनुष्य को प्रकट होता है)। पाप को निर्दोष लहू से ढकने का यह चित्र हाबल, नूह, अय्यूब, अब्राहाम, इसहाक, याकूब और यूसुफ के जीवन में से जारी रहा। यह स्पष्ट रूप से तब देखा जाता है जब अब्राहाम ने इसहाक को परमेश्वर के सामने बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए ले गया (उत्पत्ति 22:78)। परमेश्वर ने एक विकल्प के रूप में इसहाक के स्थान पर मरने के लिए एक मेमना प्रदान किया। यह वही चढ़ान है, वह स्थान बन गया जहां मंदिर बनाया गया था, हर साल योम किप्पुर (प्रायश्चित्त का दिन) पर राष्ट्रों के पापों को ढकने के लिए खून डाला जाता था। इसी पर्वत पर यीशु को सलीब पर चढ़ाया गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी। अंततः यीशु ही इसहाक के लिए अब्राहाम का विकल्प था, और इस तरह उसे अपने बेटे को मारना नहीं पड़ा। हालाँकि, परमेश्वर के पास कोई अन्य विकल्प नहीं था, क्योंकि केवल यीशु ही हमारे पापों के लिए भुगतान कर सकता था, इसलिए यीशु स्वयं हमारे विकल्प के रूप में वहाँ मर गया। सादृश्य सुंदर और जागृत करने वाली है।

फसह का मेमना, हालांकि, इसका सबसे पूर्ण और विस्तृत चित्र निर्गमन 12 में दिया गया है। यहूदी मिस्र में गुलामी और दासता में थे और, विपत्तियों के एक वर्ष के बाद, परमेश्वर मिस्र के सभी जेठों /पहलौठों को मारकर उन्हें(यहूदियों को) छुड़ाने वाला है। हालांकि, समस्या यह थी कि एक यहूदी पहलौठा मिस्र के पहलौठे की तरह ही मृत्यु के योग्य था, शायद इस से भी अधिक क्योंकि वह परमेश्वर के प्रति अधिक जवाबदेह था। परमेश्वर उनके पाप को कैसे नज़रअंदाज कर सकता है? एक न्यायी और पवित्र परमेश्वर के रूप में, वह ऐसा नहीं कर सकता था। हालांकि, वह जो कर सकता था, वह एक विकल्प प्रदान कर रहा था। फसह का मेमना एक विकल्प था, परम विकल्प की एक तस्वीर जो एक दिन हमारे सभी के पापों के लिए मर जाएगा।

जानवरों के लहू ने सिर्फ पाप को 'ढापा'। उनको हटाया केवल यीशु के लहू ने है। यह एक अच्छे सफेद गलीचे पर अंगूर के रस का दाग लगाने जैसा होगा। गलीचे को साफ करने के किसी भी तरीके के बिना, आप बस इतना कर सकते थे कि उस पर एक और गलीचा डाल दें जिससे उसे 'ढापा' दिया जाए। फिर एक दिन कोई दाग हटानेवाला रसायन दिखाई देता है जिससे दाग निकल जाएगा। दूसरा गलीचा ऊपर डालने की अब आवश्यकता नहीं है। पशु बलि उस गलीचे की तरह होती है। यीशु का लहू ही पाप का एकमात्र शुद्ध करने वाला रसायन है।

चुना हुआ मेमना (निर्गमन 12:3, 5ब) मेमे निर्दोष, कोमल, नम्र, असहाय जानवर होते थे, जो एक मनुष्य के रूप में यीशु की एक तस्वीर है। मेमने को बेदाग (पूर्ण, बेदाग यीशु) और एक नर (यीशु की शक्ति और ऊर्जा) होना जरूरी था। इसे 1 वर्ष आयु का होना जरूरी था (जीवन के प्रमुख में)।

मारा गया मेमना (निर्गमन 12:6क) हालांकि, जीवित मेमने ने कुछ भी भला नहीं किया। इसे मरना पड़ता। इसका खून बहाना पड़ता। यीशु का सिद्ध जीवन केवल हमारी निंदा करता है, यह दिखाते हुए कि एक सिद्ध जीवन जीया जा सकता है। केवल उसकी मृत्यु ही हमें बचाती है।

मेमने का मालिक अपने हाथ जानवर के सिर पर रखता और अपने पापों को स्वीकार करता, इस प्रकार मेमने को पाप के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता। इस प्रकार पशु को मरना पड़ता, क्योंकि पाप मृत्यु लाता है। उसका गला काटकर और खून एक कटोरी में इकठा किये जाने से उसकी मौत हो जाती।

फसह का मेमना चुना जाता था और यह सुनिश्चित करने के लिए निसान महीनी की 10 तरीक तक अलग रखा जाता था कि यह बेदाग और निष्कलंक था। चार दिन बाद, निसान की 14 तरीक को, वह मर जाता। लगभग 4 वर्षों तक यीशु ने सार्वजनिक रूप से सेवा की, उन सभी की चौकस निगाहों के अधीन, यह दिखाने के लिए कि वह सिद्ध और पाप रहित था। फिर वह निसान के 14 तरीक को मर गया। दोनों की मृत्यु 3 बजे - एक ही दिन एक ही समय पर हुई। यीशु फसह के मेमे की पूर्ति था।

एक मेमने को मारना जिसे आप ने जन्म से पाला हो, यह उस व्यर्थता और मृत्यु की एक अच्छी तस्वीर है जो पाप के कारण आते हैं। दोषियों को ढँकने के लिए बेगुनाहों का खून बहाया जाना जरूरी है। इसी आधार पर बलिदान की सम्पूर्ण व्यवस्था का निर्माण किया गया था। अगले वर्ष के भीतर यहूदी तम्बू को अंतिम रूप देते, जहां बलिदान यीशु के समय तक जारी रहेगा। तम्बू, फिर मंदिर, परमेश्वर द्वारा यह दिखाने के लिए डिज़ाइन किया गया था कि पाप को ढँकने के लिए निर्दोष लहू बहाया जाना चाहिए।

मेमने के लहू का लगाया जाना (निर्गमन 12:7) मेमना ना तो जीवित होते हुए किसी को बचा सकता था, और ना ही मर कर किसी को बचा सकता था। यह केवल लहू को व्यक्तिगत रूप से लगाने से ही पाप ढाँप दिया जाता था। दरवाजे पर खून होता तो परिवार सुरक्षित होता। खून नहीं होता तो मौत प्रवेश कर जाती। राष्ट्रीय नागरिकता कोई मायने नहीं रखती थी, या कौन कितनी अच्छी तरह से शिक्षित था, या कितना अमीर था - जो मायने रखता था वह केवल खून था।

"बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती" (इब्रानियों 9:22)। "मांस का जीवन लोहू में है" (लैव्यव्यवस्था 17:11)। हमारे भले काम "गंदे चिथ्रो" (यशायाह 64:6) या "गोबर के ढेर" (फिलिप्पियों 3:8) के समान हैं। केवल लहू ही मायने रखता है, क्योंकि यह यीशु के जीवन का प्रतीक है।

रक्त को इस तरह से लगाया जाना था कि वह सार्वजनिक रूप से दिखाई दे। यह घर के मालिक व्यक्ति द्वारा सामने के दरवाजे पर लगाया जाना होता था। खून के लगाने के लिए हाईसॉप (जड़ी बूटी के पत्तों) का इस्तेमाल किया जाता था। इसका उपयोग शुद्धिकरण और सफाई के अनुष्ठानों में भी किया जाता था। मेमना दरवाजे की छत पर मारा जाता था और दरवाजे के ऊपर और किनारों पर खून रंग दिया जाता था। वास्तव में इस से एक सलीब का गठन होता, जिसमें रक्त उन्हीं स्थानों पर था जहां यीशु ने क्रूस पर लहू बहाया था: सिर, हाथ और पैर।

लहू लगाने के बाद, लोगों को 'रक्त के द्वारा' घर में वैसे ही प्रवेश करना होता था जैसे वह था। जब वे अंदर आते तो उनके ऊपर, नीचे और दोनों तरफ खून होता था। फिर उन्हें सुरक्षित रहने के लिए पूरी रात अंदर रहना पड़ता। बाहर मृत्यु थी, भीतर जीवन था। जब मृत्यु के दूत ने लहू को देखा तो वह "पार हो जाता" और मृत्यु को उस घर में लाने के लिए ना रुकता। खून पर्याप्त था। "जब मैं खून देखूंगा तो पार हो जाऊंगा।" यह एक 'चिह्न' था - मृत्यु के दूत के लिए, पड़ोसियों के लिए (विश्वासियों और अविश्वासियों के लिए), स्वर्गदूतों के लिए और शैतान और उसकी सेनाओं के लिए। यह सुरक्षा का एक 'ब्रांड' था। यीशु का लहू हमारी सुरक्षा है, अनन्त जीवन का हमारा 'चिह्न' है (इफिसियों 1:7; 1 यूहन्ना 1:7; 1 पतरस 1:19; मत्ती 26:28; इब्रानियों 9:12; प्रकाशितवाक्य 1:5; रोमियों 5: 8-9)।

मेमने का शरीर(मांस) खाया जाता (निर्गमन 12:8-10, 46) मेमने के मरने के बाद लहू लगाया जाना, और शरीर को भी अपने तरीके से इस्तेमाल किया जाना होता था। शरीर(मांस) को खाया जाता। मेमना सिर्फ देखने के लिए नहीं बल्कि खाने के द्वारा व्यक्तिगत रूप से पहचान बनाने के लिए मरता था। इससे उन्हें आने वाली यात्रा के लिए पोषण और भरण-पोषण मिलता। यीशु हमारे पापों के लिए मरा, परन्तु वह हमें वह पोषण और शक्ति भी प्रदान करता है जिसकी हमें उद्धार के बाद आगे बढ़ने के लिए आवश्यकता है (यूहन्ना 6:53-57)। यहूदियों को उसी रात मेमने को खाना होता था, हम इसमें भाग लेना बंद नहीं कर सकते। इसमें से कुछ भी बचा नहीं होना था इसलिए यह सड़ ना जाये (यीशु का शरीर सड़ा नहीं)। इसे भूनकर ही खाना होता था, कच्चा या उबालकर नहीं। यह यीशु की न केवल मृत्यु का बल्कि आग का सामना करने का एक चित्र होने के लिए होता था - क्रूस पर नरक का न्याय। इसे कच्चा नहीं खाया जा सकता था, इसे आग से गुजरना पड़ता था। हमें छुड़ाने के लिए यीशु को हमारे नरक से गुजरना पड़ा। उसे पानी में उबाला नहीं जा सकता था, क्योंकि यीशु की प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। कोई हड्डी नहीं तोड़ी जानी थी, भीतर के मज्जा को खाने की एक आम प्रथा थी। यह यीशु के लिए भविष्यवाणी की गई थी।

इस प्रकार मेमने को चुना जाना था (निर्गमन 12:5) क्योंकि मसीह ने आपने आप को स्वेच्छा से हमारे पापों के लिए अनंत काल में मरने के लिए स्वेच्छा से दिया था (1 पतरस 1:20)। इसे रखना होगा (निर्गमन 12:5), जीवन में मसीह की एक तस्वीर (मत्ती 3:17; 17:5)। तब यह मारा जाता (निर्गमन 12:6), मसीह

ने बलिदान किया (1 कुरिन्थियों 5:7)। फिर इसे भुना जाता (निर्गमन 12:8), मसीह के कष्टों की एक तस्वीर (भजन संहिता 88:7; 89:46)। तब इसे खाया जाता (निर्गमन 12:5, 8) जब हम मसीह को खाते हैं, जिसे प्रभु भोज में चित्रित किया गया है (1 कुरिन्थियों 5:8)।

यहूदियों को घर के **अंदर** खड़े होकर भोजन करना था, कपड़े पहने, बाहर यात्रा करने वाले कपड़े, अपने पैरों में चप्पल और एक हाथ में चलने वाली छड़ी के साथ। यह एक अनुस्मारक था कि मिस्र उनका घर नहीं था, वे वहां बसने के लिए नहीं थे, वे वहां अस्थायी रूप से थे और बस वहां से गुजर रहे थे। इस संसार में जीवन के प्रति भी हमारा दृष्टिकोण यही होना चाहिए।

अखमीरी रोटी इसी तर्ज पर, उन्हें अपनी रोटी को फूलने देने के लिए समय नहीं देना था। उसमें खमीर नहीं होना चाहिए था। खमीर पाप की एक तस्वीर है। यह एक खमीर (फंगस) है जो बढ़ता और सड़ता है। यह पूरे तौण को तब तक नष्ट करता रहेगा जब तक कि इसे (खाना पकाने से) ना रोका जाए। पाप ऐसा ही है (1 कुरिन्थियों 5:6-8)। 7 दिन तक वे अखमीरी रोटी खाते रहने थे। यह यीशु के पापरहित जीवन और शरीर को चित्रित करता है, और यही कारण है कि हमें सुनिश्चित करना होता है कि हमारे जीवन में कोई पाप नहीं है, जब हम प्रभु भोज में हिस्सा लेते हैं (1 कुरिन्थियों 11:23-32)।

घर के बाहर मौत है जब वे जिनके उनके दरवाजे पर खून लगा हुआ होता था, वे अंदर सुरक्षित होते थे, मेमने को खा रहे होते थे, बाकी लोग मौत के रूप में परमेश्वर के फैसले का सामना कर रहे होते थे। वे सुरक्षित नहीं होते थे। इस देश के शुरुआती दिनों में एक मैदानी घास को पार करने वालों को आग के बेकाबु होने का खतरा होता था, जहां वे तेजी से यात्रा कर रहे होते थे और आगे बढ़ रहे होते थे। भारतीयों ने उन्हें सुरक्षित रहने का रास्ता दिखाया। जब वे आग को आते हुए देखते थे, तो वे अपने स्थान के पास आग लगाते थे, और जब वह जल जाती थी, तो वे अपनी संपत्ति के साथ उस क्षेत्र में चले जाते थे। इस प्रकार जब मुख्य आग गरजती हुई आती तो वे सुरक्षित होते थे। जैसा कि भारतीयों ने कहा, "जहाँ आग लगी हो, वहाँ आग नहीं आ सकती।" जब हम लहू के द्वारा प्रवेश करते हैं, और स्वयं को क्रूस के नीचे रखते हैं, तो हम परमेश्वर के 'जले हुए' क्षेत्र में होते हैं। यीशु ने हमारा न्याय आपने ऊपर ले लिया ताकि हमें कभी भी न्याय के अधीन होने का कोई खतरा ना हो (रोमियों 8:1)।

पुराने नियम के दौरान बलिदान जब यहूदियों ने मिस्र छोड़ दिया तो वे सीने पर्वत पर गए। वहाँ परमेश्वर ने उन्हें बलिदान चढ़ाने के बारे में कई नियम दिए: कौन, कब, क्यों, कहाँ और कैसे। अधिकांश निर्गमन और अधिकांश लैव्यव्यवस्था में इन्हें दर्ज किया गया है। यह सब पाप को ढकने के लिए था जब तक कि परमेश्वर का भेजा हुआ दाग हटानेवाला नहीं आता। 1400 वर्षों तक यह चित्र चलता रहा, फिर परमेश्वर का मेमना आया।

यीशु परमेश्वर का मेमना है यह भविष्यवाणी की गई थी कि मसीहा परमेश्वर का मेमना होगा (यशायाह 53:7-8)। यूहन्ना ने यीशु को इस भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में पहचाना (यूहन्ना 1:29, 36), जैसा कि पौलुस (1 कुरिन्थियों 5:7), पतरस (1 पतरस 1:19) और फिलिप्पुस (प्रेरितों 8:32) ने किया।

प्रभु भोज फसह की जगह लेता है जब यीशु ने अपने शिष्यों के साथ अंतिम भोज किया, तो उन्होंने मट्ज़ो लिया जो मिस्र छोड़ने वाले यहूदियों का प्रतिनिधित्व करता था और कहा कि यह अब उसके शरीर पर लागू होता है। "लो, खाओ; यह मेरी देह है" (मत्ती 26:26)। अंगूर के रस का प्याला जो उन्होंने पिया वह मेमने के खून का चित्र था। जब यहूदी मिस्र छोड़ कर तम्बुओं में रह रहे थे, तब उनके पास लहू से रंगने के लिए दरवाजों की चौखटें नहीं थी, इसलिए उन्होंने उसी चित्र के रूप में अंगूर के रस/लहू का उपयोग किया। इसे पीने के द्वारा वे मेमने के लहू से अपनी पहचान बना रहे थे, इसे अपने जीवन में लागू

कर रहे थे। यीशु ने कहा कि यह अब उसके लहू को चित्रित करने के लिए था। "यह वाचा का मेरा लहू है" (मत्ती 26:28)। इस प्रकार यीशु कह रहा था कि फसह अब निर्गमन 12 के मेमने और मिस्र से शारीरिक छुटकारे पर लागू नहीं होता, यह अब परमेश्वर के मेमने को और पाप और मृत्यु से मुक्ति को चित्रित करता है।

पुराने नियम में नंबर एक चमत्कार था, फसह और लाल सागर से छुटकारा। यह यीशु द्वारा किए जाने वाले कार्यों की एक तस्वीर थी और पुराने नियम और यहूदी इतिहास का केंद्र बिंदु था। बेशक, यीशु का सलीब पर चढ़ना और पुनरुत्थान करना, नए नियम की नंबर एक घटना थी। वास्तव में, यह अब तक के इतिहास की नंबर एक घटना थी।

पुराने नियम में मेमना उठ गया, जब फसह का मेमना मर जाता तो वह मरा पड़ा रहता। हालाँकि जब परमेश्वर का मेमना मर गया, तो वह फिर से जीवित हो गया !!! एक मरे हुए मेमने की कल्पना करें, खून लगाया गया और शरीर खाया गया, जीने के लिए वापस आएँ और दौड़ें और इधर-उधर कूदें - भौतिक शरीर के साथ नहीं बल्कि एक नए, शाश्वत शरीर के साथ! यह आश्चर्यजनक है, लेकिन यह सच है! मेमना आज भी जीवित है, इसलिए हम उसकी आराधना और स्तुति करते हैं। हमारे पापों के लिए मरना, जीवन में वापस आना हमें अनंत जीवन का आश्वासन देता है।

मेमना अब मेमना आज भी स्वर्ग में जीवित है। वास्तव में, "मेमना" पूरे प्रकाशितवाक्य में यीशु को दी गई उपाधि है। तैंतीस बार उसे 'मेमना' कहा जाता है! मेमने के रूप में, वह सर्वोच्च महिमा और सम्मान की स्थिति में है (प्रकाशितवाक्य 7:17)। वह पिता के साथ समान रूप से महिमा और अनुग्रह साझा करता है (प्रकाशितवाक्य 22:1, 3)। वह अपने संतों का अगुवा और चरवाहा है (प्रकाशितवाक्य 7:17; 14:4)। स्वर्गदूत और विश्वासी मेमने की आराधना कर रहे हैं (प्रकाशितवाक्य 5:6, 8, 12, 13; 15:3) गाते हुए "मेमना, जो बलि और धन और बुद्धि और बल, आदर, महिमा और स्तुति पाने के योग्य है। " 'मेमना' एक उपाधि से बढ़कर है, यह उसका वर्णन है। जब हम उसे देखेंगे तो हम उस नम्रता और पवित्रता को देखेंगे जो हमारे लिए घायल की गई थी। उस पर सलीब चढ़ने के निशान होंगे। हम उसकी आराधना करेंगे, उसकी सर्वोच्च शक्ति के कारण नहीं, बल्कि उसके कार्य के कारण जो हमारे लिए परमेश्वर के मेमने के रूप में है, जिसने दुनिया के पापों को उठा लिया।

भविष्य में मेमना एक दिन जल्द ही मेमना अपनी दुल्हन के लिए वापस आएगा - हमारे लिए। तब हम एक साथ मेमने के विवाह भोज में भाग लेंगे (प्रकाशितवाक्य 19:7, 9) जबकि पृथ्वी पर क्लेश चल रहा होगा। इस समय के दौरान उद्धार पाने वाले बहुत से लोग शहीद हो जाएंगे और सिंहासन के चारों ओर स्वर्ग में मेमने की स्तुति करेंगे (प्रकाशितवाक्य 7:7-14; 13:8; 15:3)। तब मेमना, जिसे सारा न्याय सौंपा गया है (प्रकाशितवाक्य 6:1, 16; 13:8), आ कर अजगर के विरुद्ध युद्ध करेगा (शैतान - प्रकाशितवाक्य 17:14; 12:11)। यह वापसी एक अद्भुत विजय के साथ क्लेश (प्रकाशितवाक्य 14:1) को समाप्त कर देगी (प्रकाशितवाक्य 19:11-16)। मेमने के प्रकोप से कोई नहीं बच पाएगा (प्रकाशितवाक्य 6:16)। मेमना सिंह के रूप में लौटेगा। जब शैतान और पाप दूर हो जाएंगे, तो मेमना हमेशा के लिए सिंहासन पर राज्य करेगा, सभी हमेशा हमेशा के लिए उसकी आराधना करेंगे। सचमुच, "मेमना योग्य है!"

अखमीरी रोटी का पर्व

एक सच्ची कहानी है कि कैसे एक चोरी की बाल्टी ने एक युद्ध शुरू किया और एक व्यवसाय समाप्त कर दिया। एक दिन पहले एक सिपाही ने मनोरंजन के लिए एक सार्वजनिक कुएं से एक आकर्षक बाल्टी ली। बाल्टी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक जाती रही जब तक कि यह सार्डिनिया के राजकुमार हेनरी को नहीं दी गई। इसे वापस पाने के लिए इस पर एक बड़ा उपद्रव किया गया जो युद्ध में समाप्त हुआ था। प्रिंस हेनरी को खुद पकड़ लिया गया और जेल में डाल दिया गया। उसके पिता, राजा ने उसे वापस लाने के लिए 7 मील लंबी एक सोने की चेन भेंट की। प्रस्ताव को गुस्से में अस्वीकार कर दिया गया था। राजकुमार 20 साल तक जेल में रहा जब तक कि उसकी मृत्यु नहीं हो गई। युद्ध तब तक जारी रहा जब तक कि यूरोप की अधिकांश सरकारें इसमें शामिल नहीं हो गईं। हजारों लोगों की जान चली गई और बहुत सारी संपत्ति खो गई, और यह सब कुछ केवल बाल्टी लेने जैसी 'छोटी सी चीज' के कारण हुआ ; यह एक छोटी सी बात थी, लेकिन परिणाम देखिए कितना बड़ा हुआ।

अब एक पल के लिए सोचो। क्या ऐसी कोई चीज है जिसे 'छोटा' पाप कहा जाता हो ? हो सकता है कि हमारी दृष्टि में किसी पाप के अधिक गंभीर परिणाम हों और वह अधिक अपराध-बोध लाता हो, और अन्य पाप लाभकारी और आनंददायक प्रतीत होते हों - लेकिन क्या वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में कोई अंतर है? "क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है, तौभी एक ही बात में ठोकर खाता है, वह सारी व्यवस्था को तोड़ने का दोषी है" (याकूब 2:10)। ऐसा नहीं लगता कि परमेश्वर सोचता है कि कोई पाप छोटा है, क्या वह ऐसा सोचता है ?

पाप पाप है 'पाप' का अर्थ है 'मुकाम से चूक जाना।' "क्योंकि सभी ने पाप किया है (मुकाम से चूक गए) और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए " (रोमियों 3:23)। हमारा लक्ष्य यीशु के समान, परमेश्वर के समान पवित्र बनना है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम 1 इंच या 1,000 मील से चूक गए हों , फिर भी हम चूक गए। फुटबॉल खेल में एक पास अगर यह उंगलियों से दूर है, या रिसीवर के सिर पर 20 गज की दूरी पर है तो वो अधूरा होता है। सब पाप पाप है। वास्तव में, 'छोटे' पाप को अन्य पापों से भी बदतर कहा जा सकता है क्योंकि यह अधिक सूक्ष्म और खतरनाक हो सकता है। जैसा कि हमारे दुश्मन जानते हैं, हम 'छोटे' पाप करने के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं। इसलिए हम इस तरह से अधिक बार लुभाए जाते हैं। अक्सर हम उनके इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हमें पता ही नहीं चलता कि वे वास्तव में यह पाप हैं। वास्तव में, मसीही जीवन में जीत इतनी बड़ी लड़ाई जीतने से नहीं आती है जितनी कि छोटी लड़ाई, क्योंकि अगर पाप पर छोटी लड़ाई जीती जाती, तो कोई बड़ी लड़ाई होगी ही नहीं। बड़ी लड़ाइयों का मतलब है कि पाप को बढ़ने दिया गया और जब यह इसके शुरूआती समय में इसे काबू नहीं किया गया। बड़ी लड़ाई जीतने का एकमात्र तरीका है जीवन के उस क्षेत्र से संबंधित कुछ 'छोटी' लड़ाईओं को जीतना शुरू करना है, तो बड़ी लड़ाई जीती जाएगी। इस प्रकार 'छोटे' पाप से बचना परमेश्वर के लोगों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य है। यह सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है।

वास्तव में, यह बहुत महत्वपूर्ण है, यह पहला पाठ है जो परमेश्वर अपने लोगों को उद्धार (द्वार पर फसल का लहू लगाने) के बाद सिखाता है। पहला सत्य जो वह उन्हें सिखाता है, वह प्रार्थना, परमेश्वर की इच्छा को जानना, या आध्यात्मिक उपहार नहीं है। यह 'छोटे' पाप की मृत्यु के बारे में है। परमेश्वर अपनी बात को स्पष्ट करते हुए इस बिंदु के दृष्टांत के रूप में खमीर का उपयोग करता है।

अखमीरी रोटी का पर्व -अंधकार के समय में परमेश्वर ने मूसा को बिना खमीर की रोटी खाने के बारे में बताया था (निर्गमन 12:15-20)। मूसा ने इसे लोगों को बताया (निर्गमन 13:310) और लोगों ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया (निर्गमन 12:34, 39)। नए महीने के 10वें दिन, निसान, को एक वर्ष आयु के

एक निर्दोष नर मेमने को अलग रखा जाना था , और फिर 14 तारीख को उसे मार कर और खून को दरवाजे की चौखटों पर लगाकर, उसे खाया जाना था। वे मिस्र से निकलने को तैयार खड़े होकर भोजन करें, इसलिए उनके पास आटा गूंधने और रोटी सेंकने का समय ना था। उन्हें आटा मिला कर इसे मार्ग में पकाने के लिये अपने साथ लेजा था , परन्तु उस में बिना खमीर डालें। उन्हें सात दिन तक बिना खमीर की रोटी खानी थी , अर्थात निसान 14 से 21 तक। यह अखमीरी रोटी का पर्व कहा जाने लगा।

खमीर -सब कुछ खमीर पर केंद्रित है - या इसकी कमी पर। खमीर एक महीन पौधा है जो नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता है, जिसे खमीर नामक पदार्थ में रखा जाता है। यह वास्तव में एक फंगस है जिसे लंबे समय तक सुखाया जा सकता है जो नमी और गर्मी के संपर्क में आने पर जीवित हो जाता है। इसकी कोशिकाएं बहुत तेजी से बढ़ती है। शीरा और चीनी कार्बन डाइऑक्साइड गैस और अल्कोहल में बदल जाते हैं। यह आटे को 'फूलने ' का कारण बनता है क्योंकि इसमें हवा के बुलबुले फैलते हैं। यदि खमीर सही समय पर उच्च तापमान से नहीं मारा गया तो यह प्रक्रिया जारी रहेगी और आटा खट्टा हो जाएगा। यह वह जगह है जहां बेकिंग का काम शुरू होता है। गर्मी बढ़ती कोशिकाओं को मार देती है और खमीर (के उफान) को रोक देती है। इस प्रकार अखमीरी रोटी चपटी, अधिक ठोस, हवा के बुलबुले से रहित होती है। इस कारण खमीर को पाप का चित्र खा गया है।

खमीर =पाप - संसार में पाप की तुलना ऐसा कुछ भी नहीं जिस से कोई नुकसान होता हो । यह जो कुछ भी छूता है उसे तब तक बर्बाद करता रहता है जब तक कि उसे मानकर के और मसीह के खून से शुद्ध करने के द्वारा ऐसा करने से रोका नहीं जाता। रोटी खाने से पहले खमीर को नष्ट कर देना चाहिए। एक मसीही जन को यीशु जैसा बनने से पहले पाप को नष्ट करना होगा। 1 कुरिन्थियों 5:6-8 में पौलूस खमीर का उपयोग पाप के चित्र के रूप में करता है। वह कहता है कि यह छोटा सा और ना दिखाई देना वाला होता है , लेकिन जब इसे तक रोका नहीं जाता तब तक सब कुछ नष्ट करने के लिए बढ़ता और फैलता रहता है।

हाल ही में कोलोराडो में एक विशाल पेड़ धड़ाके के साथ जमीन पर गिर गया। यह 400 साल से अधिक आयु का था और जब कोलंबस अमेरिका आया था उस समय बढ़ना शुरू हुआ था। यह 14 बार आसमानी बिजली की गर्जनो की चपेट में आ चुका था, हवाओं, भूकंपों, आग और तूफानों के बीच खड़ा रहा। फिर भी इसे एक छोटी मखी ने मार डाला जो इसकी शील के नीचे ऊब गई और पेड़ के शक्तिशाली गुदे को चबा गई , उसके छोटे से पर कई बार काटने से । पाप इसी तरह काम करता है। यही खमीर को चित्रित करता है।

पौलूस इस खमीर की बात को एक कदम आगे ले जाता है। वह मसीह की पापरहितता को हमारे पाप का बलिदान होने का जिक्र करते हुए, खमीर को मसीह के समान बताता है। जैसे अखमीरी रोटी 'पापरहित' (जिसमें खमीर नहीं था) थी, वैसे ही मसीह स्वयं पापरहित था। परमेश्वर का बेदाग मेमना भी परमेश्वर की अखमीरी रोटी था । इस प्रकार जब यीशु ने रोटी के बारे में 'यह मेरा शरीर है' कहा, तो यह वास्तव में लागू हुआ क्योंकि यह उसके पाप रहित शरीर की एक तस्वीर थी।

फसह से प्रभु भोज - जब वह 12 साल का था , वह हर साल , तब से वह फसह और अखमीरी रोटी के पर्वों के लिए यरूशलेम जाता था। पृथ्वी पर उसके अंतिम दिनों और घंटों की घटनाएँ इन्हीं पर्वों के इर्द-गिर्द केन्द्रित हैं। वास्तव में, यीशु ने फसह के मेमने के लहू के रूप में रस के अर्थ को अपने लहू में बदल दिया। उसने अखमीरी रोटी के अर्थ को जो मिस्र से उनकी त्वरित निकासी की याद दिलाती थी, से बदलकर आपने पापरहित शरीर की याद दिलाने के लिए बदल दिया (लूका 22:14-22)।

पौलुस ने इस महत्व को। कुरिन्थियों (11:23-32) में आगे बढ़ाया। उसने यह दिखाने के लिए बात को बढ़ाया कि जब हम प्रभु भोज में हिस्सा लेते हैं तो हमें भी पापरहित होना चाहिए। अखमीरी रोटी की तरह, हमारे जीवन में पाप नहीं होना चाहिए। मुझे अपने जीवन से सभी खमीर/पाप को दूर करना होगा। यदि नहीं, तो परमेश्वर हमें इसे दूर करने के लिए हमें अनुशासित करेगा। यह एक गंभीर अंतर्विरोध है जो हमारे स्वयं के जीवन में पाप होते हुए उसमें भाग लेना जो हमारे लिए सलीब पर यीशु के कार्य का प्रतीक है।

मेक्सिको और दक्षिण अमेरिका के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में एक 'गलघोंटू' अंजीर हर जगह उगता है। यह एक पेड़-हत्यारा है। इस के अंजीर केवल पशु और पक्षी ही खा सकते हैं। यह इतना चिपचिपा होता है कि पक्षी को खाने के बाद पास के पेड़ पर अपनी चोंच साफ करनी चाहिए। बारिश के मौसम में छोटे बीज शील से चिपक सकते हैं और अंकुरित हो सकते हैं। छोटी-छोटी जड़ें पेड़ के दिल में अपना रास्ता बनाती हैं। कुछ वर्षों में यह एक समय पर सुंदर दिखने वाले पेड़ को ढ़ंक देता है और उसे मार देता है।

पाप भी ठीक वैसा ही है। यह छोटा शुरू होता है और तब तक बढ़ता है जब तक कि सब कुछ नष्ट न हो जाए। यही खमीर की एक तस्वीर है। क्यों न अभी एक क्षण के लिए अपने हृदय और जीवन की खोज करें, परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको 'छोटे' पापों को खोजने और जड़ से उखाड़ने में मदद करें जो आपके जीवन को बड़ी हार की ओर ले जाते हैं? प्रत्येक को अंगीकार करें और उन पर उसकी विजय के लिए प्रार्थना करें। यहोवा के लिए अखमीरी रोटी के समान बनो।

तम्बू

तम्बू मनुष्य द्वारा निर्मित अब तक की सबसे महत्वपूर्ण संरचना है: भूतकाल, वर्तमान या भविष्य। अतीत में एक हजार वर्षों तक, और भविष्य में एक और हजार वर्षों तक, परमेश्वर की उपस्थिति उसमें (और मंदिर जो वास्तव में एक स्थायी निवास है) में वास करती थी। बाइबिल में किसी भी अन्य एकल विषय की तुलना में इसे और इसके कार्य को अधिक स्थान दिया गया है - इसे 50 लंबे अध्याय का स्थान (और पूरे ब्रह्मांड और पृथ्वी की रचना के विवरण को सिर्फ 2 अध्याय दिए गए हैं)। किसी व्यक्ति यहूदीयों की बलि प्रणाली, पर्वों, याजकीय आदि को समझने के लिए, मेल-मिलाप के तम्बू को समझना चाहिए। तम्बू के बारे में सबसे अच्छा हिस्सा, हालांकि, सबसे पूर्ण, विस्तृत, सुंदर चित्र/उद्धार का प्रकार और पवित्रशास्त्र में मसीही जीवन है। यह सब कुछ इस तरह से यीशु के बारे में बताता है और उसकी महिमा करता है की बच्चे और वयस्क भी आसानी से समझ सकते हैं। तम्बू के बारे में सीखने से बच्चों के लिए बाइबल की सच्चाइयों जैसे उद्धार, क्रूस पर यीशु का कार्य, पाप का अंगीकार, आज्ञाकारिता, संगति, स्तुति और आराधना को समझना और लागू करना बहुत आसान हो जाता है।

जब पुनरुत्थित यीशु दमिश्क के रास्ते पर प्रकट हुआ और वहाँ के शिष्यों के साथ बात करने लगा (और बाद में ऊपरी कक्ष में सभी शिष्यों के साथ) तो उसने उन्हें दिखाया कि पुराने नियम में उसे के बारे में क्या कहा गया है, जो मूसा के लेखन से शुरू होता है (लूका 24:27, 44)। उसने पहले यह बताया कि मूसा ने उसके बारे में लिखा था (यूहन्ना 5:39-40, 46)। उसने जो कुछ कहा, उनमें से अधिकांश वो था जिन्हें अब हम एक तरह का 'प्रकार' कहते हैं। एक प्रकार का मतलब है पुराने नियम की एक घटना है जो एक नए नियम की घटना, व्यक्ति या सच्चाई का पूर्वाभास करती है। यह वास्तविक वस्तु को देखने से पहले एक परछाई को देखने जैसा है। योना नबी यीशु का एक प्रकार है (3 दिनों के बाद पुनरुत्थान - मत्ती 12:39-40; लूका 11:29-30)। फसह का मेम्ना यीशु का एक चित्र है (यूहन्ना 1:29-30; 1 कुरिन्थियों 5:7)। पीतल के सर्प का ऊपर उठाया जाना यीशु को सलीब पर चढ़ाने का पूर्वाभास देता है (यूहन्ना 3:14-15)। कई उदाहरण हैं। पुराना नियम उस सब के उदाहरणों और चित्रों से भरा है जो नए नियम में अधिक

पूर्ण रूप से विकसित किया गया है (1 कुरिन्थियों 10:1-6, 11; रोमियों 15:4; कुलुस्सियों 2:17)। वास्तव में, आप पुराने नियम के भौतिक सत्य (ऐतिहासिक घटनाओं) को समझे बिना नए नियम के आध्यात्मिक सत्य (धर्मशास्त्र) को वास्तव में नहीं समझ सकते हैं। यह तम्बू के बारे में विशेष रूप से सच है। यह परमेश्वर का उसके पुत्र का फोटो एलबम है - यीशु के सैकड़ों चित्र। कुछ क्लोज-अप रूप में हैं, अन्य समूह चित्र हैं। ये तस्वीरें चलती हैं और बात करती हैं, इसलिए वास्तव में ये यीशु के जन्म से पूर्व वीडियो की तरह हैं। तम्बू को समझना यीशु के जीवन और कार्य को एक नए और विशेष तरीके से जीवंत करता है, विशेष रूप से बच्चों के लिए। दीवार के बीच एक फाटक इसका एक आदर्श उदाहरण है।

निवास के बाहर चारों ओर सफेद मलमल की 7'-6" ऊँची एक दीवार थी। दीवार ने लोगों को परमेश्वर से दूर रखा हुआ था। सफेद पवित्रता का प्रतीक था और यह परमेश्वर की पवित्रता की याद दिलाता था जिसमें मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता था। हालाँकि, परमेश्वर ने एक खुद रास्ता प्रदान किया। एक फाटक, जिस में से होकर मनुष्य प्रवेश कर सकता था। जो हमेशा खुला रहता था, यह यीशु को चित्रित करता था, जो हमारे लिए परमेश्वर का मार्ग है। फाटक ही एकमात्र मार्ग था, क्योंकि यीशु ही परमेश्वर के लिए एकमात्र मार्ग है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 4:12)। फाटक के सिर पर परदा लाल रंग का था (यह यीशु के खून को चित्रित करना क्योंकि वह एक आदमी था), नीला (स्वर्ग को चित्रित करता है क्योंकि यीशु परमेश्वर भी था), बैंगनी (नीले और लाल रंग का संयोजन, एक राजशी रंग, क्योंकि यीशु मसीहा राजा था) और श्वेत, क्योंकि यीशु सिद्ध और पापरहित था। हम केवल यीशु के द्वारा ही परमेश्वर के पास आ सकते हैं (यूहन्ना 3:15-16; 6:51; 7:37; 10:9; रोमियों 10:13)

फर्नीचर के 7 टुकड़ों में से पहला फाटक के ठीक भीतर था। यह पीतल की एक बड़ी वेदी थी, जो 7'-6" 7'-6" गुणा 4'-6" ऊँची थी (निर्गमन 27:1-8; 38:1-7)। यह लकड़ी से बना था जो पृथ्वी से आई थी और यीशु की मानवता को चित्रित करती है। पीतल ने इसे ढक दिया, और पीतल हमेशा न्याय का एक चित्र था (प्रकाशितवाक्य 1:15, यूहन्ना 3:14-15; दानियेल, आदि)। एक मनुष्य के रूप में यीशु ने हमारा न्याय उठा लिया (यूहन्ना 3:14-15; 2 कुरिन्थियों 5:21; गलातियों 3:13)। वेदी का उद्देश्य आग (न्याय भी) को उठाए रखना था जो भगवान को दिए गए प्रसाद और बलिदान को भस्म कर देती थी। निर्दोष के खून को बहना होता था।

एक पवित्र परमेश्वर को पाप का न्याय करना चाहिए, और जब एक व्यक्ति का एक निर्दोष जानवर पर हाथ रखना, इस प्रकार उस जानवर को अपने पाप की पचन देता है, तो जानवर को मरना पड़ता। वेदी पर उसका गला काट दिया जाता और खून बहने के बाद पशु को आग में जला दिया जाता। पाप मृत्यु और नरक में अनंत काल का कारण बनता है। यह वही है जिसमें से यीशु हमारे लिए क्रूस पर हो कर गुजरा। इसलिए उसने कहा, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तु ने मुझे क्यों छोड़ दिया है?" क्योंकि उसने हमारी मृत्यु और अनन्त नरक की आग को ले लिया, जिसको लेने की अब हमें आवश्यकता नहीं है (रोमियों 8:1)। हमारे पापों के कीमत हमेशा के लिए चुका दी गयी है और वे मिट गए हैं!

लेकिन उन मासूम जानवरों का क्या जो मरते थे? अदन की वाटिका से लेकर परमेश्वर की शिक्षा यह है कि हमारे पाप के लिए निर्दोष जानवरों को पाप को ढकने के लिए मरना ही पड़ा, जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु की तस्वीर के रूप में है। अदन में अपने जन्म से पहले, यीशु ने ही आदम और हव्वा को ढकने के लिए उन जानवरों को मार डाला था, यह जानते हुए कि उसे सलीब पर जो करना है उसकी एक तस्वीर थी। पुराने नियम में पाप की भयावहता को प्रदर्शित करते हुए लाखों निर्दोष जानवरों की मृत्यु हो गई। उनसे पाप तो नहीं हटाया गया, परन्तु वे सलीब पर बहाए गए यीशु के लहू को दर्शाते हैं जो पाप को दूर करता है (इब्रानियों 9:22; 1 पतरस 3:18; 2:24; यशायाह 53:5-6; मत्ती 26:28; 2 कुरिन्थियों 5:21; 1

यूहन्ना 1:7)। क्या आप बलिदान की वेदी, यीशु की सलीब के द्वारा परमेश्वर के पास आए हैं? प्रवेश करने का कोई और रास्ता नहीं है, पर केवल एक निर्दोष रक्त-बलि के साथ - यीशु का खून आपके लिए बहाया गया है। तंबू स्पष्ट रूप से निर्दोष लहू के द्वारा अंदर आने के महत्व को दिखाता था। तम्बू में प्रवेश करने पर, कोई जानवरों को देखेगा, धूम्रपान करेगा, मरते हुए जानवरों की चीखें सुनेगा, धुएं और जलते हुए मांस और बालों को सूंघेगा, उनके नंगे पांवों के बीच की मिट्टी को महसूस करेगा (जमीन पर बिखरे हुए सभी रक्त से बना) और यहां तक कि हवा में जला हुआ मांस का स्वाद भी ले सकता है। मत भूलो हम आज भी उसी तरह से ही परमेश्वर के पास आते हैं!

बाहरी आंगन में पीतल की वेदी के अलावा फर्नीचर का एकमात्र टुकड़ा हौदी थी। वेदी यीशु के लहू के द्वारा उद्धार की एक बार के लिए सर्वथा शुद्धिकरण थी (यूहन्ना 3:16)। हौदी पल-पल उद्धार के बाद पापों से शुद्धिकरण के लिए खड़ी है (1 यूहन्ना 1:9)। दोनों ही परमेश्वर की सेवा करने के लिए आवश्यक हैं (1 यूहन्ना 5:6; तीतुस 3:5)। "रॉक ऑफ एजिस," प्रसिद्ध भजन, इसका उल्लेख करता है: "रॉक ऑफ एजिस, मेरे लिए आपने हाथ खोल, मुझे अपने अंदर छिपने दो; पानी (हौदी) और रक्त (वेदी), तेरे घायल पक्ष से जो बहता है (सूली पर चढ़ने से, जो शुद्धिकरण करने के लिए प्रदान किया गया)। पाप का दोहरा इलाज हो (पाप अतीत - उद्धार / पीतल की वेदी; पाप वर्तमान: स्वीकारोक्ति / हौदी)। क्रोध से बचाओ (निर्णय [पीतल] हम पर नहीं बल्कि पीतल की वेदी पर यीशु पर) और मुझे शुद्ध करो (जैसे-जैसे हम और अधिक मसीह के समान बनते जाते हैं, वैसे-वैसे हौदी में प्रतिदिन सफाई करते हैं)।"

"हौदी" "शौचालय" के समान है और धोने के लिए एक जगह को संदर्भित करती है। हौदी सफाई के लिए थी, क्योंकि याजकों को परमेश्वर की सेवा करने के लिए शुद्ध होना होता था। परमेश्वर एक शुद्ध (पवित्र) परमेश्वर है और जो उसकी सेवा करते हैं उन्हें भी शुद्ध होना चाहिए (भजन सहिता 24:3-4)। ध्यान दें कि हौदी केवल याजकों के लिए है। आज सभी मसीही याजक हैं (1 पतरस 2:5-9)। बेशक वे एक बार अपनी सेवकाई (उद्धार) की शुरुआत में धोए गए थे, वे लगातार परमेश्वर की सेवा में गंदे हो गए। जमीन गंदी थी, आग गंदी थी, खून हर जगह था।

तम्बू की इमारत स्वयं लकड़ी के टुकड़ों (यीशु की मानवता) से बनी हुयी थी, जो सोने की एक परत (यीशु की ईश्वरता) से ढकी हुई थी। बोर्ड 15 'बाई 2'-6" और लगभग 4' मोटे थे। यीशु शब्द के पूर्ण अर्थ में एक व्यक्ति था (यूहन्ना 1:1, 14; इब्रानियों 2:17, 14; 1 तीमुथियुस 2:5; 1 पतरस 2:22; यूहन्ना 3:5; 2 कुरिन्थियों 5:21)। अकेसिया की लकड़ी सख्त दाने वाली होती थी, सड़ती या गळती नहीं थी, बहुत मजबूत होती थी, और इसमें कोई दोष या खराबी नहीं पाई जाती थी। यह यीशु को चित्रित करती है, भूमि भी ऐसी ही थी (जैसे लकड़ी थी), जिसमें कोई दोष या असफलता नहीं होती थी (इब्रानियों 4:15; 7:25; 1 पतरस 2:22; 1 यूहन्ना 3:5)। चाँदी की बुनियाद ने तख्तों को पकड़ रखा होता था। चाँदी छुटकारे की कीमत, उद्धार के लिए चुकाई गई कीमत को चित्रित करती है।

तम्बू के ऊपर चार परदे लगे होते थे। पहला सफेद लिनन (यीशु की पूर्णता) उस पर लाल, नीले और बैंगनी रंग में करूबों की कढ़ाई की गई होती थी, जो कि फाटक में के रंगों के समान होते थे। इनमें से एक (बैंगनी) यीशु को मसीहा राजा, दूसरा (लाल) यीशु को परमेश्वर, तीसरा (नीला) यीशु को मनुष्य के रूप में दिखाता था। चेरिब स्वर्गदूत थे जिन्होंने परमेश्वर की पवित्रता की रक्षा की और उसकी घोषणा की। जब याजकों ने ऊपर देखा तो उन्होंने ईश्वर की महिमा, पंख और शक्ति का यह जबरदस्त प्रकटीकरण हर जगह देखा! यही कारण है कि इतने सारे भजन सहिता परमेश्वर के पंखों के नीचे होने की सुरक्षा का उल्लेख करते हैं (भजन सहिता 61:4, 7; 17:8; 57:1; 91:4; 36:7; आदि)।

आगे बकरे के बालों का पर्दा होता था। पापबलि के लिए बकरों का उपयोग किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 4:23, 27-28; 9:2-3; गिनती 7:16; 15:24,27; 28:11, 15)। प्रायश्चित के दिन एक बकरे को बलि के बकरे के रूप में चढ़ाया जाता था (लैव्यव्यवस्था 16; गिनती 28:11-15)। यीशु परमेश्वर के सामने, हमारा पापबलि के रूप में, हमारा बलि का बकरा था (यशायाह 53:6, 10; इब्रानियों 9:14, 26, 28; 10:10, 14; 2 कुरिन्थियों 5:21; इफिसियों 5:2)। उसके ऊपर लाल रंग से रंगे बकरे की खाल की ओडनी होती थी। बकरे को विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया गया था। यह मसीह को हमारे विकल्प के रूप में चित्रित करता है (1 पतरस 3:18; 2:21; 2 कुरिन्थियों 5:21; गलातियों 1:4; यशायाह 53:6; रोमियों 4:25; 5:8; यूहन्ना 3:16)। वे यीशु के लहू के चित्र के रूप में लाल रंग में रंगे गए थे (यशायाह 1:18)। मसीह, हमारे स्थानापन्न, ने हमारे स्थान (बकरे की खाल) में हमारे लिए (बकरों के बाल) पापबलि के रूप में अपना लहू बहाया। इसलिए हम उसकी महिमा करते हैं (करूबों के साथ लिनन)।

इन तीन पर्दों के ऊपर जानवरों की खाल का एक परदा होता था। विद्वानों का मानना है कि यह एक समुंदरी गाय-प्रकार का जानवर होता था (सील, पोरपोइज़, डुगोंग)। यह एक मोटा, सख्त ढका होता था (इससे सैंडल बनाए जाते थे)। इससे उसे भीतर की सुरक्षा प्रदान होती थी (जैसा कि यीशु हमारे लिए करता है)। बाहर से यह तम्बू अनाकर्षक था, और आपने चारों ओर के अन्य तंबुओं से भिन्न नहीं था। एक मनुष्य के रूप में यीशु अन्य सभी के समान दिखता था (यशायाह 53:2-3)। उसे अन्य शिष्यों से अलग नहीं किया जा सकता था, यही कारण है कि यहूदा को उसे इंगित करने के लिए भुगतान किया गया था। बाहर से, दिखने में, यीशु सभी के समान दिखता है। उसकी महान सुंदरता को बाहर से देखा या सराहा नहीं जा सकता है, केवल वे ही ऐसा कर सकते हैं जो अंदर प्रवेश करते हैं (यूहन्ना 1:10-)

13)।

इस द्वार के परदे वैसे ही हैं जैसे पहिले द्वार के परदे। हालाँकि, यह केवल आधा आकार है। बहुत से लोग यीशु के पास उद्धार के लिए आते हैं (पीतल वेदी) लेकिन उनमें से कुछ ही अपने जीवन के साथ यीशु की सेवा करने और दिन-ब-दिन उसकी उपस्थिति में रहने के लिए जाते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति में भीतरी भवन में जाने से कहीं अधिक लोग तम्बू में आते थे।

इमारत के अंदर एक सलीब के आकार में फर्नीचर के 5 टुकड़े थे। बाईं ओर एक दीवट होता था जो रोशनी दे रहा होता था, क्योंकि इमारत के अंदर कोई प्राकृतिक रोशनी नहीं होती थी। यह सोने से बना होता था, जिसमें यीशु को ईश्वर के रूप में दिखाया गया था जो दुनिया की रोशनी था। प्रकाश की तुलना अंधकार से की गई है, जो पाप और बुराई का प्रतीक है (नीतिवचन 4:19; यूहन्ना 3:19)। संसार आज अन्धकार में है (रोमियों 1:22, 25)। मनुष्य, चट्टान के नीचे कीड़ों की तरह, प्रकाश से छिपने की कोशिश करता है (प्रकाशितवाक्य 6:15-17)। हालाँकि, प्रकाश अंधेरे से बड़ा है। प्रकाश अंधकार को दूर कर सकता है, परन्तु अंधकार प्रकाश को दूर नहीं कर सकता (यूहन्ना 1:9)।

दीवट के उस पार एक मेज थी, जिस पर रोटी रखी हुई होती थी। मेज लकड़ी और सोने से बनी होती थी (मनुष्य और ईश्वर के रूप में- यीशु को दर्शाती है) और इस पर याजकों के पोषण के लिए रोटी रखी होती थी। रोटी का उद्देश्य था याजकों के लिए भोजन करना था, परमेश्वर की उपस्थिति में स्वयं का पोषण करना (1 शमूएल 21:6; लैव्यव्यवस्था 24:5-9)। यही संगति है - अन्य विश्वासियों/याजकों के साथ यीशु पर उसकी ही उपस्थिति में पोषण करना (1 कुरिन्थियों 10:16-17)। व्यक्तिगत रूप से हम इसे निजी आराधना और ईबादत में करते हैं।

तम्बू की इमारत के अंदर, संक्षेप में, तीन घनक्षेत्र थे। यह परमेश्वर की त्रिगुणात्मक त्रिमूर्ति को दर्शाता है। पवित्र स्थान दो घनों के आकार का होता था और फिर एक पर्दा इसे परम पवित्र स्थान से अलग करता जो एक पूर्ण घन था। परदे के साम्हने पवित्र स्थान में सोने की एक वेदी होती थी जिस पर धूप जलाया जाता था। एक दिन जकरयाह नाम का एक बूढ़ा याजक यरूशलेम के मन्दिर में सेवा कर रहा था। उसे सोने की वेदी पर धूप चढ़ाने के लिए एक पर्ची द्वारा चुना गया था, जीवन भर में एक बार मिले वाला (यदि आपको यह करने को मिलता तो) विशेषाधिकार था ! यह अक्टूबर का पहला सप्ताह था, 748 ए.यू.सी. (6 ईसा पूर्व)। वहां जो हुआ उससे उसकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। आप लूका 1 में जिब्राईल के साथ उसकी मुलाकात के बारे में पढ़ सकते हैं।

बाइबल में धूप का उपयोग प्रार्थना और परमेश्वर के साथ बातचीत की नजदीकी के प्रतीक के रूप में किया जाता है (भजन संहिता 142:2; 141:2; लूका 1:10; प्रकाशितवाक्य 5:8; 8:3-4; एब्रा 9:5; दानियेल 9:21)। जकरयाह यही कर रहा था जब जिब्राईल उसे यह बताने आया कि उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया गया है (लूका 1)। सलीब पर किये यीशु के काम से आग के साथ सोने की वेदी से पता चलता है कि वेदी यीशु की एक तस्वीर है और वह जो प्रार्थना करता है वे परमेश्वर के पास ऊपर जाती है। इस समय यीशु हमारे लिए स्वर्ग में क्या कर रहा है? वह हमारे लिए विनती करता है (इब्रानियों 7:25; 8:1; रोमियों 8:34)। जब वह पृथ्वी पर था तब उसने अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना की, और वह आज भी अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना करता है (लूका 22:31-32)। यूहन्ना 17 इस बात का उदाहरण है कि वह हमारे लिए कैसे प्रार्थना करता है।

इससे पहले कि हम पाप करें, यीशु हमारी ओर से मध्यस्थता करता है। यदि हम वैसे भी पाप करते हैं, तो वह हमारा वकील (वकील) बन जाता है और परमेश्वर के सामने हमारे मामले का प्रतिनिधित्व करता है (1 यूहन्ना 2:1)। जब शैतान चाहता है कि हमारे पाप करने के बाद परमेश्वर हमारे विरुद्ध मृत्युदंड लागू करे, उस वक्त वह हमारे बचाव में आता है। उसका बचाव: हमारे पापों का भुगतान पीतल की वेदी पर किया गया था।

धूप की वेदी के पीछे एक पर्दा है। यह तीन प्रवेश मार्गों में से तीसरा है। वे यीशु को मार्ग, सच्चाई और जीवन के रूप में दिखाते हैं (यूहन्ना 14:6)। द्वार (#1) यीशु को परमेश्वर के मार्ग के रूप में दिखाता है (कार्यों, परिवार आदि के द्वारा नहीं)। इफिसियों 2:8-9; गलातियों 2:16)। द्वार (#2) यीशु को परमेश्वर के सत्य के रूप में दिखाता है (केवल यीशु की बुद्धि ही काफी है, वह हमारा प्रकाश और पोषण है, यूहन्ना 4:25)। पर्दा (#3) यीशु को परमेश्वर के जीवन के रूप में दिखाता है (1 यूहन्ना 1:1-2; यूहन्ना 3)। परदा यीशु के जीवन, उनके शरीर का प्रतीक है।

15' गुणा 15' वर्गाकार पर्दा या घूंघट महीन मलमल (यीशु की पवित्रता और धार्मिकता) का होता था। यह एक करूब के डिजाइन में लाल, नीले और चमकते लाल रंग के धागे से कढ़ा होता था। इसका महत्व वही है जो ऊपर के पर्दे का होता है - यह परमेश्वर की महिमा और शक्ति, उसकी महानता और संप्रभुता को दर्शाता है। यह तीसरा द्वार दूसरे द्वार के समान आकार का होता है, लेकिन जब वह खुला था तो सभी को बाहर रखते हुए इसे बंद कर दिया जाता था।

इस परदे का उद्देश्य था परमेश्वर पवित्रता की रक्षा करना और पापी मनुष्य को परमेश्वर उपस्थिति से दूर रखकर, ऐसा न हो कि मनुष्य तुरन्त नष्ट हो जाए। परदा मनुष्य और ईश्वर के अलगाव को दिखाने के लिए था - लेकिन यह कोई दीवार नहीं थी (यह वादा करते हुए कि एक दिन रास्ता खुला रहेगा)।

केवल महायाजक ही परदे के आगे परम पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते थे , और वो भी वर्ष में केवल एक बार, प्रायश्चित के दिन पर। तब उसे निर्दोष लहू के साथ आना पड़ता था (लैव्यव्यवस्था 16:2; इब्रानियों 9:6-8), परमेश्वर तक पहुँच केवल लहू के द्वारा ही होती। फिर भी, उसके टखने के चारों ओर एक रस्सी बंधी होती। यदि बलिदान परमेश्वर को अस्वीकार्य ठहरे , और वह मारा जाये और वहीं पड़ा रहेगा और सड़ जाएगा। उसे बाहर निकालने के लिए रस्सी का इस्तेमाल किया जायेगा। परमेश्वर मतलबी नहीं था, सिर्फ पवित्र था। उसकी उपस्थिति में किसी भी पाप की अनुमति नहीं थी, जैसे एक ऑपरेटिंग कमरे में किसी भी रोगाणु की अनुमति नहीं होती है। पर्दा किस लिए खड़ा है? यह आसान सी बात है, क्योंकि इब्रानियों 10:19-20 हमें ठीक-ठीक बताता है कि यह यीशु के शरीर को चित्रित करता है।

जो मन्दिर सुलैमान ने बनवाया और हेरोदेस ने फिर से बनवाया, वह तम्बू के समान था बस आकार में बड़ा था। यीशु के दिनों में घूँघट 30 फुट चकोर और 4 इंच मोटा था। यह कला का एक सुंदर काम था, डिजाइन में भव्य, रंग में कलात्मक, सूक्ष्म विवरण में शानदार, और अलंकरण में समृद्ध। यह ददुनीया का सबसे महान टेपेस्ट्री में से एक था। इसे नियमित रूप से बदल दिया जाता था ताकि कमजोर न हो जाये। यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह मजबूत था इसे बैलों द्वारा चारों कोनों को एक साथ खींचकर परीक्षण किया जाता था। मनुष्य को परमेश्वर के फैसले से बचाने वाले अवरोध को तोड़ने का वे कोई मौका नहीं लेंगे।

जैसे ही यीशु की मृत्यु हुई, मंदिर में कई घटनाएँ घट रही थीं । एक तो यह कि सारे देश के लिये फसह का मेम्रा मारा जा रहा था। इसके साथ ही, दूसरी बात यह कि एक याजक धूप की वेदी पर परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था। ठीक उसकी आँखों के सामने बड़ा परदा ऊपर से नीचे तक फटा हुआ था, जो परमेश्वर के हाथों ने पकड़ा हुआ था (मत्ती 27:46-52; मरकुस 15:34-38; लूका 23:44-46)। परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेल-मिलाप के कार्य का जिक्र करते हुए यीशु ने अभी-अभी कहा था, "पूरा हुआ,"। परदा फाड़ना परमेश्वर का कहने का तरीका था, "अब हमें इसकी आवश्यकता नहीं है।" जैसे यीशु का शरीर फटा हुआ था, वैसे ही मंदिर में परदा भी फटा हुआ था। प्रभु भोज में हम इसी घटना को याद करते हुए रोटी तोड़ते हैं। परदा ऊपर से नीचे तक फटा हुआ था, यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने यीशु के बलिदान को दुनिया के पापों के लिए पर्याप्त भुगतान माना था। यह बीच में फटा हुआ था ताकि यह सभी के लिए स्पष्ट हो, क्योंकि यीशु को सबके सामने सार्वजनिक रूप से सलीब पर चढ़ाया गया था। यह पूरी तरह से फटा हुआ था; बाधा को हटा दिया गया था, ना केवल आंशिक रूप से या अंदर झांकने की अनुमति देने के लिए।

इस घटना ने पुराने तरीके, व्यवस्था को समाप्त कर दिया, और नए की यानि अनुग्रह की स्थापना की (इब्रानियों 10:19-22)। अब हम जब चाहें परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकते हैं। हमें एक व्यक्ति की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है जिसके पैर के चारों ओर एक रस्सी बंधी हो और जो वर्ष में केवल एक बार हमारा प्रतिनिधित्व करता हो। हर बार जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम उस याजक की तरह परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं। हमारी यह पहुँच केवल उस कार्य के कारण है जो यीशु ने सलीब किया । इसी लिए जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम कहते हैं "यीशु के नाम में"। हमारी पहुँच का विशेषाधिकार यीशु के माध्यम से है। हम इस बात की सराहना नहीं करते हैं कि प्रार्थना करना क्या ही एक विशेषाधिकार है, या "यीशु के नाम में" प्रार्थना करने का वास्तव में क्या अर्थ है। फिर से हम देखते हैं कि हमारे पास जो कुछ है वह यीशु की मृत्यु से आया है। उस का जीवन हमारी निंदा करता है, क्योंकि यह हमारे पाप और असफलता को दर्शाता है, क्योंकि हम एक सिद्ध जीवन नहीं जीते हैं जैसा उसने जिया था। उसकी मृत्यु हम सभी के लिए परमेश्वर के पास जाने का रास्ता खोलती है। हर बार जब आप प्रार्थना में उसकी उपस्थिति में प्रवेश करते हैं उसका धन्यवाद करें !

अति पवित्र स्थान के अंदर एक लकड़ी का सन्दूक था जिसे वाचा का सन्दूक कहा जाता था जिसके ऊपर दया आसन होता था। यह यीशु को परमेश्वर और मनुष्य के रूप में दर्शाता है (यूहन्ना 1:1, 14)। यह लकड़ी से बना था (यीशु की मानवता, यशायाह 53:2); सोने से ढका हुआ (यीशु का ईश्वरत्व, कुलुस्सियों 2:9)। रक्षा और सुरक्षा के लिए एक बॉक्स के रूप में, जो कुछ भी इसमें रखा होता था वह सबसे महत्वपूर्ण था। इब्रानियों 9:1-5 में सामग्री का विवरण दिया गया है: व्यवस्था की पटिया, मन्ना से भरा हुआ सोने का कटोरा, और हारून की छड़ी जिस पर कलीयां उगी हुई थी। इसका एक नाम "गवाही का सन्दूक" भी है क्योंकि इनमें से प्रत्येक परमेश्वर की पवित्रता और अनुग्रह और मनुष्य की पापपूर्णता और अवज्ञा की गवाही देता है। वे मनुष्य की असफलता और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की गवाही देते हैं।

दया आसन दो करूबों के आकार में पीटे हुए ठोस सोने से बना होता था, जो उनके आपने ही पकड़े हुए ढक्कन को देख रहे होते थे। इन करूबों के बीच का स्थान तम्बू में सबसे महत्वपूर्ण स्थान था, वास्तव में यह पृथ्वी पर सबसे महत्वपूर्ण स्थान था, क्योंकि यहीं पर परमेश्वर की उपस्थिति होती थी (1 शमूएल 4:4; 2 शमूएल 6:2; 2 राजा 19:15; भजन संहिता 80:1; 99:1)। यह उसका सिंहासन था (प्रकाशितवाक्य 11:19)। इसे 'शेकीनाह' महिमा (अर्थात् परमेश्वर की 'उपस्थिति') कहा जाता है, यह वह जगह है जहाँ परमेश्वर था और जहाँ से वह मनुष्य से बात करता था (गिनती 7:89; निर्गमन 25:22)।

नए नियम के समय में परमेश्वर की उपस्थिति मसीह में थी, जो परमेश्वर था। उसने पृथ्वी पर 'निवास' किया (यूहन्ना 1:1-14)। यीशु को 'इमैनुएल' कहा गया था जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ' (यशायाह 7:14; मत्ती 1:23)।

जब प्रायश्चित के दिन वहां लहू डाला गया था (योम किप्पूर, लैव्यव्यवस्था 17)। हारून ने एक बकरे को जलती हुई वेदी पर चढ़ाया, और उसका लोहू सोने के पात्र में रखा। इसका कुछ भाग दूसरे बकरे ('बलि का बकरे') पर छिड़का जाता था और बाकी को महायाजक द्वारा, अपने टखने के चारों ओर एक रस्सी बंधे हुए परम पवित्र स्थान में ले जाया जाता था। यदि भेंट को परमेश्वर ने अस्वीकार कर दिया, और याजक को मार डाला होता। फिर लहू को दया आसन पर छिड़का जाता (लैव्यव्यवस्था 16:14)। यह सात बार (पवित्र पूर्णता) किया जाता था। निर्दोष लहू के बिना मनुष्य परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश नहीं कर सकता (इब्रानियों 9:22)। इब्रानियों के लेखक का कहना है कि मसीह (एक प्रतीक के रूप में) अपने लहू को सभी पापों के लिए अंतिम बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए परमेश्वर के पास ले गया (9:24-28)। कलवारी पर मसीह का बलिदान प्रायश्चित के दिन की ओर इशारा करता था। उसने यह पूरा किया, इसकी फिर कभी जरूरत नहीं पड़ी। इसलिए परदे को परमेश्वर ने फाड़ा था, अब इसकी जरूरत नहीं थी।

तम्बू में सब कुछ हमारे लिए यीशु के बलिदान का एक चित्र है (इब्रानियों 9:11-14)। तम्बू विशेष रूप से दया का आसन, वह स्थान था जहाँ परमेश्वर मनुष्य से मिला था। वाचा के सन्दूक के ऊपर के ढक्कन को "दया आसन" कहा जाता था क्योंकि उसने ऐसा ही किया था। इसका पुराने नियम में 26 बार और नए नियम में 4 बार प्रयोग किया जाया है। नए नियम के उपयोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं: 1 यूहन्ना 2:2; 4:10; इब्रानियों 9:5; रोमियों 3:21-25। पुराने नियम में अनुवादित शब्द "दया आसन" का अनुवाद यहां "प्रायश्चित" या "प्रायश्चित" किया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है "ढक्कना", क्योंकि यीशु का लहू हमारे पापों को ढक्कन देता है, इसको तम्बू में दया के आसन को ढक्कन देने वाले लहू द्वारा चित्रित किया गया है। इसका अर्थ है कि उसने पाप पर परमेश्वर की मनको को पूरा किया। उसने पाप पर न्याय की कीमत चुकाई ताकि हम स्वतंत्र और स्पष्ट रूप से परमेश्वर के पास जा सकें। यही वह चीज है जो मसीह को हमारी दया आसन बनाती है (इब्रानियों 10:19-22)।

सब कुछ खून पर निर्भर करता है। यही कारण है कि करूबों को खून की ओर देखते हुए चित्रित किया गया है। वे परमेश्वर के छुटकारे के उद्देश्य को प्रकट करने में रुचि रखते हैं। उन्होंने स्वयं कभी अनुग्रह और छुटकारे का अनुभव नहीं किया, वे इसे केवल हमारे जीवन में देखते हैं। यह परमेश्वर के बारे में जो कुछ भी दिखाता है, उसके कारण वे गहराई से जिज्ञासु होते हैं (1 पतरस 1:11-12; 1 कुरिन्थियों 4:9; इफिसियों 3:10)। परमेश्वर को हम पर दया दिखाने से वे चकित होते हैं - और यही "दया" आसन है! यह एक अयोग्य और क्रूर पापी पर ईश्वर की भलाई को दर्शाता है।

परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र तरीका है, यीशु के लहू के द्वारा। निर्दोष लहू के बिना उसकी उपस्थिति में आने का प्रयास तत्काल मृत्यु और विनाश लाना (इस वजह से 50,070 लोग मारे गए, 1 शमूएल 6:19-21)। खून के अलावा कोई दया नहीं है, केवल न्याय है।

परमेश्वर ने स्वयं एक बादल के भीतर से तम्बू की गति को निर्देशित करता जो दिन के दौरान सूर्य से सुरक्षा प्रदान करता था और रात में परमेश्वर की उपस्थिति से चमकता था। जब बादल चलता तो सारी यहूदी जाति, जो तम्बू के चारों ओर डेरे डाले हुए थी, उसके पीछे चलती थी।

मिलाप वाले तम्बू के सटीक नमूने का अनुसरण करते हुए, जिसे परमेश्वर ने मूसा को दिया था, यहूदियों ने यरूशलेम में एक स्थायी तम्बू जिसे हैकल कहा जाता है, उसका निर्माण किया। दाऊद ने इसकी योजना बनाई और सुलैमान ने इसे बनाया। यह प्राचीन दुनिया के आश्चर्यों में से एक था! लेकिन, 300 वर्षों के बाद, नबूकदनेस्सर और बाबिलियों ने इसे नष्ट कर दिया। सत्तर साल बाद एज्रा बाबुल से लौटा और इस हैकल के पुनर्निर्माण कार्यक्रम का नेतृत्व किया। 400 साल तक यहूदियों ने इसका इस्तेमाल किया, फिर हेरोदेस ने इसे तब तक बढ़ाया और सुशोभित किया जब तक कि यह एक बार फिर दुनिया के आश्चर्यों में से एक नहीं हो गया। 100 से भी कम वर्षों के बाद इसे तब नष्ट कर दिया गया जब 70 ईस्वी में रोम द्वारा यरूशलेम पर विजय प्राप्त की गई। आने वाले क्लेश काल के दौरान यहूदियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उसी स्थान पर एक हैकल होगा जब तक कि मसीह-विरोधी इस पर अपना अधिकार नहीं ले लेता और इसमें अपनी आराधना करवाने के लिए खुद को स्थापित नहीं करता। इसे आरएममगिदोन की लड़ाई के दौरान नष्ट कर दिया जाएगा। वहाँ एक सहस्राब्दी का हैकल 1,000 वर्षों के लिए पृथ्वी पर परमेश्वर का सिंहासन बनेगा (यहेजकेल 40-48)।

जब यीशु पृथ्वी पर आया तो वह मात्र एक ऐसा स्थान था जहाँ परमेश्वर और मनुष्य मिले थे, जहाँ परमेश्वर मनुष्य के बीच रहता था। यूहन्ना 1:14 कहता है कि यीशु "शरीर बन गया और उसने हमारे बीच अपना निवास स्थान बनाया।" सचमुच बाइबल कहती है कि वह देहधारी हुआ और हमारे बीच में "मेजबान" बना। पृथ्वी पर रहते हुए यीशु तम्बू था। यह सब उसकी ओर इशारा करता था और उसके बारे में बात करता था, और उसने इसे पृथ्वी पर रहते हुए पूरा किया। तम्बू की तरह, पृथ्वी पर यीशु का जीवन अस्थायी, विनम्र, दिखने में सरल, परमेश्वर का निवास स्थान और बलिदान का स्थान था।

आज परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्य द्वारा निर्मित भवन में वास नहीं करता है। उसका वास उन लोगों के दिलों में है जो उससे प्यार करते हैं और जिन्होंने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है। हम आज उसका तम्बू ("निवास") हैं (1 कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19; 2 कुरिन्थियों 6:16)। इस प्रकार निवासस्थान/तम्बू आज हम लोग हैं! हम उसका तम्बू हैं, और हम उसके राजकीय याजकपद हैं (1पत. 2:5,9-10)। अपने जीवन में परमेश्वर की सेवा करने के लिए हमारा क्या ही एक विशेषाधिकार है!

इस बारे में सोचें कि कैसे परमेश्वर ने तम्बू को तैयार किया और उसकी देखभाल करता था, कैसे उसने अपनी महिमा को प्रकट करने के लिए इसका उपयोग किया, यह वह जगह थी जहां वह मनुष्यों के बीच

पृथ्वी पर रहता था। परमेश्वर हमारे लिए और भी अधिक तैयारी करता है और हमारी परवाह करता है। आज वह हमारा उपयोग दूसरों को अपनी महिमा प्रकट करने के लिए करता है। यह हम में ही है, कि वह पृथ्वी पर रहता है। आज हमारे लिए यह क्या ही बड़ी और विशेष आशीष की बात है!

याजकियापन

जब आप "याजक " शब्द सुनते हैं तो आप क्या सोचते हैं? किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जो विशेष कपड़े पहनता है और भगवान और मनुष्य के बीच के एक धार्मिक समूह में एक मध्यस्त के रूप में कार्य करता है? यदि आप ऐसा ही सोचते हैं, तो आप काफी सटीक हैं। जबकि अधिकांश धर्मों में भी याजकियन होता है, लेकिन हम जिस एक के बारे में विचार करते हैं वह है जिसे परमेश्वर ने बाइबिल में इज़राइल के लिए स्थापित किया है। बाकी सब शैतान के स्वरूप हैं।

परमेश्वर ने लेवी के गोत्र को परमेश्वर के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता के कारण याजकीय गोत्र के रूप में चुना क्योंकि जब मूसा परमेश्वर की व्यवस्था के साथ सीनै पर्वत से नीचे आया तो अन्य लोग पाप कर रहे



थे। लेवी याकूब और लिआ: का पुत्र था। उसके वंशज जन्म से लेवी हैं। लेवी याजकों को सन्दूक ले जाने और तम्बू और बाद में हैकल की देखभाल करने में सहायता करते थे। वे द्वारपाल थे, संगीत प्रदान करते थे, बलिदान तैयार करते थे, आवश्यकतानुसार साफ सफाई करते थे और मरम्मत करते थे, और वेदी पर आग लगाते थे। इसमें 25 से 50 वर्ष के बीच के स्वस्थ पुरुष सेवा करते थे। उन्होंने अभिषेक और सफाई के अनुष्ठान के साथ अपनी सेवा शुरू की, और फिर उन्हें साफ रहने के लिए लगातार, नियमित सफाई की आवश्यकता होती थी ताकि वे सेवा कर सकें।

लेवियों के पास कोई भूमि नहीं थी, परन्तु उन्हें प्रत्येक गोत्र के क्षेत्र में चार नगर दिए गए, ताकि वे उनके बीच रह सकें और लोगों की पासबानी कर सकें। उन्हें लोगों के दशमांश के द्वारा और बलिदानों के अंशों को जो परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए हुए होते थे, प्राप्त करने के द्वारा भुगतान किया जाता था। उनका काम था व्यवस्था की नकल करना, उसे पढ़ाना और लागू करना और हर तरह से याजको की मदद करना।

याजक लेवी के गोत्र का एक छोटा भाग थे। वे हारून के परिवार के वंशज थे, जो एक लेवीवंशी था। उस के पुत्र याजक थे। सबसे बड़े पुत्र का सबसे बड़ा पुत्र महायाजक था। हारून पहला महायाजक था। वास्तव में मूसा परमेश्वर की पहली पसंद था, लेकिन जब उसने परमेश्वर के लिए फिरौन से बात ना की तो उसने इसे ठुकरा दिया। हालाँकि हारून ने इतना खराब प्रदर्शन किया कि मूसा ने मिस्र में रहते हुए वैसे भी इसे संभाल लिया।

जब हारून महायाजक था तब उसके पुत्र याजक थे। नादाब और अबीहू ने वेदी पर 'अजीब' आग का उपयोग करते हुए, परमेश्वर के निर्देशों का पालन ना करते हुए आज्ञा का पालन नहीं किया। नतीजा यह हुआ कि परमेश्वर ने उनकी जान ले ली। उनके भाइयों एलीआजर और ईतामार ने उनका काम लिया। वहाँ से आगे पहलौठा का पहलौठा इस पद का वारिस हुआ। यदि कोई पुत्र अपंग या किसी भी प्रकार से दुर्बल हो तो उसे याजक के रूप में सेवा नहीं मिलती थी।

याजक ने 30 से 50 वर्ष की आयु तक सेवा करते थे। 30 से कम उम्र के लोगों को विशेषाधिकार के साथ आने वाली जिम्मेदारी के लिए पर्याप्त परिपक्व नहीं माना जाता था। वे भी उन्हीं नगरों में रहते थे, जिनमें लेवी रहते थे, कि वे लोगों के बीच उनकी पासबानी करें। वे लोगों द्वारा प्रदान किए गए धन और भोजन के दशमांश पर रहते थे।

जब वे पहली बार याजकों की सेवा करने लगे, तो उन्हें तम्बू या हैकल के द्वार पर साफ़ किया जाता। एक बैल पर हाथ रखे जाते थे जिसकी बलि की जाती थी और उसका खून वेदी के सींगों पर छिड़का जाता था। याजक को पवित्रता के लिए सफेद कपड़े पहनाए जाते और तेल से अभिषेक किया जाता। बैल के खून को उनके दाहिने कान, हाथ और पैर पर प्रभु के पूर्ण अभिषेक के चित्र के रूप में लगाया जाता था।

जबकि याजकों के पूरे कपड़े सफेद होते थे, महायाजक ने लाल, नीले और बैंगनी रंग में भी बुना था। उसने एक विशेष वस्त्र और एक एपोद पहना होता था जिसका उपयोग परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में उसकी भूमिका निभाने में किया जाता था। उसमें ऊरीम और तुम्मीम रखे जाते थे। महायाजक एक मध्यस्थ होता था, जो परमेश्वर के सामने मनुष्य का और मनुष्य के सामने परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता था।

याजक इस जिम्मेदारी को सोने की वेदी पर धूप जलाकर निभाते, जैसा कि जकर्याह कर रहा था जब स्वर्गदूत ने उसे बताया कि उसकी पत्नी यहुन्ना बपतिस्मा देने वाले को पैदा करेगा। उन्होंने दीवटों पर दीयों को साफ करते और उनकी बतियाँ काटते, शोब्रेड की मेज पर ताजी रोटी रखते, आग को लगते और पीतल की वेदी पर से राख को साफ करते। इसके अलावा, वह अशुद्ध, विशेषकर कोढ़ियों का निरीक्षण करते, और यदि परमेश्वर ने उन्हें चंगा किया होता, तो उन्हें शुद्ध घोषित करते। वह लोगों को व्यवस्था सिखाते और अपील के उच्च न्यायालय के रूप में कार्य करते यदि ऐसे मुद्दे होते जिन्हें लेवी संभाल नहीं सकते होते थे।

जैसा कि यीशु के बारे में सिखाने के लिए तम्बू और मंदिर में सब चीजों के बारे में सच था, याजक में भी था। वह हमारा महायाजक है (इब्रानियों 3:1; 4:14)। जबकि यहूदी महायाजक बलिदान के लहू को दया आसन पर रखता, यीशु ने हमारे पापों के लिए अपने लहू से भुगतान किया (1 पतरस 1:18-19)। यीशु हमारा मध्यस्थ है, हमारे बीच में, हमारे लिए परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है और हमारे लिए परमेश्वर को (1 तीमुथियुस 2:5-6; इब्रानियों 4:14-16)।

हमें ऐसा अद्भुत, दयालु महायाजक देने के लिए हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं जो स्वयं पाप के लिए हमारा बलिदान बन गया। यीशु पुराने नियम के याजिक्यन की अंतिम पूर्ति है। इसलिए पुराने नियम में याजिक्यन यीशु को महायाजक के रूप में दर्शाता है। फिर उसके अधीन सेवा करनेवाले याजक कौन हैं? हम हैं! सभी विश्वासी याजक हैं (1 पतरस 2:4-5)। आदम से शुरू होकर हर आदमी अपना खुद का याजक था और उसने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाता था। बाद में यह पद प्रत्येक परिवार

के मुखिया के पास गया: नूह, अब्राहाम, आदि। सेने पर्वत के बाद केवल लेवी के गोत्र और हारून के परिवार के पुरुष ही याज्ञक के रूप में सेवा कर सकते थे। अब, कलीसिया के युग में, नया जन्म लेने वाला प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर की दृष्टि में एक याज्ञक है। अपने जीवन और साक्षी के द्वारा मनुष्य के सामने परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में और अपनी प्रार्थनाओं और हिमायत के द्वारा मनुष्य को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करने में हमारे पास कितना बड़ा सम्मान और विशेषाधिकार है।

हम भी, जन्म से याज्ञक बनते हैं - परमेश्वर के परिवार में नया जन्म। हमें शुद्ध किया जाता है और पवित्र किया जाता है, उद्धार से समय याज्ञक के रूप में सेवा करने के लिए अलग किया जाता है हम धुलने से साफ रहते हैं जब हम अपने पापों को मान कर गंदे हो जाते हैं (1 यूहन्ना 1:9)। इसके बाद हम भी उसकी दृष्टि में अपनी पवित्रता दिखाते हुए सफेद कपड़े पहते हैं। हम भी तेल से अभिषिक्त होते हैं - पवित्र आत्मा। हमारे दाहिने कान, हाथ और भोजन पर खून के बजाय, हम यीशु के खून से ढके हुए हो जाते हैं।

हम उसकी सेवा करने के लिए उपलब्ध हैं क्योंकि उसे जरूरत है। हम एक दूसरे की सेवा करके उसकी सेवा करते हैं। परमेश्वर हमें एक दूसरे के बोझ को उठाने के लिए कहता है (गलातियों 6:2), उन्हें भावनात्मक रूप से प्रोत्साहित करने के द्वारा (गिनती 6:22-27), एक दूसरे के लिए नियमित रूप से मध्यस्थता करने के द्वारा (कुलुस्सियों 1:3; 2 थिस्सलुनीकियों 1:11), प्यार से उन लोगों का सामना करने के द्वारा जो पाप में हैं (निर्गमन 32:25-29; 2 इतिहास 26:16-21; गलातियों 6:1)।

आप एक याज्ञक हैं। मैं एक याज्ञक हूँ। क्या ही बड़ा विशेषाधिकार है यह। हमें किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा से परमेश्वर के पास जाने की आवश्यकता नहीं है; हम जब चाहें सीधे स्वयं जा सकते हैं। हम किसी भी समय उसके बारे में दूसरों से बात कर सकते हैं या दूसरों के बारे में उससे बात कर सकते हैं। हम जब चाहें उसकी उपस्थिति में आ सकते हैं। पुराने नियम में केवल महायाज्ञक ही परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकता था, और वो भी वर्ष में केवल एक बार और डरते और कांपते हुए। हम किसी भी समय उसकी उपस्थिति में आ सकते हैं क्योंकि यीशु ने सलीब पर अपने कार्य द्वारा अलग करने वाले परदे को फाड़ दिया। यीशु के याज्ञक होना - कितना सम्मान और विशेषाधिकार है!



यीशु के आने से पहले उद्धार

सवाल अक्सर उन लोगों के बारे में सामने आता है जो यीशु से पहले पैदा हुए थे या फिर आज जिन्होंने उसके बारे में कभी नहीं सुना है। क्या उनके लिए उद्धार उपलब्ध है? यदि हां, तो कैसे? आइए पहले यह सुनिश्चित करें कि उद्धार केवल यीशु के द्वारा ही पाया जाना है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2:5)। हमें स्वर्ग तक पहुँचाने का कोई दूसरा रास्ता, व्यक्ति या धर्म आदि नहीं है। केवल यीशु। लेकिन उनका क्या जिन्होंने कभी उसके बारे में नहीं सुना?

प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के प्रति जवाबदेह है, यदि उन्होंने यीशु का नाम सुना है तो भी या नहीं सुना है तो भी (रोमियों 1:18-32; 3:23)। सभी परमेश्वर से अनन्तकाल की दूरी के पात्र हैं (रोमियों 6:23)। उसने उनके पापों के लिए भुगतान किया, यदि उन्होंने उसके बारे में सुना है या नहीं सुना है (यूहन्ना 4:42; 1

यूहन्ना 2:2)। जो लोग पाप के लिए उसके भुगतान को अस्वीकार करते हैं, वे नरक में पाप पर परमेश्वर के क्रोध को अनंत काल तक सहन करेंगे (यूहन्ना 3:16, 36; प्रकाशितवाक्य 20:15)।

उद्धार केवल परमेश्वर के क्षमा भावना के सुसमाचार को सुनने से आता है (रोमियों 10:13-14)। हम जानते हैं कि परमेश्वर न्यायी है और कभी भी ऐसा कुछ नहीं करेगा जो न्यायसंगत न हो (उत्पत्ति 18:25; रोमियों 2:11)। सभी नरक के पात्र हैं; कोई भी स्वर्ग के योग्य नहीं है, या फिर यहाँ तक कि यीशु के द्वारा स्वर्ग में एक अवसर का भी हकदार नहीं है (इफिसियों 2:1-9)। लेकिन परमेश्वर किसी को यीशु को अस्वीकार करने के लिए कैसे जिम्मेदार ठहरा सकता है अगर उन्होंने उसके बारे में कभी सुना ही नहीं है ?

जिनके पास पुराना नियम नहीं है

सबसे पहले, आइए उन लोगों के बारे में बात करें जो पुराने नियम में उसके लिखित वचन के माध्यम से परमेश्वर के बारे में नहीं जानते हैं। हो सकता है कि उन्होंने इजराइल के सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में न सुना हो, परन्तु वे जानते हैं कि एक परमेश्वर है, क्योंकि उनके विवेक ने उन्हें यह स्पष्ट कर दिया है (रोमियों 1:19, 32; 2:15; सभोपदेशक 3:11)। सबके भीतर कुछ न कुछ है जो उन्हें बताता है कि परमेश्वर है। अगर वे इसका जवाब देते हैं या इनकार करते हैं तो यह उनकी स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर करता है।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने अपनी अनन्त शक्ति और ईश्वरीय स्वभाव को प्रकृति और जो कुछ उसने बनाया है, उसके माध्यम से प्रकट किया है (रोमियों 1:20)। तो फिर मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व के बारे में इस बुनियादी जागरूकता के बारे में जो करता है उसके लिए जिम्मेदार है। मान लीजिए आप एक अंधेरी गुफा में खो गए थे और फिर एक निश्चित दिशा की ओर इशारा करते हुए एक छोटा सा हल्का सा संकेत - तीर मिलता है। यदि आप इस संकेत-तीर का अनुसरण करने में विफल रहो तो इसमें किसका दोष होगा? सिर्फ आपका। हमारे हृदय और प्रकृति में परमेश्वर के अपने छोटे-छोटे संकेत-तीर हैं। मनुष्य को केवल उनका अनुसरण करना चाहिए।

तो उद्धार के लिए क्या होना चाहिए, इसकी निचली रेखा क्या है? एक व्यक्ति को अपना वह सब कुछ देना चाहिए जो उसके पास है, जिसे वह समझता है की वह परमेश्वर का है, वह सभ परमेश्वर को देना चाहिए। मैं दोहराता हूँ। एक व्यक्ति को अपना वह सब कुछ देना चाहिए जो उसके पास है जिसे वह समझता है की वह परमेश्वर का है वह सभ परमेश्वर को देना चाहिए। यह एक बच्चे के लिए चलेगा, एक मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति, या किसी ऐसे व्यक्ति जो उसके दिल और प्रकृति के माध्यम से केवल जानता ही है कि परमेश्वर है। जितना अधिक हम परिपक्व होते हैं, उतना ही हमें अपना आप परमेश्वर को देना होता है, पर एक बच्चा भी अपना दिल

परमेश्वर को दे सकता है। एक व्यक्ति को उस सत्य को स्वीकार करने और उस ईश्वर के बारे में अधिक जानने और उसका अनुसरण करने के लिए एक ईश्वर है इससे अधिक जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई भी ऐसा कर सकता है, भले ही उन्होंने यीशु का नाम कभी न सुना हो या पुराने नियम को पढ़ा न हो।

परमेश्वर चाहता है कि सभी मनुष्यों का उद्धार हो (1 तीमुथियुस 2:4; 2 पतरस 3:9)। वह उनका स्वागत करता है जो अपनी आत्मिक आवश्यकता को स्वीकार करते हैं और उसकी खोज करते हैं (यहेजकेल 34:11; लूका 19:10)। जब कोई व्यक्ति इस निर्माता परमेश्वर की वास्तविकता को स्वीकार करता है और

उसे बेहतर तरीके से जानना चाहता है तो वह उस सभ जो ईश्वर है उसको स्वीकार कर रहा होता है जिसे वह समझता है। कभी-कभी परमेश्वर उस व्यक्ति को एक दूत (प्रेरितों के काम 16:6-10) के माध्यम से, एक अलौकिक सपने के रूप में आंतरिक प्रकाशन के माध्यम से, या अन्य माध्यमों से प्रकट करेगा जैसे कि सितारों के नाम और उनके अर्थ से जैसे उसने उन्हें बनाया। परमेश्वर का वादा अभी भी सच है। "यदि तुम वहां से अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढोगे, यदि तुम अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उस को ढूंढोगे", तो वह तुम्हें मिलेगा(व्यवस्थाविवरण 4:29)।

जो उसकी ओर नहीं फिरते, वे अज्ञानता के कारण ऐसा नहीं करते, क्योंकि सब के सब उसके प्रति जवाबदेह और पूर्ण रूप से जिम्मेदार हैं (रोमियों 1:19-20)। हालाँकि, यदि वे उसे उत्तर नहीं देते हैं, तो वे उसे अस्वीकार करने के दोषी ठहरते हैं (रोमियों 1:21-23)। मनुष्य सत्य को अस्वीकार कर सकता है (रोमियों 1:18) और परमेश्वर का सम्मान करने से इंकार कर सकता है (रोमियों 1:21), इसके बजाय मूर्तियों की ओर मुड़ता है (रोमियों 1:23)। वे धार्मिकता के परमेश्वर के मनको की तोहीन कर सकते हैं, परन्तु वे फिर भी ऐसा करने के लिए जवाबदेह ठहरते हैं (रोमियों 1:24-32)। गंभीर बात यह है कि जब कोई परमेश्वर को अस्वीकार करता है, तो वह उन्हें अस्वीकार करता है (रोमियों 1:24-32)।

यह कभी नहीं कहा जाना चाहिए कि परमेश्वर ऐसा करने में अनुचित है, यद्यपि (रोमियों 2:1-16)। ईश्वर निष्पक्ष से बड़कर है। वह (प्रकृति) के बिना (हृदय/विवेक) मनुष्य के सामने स्वयं को प्रकट करता है, और मनुष्य को केवल उस सत्य को स्वीकार करना है और अपने हृदय में उस परमेश्वर को स्वीकार करना है जिसने उसे बनाया है। परमेश्वर उसे अधिक प्रकट करे या न करे, परन्तु यदि उसने अपने पास जो कुछ भी है वह सब कुछ परमेश्वर को दे दिया है जिसे वह समझता है, तो परमेश्वर उसके पापों को क्षमा करेगा और उसे उद्धार देगा। यह इससे आसान या निष्पक्ष नहीं हो सकता।

जिनके पास पुराना नियम है

लेकिन फिर, उन लोगों के बारे में क्या जिनके पास पुराने नियम में परमेश्वर का अधिक स्पष्ट प्रकाशन है, लेकिन यीशु के आने से रहते थे और केवल भविष्य में उसके आने के बारे में अस्पष्ट भविष्यवाणियां पड़ते/सुनते थे? उद्धार के लिए उनका मानक क्या होगा? यह उस से अलग नहीं होगा जिसका हमने पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, कि अपने आप का वह सब कुछ परमेश्वर को देना जो उनके पास है जिसे वे समझते हैं कि यह परमेश्वर का है। यह सिर्फ इतना है कि वे पुराने नियम में परमेश्वर के स्वयं के प्रकाशन से परमेश्वर को और अधिक स्पष्ट रूप से समझें।

आप देखिए, उद्धार का आधार हमेशा मसीह की मृत्यु है। यही एकमात्र तरीका है जिससे परमेश्वर किसी के भी पाप को क्षमा कर सकता है, क्योंकि यीशु ने इसके लिए सलीब पर भुगतान किया था। और कोई रास्ता नहीं है। और उस क्षमा विधि को लागू करने की आवश्यकता हमेशा क्षमा के लिए अनुरोध करने वाले व्यक्ति के हृदय से परमेश्वर में विश्वास करने से है। बाइबल के इतिहास में से जो परिवर्तन होता है, वह उस विश्वास की समग्री है, जिसे परमेश्वर ने मनुष्य पर प्रकट किया है। जिनके पास परमेश्वर का लिखित प्रकाशन नहीं है, उनके लिए उनके विश्वास की सामग्री एक सृष्टिकर्ता परमेश्वर में है जो सभी पर प्रभुत्व करता है। जो लोग उसके बारे में अधिक जानते थे उनके लिए सामग्री बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, आदम समझ गया कि अपनी शर्म और दोष को ढकने के लिए निर्दोष का खून बहाया जाना चाहिए। उसने और उसके वंशजों ने परमेश्वर में अपना विश्वास दिखाने के एक तरीके के रूप में बलिदान चढ़ाए जो उनके पापों को दूर करता।

अब जब परमेश्वर ने सीने पर्वत पर मूसा और यहूदियों को व्यवस्था का प्रकाशन किया, तो उन्हें परमेश्वर कौन था और उसकी अपेक्षा क्या थी, इसका अधिक गहरा, स्पष्ट प्रकाशन हुआ। परमेश्वर में उनका विश्वास निर्गमन और लैव्यव्यवस्था में नियमों और विनियमों के अनुसार जीने के द्वारा दिखाया गया था। ऐसा नहीं था कि इन कामों को करने से उनका उद्धार हुआ था, क्योंकि उद्धार एक मुफ्त उपहार है (इफिसियों 2:8-9), परन्तु वह आंतरिक विश्वास बाहरी रूप से परमेश्वर का अनुसरण करने की इच्छा के द्वारा प्रकट होता है - याकूब कहता है "कर्मों के बिना विश्वास मुर्दा है" (याकूब 2:14-20)। उद्धार उनके द्वारा किए गए कार्यों में विश्वास करने से नहीं आया, बल्कि उस परमेश्वर पर विश्वास करने से आया जिसने उन्हें ऐसा करने के लिए कहा था। सच यह है कि व्यवस्था उद्धार नहीं ला सकती थी, चाहे उसे कितनी भी अच्छी तरह से क्यों ना मना गया हो। इसका उद्देश्य उद्धार अर्जित करने का एक तरीका नहीं था बल्कि यह कि मनुष्य को उसके पाप दिखाई दे और परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध होने की असंभवता दिखाई दे (गलातियों 3:14-24)। आज हमारा विश्वास परमेश्वर पर हमारे भरोसे के द्वारा नहीं दिखाया गया है जैसा कि उसकी व्यवस्था में देखा गया है, आज हम अनुग्रह के अधीन हैं और हमारा भरोसा मुफ्त उद्धार देने वाले अनुग्रहकारी परमेश्वर पर है (इफिसियों 2:8-9)।

पुराने नियम के लोगों के सामने वही सत्य प्रकट था जो हमारे पास नए नियम में है। मनुष्य का हृदय दुष्ट और भ्रष्ट है (यिर्मयाह 17:9) और हमारे धार्मिक कार्य भी परमेश्वर की दृष्टि में गंदे हैं (यशायाह 64:6)। क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, अवश्य है कि वह पापी मनुष्य से अलग हो। मनुष्य परमेश्वर तक नहीं पहुंच सकता, केवल परमेश्वर ही मनुष्य तक नीचे पहुंचकर संपर्क शुरू कर सकता है (यशायाह 59:1-2)। वह यह प्रकट करने के लिए नीचे पहुँचता है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच का मार्ग केवल निर्दोष लहू बहाने से ही खुल सकता है (लैव्यव्यवस्था 17:11)। जानवरों का लहू पाप का भुगतान नहीं कर सकता, लेकिन पापरहित परमेश्वर-मनुष्य मसीह का बलिदान सभी के पापों का भुगतान कर सकता है (यशायाह 53:1-12)।

इसलिए जिनके पास पुराना नियम था उन लोगों के लिए आने वाले मसीह द्वारा प्रावधान में विश्वास करना उनके विश्वास की सामग्री में प्रमुख था। वे नहीं जानते थे कि उसका सांसारिक नाम 'यीशु' होगा, लेकिन यह मुद्दा नहीं था। इस आने वाले मसीह पर विश्वास करना महत्वपूर्ण बिंदु था। क्योंकि वे नहीं कर सकते थे इसलिए परमेश्वर उनके पापों के लिए प्रदान करेगा। ऐसा होने के लिए मसीह को "शेका" जाना होगा (सलीब पर चढ़ाया जाना होगा, दानियेल 9:26)। यह उसके लिए दुखदायी समय होगा (भजन संहिता 22:1-31)। यह वही है जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया और जिसमें पुराने नियम के लोगों को अपना विश्वास रखना था (उत्पत्ति 15:6)।

लोगों की निरंतर विफलता

परमेश्वर द्वारा उसके लोगों तक पहुँचने और उन्हें अपने बारे में और उनके लिए अपनी योजना के बारे में सिखाने के लिए किए गए सभी प्रयासों के बावजूद, लोगों ने परमेश्वर की अवज्ञा करना जारी रखा और परमेश्वर का अनुसरण करने में असफल रहे। उन्होंने सोने के बछड़े का निर्माण करके पाप किया, जबकि मूसा सीने पर्वत पर कानून प्राप्त कर रहा था (निर्गमन 32)। उन्होंने शिकायत की, कुड़कुड़ाए और परमेश्वर और मूसा की आलोचना भी की (निर्गमन 15:24; 16:2, 7-9, 12; 17:3; गिनती 14:2, 27-29, 36; 16:11, 41; 17:5, 10)। वे दिग्गजों के डर के कारण देश में प्रवेश करने में असफल रहे (गिनती 13-14)। उन्हें अपने पाप के कारण 40 वर्ष तक भटकना पड़ा (गिनती 32:13)। यहाँ तक कि मूसा स्वयं भी अपने क्रोध के पाप के कारण देश में प्रवेश करने में असफल रहा (गिनती 20; व्यवस्थाविवरण 32:48-52)।

बाइबिल अवलोकन 10.

यहोशू



मुख्य घटना : वादे की भूमि पर विजय

मुख्य लोग: यहोशू बारह गोत्र

बाइबल की पुस्तकें: यहोशू

बाइबल वचन: यहोशू 1:2-3 "तू इन सब लोगों समेत यरदन नदी के पार उस देश में जाने के लिये तैयार हो जा, जो मैं इसरायलीयों को देने वाला हूँ; जैसा कि मैंने मूसा से वादा किया था, जहाँ जहाँ तू कदम रखेगा मैं वो हर स्थान तुझे दे दूंगा।"

समय: 1,400 ई.पू

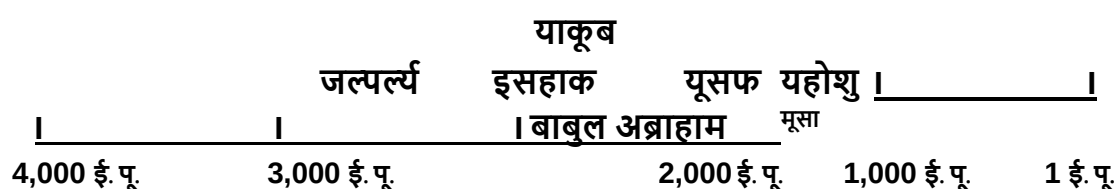
इस समय की विश्व घटनाएँ:

सिंधु और गंगा घाटियों में बसने वाले आर्यों द्वारा भारत पर आक्रमण किया गया

भारत में वेद लिखे जाना

भारत में हड़प्पा संस्कृति

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन



जब मूसा की मृत्यु हुई, तो परमेश्वर ने लोगों को देश में ले जाने के लिए यहोशू को चुना। यहोशू के पास विशेष शिक्षा या महान उपहार और कौशल नहीं थे जो मूसा के पास थे, लेकिन वह अपने पूरे जीवन भर

यह समय अवधि युद्धकाल था - परमेश्वर के लोग उस पर अधिकार जमा रहे थे जो परमेश्वर ने उन्हें उनकी प्रतिज्ञा की हुई भूमि के रूप में दिया था। उसी तरह, हम भी एक आध्यात्मिक युद्ध में हैं। अदन में शुरू हुआ युद्ध (उत्पत्ति 3:15) तब तक जारी रहेगा जब तक यीशु वापस नहीं आता और पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित नहीं करता। यह एक बुनियादी सच्चाई है जिससे हमें अवगत होना चाहिए क्योंकि युद्ध बाइबल के हर पृष्ठ पर देखा जाता है।

यहोशू से मिलें



हम जो लड़ाई लड़ रहे हैं यह वास्तव में परमेश्वर और शैतान के बीच की है। यह सिर्फ इस ग्रह पर गिरा और यहाँ पृथ्वी पर आ गया जाता है। यह अदन में शुरू हुआ जब शैतान ने परमेश्वर के लोगों पर हमला करना शुरू कर दिया क्योंकि वह स्वयं तो परमेश्वर को पराजित कर नहीं सका था। उसने आदम और हव्वा से शुरुआत की, फिर कैन पर हमला किया। वह सभी लोगों पर तब तक प्रहार करता रहा जब तक कि परमेश्वर ने बाढ़ में नूह को छोड़कर सभी को मार मिटा नहीं दिया, शैतान बाढ़ के बाद फिर लोगों के पीछे पड़ गया। उसने उन्हें बाबुल बनाने के लिए इकठा किया। तब परमेश्वर ने एक व्यक्ति को एक विशेष राष्ट्र बनाने के लिए चुना ताकि वह स्वयं को संसार के सामने प्रकट कर सके। वह आदमी, अब्राहाम

था, जो उस समय कुचला गया था। इसहाक, याकूब और यूसुफ सभी शैतान ने सभ पर प्रहार किया था। आखिरकार यह नया राष्ट्र, मिस्र में जो (दुनिया की एक तस्वीर है) में फिरौन (जो शैतान की एक तस्वीर है) के असहाय दासों के रूप में, बंदी बन गया। परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और उन्हें फसह के मेघों के निर्दोष लहू के द्वारा छुड़ा लिया (यीशु के सलीब पर किए गए कार्य की एक तस्वीर)। उसने लाल सागर में उनके शत्रुओं को पराजित किया (यह उसकी पुनरुत्थान शक्ति का एक चित्र है)। सभी विश्वासी इस युद्ध में हैं। मिस्र में यहूदी किसी भी लड़ाई में नहीं थे, वे असहाय और पीड़ित थे जिनके पास जबाबी लड़ने की ताकत नहीं थी। परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए उनके मिस्र छोड़ने के बाद युद्ध शुरू हो गए। हमारे साथ भी ऐसा ही है।

यहोशू मिस्र में एक गुलाम के रूप में पैदा हुआ था। उसे फसह का पर्व और लाल समुद्र से छुटकारे की याद थी। उसने परमेश्वर के छुटकारे के सारे चमत्कार देखे हुए थे। उसके नाम का अर्थ है "यहोवा उद्धार है, जो इब्रानी भाषा "यीशु" के" के लिए यूनानी भाषा का उचित शब्द है। वह फिरौन की सेना का एक सिपाही था। इसलिए मूसा ने लाल सागर को पार करने के तुरंत बाद अमालीकियों (जो शरीर की एक तस्वीर) के साथ युद्ध करने में यहूदियों का नेतृत्व करने के लिए उसे चुना।

परमेश्वर के शत्रु हमारे शत्रु हैं जब हम उसकी ओर होते हैं, और वे डरावने लग सकते हैं! उस देश के दिग्गजों ने अधिकांश अन्य जासूसों के साथ-साथ लोगों को भी डर के मारे भागने के लिए मजबूर दिया, इसलिए यहूदियों को 40 वर्षों तक जंगल में भटकना पड़ा। फिर, जब पुरानी पीढ़ी मर गई, परमेश्वर ने नई पीढ़ी को भूमि में ले जाने के लिए यहोशू को चुना (यहोशू 1:1)। मूसा जैसे प्रसिद्ध, सफल अगुवे का अनुसरण करना आसान नहीं था। वह खुद नहीं कर सका। यह केवल परमेश्वर की सामर्थ्य थी जिसने उन्हें लोगों को जीतने में सक्षम बनाया। विजय पाने के लिए उसे पूरी तरह से परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर निर्भर रहना पड़ा। परमेश्वर ने वादा किया था कि वह उन्हें देश देगा (यहोशू 1:2), लेकिन उन्हें विश्वास से बाहर निकलना होगा और इसे लेने के लिए लड़ाई लड़नी होगी। "जहाँ जहाँ तू पांव धरेगा वह सब मैं तुझे दूंगा" (यहोशू 1:3,4; व्यवस्थाविवरण 11:24; उत्पत्ति 12:1-7)। जमीन तो उनकी ही थी-पर उन्हें पैर भी वहीं रखना पड़ा। वहाँ रहनेवाले कनानी लोगों ने उसे रोकने की पूरी कोशिश की!

सौभाग्य की बात यह थी कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह उनके द्वारा उनकी लड़ाई लड़ेगा। उसने उनकी जीत की गारंटी भी दी थी (यहोशू 1:5)। परमेश्वर हमसे वादा करता है कि हम कभी भी अकेले नहीं होंगे, (उत्पत्ति 28; 15; रोमियों 8:38-39; निर्गमन 33:14)। इस लिए हमें डरने की आवश्यकता नहीं है (यहोशू 1:6; भजन संहिता 118:6; 23:4; यशायाह 41:10; व्यवस्थाविवरण 31:6; मत्ती 14:27)। निस्संदेह परमेश्वर हमसे हर बात में उसकी आज्ञा मानने की उम्मीद करता है (यहोशू 1:7-8), क्योंकि अनाज्ञाकारिता हमें उसकी शक्ति और सुरक्षा से दूर कर देती है।

परमेश्वर ने यहोशू से कहा, "मजबूत और साहसी बनो। भयभीत मत हो; तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि जहां कहीं तू जाएगा वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा" (यहोशू 1:9)। ईसी से उसकी उम्मीद बंधी रही। परमेश्वर ने हमसे भी वादा किया है, कि वह हमारी सभी जरूरतों को पूरा करेगा (भजन संहिता 84:11; 23:1-3; फिलिप्पियों 4:19; इब्रानियों 13:5), कि वह हमारा मार्गदर्शन करेगा (भजन संहिता 48:14; 32: 8; नीतिवचन 3:5-6) और जो कुछ भी हमारे सामने आने वाला हो उसके लिए वही हमारा बल होगा (फिलिप्पियों 4:13; 2 कुरिन्थियों 12:9; व्यवस्थाविवरण 33:25; यशायाह 40:29)।

वह हमसे हमारे युद्धों में भी विजय प्राप्ति की प्रतिज्ञा करता है (1 कुरिन्थियों 10:13)। हमें केवल उसके वचन पर विश्वास करने और उसकी सामर्थ्य पर निर्भर रहने की आवश्यकता है।

सो जब हम लड़ाइयाँ में हों, उन में विजय हमारी ही होगी, यहोशू के युद्धों से सीखो। उसकी लड़ाइयाँ शारीरिक थी, हमारी आत्मिक हैं (इफिसियों 6:12)। परमेश्वर की सामर्थ में लड़ो, उसके हथियारों को पहिन लो (इफिसियों 6:10-17) और तब, और केवल तभी ही, हम विजय प्राप्त करने में समर्थ होंगे जैसे कि यहोशू विजय होता था। यहोशू की पुस्तक युद्ध और विजय की पुस्तक है, परन्तु यह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से आरम्भ होती है।

विजय जल्दी से प्राप्त नहीं होती। जीवन भर संघर्ष करना पड़ता है। परमेश्वर ने यहोशू को भी यही पाठ उसके जीवन में सिखाया। उसे सीखना था कि वह डटा रहे, हार ना माने बल्कि ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करता रहे, चाहे कुछ भी हो। सीखने के लिए यह कोई आसान सबक नहीं है, क्योंकि इंसानों में धैर्य स्वाभाविक रूप से नहीं आता है। क्या परमेश्वर आपको धैर्य और दृढ़ता सिखाने की कोशिश कर रहा है? आप अपने विकास के साथ कैसे चल रहें हैं? शायद यहोशू की कहानी आपकी मदद करेगी।

यहोशू मिस्र में बड़ा हुआ। अपने जीवन के पहले चालीस वर्षों के लिए वह परमेश्वर के छुटकारे की प्रतीक्षा में एक दास था। फिर जब छुटकारा मिला तो उसे वादे की भूमि में प्रवेश करने के लिए और 40 साल इंतजार करना पड़ा - अधिक धैर्य की आवश्यकता थी। अंत में, जब उन्होंने यरदन नदी को पार किया और भूमि पर विजय प्राप्त करना शुरू किया, उसके पांच साल बाद, उसे अपनी भूमि के लिए लड़ने का मौका मिला।

कनान में बसे कबीलों के संघों को पराजित करने में उन्हें वर्षों लग गए। परमेश्वर उन्हें धैर्य और दृढ़ता का सबक सिखा रहा था। वह उन्हें एक क्षेत्र में विजय प्राप्त करने दे रहा था, बसने और उसे थामे रहने दे रहा था, और फिर दूसरे क्षेत्र में जाने दे रहा था, ठीक वैसे ही जैसे वह आज हमारे जीवन में करता है। उन्हें यह सब एक बार में देना उनके लिए बहुत भारी हो जाता। इससे पहले कि वे अंदर जाकर उनकी जगह ले ले लेते यदि सभी कनानियों को नष्ट कर दिया गया होता, तो जंगली जानवरों ने उन जगहों पर अपना अधिकार कर लिया होता और उन स्थानों को असुरक्षित बना दिया होता (निर्गमन 23:20-30)। इस प्रकार परमेश्वर का मार्ग हमेशा थोड़ा-थोड़ा करके देने वाला रहा है, कृपेत्कर को जीतो और दुसरे क्षेत्र में आगे बढ़ो और फिर जीते जाने वाले अगले क्षेत्र की ओर बढ़ो।

यह होते हुए भी, इस तथ्य के बावजूद कि प्रमुख कनानी सेनाएँ पराजित हो चुकी थीं, अभी भी प्रतिरोध के क्षेत्र थे और दिग्गजों के कुछ शहर बचे थे। उन सभी को हटाने के लिए चल रहे साफ़-करो करवाई चलती रही, यह एक ऐसा कार्य था जिसे जीवन भर चलना था। ललकारने वाले अन्य नए क्षेत्र भी उठेंगे और उन्हें नीचे रखना होगा। क्या आपके जीवन में भी ऐसा नहीं है? उद्धार के बाद (फसह का मेमना और लाल समुद्र का उद्धार) आपको तय करना होगा कि आप किसके लिए जीएंगे: अपने लिए या परमेश्वर के लिए। यदि आप अपने आप को चुनते हैं, तो आप वर्षों तक लक्ष्यहीनता में भटकते रहते हैं (जैसे यहूदी 40 वर्षों तक जंगल में भटकते रहे)। यदि आप परमेश्वर को चुनते हैं और आपके लिए उसकी सिद्ध इच्छा के स्थान पर उसका अनुसरण करते हैं, तो आप को लड़ाई और विरोधता पाएंगे। संसार, शरीर और शैतान हर कदम पर आपसे लड़ेंगे ताकि आप उसे अपने आप से पहले रखने की प्रतिबद्धता से दूर रहें। यदि आप विश्वासयोग्य बने रहें और उसके प्रति सच्चे रहें तो परमेश्वर आपको विजय देगा। शरीर और आत्मा के बीच पहली बड़ी लड़ाई जीती जा चुकी होगी, लेकिन उसकी इच्छा (भूमि में) में रहने का मतलब जीवन भर लगातार झड़पें, साफ़ करो कारवाई करना, नया क्षेत्र लेना, और बचे हुए दिग्गजों से लड़ना होगा।

समस्या यह थी कि यहूदी आगे नहीं बढ़े और लड़ते रहे। वे इससे थक गए और फैसला कर लिया कि 90% जीत काफी अच्छी थी जबकि यह थी नहीं! रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे गोत्र यरदन के पूर्व

इलाके में भूमि बसाने को तैयार थे। यह उनके लिए परमेश्वर की सिद्ध भूमि (इच्छा) के ठीक पास ही में था, लेकिन इच्छा में नहीं। यह कुछ लाभ पाने के लिए काफी करीब था, लेकिन जहां लड़ाई और संघर्ष थे, उस से रहित था। हालांकि, भविष्य के वर्षों में वे हमलों द्वारा पराजित होने वाले सबसे पहले लोग थे, क्योंकि उनके लिए जो परमेश्वर की सिद्ध जगह थी वे उस में नहीं थे।

हम कितने महान परमेश्वर की सेवा करते हैं! उसने प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे विश्वासयोग्यता से उसकी आज्ञा मानें और उसके पीछे चलें, तो जिस जिस स्थान पर वे पांव रखेंगे वह उनका हो जाएगा (यहोशू 1:3-5), और ऐसा ही हुआ (यहोशू 21:43-45)। हमारे लिए भी यही सचार्थ है, यदि आप अपने "यहोशू" का अनुसरण करते हैं (ग्रीक में "यीशु" हिब्रू में "यहोशू")। क्या आप अनुसरण कर रहे हैं? दृढ़ रहें, धैर्यपूर्वक उसकी आज्ञा मानें। आपको इसका पछतावा नहीं होगा! अपने दैनिक युद्धों में विजय प्राप्त करने का यही एकमात्र तरीका है। उसने कभी भी लड़ाइयों को दूर करने का वादा नहीं किया, लेकिन वह आपके साथ रहने और उनके माध्यम से आपके लिए लड़ने का वादा करता है।

यहोशु :

विजय हृदय व्यक्ति



शीर्ष : लेक्क के नाम पर, मुख्य चरित्र

लेखक : यहोशु

लेखन का समय : 1375 ई . पू

लेखन का स्थान: कनान (फलिस्तीन)

शामिल समय की अविधि : 30 वर्ष

प्राप्तकर्ता: मिस्र से निकलने वाले यहूदियों की दूसरी पीढ़ी

मुख्य आयत : यहोशू 1:2-3 "मेरा दास मूसा मर गया है। अब तुम और ये सब लोग यरदन नदी पार करने के लिये उस देश में जाने के लिये तैयार हो जाओ जो मैं इस्राएलियों को देता हूँ। जैसा मैंने मूसा को वचन दिया था, उसके अनुसार जहां तुम्हारे पांव पड़ेंगे, मैं तुम को वह सब स्थान दूंगा।

मुख्य शब्द: अधिकार/संपत्ति (22 बार); विरासत/विरासत (63 बार)

उद्देश्य: यह दिखाना कि कैसे इजराइल को कनान देने में परमेश्वर के वादे पूरे हुए (23:14) लेकिन कैसे इजराइल भूमि पर पूरी तरह से कब्जा करने में विफल रहा (18:3), जिससे भविष्य की समस्याओं के लिए नींव तैयार हुई।

विषय : कनान पर विजय और विभाजन।

क्या आप कभी ऐसी स्थिति में रहे हैं जहां आपको किसी ऐसे व्यक्ति को बदलना पड़ा जिसने उत्कृष्ट काम किया हो? शायद यह कार्य स्थान पर, या चर्च में भी हुआ हो। ऐसा लगता हो कि आपके पूर्वाधिकारियों के पास जो कौशल और स्वाभाविक क्षमता थी, वह आपके पास नहीं थी, लेकिन अब यह आपकी जिम्मेदारी थी। परमेश्वर की मदद से यह सब ठीक हो गया। यहोशू भी खुद को इसी स्थिति में पाता है। वह क्षमता में केवल औसतन ही था, लेकिन उपलब्धता में औसत से ऊपर था। वह प्रतिभाशाली, प्राकृतिक नेता मूसा की तरह नहीं था, लेकिन उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और परमेश्वर ने यहूदियों को उनकी प्रतिज्ञा की भूमि में ले जाने के लिए उसका उपयोग किया।

यहोशू मिस्र में एक गुलाम के रूप में पैदा हुआ था। यहूदियों के मिस्र छोड़ने के बाद उसने मूसा की सहायता की और उसके द्वारा प्रशिक्षित किया गया था। वह सेनापति था जिसने अमालीकियों के विरुद्ध सैनिकों का नेतृत्व करता था जबकि मूसा प्रार्थना करता था (निर्गमन 17)। केवल यहोशू और कालेब ही ऐसे भेदिए थे जिन्हें भरोसा था कि परमेश्वर दिग्गजों को हरा सकता है और उन्हें देश दे सकता है। अब वह लगभग 80 या 90 वर्ष का व्यक्ति है, ज्ञान और परमेश्वर में विश्वास करने की भावना से भरा हुआ है। स्वाभाविक रूप से वह एक डरपोक व्यक्ति था, परन्तु जब उसने परमेश्वर पर भरोसा किया तो उसके पास अपने कार्यों के लिए साहस और शक्ति आ गयी थी (यहोशू 1:6-9)। यहोशू कई मायनों में यीशु का एक चित्र (प्ररूप) है। उसका नाम (इब्रानी) और यीशु (यूनानी) दोनों का अर्थ है "यहोवा उद्धार है" (प्रेरितों के काम 7:45; इब्रानियों 4:8)। पुराने नियम में यहोशू यहूदियों को शारीरिक शत्रुओं (कनानियों) पर विजय की ओर ले जाता है। नए नियम में यह यीशु है जो अपने लोगों को आत्मिक शत्रुओं (पाप, शैतान, शरीर और संसार, 1 कुरिन्थियों 3:21-23) पर विजय की ओर ले जाता है (इफिसियों 6:12)। जीत दी नहीं जाती, इसे जीतना ही पड़ता है। हालाँकि यहोशू/यीशु के पीछे इसे जीता जा सकता है! यदि लोग यहोशू/यीशु के पीछे चलते हैं, तो परमेश्वर जय देता है (यूहन्ना 6:37-39; 10:14-16, 27-30)!

I. भूमि में- पुस्तक का पहला भाग यहूदियों के दावा करने (अध्याय 1-5) और उस भूमि पर विजय प्राप्त करने (अध्याय 6-12) के बारे में बात करता है जिसे परमेश्वर ने बहुत पहले अब्राहाम, इसहाक, याकूब और यूसुफ से वादा किया था। यहोशू के नियुक्त किए जाने के बाद (अध्याय 1), जेरिको का प्रचार किया जाता है (अध्याय 2)। जबकि यहोशू परमेश्वर पर भरोसा करना जानता है, वह यह भी जानता है कि उसका काम सामान्य ज्ञान का उपयोग करना और आगे की योजना बनाना है। उसने पूरी तरह से भरोसा किया और पूरी तरह से योजना बनाई, और आज हमारे लिए एक अच्छा उदाहरण है।

भूमि में प्रवेश करने में यरीहो प्रमुख शहर था, क्योंकि यह वास्तव में अखंडनीय शहर था। बाहरी दीवारें 30 बाई 6 फुट की थीं। 15 फुट की जगह के बाद भीतरी दीवार 30 बाई 12 फुट की थी। वे सिरे पर जुड़ी हुई थी और एक चिकनी, दलदली सतह के साथ एक गहरी खाई से घिरी हुयी थी। ऐसे स्थान को तीर और तलवार तो कभी नहीं जीत सकते थे। परमेश्वर की सहायता के बिना यह असंभव होता। भेजे गए जासूसों को राहाब नाम की एक वेश्या ने बचाया, जिसने अपना दिल परमेश्वर को दे दिया। वह एक उत्तम विश्वासी स्त्री थी (इब्र 11:31; याकूब 2:25) जो यीशु के पूर्वज दाऊद की परदादी थी (बोअज़ की माँ)।

यरदन को पार करने के बाद (अध्याय 3-4) जिसका पानी इसमें कदम रखने के बाद फटा था (लाल सागर को पार करने के विपरीत जहां यह पहले अलग हो गया था - परमेश्वर हमारे विश्वास से और अधिक उम्मीद करता है जैसे हम बढ़ते हैं और उसमें परिपक्व होते जाते हैं), उन्होंने खुद को खतना करके फिर से प्रतिबद्ध किया (अध्याय 5) जिसकी उन्होंने भटकते हुए लापरवाही की। परमेश्वर उम्मीद करता है कि उसके लोग पवित्र हों और 100% उसके प्रति आज्ञाकारी हों।

परमेश्वर की एकअद्भुत युद्ध योजना के द्वारा, यरीहो को हराने के बाद, (जो वास्तव में काम करता था - बड़ी दीवारें खंदक में गिर गईं ताकि शहर में आसानी से दाखिल हो सके) (अध्याय 6), आकान के पाप के कारण यहूदी ऐई (अध्याय 7) में हार गए। एक जन का पाप पूरे परिवार, चर्च या राष्ट्र को प्रभावित कर सकता है! परमेश्वर पाप से घृणा करता है और जहाँ भी वह है उसका न्याय करता है। कनानियों को उनके भयानक पाप के कारण हटाया जा रहा था, परन्तु यहूदियों को भी, सभी पापों से दूर रहना जरूरी था। यीशु को सलीब पर चढ़ाने से कितने भयानक पाप को देखा जा सकता है! यहोशू का अभियान विभिन्न कबीलों को एकजुट होने से पहले उन्हें अलग करना था, 'फूट डालो और जीतो'। 1967 में मोशे डायन ने

60 के मुकाबले 1 होने के बावजूद 6 दिनों में अरबों को हराने में यहोशू की रणनीति का अध्ययन किया और उसका पालन किया था !

यहोशू द्वारा दर्ज किए गए पाप के सबसे करीब, गिबोनियों के साथ हस्ताक्षर की गई एक संधि के बारे में उसकी प्रार्थना करने की चूक है (अध्याय 9-10)। यह मानते हुए कि वे बहुत दूर से आए थे, उसने उनकी मदद करने का वादा किया और जल्द ही खुद को अन्य जनजातियों से लड़ते हुए पाया जो उनका बचाव कर रहे थे! परमेश्वर ने यहोशू के जीवन में एक और चमत्कार के द्वारा विजय प्रदान की - सूर्य स्थिर खड़ा रहा ताकि अंधकार शत्रु की सहायता न कर सके।

अन्य कनानी गोत्रों को पराजित करने के बाद शांति आई। हालाँकि, यहूदियों ने हर कनानी को नहीं हटाया, और वे तब से उनके पक्ष में एक कांटा बनें रहे, जो उन्हें अंतर्विवाह और मूर्तिपूजा में ले गया, जब तक कि यहूदियों को फिर से फिलिस्तीन से हटा नहीं दिया गया। परमेश्वर की आज्ञा का 100% पालन करना और हर पाप को दूर करना बहुत महत्वपूर्ण है, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो।

II- भूमि में - पुस्तक का दूसरा भाग भूमि में बसने (अध्याय 13-21) और भूमि के अभिषेक करने (अध्याय 22-24) से संबंधित है। भूमि को 12 जनजातियों के बीच विभाजित किया गया है। इस खंड का मुख्य आकर्षण कालेब का सिर्फ अपने परिवार के साथ दिग्गजों का मुकाबला करने और उन्हें हराने का विश्वास है! अपनी उम्र के बावजूद और किसी और के पाप के कारण अपने जीवन के 40 साल बर्बाद करने के बावजूद, और जब यहोशू को चुना गया था उस समय नेतृत्व करने के लिए चुनाव में छोड़े जाने के बावजूद, वह हमेशा परमेश्वर के प्रति वफादार रहा, यहाँ तक कि उसने एक वफादार परिवार का पालन-पोषण भी किया जिसने परमेश्वर की सेवा भी करता रहा (न्यायियों 1:12- 15).

यहोशू की रूपरेखा

I. भूमि में (भूमि को वश में करना) 1-12

क- जमीन पर दावा 1-5

1. यहोशू का नियुक्त होना 1
2. यरीहो का प्रचार होना 2
3. यार्दन को पर करना 3-4
4. यहूदियों का खतना 5

ख- भूमि पर विजय 6-12

1. केंद्रीय अभियान 6-8
2. दक्षिणी अभियान 9-10
3. उत्तरी अभियान 11a
4. सारांश 11ख -12

II- भूमि में (भूमि को विभाजित करना) 13-24

क- भूमि का उपनिवेशीकरण 13-21

1. 2 ½ जनजातियाँ यार्दन के पूर्व हिस्से में 13

2. कालेब 14

3. 9½ यार्दन के पश्चिम जनजाति 15-19

4. लेवी 20-21

ख- भूमि का अभिषेक करना 22-24

1. पवित्रीकरण 22

2. अलगकरना 23

3. सेवा 24

बाइबिल अवलोकन 11

शामुएल



मुख्य कार्यक्रम: न्यायियों का समय

मुख्य लोग: गिदोन, दबोरा, समसून, शामुएल, रूथ

बाइबल की पुस्तकें: न्यायियों, रूथ

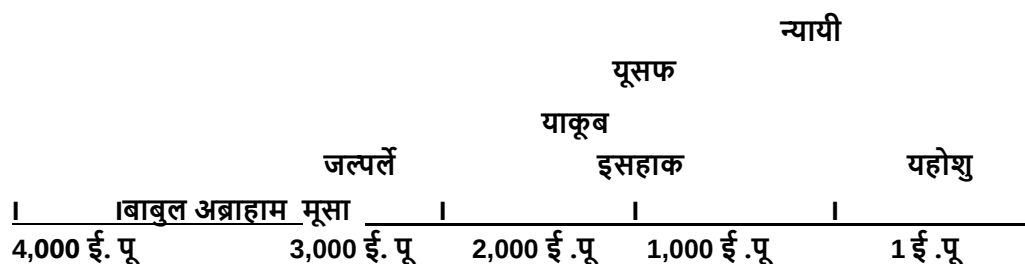
बाइबल आयत : न्यायियों 2:11- तब इजराइलियों ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। ... उन्होंने यहोवा को रिस दिलाई। ... तब यहोवा न्यायी ठहराता था, जो उन्हें लुटेरोंके हाथ से छुड़ाते थे। ... क्योंकि यहोवा को उन पर दया थी ।

समय: 1,350-1,050 ईसा पूर्व (न्यायियों का समय)

इस समय की विश्व घटनाएँ: यूनान में ट्रोजन युद्ध

चीनी चाउ राजवंश का शासन

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन





यहोशू के समय के बाद हम अपने बाइबल अवलोकन में न्यायियों के समय में आते हैं। चूंकि शामूएल लोगों का नेतृत्व करने और पहले दो राजाओं को अभिषेक करने के लिए परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया गया एक व्यक्ति था, इसलिए मैंने इस हिस्से का नाम उसके नाम पर रखा है। अन्य प्रसिद्ध न्यायियों में गिदोन, दबोरा और समसून जैसे लोग शामिल हैं। रूथ भी इस दौरान जीवित थी, लेकिन वह न्यायी नहीं थी।

इन 400 वर्षों के दौरान लोगों में पाप और अनाज्ञाकारी इतनी आम होने के कारण यह इजराइल के इतिहास में एक बहुत ही काला समय था। जब लोगों ने मन फिराया और परमेश्वर की ओर फिरे, तो उसने उन्हें छुड़ाया।

हालाँकि वे केवल तभी उसकी ओर मुड़े जब हालत बहुत खराब थे, फिर जब परमेश्वर ने उन्हें सम्मिलने में मदद की तो वे फिर उस से दूर हो गए और यह सिलसला चलता रहा।

शमूएल से मिलें

शमूएल का जन्म चमत्कारी था, उसकी माँ, हन्ना, तब तक बच्चे पैदा करने में सक्षम नहीं थी जब तक कि परमेश्वर ने उसे एक पुत्र के साथ आशीषित नहीं किया (1 शमूएल 1:7-20)। उसने उसके जन्म से पहले ही उसको परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया था (1 शमूएल 1:11, 22, 24-28)। जब उसका दूध छुड़ाया गया तो उसे मिलाप वाले तम्बू में ले जाया गया और एली के पास पालन पोषण करने और परमेश्वर की सेवा में प्रशिक्षित करने के लिए छोड़ दिया गया था (1 शमूएल 2:11, 18-19)। परमेश्वर की आशीष युवा शमूएल पर थी (1 शमूएल 2:21; 3:19)।

जब शमूएल अभी भी एक छोटा लड़का ही था, परमेश्वर ने उसे बताया कि एली का परिवार अब महायाजकों के रूप में शासन नहीं करेगा (1 शमूएल 3:1-18)। शमूएल एक विशेष भविष्यद्वक्ता (1 शमूएल 3:20-21; 4:1) और इस्राएल का न्यायी (1 शमूएल 7:15-17) बना। शमूएल ने मिलापवाले तम्बू

की सेवा का आयोजन करता (1 इतिहास 9:22; 26:28; 2 इतिहास 35:18)। उसकी शिक्षाओं और चेतावनियों से लोगों का मन परवर्तन होने लगा (1 शमूएल 7:4-6)। उसकी मध्यस्थता और बलिदानों ने पलिशतियों पर विजय प्राप्त की (1 शमूएल 7:7-14)। तो भी, उसने अपने भ्रष्ट पुत्रों को इस्राएल में न्यायी बनाया (1 शमूएल 8:1-3)।

जब लोग अन्य राष्ट्रों की तरह एक राजा चाहते थे तो उसने विरोध किया (1 शमूएल 8:4-22) लेकिन अंततः शाऊल को (1 शमूएल 9; 10) और बाद में दाऊद को (1 शमूएल 16) को इजराइल पर राजा के रूप में अभिषिक्त किया। उसने शाऊल को उस पर परमेश्वर के आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दी (1 शमूएल 13:11-15; 15) और जब दाऊद शाऊल से बच रहा था तो उसे शरण दी (1 शमूएल 19:18)। जब वह मरा तो लोगों ने उसके खोने का शोक मनाया (1 शमूएल 25:1)। वह एक महान ईमानदार व्यक्ति था और एक न्यायी था और उसने शासक के रूप में बहुत अच्छी सेवा की थी (1 शमूएल 12:1-5; भजन 99:6; यिर्मयाह 15:1; इब्रानियों 11:32)।

गिदोन से मिलें

गिदोन को परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुलाया गया था (जब वह अपनी फसल की देखभाल कर रहा था, न्यायियों 6:11,14)। पहले तो काफी हिचकिचाता था (न्यायियों 6:15), वह प्रभु की सेवा करने का वादा करता है (न्यायियों 6:16-24)। परमेश्वर उसकी बुलाहट की पुष्टि करने के लिए एक चमत्कार दिखाता है (न्यायियों 6:21-24)। तब गिदोन बाल की वेदी को नष्ट कर देता है और यहोवा के लिए एक वेदी बनाता है (न्यायियों 6:25-27)। परमेश्वर की आज्ञा को मानने में लिए संघर्ष करते हुए, वह यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह परमेश्वर की इच्छा को जानता है, 'ऊन' के एक लछे को बाहर रखता है (न्यायियों 6:36-40)। तब वह मिद्यानियों के विरुद्ध एक छोटी सेना का नेतृत्व करता है और परमेश्वर की सहायता से उन्हें हरा देता है (न्यायियों 6:33-35; 7; 8:4-12)। परिणामस्वरूप इजराइल उसे राजा बनाना चाहता है परन्तु वह मना कर देता है (न्यायियों 8:22-23)। वह एक विश्वास वाले व्यक्ति के रूप में जाना जाता था (इब्रानियों 11:32)।

दबोरा से मिलें

दबोरा इजराइल में एक भविष्यवक्त्रिनी थीं। असहमति के मामलों को निपटाने में मदद के लिए लोग उस के पास आते थे। परमेश्वर ने उसे बाराक को एक संदेश भेजने के लिए प्रेरित किया कि वह सीसरा (याबीन के सेनापति) से लड़ने के लिए दस हजार पुरुषों को इकट्ठा करे। परमेश्वर ने उन्हें जीत का आश्वासन दिया। बाराक ने कहा कि वह ऐसा तभी करेगा जब दबोरा उसके साथ जाएगी। उसके विश्वास की कमी के कारण, विजय का सम्मान एक स्त्री याएल को दिया गया। इस जीत ने इजराइल को चालीस साल तक आराम दिया।

समसून से मिलें

समसून एक दान के गोत्र में से था, मानोह का एक बेटा, चमत्कारिक रूप से उसकी पत्नी से पैदा हुआ था, जबकि वह गर्भ धारण करने में असमर्थ थी। परमेश्वर ने उसके जन्म से पहले ही उसे नाज़ीर के रूप में अलग कर दिया (न्यायियों 13:27, 24-25)। परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय कि वह उसे एक धर्मी, यहूदी पत्नी प्रदान करेगा वह आपने लिए पत्नी के रूप में एक पलिशती महिला चाहता था। उस महिला के घर जाते हुए रास्ते में उसने अपने हाथों से एक शेर को मार डाला था और एक मृत शरीर को

छू लिया था जिसमें मधु मखियों ने शहद इकट्ठा किया हुआ था, इस प्रकार एक मृत शरीर को छूने से उसके नाज़िर होने की मन्त्रत का एक हिस्सा टूट गया।

अपने विवाह भोज में उसने एक पहली पूछी, जिसका उत्तर उसकी नई पत्नी ने वहाँ दूसरों को बता दिया था (न्यायियों 14:8-19)। कर्ज का भुगतान करने के लिए उसने तीस पलिशतियों को मार डाला और उनके कपड़ों का उपयोग भुगतान करने के लिए किया (न्यायियों 14:19)। फिर उसने अपनी नई पत्नी को छोड़ दिया (न्यायियों 14:20; 15:1-2)। यह अत्यधिक संभावित है कि एक मूर्तिपूजक कबीले के विवाह भोज में शराब परोसी जाती थी, और यदि समसून ने इसमें से कुछ भी पी लिया होता तो वह अपनी नाज़िर होने की प्रतिज्ञा का दूसरा भाग भी तोड़ देता। जब समसून अंततः अपनी पत्नी के पास लौटा और उसे पता चला कि उसके पिता ने उसकी शादी दूसरे आदमी से कर दी है, तो उसने 300 लोमड़ियों को पकड़ लिया, उनकी पूँछ को एक साथ बांध दिया और उन्हें आग लगा दी और उन्हें पलिशतियों के खेतों में खदेड़ दिया, जिससे उनकी फसलों को बहुत नुकसान हुआ। उस पर वापस जाने के लिए उन्होंने उस घर को जला दिया जिसमें उसकी पत्नी थी और उसे और उसके पिता को मार डाला (न्यायियों 15:3-8)।

समसून अपनी महान शक्ति के लिए जाना जाता था (न्यायियों 15:7-14; इब्रानियों 11:32)। उसने मात्र एक गधे के जबड़े की हड्डी से एक हजार पलिशतियों को मार डाला था (न्यायियों 15:13-17)। उसका पतन तब हुआ जब उसने एक वेश्या, दलीला के साथ समय बिताना शुरू किया, जिसने अंततः उसकी ताकत का रहस्य खोज लिया और उसका उपयोग करके उसे कमजोर कर दिया और बंदी बना लिया (न्यायियों 16:1-20)। उसके जीवन में पहली बार बाल कट जाने से उसके नाज़िर होने की मन्त्रत का तीसरा और आखिरी हिस्सा भी टूट गया। दीनता में उसने पश्चाताप किया और परमेश्वर की ओर फिरा, जिसने उसे अन्तिम बार सामर्थ दी। इसके साथ समसून ने उस पलिशती मंदिर को गिरा दिया, जिसमें वह था और इस तरह हजारों लोगों को मार डाला और अपनी जान भी गंवा दी (न्यायियों 16:21-31; इब्रानियों 11:32)। समसून एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर है जिसके पास शारीरिक शक्ति है लेकिन नैतिक शक्ति नहीं है। अपनी वासनाओं द्वारा नियंत्रित होने की अनुमति देकर वह हार गया और फिर अकाल मृत्यु मर गया।

न्यायी

पराजित और छुटकारा



शीर्षक: वे लोग जिन्हें परमेश्वर इजराइल को छुड़ाने के लिए इस्तेमाल करता था

लेखक: अज्ञात (संभवतः शामूएल)

लेखन की तिथि: लगभग 1045 ई.पू

लेखन का स्थान: कनान

समय शामिल : 1375 - 1049 ई.पू

प्राप्तकर्ता: यहूदी

मुख्य आयत : न्यायियों 2:11-19 उन्होंने यहोवा को क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने उसे त्याग दिया और बाल और ऐशटोरेथ्स की उपासना करने लगे । ... यहोवा ने उन को लुटेरों के हाथ में दे दिया, और वे उन्हें लूटने लगे। ... वे बड़े संकट में थे। तब यहोवा ने न्यायी स्थापित किये, जो उन्हें लुटेरों के हाथ से छुड़ाते थे। तौभी उन्होंने अपने न्यायियों की न सुनी, वरन पराए देवताओं के साम्हने व्यभिचार करके उन्हें दण्डवत् करते रहे । ... जब जब यहोवा उनके लिए कोई न्यायी ठहराता तब तब तब वह, उस न्यायी के संग रहकर जब तक वो न्यायी जीवत रहता , उनको शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता रहता था ; क्योंकि यहोवा उन पर दया करता था, क्योंकि वे अपने ऊपर अन्धेर करने वालों और दुःख देने वालों के करण कराहते रहते थे। ... लेकिन जब न्यायी की मृत्यु हो जाती , तो लोग दूसरे देवताओं के पीछे चलने और उनकी सेवा करने और उनकी पूजा करने के लिए अपने पूर्वजों की तुलना में और भी अधिक पाप करते। वह अपने बुरे कामों और हठीली चालों को छोड़ने से इनकार करते।

प्रमुख शब्द: "पाप किया /बुराई की " (14 बार); "न्यायी" (22 बार)

उद्देश्य: यहोशू से शामूएल तक इजराइल के इतिहास को दिखाना और मनुष्य की पापपूर्णता को दिखाना और यह दिखाना कि जब लोग परमेश्वर से फिर जाते हैं तो क्या होता है।

विषय : समझौते से विफलता

हम सभी उड़ाऊ पुत्र की कहानी जानते हैं और जब वह वापस लौटा तो उसे कैसे क्षमा किया गया और बहाल किया गया। यह एक दिल को छू लेने वाली कहानी है जो एक अच्छे अंत के साथ समाप्त होती है। हम नहीं जानते कि उसके लौटने के बाद क्या हुआ। मान लीजिए कि थोड़ी देर बाद हमें पता चलता है कि उसने फिर से वह ले लिया जो उसके पिता ने उसे देना था और फिर चला गया, केवल फिर से असफल होने और घर वापस लौटने के लिए। फिर वह ऐसा बार-बार करता है, और फिर - अपने पूरे जीवन भर ऐसा ही करता रहता है! तब निश्चित रूप से, इस कहानी के और उस बेटे के बारे में जो आपकी राय थी, बदल जाएगी। न्यायियों की पुस्तक ठीक इसी के बारे में है। परमेश्वर पिता है, और राष्ट्र इजराइल उड़ाऊ पुत्र है।

कयामत और उदासी- जहाँ यहोशू की पुस्तक खुशी और जीत की किताब थी, वहीं न्यायियों निराशा और हार से भरी हई है। यहोशू सिखाता है कि विश्वासयोग्यता स्वतंत्रता लाती है, लेकिन न्यायियों की पुस्तक दिखाती है कि विश्वासहीनता गुलामी लाती है। पुस्तक के अंत में दिया गया परिशिष्ट (अध्याय 17-21) दो उदाहरण देता है कि कैसे आध्यात्मिक रूप से विकृत और नैतिक रूप से प्रदूषित परमेश्वर के लोग प्राप्त कर सकते हैं जब वे उसके करीब नहीं होते हैं! ठंडी, बरसात की रात में पढ़ने के लिए यह एक बेहतरीन किताब है, जब आप निराश और उदास होते हैं -- यह किताब आपके मूड के लिए पूरी तरह फिट होगी!

पाप के सात चक्र - न्यायियों की पुस्तक पाप के सात चक्रों के चारों ओर संरचित है, जिसका सारांश 2:11-19 में दिया गया है। लोग परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं और झूठे देवताओं की तरफ और मूर्तिपूजा की तरफ मुड़ते हैं। परमेश्वर अपना आशीर्ष वापस ले लेता है और वे आपने एक शत्रु के बंधन में बंधी हो जाते हैं। जब वे हद से ज्यादा परेशान होते हैं और उनके पास वापस मुड़ने के लिए और कोई जगह नहीं होती है, तब वे परमेश्वर को पुकारते हैं जो उन्हें सुनता है और उन्हें छुटकारे की ओर ले जाने के लिए एक न्यायी प्रदान करता है। ये ऐसे न्यायी नहीं हैं जैसे न्यायियों के बारे में हम सोचते हैं, बल्कि देशभक्त इंजीलवादियों की तरह हैं जो लोगों को पश्चाताप में ले जाते हैं और फिर उनके स्थानवालों के खिलाफ युद्ध करते हैं। शांति और विश्राम की अवधि के बाद वे परमेश्वर पर निर्भर रहना बंद कर देते हैं और फिर से पाप में बहना शुरू कर देते हैं, और यह सिलसला चलता रहता है। दरअसल ये नीचे की ओर जाने वाली सीढ़ी के पैर हैं, क्योंकि ये उतनी ऊंचाई तक नहीं पहुंचते हैं लेकिन हर बार नीचे की ओर डूब जाते हैं। न्यायियों की पुस्तक में ऐसा सात बार होता है, जैसा कि रूपरेखा (अध्याय 3-16) में दिखाया गया है।

आप इस नक्शे को अपने जीवन में या अपने आसपास के लोगों के जीवन में भी पहचान सकते हैं। हम सभी में यह प्रवृत्ति होती है कि जब चीजें कठिन होती हैं तो हम ईश्वर के करीब होते हैं, फिर जब सब कुछ ठीक लगता है तो हम अपने राह खुद बनाने लगते हैं। परमेश्वर हमें अपने निकट रखने के लिए हमारे ऊपर दबाव को बने रहने देता है।

यौन : शैतान का सबसे अच्छा जाल- यौन-संतृप्त समाज में रहना हमारे लिए कोई नई बात नहीं है। शैतान ने युगों से बार-बार उसका उपयोग किया है, और करता भी क्यों न -- क्योंकि जो परिणाम वह चाहता है इससे उत्पन्न होता है! यहूदियों को धीरे-धीरे यौन समझौतों में फंसाकर परमेश्वर की ओर से उनका ध्यान भटकाया। यह तब शुरू हुआ जब उनके द्वारा यहोशू के अधीन देश पर विजय प्राप्त करने पर सभी कनानियों को न मार कर जीवित रखा गया। हालाँकि कुछ तो गुलामों के रूप में इस्तेमाल किए

गए, कनानी संख्या में बढ़ गए और यहूदियों ने उनके साथ विवाह करना शुरू कर दिया। कनानी लोग अपने पुराने देवताओं को अपने परिवार के पास ले आए और अपने बच्चों को उनकी उपासना करना सिखाने लगे। सच कहूँ तो, यह परमेश्वर की सेवा और समर्पण करने की तुलना में शरीर के लिए कहीं अधिक आकर्षक था। बाल और अशतोरेथ को अनैतिकता से पूजा जाता था, क्योंकि वे प्रजनन देवता थे। बाल की महिला पत्नी, अशतोरेथ की धार्मिक वेश्यावृत्ति द्वारा पूजा की जाती थी (यूरोप में "ए" को "ई" में बदल दिया गया था और वह एशतोरेथ थी, फिर एस्तेर जो खरगोशों, अंडों और प्रजनन क्षमता के अन्य प्रतीकों का प्रतीक थी)। यहूदी सीधे इस पाप में नहीं कूदे, बल्कि धीरे-धीरे इसमें फंस गए। जैसे नदी के तट पर भूमि धीरे धीरे कट जाती है या रहने वाले कमरे में पर्दे का रंग फीका हो जाता है, एक तुरंत बदलाव की तुलना में धीरे-धीरे होने वाले परिवर्तन को नोटिस करना कठिन होता है। टेलीविज़न के कार्यक्रमों पर ध्यान दें और 20 साल पहले की तुलना में अब टी वी पर देखें आप जन लेंगे कि यह कैसे काम करता है।

हालाँकि परमेश्वर द्वारा विशेष रूप से चुना गया और उपहारित समसून यौन में व्यस्त होने के कारण नष्ट हो गया था। उसके पास महान शारीरिक शक्ति थी, लेकिन कोई नैतिक शक्ति नहीं थी, आज बहुत से लोगों का भी यही हाल है। यौन प्रलोभन ने उसके जीवन पर शासन किया और उसे नष्ट कर दिया, जैसा इसने उसके जीवन में किया, आज भी कई लोगों के साथ यही करता है। यह स्वाभाविक है कि शैतान अपने जाल में किसी ऐसी चीज़ से लगाएगा जो बहुत बढ़िया और सुंदर होने के लिए बनाई गई हो। आप अपने जीवन में उसके जाल के लिए देखो!

न्यायीयों की रूपरेखा

I. इज़राइल के युद्ध (सिल्लियों के कारण) 1-2

क- राजनीतिक पृष्ठभूमि (असफलता) 1

ख- आध्यात्मिक पृष्ठभूमि (विश्वासहीनता) 2

II. इज़राइल का संकट (चक्र के काल) 3-16

क- चक्र 1: ओथनील (मेसोपोटामिया) 3a

ख- चक्र 2: एहुद, शमगर (मोआबी) 3बी

ग- चक्र 3: दबोरा, बराक (कनानी) 4-5

घ. चक्र 4: गिदोन (मिद्यानियों) 6-8

ङ- चक्र 5: तोलार, जायर (गृहयुद्ध) 9

च- चक्र 6: यिप्तह, इबज़ान, एलोन, अब्दोन (अम्मोनी) 10-12

छ- चक्र 7: शिमशोन (पलिशती) 13-16

III. इज़राइल के तौर तरीके (चक्र में स्थितियां) 17-21

क- आध्यात्मिक विकृति (दान) 17-18

ख- नैतिक प्रदूषण (बेंजामिन) 19-21

रूथ:

छुड़ाने वाला रिश्तेदार



शीर्षक: नायिका रूथ के नाम पर

लेखक: संभवतः शामूल

लेखन की तिथि: दाऊद के शासनकाल के दौरान

लेखन का स्थान: कनान

शामिल समय: न्यायियों के समय के दौरान लगभग 10 वर्ष। रूथ और बोअज़ ने लगभग 1120 ई.पू. में विवाह किया

प्राप्तकर्ता: यहूदी

मुख्य आयत: रूथ 1:15-16 "देखो," नाओमी ने कहा, "तेरी जेठानी अपने लोगों और अपने देवताओं के पास वापस जा रही है। उसके साथ वापस चली जाओ।" परन्तु रूथ ने उत्तर दिया, "मुझे तुम्हें छोड़ने या अपने पास से वापस जाने के लिए आग्रह मत कर। तुम जहाँ जाओगी मैं वहाँ जाऊँगी, और जहाँ तुम रहोगी मैं रहूँगी। तुम्हारे लोग मेरे लोग होंगे और तुम्हारा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।"

प्रमुख शब्द: "रिश्तेदार" (14 बार); "छुड़ाने वाला" (9 बार)

उद्देश्य: यह दिखाने के लिए कि धर्मत्याग (न्यायीयों) के समय में भी कुछ विश्वासयोग्य लोग बचे हुए हैं, और साथ ही यह भी कि कैसे एक मोआबी महिला दाऊद की परदादी और यीशु की पूर्वज बन गई थी।

विषय: छुटकारे को छुड़ाने वाले कुटुम्बी-उद्धारकर्ता की उदाहरण द्वारा चित्रित किया गया है।

कई महान उपन्यासों में कहानी के भीतर एक कहानी होती है। उदाहरण के लिए, डॉ. झिवागो की हिंसा और क्रूरता की स्थापना में एक कोमल प्रेम कहानी है। रूथ की कहानी के साथ भी ऐसा ही है। न्यायियों

के समय में स्थापित (वास्तव में इब्रानी बाइबिल में न्यायीयों की पुस्तक के अंतिम चार अध्याय), रूथ की पुस्तक पाप और धर्मत्याग के समय में प्रेम और विश्वासयोग्यता की एक घटना को दर्शाती है।

रूथ का संकल्प (अध्याय 1) देश में अकाल के कारण, एलीमेलेक और नाओमी अपने पुत्र महलोन और किल्योन को साथ लेकर मोआब देश में चले गए। वहाँ लड़कों ने अन्यजाति लड़कियों, ओर्पा और रूथ से विवाह किया। गैर-यहूदी देश में जाना और गैर-यहूदी स्त्रियों से विवाह करना दोनों ही परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी थी (व्यवस्थाविवरण 7:1-3)। इस कारण परमेश्वर ने पहले पिता को हटाया/खत्म किया, फिर पुत्रों को। उनके पाप में बने रहने के कारण यह मृत्यु देने के रूप में परमेश्वर का अनुशासन था (1 यूहन्ना 5:16-17; प्रेरितों के काम 5:1-11)। चूंकि महिलाओं के पास खुद का पालन पोषण करने का कोई रास्ता नहीं होता है और उनके संसाधन समाप्त हो गए होते हैं, नाओमी घर लौटने का फैसला करती है। यह आंतरिक रूप से परमेश्वर की ओर मुड़ने का भी एक संकेत देता है (1:20-21)। ओरपा घर लौट आती है, लेकिन रूथ नाओमी के साथ रहने का वादा करती है। नाओमी के साथ-साथ परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम और निष्ठा उसे प्रेरित करती है। वह परमेश्वर को YHWH के रूप में संदर्भित करती है, उसके साथ एक व्यक्तिगत संबंध दिखाती है (1:15-16)। वह परमेश्वर के साथ-साथ नाओमी के साथ रहने का फैसला करती है।

रूथ के अधिकार (अध्याय 2) - परमेश्वर ने जमींदारों को आज्ञा देकर गरीब यहूदियों के लिए भोजन के लिए काम करने का प्रावधान किया कि वे अपने खेतों के किनारों के आसपास कुछ अनाज छोड़ दें जिसे ज़रूरतमंदों द्वारा इकट्ठा किया जा सके। धर्मत्याग और लोभ के इस समय में, बहुत कम यहूदियों ने अनाज को ऐसे खड़ा छोड़ा, लेकिन बोअज़ नाम के एक धर्मी व्यक्ति ऐसा करता था। रूथ नाओमी और अपने लिए बचा हुआ अन्न बटोरने के लिए उसके खेत में गई। उसके त्यागपूर्ण परिश्रम ने बोअज़ को इतना प्रभावित किया कि उसने सुनिश्चित किया कि वह सुरक्षित रहे और उसकी ज़रूरतें पूरी हों। शायद इस तथ्य से कि बोअज़ की माँ रहाब एक अन्यजाति (मत्ती 1:5) थी, उसे रूथ की दुर्दशा के प्रति अधिक सहानुभूतिपूर्ण हो गयी। रूथ ने अपने लिए एक पति पाने के लिए पीछे भागने के बजाय बूढ़ी नाओमी की देखभाल करना चुना। क्योंकि उसने दूसरों को पहल पर रखा, परमेश्वर ने उसकी देखभाल की।

रूथ का अनुरोध (अध्याय 3) - यह महसूस करते हुए कि वे इस तरह अनिश्चित काल तक नहीं रह सकते, नाओमी ने रूथ को प्रोत्साहित किया कि वह बोअज़ से उनकी सहायता के लिए अनुरोध करे और उनकी संपत्ति को छुड़ा ले, जिसे पैसों के लिए बेच दिया गया था ताकि जीवन कट जाए। परमेश्वर ने रिश्तेदार-उद्धारकर्ता के कानून की स्थापना की जिसमें एक करीबी रिश्तेदार खोए हुए को छुड़ाने के लिए कीमत चुकाकर ज़रूरतमंद की जगह ले सकता था। "छुड़ाने" का अर्थ है "वापस खरीदना" और यह एक गुलाम के मालिक के लिए उपयोग किया जाता है जिसे एक गुलाम को वापस खरीदना चाहिए जो उसका था लेकिन भाग गया था। यह यीशु की भी एक तस्वीर है, जो देहधारण के समय हम में से एक बन गया ताकि वह वो कर सके जो हम नहीं कर सके -- हमें हमारे पाप के कर्ज से मुक्त करें। हम सृष्टि के द्वारा उसके थे, फिर हम पाप में पड़ गए, इसलिए उसे हमारे लिए सलीब पर कीमत चुकानी पड़ी।

छुड़ाने वाला कुटुम्बी अवश्य ही एक निकट संबंधी होना चाहिए (रूथ 2:1,3,20; 3:13), और मसीह हमारी तरह मनुष्य था (फिलिप्पियों 2:5-8; यूहन्ना 1:14; इब्रानियों 2)। उसे छुड़ाने के लिए तैयार रहना था (रूथ 2:8; 3:11) जैसा कि मसीह था (मत्ती 20:28; यूहन्ना 10:28; इब्रानियों 10:17)। इसके अतिरिक्त छुड़ाने वाला कुटुम्बी बंधन में पड़े व्यक्ति को छुड़ाने में सक्षम होना चाहिए (रूथ 2:1)। मसीह हमें छुड़ाने में सक्षम था (यूहन्ना 10:11, 18)। इसका अर्थ है कि उसे स्वयं स्वतंत्र होना चाहिए। बोअज़ था, तो मसीह भी था (यूहन्ना 3:16)। उसके पास छुटकारे की कीमत थी (रूथ 2:1) जैसा कि मसीह ने किया (1 पतरस

1:18-19) और पूरी तरह से कीमत चुकाई, जैसा कि यीशु ने किया था (गलातियों 3:13; 1 पतरस 1:18-19)।

बोअज़ ने स्वेच्छा से ऐसा क्यों नहीं किया? ऐसा करने के लिए उस से क्यों कहना पड़ा? वह जानता था कि वह एक करीबी रिश्तेदार था, उसने नहीं सोचा था कि रूथ जैसी युवा महिला उसके जैसे बड़े आदमी से शादी करने में दिलचस्पी लेगी, और यह रिवाज़ तो था लेकिन सभ भूल गए थे क्योंकि उन दिनों इसका ज्यादा इस्तेमाल नहीं किया जाता था।

रूथ का इनाम (अध्याय 4) - जैसा कि यह निकला, करीबी रिश्तेदार खुद के लिए जमीन लेने में दिलचस्पी रखता था, लेकिन जब उसने महसूस किया कि रूथ इसके साथ आई है, और इस तरह हर आय उसके पास जाएगी और उसके कोई भी बच्चे हो सकते हैं, इस लिए उसने इसे ठुकरा दिया। लालच उसका मकसद था। इसलिए बोअज़ नाओमी की विरासत को वापस खरीदने के साथ-साथ रूथ से शादी करने और उसके और नाओमी के लिए एक घर उपलब्ध कराने के लिए स्वतंत्र था। उनका ओबेद नाम का एक पुत्र था, जिसका एक पुत्र यिशै नाम था, जिसका एक पुत्र दाऊद नाम था। इसने नाओमी को दाऊद की परदादी और यीशु का पूर्वज बना दिया। यह इस बात का एक सुंदर उदाहरण है कि कैसे परमेश्वर उन्हें सर्वश्रेष्ठ देता है जो फैसला उसके ऊपर छोड़ देते हैं! यदि रूथ अपने पति की मृत्यु पर परमेश्वर से नाराज़ हो गई होती या पति को पाने की कोशिश करके अपनी जरूरतों को पूरा करने की कोशिश कर रही होती, तो यह उसके लिए उतना अच्छा नहीं होता जितना हो गया। जल्दबाजी में हालातों को अपने हाथों में लेने और अपनी जरूरतों को पूरा करने की कोशिश करने से आप और मैं कितनी आशीष खो देते हैं?

रूथ की रूपरेखा

I. रूथ का निर्णय 1

क- उसकी पृष्ठभूमि

ख- उसकी पसंद

ग- बेथलहम में उसका आगमन

II. रूथ की भक्ति 2

क- बीनने का अधिकार

ख-बीनने के परिणाम

ग- बीनने की खबर

III. रूथ का उद्धारकर्ता 3

क- नाओमी द्वारा सुझाया गया

ख-रूथ द्वारा निष्पादित

ग- बोअज़ द्वारा सहमत

IV.रूथ की प्रसन्नता 4

क- पति

ख- बेटा

ग- वंशवली

बाइबिल अवलोकन 12

शाऊल



मुख्य घटनाएँ : साम्राज्य शाऊल के अधीन

मुख्य लोग: शाऊल, शामूएल, दाऊद

बाइबल की पुस्तकें: 1 शामूएल

बाइबल आयत : 1 शामूएल 16:7 परन्तु यहोवा ने शामूएल से कहा, न तो उसके रूप पर विचार करना, और न उसकी ऊंचाई पर, क्योंकि मैं ने उसको तुच्छ जाना है;

परमेश्वर चीजों को देखता ऐसे नहीं देखता जैसे मनुष्य देखता है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मनुष्य के मन पर रहती है।"

समय: 1,050 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएँ:

भारत में वेद काल

मिस्र में नए साम्राज्य का अंत

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन

याकूब	जल्पर्ल	न्यायी	यसहाक	यूसफ	यहोशु शाऊल
बाबुल अब्राहाम	मूसा				
4,000 ई.पू.	3,000 ई.पू.	2,000 ई.पू.	1,000 ई.पू.	1 ई.पू.	

मूसा के बाद यहोशू और फिर लोगों की एक श्रृंखला द्वारा इस्राएल राष्ट्र पर लगभग 400 वर्षों तक शासन किया गया, जिन्हें "न्यायी" कहा जाता था। अंततः वे एक राजा चाहते थे जैसा कि उनके आसपास के अन्य राष्ट्रों के पास थे वे नहीं चाहते थे कि अब इस के आगे परमेश्वर उनका राजा बना रहे। वे चाहते थे कि कोई ऐसा हो जिस पर वे गर्व कर सकें, शाऊल जैसा कोई, भले ही वह पूरी तरह से परमेश्वर का अनुसरण



नहीं करता था। शाऊल का 40 वर्षीय शासनकाल उसके आपने और राष्ट्र के लिए एक हार का समय था। शुरुआत से यह देखा गया तरीका यह है कि परमेश्वर मनुष्य तक पहुँचता है और मार्गदर्शन और सुरक्षा प्रदान करता है, लेकिन मनुष्य सोचता है कि वह परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय अपने जीवन को चलाने में ज्यादा बेहतर है। परिणाम हमेशा एक ही होते हैं -बर्बादी ।

शाऊल से मिलें

शाऊल इजराइल का पहला राजा था (1 शमूएल 9:2-31:12; 1 इतिहास 8:1-26:28)। वह हमेशा मुश्कलों में घिरा रहा। कई वर्षों तक, इजराइल में किसी एक अगुवा के कबीलों का एक अव्यवस्थित संगठन था। संकट के समय अगुवा तो उठे; लेकिन कोई औपचारिक सरकार नहीं थी। शामूएल शाऊल से पहले अगुवा था, परन्तु वह एक आत्मिक अगुवा था, राजा नहीं। जब लोगों ने एक राजा बनाने पर जोर दिया, तो परमेश्वर ने शामूएल के माध्यम से उन्हें चेतावनी दी कि उन्हें इसका पछतावा करना होगा। लेकिन वह अपनी बात पर जोर देते रहे।

उसे क्यों चुना गया? शाऊल वास्तव में वही था जो लोग चाहते थे इसलिए परमेश्वर ने उन्हें कठिन तरीके से सीखने दिया कि वह जानता था कि उनके लिए उनसे बेहतर क्या है। शाऊल आकर्षक दिखने वाला एक बड़ा आदमी था, जिसके कारण लोगों ने उसे तुरंत स्वीकार कर लिया। इसके अलावा, वह बिन्यामीन के गोत्र से था, जो एफ्रेम और यहूदा के बीच की सीमा पर स्थित था। इस कारण वह इजराइल के उत्तरी और दक्षिणी दोनों भागों को भाने लगा। इसके अलावा, वह एक सक्षम सैनिक अगुवा था, जैसा कि उस के व्यवसाय की शुरुआत में उसकी जीत से पता चलता है। उस के व्यवसाय की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी पलिश्तियों के साथ उस की पहली मुठभेड़। ऐसा लग रहा था कि वह हार जाएगा, लेकिन योनातन ने दिन बचा लिया और जीत का द्वार खोल दिया।

शाऊल का पहला पाप था गिलगाल में शमूएल की प्रतीक्षा ना करना (1 शमूएल 13:8-9)। वहां उसने परमेश्वर की आशीश मांगने के लिए बलिदान देकर एक याजक की भूमिका निभाई। जबकि यह काम केवल याजक ही ऐसा कर सकता था। उसके बाद शीघ्र ही उसका दूसरा पाप हुआ। मोआब, अम्मोन, और एदोम को हराने के बाद, उसे शामूएल ने अमालीकियों के खिलाफ युद्ध करने के लिए कहा और "क्या पुरुष और क्या स्त्री, क्या शिशु, क्या दूध पीता बच्चा, क्या बैल, क्या भेड़, क्या ऊंट, क्या गदहा, सब को मार डालने के लिए कहा था " (1 शमूएल 15:3) शाऊल ने उसके निर्देशों को अच्छी तरह से पूरा

किया, सिवाय इसके कि उसने राजा अगाग की जान बख्श दी और अच्छे से अच्छे जानवरों को बचा लिया। तब उसने झूठ बोला और शामूएल से कहा कि उसने परमेश्वर के निर्देशों का ठीक-ठीक पालन किया है।

परमेश्वर ने उसे राजा बने रहने की अनुमति दी, परन्तु उसकी आत्मा शाऊल से विदा हो गई, जो परमेश्वर की इच्छा का पालन करने की बजाए अपनी इच्छा का पालन करना चाहता था। तब से वह एक दुष्ट आत्मा, एक राक्षस से परेशान होने लगा था, जो उसे बुरी तरह सताती थी। इसी समय के दौरान शामूएल ने अगले राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया।

पहले तो शाऊल दाऊद के साथ एक मित्र जैसा था, परन्तु जब दाऊद गोलियत और पलिश्तियों के विरुद्ध अपनी सफलता के कारण लोकप्रिय हो गया, तो शाऊल ईर्ष्या से भर गया और उसे मारने की कोशिश करने लगा। जैसे-जैसे समय बीतता गया वह परमेश्वर से और दूर होता गया। अंत में, 40 साल के शासनकाल के बाद, वह और उसके पुत्र युद्ध में मारे गए।

ऐसा लगता था कि वह अपने शासनकाल की शुरुआत में वादे से भरा हुआ था,, लेकिन क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी, बल्कि सोचा कि वह सबसे अच्छा और ज्यादा जानता है, उसने सब कुछ खो दिया, अंततः अपना जीवन भी। वह परमेश्वर और इजराइल के लिए महान कार्य कर सकता था, इसके बजाय उसने देश को राजनीतिक और आत्मिक रूप से जर्जर अवस्था में छोड़ दिया। यदि वह इसे फिर से कर सकता होता तो हो सकता है उसने बहुत कुछ अलग कर दिया होता, लेकिन परमेश्वर हमें जीने के लिए केवल एक ही जीवन देता है। सुनिश्चित करें कि आप इसे उसके लिए जीते हैं!

1 शामूएल: भीतर देखो



शीर्षक: शामूएल के बाद (यहूदियों के लिए " पहला राजा")

लेखक: अज्ञात (गाद या नाथन?)

लेखन की तिथि: सुलेमान के समय में

लेखन का स्थान: इज़राइल

समय शामिल: 56 वर्ष (1067-1011 ईसा पूर्व)

प्राप्तकर्ता: यहूदी

मुख्य आयत: 1 शामूएल 16:7 परन्तु यहोवा ने शामूएल से कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके कद पर, क्योंकि मैं ने उसको तुच्छ जाना है; यहोवा की दृष्टि मनुष्य की जैसी नहीं है, मनुष्य तो बाहरी रूप देखता है, लेकिन यहोवा हृदय को देखता है।"

मुख्य शब्द : "अभिषेक" "अस्वीकार" (दोनों का उपयोग 7 बार किया गया है)

उद्देश्य: न्यायाईओं के बाद इज़राइल का इतिहास जारी रखना और राज्य की बुनियाद दिखाना।

विषय: आंतरिक धार्मिकता से बाहरी दुनियादारी की तुलना करना।

पॉइन्सेटिया एक लोकप्रिय फूल है, खासकर क्रिसमस के समय पर। हालाँकि, ज्यादातर लोगों को यह एहसास नहीं होता है कि यह वास्तव में नकली है। यह केवल लाल पत्ते होते हैं, फूल नहीं। वास्तव में, इसका असली फूल मामूली और अनाकर्षक होता है। इसमें कोई रस या उपयोगी फल नहीं होता है। इसको खाने से कोई बीमार भी हो सकता है। यह बहुत अच्छा लगता है, लेकिन वास्तव में होता नकली है! कई लोग भी ऐसे होते हैं। हम उन्हें पाखंडी कहते हैं। ऊपर से तो वे महान लगते हैं, पर भीतर से खाली, खोखले, अधर्मी होते हैं। हमारे आज के दिनो और युग में आंतरिक सुंदरता को छोड़कर बाहरी रूप-रंग पर बहुत जोर दिया जाता है। यीशु कहता है कि आंतरिक सुंदरता बाहरी सुंदरता से अधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि (यूहन्ना 7:24; 1 पतरस 3:3-4) महत्वपूर्ण वही है जो अंदर है! 1 शामूएल में इसके कई अच्छे उदाहरण हैं!

हन्ना - क्योंकि उसके कोई पुत्र नहीं था, हन्ना ने प्रार्थना में परमेश्वर के सामने अपना हृदय उंडेल दिया। महायाजक एली उसको प्रार्थना करती देख रहा था। उसके बाहरी रूप से उसने सोचा कि वह नशे में है और उसे फटकारा, लेकिन वह गलत था! परमेश्वर ने उसके हृदय को देखा, उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया, और उसे एक उत्तम पुत्र दिया - शामूएल। शामूएल तम्बू में रहकर एली की अगुवाई में बड़ा हुआ।

एली बेशक स्वयं परमेश्वर का एक अच्छा मनुष्य था, एली ने अपने पुत्रों को याजक होने के बाहरी रिती-आँ से को पूरा दिया, जबकि उनके हृदय लालच, वासना और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह से भरे हुए थे। क्योंकि वे इस तरह के थे, और एली ने उनके बदलाव के लिए कोई कदम नहीं उठाया, उन सभी ने अपना जीवन और सेवकाई को खो दिया !

राष्ट्र- क्योंकि उनकी अगुआई करने के लिए कोई धर्मी याजक नहीं थे, लोगों ने परमेश्वर से एक राजा की माँग की। वे सब लोगों के समान बनना चाहते थे, क्योंकि उनके चारों ओर के सभी राष्ट्रों का एक राजा होता था। उन्हें लगा कि यह प्रभावशाली लगता है। केवल बाहरी बातों के प्रति चिंत होने और उन्हें पूरा करने से, उन्होंने सोचा कि यह उनकी समस्याओं का अंत है। परमेश्वर ने उन्हें एक राजा दिया, यह जानते हुए कि उन्हें कठिन तरीके से सीखना होगा। उन्हें अपने राजा के रूप में उनका अनुसरण करना चाहिए था लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

शाऊल - शाऊल एक लंबा, सांवला और सुंदर आकर्षक कद-काठी वाला था, इसलिए यहूदियों ने सोचा कि वह राजा होने लिए आदमी है! हालांकि, अंदर से वह एक आत्म-केन्द्रित, असुरक्षित और घमंडी था। उसने बलिदान चढ़ाने में (1 शमूएल 13), जल्दबाजी में आदेश देने द्वारा (1 शमूएल 14) और सभी अमालेकियों को ना मारने (1 शमूएल 15) के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। फिर उसने दाऊद को मारने का प्रयत्न किया। आखिरकार परमेश्वर ने उसे हटा दिया।

दाऊद - राजा के स्थान पर चुना जाने के लिए दाऊद नाम का एक चरवाहा लड़का परमेश्वर के मान को भाता था। बाहरी रूप से वह शाऊल के जैसे नहीं था, लेकिन परमेश्वर ने दाऊद की आंतरिक सुंदरता के पक्ष में उसके अच्छे दिखने वाले बड़े भाइयों को पीछे छोड़ दिया था (1 शमूएल 16:7)। दाऊद ने गोलियत को हराने के लिए बाहरी शक्ति पर नहीं, आंतरिक शक्ति पर भरोसा किया था। बाहरी दिखावे से तो इनके बीच दूर दूर तक का कोई जोड़ नहीं था - लेकिन बाहरी दिखावे धोखा हो सकते हैं !

जोनाथन - दाऊद का वफादार दोस्त, जोनाथन ने अपने दोस्त दाऊद की मदद करने के लिए सिंहासन के लिए अपना दावा छोड़ तक दिया था। एक दूसरे के लिए उनके अंदर का प्यार और प्रतिबद्धता बहुत मजबूत थी!

मीकल और अबीगैल- दाऊद की पहली पत्नी मीकल बाहरी रूप से सुंदर और एक राजकुमारी थी। हालांकि, अंदर से, वह स्वार्थी, संकीर्ण और ईश्वरीय चीजों के प्रति लापरवाह थी। अबीगैल खूबसूरत होने के साथ साथ अपनी बुद्धिमानी और विनम्रता के लिए भी प्रसिद्ध थी। शाऊल से छिपने के कठिन वर्षों के दौरान उसकी आंतरिक शक्ति ने दाऊद की मदद की, जबकि मीकल ने उसे छोड़ दिया और दूसरा पति कर लिया।

बेदारी ! - एक छोटा समय आया जब पूरा राष्ट्र परमेश्वर के साथ अपने आंतरिक संबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, परमेश्वर की ओर मुड़ा। उनमें परमेश्वर के निकट रहने की वास्तविक इच्छा थी (1 शमूएल

7:1-2), अपने पाप से मुड़े (1 शमूएल 7:3-4) और बाइबल सीखने और परमेश्वर की आराधना करने के लिए एकत्रित हुए (1 शमूएल 7:5)। वे परमेश्वर के साथ एक गहरा आंतरिक, व्यक्तिगत संबंध कायम करने के बारे में गंभीर थे (1 शमूएल 7:6)। परमेश्वर ने इस बेदारी का नेतृत्व करने के लिए शमूएल का उपयोग किया (1 शमूएल 7-8)। इस बेदारी के दौरान पलिशितियों को उन पर आक्रमण करने की अनुमति देकर परमेश्वर ने उनके नए विश्वास की परीक्षा होने दी, परन्तु वे मदद के लिए परमेश्वर को पुकार कर परीक्षा में सफल हुए (7:9)। उसने उन्हें जीत दिलाई और उन्हें आशीष दी (1 शमूएल 7:10-11) और उन्होंने उसका धन्यवाद किया और उसकी आराधना की (1 शमूएल 7:12)।

एक युवा अधिकारी, जो युद्ध के दौरान अंधा हो गया था, सेना अस्पताल में उन नर्सों में से जो उसकी देखभाल करती थी उनमें से एक से शादी कर ली। एक दिन उसने किसी को अपने और अपनी पत्नी के बारे में बात करते हुए सुना: "यह उसके लिए सौभाग्य की बात है कि वह अंधा था क्योंकि अगर वह दृष्टि रखता होता तो ऐसी घरेलू महिला से कभी शादी नहीं करता!" वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया और आवाज़ों की ओर चला गया, और कहा, "तुम ने जो कुछ कहा है मैंने सुना है, और मैं अपने दिल की गहराइयों से परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं आँखों से अंधा नहीं तो मैं इस महिला की आत्मा के अद्भुत मूल्य को नहीं देख सकता था" जो मेरी पत्नी है। मेरे लिए वह अब तक की सबसे महान चरित्र है; यदि उसके रूप का आकार ऐसा है कि वह मेरी आत्मा के लिए उसकी आंतरिक सुंदरता को छिपा सकता है, तो मैं अपनी दृष्टि खोने से बड़ा लाभार्थी हूँ। सुनिश्चित करें कि आप भी आंतरिक सुंदरता पर ध्यान दें न कि बाहरी सुंदरता पर (नीतिवचन 31:30)।

1 शमूएल की रूपरेखा

I. अपराध 1-15

क- शमूएल (अंतिम न्यायाधीश) 1-8

1. शमूएल का संकल्प 1-3
2. अहिद के सन्दूक की वापसी 4-6
3. यहूदियों की बेदारी 7-8

ख- शाऊल (प्रथम राजा) 9-15

1. शाऊल का शासन 9-11
2. शमूएल का अनुस्मारक 12
3. परमेश्वर की अस्वीकृति 13-15

II भरोसा 16-31

दौऊद (दूसरा राजा) 16-31

1. शाऊल का प्रतिस्थापन 16
2. दाऊद का पुरस्कार 17-18

3. लोगों की प्रतिक्रिया 19-26
4. दाऊद का शरणस्थान 27-30
5. शाऊल का निष्कासन 31

बाइबिल अवलोकन 13

दौऊद



मुख्य घटनाये: दाऊद के अधीन साम्राज्य

मुख्य लोग: दौऊद, शाऊल, मीकल, बैथशेबा

बाइबल की पुस्तकें: 2 शमूएल, भजन संहिता

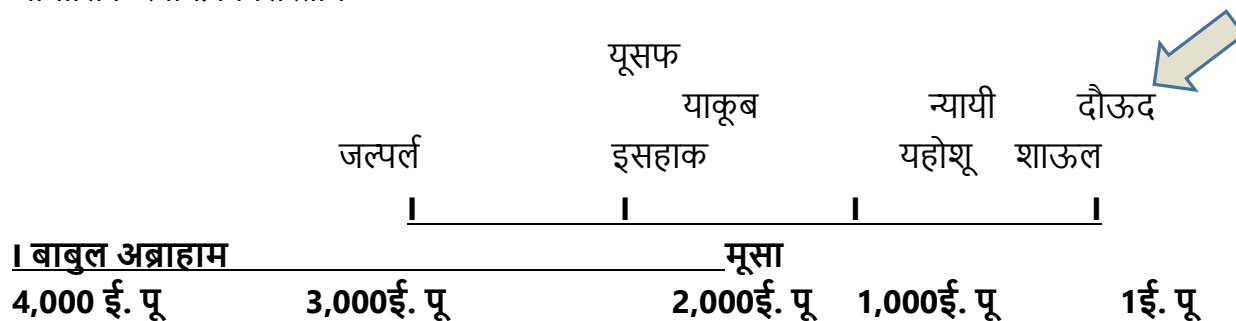
बाइबल आयत : 2 शमूएल 12:13 तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। नातान ने उत्तर दिया, “यहोवा ने तुम्हारे पाप को दूर कर दिया है।

समय: 1,010 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएँ:

मध्य अमेरिका में मयान वंश का गठन

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन



दाऊद के शासन के दौरान इजराइल राष्ट्र अपने चरम पर था। आकार, शक्ति और विश्व प्रभाव में राष्ट्र ने उन ऊंचाइयों को छुआ जो पहले या बाद में कभी हासिल न की थी और ना कर कभी सका। बाइबल के हमारे इस अवलोकन में इजराइल राष्ट्र की यह अवस्था, मुख्य आकर्षण है। दाऊद ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और उसकी सेवा की। परमेश्वर ने दाऊद को और कौम को समृद्ध किया। दुर्भाग्य से बैथशेबा के साथ दौऊद के पाप ने घटनाओं की एक श्रृंखला शुरू की जो धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से राष्ट्र में कमी ले आए।

दौऊद से मिलें

बाइबल में दौऊद का 1,000 से अधिक बार उल्लेख किया गया है, किसी और से भी अधिक, यहाँ तक कि यीशु, जिसे "दाऊद का पुत्र" कहा जाता है उसका भी जिक्र 12 बार हुआ है। उसे उसकी सबसे बड़ी



उपलब्धि के लिए याद किया जाता है - गोलियत की

मृत्यु, जब वह आत्मा से भरा हुआ था, साथ ही उसकी सबसे बड़ी विफलता - बतशेबा का प्रलोभन, जब वह शरीरी ताकतों से भरा हुआ था। उसे इतने सारे लोगों द्वारा पसंद किए जाने का एक कारण यह है कि वे प्रत्येक मामले में उसके साथ अपनी पहचान बना सकते हैं। उसकी कहानी सुनें और उससे सीखें।

पृष्ठभूमि - दाऊद अपने परिवार में सबसे छोटा, आठवां पुत्र था। उसे अपने पिता की लिए भेड़-बकरियों की देखरेख करने की जिमेदारी दिया गया था। हम उसे मजबूत व्यक्ति के रूप में देखते हैं, उसने एक शेर और एक भालू को मार डाला, जिन्होंने उसके पिता के झुंड को डराया था, एक संगीतकार जो एक वीणा बजाता था और खूबसूरती से गाता था, और एक युवा व्यक्ति जो अपने कर्तव्यों का पालन कर सकता था चाहे वह अकेला छोड़ दिया जाए या संदेश देने और समाचार एकत्र करने के लिए

कहीं भेज दिया जाए। हालाँकि, उत्पत्ति की पुस्तक में यूसुफ की तरह, उसके भाइयों द्वारा उसका मज़ाक उड़ाया गया था। और ऐसा लगता है कि उसके पिता ने आपने विचारों में उसे परिवार में उसको बहुत छोटा स्थान दिया था। अपने परिवार द्वारा इतना अकेला छोड़ दिए जाने के कारण, दाऊद के पास खेतों में परमेश्वर की बातों के बारे में सोचने के लिए, उसके प्रति अपनी आस्था और वफादारी को तृप्त करने के लिए बहुत समय था, जिसे हम सबसे पहले गोलियत के साथ उसकी प्रसिद्ध मुठभेड़ में स्पष्ट देखते हैं। भविष्यद्वक्ता शामूएल ने इस किशोर को उसके परिवार की गवाही में इजराइल का अगला राजा होने के लिए अभिषिक्त किया था। परन्तु दाऊद के सिंहासन पर बैठने से पहले बहुत कुछ होना बाकी था।

गोलियत- दौऊद राष्ट्रीय परिदृश्य पर फूट पड़ा जब उसने पलिशतियों के 9 फुट से ज्यादा विशाल योद्धे गोलियत को मार डाला। परिणामस्वरूप यहूदी सेना ने पलिशतियों को पराजित किया और अपनी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त कर ली। वह बहुत लोकप्रिय हो गया, लेकिन इससे राजा शाऊल उससे बहुत ईर्ष्या करने लगा। इससे उसकी जान को खतरा हो चुका था।

कवर-अप # 1- 17-29 की उम्र से दाऊद भाग रहा था, शाऊल के क्रोध से छिप रहा था। उसे परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए था जैसा उसने गोलियत को मरने के समय किया था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने मामलों को अपने हाथ में ले लिया। वह डर के मारे रात के समय भाग गया, सलाह के लिए शामूएल के पास गया और जिसे उसे परमेश्वर की सुरक्षा का आश्वासन दिया। तौभी वह भय और घबराहट से भरा हुआ था, और इस बात को योनातन तक पहुंचा दिया। उसे अपने आप को बचाने के लिए एक योजना सूझी कि योनातन अपने पिता शाऊल से उसके ठिकाने के बारे में झूठ बोले। वह घबराहट में

भाग गया, फिर अपने डर के पाप को ढंकने की कोशिश की। वह अपने पाप को स्वीकार और कबूल नहीं करना चाहता था। अक्सर पाप को छिपाना पाप करने से भी बदतर होता है (1 यूहन्ना 1:6-10)। जब यूसुफ के भाइयों ने उसे बेचकर और अपने पिता से झूठ बोलकर उसके प्रति अपने गलत व्यवहार को छिपाने की कोशिश की, तो वे अपने जीवन भर अपराधबोध से ग्रस्त रहे और इससे कई निर्दोष लोगों को बुरी तरह चोट लगी।

फिर भी, दाऊद याजक अहीमेलिक के पास गया, क्योंकि वह शाऊल से भागा हुआ था। उसने शाऊल के लिए एक गुप्त मिशन पर होने का नाटक करते हुए फिर से झूठ बोला। अहीमेलिक ने उस पर विश्वास किया और उसकी सहायता की। शाऊल को इसका पता चल गया और उसने अहीमेलिक और 85 अन्य याजकों को मार डाला। यह सब दाऊद द्वारा पाप को छिपाने के कारण हुआ था।

दाऊद अपने शत्रु पलिशियों के पास सुरक्षा के लिये भाग गया। उसने पागल होने का नाटक किया ताकि वह रह सके। परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय, वह अपने पापों को ढाँकने और अपने पापों को स्वीकार न करने के अपने प्रयासों में इतना नीचे गिर गया था कि वह सुरक्षा और मदद के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ ना सके। जब उसने अंततः अपना रुख परमेश्वर की तरफ किया तो परमेश्वर ने उसकी सहायता की। दो बार उसने शाऊल से बदला लेने के विचार को बदल दिया। उसने नाबाल के खिलाफ इतना अच्छा वरताव नहीं किया, लेकिन अबीगैल ने हस्तक्षेप किया और आपदा को होने से रोक लिया। सचमुच परमेश्वर उसके साथ था।

कवर-अप # 2 -श्रीघ्न ही, वह फिर से पलिशियों के देश में भाग गया। परमेश्वर ने अपने लोगों को वहाँ रहने से मना किया था, परन्तु दाऊद अपने जीवन के लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा से बाहर था। पहले तो सब सुचारू रूप से चला, ऐसा लगा कि उसके लिए 'दरवाजे खुल गए' हैं। हालाँकि, यह परमेश्वर का आशीर्वाद नहीं था, बल्कि शैतान का जाल विकसित हो रहा था। धोखे, चालाकी और आधे-अधूरे सच की एक श्रृंखला के माध्यम से, उनके अनुयायियों और उन्हें अपना शहर ज़िकलाग मिला। परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय वह फिर से शरीर में अपनी जरूरतों को पूरा कर रहा था।

जल्द ही हजारों यहूदी जो शाऊल का अनुसरण नहीं करना चाहते थे, शाऊल से छिपने में उसके साथ हो गए। उसके पास उन सभी को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था। परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय वह अपने ही समाधान के साथ आगे बढ़ने लगा। उसने पड़ोसी जनजातियों पर हमला किया, उन्हें मार डाला और उनका भोजन चुरा लिया। सबको मारकर किसने, यह बताने वाला कोई नहीं था की यह किस ने किया। उसने पलिशियों से कहा कि वह यहूदियों को मार रहा है और उनका भोजन चुरा रहा है। यह माना जाता था कि अन्य यहूदी अपने लोगों पर हमला कर रहे थे। वह फिर से अपने पाप को ढाँपने की कोशिश कर रहा था, और फिर से ढाँकना पाप से भी बदतर था। फिर से यह छिपाना हत्या में बदल गया।

उसे लगभग पलिशियों को यहूदियों से लड़ने में मदद करनी पड़ी (झूठ आपको फसा लेता है)। लेकिन परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और पलिशती सेना ने उन्हें इसके बजाए घर भेज दिया। जब वे घर पहुंचे तो उन्होंने अपने नगर सिकलग को लूटा हुआ और जला हुआ पाया। जो वे दूसरों के साथ कर रहे थे, वही उनके साथ हुआ, लेकिन उनके परिवारों को बख्श दिया गया और उन्हें बंदी बना लिया गया। दाऊद और उसके अनुयायियों ने अपने पापों का पश्चात्ताप किया और परमेश्वर ने उन्हें अपने प्रियजनों को वापस जीतने में सक्षम बनाया। इस बीच पलिशियों ने यहूदियों पर आक्रमण कर दिया था, और शाऊल और उसका परिवार मारा गया था। उसके लिए राजा बनने का द्वार खुल गया।

कवर-अप # 3- परमेश्वर ने दाऊद के माध्यम से बहुत से अद्भुत कार्य किए, जिसने अपने पूरे हृदय से परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी सेवा करने की कोशिश की थी, परन्तु एक बार फिर से अपने पुराने पापी स्वभाव के आगे झुक गया। यदि इन पर जल्दी रोक ना लगायी जाए तो फिर जीवन में इन पापी ढांचों को तोड़ना बहुत कठिन हो जाता है।

वह 50 साल का था, अपने 40 साल के शासनकाल का आधा पूरा कर चुका था। वह लोकप्रिय था, सबका चहेता था। उसने यरूशलेम को अपनी राजधानी बनाया था और परमेश्वर के लिए एक सुन्दर मन्दिर बनाने के लिए समान इकठा कर लीया था। उन्होंने कई भजन लिखे और आराधना में अगुवाई की। वह समृद्ध और संपन्न था। इज़राइल की भूमि 10 गुना बढ़ गई थी। इजरायल एक राष्ट्र के रूप में अपने उच्च शिखर पर था। वह सफल रहा, लेकिन ठीक उसी समय शैतान हमला करना पसंद करता है। वह दौऊद के लिए पाप करने को एक जाल बिछा रहा था और अब उसने इसका इस्तेमाल किया।

एक वसंत ऋतु में दाऊद अपने शत्रुओं के विरुद्ध परमेश्वर की सेना की अगुआई करने की अपनी परमेश्वर प्रदत्त जिम्मेदारी को पूरा करने के बजाए, वह अपनी सफलता का आनंद लेते हुए यरूशलेम में रह रहा था (2 शमूएल 11)। इस वजह से वह एक महिला को नंगी नहाते हुए देखने की स्थिति में आ गया। अपनी नज़रें हटाने और इसे अनदेखा करने के बजाए, उसने उसकी लालसा की और उसे अपने पास लाई जाने के लिए कार्रवाई की। फिर से परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसा करने और प्रतीक्षा करने के बजाए वह अपनी जरूरतों को स्वयं पूरा करने की कोशिश कर रहा था। फिर से यह एक कवर-अप में समाप्त हुआ: यह दिखने के लिए वह दौऊद के द्वारा नहीं बल्कि आपने पति के द्वारा जो दौऊद की सेना में था, गर्भवती हुयी थी, जो कुछ आवश्यक था, उसने किया। और यह फिर से एक हत्या के साथ समाप्त हुआ, क्योंकि उसने उस महिला के पति को मार डाला था ताकि किसी को पता न चले कि यह बच्चा उसके पति का नहीं है। यहीं से उसका अपना जीवन और राष्ट्र नीचे गिरने लगा।

शैतान कई सालों से यह जाल बिछा रहा था। सबसे पहले एक युवक के रूप में अपनी जरूरतों को अपने तरीके से पूरा करने और फिर खुद को ढंकने का चलन शुरू हुआ ताकि वह परेशानी में न पड़े। इसके साथ ही, फिर वासना का एक ढांचा तयार हुआ जो उसके जीवन में जल्दी शुरू हो गया। वह हमेशा एक कामुक, वासना, देह की चीजों का आनंद लेने वाला बन गया था - वैध और अवैध दोनों के लिए। अपने 20 के दशक में उसने कई पत्नियाँ लेकर, अपनी यौन वासनाओं को पूरा करके अवज्ञा की। उसकी कई पत्नियाँ और रखैलें थीं, उसे बतशेबा की जरूरत नहीं थी। यह उसके 30 और 40 के दशक में जारी रहा और 50 के दशक में बतशेबा के साथ उसके पाप के साथ समाप्त हुआ। शैतान 30 साल से यह जाल बिछा रहा था, और इसने काम किया!

उन 'छोटी' वासनाओं और पापों को देखें। अपने व्यक्तित्व में विकसित होने वाली छोटी-छोटी दरारों को देखें। उस झूठ को देखें जो कहता है कि आप अपने तरीके और अपने समय से अपनी खुद की वैध जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। उस अहंकार को देखें जो आपको अपने पाप को स्वीकार करने और उनके लिए पश्चात्ताप करने के बजाए उसे ढंकने के लिए प्रेरित करता है।

इस पाप के परिणामस्वरूप दाऊद ने बतशेबा, आपने मित्रों, आपने सेवकों, आपने परिवार, आपने राष्ट्र और यहाँ तक कि आपने शत्रुओं के सामने भी अपनी गवाही खो दी (2 शमूएल 12:14)। परमेश्वर के साथ उसका संबंध तब तक टूटा रहा जब तक कि उसने स्वयं को दीन नहीं किया और इसका अंगीकार नहीं किया। इस पाप का परिणाम उसके पूरे जीवन भर बना रहा और यहां तक कि यह आज तक भी जारी है। उसके परिवार और राष्ट्र ने इस समय से धीरे धीरे गिरना शुरू कर दिया। इस पाप से ठीक पहले इजराइल ने कभी भी ऐसी महानता हासिल नहीं की जो उस समय उसके पास थी।

दाऊद की सभी कहानियों में हम मनुष्य और ईश्वर के बीच एक महान प्रेम संबंध भी देख सकते हैं। दाऊद ने अपने पापों का न्यायदण्ड प्राप्त किया और उनके परिणामों के साथ जीता रहा और उनके द्वारा दबा रहा। लेकिन परमेश्वर की दया के बिना वह पूरी तरह से नष्ट हो गया होता। परमेश्वर ने अपने प्रति दाऊद के महान प्रेम का निरन्तर प्रतिउत्तर दिया, यह जानते हुए कि दाऊद ने अपने हृदय में भलाई करने की, परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम में जीने की इच्छा रखी थी। दाऊद अपने परमेश्वर के न्याय और दया दोनों के बारे उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करता था। यद्यपि दाऊद इजराइल का राजा था, वह यह समझता और मानता था कि यहोवा परमेश्वर ही एक सच्चा राजा है।

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपके दिल की खोज करे । “हे परमेश्वर, मुझे जांचकर जन ले ; मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं के जन ले ;। देख, कि उस में कोई आपत्तिजनक चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर ” (भजन संहिता 139:23-24)। जो कुछ वह तुम्हें दिखाता है, उसे मान लो। पाप को कभी मत ढाँपों। यह हमेशा आपके साथ रहेगा और आपको गहरा पछतावा देगा। दाऊद के अनुभव से सीखें।

2 शामूएल: पाप के प्रभाव



शीर्षक: 1 शामूएल की निरंतरता

लेखक: अज्ञात (गाद या नाथन)

लेखन की तिथि: सुलेमान का समय

लेखन का स्थान: इज़राइल

समय शामिल : 40 वर्ष (1011 - 971 ईसा पूर्व)

प्राप्तकर्ता: यहूदी

मुख्य आयत: 2 शामूएल 11:27 परन्तु जो काम दाऊद ने किया था उससे यहोवा अप्रसन्न हुआ।

मुख्या शब्द: "दाऊद" 280 बार

उद्देश्य: दाऊद के शासन के बारे में (इसके उतार-चढ़ाव) समझाने के लिए और शाऊल से सुलेमान तक इज़राइल के इतिहास को जारी रखने के लिए

विषय: पाप के प्रभाव

जब लियोनार्डो दा विंची अपनी उत्कृष्ट कृति द लास्ट सपर (अंतिम भोज) को चित्रित कर रहा था , तो उसने अपने मसीह के लिए एक मॉडल की तलाश की। अंत में उन्होंने रोम के चर्चों में से एक में पिएत्रो बेंडिनेली नाम के एक युवक गायक का पता लगा , जो देखने भालने में सुन्दर था। कई वर्ष बीत गए, और पेंटिंग अभी भी अधूरी थी। एक यहूदा इस्करियोती को छोड़कर सभी शिष्यों को चित्रित किया गया था । अब वह एक ऐसे व्यक्ति को खोजने लगा जिसका चेहरा पाप से कठोर और विकृत हो गया हो --और अंत में उसे रोम की सड़कों पर एक भिखारी मिला जिसका चेहरा इतना खलनायक था; जब उसने उसकी ओर देखा तो वह काँप उठा। जब उसने अपने कैनवास पर यहूदा के चेहरे को चित्रित किया तो उसने अपनी जगह काम करने के लिए किसी और व्यक्ति को काम पर रखा। जब वह उस मनुष्य को विदा करने पर था, तो उस ने कहा, मैं अब तक तेरा नाम नहीं जान पाया। "मेरा नाम पिएत्रो बेंदिनेली है , " उसने उत्तर दिया, "मैं आपके लिए मसीह के मॉडल के रूप में भी यहाँ बैठ चूका हूँ ।" क्या हुआ था? पाप हुआ। पाप के परिणाम और परिणाम भयानक होते हैं। मनुष्य जो बोता है वही काटता है (गलातियों

6:7; कुलुस्सियों 3:25; अथ्यूब 4:8; होशे 8:7)। दाऊद का जीवन भी इसी सच्चाई को दर्शाता है। यहाँ तक कि "परमेश्वर के मन का मनुष्य (प्रेरितों के काम 13:22; 1 शामूएल 13:14; 1 राजा 15:3)" को भी पाप के परिणाम भुगतने होंगे। 2 शामूएल इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

विजय - पुस्तक का पहला भाग (अध्याय 1 - 10) दाऊद की विजय को दर्शाता है। वह इजराइल देश का शासक बन जाता है और यरूशलेम (जिसे अभी भी "दाऊद का शहर" कहा जाता है) पर कब्जा कर लेता है, जिसे वह अपनी राजधानी बना लेता है। वह देश को 6,000 वर्ग मील से 60,000 वर्ग मील तक फैला लेता है। वह मफीबोशेत पर दया करता है। वह जो कुछ भी करता है परमेश्वर उसमें आशीष देता है। वह बहुत सफल और समृद्ध है। वह बहुत धनवान, लोकप्रिय और परमेश्वर द्वारा अत्यधिक उपयोग किया जाता है। दुर्भाग्य से यह सब उसे हार के लिए तैयार करता है, क्योंकि ऐसा तब ही होता है जब हालत अच्छे चल रहे होते हैं कि हम अपने आध्यात्मिक अनुशासन की और शैतान के हमलों की अनदेखी करते हैं।

अपराध - अपने 40 साल के शासन के बीच में दाऊद युद्ध करने के बजाए घर में रहने का फैसला करता है क्योंकि उसकी सेना के लिए हालत बहुत अच्छे चल रहे होते हैं (2 शामूएल 11:1)। जब हम परमेश्वर प्रदत्त आपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को अनदेखा करते हैं तो हम शैतान के हमलों के शिकार हो जाते हैं। यदि दाऊद अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए वही कर रहा होता जो उसे करना चाहिए था, तो उस से पाप ना होता।

यरुशलम में सबसे ऊंची इमारत की छत पर देर रात टहलने के कारण उसे बतशेबा को अपने ही घर की एकान्तता में स्नान करते हुए देखने का मौका मिला (आयत 2)। इसे अनदेखा करने और तस्वीर को अपने दिमाग से हटाने के बजाए, दाऊद ने इस विचार को तब तक पोषित किया जब तक कि यह एक कार्य नहीं बन गया (आयत 3)। बाहर अपने शत्रुओं से सुरक्षित रहते हुए, दाऊद का सबसे बड़ा शत्रु भीतर था। वह पहली नज़र में मदद नहीं कर सका, और प्रलोभन कोई पाप नहीं है (हमें परीक्षा आ जाने के लिए पश्चाताप करने की जरूरत नहीं है, बस जब हम इसके सामने मानसिक या शारीरिक रूप से आपने आप को दे देते हैं)। यह वासना ही थी जिसे उसने उस नज़र से स्थापित होने दिया जो पाप था, जैसा कि यीशु ने स्वयं मत्ती 5:28 में कहा था। उसे भाग जाना चाहिए था, जैसा कि यूसुफ ने फोतिफर की पत्नी से किया था (उत्पत्ति 39:1-13)।

अगर हम भागते हैं तो परमेश्वर हमेशा एक रास्ता प्रदान करता है (2 कुरिन्थियों 10:13), लेकिन अगर हम आगे बढ़ते रहते हैं तो कोई रास्ता नहीं देता। शैतान अपने जाल में किसी ऐसी चीज़ से फँसाता है जो हमें आकर्षित करती है। दाऊद के मामले में यह एक महिला थी, एक "खूबसूरत" महिला (इसे और अधिक आकर्षक बनाने के लिए)। ध्यान रखें!

याद रखें कि यह दाऊद की ओर से केवल एक बार का पाप नहीं था। शैतान करीब 30 साल से उसके लिए यह जाल बना रहा था। महिलाओं की चाहत दाऊद की एक कमजोरी थी, उनके लिए एक वासना थी, जैसा कि उसकी कई पत्नियों और रखेलों के रूप में देखा गया था (1 शामूएल 27:3; 30:5)। यह उसके बेटे सुलैमान में और बड़े रूप में देखा जाता है, जिसकी लगभग 1000 पत्नियाँ और रखेलें थीं (1 राजा 11:3)। दाऊद एक कामुक व्यक्ति था, शैतान ने उसके लिए एक जाल बिछाया था। वह (शैतान) सबके साथ यही कोशिश करता है। यह एक वासना या लालच हो सकता है, या यह एक मानसिक रवैया हो सकता है जैसे क्रोध (जिसने मूसा को प्रतिज्ञा की भूमि से बाहर रखा), कोई भय या कड़वाहट। जब तक यह काम करता है तब तक वह परवाह नहीं करता कि यह कौन सा पाप है! सुनिश्चित करें कि आप जानते हैं कि शैतान आपके जीवन में कौन से 'छोटे' पाप पर काम कर रहा है। आपके लिए परमेश्वर की

योजना है शांति और आनंद पाना , और आध्यात्मिक रूप से विकसित होना। शैतान की योजना है इन सब से आप को दूर रखने की है। वह आपका उद्धार नहीं छीन सकता लेकिन वह आपकी गवाही और शांति को छीन सकता है।

परीक्षण- हर कोई जानता है कि दाऊद और बतशेबा की कहानी कैसे समाप्त हुई (2 शामूएल 11-12)। दाऊद अपने पाप को ढाँपने के लिए झूठ और छल का सहारा लेता है (11:5-7), यहाँ तक कि नशे का भी (आयत 8-13)। जब इनमें से कोई भी काम नहीं करता है तो वह हत्या (14-17) का उपयोग करता है, यह सोचकर कि उसने अपने पाप को ढक लिया है। परन्तु परमेश्वर जानता था (आयत 27), और ऐसा ही वे सब जो उसके घर में थे। शीघ्र ही उसके शत्रु जान गए और यह उनके लिए भयानक गवाही बन गया (12:14)। आखिरकार दाऊद पश्चाताप करता है (12:1-13; भजन संहिता 51), एक वर्ष के कष्ट के बाद (भजन संहिता 32)। परिणाम जारी हैं: बच्चे की मृत्यु हो गई, जिसने दूसरे की पत्नी को ले लिया, उसकी पत्नियों को ले लिया गया, उसके बच्चे वासना, बलात्कार, हत्या, मृत्यु और धोखे के साथ उसके उदाहरण का पालन करते हैं जो उसके परिवार में आम हो गया है, और पूरा देश कमजोर हो गया। शत्रु इजराइल के विरुद्ध बढ़ने लगे। उसे क्षमा तो कर दिया गया था, लेकिन उसे वही काटना था जो उसने बोया था। अपने जीवन में शैतान के जाल से सावधान रहें। उसके पास हम में से प्रत्येक के खिलाफ एक ना एक जल है। हमेशा यीशु के करीब रहने द्वारा और आपने दिमाग में आने वाले हर लुभावने विचार से दूर रहने से ही हम अपने जीवन में इस तरह के विनाशकारी परिणामों से सुरक्षित रह सकते हैं। नीतिवचन 28:13 कहता है कि "जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी।"

2 शामूएल की रूपरेखा

I. विजय, प्रसिद्धि (आज्ञाकारिता = आशीष) 1-10

क- लोगों की प्रतिक्रिया 1

ख- दाऊद की मान्यता 2-4

ग- राष्ट्र का पुनर्गठन 5-6

घ- परमेश्वर का आश्वासन 7

ङ शत्रुओं का निष्कासन 8-10

II. परीक्षण, लज्जा (अवज्ञा = न्याय दण्ड) 11-24

क- दाऊद का पलटा 11

ख- नाथन की फटकार 12a

ग- दाऊद का पश्चाताप 12बी

घ- पाप के परिणाम 13-20

1. अम्नोन का पाप 13

2. अबशालोम का विद्रोह 14-18

3. राष्ट्र का वापस फिरना 19

4. जनक्रांति 20

ड- दाऊद का स्मृति 21-24

भजन सहिता :

आराधना करना



शीर्षक: " तारदार सझ के के साथ गाए जाने वाले गीत"

लेखक: विभिन्न/कई जन (रूपरेखा देखें)

लेखन की तिथि: 1410 से 430 ई.पू

लेखन का स्थान: अधिकतर फिलिस्तीन में

समय शामिल: सृष्टि से 430 ईसा पूर्व तक

प्राप्तकर्ता: कुछ भजन सहिता विशेष व्यक्तियों के लिए, कुछ भजन सहिता इज़राइल राष्ट्र के लिए, और कई भजन सहिता आम लोगों के लिए है।

प्रमुख आयत: 33:1-4 हे धर्मियों, यहोवा का जयजयकार करो; सीधे लोगों को उसकी स्तुति करना उचित है।

वीणा बजा बजाकर यहोवा की स्तुति करो; दस तारवाले वीणा पर उसका संगीत बजाओ। उसके लिये नया गीत गाओ; गुणवता से बजाओ, और जयजयकार करो। क्योंकि यहोवा का वचन सही और सत्य है; वह जो कुछ करता है उस में वह विश्वासयोग्य है।

मुख्य शब्द: "स्तुति" 176 बार ; "आशीर्वाद" 92 बार

उद्देश्य: परमेश्वर की स्तुति करने और उससे प्रार्थना करने के लिए इज़राइल की प्रेरित पुस्तक।

उद्देश्य : परमेश्वर की आराधना करना ।

आप चर्च क्यों जाते हैं? ईमानदारी से बताएं। यह नहीं कि तुम्हें क्यों जाना चाहिए, लेकिन यह कि तुम क्यों जाते हो? चर्च जाने के लिए आप को कौन सी चीज प्रेरित करती है? जब आप चर्च के शुरू होने की प्रतीक्षा में बैठे होते हैं तो आप क्या सोचते हैं?

सच तो यह है कि लोग कई कारणों से चर्च जाते हैं। हालाँकि, सबसे मुख्य कारण है, परमेश्वर की आराधना करने के लिए जाना । वह चाहता है कि हमारा मन इस बात में व्यस्त रहे कि वह कौन है और क्या है। वह चाहता है कि हमारा हृदय प्रेम और धन्यवाद और प्रशंसा से भरा रहे।

मार्टिन लूथर ने कहा कि एक चर्च में आराधना करने के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है: एक बाइबिल और दूसरी भजन पुस्तक। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे बात करता है। हम उससे संगीत और गीत में बात करते हैं। इसी तरह हम अपना प्यार और धन्यवाद और प्रशंसा व्यक्त करते हैं। बाइबिल और भजन पुस्तक।

भजन संहिता की पुस्तक यहूदी भजन पुस्तक थी। वास्तव में यह पाँच भजन पुस्तकों का संग्रह था। अधिकांश चर्चों में पसंदीदा भजन होते हैं जिन्हें वे पसंद करते हैं और अक्सर गाते हैं। उनके पास कुछ स्तुति गीत भी हैं जिनको वे गाना पसंद करते हैं। इसके अलावा कुछ कोरस या समकालीन मसीह संगीत भी हो सकते हैं। हमें एक और गीत की किताब मिल सकती है जिसमें वह संगीत था जिसे हम पसंद करते हैं और उपयोग करते हैं। इन सभी स्रोतों में से सर्वोत्तम को ले लें और उन्हें एक किताब में डाल दें और आपके पास भजन संहिता की पुस्तक के समान एक इकठ होगा।

इब्रानी कविताएँ -आज हमारे संगीत में अधिकांश गीतों में ऐसे शब्द होते हैं जो तुकबंदी करते हैं। यहूदी कविताओं में कभी तुकबद्ध शब्द नहीं होते (नहीं तो यह अंग्रेजी अनुवाद में खो जाएंगे) लेकिन तुकबंदी विचार। कुछ बात कही जाएगी और फिर विचार को सुदृढ़ करने के लिए अलग-अलग शब्दों में दोहराई जाएगी (पर्यायवाची समानता; 24:13)। कभी-कभी कुछ इसके विपरीत किया जाता था, यानि जो दूसरी पंक्ति के विपरीत होने के कारण सत्य पर जोर देने के लिए कहा जाता था (एंटीथेटिक समानांतरवाद; 1:6; 37:9)। कविता का एक और रूप दूसरी पंक्ति को पहली पंक्ति में जोड़ना और समझाना होता था (सिंथेटिक समानांतरवाद; 19:7-9)। यह देखने के लिए कि किस प्रकार की कविता का उपयोग किया जा रहा है, देखें कि दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति से कैसे संबंध रखती है। इससे आपको भजनों की बेहतर व्याख्या करने में मदद मिलेगी।

वास्तव में यह केवल भजनों पर ही नहीं पर सभी इब्रानी कविताओं पर लागू होता है। इसमें अय्यूब, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत, विलापगीत, और अन्य पुराने नियम की पुस्तकों के कई भाग शामिल हैं। कुल मिलाकर पुराने नियम का लगभग 50% हिस्सा कविता के रूप में लिखा गया था, लेकिन इसका अधिकांश हिस्सा अंग्रेजी अनुवाद में खो गया है।

भजन संहिता के प्रकार -आज कई चर्चों में स्तुति गायन काफी लोकप्रिय है, मानक भजनों का पूरक है जो ज्यादातर शिक्षण के लिए जाने जाते हैं। अन्य गीत जीवन में हमारे परीक्षणों और कष्टों को व्यक्त करने के लिए अच्छे हैं। भजन संहिता में भी इन सभी विषयों के गीत शामिल हैं।

स्तुति गीत सर्वाधिक प्रचलित हैं। कुछ परमेश्वर की स्तुति करने वाले व्यक्तिगत हैं (18, 30, 34, 40, 106, 116, 138), जबकि अन्य पूरे राष्ट्र के लिए एक साथ परमेश्वर की आराधना करने के लिए लिखे गए हैं (33, 36, 105, 111, 113, 117, 135, 136, 146, 147)। इनमें से प्रत्येक एक ही नमूने का पालन करता है: इसमें परमेश्वर की स्तुति करने का कारण और स्वयं स्तुति का कारण दिया गया है।

विलाप गीत भी काफी सामान्य हैं। परीक्षण या समस्या का वर्णन, परमेश्वर में विश्वास के इकरार करने के बाद और छुटकारे के लिए अनुरोध के बाद, किया जाता है। इसके बाद परमेश्वर में विश्वास की अंतिम घोषणा आती है। ये भी, या तो व्यक्तियों द्वारा (6, 12, 13, 26, 28, 52, 58, 59, 69, 109, 140, 142) या पूरे राष्ट्र द्वारा (13, 44, 60, 74, 80, 83) होता है।

मसीह के बारे में भजन भी बहुतायत में हैं। कुछ मसीही भजन हैं, मसीह के पहले आगमन, मृत्यु, दफन, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बारे में हैं (16, 22, 45, 69, 72, 89, 118, 132)। राजशाही भजन परमेश्वर के राज्य (2, 4, 7, 8, 20, 21, 45, 47, 72, 89, 93, 96, 97, 98, 101, 110, 144) पर राज करने वाले मसीह की प्रशंसा करते हैं।

अन्य प्रकार के भजन भी थे। पाप के अंगीकार गीतों ने पाप का अंगीकार किया और क्षमा मांगी, फिर इसके लिए परमेश्वर की स्तुति की और सभी को पवित्र जीवन जीने का उपदेश देने वाले (3, 6, 25, 32, 38, 39, 40, 51, 102, 130)। यरूशलेम या घर (120-134) पैदल चलने वाले लोगों द्वारा तीर्थयात्री गीत गाए जाते थे। इतिहास के गीत यहूदियों को उनके अतीत में (78, 80, 81, 105, 106, 135, 136) उसकी वफादारी के लिए परमेश्वर की प्रशंसा और धन्यवाद करना सिखाते थे।

जब आप इब्रानी कविता पढ़ते हैं, विशेष रूप से भजन संहिता की पुस्तक, समानता के प्रकार के साथ-साथ भजन के प्रकार को भी देखें। कुछ को निर्धारित करना कठिन हो सकता है, लेकिन अधिकांश भाग वास्तव में आपको आनंद लेने और भजन संहिता की पुस्तक से अधिक प्राप्त करने में मदद करता है। उन्हें प्रार्थना के रूप में पढ़ो, उन्हें अपने हृदय में स्तुति के रूप में गाओ। उन्हें याद करो। अपने आप को उनमें लीन करो। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि आप उन्हें स्वर्ग में गाते हुए पाएँगे -- इसलिए अभी उनसे परिचित हो जाइए!

भजनों की रूपरेखा

भजनसंहिता 1: भजन संहिता की पुस्तक का परिचय

I. आराधना प्रशंशा (मुख्य रूप से दाऊद द्वारा) 1-41

उत्पत्ति की तरह: सृजन और मनुष्य

डॉक्सोलॉजी 41:13

II. अचिबत आराधना (मुख्य रूप से दाऊद और कोरह द्वारा) 42-72

निर्गमन की तरह: उद्धार और छुटकारे का वर्णन 72:18-19

III. अटूट आराधना (मुख्य रूप से आसाप द्वारा) 73-89

लेवीओं की तरह: आराधना और दरबार

डॉक्सोलॉजी 89:52

IV. समर्पण की आराधना (मुख्य रूप से गुमनाम लोगों द्वारा) 90-106

गिनती की तरह: जंगल में भटकना

डॉक्सोलॉजी 106:48

V. पूर्ण आराधना (मुख्य रूप से दाऊद द्वारा) 107-150

व्यवस्थाविवरण की तरह: शास्त्र और स्तुति

डॉक्सोलॉजी 150:6

भजन साहिता 150:

भजन संहिता की पुस्तक का निष्कर्ष

बाइबिल अवलोकन 14

सुलेमान



मुख्य घटनाएँ: साम्राज्य- सुलेमान के अधीन

मुख्य लोग: सुलेमान

बाइबल की पुस्तकें: 1 राजा, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत

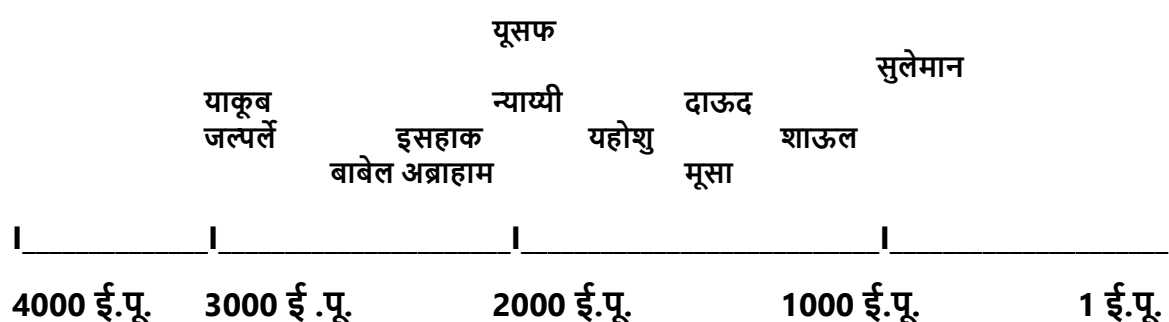
बाइबल आयत: 1 राजा 10:23-24 राजा सुलेमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर था। पूरी दुनिया के लोग सुलेमान के साथ बैठकर उस ज्ञान को, सुनने के लिए मौके की तलाश करते थे, जो परमेश्वर ने उसके दिल में डाला था।

समय: 970 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएँ:

भारत में लौह-युग

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन



परमेश्वर ने सुलैमान को पृथ्वी पर न केवल सबसे बुद्धिमान व्यक्ति बनाया, बल्कि उसने उसे सबसे धनी भी बनाया, भले ही उसने धन नहीं मांगा था (1 राजा 10:14-15, 23-29)। अपने महान धन और उस अद्भुत राज्य के कारण जो उसके पिता दाऊद ने उसके लिए छोड़ा था, उसके पास अन्य देशों की स्त्रियों से विवाह करने के कई अवसर थे। यह उनके साथ दोस्ती या समझौतों को पक्का करने का एक तरीका था। यहीं पर उसका घटिया निर्णय दिखाई देता है - उसने 700 पत्नियों और 300 रखेलों से विवाह किया, ऐसी स्त्रियाँ जो यहोवा परमेश्वर की अनुयायी नहीं थीं, और उन्होंने उसे भटका दिया (1 राजा 11:1-6)। यह परमेश्वर के नियमों और आज्ञाओं के विरुद्ध था (व्यवस्थाविवरण 17:14-17)। इस कारण परमेश्वर बहुत क्रोधित हुआ (1 राजा 11:9-13, 31)।

एक और नासमझी का काम जो उसने किया वह यह था, कि अपनी फजूलखर्चीली जीवन शैली को पूरा करने के लिए करों में वृद्धि करता रहा। इससे लोगों के बीच समस्याएँ पैदा हुईं, और अंततः उसकी मृत्यु के बाद राष्ट्र का विभाजित हो गया। मरने से पहले उसे 40 साल तक यरूशलेम में शासन करने का सौभाग्य मिला था (1 राजा 11:41-43)।

तो अब आप देख सकते हैं कि वह कैसा बुद्धिमान था लेकिन साथ ही नासमझ भी था। परमेश्वर की अवज्ञा करना हमेशा बेहूदा रवैया होता है, चाहे आपके पास कितनी भी बुद्धि या धन क्यों न हो। सुलैमान के पास इनमें से प्रत्येक चीज जीवित व्यक्तियों से कहीं अधिक था, परन्तु इन में से किसी ने भी परमेश्वर के प्रति सच्चे बने रहने में उसकी विफलता को पूरा नहीं किया।

आपको परमेश्वर से अलग होने के लिए कौन सी चीज भरमाती है? आप पर उसकी कई आशीषों के बावजूद, आप उस से कहाँ दूर चले जाते हैं? मूर्ख मत बनो, हमेशा वही करो जो वह कहता है क्योंकि वह जानता है कि वह किस बारे में बात कर रहा होता है!

1 राजा

मूर्तिपूजा



शीर्षक: इस्राएल के राजाओं के बाद

लेखक: अज्ञात (यिर्मयाह?)

लेखन की तिथि: कई वर्षों

लेखन का स्थान: इजराइल - यहूदा

समय शामिल: 130 वर्ष (791-841 ई.पू.)

प्राप्तकर्ता: यहूदी

मुख्य आयत : 1 राजा 11:1-8 राजा सुलैमान की सात सौ पत्नियाँ और तीन सौ रखेलियाँ थीं, और उसकी स्त्रियों ने उसको भरमा दिया।

मुख्या शब्द: "राजा" 250 बार; "नबी" 43 बार

उद्देश्य: विभाजन के माध्यम से दाऊद से लेकर विभाजन तक के इजराइल इतिहास को दिखाने के लिए

विषय: परमेश्वर को छोड़ मूर्तिपूजा की ओर मुड़ने के परिणाम।

एक टीवी ड्रामा होता था जो एक ऐसे व्यक्ति के क्लोज-अप के साथ शुरू होता था जिसे बहुत ज्यादा लोग नहीं जानते थे। "आप शायद मुझे नहीं जानते," वे कहता था। "मैंने कठपुतलियाँ बनाईं।" फिर पृष्ठभूमि अचानक अस्पष्ट छोटे जीवों के साथ जीवंत हो जाती है जो एक स्वर में कहते हैं, "बड़ा सौदा!" वह आदमी आगे कहता है, "उन्हें सब जानते हैं, पर मुझे कोई नहीं जानता।" इसलिए मैं जहां भी जाता हूं अपना अमेरिकन एक्सप्रेस क्रेडिट कार्ड साथ रखता हूं।" यहाँ इस कार्ड पर दृष्टिगत रूप से "जिम हेंसन" टाइप किया गया रहता है।

जो उस समय सत्य था वह आज भी सत्य है। परमेश्वर ने मनुष्य और पूरी दुनिया को बनाया, फिर भी उसे शायद ही वह श्रेय या मान्यता मिलती है जिसका वह हकदार हैं। हम सृष्टि को सृष्टिकर्ता से बेहतर जानते हैं। जब और जहाँ सृष्टि को सृष्टिकर्ता से अधिक मान्यता मिले तो यह मूर्तिपूजा होती है! हम जो कुछ भी परमेश्वर के पहले रखते हैं वह एक मूर्ति बन जाता है: धन, वस्तुएँ, सुख, परिवार, सेक्स, लोकप्रियता, भोजन, शिक्षा, संगीत, प्रेम, आदि। 1 राजा इसके विरुद्ध एक गंभीर चेतावनी के रूप में है!

सुलैमान की सफलता - उसके पाप के बाद, दाऊद तेजी से नीचे की ओर चला गया। जब सुलैमान केवल 20 वर्ष का था तब सुलैमान ने उसे इजराइल के राजा के रूप में प्रतिस्थापित किया गया। दाऊद ने सुलैमान को परमेश्वर के निकट रहने की सलाह दी। दाऊद परमेश्वर के बहुत करीब था और परमेश्वर से बहुत दूर भी था, और वह निश्चित रूप से जानता था कि करीब होना बेहतर था! दुर्भाग्य से, मनुष्य शायद ही कभी अपने माता-पिता की सलाह मानता है। ऐसा लगता है कि हम अपनी पिछली पीढ़ी की गलतियों से सीखते नहीं हैं। सुएलम ने भी नहीं सीखा।

सुलैमान ने बहुत अच्छी शुरुआत की। जब परमेश्वर ने सुलैमान से कहा कि वह कुछ भी प्राप्त कर सकता है जो वह चाहता है तो सुलैमान ने धन या लोकप्रियता या शक्ति नहीं मांगी बल्कि परमेश्वर के लोगों का सही ढंग से नेतृत्व करने के लिए बुद्धि मांगी। परिणामस्वरूप परमेश्वर ने उसे बुद्धि के साथ-साथ धन और प्रसिद्धि भी दी।

सुलैमान को वो मंदिर बनाने का सौभाग्य मिला जिसका दाऊद ने नक्शा बनाया था। यह आध्यात्मिक रूप से इजराइल के लिए उच्च स्तर बिंदु था। तुम्हें पता है, कि यह स्वाभाविक रूप से मनुष्य में किसी जन की या किसी चीज की आराधना करने के लिए उत्पन्न होता है। हर कोई कुछ न कुछ पूजता है। हम सभी के पास कुछ ऐसा है जिसके लिए हम जीते हैं, जिस पर अपना भरोसा रखते हैं, संतुष्टि और अर्थ के लिए मुड़ते हैं, और तस्सली और आराम की तलाश करते हैं। दुर्भाग्य से अधिकांश लोगों ने सृष्टिकर्ता की जगह उसकी बनाई हुई चीज़ों को दे दी है। यह मूर्तिपूजा है।

सुलैमान के शासन काल में इजराइल देश बहुत धनी हो गया। दुनिया के कई हिस्सों के साथ व्यापार ने उन्हें मजबूत और समृद्ध बना दिया था। इजराइल का विस्तार करने के लिए युद्ध नहीं होते थे, परन्तु सेनाओं का काम था, दाऊद द्वारा जीते गए सारे प्रदेश को सुरक्षित रखना। यह शांति और समृद्धि का ऐसा समय था जैसा कि इजराइल के पास इससे पहले या इससे बाद में कभी नहीं था। हालाँकि, इसी समय विनाश के बीज बोए जा रहे थे।

सुलैमान का पाप - अन्य देशों के साथ शांति बनाए रखने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाए सुलैमान ने उस समय की सामान्य समझौता -प्रथाओं का सहारा लिया जहाँ बेटियों को शांति सुनिश्चित करने के लिए अन्य राजाओं को पत्नियों के रूप में दिया जाता था। सुलैमान ने 700 पत्नियाँ और 300 रखेलों को जमा किया। महिलाओं के लिए दाऊद की भूख और एक से अधिक पत्नियाँ रखने की प्रथा ने सुलैमान को इसके चरम सीमा तक पहुँच जाने में ठोस भूमिका निभाई।

सबसे बुरी बात यह थी कि ये स्त्रियाँ यहोवा परमेश्वर की विश्वासी नहीं थीं। वे अपने विदेशी देवताओं को अपने साथ ले आई थी, अपनी मूर्तिपूजा को जारी रखा, अपने बच्चों को भी वही मूर्तिपूजा का पाठ सिखाया, और धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से सुलैमान को मूर्तिपूजा और अनैतिकता में प्रभावित कर लिया (क्योंकि उनकी पूजा ने यही रूप लिया)।

सुलैमान का दुःख - जब सुलैमान 60 वर्ष का हुआ (शाऊल, दाऊद और सुलैमान सभी ने 40 वर्षों तक शासन किया) उसका जीवन और राज्य बिखर रहा था। वह व्यक्ति जिसने श्रेष्ठगीत लिखा था, जब वह

जवान था कि एक पत्नी से ईमानदारी से प्यार करो, अब बदल गया था। उसके परिपक्व वर्षों में लिखी गई नीतिवचन की बुद्धि ने मूर्तिपूजा और अनैतिकता के खिलाफ चेतावनी दी, लेकिन उसने अपनी सलाह भी नहीं ली। सभोपदेशक, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर के बिना जीवन कितना खाली है, भले ही शक्ति और धन हो, और जो सुलैमान के साथ क्या हुआ था। एक अच्छे जीवन का कितना दुखद अंत! जबकि शाऊल का दिल परमेश्वर के लिए नहीं था, पर दाऊद का दिल पूरी तरह परमेश्वर के लिए था, सुलैमान का आधा दिल परमेश्वर के लिए था।

मूर्तिपूजा के परिणाम -सुलैमान की मृत्यु के बाद इजराइल राष्ट्र धन और शक्ति के लोभ के कारण दो भागों में विभाजित हो गया - ऐसी मूर्तियाँ जो आज भी लोगों को नष्ट करती हैं। उत्तरी 10 जनजातियाँ, इजराइल, घोर मूर्तिपूजा और अनैतिकता में चली गईं, इसने पूजा करने के लिए दो सोने के बछड़ों का निर्माण किया। दक्षिणी 2 गोत्रों, यहूदा, के पास मंदिर था लेकिन वे बहुत बेहतर नहीं थे। एलिय्याह के समय में एक जागृति के बावजूद, राष्ट्र ने परमेश्वर से हट कर नीचे की ओर गिरना जारी रखा, केवल इसलिए कि उन्होंने सृष्टि को सृष्टिकर्ता के पहले रखा था।

आपके जीवन में सबसे पहले क्या है: सृष्टिकर्ता या उसकी सृष्टि या इसका का कोई हिस्सा? परमेश्वर की चेतावनी स्पष्ट है, केवल सृष्टिकर्ता की आराधना करो, मूर्तों से दूर रहो (1 यूहन्ना 5:21)।

1 राजा की रूपरेखा

I. सुलैमान - शांति 1-11

क- दाऊद की मौत 1-2

ख- सुलैमान की बुद्धि 3-4

ग- सुलैमान का क्षेत्र 5-8

घ- सुलैमान की प्रतिष्ठा 9-10

ङ- सुलैमान की मृत्यु 11

II. विभाजित राज्य - आपदा 12-22

क- इजराइल का विद्रोह 12

ख- जेरोबाम का विद्रोह 13-14

ग- बाल पर एलिय्याह की विजय 15-22क

घ- परमेश्वर की ओर से राष्ट्र का मुड़ना 22ख

श्रेष्ठगीत

विवाहत जीवन का प्रेम



शीर्षक: सुलेमान के द्वारा लिखा प्रेम गीत

लेखक: सुलेमान, जब युवक अवस्था में था

लेखन की तिथि: लगभग 970 ई.पू

लेखन का स्थान: येरूशलम (?)

शामिल समय: एक अज्ञात शूलेमिनी युवती से सुलेमान के विवाहत जीवन के कई वर्ष (श्रेष्ठ गीत 6:3)

प्राप्तकर्ता: विशेष रूप से इस के बारे में कुछ नहीं कहा गया है, लेकिन उनके दिन के युवा प्रेमियों के लिए।

मुख्य वचन: 2:16 मेरा प्रेमी मेरा है और मैं उसकी हूँ; वह सोसन फूलों के बीच में खोजता है

प्रमुख शब्द: "प्रिय" 32 बार; "प्यार," निष्पक्ष, "आओ"

उद्देश्य: विवाह और वैवाहिक प्रेम को महिमा मंडित करना (भावनात्मक और शारीरिक रूप से)

विषय: एक दूसरे के लिए पति और पत्नी का कोमल प्रेम परमेश्वर को प्रसन्न करता है और एक अच्छे विवाहत जीवन के लिए आवश्यक है।

सदियों से पुरुष और महिलाएँ एक दूसरे के लिए अपने प्यार का इजहार करने के लिए विभिन्न राहों का इस्तेमाल करते रहें हैं। सबसे आम रह रहा है, उसके लिए एक गीत या कविता लिखना, जिससे आप प्यार करते हैं। जब प्यार में होते हैं तो अपने प्यार को एक निजी, व्यक्तिगत तरीके से लिखना चाहते हैं जो केवल किसी प्रियजन की आंखों के लिए ही होता है। मान लीजिए, जबकि, आपके व्यक्तिगत प्रेम पत्र और व्यक्त भावनाएँ खोज निकले गए हो और पूरी दुनिया को पढ़ने के लिए प्रकाशित किए गए हों ? श्रेष्ठगीत ठीक यही है: महिला/पत्नी की यादों का उपयोग करते हुए पति द्वारा लिखी गई प्रेम कहानी है। यह उनके सगाई (मंगनी) के दिनों की, शादी के दिन की और शादीशुदा जीवन के शुरुआती संघर्षों

की याद दिलाता है। यह निजी और व्यक्तिगत है, लेकिन परमेश्वर ने इसे हमारे अध्ययन के लिए बाइबल में शामिल किया।

एक प्रेम कहानी -श्रेष्ठगीत एक गीत-रूपी मुहावरा है, जो वास्तव में 14 छोटे प्रेम गीत हैं जो उनके विवाहित प्रेम के विकास को बयाँ करते हैं। हालांकि वे सभी क्रमवार स्थिति में नहीं हैं। पुस्तक एक फिल्म की तरह अधिक है जिसमें रिक्त स्थान भरने वाली यादें हैं। प्रेम कविता का तकनीकी रूप से विश्लेषण करना कठिन है, इसे कविता के रूप में देखा जाना चाहिए। इसे समझने में जो कठिन हो सकता है वह यह है कि आज वो भाषा हमारे लिए विदेशी है। प्रत्येक युगल अपनी 'प्रेम भाषा' विकसित करता है, जिसमें वह अपनी संस्कृति से शब्द शामिल करते हैं और आपने लिए अद्वितीय वाक्यांश बनाते हैं। सेक्स को व्यक्त करने के लिए चिकित्सा शब्दावली ठंडी, लाक्षणिक और प्यार में कमी जैसे शब्द है। सांस्कृतिक कठबोली आमतौर पर कच्ची, गंदी और अवैयक्तिक होती है। इतनी जल्दी इस पुस्तक को पढ़ने से बहुत कुछ छूट जाता है।

याद रखें कि दुनिया में पाप के आने से पहले ही परमेश्वर ने यौन की रचना की थी। उसने इस पुस्तक को प्रेरित किया और इसे बाइबिल में शामिल किया। विपरीत लिंग के दो विवाहित लोगों के बीच यौन संबंध उसकी दृष्टि में आनन्दमय और सुंदर है। हमारी संस्कृति ने आज इस क्षेत्र में हमारी मासूमियत और पवित्रता को छीन लिया है, इसलिए यौन के बारे में केवल सकारात्मक, स्वच्छ, स्वस्थ विचारों के साथ शादी करने वाले जोड़े के बारे में सोचना मुश्किल सा हो गया है। क्योंकि यौन संबंध एक विवाहित पुरुष और स्त्री के लिए परमेश्वर की तरफ से विवाह पर एक अनूठा उपहार है, और क्योंकि यह परमेश्वर की कलीसिया के साथ उसके मिलन का इतनी खूबसूरती से उदाहरण देता है, शैतान ने इसके बारे में हमारे विचारों को कलंकित करने और कलंकित करने के लिए कड़ी मेहनत की है। हम चर्च में इस मुद्दे पर बात या प्रार्थना नहीं करते हैं। यह अस्वीकार्य और शर्मनाक है। सुलेमान और उसकी दुल्हन शूलेमिनी स्त्री के लिए ऐसा नहीं था। हमें उनकी पवित्र और शुद्ध आँखों से यौन को देखते हुए किताब पढ़नी चाहिए, और परमेश्वर से हमें उस मासूमियत को बहाल करने के लिए कहना चाहिए।

विवाहित प्रेम (1:1-5:1)- पुस्तक का पहला भाग उनकी शादी की दिन-रात के बारे में बात करता है। सुलेमान शूलेमिनी स्त्री से तब मिला जब वह व्यापारिक हितों की देखभाल करने के लिए गलील के उत्तर में गया था। वह बड़े शहर, उच्च समाज की लड़कियों से अलग थी जो यरूशलेम में उसके लिए बहुतायत में उपलब्ध थीं। उसके जोबन और खुली ईमानदारी ने उसका दिल जीत लिया था और जब भी हो सकता वह उसे मिलने आता था। उन्होंने इस समय का उपयोग समस्याओं ("छोटी लोमड़ियों" को हराने) के माध्यम से काम करने के लिए किया और कि जब वे शादी करेंगे तो अपने रिश्ते को मजबूत करेंगे। स्पष्ट रूप से उन्होंने शादी से पहले यौन सम्बन्ध बनाने से परहेज किया, वास्तव में पाठक को इसकी तीन बार चेतावनी दी जाती है कि शादी से पहले किसी भी शारीरिक इच्छा को उठने नहीं देना चाहिए (2:7; 3:5; 8:4)। विवाह से पहले कहाँ पर परमेश्वर रेखा खींचता है ? कुछ भी किसी भी तरह से ना ऐसा किया जाना चाहिए और ना कहा जाना चाहिए जो अंत में यौन भावनाओं में पूरा होता हो। किस हद तक ऐसा किया जाना चाहिए ? परमेश्वर कहता है कि कुछ भी मत करो! सुलेमान और शूलेमिनी स्त्री ऐसे ही थे।

इस प्रकार जब विवाह की रात आई, वह आनंद और सुंदरता का समय था। शादी ही उनका मुख्य केंद्र नहीं थी (जैसा कि आज हो गया है)। बजाए इसके, सब कुछ एक साथ मिलकर उनकी पहली रात की ओर इशारा करता है। उन्होंने जो कुछ कहा, उन्होंने जैसा महसूस किया और जो कुछ उन्होंने किया वह सब विस्तार से बताया गया है (1:15-2:7; 4:12-5:1)। यह सुंदर और प्रेमपूर्ण है। वास्तव में, परमेश्वर स्वयं

उन्हें वास्तव में पूरी तरह से एक दूसरे का आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि वह उन्हें देखता है और वे जो कुछ भी कर रहे हैं उसको 100% प्रमाण देता है (5:1 में अंतिम वाक्य)।

विवाहित जीवन (5:2-8:14)- जैसा कि सभी रिश्तों में होता है, चीजें हमेशा सही नहीं होती हैं। उसे आपने घर की यादों से भावुक थी, वह किसी हद तक बहुत दूर जा चुकी थी , और वे एक-दूसरे की लापरवाही करने लगे । इससे उनका यौन जीवन प्रभावित हुआ। उन्हें यह याद रखना सीखना चाहिए था कि उन्होंने उस व्यक्ति से शादी क्यों की और यह सुनिश्चित करना था कि उनकी उमीदें उचित थीं। उन्हें यह सोचने के बजाए कि उनके जीवन साथी के द्वारा उनकी जरूरतों को कैसा पूरा की जानी चाहिए इस पर पर ध्यान केंद्रित करना पड़ा कि उनके साथी की जरूरतों को उनके द्वारा कैसे पूरा किया जाना चाहिए। उन्होंने अपनी शादी की रात के प्यार को फिर से जगाया। यह हमारी यौन रूप से बीमार संस्कृति और समय के लिए कितनी जबरदस्त किताब है, एक वास्तविक में उस बीमारी का 'जो हमें बीमार करती है, उसका इलाज' है ।

श्रेष्ठगीत की रूपरेखा

I. सगाई (मंगनी) (लेबनान में)

II. शादी (येरूशलेम के महल में)

क- बारात 3:6-11

ख- शादी की तैयारी 1:1-8

ग- विवाह पर्व 1:9-14

घ - शादी की रात - 1. 1:15 - 2: 7

ङ शादी की रात - 2. 4:1 - 5:1

III. विवाहित जीवन

क- यौन समायोजन (येरूशलेम महल में) 5: 2-8

1. गलत मनोवृत्ति 5:2-8

2. सही रवैया 5:9 - 6:3

3. बेशर्त स्वीकृति 6:4-10

4. पूर्ण प्रतिबद्धता 6:11-13क

5. पूर्ण आनंद 6:13ख - 8:4

ख- दूसरे को पहल देना (लेबनान में) 8:5-14

नीतिवचनः

बुद्धि



शीर्षक: " किसी के जैसा होना, किसी प्रतिनिधित्व करना"

लेखक: सुलेमान और अन्य (चार्ट देखें)

लेखन की तिथि: 950-700 ई.पू

लेखन का स्थान: अधिकतर यहूदा में

समय शामिल: 950-700 ई.पू

प्राप्तकर्ता: विशेष रूप से सुलैमान का पुत्र (1:8; 2:1) लेकिन पूरी मानवजाति पर लागू होता है (8:1-5)

मुख्य आयत : 1:1-7 दाऊद के पुत्र सुलैमान, इज़राइल के राजा के नीतिवचन: ज्ञान और अनुशासन प्राप्त करने के लिए; अंतर्दृष्टि के शब्दों को समझने के लिए; एक अनुशासित और विवेकपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए, वह करने को जो सही और उचित और निष्पक्ष हो; कि भोलों को चतुराई और जवान को ज्ञान और विवेक देने के लिए - बुद्धिमानों के सुनने और अपनी विद्या बढ़ाने के लिए , और समझदार को मार्गदर्शन प्राप्त करने - कहावतों और दृष्टांतों को समझने के लिए, बुद्धि की बातें और पहेलियाँ की समझ प्राप्त करने के लिए। यहोवा का भय मानना ज्ञान का मूल है, परन्तु मूर्ख लोग बुद्धि और शिक्षा को तुच्छ जानते हैं।

9:10 "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है, और परम पवित्र को जानना ही समझदारी है।

प्रमुख शब्द: "मेरा बेटा" 22 बार; "बुद्धिमान/ज्ञान" 119 बार; "निर्देश" 26 बार

उद्देश्य: संक्षिप्त और स्पष्ट रूप में व्यक्त सामान्य ज्ञान देना

विषय: पृथ्वी पर जीवन के लिए स्वर्ग की ओर से सिद्धांत

बुद्धि क्या है? क्या आपके पास है? आप कैसे जानते हैं कि कोई बुद्धिमान है? मनुष्य को ज्ञान कहाँ से प्राप्त हो सकता है? यद्यपि हमारे समय और संस्कृति में इसे उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि इसे दिया जाना चाहिए, फिर भी ज्ञान का सर्वोच्च महत्व है। बुद्धि होने का अर्थ है परमेश्वर की तरह निर्णय लेने में सक्षम होना, किसी मामले को परमेश्वर की तरह देखना, उस तरह का रवैया रखना जो परमेश्वर चाहता है। इसका मतलब है कि मसीह का सा मन होना, वैसा सोचना और करना जैसा यीशु यहाँ लम्बे समय अविधि के लिए सोचता और करता ।

नीतिवचन की पुस्तक में ज्ञान है: बुद्धिमानी की छोटी छोटी बातें और अनुभव और ईश्वरीय दृष्टिकोण से लिए गए सिद्धांत। वे सच्चे सिद्धांत हैं, लेकिन वादे नहीं।

बुद्धि क्या है? पहले 7 पदों में, सुलैमान बताता है कि वास्तविक ज्ञान क्या है।

पहले- वह कहता है कि यह परमेश्वर का ज्ञान है (1:4)। तथ्य होने से कोई बुद्धिमान नहीं हो जाता। ज्ञान उन तथ्यों का सही उपयोग है। लेकिन तथ्य, मतलब कच्चा माल, ज्ञानी बनने के लिए आवश्यक है। यह विशेष रूप से परमेश्वर के ज्ञान के बारे में सच है। परमेश्वर और उसके वचन को जानने से कार्यों और सत्य का एक अच्छा आधार मिलता है जिसे ज्ञान में ढाला जा सकता है। दूसरों को सुनने या अतीत (इतिहास) से लोगों के बारे में पढ़ने से बहुत ज्ञान सीखा जा सकता है। यह जीवन का ज्ञान प्राप्त करने का एक उत्कृष्ट तरीका है जो ज्ञान की ओर ले जाता है।

इसके बाद- सुलैमान अपने बेटे से कहता है कि अंतर्दृष्टि और समझ (1:2ख ; 2:2; 14:33) बुद्धि का हिस्सा हैं। विशेष परिस्थितियों में अच्छाई और बुराई के बीच भेद करने की क्षमता (इब्रानियों 5:14) ज्ञान है। वास्तव में यह परमेश्वर के पवित्र आत्मा द्वारा किसी को जगाने और अंतर्दृष्टि देने से आता है (याकूब 1:5)। हमें परमेश्वर की आत्मा के प्रति सतर्क रहना चाहिए क्योंकि वह निर्देश देता है। स्मार्ट होने से ज्यादा जरूरी है संवेदनशील होना।

तीसरा- आत्म-अनुशासन (1:2) ज्ञान के लिए आवश्यक है। जिस आसान रास्ते के लिए देह जोर देती है, उसका विरोध करने के लिए आत्म नियंत्रण की आवश्यकता होती है। सोचने के लिए सीखने के लिए आत्म नियंत्रण की आवश्यकता होती है, न कि केवल भावनाओं से प्रतिक्रिया करने के लिए, प्रश्न पूछने के लिए, धैर्यपूर्वक अंतर्दृष्टि की प्रतीक्षा करने के लिए, पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ और ईमानदार होने के लिए, एक बुद्धिमान निर्णय पर टिके रहने और इसे ना बदलने, ज्ञान की आवश्यकता को स्वीकार करने और पूछने के लिए, दूसरों की मदद मागने के लिए। आत्म-अनुशासन ज्ञान का एक महत्वपूर्ण घटक है। सामान्य ज्ञान का होना भी ज्ञान का हिस्सा है (1:3क)। ज्ञान बहुत दूर की चीज नहीं है, कोई ऐसा नहीं जो पहुंच के परे हो, कोई गहरा सत्य नहीं है। यह सामान्य ज्ञान है। जब आप वास्तव में उनके बारे में सोचते हैं तो पते हैं कि नीतिवचन और यीशु की शिक्षाएँ केवल सामान्य ज्ञान कथन ही हैं।

हम बुद्धि कैसे प्राप्त कर सकते हैं?- हालांकि हम अब तक के सबसे अच्छे शिक्षा वाले राष्ट्र हैं, फिर भी हमारे पास ज्ञान की कमी है। हम इसकी तलाश नहीं करते हैं, हम यह भी नहीं जानते कि अगर हम इसे चाहते हैं तो इसे कैसे प्राप्त करें। नीतिवचन हमें बताते हैं:

इसके लिए परमेश्वर से मांगो यह एक बुनियादी सलाह है (2:6)। वह चाहता है कि हमारे पास बुद्धि हो (लूका 21:15)। जब सुलैमान को परमेश्वर से कुछ भी माँगने का विकल्प दिया गया, तो उसने बुद्धि माँगी। अय्यूब, बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक, यह प्रश्न पूछती है (20:12,20), यह निष्कर्ष निकालते हुए कि मनुष्य के पास स्वाभाविक रूप से ज्ञान नहीं होता है (20:13) और इसे खरीदा नहीं जा सकता (20:14-19) लेकिन यह केवल परमेश्वर की तरफ से आता है। हमेशा परमेश्वर से केवल एक निश्चित दिशा के लिए पूछने के बजाय, उससे कहें कि वह आपको यीशु के समान और अधिक बना दे, मसीह का सा मन रखने के लिए (नीतिवचन 1:7)। जितना बेहतर आप किसी को जानते हैं, उतनी ही अधिक संभावना है कि आप यह जान पाएंगे कि वे किसी निश्चित चीज के बारे में क्या सोचेंगे। यीशु के बारे में भी ऐसा ही है।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपको विनम्र होना चाहिए (याकूब 3:13-18)। दूसरों से और ईश्वर से सलाह लेने के लिए बच्चे जैसे खुले रवैये की आवश्यकता होती है। बेशक, हमें हमेशा पवित्र आत्मा पर भरोसा करना चाहिए जैसा कि पहले कहा गया है (1 कुरिन्थियों 12:8) और उसके नेतृत्व और भीतर के आवेगों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

अतीत से सीखना भी महत्वपूर्ण है। बुद्धि रातों-रात नहीं आती है। उन बातों का वेरवा रखें जो परमेश्वर आपको सिखा रहा है ताकि समय के साथ साथ आप उन्हें लागू कर सकें। साथ ही, दूसरों से भी सीखें। वुडरो विल्सन ने कहा था, "मैं न केवल अपने पास मौजूद सभी दिमागों का इस्तेमाल करता हूं बल्कि जितना मैं उधार ले सकता हूं, उसका भी इस्तेमाल करता हूं।" जो कोई भी सोचता है कि उसे दूसरों की राय की आवश्यकता नहीं है वह वास्तव में एक मूर्ख है (अय्यूब 8:8-10; नीतिवचन 19:20)। नीतिवचन की पुस्तक में सुलैमान महान ज्ञान देता है - इसका लाभ उठाएं!

अंत में, हमेशा याद रखें कि सब कुछ अनंत काल के प्रकाश में देखा जाता है। यह सोचने के बजाए कि अभी के लिए सबसे आसान या सबसे अच्छा क्या है, कि आप अपने 20 साल, या 50 साल, या 100 साल पीछे मुड़कर देखे कि आप ने क्या कुछ करना चाहा होता। इससे चीजों को सम्भावना में रखने की मदद मिलेगी।

नीतिवचन की रूपरेखा

प्रस्तावना: लिखने का उद्देश्य 1:1-7

I. ज्ञान का महत्व 1-9

क- युवाओं के लिए सिद्धांत (सुलेमान द्वारा) 1-7

ख- सभी के लिए सिद्धांत (सुलेमान द्वारा) 8-9

II. कहावतों का ज्ञान

क- ईश्वरीय जीवन के बारे में नीतिवचन (सुलेमान द्वारा) 10-22

ख- लोगों के बारे में नीतिवचन (बुद्धिमान पुरुषों द्वारा) 23-24

ग- रिश्तों के बारे में नीतिवचन (सुलेमान द्वारा) 25-29

III. ज्ञान का दैनिक उपयोग 30-31

क- सभ लोगो की प्रथाएं (आगुर द्वारा) 30

ख- पत्नियों की प्रथाएं (लेमुएल द्वारा) 31

सभोपदेशकः परमेश्वर के बिना जीवन खाली है



शीर्षक: "उपदेशक" (यूनानी)

लेखक: सुलेमान (वृद्ध)

लेखन की तिथि: लगभग 935 ई.पू

लेखन का स्थान: यहूदा

समय शामिल: सुलेमान के बाद के वर्ष

प्राप्तकर्ता: सुलेमान के पुत्र (12:12)

मुख्या आयत : 1:12-14 मैं, उपदेशक, यरूशलेम में इजराइल का राजा था। जो कुछ स्वर्ग के नीचे किया जाता है, उसका अध्ययन करने और बुद्धि से उसका पता लगाने के लिए मैंने स्वयं को समर्पित कर दिया। परमेश्वर ने मनुष्यों पर कितना भारी बोझ डाला है! मैं ने उन सब कामों को देखा है जो सूर्य के नीचे किए जाते हैं; वे सब के सब व्यर्थ हैं, जैसे कि वायु को पकड़ना है। ... 2:11 तौभी जब मैं ने अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, कि यह सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना सा ही था; सूर्य के नीचे कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।

मुख्य शब्द: "बुद्धिमान/ज्ञान" 49 बार; "घमंड/खाली/अर्थहीन" 37x; "सूरज के नीचे" 31x

उद्देश्य: यह दिखाने के लिए कि इस दुनिया में कुछ भी संतुष्टी नहीं दे सकता, सिवाए परमेश्वर के।

विषय: ईश्वर के बिना जीवन और जो कुछ जीवन में है एक खालीपन है।

तुम जीवित क्यों हो? आपके अस्तित्व का उद्देश्य क्या है? वैसे भी जीवन है क्या ? क्या इसका कोई कारण या उद्देश्य है? शेक्सपियर ने कहा था कि जीवन "एक मूर्ख द्वारा बताई गई एक कहानी है, जो ध्वनि और रोष से भरी है, जिसका कोई मतलब नहीं है।" बेंजामिन दिसरेली ने कहा, "जवानी एक गलती है, मर्दानगी एक संघर्ष है और बुढ़ापा एक पछतावा है।" अन्य लोगों ने कहा है: "मनुष्य एक बीमार मक्खी है, जो एक विशाल पहिये पर एक चक्करदार सवारी कर रही है।" "मनुष्य के जीवन का अर्थ सबसे विनम्र कीट से अधिक नहीं है, जो एक विनाश से दूसरे विनाश तक रेंगता है।" "मनुष्य केवल कार्बन और पानी के छोटे-छोटे बुलबुले हैं जो कुछ वर्षों तक रेंगते रहते हैं जब तक कि वे फिर से उन तत्वों में घुल नहीं जाते जिनसे वे बने हैं।" एक लंगड़ और मार्गदर्शक के रूप में परमेश्वर की वास्तविकता के बिना, जीवन खाली और अर्थहीन, अस्थायी और नाजुक है। स्वयं सुलेमान, जो अब तक का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति था, उसने कहा कि जीवन "अर्थहीन" है (1:12-14; 2:11)। वह उस जीवन का जिक्र कर रहा था जो परमेश्वर के बिना है, बिना किसी आध्यात्मिक तत्व के ("सूर्य के नीचे" 2:11)। अनुवादित शब्द "अर्थहीन" (कभी-कभी "खाली" या "शून्य") का अनुवाद वाष्प को संदर्भित करता है, हमारी सांस जो ठंड के दिन बाहर आती है और तुरंत गायब हो जाती है। जीवन की क्या ही उदाहरण है!

यदि परमेश्वर के बिना जीवन इतना खाली है, तो लोग उसके बिना कैसे जी सकते हैं? उत्तर सरल है: स्थानापन्न (इसकी जगह पर किसी और का होना)। कोई भी स्थानापन्न उसकी(परमेश्वर की) जगह नहीं लेता या संतुष्ट नहीं करता है, हाँ वे अस्थायी आशा देते हैं। जब एक चीज काम नहीं करती दिखती है, तो चुनने के लिए कई अन्य होती हैं।

दुनिया का रास्ता (स्थानापन्न)- पुस्तक के पहले भाग में सुलेमान ने 7 विकल्प सूचीबद्ध किए हैं जो काम नहीं करते हैं। सांसारिक ज्ञान कहता है कि यही सब जीवन है, यही सब चीज़ें अर्थ और संतोष लाती हैं। इनमें मौज-मस्ती (कामुकता 2:1-11), काम (मानव श्रम 2:18-23; 4:4-6), अहंकार (मनुष्य का अपना ईश्वर 2:24 - 3:27), गरीबी (4:1-) शामिल है। 3), वैराग्य (9:7-10), धन (भौतिकवाद 4:7-12; 5:10-20; 6:1-12), सामाजिक स्थिति (लोकप्रियता 4:13-16) और धर्म की गतियों से गुजराना (5:1-7) भी शामिल है।

परमेश्वर का मार्ग (वास्तविकता) -सुलेमान ने अपने जीवन के माध्यम से जो सीखा है, वह उसके साथ ही समाप्त करता है: केवल परमेश्वर ही संतुष्ट करता है! ऊपर की ओर जाने वाली ये 7 सीढ़ियाँ अधिक संकरी और चढ़ने में कठिन हैं, जबकि दुनिया का रास्ता चौड़ा और आसान है (नीचे की ओर खालीपन)। हालाँकि, केवल परमेश्वर का ऊपरी मार्ग ही विजय की ओर ले जाता है। ये कदम हैं विनम्रता (बुद्धिमान 7:5-7 से सलाह लेना), परीक्षणों में धैर्य (7:8-10), आत्म-अनुशासन (संसार, शरीर, शैतान 7:19-22 पर काबू पाने के लिए पवित्र आत्मा का फल), सभी बातों में परमेश्वर के प्रति समर्पण (8:1 - 9:12), परमेश्वर में विश्वास (10:1-20), दूसरों की मदद करना (आत्मकेंद्रित नहीं बल्कि अन्य केंद्रित 11:1-8) और आनंद (परमेश्वर की आंतरिक शांति से) 11:9 - 12:7)।

वास्तव में हमारे पास यहाँ जो कुछ है वह परमेश्वर का विश्व दृष्टिकोण बनाम दुनियावी विश्व दृष्टिकोण है। बाइबिल का विश्व दृष्टिकोण कहता है कि जीवन सहित हर चीज का एक कारण और उद्देश्य है। हम यहाँ परमेश्वर और दूसरों की सेवा करने के लिए हैं। यह जीवन ही सब कुछ नहीं है। परमेश्वर का वचन सत्य है और हमें नैतिक और नैतिक क्षेत्रों पर अंतिम पूर्णता प्रदान करता है। इसके विपरीत, दुनिया का 'विश्व दृष्टिकोण' यह है कि मनुष्य सभी चीज़ों में अंतिम अधिकारी है, यह जीवन ही सब कुछ है, सत्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग है, और प्रत्येक व्यक्ति किसी भी तरह से अपनी खुशी खोजने के लिए स्वतंत्र है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इसे 'खाली' कहा जाता है।

आप जीवन को कैसे देखते हैं? आप किस लिए जीते हैं? आपका प्रेरिना स्रोत क्या है ? आप जीवन में अर्थ और उद्देश्य खोजने के लिए क्या करते हैं? जीवन को देखने के मूल रूप से दो तरीके हैं: ईश्वर की बुद्धि से या संसार की बुद्धि से। आप किसका अनुसरण कर रहे हैं?

सभोपदेशक की रूपरेखा

I. समस्या 1-6

क- परमेश्वर के बिना जीवन खाली है 1-2

ख- जीवन उबाऊ है 3क , 4ख

ग- जीवन सही नहीं है 3ख , 4क, 5क

घ- 'चीजें' संतुष्ट नहीं करती हैं 5ख -6

II. समाधान 7-12

क- धन का बुद्धिमानी से उपयोग करें 6

ख- बुद्धिमान बनें 7-8

1. बुद्धिमान जीवन 7

2. बुद्धिमान अगुवा 8

ग- मूर्ख मत बनो 9-10

1. जीवन और मृत्यु 9

2. मूर्ख और मूर्खता 10

घ. विश्वासयोग्य बनो 11-12

1. विश्वास और विश्वास 11

2. सत्य और न्याय 12

बाइबिल अवलोकन 15

विभाजन



मुख्य घटनाएँ: देश का इजराइल और यहूदा नामों में विभाजित होता है

मुख्य लोग: रहबियाम, यरोबाम, एलिय्याह, एलीशा

बाइबल की पुस्तकें: 2 राजा, 1 और 2 इतिहास

बाइबल की आयत : 2 राजा 17:21-22 जब यहोवा ने इजराइल को दाऊद के घराने से दूर किया, तब उन्होंने नबात के पुत्र यरोबाम को अपना राजा बनाया। यरोबाम ने इजराइल को यहोवा के पीछे चलने से बहकाया, और उन से बड़ा पाप कराया।

समय: 930 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएँ:

कार्थेज फोनीशियन द्वारा ग्रीस में प्रथम ओलंपिक खेलों की स्थापना

रोम की स्थापना

होमर इटली में लिखता है

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन

विभाजन

सुलेमान

याकूब

न्यायी

दाऊद

जल्परै

यूसफ, इसहाक

यहोशु शाऊल

| _____ | बाबेलअब्राहाम | मूसा | _____ |

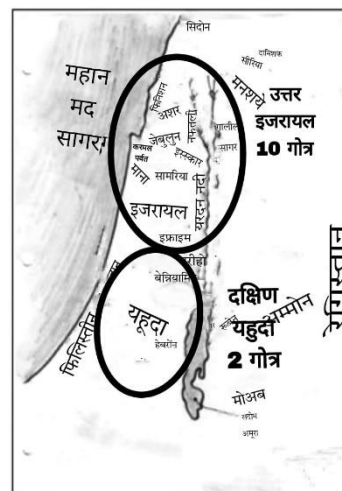
4000 ई. पू.

3000 ई. पू.

2000 ई. पू.

1000 ई. पू.

1 ई. पू.



इस समय अवधि को "विभाजन" कहा जाता है जब राष्ट्र उत्तरी साम्राज्य (इज़राइल, 10 जनजाति से) और दक्षिणी राज्य (यहूदा, 2 जनजाति से) में विभाजित होता है। सुलैमान ने अपनी निर्माण परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए लोगों पर बहुत भारी कर का बोझ डाला था, और जब वह मर गया तो लोगों को राहत की जरूरत थी, लेकिन उसके बेटे रहुबियाम ने राहत देने के बजाए, कर का बोझ अधिक बढ़ा दिया। नतीजे के रूप में, उत्तरी 10 जनजाति अपना राष्ट्र बनाने के लिए अलग हो गईं। उत्तर और दक्षिण में प्रत्येक का अपना राजा और राजधानी थी। कभी-कभी वे आपस में भी युद्ध करते थे। दाऊद के महिमा भरे राज्य का क्या ही दुखद अंत हुआ, और ऐसा होने में केवल 60 वर्ष लगे। उसकी (परमेश्वर की) भलाई और कई आशीषों के बावजूद, आमतौर से मानवजाति और विशेष रूप से यहूदी अभी भी विद्रोह में उससे दूर हो जाते हैं।

इज़राइल - उत्तरी 10 जनजातियाँ का पहला राजा

जेरोबाम, जब सुलैमान की मृत्यु के बाद देश विभाजित हो गया 22 वर्षों तक राजा रहा (1 राजा 11:26-14:20; 2 इतिहास 9:29-13:22)। वह सुलैमान का सेवक था। भविष्यद्वक्ता अहिय्याह ने एक वस्त्र के 12 टुकड़े किए और 10 टुकड़े यारोबाम को दिए, यह दर्शाता है कि सुलैमान के समय के बाद राष्ट्र फट जाएगा और वह 10 उत्तरी गोत्रों पर शासन करेगा। क्योंकि वह मारा नहीं जाएगा, वह इस भविष्यवाणी के नतीजे मिस्र भाग गया था। सुलैमान के मरने पर वह लौटा और रहुबियाम ने कर बढ़ा दिया। उत्तरी 10 जनजातियों / कबीलों ने उसे राजा बनने के लिए कहा। उसने सोने के दो बछड़े बनवाए, ताकि लोग यरूशलेम में, जो दक्षिणी राज्य में थे, पूजा करने ना जाएँ। इस प्रकार उसने उत्तर के लिए एक मूर्तिपूजा का स्वरूप स्थापित किया। उसे कई भविष्यवक्ताओं द्वारा पश्चाताप करने के लिए कहा गया था: अहिय्याह, इहो, एक पुराना गुमनाम भविष्यद्वक्ता और एक अन्य भविष्यद्वक्ता जिसने उनकी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। उसने पश्चाताप नहीं किया और परमेश्वर द्वारा मारा गया और मर गया।

यहूदा - दक्षिणी 2 जनजातियों का पहला राजा

रहूबियाम दक्षिण देश का पहला राजा था और उसने 17 वर्ष तक राज्य किया (1 राजा 11:42-14:31; 2 इतिहास 9:31-12:16)। वह सुलैमान का पुत्र और उत्तराधिकारी था लेकिन क्योंकि उसने अपने पुराने सलाहकारों की सलाह को अस्वीकार कर दिया और अपने युवा मित्रों के सुझावों का पालन किया, उसके लालच ने देश को दो भागों में विभाजित कर दिया। सुलैमान ने लोगों पर भारी कर लगाया था और उन्हें राहत की जरूरत थी लेकिन रहूबियाम ने कर का बोझ अधिक बढ़ा दिया, जिससे दस उत्तरी गोत्र 922 ईसा पूर्व में अलग हो गए। परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता शमायाह ने उसे सलाह दी कि वह उत्तर को रहने के लिए विवश करने की कोशिश ना करे। यहूदा, कुछ बिन्यामीनी और बाद में शिमोन का गोत्र विश्वासयोग्य बने रहे। यरुशलेम उनकी राजधानी रहा। मिस्र ने जल्द ही दक्षिण पर हमला किया, जिसने सुलैमान द्वारा जमा किए गए विशाल धन को छीन लिया। भले ही वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य प्रतीत होते थे, फिर भी उन्होंने बाल पूजा के लिए ऊँचे स्थान बनाए और झुककर पूजा करने के लिए लकड़ी की मूर्तियाँ बनाईं।

2 राजा

न्याय दण्ड



शीर्षक: यहूदा और इजराइल के राजाओं के बारे में

लेखक: अज्ञात (यिर्मयाह?)

लेखन की तिथि: कई वर्षों से

लेखन का स्थान: यहूदा और इजराइल में

समय शामिल: 267 वर्ष (853 - 586 ईसा पूर्व)

प्राप्तकर्ता: यहूदी

मुख्य आयत: 2 राजा 17:7-8, 18-23 यह सब इसलिए हुआ क्योंकि इजराइलीयों ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया था। ... वे अन्य देवताओं की उपासना करते थे, और उन जातियों के कामों पर चलते थे जिन्हें यहोवा ने उनके साम्हने से निकाल दिया था, और वोही काम करते थे जो इजराइल के राजाओं ने करने को कहते थे। तब यहोवा इजराइल से अति क्रोधित हुआ, और उन्हें आपने साम्हने से दूर कर दिया। केवल यहूदा का गोत्र ही रह गया, और यहूदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को ना माना। उन्होंने उन प्रथाओं का पालन किया जिन्हें इजराइल ने पेश किया था।

मुख्य शब्द: "राजा" 340 बार; "भविष्यवक्ता" 31 बार

उद्देश्य: यह दिखाने के लिए कि कैसे और क्यों यहूदा और इजराइल बंधुआई में गए। विषय: परमेश्वर पाप का न्याय करता है।

हर साल हजारों करदाताओं को एक पत्र मिलता है जो इस तरह शुरू होता है: "प्रिय करदाता, आपके रिटर्न को संसाधित करने में, हमें कुछ वस्तुओं के बारे में अधिक जानकारी चाहिए।" लोग सोचते हैं कि वे पकड़े नहीं जाएंगे, इसलिए वे कुछ छिपा सकते हैं। लेकिन कई बार उनके पाप उन पर हावी हो जाते हैं। परमेश्वर के साथ ऐसा नहीं है। सीमाओं की कोई हद नहीं है, और कोई भी पाप करके बच नहीं सकता। एक व्यक्ति आई.आर.एस. से चीजों के साथ बच सकता है, लेकिन परमेश्वर से नहीं!

इजराइल के लिए न्यायदण्ड (अध्याय 1-17)- उनके पाप के कारण, परमेश्वर अपने लोगों को आने वाले न्याय की चेतावनी देता है और उन्हें पश्चात्ताप करने के लिए बुलाता है। एलिय्याह एक ऐसा ही व्यक्ति था। उसने 50 वर्षों तक सेवा की थी और फिर उसे एक जलते हुए रथ पर सवार होकर स्वर्ग में ले जाया गया था।

एलीशा ने एलिय्याह को परमेश्वर के मुख्य दूत के रूप में प्रतिस्थापित किया (अध्याय 2-8)। उसने भी कई चमत्कार किए (जिसमें एक मरे हुए लड़के को वापस ज़िंदा करना भी शामिल है)। एलिय्याह और एलीशा दोनों ने उत्तरी राज्य, इजराइल में सेवा की। उनके समय के 19 राजाओं में से किसी ने भी परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया। दक्षिण में, यहूदा, 20 में से 8 राजाओं ने अपने शासनकाल के कम से कम भाग के लिए परमेश्वर का अनुसरण किया।

एलीशा के प्रभाव में होते हुए यहू राजा (अध्याय 9-10) ने शुरुआत तो सही की, और अहाब के परिवार और प्रभाव से भूमि को साफ कर दिया, लेकिन फिर स्वयं मूर्तिपूजा में गिर गया। अहाब का निष्कासन एक और उदाहरण है कि हम सब "जो बोएंगे वही काटेंगे" (गलातियों 6:7)। "निश्चय रह, कि तेरे पाप तुझे ढूंढ़ निकालेंगे" (गिनती 32:23) अहाब और ईज़ेबेल का उदाहरण है, जो एक भयानक मौत मरे (अध्याय 9)।

बहुत समय पहले एक प्रसिद्ध लोहार था जिसे जेल की कालकोठरी में डाल दिया गया था। वह उस जंजीर की जांच करने लगा जिससे उसे बांधा था ताकि वह बच सके। उसकी आशा व्यर्थ थी क्योंकि उसने उस पर अपना निशान पाया था - उसने इसे बनाया था और यह उसका घमंड था कि कोई भी उस जंजीर को नहीं तोड़ सकता था जिसे उसने बनाया था। अहाब ने अपने ही पाप की जंजीरें बना ली थीं और उनमें फंस गया था। वे भी अटूट थीं। योआश के अधीन, यहूदा परमेश्वर के पास लौट आया (अध्याय 11), परन्तु शीघ्र ही पुनः पतन हो गया (अध्याय 12)। इस बीच, इजराइल परमेश्वर से और दूर हो गया (अध्याय 13)। उज्जिय्याह यहूदा को परमेश्वर के पास वापस ले आया, परन्तु फिर घमण्ड में गिर गया (अध्याय 14-16)। अंत में इजराइल को हटा दिया गया (अध्याय 17)। इजराइल के बचे हुए भक्त यहूदा में चले गए थे, इसलिए बारह गोत्र यहूदा में बने रहे।

यहूदा के लिए न्यायदण्ड (अध्याय 18 - 25)- इजराइल के पतन के बाद लगभग 150 वर्षों तक यहूदा बना रहा। दो सबसे बुरे राजाओं में से एक सबसे अच्छा राजा था - हिजकिय्याह (अध्याय 18-20)। उसके पुत्र, मनश्शे ने अपने बच्चों को बलि के रूप में चढ़ाया (अध्याय 21)। योशिय्याह, उसका बेटा, फिर से विपरीत था, सबसे धर्मी राजाओं में से एक (अध्याय 22), लेकिन यहूदा के अंतिम राजाओं ने बुराई की (अध्याय 24)। अंत में यहूदा को भी हटा दिया गया, और बाबुल द्वारा बंदी बना लिया गया (अध्याय 24 - 25)

कुछ साल पहले यूरोप के पहाड़ी इलाके में पहाड़ से बर्फ का एक हिमस्खलन आया और नदी को ग्रस्त कर दिया। पानी बह नहीं सकता था इसलिए इसने बर्फ के पीछे एक झील बना दी, जिससे इसका बर्फ के बीच फटने और नीचे के गांवों को बर्बाद करने का खतरा था। यह लंबे समय तक चला, और लोगों को झूठी सुरक्षा में फंसाया गया। हालांकि, लंबे इंतजार का मतलब था कि जब वह फटता तो और विनाश होता और वही हुआ। पाप इसी तरह काम करता है।

सच्चाई - बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि परमेश्वर पाप का न्याय करेगा। गलातियों 6:7-8 धोखा न खाओ: परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जा सकता। मनुष्य जो बीजता है वही काटता है। जो अपने पापी स्वभाव को प्रसन्न करने के लिए बोता है, उस स्वभाव से विनाश की फसल काटेगा; जो आत्मा को प्रसन्न

करने के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। नीतिवचन 1:31 वे अपनी चालचलन का फल खाएंगे, और अपनी युक्तियों के फल से भरपूर होंगे। नीतिवचन 5:22-23 दुष्ट के बुरे काम उसको फँसाते हैं; उसके पाप की रस्सियों ने उसे जकड़ रखा है। वह अनुशासन की कमी के कारण मर जाएगा, अपनी ही बड़ी मूर्खता के कारण भटक जाएगा। नीतिवचन 22:8 जो दुष्टता बोता है, वह विपत्ति काटेगा।

परमेश्वर के लोगों को विशेष रूप से पाप से फिरना चाहिए। हमें कोई छूट नहीं हैं, बल्कि हम अधिक जवाबदेह हैं (मत्ती 3:9-10)। "न्याय परमेश्वर के भवन से आरम्भ होता है" (1 पतरस 4:17)। लूका 12:47-48 कहता है, "वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता है, और तैयार न हो, और स्वामी की इच्छा के अनुसार न करे, वह बहुत मार खाएगा, परन्तु जो नहीं जानता, और दण्ड के योग्य काम करता है, वह कम पिटेगा।" जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा, और जिस को बहुत सौंपा गया है उस से बहुत मांगा जाएगा। हम उद्धार को खो नहीं सकते (रोमियों 8:1), परन्तु यह पाप के लिए कोई बहाना नहीं है।

कोलोराडो में एक दिन एक विशाल दृढ़ पेड़ नीचे गिर गया। यह चार सौ साल पुराना था। यह एक पौधा था जब कोलंबस सैन सल्वाडोर में उतरा। यह चौदह बार आसमानी बिजली की चपेट में आ चुका था। इसने चार सौ साल के तूफानों का बहादुरी से मुकाबला किया था। इसने भूकंप और तूफान को हराया था। यह सर्दियों के धमाकों और बर्फ़ीले तूफानों पर हँसी बनाता था जो इसे नष्ट कर देते होते। लेकिन अंत में छोटे छोटे कीड़ों ने उसे मार डाला। वे छाल के नीचे ऊब गए, उसके दिल में खोद दिया, उसके शक्तिशाली रेशे को खा गए और एक दिन जंगल के शक्तिशाली राजा नीचे आए।

2 राजाओं की रूपरेखा

1. इजराइल के लिए न्यायदण्ड 1-17

क- एलिय्याह की मृत्यु 1-2

ख- एलीशा की सेवकाई 3-8क

ग- शत्रुओं का विद्रोह 8ख

घ-येहू का पुनरुद्धार 9

ङ-अहाब का पाप 10

च- यहूदा का पश्चाताप 11

छ - यहूदा की गिरावट 12

ज - इजराइल की गिरावट 13क

झ- एलीशा की मृत्यु 13बी

ञ- इसराइल और यहूदा के पाप में आगे 114-16

ट- इजराइल का निष्कासन 17

II. यहूदा के लिए न्यायदण्ड 18-25

क-हिजकिय्याह का सुधार 18-20

ख-यहूदा का पतन 21

ग -योशिय्याह के सुधार 22

घ -यहूदा का पतन 23

ङ यहूदा का विद्रोह 24

च-यहूदा का हटाया जाना 25 संघर्ष

1 और 2

इतिहास:

विश्वासयोग्यता



शीर्षक: लातीनी वलोट शीर्षक (यहूदियों के लिए सभी 1 पुस्तक)

लेखक: अनेक जन , एज्रा द्वारा संकलित

लेखन की तिथि: बाबुल से लौटने के बाद

लेखन का स्थान: यहूदा

समय शामिल : आदम से साइरस तक (536 ईसा पूर्व)

प्राप्तकर्ता: बाबुल से वापस आए यहूदी

प्रमुख पद: 1 इतिहास 17:10

और जैसे किया है, जब से मैं ने अपनी प्रजा इजराइल पर प्रधानों को नियुक्त किया है। मैं तुम्हारे सब शत्रुओं को भी दबा दूँगा। "मैं तुम से कहता हूँ, कि यहोवा तुम्हारे लिए एक भवन बनाएगा;

मुख्य शब्द: दाऊद (180 बार, हैकल और परमेश्वर का घर (148 बार), पुजारी (80 बार)

उद्देश्य: आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इजराइल के इतिहास को दिखाना, हैकल के महत्व को दिखाना और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना जो हमेशा उनके प्रति विश्वासयोग्य रहा है।

विषय: परमेश्वर की विश्वासयोग्यता।

दूसरों के प्रति वफादारी को आज एक महत्वपूर्ण गुण के रूप में नहीं देखा जाता है। सब कुछ हमें केवल अपने प्रति वफादार होना, अपनी जरूरतों और चाहतों को पहल पर रखना, स्वार्थ और आत्म-केन्द्रितता को एक सद्गुण बनाना सिखाता है। साथी, परिवार, नौकरी, देश, पसंदीदा खेल टीम, आदि के प्रति वफादारी तभी तक रहती है जब तक यह लाभदायक होती है। जब चीजें कठिन हो जाती हैं तो लोग तेजी से आगे बढ़ने लगते हैं। सौभाग्य से परमेश्वर ऐसा नहीं है। 1 और 2 इतिहास यही साबित करता है।

मूल रूप से इब्रानी धर्म में एक पुस्तक, इतिहास मूल रूप से 1 और 2 शमूएल और 1 और 2 राजा जैसी ही जानकारी को शामिल करती है, लेकिन एक अलग दृष्टिकोण से। जबकि वे मानवीय दृष्टिकोण से नागरिक और राजनीतिक घटनाओं को दिखाते हैं, इतिहास इसे परमेश्वर के दृष्टिकोण से दिखाती है। उदाहरण के लिए, 1 शमूएल 31 अध्याय मनुष्य के दृष्टिकोण से शाऊल की मृत्यु के बारे में बताता है - वह कैसे मरा।

1 इतिहास 10 भी वोही कहानी कहता है, लेकिन ईश्वरीय दृष्टिकोण से - परमेश्वर ने कैसे और क्यों उसे हटा दिया। 1 और 2 शमूएल और 1 और 2 राजा दिखाता है कि मनुष्य कैसे बेवफा है, लेकिन 1 और 2 इतिहास दिखाता है कि परमेश्वर कैसे विश्वासयोग्य है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मनुष्य कैसा है (व्यवस्थाविवरण के विषय के समान)।

यहूदा के राजाओं की सूचियाँ (1 इतिहास 1 - 9) आदम से बेबीलोन की बन्धुवाई तक की वंशावली के बारे में बताती हैं। यह स्त्री के वंश से एक मसीहा भेजने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पूर्ति को दर्शाता है (उत्पत्ति 3:14-15) जैसा कि परमेश्वर ने वादा किया था। वह यह साबित करने के लिए आधार तैयार करता है कि यीशु ही वह मसीहा है (मत्ती 1, लूका 3)। विशेष रूप से यह भाग अब्राहाम (उसके वंश से कई राष्ट्र निकले थे), दाऊद (जिसके वंशज यहूदा पर शासन करते थे) और सभी के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को दर्शाता है, क्योंकि परमेश्वर सभी को नाम से जानता और याद रखता है।

यहूदा के राजाओं के जीवन (1 इतिहास 10 - 2 इतिहास 36) में दाऊद के वंश के राजाओं, विशेष रूप से धर्मी राजाओं की कुछ झलकियाँ मिलती हैं।

यह भाग दाऊद के यरुशलेम को सन्दूक लौटाने और उसके साथ हुई सारी स्तुति और आराधना के साथ आरम्भ होता है (1 इतिहास 10-16)। बतशेबा के साथ दाऊद के पाप का उल्लेख इतिहास में नहीं है, इसे क्षमा कर दिया गया है और हटा दिया गया है। ध्यान परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर है, न कि मनुष्य की अविश्वासयोग्यता पर। दाऊद के लिए परमेश्वर के वादों की फिर से पुष्टि की जाती है, यह कहते हुए कि परमेश्वर दाऊद के वंशजों को मसीहा के आने तक राज वंश के रूप रखने के अपने वादे को ईमानदारी से पूरा करेगा (1 इतिहास 17-21)। मन्दिर के लिए दाऊद की तैयारियाँ भी विस्तृत हैं (1 इतिहास 22-27), और इसी प्रकार सुलैमान द्वारा मन्दिर का निर्माण भी (2 इतिहास 1-9)। इन अध्यायों में मंदिर के बारे में बहुत कुछ है क्योंकि यह परमेश्वर के साथ लोगों का मेल मिलाप है। यह उन्हें याद दिलाता है कि जो कुछ भी उनके पास है वो परमेश्वर ही की ओर से आया है और ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे वे अर्जित करते हैं या अर्जित करने के योग्य हैं।

मंदिर मनुष्य के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता के उतर में मनुष्य का परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना उचित बताता है। यह सिर्फ एक इमारत ही नहीं है, यह जीवन शैली है!

जब राष्ट्र विभाजित होता है, तो इतिहास केवल दक्षिणी गोत्र, यहूदा के राजाओं का ही जिक्र करता है। बेवफा उत्तरी भाग को छोड़ दिया जाता है। वहाँ से सच्चे विश्वासी दक्षिण की ओर चले गए, इसलिए दक्षिणी राज्य में धर्मी लोगों के गिने चुने लोग थे, जो सभी 12 गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे। यहूदा के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता उसके द्वारा अबिव्याह को यारोबाम (2 इतिहास 13), आसा को कूशियों को पराजित करने (14), मोआबियों को पराजित करने वाले यहोसोफत (20) और सन्हेरीब (31) से हिजकिय्याह के छुटकारे को सक्षम करने में दिखाई देती है। यहूदियों की पुनरुद्धार की प्रतिक्रिया (15) और मंदिर की मरम्मत और परमेश्वर के पास लौटने पर हर बार जब किसी दुष्ट राजा ने उन्हें भटका दिया था (23-24, 30, 35) उस के (परमेश्वर) प्रति विश्वासयोग्यता की प्रतिक्रिया दिखाता है। दुर्भाग्य से उनकी

बेवफाई के समय अधिक थे और अंततः परमेश्वर ने बाबुलियों को उन्हें बंदी बना लेने दिया। फिर भी परमेश्वर विश्वासयोग्य था, शेष लोगों को बचा रहा था और भविष्य में छुटकारे और बहाली की प्रतिज्ञाएँ दे रहा था।

येलोस्टोन नेशनल पार्क में "पुराना विश्वासयोग्य" एक प्रसिद्ध गीज़र है। यह 150 फीट हवा में 10 से 12 हजार गैलन उबलते पानी को गर्म करता है। अन्य गीज़र हैं जो अधिक पानी भेजते हैं और इससे अधिक मात्र में भेजते हैं। फिर, यह क्यों इसको अधिक महानता दी जाती है और इसमें दिलचस्पी दिखाई जाती है? यह इसकी 'वफादारी' के कारण है- हर 65.5 मिनट में यह फट जाता है। इसे गिना जा सकता है। कोई नहीं जानता कि दूसरे कब फूटेंगे। परमेश्वर ऐसा ही है -- पूरी तरह भरोसेमंद और सुसंगत। हम हमेशा उस पर भरोसा कर सकते हैं। वह मूल रूप से "पुराना वफादार" है। परमेश्वर चाहता है कि हम बदले में उसके प्रति विश्वासयोग्य होने के द्वारा हम पर उसकी विश्वासयोग्यता का उतर दें। आपके प्रति उसकी विश्वासयोग्यता के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें। "मनुष्य का विश्वासयोग्य होना अवश्य है" (1 कुरिन्थियों 4:2)।

इतिहास की रूपरेखा

I. यहूदा के राजाओं की सूची 1 इतिहास। 1-9

क- राजशाही वंशावली 1-4

ख- संबंधित वंशावलीया 5-9

II. यहूदा के राजाओं के जीवन 1 इतिहास। 10-19; 2 इतिहास। 1-26

क- दाऊद का सिंहासन 1 इतिहास। 10-29

1. परमेश्वर का सन्दूक 10-16

2. परमेश्वर की वाचा 17-21

3. परमेश्वर का मंदिर 22-27

4. दाऊद का संदेश 28-29

ख- सुलैमान का मंदिर 2 इतिहास। 1-9

1. सुलैमान का मन्दिर 1-5

2. सुलैमान की उपासना 6-9

ग- यहूदा की त्रासदी=य 2 इतिहास। 10-26

1. पतन (विभजत साम्राज्य) 10-11

2. बेदारी और पतन (दक्षिणी साम्राज्य) 12-26

बाइबिल अवलोकन 16

भविष्यद्वक्ता

भविष्यद्वक्ता



जो बोते हो वो काटो

मुख्य घटनाएँ: भविष्यवक्ता चेतावनी देते हैं और प्रोत्साहित करते हैं

मुख्य लोग:

- उत्तर की लिए (इज़राइल): होशे, आमोस, (एलोया, एलीशा)
- दक्षिण की लिए (यहूदा): योएल, यशायाह, मीका, सपन्याह, हबक्कूक
- नीनवे के लिए (अश्शूर) : योना, नहूम
- एदोम के लिए : ओबद्याह

बाइबल की पुस्तकें: ऊपर लिखी गई

बाइबिल आयत: यशायाह 59:20 " जो याकूब में है और अपने पापों से मन फिराते हैं, उनके लिये सिय्योन में एक छुड़ानेवाला आएगा," यहोवा की यही वाणी है।

समय: 931-586 ईसा पूर्व

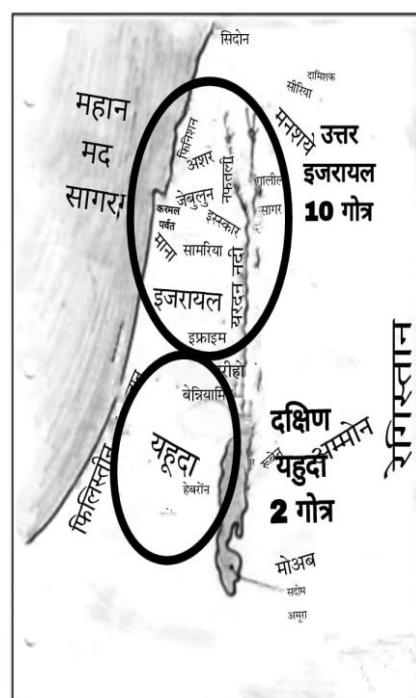
इस समय की विश्व घटनाएँ:

भारत में महाभारत और रामायण और उपनिषदों की रचना की गई

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन

बाइबिल के इतिहास में इस लंबे लेकिन दुखद समय को भविष्यद्वक्ताओं का समय कहा जाता है क्योंकि परमेश्वर ने इन धर्मी पुरुषों को अपने लोगों तक पहुँचने और उन्हें वापस अपने पास लाने की कोशिश करने के लिए इस्तेमाल किया। यह वह समय था जब 19 दुष्ट राजाओं ने इज़राइल (उत्तरी 10 गोत्रों) पर शासन किया और 20 राजाओं (केवल 8 को छोड़ जो पूरी तरह से दुष्ट नहीं थे) ने यहूदा (दक्षिणी 2 गोत्रों) पर शासन किया। भविष्यवक्ताओं ने अनाज्ञाकारिता के लिए आने वाले न्यायदण्ड के बारे में चेतावनी दी, पर भविष्य में इज़राइल की बहाली की आशा भी दी जब वे लोग परमेश्वर को आपने राजा के रूप में पहचानेंगे। जबकि इस समय के दौरान अधिकांश लोग, विशेष रूप से उत्तर में, परमेश्वर का अनुसरण नहीं करते थे, हमेशा एक न एक विश्वासयोग्य अवशेष था ही जो उसके (परमेश्वर के) प्रति सच्चा बना रहा।

विभाजन				
सुलेमान				
याकूब		न्यायी		दाऊद
जल्परें		यूसफ, इसहाक		यहोशु शाऊल
_____		बाबेलअब्राहाम		_____
मूसा				
4000 ई. पू.	3000 ई.पू.	2000ई. पू	1000ई. पू	1 ई. पू



इजराइल के राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं से मिलें (उत्तर)



क्या परमेश्वर अपने लोगों के बीच पाप का न्याय करता है? वह जरूर करता है। वह विश्वास किये जाने से भी अधिक धैर्यवान है, लेकिन उसकी पवित्रता के मानकों को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। इजराइल का इतिहास, उत्तरी 10 गोत्र, यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है। हम उस समय के राजाओं और भविष्यवक्ताओं के एक त्वरित अवलोकन को देखेंगे। परमेश्वर द्वारा भेजे गए कई भविष्यद्वक्ता थे, नीचे सूचीबद्ध केवल वही हैं जो बाइबल में दर्ज हैं।

जेरोबाम-22 वर्षों तक राजा रहा जब सुलैमान की मृत्यु के बाद देश विभाजित हो गया था (1 राजा 11:26-14:20; 2 इतिहास 9:29-13:22)। वह सुलैमान का सेवक था। भविष्यद्वक्ता अहिय्याह ने एक वस्त्र के 12 टुकड़े किए और 10 टुकड़े यारोबाम को दिए, जो यह दर्शाता है कि सुलैमान के समय के बाद राष्ट्र फट जाएगा और वह 10 उत्तरी गोत्रों पर शासन करेगा। क्योंकि वह इस भविष्यवाणी के कारण मारा नहीं जाएगा, वह मिस्र भाग गया। सुलैमान के मरने पर वह लौटा और रहूबियाम ने कर/टैक्स बढ़ा दिया। उत्तरी 10 कबीलों ने उसे राजा बनने के लिए कहा। उसने सोने के दो बछड़े बनवाए, ताकि लोग यरूशलेम में, जो दक्षिणी राज्य में था, आराधना करने न जाएँ। इस प्रकार उसने उत्तर के लिए एक मूर्तिपूजा का स्वरूप स्थापित किया। उसे कई भविष्यवक्ताओं द्वारा पश्चाताप करने के लिए कहा गया था: अहिय्याह, इहो, एक पुराना गमनाम भविष्यद्वक्ता और एक अन्य भविष्यद्वक्ता जिसने उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। उसने पश्चाताप नहीं किया और परमेश्वर द्वारा मारा गया और वह मर गया।

नादाब -यारोबाम के पुत्र 2 वर्ष तक राजा रहा (1 राजा 15:25-28)। वह एक दुष्ट राजा था और बाशा ने उसकी हत्या कर दी थी जो उसका उत्तराधिकारी बना।

बाशा-अहिय्याह का पुत्र, जिसने वस्त्र के 12 टुकड़े किए, वह 24 वर्ष तक राजा रहा (1 राजा 24:27-16:7; 2 इतिहास 16:1-6)। उसने नादाब और राजघराने के सभी लोगों को मार डाला। उसने उत्तर को दक्षिण, (यहूदा) के साथ युद्ध करने में नेतृत्व किया।

एला- बाशा के पुत्र ने 2 वर्ष तक शासन किया (1 राजा 16:6-14)। जैसा कि उत्तर के सभी राजाओं के बारे में सच रहा, वह भी दुष्ट था और उसने कभी भी परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया। एला विशेष रूप से दुष्ट था और शराब के नशे में उसकी हत्या कर दी गई थी।

जिम्मी- ने एला को मार डाला और स्वयं राजा बन गया (1 राजा 16:9-20)। वह रथों का कप्तान था और उसने केवल 7 दिनों तक शासन किया था। ओम्री ने उस पर आक्रमण किया और उसमें उसके साथ राजा के भवन को भी जला दिया।

ओमरी - सेनापति, जिसने जिम्मी को मार डाला, उसने 12 वर्षों तक शासन किया (1 राजा 16:15-28)। उसने सामरिया को बसाया और उसे उत्तर की राजधानी बनाया। उसके पास अच्छी दृष्टि और बुद्धि थी, लेकिन उसने परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया। उसने अपना बहुत सा क्षेत्र सीरिया के हाथों खो दिया।

तिब्नी- ने उसी समय के दौरान शासन किया जैसे ओमरी ने और सिंहासन से आगे निकलने की कोशिश की लेकिन इसे हार बैठे।

अहाब -ओम्री के पुत्र ने अपने पिता का अनुसरण किया और 22 वर्षों तक शासन किया (1 राजा 16:28-22:43; 2 इतिहास 18:1-34)। वह एक सक्षम अगुवा और अभिलाषी निर्माता था, लेकिन उसने परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया। वह इजराइल के सबसे बुरे राजाओं में से एक था (1 राजा 16:29-33)। ईजेबेल, एक दुष्ट गैर-यहूदी स्त्री जो बाल की पूजा करती थी, उसने अहाब से शादी की और उस पर प्रभावी हो

गई, और उसे और भी अधिक बुराई के लिए प्रभावित किया (1 राजा 21:25-26)। परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी देने के लिए एलियाह को भेजा परन्तु उन्होंने उसे जन से मारने का प्रयास किया। लेकिन बजाए इसके, वे परमेश्वर के न्याय के अधीन मर गए।

अहज्याह- अहाब के पुत्र ने उसके बाद 2 वर्ष तक शासन किया (1 राजा 22:40-2 राजा 1:18; 2 इतिहास 20:35-37)। उसने अपनी माँ ईज़ेबेल के मूर्तिपूजक प्रभाव का अनुसरण किया। उसने एलियाह को मारने की कोशिश की लेकिन उसके सैनिक आग से नष्ट हो गए। उसने यहूदा के साथ गठबन्धन किया, परन्तु परमेश्वर ने इसका नाश किया क्योंकि वे उसके पीछे नहीं चल रहे थे। एलियाह ने उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी की, जो तब हुई जब वह एक जाली/खिड़की से गिर गया।

योराम-अहाब और ईज़ेबेल का एक और पुत्र था, जिसने अगले 12 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 3:1-9:25; 2 इतिहास 22:5-7)। वह बहुत दुष्ट था, लेकिन उसने बाल की पूजा पर कुछ हद तक रोक लगा दी। जब अरामियों ने आक्रमण किया, एलीशा ने कहा कि परमेश्वर उसे छुटकारा देगा और उसने किया। वह यहूद द्वारा मारा गया और उसका शव नाबोत की दाख की बारी में फेंक दिया गया, इस प्रकार भविष्यवाणी पूरी हुई और अहाब की दुष्ट रेखा समाप्त हो गई।

येहू - को एलीशा भविष्यद्वक्ता द्वारा राजा के रूप में अभिषिक्त किया गया था और उसने 28 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 9:1-10:36; 2 इतिहास 22:7-12)। वह एक भ्रष्ट व्यक्ति था जिसने देश को कमजोर कर दिया था। उसने अहाब के परिवार में उसके सत्तर पुत्रों और उसके सभी सलाहकारों सहित हर किसी को नष्ट कर दिया। उसने ही ईज़ेबेल को खिड़की से बाहर फेंक कर मार डाला था। उसने इजराइल में बाल की उपासना को मिटा दिया और परमेश्वर की उपासना करने का दावा किया लेकिन सोने के बछड़ों को पूजा के पत्रों के रूप में छोड़ दिया। उसने परमेश्वर की आज्ञा ना मानी। युद्ध में उसने सीरियाई लोगों के हाथ बहुत सी भूमि खो बैठा।

यहोआहाज -येहू का पुत्र था और 17 वर्ष तक राजा रहा (2 राजा 13:1-9)। उसका शासन विनाशकारी था। सीरिया ने इजराइल पर शासन किया इसलिए वह मदद के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ा, लेकिन जब परमेश्वर ने उन्हें छोड़ा तो वह मूर्तिपूजा में लौट आया।

योआश (यहोआश भी कहलाता है)- यहोआहाज का पुत्र था और उसने 16 वर्ष तक शासन किया (2 राजा 13:10-14:16; 2 इतिहास 25:17-24)। राष्ट्र उसके शासनकाल के दौरान अरामियों से मुक्त हो गया था लेकिन वह आध्यात्मिक रूप से दिवालिया हो गया था और आपने से पहले वाले राजाओं के बुरे कार्यों में लगातार बना रहा।

यारोबाम 2 -योआश के पुत्र ने 41 वर्ष तक शासन किया (2 राजा 14:23-29)। उसने सीरिया को खोई हुई भूमि को पुनः प्राप्त कर लिया। लोग गरीब और शोषित थे। बेईमानी और लालच हर जगह था। आराधना करना एक पाखंड था।

होशे, आमोस और योना इस समय के दौरान जीवित थे और सेवकाई कर रहे थे। योना ने लोगों परमेश्वर का संदेश देने के लिए नीनवे, अश्शूर की यात्रा की। आमोस यहूदा में एक चरवाहा था जिसे परमेश्वर ने मूर्तिपूजा, लालच, भ्रष्टाचार और गरीबों का उत्पीड़न करने पर लोगों की निंदा करने के लिए उत्तर की तरफ भेजा था। वह बहुत साहसी और विश्वासयोग्य था। होशे उच्च वर्ग का एक सदस्य था जो परमेश्वर के प्रति गहराई से समर्पित था और गोमेर नाम की एक वेश्या जो उसके प्रति बेवफा थी उससे शादी करके उसका (परमेश्वर का) संदेश रूपी जीवन जी रहा था। इसके बावजूद भी उसने उसे अपनी पत्नी के रूप में वापस खरीद लिया, जो परमेश्वर और उसके विद्रोही लोगों की एक तस्वीर है।

जकर्याह- येहू के घराने से शासन करने वाला अंतिम था और उसने केवल 6 महीने तक ही शासन किया (2 राजा 14:29-15:12)। वह यारोबाम द्वितीय का पुत्र था और शल्लूम द्वारा उसकी हत्या कर दी गई थी।

शल्लूम- दुष्ट राजाओं की एक लंबी लाइन में, केवल 1 महीने तक शासन करने वाला

था (2 राजा 15:10-15) जिसको बदले में मनहेम द्वारा कत्ल कर दी गया था।

मनहेम- एक सेनापति, जिस ने 10 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 15:14-22)। वह एक क्रूर, दुष्ट आदमी था।

पकह्याह - मनहेम के पुत्र ने दो वर्ष तक शासन किया (2 राजा 15:22-26)। वह दुष्ट था और देश को मूर्तिपूजा की ओर लेजाने का काम करता रहा। उसके सेनापति पेकह ने उसे कत्ल कर डाला था।

पेकह- एक सैन्य नेता, जिस ने 20 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 15:27-31; 2 इतिहास 28:5-8)। उसने इजराइल में मूर्ति पूजा जारी रखी। परमेश्वर ने उसका उपयोग यहूदा को अनुशासित करने के लिए किया। परमेश्वर ने इजराइल से बहुत सी भूमि लेने और बदले में उन्हें अनुशासित करने के लिए अशशूर का भी उपयोग किया। उसके शासनकाल में आधा राष्ट्र मारा गया या नष्ट कर दिया गया। होशे द्वारा उसकी हत्या कर दी गई थी

होशे- इजराइल के 19वें और अंतिम राजा ने 9 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 15:30-17:6)। वह दुष्ट था, लेकिन पिछले राजाओं जितना बुरा नहीं था। उसने आधिकारिक तौर पर मूर्तिपूजा को मंजूरी नहीं दी, लेकिन उसने मूर्तियों को हटाया भी नहीं। वह अशशूर द्वारा नियंत्रित एक कठपुतली राजा बन गया जब तक कि उसने उनके खिलाफ विद्रोह नहीं किया। वह हार गया और कैद हो गया। राष्ट्र को असीरिया द्वारा बंदी बना लिया गया था।

कई वर्षों तक उत्तर में रहने वाले परमेश्वर के विश्वासी दक्षिण में चले गए थे, इसलिए प्रभाव में दक्षिण, यहूदा, वहाँ रहने वाले सभी बारह गोत्रों के ईश्वरीय अवशेष के साथ वास्तविक राष्ट्र बन गया। दुर्भाग्य से वे भी परमेश्वर से दूर हो गए।

यहूदा (दक्षिण) के राजाओं और नबियों से मिलें

उत्तरी राज्य, इजराइल में 19 राजा थे, सभी बुरे थे, और अशशूर की बंधुआई में ले जाएंगे थे, जो कभी वापस न लौटने वाले थे। दक्षिणी, यहूदा के कुछ राजा थे जो अच्छे या कुछ रूप से अच्छे थे। वे इजराइल से अधिक समय तक जीवित रहे परन्तु अन्त में वे अपने पाप और अनाज्ञाकारिता के कारण बाबेल की बन्धुआई में चले गए।

रहूबियाम- दक्षिण देश का पहला राजा था और उसने 17 वर्ष तक शासन किया (1 राजा 11:42-14:31; 2 इतिहास 9:31-12:16)। वह सुलेमान का पुत्र और उत्तराधिकारी था, लेकिन क्योंकि उसने अपने पुराने सलाहकारों की सलाह को अस्वीकार कर दिया और अपने युवा मित्रों के सुझावों का पालन किया, उसके लालच ने देश को दो भागों में बांट दिया। सुलेमान ने लोगों पर भारी कर लगाया था और जब उन्हें राहत की जरूरत थी, लेकिन रहूबियाम ने कर का बोझ बढ़ा दिया, जिससे दस उत्तरी गोत्र 922 ईसा पूर्व में दूर हो गए। परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता शमायाह ने उसे सलाह दी कि वह उत्तर को रहने के लिए विवश करने की कोशिश न करे। यहूदा के लोग, कुछ बिन्यामीन और बाद में शिमोन के गोत्र के कुछ विश्वासयोग्य बने रहे। यरुशलम उनकी राजधानी रहा। मिस्र ने जल्द ही दक्षिण पर हमला किया, जिसने सुलेमान द्वारा

जमा किए गए विशाल धन को छीन लिया। भले ही वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य प्रतीत होते थे, फिर भी उन्होंने बाल पूजा के लिए ऊँचे स्थान बनाए और झुककर पूजा करने के लिए लकड़ी की मूर्तियाँ बनाईं।

अबिय्याम - रहूबियाम का पुत्र और अबशालोम का पोता जिसने तीन वर्ष तक शासन किया (1 राजा 14:31-15:8; 2 इतिहास 13:1-22)। उनकी चौदह पत्नियाँ, बाईस बेटे और सोलह बेटियाँ थीं। इडो नबी ने उसकी सेवा की।

आसा -अबिय्याम के पुत्र ने 41 वर्षों तक शासन किया (1 राजा 15:8-24; 2 इतिहास 14:1-16:14)। उसके शासन के पहले दस साल शांतिपूर्ण थे और उसने बनाई हुयी मूर्तियों को हटा दिया।

अजर्याह नबी ने उसे परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया और उसने ऐसा ही किया। कूशियों ने आक्रमण किया और परमेश्वर ने उनकी रक्षा की। परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय, उन्होंने सीरियाई लोगों को इजराइल से लड़ने में मदद करने के लिए भुगतान किया था।

हनानी नबी ने उसे ऐसा करने के लिए डांटा, इसलिए आसा ने उसे जेल में डाल दिया। उसे पैर का रोग हो गया और वह परमेश्वर की ओर ना मुड़ा, इसलिए दो साल बाद उसकी मृत्यु हो गई। उनका शासन ज्यादातर तो अच्छा था लेकिन पूरी तरह से अच्छा नहीं था।

यहोशापात - आसा के पुत्र ने 25 वर्ष तक शासन किया (1 राजा 22:41-50; 2 इतिहास 17:1-20:37)। वह परमेश्वर के लिए अच्छे हृदय वाला एक धर्मी राजा था। उसने मूर्तिपूजा पर हमला किया और लोगों को परमेश्वर के बारे में सिखाने के लिए शिक्षकों को भेजा। जब उसे अपने शत्रुओं से खतरे का सामना करना पड़ा तो वह परमेश्वर की ओर मुड़ा और उसकी सहायता प्राप्त की। उसने न्याय और निष्पक्षता के परमेश्वर के उच्च स्तरों को पुनर्स्थापित किया। हालाँकि, उसकी गलती यह थी कि उसने अपने बेटे की शादी अहाब और ईज़ेबेल की बेटी से की, क्योंकि वह बहुत दुष्ट थी।

यहोराम -यहोशापात का पुत्र था और 8 वर्ष तक राजा रहा (2 राजा 8:16-24; 2 इतिहास 21:1-20)। उसने एक भक्त राजा के रूप में शुरुआत की लेकिन उसकी पत्नी, अतल्याह, अहाब और ईज़ेबेल की बेटी, ने उसे पाप में डाल लिया। जब अहाब का पूरा परिवार नष्ट हो गया तब येहू ने उसे मार डाला।

अहज्याह -ने केवल एक वर्ष राज्य किया (2 राजा 8:24-9:29; 2 इतिहास 22:1-9)। वह योराम का पुत्र और अहज्याह का भतीजा था। जब वह 22 वर्ष का था, तब वह राजा बना, लेकिन वह बहुत दुष्ट था, अपनी दुष्ट माँ अतल्याह से प्रभावित था। वह भी येहू के द्वारा मारा गया।

अतल्याह -ने स्वयं पूजा के लिए शासन किया और मंदिर के कुछ हिस्से को नष्ट कर दिया। महायाजक यहोयादा ने योआश को राजा घोषित किया और उसे मार डाला था।

योआश -अहज्याह का पुत्र था और उसने 40 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 11:1-12:21; 2 इतिहास 22:10-24:27)। वह सात वर्ष का था जब वह राजा बना। वह दाऊद का एकमात्र वंशज था जिसे मार डाला नहीं गया था, और ऐसा इसलिए है क्योंकि वह छिपा हुआ था। उसने मंदिर की मरम्मत की और परमेश्वर की आराधना को बहाल किया। उसने बाल पूजा को नष्ट कर दिया। उसके सलाहकार, यहोयादा ने उसे परमेश्वर के निकट रखा। जब यहोयादा की मृत्यु हुई, योआश मूर्तिपूजा में बह गया।

जकर्याह भविष्यद्वक्ता - को, उसे डांटने के कारण, पत्थरवाह किया गया। जब सीरिया ने आक्रमण किया तो वह घायल हो गया, फिर मर गया।

योएल- भविष्यद्वक्ता इस समय के दौरान भी जीवित रहा। वह यरूशलेम का नागरिक था, शायद एक याजक जो मन्दिर में उपदेश करता था।

अमस्याह, योआश का पुत्र 29 वर्षों तक राजा रहा (2 राजा 11:1-12:21; 2 इतिहास 22:10-24:27)। उसने व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर का अनुसरण तो किया लेकिन उसने मूर्तिपूजा की अनुमति दे दी। उसने एदोम पर बड़ी जीत हासिल की थी लेकिन फिर वह उनके देवताओं को भी ले आया। उसने इस जीत पर गर्व किया और फिर इजराइल पर हमला किया लेकिन हार गया। यह उसकी मूर्तिपूजा के लिए उस पर परमेश्वर का न्यायदण्ड था।

ओबद्याह भविष्यद्वक्ता एदोम को उनका दण्ड सुनाने को गया, क्योंकि उन्होंने यरूशलेम पर उसके संकट के समय चढ़ाई की थी।

अजर्याह (उज्जियाह) अमस्याह का एक पुत्र जो 16 वर्ष की आयु में राजा बना, उसने 52 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 15:1-7; 2 इतिहास 26:1-13)। उसने अपने से पहले सब राजार्यों से अधिक समय तक शासन किया। कभी उसने अपने पिता के साथ शासन किया, फिर बाद में अपने बेटे के साथ। वह एक बुद्धिमान, पवित्र, शक्तिशाली राजा था जिसने यहूदा के क्षेत्र को बढ़ाया और इसमें समृद्धि लाया। उसने यरूशलेम को सुदृढ़ किया और एक शक्तिशाली सेना बना ली। वह आध्यात्मिक रूप से संवेदनशील था और एक भविष्यद्वक्ता के माध्यम से परमेश्वर की इच्छा और मार्गदर्शन का अभिलाषी था। हालाँकि उसके साथ गर्व करने की समस्या थी और वह खुद को एक देवता के रूप में देखता था, जैसा कि मूर्तिपूजक राजा करते थे। एक बार वह अगरबत्ती जलाने के लिए मंदिर में दाखिल हुआ और जब याजकों ने उसे रोका तो वह क्रोधित हो गया। उसने इसके लिए पश्चाताप ना किया इसलिए परमेश्वर ने उसे कुष्ठ रोग से मारा और उसे अपना शेष जीवन सभी से अलग होकर रहना पड़ा। यशायाह और मीका ने इस समय के दौरान ने सेवा की। मीका एक देहाती लड़का था जो ग्रामीण जीवन की छवियों का इस्तेमाल करता था।

योताम अजर्याह का पुत्र 16 वर्षों तक राजा रहा (2 राजा 15:32-38; 2 इतिहास 27:1-9)। वह एक धर्मी राजा था, लेकिन प्रजा मूर्तिपूजा में ही लगी रही। उसने यरूशलेम और अन्य स्थानों का निर्माण किया, अम्मोनियों को पराजित किया, और समृद्ध हुआ क्योंकि वह परमेश्वर पर निर्भर रहता था।

यशायाह, मीका और होशे ने उसके शासनकाल में सेवा की और उसे प्रोत्साहित किया।

आहाज, योताम के पुत्र ने 16 वर्ष तक शासन किया (2 राजा 16:1-20; 2 इतिहास 28:1-27)। वह अधर्मी था और मोलेक की पूजा करने को, मूर्तिपूजक संस्कारों को और मानव बलि को बढ़ावा देता था। उसने बाल की मूर्तियाँ बनाई और अपने बच्चों को जला दिया। उस पर इजराइल और अन्य पड़ोसी देशों ने हमला किया जिसमें 120,000 मारे गए थे और 200,000 बंदी बना लिए गए थे। वह पलिशतियों और दमिश्क से हार गया और मारा गया, और बिना किसी सम्मान के दफनाया गया, क्योंकि वह शाही कब्रों के योग्य नहीं था।

यशायाह, मीका और ओबेद ने उसके शासनकाल में सेवा की और उसे प्रोत्साहित किया।

हिजकियाह, आहाज के पुत्र ने 29 वर्ष तक शासन किया (2 राजा 18:1-20:21; 2 इतिहास 29:1-32:33)। वह एक बहुत ही दुष्ट पिता का एक बहुत ही धर्मी पुत्र था। उसने मंदिर को फिर से खोल दिया और याजकीय सेवाओं को पुनर्जीवित किया। ऊँचे स्थान और पीतल का साँप नष्ट कर दिए गए थे। यहूदा के इतिहास में यह सबसे बड़ी बेदारी का समय था। इस समय के दौरान उत्तर अशूर के लिए बंदी बना

लिया गया, लेकिन उत्तर में दस गोत्रों में से प्रत्येक के धर्मी यहूदियों के बचे हुए दक्षिण चले गए, जिससे दक्षिण फिर से एक पूर्ण राष्ट्र बन गया। जब उसने एक गैर-यहूदी राजा को अपना धन दिखाया तो यशायाह ने उसे डाँटा। उसे एक गंभीर बीमारी लगी, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें जीवन के पंद्रह वर्ष ओर देने का वादा किया था। उसने अशशूर के अधिकार के विरुद्ध विद्रोह किया और उनके द्वारा हमले अधीन आ गया, पर यहोवा के दूत ने 185,000 अशशूरियों को मार डाला। यशायाह और मीका ने उसके शासनकाल में सेवा की और उसका हौसला बढ़ाया।

मनश्शे, हिजकिय्याह के पुत्र ने 55 वर्ष तक शासन किया, जो किसी भी अन्य इसरायली राजा से अधिक समय का शासन था (2 राजा 21:1-18; 2 इतिहास 33:1-20)। जब वह 12 वर्ष का था, तब उसने शासन करना शुरू किया और परमेश्वर की सभ आराधनाओं को हटा दिया। वह यहूदा का सबसे दुष्ट राजा था। उसने अपने धर्मी पिता को अस्वीकार किया और अपने अधर्मी दादा आहाज का अनुसरण किया। उसने बाल और अशेरथ को पुनर्स्थापित किया। उसने सूर्य, चंद्रमा और सितारों की पूजा की स्थापना की। मोलेक, बहुत ही दुष्ट अम्मोनी देवता था उसको पुनर्स्थापित किया गया था। वह उन मूर्तिपूजकों से भी अधिक दुष्ट हो गया था जिनको यहूदियों ने देश से निकाल दिया था। उसे पकड़ लिया गया और मिस्र ले जाया गया। इसने उसे दीन बना दिया और उसने वहाँ रहते हुए पश्चाताप किया। रिहा होने पर वह वापस यरूशलेम गया और अपने बुरे कामों को बदलने की कोशिश की लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। जब उनकी मृत्यु हुई तो उसके अपने बेटे ने उस के द्वारा किए गए कुछ सुधारों को पलट दिया। यशायाह ने उसके शासनकाल के दौरान सेवा की और इसी के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। इस दौरान नहूम भी नीनवे गया। योना के समय आई जागृति थोड़े समय तक रही लेकिन वे फिर से पाप में गिर गए, इसलिए परमेश्वर ने नहूम को यह घोषणा करने के लिए भेजा कि न्याय आ रहा है।

आमोन, मनश्शे का पुत्र 2 वर्ष तक राजा रहा (2 राजा 21:19-26; 2 इतिहास 33:21-25)। वह बहुत दुष्ट और मूर्तिपूजक था, इतना बुरा कि उसके अपने सेवकों ने ही उसे मार डाला।

योशिय्याह, आमोन का पुत्र और मनश्शे का पोता 8 वर्ष की आयु में राजा बना और 31 वर्ष तक शासन करता रहा (2 राजा 22:1-23:30; 2 इतिहास 34:1-35:27)। उसके पास धर्मी सलाहकार थे जो उसे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रखते थे। 16 साल की उम्र में उसने परमेश्वर के साथ अपना रिश्ता शुरू किया। जब वह 18 साल का था तब उसे परमेश्वर के वचन की एक प्रतिलिपि मिली और जिसे वह लागू करने लगा। वह शांति, समृद्धि और सुधार लाया। जब वह 20 वर्ष के तह, तब उन्होंने देश को बुराई से शुद्ध करना शुरू कर दिया। 26 साल की उम्र में उसने परमेश्वर के कानून और परमेश्वर की उपासना को फिर से स्थापित किया। वह मिस्रियों के विरुद्ध युद्ध में मारा गया। यिर्मयाह ने इस शासनकाल के दौरान सेवा करता था और भविष्यवाणी करता था।

सपन्याह ने अपनी सेवकाई यिर्मयाह के वर्ष में आरम्भ की थी, और वह दाऊद और हिजकिय्याह के वंश का था।

यहोआहाज, योशिय्याह के पुत्र ने केवल 3 महीने तक शासन किया (2 राजा 23:31-33; 2 इतिहास 36:1-4)। उसे मिस्र ले जाया गया। यिर्मयाह इस शासनकाल के दौरान भविष्यवाणी करता था और सेवा करता था।

यहोयाकीम, योशिय्याह के पुत्र ने 11 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 23:34-24:5; 2 इतिहास 36:5-7)। उसने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई की, यहाँ तक कि यिर्मयाह ने उसकी निंदा की और कहा कि कोई भी उसकी मृत्यु पर शोक नहीं मनाएगा। वास्तव में यिर्मयाह ने इजराइल के अंतिम पांच राजाओं के

शासनकाल के दौरान 40 वर्षों तक भविष्यवाणी की थी, ईसने यिर्मयाह की भविष्यवाणियों को जला दिया और बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को देश पर अधिकार करने और उसे एक जागीरदार राजा बनाने की अनुमति दे डाली। तीन साल बाद उसने विद्रोह किया और उसे बाबुल ले जाया गया। उसने उरिय्याह नबी को भी मार डाला था। हबक्कूक ने भी इस दौरान सेवा की। हबक्कूक बहुत साहसी था और उसमें गहरी भावनात्मक शक्ति थी। वह एक भविष्यवक्ता और कवि दोनों ही था।

यहोयाकीन, यहोयाकीम का पुत्र 3 महीने तक शासन करता रहा (2 राजा 24:6-16; 2 इतिहास 36:8-10)। वह बहुत दुष्ट था और नबूकदनेस्सर की सेना द्वारा उसे बाबुल ले जाया गया था। यिर्मयाह और हबक्कूक ने इस शासनकाल के दौरान भविष्यवाणी की और सेवकाई की।

सिदकिय्याह, योशिय्याह का पुत्र यहूदा का अंतिम राजा था और उसने 11 वर्षों तक शासन किया (2 राजा 24:17-25:30; 2 इतिहास 36:11-21)। उसे नबूकदनेस्सर द्वारा सिंहासन पर बिठाया गया पर उसे लोगों द्वारा कभी भी राजा के रूप में पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया गया था। बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने कहा कि यहूदा बाबेल से स्वतंत्र हो जाएगा। जब मिस्र, मोआब, अम्मोन और एदोम ने विद्रोह किया, तो वे चाहते थे कि यहूदा उनके साथ मिल जाए। जब उन्होंने विद्रोह किया तो बाबुल ने हमला किया, उसे घेर लिया और शहर को घातक रूप से घेर लिया। जुलाई, 586 ईसा पूर्व में, यरूशलेम की दीवार टूट गई थी, शहर नष्ट हो गया और सिदकिय्याह भागने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया था। उसे अपने ही बेटों को मरते हुए देखने के लिए मजबूर किया गया, फिर उसे अंधा कर दिया गया और बाबुल ले जाया गया। दनिएअल को भी तब बाबुल ले जाया गया था। यहजेकेल को पहले लिया गया था। यिर्मयाह ने इस पूरे समय के दौरान भविष्यवाणी की और सेवा की। यरूशलेम के विनाश पर अपने आँसुओं के कारण उसे "रोता हुआ भविष्यद्वक्ता" कहलाया जाने लगा, उसने विलापगीत की पुस्तक में इसका वर्णन किया है। उसे अक्सर पीटा जाता था, उसका विरोध किया जाता था, उसे गिरफ्तार किया जाता था और उसका अपहरण कर लिया जाता था। आखिरकार उसे मिस्र जाने के लिए मजबूर किया गया और वहीं मारा गया।

ओबद्याहः

कठोर दण्ड



शीर्षक: भविष्यवक्ता के पर जिसने इसे लिखा

लेखक: ओबद्याह ("परमेश्वर का उपासक")

लेखन की तिथि: 586 - 585 ई.पू.

लेखन का स्थान: कनान

शामिल समय: ओबद्याह से यीशु की वापसी के दिन तक

प्राप्तकर्ता: एदोम (अरब)

प्रमुख आयत: 1:15 "यहोवा का दिन सब जातियों पर निकट है; जैसा तू ने किया है वैसा ही तुझ से किया जाएगा; तेरे काम तेरे ही सिर पर लौट आएंगे।

मुख्य शब्द: "एदोम" (9 बार) "काटा गया" (3 बार)

उद्देश्य: एदोम को उनके घमण्ड के कारण और जब यहूदा संकट में था, तब यहूदा के साथ बुरा बर्ताव करने के कारण न्यायदण्ड की चेतावनी देना।

विषय: एदोम के लिए कठोर दण्ड

पूरी बाइबल में कुछ सबसे कठोर शब्द हैं जो घमण्डियों को सम्बोधित हैं, फिर चाहे वे विश्वासी लोग हों या अविश्वासी लोग। नीतिवचन में विशेष रूप से घमण्ड के खतरों के बारे में बहुत कुछ कहा गया है (3:34; 6:16-17; 8:13; 10:17; 11:2,12; 12:9,15; 13:10; 14:21; 15:5,10,12,25,32; 16:5,18-19; 17:19; 18:11-12; 20:6; 21:4, 24; 25:14, 27; 26:5, 12, 16; 27:2; 28:11, 25; 29:8, 23; 30:12-13)। अहंकार इतना बुरा है, क्योंकि यह सभी पापों की जड़ है। घमण्ड आत्मकेन्द्रितता है, और सारे पाप इसी में देखे जा सकते हैं। वास्तव में, घमंड ही वह कारण था जिसके कारण लूसिफर ने विद्रोह किया

और उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया (यशायाह 14:12-21; यहजकेल 28:11-19)। सब प्रकार का घमण्ड न्यायदण्ड लाता है। कई बार हम यह नहीं सोचते हैं कि हम 'घमंडी' हैं क्योंकि हम केवल इस सोच से कि हम सब से बेहतर हैं, घमंड को परिभाषित करते हैं। हालांकि, मूल रूप से, घमंड यही है की कोई आपने आप को परमेश्वर से भी पहले स्थान पर रखे। कार्टून चरित्र चार्ली ब्राउन एक घमंडी व्यक्ति है, इसलिए नहीं कि वह सोचता है कि वह दूसरों से बेहतर है, बल्कि इसलिए कि वह आत्म-केंद्रित है। जीवन में सब कुछ इस रौशनी में देखा जाता है कि यह उसे कैसे प्रभावित करेगा। यह सोचना कि हम दूसरों से हीन हैं, उतना ही घमण्ड और असत्य है जितना यह सोचना कि हम दूसरों से श्रेष्ठ हैं। वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किसी भी प्रकार की आत्म-केन्द्रितता या आत्मनिर्भरता अभिमान ही है और इसलिए यह पाप है।

ओबद्याह उस न्यायदण्ड के बारे में एक पुस्तक है जो घमण्डियों पर आता है। यह पुराने नियम की सबसे छोटी पुस्तक होने के साथ-साथ कालानुक्रमिक क्रम में भविष्यवक्ताओं में सबसे पहली है। ओबद्याह के नाम का अर्थ है "परमेश्वर का सेवक/उपासक।" उसके बारे में और जानकारी उपलब्ध नहीं है। वह सभ नबियों में सबसे अधिक अप्रत्यक्ष है। हम जानते हैं कि राष्ट्र के उत्तर और दक्षिण में विभाजित होने के बाद वह लगभग 100 वर्षों तक जीवित रहा। वह अपना संदेश लिखने वाले पहले नबी हैं।

एदोम वह राष्ट्र है जिसमें ओबद्याह ने प्रचार किया था। बेशक वह एक यहूदी था, उसे अपने गैर-यहूदी पड़ोसियों के पास परमेश्वर के आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देने के लिए भेजा गया था, जैसा कि योना के मामले में हुआ था। एदोमी लोग यहूदियों के कठोर शत्रु थे। दुश्मनी रिबका के गर्भ में ही शुरू हुई, जहाँ याकूब और एसाव एक दूसरे के विरुद्ध लड़ते थे (उत्पत्ति 25:20-23)। यह मुकाबलेबाजी जन्म के समय प्रकट हो गयी थी (उत्पत्ति 25:24-26)। वे जेठ होने के अधिकार के लिए और फिर आशीष के लिए लड़े। वे जीवन भर संघर्ष में रहे। यह विरोध-विचारधारा अगली पीढ़ियों में भी जारी रही। एदोमियों ने मूसा और यहूदियों को अपने देश में से होकर जाने ना दिया। शाऊल ने उनका मुकाबला किया। दाऊद ने उन्हें जीत लिया। वे यहूदियों से लड़ने में अम्मोन और मोआब के साथ मिल गए। यहूदियों द्वारा हेरोदेस को इतना नापसंद किए जाने का एक कारण यह था कि वह एक एदोमी था। आज वे अरब लोगों का हिस्सा हैं। हालांकि, हमेशा आत्म-केंद्रितता (घमंड) उनकी विशेषता रही है। ओबद्याह को यह चेतावनी देने के लिए भेजा गया था कि इससे उन पर परमेश्वर का न्यायदण्ड आएगा।

पापियों का भाग्य पहले दिखाया गया है (आयत 1-9)। यरदन के पूर्व में चट्टान के समान अपने गढ़ों/किलों के कारण एदोमी अपने घमण्ड में सोचते थे कि वे अखंडनीय हैं। आज भी यह आसान है कि हम अपनी सरकार और सेना पर विश्वास करें, और सोचें कि वे हमारी रक्षा करेंगे। फिर भी, परमेश्वर घमण्डियों का विरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है (याकूब 4:6; 1 पतरस 5:5)। एदोम ने दूसरों के बुरे समय का फायदा उठाया था, इसलिए परमेश्वर उन्हें वही काटने के लिए देगा जो वे बोते हैं। उनके साथ भी ऐसा ही होगा। एदोम महान राजनेताओं, सलाहकारों और सरकारी अधिकारियों के लिए प्रसिद्ध था। वह इस बात का गर्व करते थे। परमेश्वर ने भी यही चाहा कि ये लोग मूर्खों की तरह बन जाएँ, क्योंकि उन्हें अपनी वर्तमान खतरनाक स्थिति की कोई वास्तविक समझ नहीं होगी। उनके वीर सैनिक कायर होंगे। अब जबकि ओबद्याह उन पर ध्यान दे रहा है, ओबद्याह उन्हें बताता है कि ऐसा क्यों होगा।

पाप का विवरण आगे (10-14) दिया गया है। एदोमी हिंसक और युद्धकारी हैं, खासकर यहूदियों (परमेश्वर के लोग) के लिए। अपनी आत्मनिर्भरता में वे उन लोगों के प्रति गैर-जिमेदाराना, बेपरवाह, यहाँ तक कि उन लोगों से भी अलग सा महसूस करते हैं जो जरूरतमंद हैं। अंत में, वे लालची हैं। गिद्धों

की तरह, वे कमजोर, कमजोर और पराजित पड़ोसियों को लूटने में तेज होते जाते हैं। अपने अहंकार में वे केवल अपने बारे में ही सोचते थे।

न्याय का दिन पुस्तक का समापन करता है (15-21)। एदोम पर आने वाला न्यायदण्ड बुरा होगा, परन्तु भविष्य का न्यायदण्ड और भी बुरा होगा। यहोवा के दिन में (विशेष रूप से अर-मगिदोन की लड़ाई में) यह और भी बुरा होगा, क्योंकि वे पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे। इन सब के बावजूद, जो दया और क्षमा के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, उनके लिए यह आने वाली बहाली का समय है। यह मिलेनियम होगा। एक राष्ट्र के रूप में यहूदियों को फिर से बहाल किया जाएगा और वे शांति और समृद्धि का आनंद लेंगे जैसा पहले कभी ना था। उन्होंने जो कुछ खोया है, वह सब लौटा दिया जाएगा। परमेश्वर के लोगों का विरोध करना बुद्धिमानी ना थी/ना है!

इस पुस्तक का संदेश स्पष्ट है: हम जो बोते हैं वही काटेंगे यदि हम केवल पाप और अधर्म में बोते हैं। जो कभी उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ते, बल्कि स्वार्थ और आत्म-केन्द्रितता में जीते हैं, उन पर न्यायदण्ड अवश्य होगा !

ओबद्याह की रूपरेखा

I. पापियों का भाग्य 1-9

क- गर्व 1-5

ख- बेईमानी 6-7

ग- डर 8-9

II. पाप का विवरण 10-14

क- युद्धकारी 10

ख-गैर-जिमेदाराना 11-12

ग- लालच 13-14

III. न्याय का दिन 15-21

क- कठोर दण्ड 15-16

ख- बहाली 17-18

ग- वसूली 19-21

योएल:

यहोवा का दिन



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: "योएल" "यहोवा परमेश्वर/एलोहीम है"

लेखन की तिथि: लगभग 838-756 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: यहूदा

शामिल समय: योएल के दिन से सहस्राब्दी तक

प्राप्तकर्ता: यहूदा (दक्षिण)

प्रमुख आयत: 2:28-32 'और अंत के दिनों में मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उण्डेलूंगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वक्ता करेंगे और तुम्हारे पुरनिये

स्वप्न देखेगा, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। यहाँ तक कि अपने सेवकों पर, चाहे वे स्त्री हों या पुरुष, उन दिनों में मैं अपना आत्मा उण्डेलूंगा। मैं आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार, अर्थात् लोहू और आग और धूँ के बादल दिखाऊंगा। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धियारा और चान्द लोहू सा हो जाएगा। और जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह उद्धार पाएगा; क्योंकि यहोवा के वचन के अनुसार सिव्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में, जिन बचे हुएों को यहोवा बुलाएगा, उनका उद्धार होगा।

मुख्य शब्द: "प्रभु का दिन" (5 बार)

उद्देश्य: वर्तमान टिड्डी से महामारी पश्चाताप न करने पर आने वाले बुरे न्याय दण्ड की एक तस्वीर है।

थीम: मसीह वापस आएगा और शांति लाते हुए दुनिया पर शासन करेगा। यह आधी रात है और आप अपने धुँ के संकेत की कर्कश घंटी से जाग जाते हैं। क्या आप प्रसन्न हैं या परेशान हैं? आपके डैशबोर्ड पर एक लाल बत्ती भयानक रूप से चमकती है, आपको सूचित करती है कि आपकी कार में तेल का स्तर खतरनाक रूप से कम है। आप रुकावट पर नाराजगी जताते हैं या आप समस्या का पता लगाने के लिए राहत महसूस करते हैं?

योएल के दिनों में परमेश्वर ने अपने लोगों को जगाने के लिए टिट्टियों का इस्तेमाल किया और उन्हें अपने देश की स्थिति के बारे में सचेत किया ताकि, इससे पहले कि इससे भी अधिक बुरी घटना घटे, वे परमेश्वर की ओर लौट सकें। हालांकि, कृतज्ञता और पश्चाताप के साथ जवाब देने के बजाय, लोगों ने शिकायत की और परमेश्वर को दोष दिया।

यहोवा के दिन में विनाश (1:1 - 2:17) टिट्टियों की विपत्तियाँ विनाशकारी हैं। टिट्टियाँ जमीन पर 5" मोटी तह के रूप में इकट्ठा होती हैं और हर दिन अपना वजन खाती हैं, चट्टानों और पेड़ के तने को छोड़कर सब कुछ खा जाती हैं। वे 400 वर्ग मील से अधिक की दूरी तय कर सकती हैं और महासागरों में यात्रा कर सकती हैं। तबाही और अकाल हमेशा उनके पीछे चलते हैं। परमेश्वर ने इन टिट्टियों को यहूदियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए भेजा था, ताकि वे पछताएं और अगले झुंड के आने से पहले उसकी ओर मुड़ें। अशशूरियों की सेना टिट्टियों द्वारा लाए गए विनाश से भी अधिक विनाश लाएगी। यह सब भविष्य में और भी भयानक तबाही के समय की ओर इशारा करता है। यह तब होता है जब मसीह विरोधी की सेना आती है और टिट्टियों या यहां तक कि अशशूरियों से भी बदतर मौत और विनाश लाती है। इन तीन विपत्तियों में से किसी से भी मुक्त होने का एकमात्र तरीका है पाप का अंगीकार करना और इसके लिए पश्चाताप करना। दुर्भाग्य से यहूदी उनमें से किसी से भी पश्चाताप नहीं करते हैं, और उन्हें कष्टदायक परिणाम भुगतने पड़ते हैं। हालांकि, अंतिम चरण के बाद छुटकारे का आगमन होगा। इस प्रकार योएल का ध्यान वर्तमान अत्याचार से उस की ओर जाता है जो प्रभु के दिन आएगा।

यहोवा के दिन के द्वारा उद्धार (2:18 - 3:21) प्रभु का दिन वह समय है जो क्लेश के बीच में शुरू होता है और सहस्राब्दी तक और अनंत काल तक जारी रहता है। जो टिट्टियाँ और अशशूरी नहीं कर पाए हैं, वह करने के लिए क्लेश की भयानक पीड़ा को उठाना होगा- यहूदियों को वापस परमेश्वर की ओर मोड़ना होगा। फिर, हालांकि, शांति और समृद्धि का वादा किया गया है, जैसा कि दुनिया ने कभी भी नहीं जाना या देखा होगा। वह सहस्राब्दी राज्य है जो फिर अनंत काल तक चलता रहेगा। उत्पीड़ित लोगों के लिए यह क्या ही आशीष भरी आशा थी! जैसे-जैसे हमारा संसार आज परमेश्वर से दूर और दूर होता जा रहा है, भविष्य के छुटकारे और बहाली की यह आशीषित प्रतिज्ञा हमारी आशा भी बनती जा रही है।

योएल की रूपरेखा

I. यहोवा के दिन के द्वारा विनाश 1:1-2:17

क- विनाश का प्रकार 1:1-12

ख- विनाश के प्रति प्रतिक्रियाएँ 1:13-14

ग- विनाश की तस्वीर 1:15-20

घ- विनाश की भविष्यवाणी 2:1-11

ङ- विनाश के कारण उपदेश 2:12-17

II. यहोवा के दिन के अनुसार छुटकारे 2:18-3:21

क- तुरंत छुटकारा 2:18-27

ख- भविष्य में का उद्धार 2:28-3:21

योना:

आज्ञाकारिता



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर, जिसने इसे लिखा था

लेखक: "योना " का अर्थ है "कबूतर"

लेखन की तिथि: लगभग 810 ई.पू

लेखन का स्थान: नीनवे

समय शामिल 810 ई.पू. के कुछ महीने

प्राप्तकर्ता: नीनवे, अश्शूर

मुख्य आयत : 3:10 जब परमेश्वर ने देखा जो उन्होंने किया है , और किस रीति से वे आपने कुमार्ग से मुड़ गए हैं , तब परमेश्वर ने उन पर तरस खाया, और उन पर वो तबाही ना लाया, जिसकी उस ने ठानी थी।

मुख्य शब्द: "तैयार किया " 4 (परमेश्वर आंधी तैयार करता है 1:4, तूफान 1:4, मछली 1:17, लौकी की बेल 4:6, कीड़ा 4:7, पूर्वी हवा 4:8

उद्देश्य: अन्यजातियों के लिए परमेश्वर का प्यार दिखाने के लिए और यह कि वह अपने अवज्ञाकारी सेवकों के साथ कैसे व्यवहार करता है ।

विषय: परमेश्वर की पुनरुत्थान शक्ति सब पर जय पाती है।

क्या आपको कभी कुछ कठिन तरीके से सीखना पड़ा है? मुझे यकीन है कि हम सभी को कभी न कभी जरूर ऐसा सीखना पड़ा होगा। योना को पक्का ऐसे सीखना पड़ा ! कभी-कभी सबसे परिचित कहानियां अपना प्रभाव खो देती हैं क्योंकि हम उन्हें इतने लंबे समय से जानते होते हैं। ऐसा होना का एक अच्छा कारण है कि यह वही होती है जिन्हें हम बच्चों को पढ़ाते हैं और अच्छी तरह याद रखते हैं। वे अपने अर्थ और महत्व में बहुत खास होती हैं। मान लीजिए आप योना की कहानी नहीं जानते। इसे ताजा आंखों से देखें। यह आपके लिए और भी अधिक मायने रखेगी।

योना का भागना (अध्याय 1) योना इजराइल में से था और परमेश्वर ने उसे नीनवे जाने के लिए बुलाया था। नीनवे अशूर की राजधानी थी, जो उस समय तक मौजूद सबसे क्रूर और सबसे क्रूर राष्ट्रों में से एक था। वे योना के दिनों में निकट पूर्व में सभी को जीत रहे थे और योना के राष्ट्र: इजराइल को नष्ट करने वाले थे। एक लड़के के रूप में, उसने अपने गृहनगर को अशूरियों द्वारा नष्ट होते देखा था। उसके दोस्त, रिश्तेदार, शायद माता-पिता भी मारे गए थे। इन्हीं कारणों से, जब परमेश्वर ने उसे आने वाले न्याय दण्ड के बारे में चेतावनी देने के लिए कहा, तो वह इसके उल्ट दिशा में चला गया। अपनी कड़वाहट और अक्षमा भावनाओं में उसने परमेश्वर की आज्ञा ना मानी। वह बदला लेना चाहता था, दया का एक मौका नहीं। वह अपने विवेक में इतना कठोर हो गया था कि वह समुद्र में एक तूफान में भी सो सकता था। वह जानता था कि परमेश्वर उसे अनुशासित कर रहा है (दंडित नहीं)। जब जहाज चलाने वालों ने ना चाहते हुए भी उसे पानी में फेंका तो तूफान थम गया। उन्होंने परमेश्वर को महिमा दी। योना ने उन्हें कोई गवाही नहीं दी थी, परन्तु फिर भी परमेश्वर ने इन सब बातों से अपनी महिमा प्राप्त की।

योना प्रार्थना करना (अध्याय 2) जब योना पानी में गिरा तो वह प्रार्थना करने लगा। योना 2:1-6 का इब्रानी यह स्पष्ट करता है कि योना जानता था कि वह मर रहा है। जब बड़ी मछली ने उसे निगल लिया तब भी वह जीवित था, शायद उसका सिर पानी के ऊपर था। हालांकि, वह जानता था कि यह सब खत्म हो गया था। बेहोश होने से पहले, जब व्हेल (?) उसे निगल रही थी, उसने प्रार्थना की और अपना पाप कबूल किया। फिर वह मर गया। तीन दिन के बाद मछली ने उसे सूखी भूमि पर थूक दिया और परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर दिया। यीशु ने इसे अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के चित्र के रूप में प्रयोग किया (मत्ती 12:39-40)। जब वह वापस जीवन में आया तो उसने परमेश्वर की स्तुति की और खुद को परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध किया - यहाँ तक कि वह नीनवे भी गया। परमेश्वर ने उसे एक और मौका दिया।

योना का प्रचार करना (अध्याय 3) 500 मील चलने के बाद (जिसको लगभग एक महीने लगा) सोच विचार के लिए पर्याप्त समय बिताने के साथ, वह नीनवे पहुंचा। यह एक बड़ा शहर था, इसे घूमने में 3 दिन लगते थे! नगर बड़ा घमंडी, दुष्ट, कठोर और हठी था। योना का संदेश पश्चाताप का नहीं था। उसने कोई दया नहीं की। उसने बस घोषणा की "40 दिन और नीनवे नष्ट हो जाएगा।" अगले दिन "39 दिन..." थे, फिर भी, लोगों ने तुरंत पश्चाताप किया। शायद उसे देखकर इस काम में योगदान दिया। वह शायद गंजा था और मछली के पेट के एसिड से उसकी त्वचा छिटक गई थी। वह इस बात का एक जीवित चित्र था कि कैसे परमेश्वर ने पाप का न्याय किया फिर भी पश्चाताप करने वालों को पुनर्स्थापित किया। उसका संदेश जंगल में आग की तरह फैल गया। यहाँ तक कि राजा ने भी पश्चाताप किया, सभी लोगों और जानवरों को उपवास करने और अपना पश्चाताप दिखाने का आदेश दिया। यह अब तक का सबसे बड़ी बेदारी थी !

योना का सीखना (अध्याय 4) योना ने, फिर भी , यह आशा नहीं छोड़ी कि परमेश्वर अब भी नगर और उसमें रहने वाले लोगों को नष्ट कर देगा। वह क्रोधित था कि उन्होंने पश्चाताप किया, इस डर से कि परमेश्वर दया दिखा सकता है। वह 40 दिनों के अंत की प्रतीक्षा में एक पहाड़ी पर बैठा रहा। गर्मी थी, लेकिन उसे ठंडक देने के लिए एक बेल बड़ी। तब एक कीड़ा बेल को खा गया और उसकी छाया चली गई। योना इस से मिलने वाली छाया के खो जाने से इतना परेशान था कि वह मरना चाहता था! यह उसे दिखाने का परमेश्वर का तरीका था कि वह कितना स्वार्थी व्यक्ति था। उसने पूरे नीनवे की चिन्ता नहीं की परन्तु अपने आराम की चिन्ता की! कहानी का क्या अंत है। योना को छोड़कर बाकि सब कुछ परमेश्वर

की आज्ञा मानते थे। तूफ़ान, नाविकों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला पासा, नाविकों, मछलियों, नीनवे के लोगों, लौकी के बेल, कीड़ा और पूर्वी हवा। योना, जिसने परमेश्वर से "भय" करने का दावा करता था (1:9), उसको छोड़ सब कुछ उसकी आज्ञा का पालन करते थे।

हालांकि, मुझे लगता है कि योना के लिए कहानी का अंत अच्छा रहा। मुझे लगता है कि उसने पश्चाताप किया और अपने स्वार्थ के माध्यम से बड़ा हुआ। तथ्य यह है कि उसने नीनवे छोड़ने के बाद अपने अनुभवों के इस विवरण को लिखा और साँझा किया, यह मुझे इस निष्कर्ष पर ले जाता है। दुर्भाग्य से नीनवे के लिए कहानी का अंत इतना अच्छा नहीं रहा। वे इजराइल को जीतने के लिए आगे बढ़े, हालाँकि वे पहले की तरह क्रूर राष्ट्र के रूप में नहीं थे। इसमें परमेश्वर का समय देखा जाता है क्योंकि वह चाहता था कि इजराइल अनुशासित हो, नाकि अनुचित रूप से दंडित हो। योना के नीनवे जाने के सौ साल से कुछ अधिक समय के बाद, परमेश्वर ने नहूम को भी यही संदेश भेजा। इस बार कोई पश्चाताप नहीं हुआ और परमेश्वर ने नीनवे को नष्ट करने के लिए बेबीलोनियों का उपयोग किया।

योना की रूपरेखा

I. योना का भागना (परमेश्वर से दूर) 1

क- कारण 1:1-2

ख- रास्ता 1:3

ग- परिणाम 1:4-17

1. नाविकों के परिणाम 1:4-11

2. योना के परिणाम 1:12-17

II. योना का प्रार्थना करना (परमेश्वर के पास वापस आता है) 2

क- अंगीकार करता है 2:1-6

ख- स्तुति करता है 2:6-8

ग- पश्चाताप करता है 2:9

घ- उत्तर 2:10

III- योना का प्रचार करना (परमेश्वर के साथ) 3

क- प्रचार करने की आज्ञा 3:1-3

ख- प्रचार का वचन 3:4

ग- प्रचार का जवाब 3:5-10

IV. योना का सीखना (परमेश्वर के सामने) 4

क- उसकी शिकायत 4:1-3

ख- ख- परमेश्वर के कार्य 4: 4-11

आमोस:

जवाबदेही



शीर्षक: आमोस

लेखक : "आमोस" = "बोझ उठाने वाला"

लेखन की तिथि: 810 - 785 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: इज़राइल (उत्तर)

समय शामिल: आमोस के दिन से अनंत काल भविष्य तक

प्राप्तकर्ता: इज़राइल (उत्तर)

मुख्य वचन: 4:11-12 "मैं ने तुम में से कुछ को ऐसा उलट दिया जैसा मैं ने सदोम और अमोरा को उलट दिया था। तुम आग से खींची हुई लकड़ी के समान थे, तौभी तुम मेरी ओर ना फिरे , " यहोवा की यही वाणी है। "इसलिए हे इजराइल मैं तुझ से ऐसा करूंगा, क्योंकि मैं तेरे साथ ऐसा करूंगा , हे इजराइल आपने परमेश्वर से भेंट करने के लिए तैयार हो जा।

कुंजी शब्द: "अपराध" = 12 बार; "मैं तेरा दण्ड वापस नहीं लूंगा" = 8 बार

उद्देश्य: इजराइल (उत्तर) को उसके कई पापों से पश्चाताप करने या गंभीर न्याय का सामना करने की चेतावनी देना।

विषय: पाप पर परमेश्वर का निश्चित न्याय।

हम कितनी बार सोचते हैं कि "मेरे साथ ऐसा कभी नहीं होगा"? जब मैं एक छोटा लड़का था तो मुझे हमेशा लगता था कि केवल दूसरों के घरों में ही आग लगती है मेरे साथ ऐसा नहीं होगा। फिर एक दिन मेरे कमरे में आग लग गई, और तब से मैंने फिर कभी ऐसा नहीं कहा। आखिर मैंने इसे आग के बारे में नहीं कहा है। मैं अभी भी मानता हूँ कि बहुत सी अन्य चीजे हैं जिनका मुझे डर है।

इसरायली राष्ट्र (उत्तरी 10 गोत्रों) ने भी अपने देश पर परमेश्वर के न्याय के बारे में ऐसा ही महसूस करते थे। वे ' परमेश्वर के लोग' थे, आराधना की सभी विधिओं तो पूरा करते थे , आर्थिक रूप से समृद्ध थे, अपने जीवन में आनंदत थे, और उनके पास एक मजबूत सेना थी। क्या हो सकता है?

आमोस भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के निकट से ही था, और परमेश्वर द्वारा उत्तरी राज्य पर आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देने के लिए भेजा गया था। एक देहाती लड़का जो अंजीर तोड़ता और एक चरवाहा था, वह शायद ही एक ऐसा आदमी था जिसकी हम इस तरह के मिशन पर भेजे जाने की उम्मीद करेंगे। हालाँकि, वह विश्वासयोग्य था, और उसने वही किया जो परमेश्वर ने कहा। असीरिया क्षितिज पर था, युद्धकारी और बहुत आक्रामक था। वे बहुत कठोर और क्रूर थे, और उनका लक्ष्य दुनिया पर राज करना था। इजराइल (उत्तरी राज्य) अत्यधिक आर्थिक समृद्धि में था परन्तु आत्मिक रूप से दिवालिया हो गया था। वे मूर्तिपूजक थे, यहोवा के बदले सोने के बछड़ों की पूजा करते थे। परमेश्वर लोगों पर बहुत क्रोधित था: "यहोवा सिंघों से गरजता है" (1:1)। परमेश्वर क्रोधित सिंह के समान विनाश लाने वाला है।

I. भविष्यद्वक्ता की भविष्यवाणियां (1-2) कल्पना कीजिए कि आप अदालत में हैं। करवाई औपचारिक अभियोग के साथ शुरू होती है। परमेश्वर का राष्ट्रों पर आरोप उनके बार-बार पाप करने के कारण था। परमेश्वर ने हर एक को दोषी पाया और दमिश्क, गाजा, सोर, एदोम, अम्मोन, और मोआब उन पर दण्ड की आज्ञा दी। इजराइल को यह सब कुछ बहुत अच्छा लगा, क्योंकि ये राष्ट्र उनके शत्रु थे। हालाँकि जब उसने यह कहना शुरू किया कि उनके पापों के कारण परमेश्वर उनके साथ क्या करेगा, तो वे लगभग उतने खुश नहीं थे!

II. भविष्यद्वक्ता के उपदेश (3-6) आमोस का दूसरा उपदेश (अध्याय 3) अदालत कक्ष की कल्पना को जारी रखता है। इस बार मामला इजराइल के खिलाफ पेश किया गया है। उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा तोड़ी। उन्होंने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने, उससे और केवल उसी से प्रेम करने और उसकी आज्ञा मानने का वादा किया। गवाहों को इजराइल के अपराध को दिखाने के लिए बुलाया जाता है, ऐसे राष्ट्र (अशदोद और मिस्र) जो परमेश्वर के अपने लोगों से बेहतर गवाह थे। इजराइल को दोषी पाया गया और सजा सुनाई गई: उनकी मजबूत सेना हार जाएगी और अधिकांश लोग मारे जाएंगे।

तीसरा उपदेश (अध्याय 4) उन पापों के बारे में अधिक विस्तार से बताता है जिनके लिए उन्हें आरोपित किया गया है। महिलायें हृदय से ज्यादा अयाश होने लगी और सोचने लगी कि जीवन केवल एक के बाद एक आनंद लेने के लिए ही है। "मोटी गाय"

भगवान उन्हें बुलाता है। हर कोई अभी भी बाहरी रूप से परमेश्वर की आराधना करने की विधि से गुजर रहा था, लेकिन वे केवल विधि से जा रहे थे। उनके जीवन में परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं था।

परमेश्वर ने कई बार लोगों को चेतावनी देने की कोशिश की, परन्तु वे सुनने में बहुत हठी थे। उसने उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए भोजन की कमी, सूखा, फसल की विफलता और सेना के हार होने जैसे समय को भेजा कि वह उसके पास लौटे लेकिन उन्होंने ऐसे कभी ना किया। वे अब भी सिर्फ खुद पर भरोसा करने पर जोर देते थे।

उपदेश संख्या चार (5-6) अंतिम संस्कार/जनाजे के विलाप की तरह है। आमोस इजराइल के विनाश के बारे में इतना निश्चित था कि मानो ऐसा पहले ही हो चुका था, जैसे वे पहले ही मर चुके थे। पश्चात्ताप करने वाले व्यक्तियों के लिए क्षमा और बहाली अभी भी उपलब्ध थी, लेकिन पूरे राष्ट्र के लिए बहुत देर हो चुकी थी। फैसला आना तय था।

III. भविष्यद्वक्ता के दर्शन (7-9) उपदेश अब समाप्त हो चुके हैं। इसके बाद उदाहरण आते हैं कि न्याय कैसा होगा। परमेश्वर कहता है कि वह सब कुछ नष्ट करने के लिए टिड्डियों की एक महामारी भेजेगा,

लेकिन आमोस दया मांगता है और परमेश्वर नर्म पड़ जाता है। एक बड़ी भस्म करने वाली आग के साथ भी ऐसा ही होता है। फिर भी, परमेश्वर कहता है कि वह राष्ट्र को नष्ट कर देगा। यहूदी अब आमोस का उपदेश नहीं सुनना चाहते, इसलिए वे उसे प्रचार बंद करने और घर जाने के लिए कहते हैं। वे अधिक पके फल के समान हैं (8), विनाश के सिवा किसी काम के नहीं। बाहर से तो ठीक दिखते हैं पर अंदर से सड़े हुए हैं। परमेश्वर धर्मी न्यायी ने इसे ऐसा घोषित किया है और ऐसा ही होगा।

फिर भी, सभी भविष्यवक्ताओं की तरह, परमेश्वर निराशा की पत्री पर समाप्त नहीं करता है। हमेशा आशा देता है। परमेश्वर ने आमोस को यहूदियों को उनके शानदार भविष्य के बारे में याद दिलाया जब सभी शांति और धार्मिकता से उनकी आराधना करेंगे। दाऊद के सिंहासन पर मसीहा राज्य करेगा और सब कुछ सिद्ध होगा। लेकिन तब तक.....

आमोस की रूपरेखा

परिचय (न्याय दण्ड) 1:1-2

I. भविष्यवाणी 1-2

दमिश्क, पलिशती, सोर, एदोम, अम्मोन, मोआब, यहूदा, इजराइल की भविष्यवाणियाँ

II. उपदेश 3-6

क- विशेषाधिकारों का तिरस्कार (वर्तमान) 3

ख- पाप वर्णित (अतीत)

ग -आने वाली सजा (भविष्य) 5-6

III. दर्शन 7-9

क- टिड्डीया 7:1-3

ख- आग 7:4-6

ग - प्लम-रेखा 7:7-17

घ - अधिक पके फल 8

ङ- झूठी वेदी 9:1-10

निष्कर्ष (आशा) 9:11-15

होशे:

वफादार प्यार



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के पर जिसने इसे लिखा

लेखक: होशे = "यहोवा उद्धार है"

लेखन की तिथि: 785-725 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: उत्तर (इज़राइल)

समय शामिल : 785-725 ई.पू.

प्राप्तकर्ता: उत्तर (इज़राइल)

मुख्य वचन: 3:1 यहोवा ने मुझ से कहा, 'जा, फिर से अपनी पत्नी को अपना प्रेम दिखा

हालांकि वह दूसरे से प्यार करती है और एक व्यभिचारिणी है। उससे वैसे ही प्रेम कर जैसे यहोवा इज़राइलियों से प्रेम करता है, बेशक वे दूसरे देवताओं की ओर फिरते हैं और किशमिश की पवित्र टिकियों से प्रेम रखते हैं।"

प्रमुख शब्द: "प्रेम," "वेश्यावृत्ति/आध्यात्मिक व्यभिचार" (14 बार)

उद्देश्य: यह घोषणा करना कि परमेश्वर अपनी विश्वासघाती "पत्नी" की ताड़ना करेगा परन्तु उसे आशीष स्थान पर पुनर्स्थापित करेगा।

विषय: पाप और अविश्वासयोग्यता के बावजूद अपने लोगों के लिए परमेश्वर का सच्चा प्रेम।

व्यभिचारी पत्नी और विश्वासयोग्य पति (होशे 1-3) होशे की पुस्तक एक बहुत ही दुखद प्रेम कहानी के साथ शुरू होती है। होशे, परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता, वास्तव में परमेश्वर के सन्देश के अनुसार जीवन जीता है। वह लोगों को ईश्वर की सच्चाई बताने के लिए एक चलता-फिरत टेलीविज़न है।

परमेश्वर ने उसे गोमेर नाम की स्त्री से विवाह करने के लिए कहा। वह उसके और परमेश्वर के प्रति वफादार और विश्वासयोग्य है, लेकिन वह उसके प्रति बेवफा है। वह यौन रूप से विश्वासघाती है। वास्तव में, कई विद्वान मानते हैं कि उससे पैदा हुए बच्चे उसके (होशे के) नहीं हैं। जैसा उसकी अनैतिक जीवन शैली जारी रहती है, वह खुद को गुलामी में और नीलामी के बाज़ार में, एक गुलाम के रूप में बिकने के

लिए तयार पाती है। होशे आता है और उसे वापस खरीदने के लिए कीमत चुकाता है, उसे अपनी पत्नी होने का दर्जा पुन प्रदान करता है। यह एक दुखद, चलने वाली कहानी है। हालाँकि, ऐसा नहीं है कि यहूदियों ने इसके अर्थ को ना समझ सके होते।

व्यभिचारी राष्ट्र और विश्वासयोग्य परमेश्वर (होशे 4-14)

होशे 4-7 में हम देखते हैं कि परमेश्वर पवित्र है - वह पाप से घृणा करता है। गोमेर और इजराइल (उत्तरी 10 गोत्र) के बीच यहाँ विस्तृत रूप से समानांतर किया गया है। इजराइल परमेश्वर की आत्मिक पत्नी है जैसे गोमेर होशे की शारीरिक पत्नी है। जैसे वह शारीरिक रूप से बेवफा हो गई, वैसे ही इजराइल परमेश्वर के प्रति आत्मिक रूप से बेवफा रहा है, जानबूझकर अपने पवित्र रिश्ते को अस्वीकार करता रहा है और मूर्तियों को पहल देता रहा है। यहूदी पवित्र वेश्यावृत्ति द्वारा और बच्चों की बलि देकर बाल की पूजा करते थे। परमेश्वर उनके प्रति वफादार रहा, लेकिन वे उसके प्रति विश्वासघाती थे, उन्होंने सके प्यार को त्याग दिया। गोमेर के रूप में, वे विश्वासघाती, अहंसंफरामोश और अयोग्य थे। उन्होंने आपने आप को दूसरों के हवाले कर दिया और इसके परिणामस्वरूप उनका स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा बर्बाद हो गई। वे केवल भौतिक चीज़ों की परवाह करते थे, लेकिन वे 'वस्तुएँ' संतुष्ट नहीं करती थीं और वे अपने 'प्रेमियों' द्वारा त्यागे हुए और बर्बाद किये हुए हो जाते थे। इजराइल, गोमेर की तरह, आपने आप की सहायता करने में असमर्थ था। रिहाई केवल तभी आ सकती है जब कोई उनसे बड़ा उनकी सहायता के लिए आए।

होशे 8-10 में हम देखते हैं कि परमेश्वर न्यायी है - वह पाप का न्याय करता है। फिर से परमेश्वर के संदेश को दिखाने के लिए दृश्य साधनों का उपयोग किया जाता है: एक मरता हुआ आदमी यह दर्शाता है कि कोई भविष्य नहीं है, एक धधकती हुई आग बताती है कि सब कुछ भस्म हो जाएगा, एक आधा पका हुआ केक यहूदियों के धर्म की बेस्वादपन को दर्शाता है, एक छलबाज धनुष दर्शाता है कि उन पर भरोसा मत करो, एक आनंदहीन बर्तन दर्शाता है कि परमेश्वर को अपने लोगों में कोई खुशी नहीं है और एक भुलक्कड़ सेवक दर्शाता है कि यहूदी भगवान के लिए किसी सेवा के नहीं हैं। ये सब दर्शाता है कि इजराइल परमेश्वर के सामने दोषी है। फिर भी, परमेश्वर धैर्यवान है और अपनी दया से पश्चाताप करने के लिए समय देने के लिए न्याय दण्ड को टाल देता है। हालाँकि परमेश्वर भी इमानदार है, और हिसाब चुकता करने का समय जल्द ही आएगा। बाँझपन और बंधुआई आ रहे हैं। हालाँकि पूरे राष्ट्र के लिए बहुत देर हो सकती है, फिर भी व्यक्ति पश्चाताप में परमेश्वर की ओर मुड़ सकते हैं और क्षमा और दया प्राप्त कर सकते हैं।

अन्त में, होशे 11-14 में हम देखते हैं कि परमेश्वर प्रेम है - वह पापियों पर दया करता है। होशे, सभी भविष्यवक्ताओं की तरह, आशा के एक लेख से अपना संदेश समाप्त करता है। ताड़ना के बाद सांत्वना मिलेगी। भविष्य में शांति और छुटकारे का समय आ रहा है।

पुस्तक का अंत होशे द्वारा लोगों से पश्चाताप करने और परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए अंतिम बार विनती करने के साथ होता है। परमेश्वर क्षमा करेगा और पुनर्स्थापित करेगा, जैसा होशे ने गोमेर के साथ किया। "होशे" का अर्थ है "परमेश्वर उद्धार है," जो "यहोशू" के समान है। उन्हें अलग करने में सक्षम होने के लिए अंग्रेजी में इसे अलग तरह से लिखा गया है, लेकिन वे इब्रानी भाषा में समान हैं। होशे अटल प्रेम की तस्वीर है। उसने, जो पहले से ही उसका था उसे वापस खरीदने के लिए कीमत चुकाकर, गोमेर को

छुड़ाया। परमेश्वर ने हमारे साथ भी ऐसा ही किया है। हर कोई उसके पाप के बावजूद अपनी 'पत्नियों' से प्यार करता था और बेवफाई दिखाए जाने के बावजूद वफादार रहता था। उन्होंने अपने प्रियजनों को एक दिल से बाहर नहीं निकाला बल्कि व्यक्तिगत पीड़ा का सामना किया क्योंकि उन्होंने अपने आराम और सुख के अलावा दूसरे की परवाह की थी। जो वास्तव में उनका पहले ही था उसे वापस खरीदने के लिए, क्षमा करने और पुनर्स्थापित करने के लिए वे कीमत चुकाने को तैयार थे। हर कोई बहाली के बाद अपने प्रियजन के साथ घनिष्ठ संबंध का आनंद लेना चाहता था: गोमेर के साथ होशे और सहस्राब्दी में परमेश्वर अपने लोगों के साथ। यही भविष्य की आशा है, सांत्वना जो अंततः आएगी ही आएगी।

एक दिन एक छोटा लड़का अपने घर के रास्ते पर जंगल में भटक गया और खो गया। अंत में उसने अपने घर का रास्ता ढूँढ लिया लेकिन रात भर खलिहान में छिपा रहा। देर होने के कारण वह डर गया। उसके माता-पिता पूरी रात जागकर उसके लिए जंगल में उसके खोजते रहे, क्योंकि वे उससे प्यार करते थे और उसे कमी महसूस करते थे। अगर उसने आपने माता पिता की चिंता को समझता होता तो वह अपने परिवार के साथ बिस्तर पर रात बिता सकता था। हमारे और परमेश्वर के बारे में भी यही सच है। वह चिंतित है और हमें वापस पाने के लिए तैयार है, दूर रहना हमारी अपनी पसंद है ना कि कोई मजबूरी।

होशे की रूपरेखा

I. व्यभिचारी पत्नी और विश्वासयोग्य पति (होशे और गोमेर) 1-3

(कथात्मक, प्रतीकात्मक चित्रण - उड़ाऊ पत्नी)

क- गोमेर का पाप 1

ख- गोमेर की सजा 2

ग- गोमेर की क्षमा 3

II. व्यभिचारी राष्ट्र और विश्वासयोग्य परमेश्वर (परमेश्वर और इजराइल) 4-14

(उपदेश, आध्यात्मिक सत्य - उड़ाऊ लोग)

क- इस्राएल का पाप 4-7

ख- इजराइल की सजा 8-10

ग- इजराइल की क्षमा 11-14

यशायाहः

परमेश्वर मुक्ति है



शीर्षक: भविष्यवक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा है

लेखक: यशायाह "उद्धार यहोवा की ओर से होता है"

लेखन की तिथि: 722-681 ई.पू.

लेखन का स्थान: यहूदा

शामिल समय: यशायाह के समय से लेकर भविष्य के अनंतकाल तक (यह संदेश 5 राजाओं के शासनकाल को शामिल करता है)

प्राप्तकर्ता: दक्षिणी राज्य, यहूदा

मुख्य आयत: 6:1-3 जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, मैं ने यहोवा को ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा, और उसके वस्त्र की डोर से मन्दिर भर गया। उसके ऊपर सराफीम(स्वर्गदूत) थे, प्रत्येक के छह छह पंख थे: दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे हुए थे, दो से वे अपने पांवों को ढांपे हुए थे, और दो से वे उड़ रहे थे। और वे एक दूसरे से पुकार पुकार कर कह रहे थे, "सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।"

मुख्य शब्द: "इजरायल का पवित्र" 25 बार, "न्याई /न्याय दण्ड " 52 बार, "सांत्वना" 18 बार

उद्देश्य: प्रेम और समर्पण के आंतरिक दृष्टिकोण के बिना बाहरी धार्मिक गतिविधि न्याय दण्ड लाती है।

विषय: परमेश्वर पवित्र है और मनुष्य नहीं है, इसलिए जब तक पाप का अंगीकार नहीं किया जाता और उसे हटाया नहीं जा सकता पर पर न्यायदण्ड आता है

पुराने नियम को तीन मुख्य वर्गों में बांटा गया है: इतिहास (उत्पत्ति से एस्तेर तक), कविता (अयूब से सभोपदेशक तक) और भविष्यवक्ता (यशायाह - मलाकी)। सबसे बड़ी भविष्यवाणी की पुस्तकें पहले आती हैं (प्रमुख भविष्यवक्ता - यशायाह से दानियेल तक) और उसके बाद छोटी पुस्तकें आती हैं। यशायाह पहली भविष्यवाणी की पुस्तक है जिसको पलही पुस्तक कहते हैं, इसलिए नहीं कि वह

कालानुक्रमिक रूप से पहली थी, बल्कि इसलिए कि यह पुस्तक सभी भविष्यद्वक्ताओं में सबसे बड़ी पुस्तक है। मात्रा में अग्रणी होने से भी अधिक, यह गुणवत्ता में भी अग्रणी है। 66 अध्यायों के साथ, जैसे बाइबिल में 66 पुस्तकें हैं, इसे छोटी बाइबिल कहा गया है। यशायाह 26 बार 'उद्धार' शब्द का उपयोग करता है जबकि अन्य सभी भविष्यद्वक्ताओं ने इसे संयुक्त रूप से केवल 7 बार ही उपयोग किया है। यह यीशु और उद्धार के बारे में बहुत कुछ दिखाती है। पहले 39 अध्याय मनुष्य की निंदा, उसके उद्धार की आवश्यकता को दर्शाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे बाइबल, ओल्ड टेस्टामेंट की पहली 39 पुस्तकें यही बात दर्शाती हैं। यशायाह के अंतिम 27 अध्याय, और बाइबल की पुस्तकें (नया नियम) परमेश्वर की सात्वना, मनुष्य की आवश्यकता के लिए उसके प्रावधान को दर्शाती हैं। सच में यह एक खास किताब है!

उद्धार की आवश्यकता (1-39) पुस्तक की शुरूआत में यह भविष्यवाणी की गई है कि परमेश्वर का न्यायदण्ड दक्षिणी राज्य यहूदा पर आना है (1-12)। उनके विद्रोह और पाप विस्तृत हैं। मनुष्य की पापपूर्णता के विपरीत हम परमेश्वर की पवित्रता को देखते हैं। परमेश्वर ने यशायाह (6) पर अपनी महिमा प्रकट की और यह यशायाह के पूरे संदेश का उद्देश्य और सामग्री बन गया।

हालाँकि, यशायाह न्यायदण्ड और विनाश की भविष्यवाणी ही नहीं करता है। हर बार जब परमेश्वर न्यायदण्ड का संदेश भेजता है तो वह भविष्य में आशा और बहाली के वचनों को भी शामिल करता है। यशायाह आने वाले मसीहा के बारे में भविष्यवाणियों से भरा हुआ है। उसे एक कुंवारी से जन्म लेना है (7:14) और दाऊद के वंश से आना है (11:1), जिसे 'इमैनुएल' (7:14) कहा जाता है, इजराइल के लिए एक ठोकर का कारण (8:14) और राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश होना है (9:2)। उसे अद्भुत, परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, शांति का राजकुमार कहा जाना चाहिए (9:6)।

फिर, अन्यजातियों पर भी न्यायदण्ड इस आना देखा जाता है (13-27)। बाबुल, मोआब, दमिश्क, कूश, मिस्र और अरब भी अपने ना अंगीकार किए हुए पाप के कारण परमेश्वर के सामने गिर जायेंगे। कोई भी जो परमेश्वर के विरुद्ध हो जाता है, तब या भविष्य में, उसे वोही भुगतना पड़ेगा।

न्याय दण्ड पूरी दुनिया (28-35) पर भी आएगा। भविष्य के एक दिन मसीहा वापस आएगा और उन सभी को न्यायदण्ड देगा जो उसका विरोध करते हैं और जो उसके प्रति वफादार रहते हैं उन्हें पुरस्कृत करेगा। अश्वरू को विशेष रूप से परमेश्वर के उत्तरी राज्य (36-39) के क्रूर व्यवहार के लिए दंडित किया जाएगा।

यशायाह का दूसरा खंड वर्तमान समय से भविष्य में आशा के समय की ओर ले जाता है। यहाँ तक कि यशायाह के दो पुत्रों के नाम भी इस दोहरे संदेश को दर्शाते हैं जिसे परमेश्वर ने उसके द्वारा बोला था। पहले बेटे ने पाप के लिए आने वाले न्याय के बारे में कहा, "लूट के लिए शीघ्र काम करो, शिकार के लिए शीघ्र भागो।" "शेष लोग लौट आएंगे,"

दूसरे बेटे ने उस समय की आने वाली आशा के बारे में बात की जब मसीह पूर्ण शांति और धार्मिकता में शासन करेगा। क्या नाम! जब भी लड़कों को रात के खाने के लिए घर में बुलाया जाता था तो पड़ोसियों को उपदेश सुनाया जाता था!

एक उद्धारकर्ता का प्रावधान (40-66) परमेश्वर अब भी विश्वासयोग्य है, भले ही उसके लोग विश्वासघाती हों। वह अब्राहाम और उसके वंश से किए गए अपने वादों को पूरा करेगा। आराम का समय आएगा जब मसीहा शासन करेगा और हमेशा के लिए शासन करेगा (40-48)। परमेश्वर के सभी शत्रुओं को न्यायदण्ड दिया जाएगा और उन्हें हटा दिया जाएगा।

तब पाप और विद्रोह हटा दिए जाएँगे और सब कुछ सदा के लिए सिद्ध धार्मिकता बन जाएगा (49-57)। इस मसीहा को "पीड़ित सेवक" कहा जाता है, क्योंकि ये दो शब्द उसके और उसके उद्देश्य का वर्णन करते हैं। अध्याय 53 इस बारे में विशेष रूप से स्पष्ट है, ऐसा लग रहा है जैसे कोई किसी एक सुसमाचार में पढ़ता है। कोई आश्चर्य नहीं कि यशायाह को पुराने नियम की किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में नए नियम में उद्धृत और संदर्भित किया गया है। अकेले यशायाह 53 में के नए नियम में लगभग 60 उद्धरण या संकेत हैं! यह एक किताब और अध्याय है जिसे नए नियम को वास्तव में समझने से पहले समझना चाहिए।

यशायाह अपनी किताब को उस समय के विचारों के साथ समाप्त करता है जब छुटकारे को अंततः और पूरी तरह से महसूस किया जाएगा (58-66)। परमेश्वर के लोगों को पुनर्स्थापित किया जाएगा और परमेश्वर की महिमा को पहचाना जाएगा और हर जगह उसकी आराधना की जाएगी। यहूदियों को परमेश्वर की ओर फिरने में क्लेश का समय आयेगा, परन्तु ऐसा होगा। इस प्रकार, बेशक वर्तमान यहूदियों के लिए अंधकारमय प्रतीत होता है, भविष्य बहुत अच्छा दिखता है क्योंकि परमेश्वर इन चीजों और समयों, सबका प्रभारी है। आशा है क्योंकि परमेश्वर का सब पर नियंत्रण है और परमेश्वर अपने वादे कायम रखता है!

पाप को हल्के में लेने के परिणामों के बारे में यशायाह की दर्दनाक चेतावनी आज हम पर भी लागू होती है। परमेश्वर अभी भी पवित्र है, और हम नहीं। यीशु के लहू से ना ढका हुआ पाप न्यायदण्ड के लिए पुकारता है, और एक धर्मी और पवित्र परमेश्वर अंततः पाप पर न्यायदण्ड देगा। पीड़ित सेवक अभी भी सबसे अच्छा उत्तर है, वास्तव में एकमात्र उत्तर है। क्या आपने अपने पाप का अंगीकार किया है और उसे ढकने और हटाने के लिए उसकी दया मांगी है? इस पाप से बीमार दुनिया में भविष्य पाने का यही एकमात्र तरीका है।

यशायाह की रूपरेखा

I. उद्धार की आवश्यकता (परमेश्वर के न्याय के अधीन कराहना) 1-39

क- यहूदा पर न्यायदण्ड 1-12

1. यहूदा का विद्रोह 1-4
2. यशायाह का अधिकार 5-8
3. यहूदा का मसीहा 9-12

ख-अन्यजातियों पर न्यायदण्ड 13-27

1. बाबेल और मोआब का न्याय 13-16
2. दमिश्क, इथियोपिया, मिस्र पर निर्णय 17-20
3. अरब और सोर पर न्याय 21-23
4. भविष्य के राष्ट्रों पर न्याय दण्ड 24-27

ग- संसार पर न्याय दण्ड 28-35

1. न्याय दण्ड आ रहा है 28-30

2. राजा आ रहा है 31-35

घ. अश्वर पर न्याय 36-39

II. एक उद्धारकर्ता का प्रावधान (परमेश्वर के उद्धार में महिमा) 40-66

क-छुटकारे का वादा 40-48

1. परमेश्वर के लोगों के लिए आराम 40-43

2. परमेश्वर के शत्रुओं पर न्यायदण्ड 44-48

ख- छुटकारा प्रदत्त 49-57

1. शांति का राजकुमार 49-51

2. पीड़ित सेवक 52-57

ग- छुटकारे का अहसास होना 58-66

1. परमेश्वर के लोगों का पुनर्स्थापित किया जाना 58-62

2. परमेश्वर की महिमा को मान्यता दी जानी 63-66

मीका:

आशा



शीर्षक: नबी के पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: मीका

लेखन की तिथि: 749 - 697 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: यहूदा

समय शामिल: 749 ईसा पूर्व - अनंत काल

प्राप्तकर्ता: यहूदा और इज़राइल

मुख्य आयत : 4:1-4 अन्त के दिनों में यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर मुख्य रूप से स्थापित किया जाएगा; वह सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा, और देश देश के लोग धारा की नाई उसकी ओर बहते चले आएंगे। और बहुत सी जातियां आकर कहेंगी, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं। वह हमें आपने मार्ग सिखाएगा, तब हम उसके मार्गों पर चलेंगे। वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को कूड़ा साफ़ करने वाली हंसिया बनाएंगे। कोई दूसरे राष्ट्र राष्ट्र के खिलाफ तलवार नहीं उठाएगा, न ही उनका फिर युद्ध के लिए प्रशिक्षण होगा।

प्रमुख शब्द: 9 बार 'सुनें'; 'उजाड़' 4 बार; 9 बार 'इकट्ठा' करना

उद्देश्य: न्याय दण्ड आ रहा है, लेकिन अंततः इज़राइल को बहाल किया जाएगा। विषय: आने वाले न्याय दण्ड के बावजूद भी भविष्य में आशा है।

वैज्ञानिकों ने एक बार एक प्रयोग किया जिसमें उन्होंने बहुत सारे सूअर लिए और उन्हें गहरे पानी में डाल दिया। सूअर 24 घंटे तक तड़पते रहे और फिर डूब गए। इसके बाद उन्होंने एक और समूह लिया और उन्हें पहले समूह की तरह गहरे पानी में डाल दिया। हालांकि 12 घंटे बाद उन्होंने उन्हें 30 मिनट के लिए बाहर निकलने दिया। फिर उन्होंने उन्हें वापस अंदर डाल दिया। डूबने से पहले यह समूह 40 घंटे तक चला। दूसरा समूह पहले की तुलना में लगभग दोगुना लंबा क्यों चला? ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें फिर से बचाए जाने की आशा थी। एक आशा ने सब कुछ बदल दिया।

निराशा - आज हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो निराशा से भरी है। संगीत, कला, सिनेमा और हमारी संस्कृति के अन्य क्षेत्र इसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं। व्यसनों या मनोवैज्ञानिक समस्याओं से पीड़ित बड़ी संख्या में लोग भी इसे निराशा के समय के रूप में इंगित करते हैं। एड्स, परमाणु युद्ध, आर्थिक दबाव, आपसी रिश्तों का टूटना और कार्य स्थल दबाव का भय और खालीपन लाते हैं। इससे निपटने के लिए धारण करने के लिए कोई स्थिर लंगड़ ना होने के कारण और भविष्य में सब कुछ अनिश्चित होने के कारण, आज यह सभी लोगों पर भारी बना हुआ है। और जब वह खट्टा हो जाता है तो ऐसा लगता है कि कुछ भी नहीं बचा है। शैतान, जो इस संसार का राजकुमार है, निराशा को बढ़ावा देता है क्योंकि इसी से लोगों को लगता है कि मृत्यु ही उनके लिए सबसे अच्छा विकल्प है। जैसे-जैसे अंधेरे का साम्राज्य बढ़ता है, वैसे-वैसे आत्महत्या की दर भी बढ़ती है। यह सब इसलिए होता है क्योंकि मनुष्य के पास कोई आशा नहीं है।

परमेश्वर की 'आशा' - आज 'आशा' शब्द की परिभाषा एक इच्छा, एक संभावना, कुछ ऐसा है जिसे हम चाहते हैं कि यह एक घटना का रूप ले। अक्सर जब सब कुछ विफल हो जाता है और आपदा लगती है तो कुछ लोग कहते हैं, "हम जो कुछ बेहतर से बेहतर कर सकते हैं वह है 'आशा'।" यह वह आशा नहीं है जिसके लिए बाइबल 'आशा' शब्द का उपयोग करती है। जब बाइबल 'आशा' शब्द का उपयोग करती है तो यह 'आत्मविश्वास आश्वासन' का जिक्र करती है। इसका मतलब है कि सब कुछ 100% निश्चित है, यह ऐसे निश्चित है कि जैसे यह पहले ही हो चुका है। यह परमेश्वर के वादे पूरे होने की गारंटी है। हमारा विश्वासपूर्ण आश्वासन यह है कि सभी चीजें अच्छे के लिए मिलकर काम करती हैं, जो कुछ भी होता है उस सब में परमेश्वर मालिक है और यह सब हमारी परिपक्वता और उसकी महिमा के लिए होता है, कि यीशु किसी भी क्षण हमारे लिए वापस आ सकता है, कि जब हम मरेंगे तो हम अनंत काल यीशु के साथ बिताएंगे, और यह कि हमारा उद्धार कभी नहीं खो सकता। हमारी आशा किसी ऐसी चीज में नहीं है जिसकी हम कामना करते हैं बल्कि ऐसी चीज है जिसके बारे में हम निश्चित हैं, इसलिए हमारे लिए डरने की कोई बात नहीं है।

मीका की आशा - जबकि प्रत्येक भविष्यद्वक्ता आने वाले न्याय दण्ड का सन्देश देने के बाद आशा प्रदान करता है, मीका विशेष रूप से इस पर ध्यान केंद्रित करता है। प्रत्येक भविष्यद्वक्ता ने छुटकारे के भविष्य के समय के बारे में बात करते हुए अपने संदेश का समापन किया जो परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य लोगों के लिए प्रदान करेगा, मीका इसके बारे में अतिरिक्त विवरण करता है। मीका स्वयं यशायाह के समय में जीवित था और सेवा करता था। जबकि यशायाह एक प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता था जिसने अमीर, शहरी लोगों की सेवा की, मीका एक अनजान व्यक्ति था जिसने गरीब देश के लोगों को प्रचार किया। दोनों ने उस समय सेवकाई की जब उत्तरी राज्य असीरिया के अधीन हो रहा था।

न्याय दण्ड की भविष्यवाणी (1-3) हालाँकि दक्षिणी राज्य के वास्तव में गिरने तक कई और पीढ़ियों का आना बाकि है, अंतिम उलटी गिनती शुरू हो चुकी है। वापस मुड़ने के लिए बहुत देर हो चुकी है, क्योंकि वे अपने पापी मार्ग में बहुत मगन हैं। न्याय आ दण्ड रहा है। उनका घाव लाइलाज है। पाप का बोलबाला है। परिवार की एकता टूट चुकी है। भौतिकवाद, चोरी और षडयंत्र आम हो चूके हैं। लोग गरीबों का फायदा उठाते हैं। नेता स्वार्थी और आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं। वे अच्छाई से घृणा करते हैं और बुराई से प्रेम करते हैं। झूठे भविष्यद्वक्ताओं का बोलबाला है और झूठ को सत्य के रूप में स्वीकार किया जाता है। यहाँ तक कि याजक भी परमेश्वर से दूर हो गए हैं, वे केवल यह सिखाते हैं कि सबसे बड़ी भेंट में क्या लाना होगा। जबकि राष्ट्र के लिए कोई आशा नहीं है, फिर भी व्यक्तिगत रूप से आशा है। दया अभी भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध है जो उद्धार और क्षमा के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ता है। वे इस जीवन में पाप के परिणाम से नहीं बचेंगे, परन्तु वे नरक के अनन्त परिणामों से बच जाएँगे।

बहाली का वादा (4-5) - लगभग उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करते हुए जो यशायाह ने इस्तेमाल किए थे, मीका ने विश्वासयोग्य यहूदियों की आशा के बारे में लिखता है। वह सहस्राब्दी के बारे में विस्तार से बात करता है, जब मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाएगा और लोग एक बार फिर से परमेवर की आराधना करेंगे। मसीहा शासन करेगा, और सभी के लिए शांति लाएगा। सभी अदन वाटिका के माहौल में लौट आएंगे। इजराइल के लिए यह क्या ही शानदार आशा है! मीका कहता है कि जो राजा इस राज्य पर शासन करेगा उसका जन्म बेतलेहेम में होगा (5:2)।

मन फिराने की याचना (6-7) - इस वजह से मीका लोगों से उनकी उपरी मन की उपासना, खोखली रस्में, लगातार की बगावत, धोखे, पाखंड, भ्रष्टाचार, लालच और मूर्तिपूजा से मन फिराने की याचना करता है। इनके कारण न्याय दण्ड तो आएगा, लेकिन इजराइल के लिए एक शानदार भविष्य है जब उनकी सीमाओं का विस्तार किया जाएगा और सभी राष्ट्र मसीहा राजा की आराधना और सेवा करने के लिए यरूशलेम आएंगे। उन सबके लिए यह क्या ही शानदार आशा है!

हमारी धन्य आशा - हमारी आशा यहूदियों की आशा से भी बढ़कर है। हमें भी परमेश्वर के साथ अनंत काल बिताने की बहुत दूर की आशा है। हमारे पास निकट भविष्य में होने वाले मेघारोहण की आशा है, यदि हम पहले मरते हैं, तो तुरंत स्वर्ग में परमेश्वर के साथ होंगे। हमारी यह भी एक वर्तमान आशा है। सभी चीजें एक साथ काम करती हैं, जो कुछ भी होता है उसके लिए एक योजना और उद्देश्य होता है, परमेश्वर संप्रभु है और सब कुछ करता है क्योंकि वह हमसे प्यार करता है। ऐसी आशा में बिना कया होंगे? जब रोमन साम्राज्य बिखरने लगा, तो बहुत से लोग यीशु की ओर मुड़े क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के लोगों के जीवन में आशा देखी थी। हमारा समय प्रारंभिक कलीसिया के साथ-साथ न्याय दण्ड के आने से पहले जो इजराइल का समय है उसके समान है। हम भी, एक अंधेरी और आशाहीन दुनिया में अपनी आशा की रोशनी चमका सकते हैं। याद रखें, संसार की आशा यीशु है!

मीका की रूपरेखा

I. न्याय दण्ड की भविष्यवाणी (परमेश्वर के लोगों पर न्याय दण्ड) 1-3

क- न्याय का होना निश्चित है 1

ख- लालची लोग 2

ग- अन्यायी नेता 3:1-4

घ- झूठे भविष्यद्वक्ता 3:5-8

ङ- विकृत पुजारी 3:9-12

II. बहाली का वादा (परमेश्वर के लोगों के लिए आशीष) 4-5

क- राज्य के दौरान जीवन 4:1-6

ख- राज्य से पहले की घटनाएँ 4:9-13

ग- उसका आगमन 5:1-3

घ- उसका राज्य 5:4-7

ङ- उसकी विजय 5:8-15

III. पश्चाताप के लिए याचिका (परमेश्वर के लोगों के खिलाफ मुकदमा) 6-7

क-अभियोग #1 6:1-5

ख- अंगीकार #1 6:6-8

ग- अभियोग #2 6:9-16

घ- अंगीकार #2 7:1=10

नहूमः

न्याय



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: नहूम ("दिलासा देने वाला ")

लेखन तिथि: 661 - 612 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: इज़राइल

शामिल समय: लगभग 50 वर्ष

प्राप्तकर्ता: नीनवे

मुख्य आयत : 3:5-7 "मैं तेरे विरुद्ध हूँ," सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है। "मैं तेरा घाघरा तेरे मुंह के ऊपर से उठाऊंगा। मैं जाति जाति को तेरा नंगापन और राज्य राज्य को तेरी लज्जा दिखलाऊंगा। मैं तुझे को गंदगी में पटक दूंगा, मैं तेरा बेइज्जत करूँगा और तेरा तमाशा बनाऊँगा। जितने तुझे देखेंगे वे सब तेरे पास से भागेंगे और कहेंगे, 'नीनवे उजड़ गई है; उसके लिये कौन विलाप करेगा?' मुझे तुम्हें दिलासा देने वाला कोई कहाँ मिल सकता है?"

मुख्य शब्द : "प्रतिशोध/बदला" 3 बार

उद्देश्य: योना के पुनरुत्थान के लगभग 150 साल बाद, नीनवे पाप में डूबा हुआ है, इसलिए परमेश्वर पाप के कारण उनके विनाश की घोषणा करता है।

विषय: नीनवे को नष्ट करने में परमेश्वर का न्याय।

मान लीजिए कि किसी ने आपको दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया और आपको एक अच्छे रेस्तरां में ले गया हो। उन्होंने आप के लिए और आपने, दोनों के लिए महंगा खाना मंगवाया, खाने का लुत्फ उठाया, बिना बिल का इंतजार किए उठ कर निकल गया हो। जब आपने उस से पूछा कि उसने बिल का भुगतान क्यों नहीं किया तो वह हैरान रह जाए, और कहे कि उसे तो पता ही नहीं कि भुगतान उसने करना है और वह भुगतान करने के लिए तैयार नहीं है। वे बस एक अच्छा खाना चाहते थे बस इतना ही! अविश्वसनीय सा लग रहा है की नहीं ? हर कोई जानता है कि जो वह करता है उसके लिए आपको

भुगतान करना होता है। या वे करते हैं? अक्सर लोग यह मानकर पाप करते हैं कि उन्हें इसके लिए कभी भुगतान नहीं करना पड़ेगा। परमेश्वर हर एक को उसके पाप के लिए जवाबदेह ठहराता है। जब तक किसी का कोई पाप यीशु के लोहू नीचे नहीं डाला जाए, तब तक वह पाप करनेवाले के सिर पर एक कारण बना रहता है।

नीनवे इसका एक प्रमुख उदाहरण है। निम्रोद द्वारा स्थापित, जिसने बाबेल की स्थापना भी की थी, यह एक बड़ा, वस्तुतः अखंडनीय शहर था। दीवारें 100 फुट ऊँची और इतनी चौड़ी थीं कि तीन रथ अगल-बगल दौड़ सकें। इसके अलावा 1,500 टावर थे जो 200 फीट ऊँचे थे। पूरे शहर के चारों ओर 60 फीट गहरी और 140 फीट चौड़ी खाई थी। दीवारें 60 मील लंबी थीं, जिससे शहर लगभग 350 वर्ग मील का हो गया था। तिग्रस नदी एक तरफ बहती थी और खोसर नदी शहर में से होकर निकलती थी। इसने बहुमूल्य पानी देने के साथ-साथ आगे की सुरक्षा भी प्रदान की हुयी थी। उपनगरों और खेतों ने शहर को घेरा हुआ था। कम से कम 1000000 लोग वहां रहते थे। ये क्रूर, कठोर दिल लोग थे। वे खून बहाने के लिए एक सनक और वेशीपन रखते थे, जिसकी तुलना नाजी जर्मनी में सबसे खतरनाक थी। वे न केवल दूसरे राष्ट्रों को पराजित करते, बल्कि उन्हें सबसे बुरी पीड़ा और संभव कष्ट देने में भी आनंद करते। योना द्वारा 150 साल पहले की बेदारी पूरी तरह से फीकी पड़ गई थी और उनकी बुराई पहले से कहीं ज्यादा बढ़ चुकी थी।

न्याय की घोषणा (1) - मैं नहीं जानता कि नहूम किस प्रकार का वक्ता था, लेकिन वह अत्यधिक प्रतिभाशाली लेखक तो था। पुस्तक एक सुंदर साहित्यिक कृति है। वह परमेश्वर का वर्णन करने के लिए विशेष इब्रानी शब्दों का उपयोग करता है। वह इंगित करता है कि नीनवे के पाप के लिए परमेश्वर बहुत क्रोधित है। परमेश्वर धैर्यवान रहा है लेकिन यहां तक कि परमेश्वर के धैर्य की भी सीमाएं हैं- और उनकी सीमाएं लगभग यहां हैं। परमेश्वर सर्व सामर्थी है, और न्याय दण्ड को इस लिए नहीं रोक कर रख रहा था क्योंकि वह कमजोर था बल्कि इस लिए कि वह पश्चात्ताप करने के लिए अधिक समय दे रहा था। वास्तव में नीनवे को नष्ट करने में परमेश्वर क्रूर नहीं है, वह उनके साथ बहुत धैर्यवान रहा है। उनका न्याय करना संसार के लिए न्याय लाना और उसकी महिमा का प्रदर्शन है। इस से उन्हें वही मिलता है जो उन्होंने चुना था।

विडंबना यह है कि परमेश्वर ने उन नदियों और दीवारों का उपयोग उन्हें नष्ट करने के लिए किया जिन्हें वे सुरक्षा के लिए इस्तेमाल करते थे। यह उन पर उसके न्याय का प्रदर्शन था।

न्याय का वर्णन (2) - नहूम न केवल बताता है कि क्या होगा (अध्याय 1) बल्कि यह भी बताता है कि यह कैसे होगा (अध्याय 2)। बाबेल नगर में बाढ़ लाने और उसे आसानी से नष्ट करने के लिए नदियों का उपयोग करेगा। शहर के अंदर हाकिमों एंड राजकुमारों और लोगों में इतना आत्मविश्वास होगा कि वे जश्न मनाएंगे और नशे में होंगे, उन्हें विश्वास ही नहीं होगा कि नीनवे गिर सकता है। वे गलत साबित होंगे! इतिहास ठीक वैसे ही नीनवे के पतन को दर्ज करता है जैसा परमेश्वर ने भविष्यवाणी की थी!

न्याय का पात्र (3) - अध्याय 3 में विनाश का कारण विस्तृत किया गया है। लोग दुष्ट, क्रूर और खूनी हैं। वे मूर्तिपूजक प्रथाओं, जादू टोना और विनाश के दोषी हैं। उन्होंने जो बोया है वही काटेंगे। उन्होंने किसी पर दया नहीं की और इस लिए उन पर कोई दया नहीं की जाएगी। नगर इतनी बुरी तरह से नष्ट हो जाएगा कि किसी को उसका स्थान याद भी नहीं रहेगा। वही हुआ। लगभग 3,000 वर्षों तक इसका स्थान अज्ञात था, 1842 तक। शहर आपने आप में ही पाप में मर गया था। इसने आपने आप में किसी बदलाव की या पछताने के बारे में सोचने की कोशिश भी नहीं की थी। वह मर गया। उनका सोचना था कि परमेश्वर चिओते पापों के लिए राष्ट्रों का न्याय करेगा, लेकिन वे तो बच ही निकलेंगे। ऐसा नहीं था। दुर्भाग्य से

इसकी अमेरिका के साथ कई समानताएं हैं। मुझे याद है मैंने बिली ग्राहम को कहते हुए सुना था कि यदि परमेश्वर अमेरिका का न्याय नहीं करता है तो उसे सदोम और अमोरा से माफी मांगनी होगी! ठीक, परमेश्वर किसी से माफी माँगने नहीं जा रहा है। पाप की कीमत चुकानी पड़ती है।

ऐसा कहीं नहो होता कि कोई किसी रेस्तराँ में जाने की सोचे और अपने द्वारा खाए जाने वाले भोजन के लिए भुगतान करने के बारे में नहीं सोचेगा, लेकिन आज बहुत से लोग सोचते हैं कि उन्हें अपने पाप के लिए भुगतान नहीं करना पड़ेगा। यह राष्ट्रों और व्यक्तियों दोनों पर लागू होता है। क्या आप खुश नहीं हैं कि यीशु ने क्रूस पर आपके पापों का भुगतान किया और, क्योंकि आपने उसके उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार कर लिया है, आपको अब इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है? अभी कुछ समय लें और जो उसने आपके लिए किया है और जो वह आपके लिए करेगा उसके लिए उसका धन्यवाद करें।

नहम की रूपरेखा

I. न्याय की घोषणा (नीनवे के खिलाफ क्रोध) 1

क- परमेश्वर का प्रतिशोध 1:1-7

ख- परमेश्वर का प्रतिशोध 1:8-15

II. न्याय का वर्णन (नीनवे में हाय हाय) 2

क-आक्रमण 2:1-5

ख- हार 2:6-13

III. अर्जित न्याय (नीनवे को चेतावनी) 3

क- असीमित दुष्टता 3:1-7

ख- अनसुनी चेतावनी 3:8-10

सपन्याह:

यहोवा का दिन



शीर्षक: भविष्यवक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: "सपन्याह" का अर्थ है "वह जिसे परमेश्वर ने छिपा रखा है"

लेखन तिथि: लगभग 630 ई.पू

लेखन का स्थान: यहूदा (यरूशलेम?)

शामिल समय: 630 ई.पू से लेकर भविष्य में अनंत काल के लिए

प्राप्तकर्ता: यहूदा और यरूशलेम

मुख्य आयत: 1:7, 12

7, प्रभु यहोवा के साम्हने शांत रहो, क्योंकि यहोवा का दिन निकट है। यहोवा ने यज्ञ तैयार किया है; जिनको उसने न्योता दिया, उन्हें, उसने पवित्र किया है।

12, उस समय मैं दीपक लिए हुए यरूशलेम में दूढ़-ढाढ़ करूंगा, और जो लोग दाखमधु के तलछट तथा इसके मैल के समान हैं, जो यह सोचते हैं, कि यहोवा ना कुछ भला और ना बुरा करेगा, उनको दण्ड दूंगा।

मुख्य शब्द: "प्रभु का दिन" (20 बार), "उजाड़" (7 बार), "शेष" (4 बार)

उद्देश्य: आने वाले न्याय की चेतावनी देना और विश्वासयोग्य शेष लोगों को सांत्वना देना

विषय: बाबेल के आक्रमण के रूप में यहोवा के दिन का स्वरूप

हर कोई भविष्य जानना चाहेगा। लोग उम्मीद कर रहे हैं कि आगे क्या है इसका कुछ जवाब मिल जाएगा। दुर्भाग्य से वे मानते हैं कि भविष्य वर्तमान से बेहतर होगा। इसी पर वे अपनी आशा का आधार रखते हैं। लेकिन तब क्या होगा जब भविष्य खराब हो? फिर क्या? यह सपन्याह के द्वारा उसके समय के लोगों के लिए परमेश्वर का सन्देश था, और यह आज भी लोगों के लिए परमेश्वर का सन्देश है। उस समय परमेश्वर उन्हें एक ही आशा दे सकता था कि वह दूर भविष्य में है - मतलब यहोवा का दिन।

यहोवा के दिन में न्यायदण्ड (1:1 - 3:8) -सपन्याह ने यिर्मयाह के समान उस समय सेवा की, जब यरूशलेम बाबेल के अधीन हो गया था। जबकि यिर्मयाह लोगों को परमेश्वर के प्रति आकर्षित करने में कोमल था, सपन्याह ने राष्ट्र के विवेक पर कड़ा प्रहार किया। उसका संदेश केवल 53 पदों में समाहित है लेकिन इसमें पूरे पुराने नियम में न्यायदण्ड के कुछ सबसे मजबूत कथन शामिल हैं। ईश्वर ब्रह्मांड का ईश्वर है। वह पवित्र और धर्मी है और लोगों से उसकी अपनी इच्छा के अनुसार जीने की उम्मीद करता है। पाप और विद्रोह की सजा तो मिलनी ही चाहिए। यहूदी परमेश्वर से इतने दूर हो गए हैं कि आने वाले न्याय को रोकने के लिए बहुत देर हो चुकी है। मूर्तिपूजा, उदासीनता, अनुरूपता और गैरजिम्मेदारी के पाप बहुत लंबे समय से बहुत दूर चले गए हैं। न्यायदण्ड तो निश्चित रूप से आ रहा है। आशा एकमात्र, प्रभु का आने वाला दिन है (चार्ट और अधिक जानकारी के लिए योएल की पुस्तक देखें)। इस भविष्य के न्याय में न केवल इजराइल बल्कि सभी गैर-यहूदी राष्ट्र भी शामिल होंगे। यह हर-मगिदोन की लड़ाई के साथ समाप्त होगा।

यहोवा के दिन में उद्धार (3:9-20)- फिर सहस्राब्दी आने पर इजराइल का आनन्द और खुशी का समय आएगा। यहूदी पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर की ओर फिरेंगे और मसीह दाऊद के सिंहासन पर सदा के लिए राज्य करेगा। दुर्भाग्य से उन्हें पश्चाताप करने में क्लेश के समय का समना करना होगा।

उस समय उनकी समस्या, जैसा कि अक्सर होता है, लापरवाही होगी। लापरवाही को 'मसीही जगत का अभिशाप' कहा गया है। लापरवाही परमेश्वर के लोगों को समझौता करने के लिए उकसाता है। यह साफ़ तौर पर विद्रोह करने से अधिक घातक है क्योंकि इसे पहचानना और बदलना कठिन होता है। गुनगुनापन एक ऐसी चीज है जिससे परमेश्वर घृणा करता है (प्रकाशितवाक्य 3:15-16)। लापरवाही एक दुर्भावना की तरह है: जब इसे नज़रअंदाज़ किया जाता है तो यह घातक होता है, लेकिन जब इसका सामना किया जाता है तो उसे हराया जा सकता है। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हर लापरवाही को, जो आपके जीवन में आ गई है, आप को दिखाए। पश्चाताप करें और उससे क्षमा और बहाली के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ें।

सपन्याह की रूपरेखा

I. यहोवा के दिन में न्याय दण्ड (बदला) 1-3:8

क- पृथ्वी पर न्याय दण्ड 1:1-3

ख- यहूदा पर न्यायदण्ड 1:4-2:3

ग- अन्यजातियों पर न्यायदण्ड 2:4-15

घ- यरूशलेम पर न्याय 3:1-7

ङ- सभी राष्ट्रों पर निर्णय 3:8

II. यहोवा के दिन में उद्धार (पुनर्स्थापना) 3:9-20

क- इजराइल का पुनर्मिलन 3: 9-10

ख- इजराइल का पश्चाताप 3:11-13

ग- इजराइल का आनन्द 3:14-15

घ- इस्राएल का उद्धारकर्ता 3:16-20

हबक्कूकः
धैर्य



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: हबक्कूक ("मिल्ल")

लेखन तिथि: 610 - 599 ई.पू

लेखन का स्थान: यहूदा

शामिल समय: बेबीलोन द्वारा यहूदा की विजय

प्राप्तकर्ता: यहूदा, विजय होने से ठीक पहले

मुख्य वचन: 2:4 "देखो, वह फूला हुआ है, उसकी इच्छाएं धर्मी नहीं हैं - परन्तु धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा"

प्रमुख शब्द: "क्यों" "हाय" (5 बार)

उद्देश्य: हबक्कूक चिंतित है कि

यहूदा के पाप पर परमेश्वर स्पष्ट रूप से चिंत क्यों नहीं है। परमेश्वर कहता है कि वह उन्हें बाबेल के द्वारा अनुशासित करेगा, फिर बाबेल को न्यायदण्ड देगा।

विषय: मनुष्य के साथ व्यवहार करने में परमेश्वर का धैर्य

आप क्या करते हैं जब आप अपने आप को अधर्म- शासित दुनिया में पाते हैं, जब आपके आस-पास के लोग परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करते हैं, फिर भी परमेश्वर इसके बारे में कुछ नहीं करता है? हबक्कूक के सामने यही समस्या थी। महीने दर महीने, साल दर साल उसने अपने राष्ट्र को घोर पाप के कारण बिखरते हुए देखा। "कुछ करो, परमेश्वर जी !" वह रोता/पुकारता है। तब परमेश्वर कुछ करना शुरू करता है - वह कसदीओं द्वारा अपने लोगों को अनुशासित करता है! "लेकिन वे तो हमसे भी बदतर हैं!" हबक्कूक रोता है। "मुझे पता है," परमेश्वर कहता है , मैं जल्द ही उनका भी न्याय करूंगा।

हबक्कूक 3 छोटे, इंगित अध्याय हैं। इसमें हबक्कूक और परमेश्वर के बीच संवाद शामिल है उसके बारे में जो कुछ हो रहा है और इस बारे में कि परमेश्वर के व्यवहार को कैसे स्वीकार करें, तब भी जब हम उन्हें समझ भी नहीं पाते हैं। यह आज हम पर भी व्यक्तिगत रूप से लागू होता है, जब हालत ऐसे नान जाते हैं जिन्हें हम समझ नहीं पते हैं। एक राष्ट्र के रूप में यह हम पर लागू होता है क्योंकि हम भी परमेश्वर से दूर हो गए हैं।

समस्याएँ (1) - परमेश्वर अपने लोगों को पाप में रहने की अनुमति क्यों देता है? दुष्ट क्यों फलते-फूलते हैं? क्यों परमेश्वर अपने लोगों को पाप में जीने की अनुमति देता है, और उनको अल्पसंख्यकों का लाभ उठाने और उन पर अत्याचार करने की, जो उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने का प्रयास करते हैं, क्यों अनुमति देता है ?

लोग आज एक ही बात पूछते हैं: परमेश्वर युद्ध होने से क्यों नहीं रोकता? भले मानस कष्ट में क्यों रहते हैं? अनुचित चीजें क्यों होती हैं? परमेश्वर गर्भपात करने की रिवायत कैसे बनी रहने दे सकता है ? हबक्कूक को जो वह उत्तर देता है, वह यह है, कि वह धैर्यवान है। हमें उसके द्वारा गलत को सही करने की प्रतीक्षा करने के लिए धैर्य रखना चाहिए। आखिरकार, अगर वह हमारे साथ धैर्य नहीं करता तो हम कहाँ होते? यदि वह हमारे जन्म से पहले इस संसार का न्याय करता तो हम कहाँ होते? धैर्य उन लोगों में एक महत्वपूर्ण गुण है जो यीशु के समान होंगे। आज इसकी बहुत कमी है। सब कुछ तेजी से और कुशलता से होना चाहिए। हमारा पूरा जीवन उनमें अधिक से अधिक रटने की कोशिश से भरा हुआ है। परमेश्वर हमें कहता है कि हम धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करें (भजन संहिता 27:14; 40:1)। परमेश्वर कभी देर नहीं करता, लेकिन वह कभी जल्दबाजी भी नहीं करता है। परमेश्वर को हड़काने का कोई तरीका नहीं है, वह अपनी गति से कार्य करता है, और वह धैर्यवान परमेश्वर है।

हालाँकि, जल्द ही, परमेश्वर हबक्कूक से कहता है, वह कसदियों के साथ लोगों को उनके पाप का दंड देगा। पाप के प्रति उसका कोई दूसरा विचार नहीं है, उसके पास एक योजना है जो खुल रही है। हालाँकि, इससे हबक्कूक के लिए एक और सवाल खड़ा होता है। बाबेल के लोग तो यहूदियों से भी बदतर थे! क्या परमेश्वर ने अपने मानक बदल दिए हैं? बिलकुल नहीं, यहूदी अधिक जिमेदार थे। क्या परमेश्वर अपने लोगों को पूरी तरह त्याग देगा? यदि हाँ, तो अब्राहाम से किए गए उसके वादों का क्या होगा ? उसके खास लोगों को नष्ट हो जाने से परमेश्वर की महिमा कैसे होगी?

समाधान (2) - परमेश्वर हबक्कूक के इन प्रश्नों का उत्तर उसे आश्चस्त करते हुए देता है कि वह धर्मी है - वह बाबेल का भी न्याय करेगा। जो धर्मी हैं वे पाप के अनन्त परिणामों से बच जाएँगे, परन्तु लौकिक परिणामों से नहीं। "धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा" (2:4) इसे नए नियम में तीन बार उद्धृत किया गया है। (रोमियों 1:17; गलातियों 3:11; इब्रानियों 10:38)। यह वह आयत है, जिसे परमेश्वर ने मार्टिन लूथर द्वारा सुधार शुरू करने के लिए, उसे प्रेरित करने के लिए इस्तेमाल किया था। परमेश्वर कहता है कि अधर्मी, चाहे यहूदी हों या कसदी, नाश होंगे और धर्मी, चाहे वे कोई भी हों, अनन्त जीवन पाएँगे। परमेश्वर कहता है कि पाप के प्रति उसका कोई दूसरा विचार नहीं है, वह उसका न्याय करेगा (गलतियों 6:7)। "धैर्य रख, हबक्कूक," परमेश्वर कह रहा है, "मैं जानता हूँ कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ!" लेकिन धैर्य सीखना तो कठिन है। यह स्वाभाविक रूप से या आसानी से नहीं आता है। हमें बड़ाने और हमें धैर्य सिखाने के लिए कष्ट और कठिनाइयों की आवश्यकता पड़ती है (रोमियों 5:3; अय्यूब 1:21; याकूब 5:11)। हम केवल तब ही यह देख सकते हैं कि परमेश्वर कितना महान है, जब हम धैर्यपूर्वक उसके कार्य करने की प्रतीक्षा करते हैं।

स्तुति (3) - हबक्कूक ने परमेश्वर की सर्वोच्च शक्ति को महसूस किया और यह जाना कि सारी सृष्टि उसके हाथों का काम है और उसके नियंत्रण में है। परमेश्वर प्रकृति की शक्तियों के साथ-साथ दुनिया के राष्ट्रों को भी आपने नियंत्रण में रखता है। भले ही ऐसा लगता था कि चीजें नियंत्रण से बाहर थीं, परमेश्वर का अभी भी नियंत्रण था (और है)। वह परमेश्वर के संप्रभु नियंत्रण में होने के लिए, और हर हालत में, परमेश्वर की स्तुति और विश्वास में बने रहने के लिए अपनी पुनः प्रतिबद्धता की जबरदस्त पुष्टि करने

के साथ अपनी बात चीत समाप्त करता है। चाहे अंजीर के वृक्षों] न फलें, और न दाखलताओं में दाखें लगे, चाहे जलपाई के पेड़ सूख जाएं, और खेतों में कुछ अन्न न उपजे, चाहे बाड़े में भेड़-बकरियां न हों, और गोशालों में गाय-बैल न हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित रहूंगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित रहूंगा। प्रभु यहोवा मेरा बल है; वह मेरे पाँव हिरण के पाँव के समान बना देता है, वह मुझे मेरे ऊँचे स्थानों पर ले जाता है।

हबक्कूक की रूपरेखा

I. समस्याएं (हबक्कूक के प्रश्न) 1

क- प्रश्न 1: "परमेश्वर अपने लोगों को पाप में रहने की अनुमति क्यों देता है?" 1:1-4

ख- उत्तर 1: "परमेश्वर यहूदियों को अनुशासित करने के लिए कसदिओं का उपयोग करेगा" 1:5-11

ग- प्रश्न 2: " परमेश्वर अविश्वासियों को अपने लोगों को अनुशासित करने की अनुमति कैसे दे सकता है?" 1:2-2:1

II. समाधान (परमेश्वर का उत्तर) 2

उत्तर 2: "परमेश्वर धर्मी है और कसदिओं का भी न्याय करेगा।" 2:2-20

III. प्रशंसा (हबक्कूक की प्रतिक्रिया) 3

क- परमेश्वर के व्यक्तित्व के लिए स्तुति करता है 3:1-3

ख- परमेश्वर की शक्ति के लिए स्तुति करता है 3:4-7

ग- परमेश्वर के उद्देश्य के लिए स्तुति करता है 3:8-16

घ- परमेश्वर में विश्वास होने के कारण स्तुति करता है 3:17-19

बाइबिल अवलोकन-17

असीरियन कैद



मुख्य घटनाएँ: उत्तर (इज़राइल) असीरिया में कैदी

मुख्य लोग:

बाइबल की पुस्तकें:

बाइबल वचन: 2 राजा 17:18 तब यहोवा इजराइल से बहुत क्रोधित हुआ और उन्हें अपने साम्हने से दूर कर दिया। केवल यहूदा का गोत्र बचा रहा।

समय: 722 ई.पू

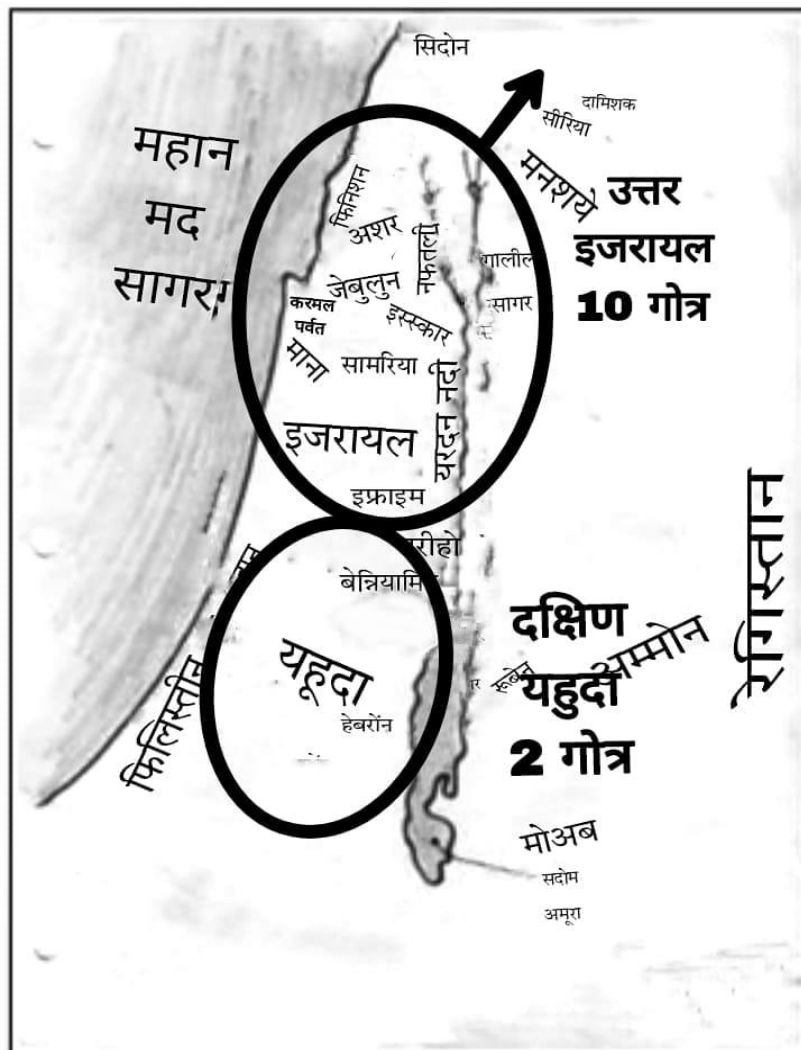
इस समय की विश्व घटनाएँ:

फारस में जोरोअस्त्र

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन से असीरिया तक

								भविष्यद्वक्ता
								न्यायी
				याकूब	यूसफ			सुलेमान
				यहोशु	दाऊद			असीरियन कैद
				लज्पल	इसहाक			विभाजन
				बाबेल	अब्राहाम			
				मूसा	शाऊल			
				2000				1000
				ई.पू.				ई.पू.
				4000 ई.पू.	3000 ई.पू.			1 ई. पू





बाइबल के इतिहास में इस समय के दौरान उत्तरी राज्य, इजराइल को अशूर ने बंदी बना लिया था। अशूर इस क्षेत्र में अग्रणी विश्व शक्ति था और बहुत क्रूर था। वे एक राष्ट्र के बाद दुसरे राष्ट्र को अपने नियंत्रण में ले आए। उन्होंने इजराइल पर तीन या चार बार आक्रमण किया और उन्हें अशूर को भारी कर देने के लिए विवश किया। शल्मनेसेर ने फिर हमला किया और, राजधानी शहर सामरिया की तीन साल की घेराबंदी के बाद, इसे 720 ईसा पूर्व में हरा दिया। उत्तरी साम्राज्य, इजराइल लगभग 200 वर्षों तक एक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में बना रहा। उनके उन्नीस राजाओं में से हर एक दुष्ट था, एक भी धर्मी नहीं था।

अशूरियों की यह प्रथा थी कि वे जिस देश को जीत लेते उसको पूरी तरह से नष्ट कर देंते और उस देश के लोगों को बड़ी संख्या में ले जाकर कब्जा किये हुए दुसरे देश में धकेल देते, इस तरह एक दुसरे के साथ लोगों को स्थानांतरित कर देते। इसने उत्तर, सामरिया को यहूदियों और अन्यजातियों के मिश्रण के रूप में छोड़ दिया, जिन्होंने समय समय पर अंतर्जातीय विवाह किए और आधे यहूदियों, आधे अन्यजातियों की एक जाति बन कर रह गए। यही कारण है कि नहेम्याह ने शहर के पुनर्निर्माण में उनकी मदद को

अस्वीकार कर दिया और यीशु के दिनों में सामरियों को इतना अस्वीकार क्यों किया जाता था (नहेमायाह 2:19-20; 4; यूहन्ना 4:1-9; लूका 10:33; 17:16; यूहन्ना 8:44)).

परमेश्वर ने उन्हें यहूदा पर विजय प्राप्त करने की अनुमति नहीं दी क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसके ईश्वरीय अवशेष वहां दूसरे देशों में चले जाएँ और उनके वंशजों के में विवाह करें। इसलिए उसने अश्शूर को यहूदा को पराजित करने और उन्हें बन्दी बनाने की अनुमति नहीं दी।

जब ये दस गोत्र बंधुआई में गए तो वे 'खोए' नहीं थे, क्योंकि धर्मी लोग , उनमें से प्रत्येक विश्वासी लोग पहले ही दक्षिण, यहूदा में चले गए थे। इस प्रकार दक्षिणी राज्य, यहूदा, वास्तविक यहूदी राष्ट्र बन गया जिसमें सभी बारह गोत्रों के विश्वासी थे। इसलिए राष्ट्र एक साथ रहा और कोई भी गोत्र 'नष्ट' नहीं हुआ (याकूब 1:1; प्रेरितों के काम 26:6-7)। लेकिन जो अश्शूर ले जाए गए वे कभी वापस नहीं आए, और उत्तरी राज्य, इजराइल, फिर कभी अस्तित्व में नहीं आया।

उन लोगों के लिए कितना दुखद अंत है, जिन पर परमेश्वर ने इतनी अधिक कृपा की थी। हम इस नमूने को पूरी बाइबल में बार-बार देखते हैं : परमेश्वर प्रेम और अनुग्रह से आगे बढ़ता है, लेकिन लोगों की प्रतिक्रिया अस्वीकृति और अवज्ञा ही है। फिर भी वह क्षमा करने, पुनर्स्थापित करने और अपनी आशीषों को जारी रखने के लिए तैयार होता है। हालांकि अधिकांश उसे अस्वीकार करते हैं। आज भी यही हाल है।

बाइबिल अवलोकन 18.

बाबेल की कैद



मुख्य कार्यक्रम: यहूदी-बाबेल की कैद में

मुख्य लोग: यिर्मयाह

बाइबल की पुस्तकें: यिर्मयाह, विलापगीत

बाइबल आयत: यिर्मयाह 21:14 मैं तुझे तेरे कामों के अनुसार दण्ड दूंगा, यहोवा की यही वाणी है।

2 इतिहास 36:15-19 उनके पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने अपने दूतों के द्वारा उनके पास बार बार कहला भेजा, क्योंकि वह अपनी पक्की प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था।

16 परन्तु वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते, और उसके वचनों को तुच्छ जानते, और उसके भविष्यद्वक्ताओं की ठट्ठों में उड़ाते, जब तक कि यहोवा का कोप उसकी प्रजा पर भड़क ना उठा जिसका कोई उपाय भी न रहा।

17 उस ने उन पर कसदियों के राजाओं से चढ़ाई कराई, और जिन्होंने उनके जवानों को पवित्रस्थान में तलवार से मार डाला, और न तो जवान पुरुष, न जवान स्त्री, न अर्धेड़ों को, न बूढ़े को छोड़ा। परमेश्वर ने उन सभी को नबूकदनेस्सर के हाथ में सौंप दिया।

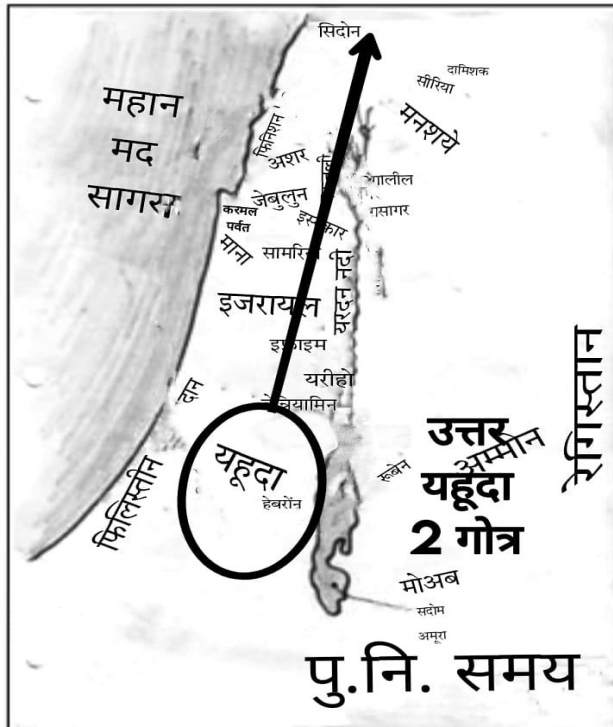
18 वह परमेश्वर के मन्दिर के सब पात्र, क्या छोटे, क्या बड़े, और यहोवा के भवन के खजाने, और राजा और उसके हाकिमों के खजाने को उठा ले गया।

19 उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर में आग लगा दी, और यरूशलेम की शहरपनाह को ढा दिया; उन्होंने सभी महलों को जला दिया और वहाँ की सभी मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट कर दिया।

समय: 586 ई.पू

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन, बाबेल

			याकूब	यूसफ	न्यायी
				सुलेमान	असीरियन
	लज्पल	इसहाक	यहोशु	दाऊद	कैद
	बाबेल	अब्राहाम	मूसा		विभाजन
			2000 ई.पू	1000 ई.पू	1 ई.पू
4000 ई.पू	3000 ई.पू		ई.पू		



बाइबल अवलोकन का यह भाग यहूदा राष्ट्र पर और इसके के बंधुआई में जाने पर केंद्रित है।

दक्षिणी राज्य, यहूदा, उत्तर राज्य के अशूर की बन्धुवाई में जाने के बाद लगभग 150 वर्षों तक एक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में रहा। वे लगभग 350 वर्षों तक एक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में रहे। उनके बीस राजा हुए, लेकिन उनमें से केवल आठ ही धर्मी थे, और उनमें से भी अधिकांश अपने पूरे शासनकाल में धर्मी नहीं रहे थे।

भविष्यवक्ताओं द्वारा बार-बार चेतावनियों के बावजूद, दक्षिणी राष्ट्र परमेश्वर से दूर हो गया और मूर्तिपूजक देवताओं और मूर्तियों का अनुसरण करता रहा। पुनरुद्धार के कुछ ही समय थे, लेकिन वे बहुत छोटी अविधि के थे। अंत में, बाबुल राष्ट्र से न्यायदण्ड आया, जिसने दुनिया के उस हिस्से में अशूर की सत्ता को पलट दिया था। उनका साम्राज्य बढ़ता रहा क्योंकि उन्होंने एक के बाद एक राष्ट्रों पर कब्जा कर लिया था।

605 ई.पू. में बाबेल ने हमला किया और दानियेल सहित यहूदा से कई बन्धुओं को ले लिया (दानियेल 1:1-6)। फिर 597 ईसा पूर्व में यहोयाकीम को बंदी बना लिया गया (2 इतिहास 36:5-6)। तीन महीने और दस दिन बाद यहोयाकीन, शाही परिवार के अन्य सदस्यों के साथ, बंदी बना लिया गया (2 इतिहास 36:9-10; 2 राजा 24:15-17)। अंत में, 586 ईसा पूर्व में, डेढ़ साल की घेराबंदी के बाद, यरूशलेम को जीत लिया गया और नष्ट कर दिया गया। मंदिर के पवित्र लेखों के साथ, अधिकांश लोगों को बंदी बना लिया गया। केवल सबसे गरीब लोग बचे रह गए (2 राजा 25)।

सत्तर वर्षों के बाद परमेश्वर ने अपने लोगों को अपने देश में लौटने की अनुमति दी (यिर्मयाह 25:12; 29:10)। यह 516 ईसा पूर्व में हुआ था जब सिरास ने कुछ यहूदियों को फिलिस्तीन की भूमि पर लौटने की अनुमति दी दे थी। हालाँकि, यहूदियों पर बाबेल की बंदी का स्थायी प्रभाव तो था। एक बात तो यह है कि वे आज तक कभी भी मूर्तिपूजा में नहीं भटके हैं। इसके अलावा, वे किसानों और चरवाहों की कृषि संस्कृति से व्यवसायी श्रेणी की ओर मुड़ गए। वे आज भी दुनिया के सबसे अच्छे और सबसे सफल व्यवसायी श्रेणी में से एक हैं। यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने में विफल होने के बावजूद, वह (परमेश्वर) अभी भी अपने चुने हुए लोगों की रक्षा करता है और उन्हें आशीष देता है।

यिर्मयाह:

अंतिम मौका:



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: यिर्मयाह, 66 वर्षों तक भविष्यद्वक्ता

लेखन की तिथि: लगभग 650 ई.पू

लेखन का स्थान: यहूदा और उसके बाद मिस्र

समय शामिल: 626 - 560 ई.पू

प्राप्तकर्ता: यहूदा और यरूशलेम में रहने वाले यहूदी

मुख्य वचन: 21:7, 14 इसके बाद, यहोवा की यह वाणी है, मैं यहूदा के राजा सिदकियाह, और उसके कर्मचारियों, और जो लोग इस नगर में मरी, तलवार और अकाल से बचे रहेंगे, उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के वश में कर दूंगा और जो अपने जीवन की तलाश करते हैं, उनके शत्रुओं के वश में कर दूंगा। वह उन्हें तलवार से मार डालेगा; वह उन पर कोई दया या तरस या करुणा नहीं दिखाएगा।' ... मैं तुम को तुम्हारे कामों के अनुसार दण्ड दूंगा, यहोवा की यही वाणी है। मैं तुम्हारे जंगलों में ऐसी आग लगाऊंगा जो तुम्हारे चारों ओर सब कुछ भस्म कर देगी।'"

प्रमुख शब्द: "अधर्म/पाप/अपराध" 53 बार, "बंदी" 51 बार, "तितर बितर" 14 बार, "बुराई" 81 बार

उद्देश्य : यह दिखाने के लिए कि यहूदा का पाप ही बाबुल की बंधुआई कारण है।

विषय: पश्चाताप करने और पाप से मुड़ने के द्वारा न्याय से बचने के लिए यहूदा के लिए अंतिम याचना ।

आकर्षक शक्ति उन अटूट नियमों में से एक है जिन को परमेश्वर ने अपने ब्रह्मांड में बनाया है। जो बड़ता है उसे घटना स्वभाविक है। बर्फ पर फिसलो और तुम नीचे जाओगे। बिना परिणाम के कानून तोड़ा नहीं जा सकता। परमेश्वर के परिणामों के साथ अन्य नियम भी हैं। वे सभी प्रकृति में नहीं हैं। कई आध्यात्मिक कानून हैं। इनमें से एक सबसे दृढ़ बात यह है कि पाप न्यायदण्ड लाता है। पाप करके इस सिद्धांत को तोड़ो और आप को इसके परिणाम देखने होंगे। दुर्भाग्य से हम इन नियमों के बारे में कठिन तरीके से सीखते हैं: बर्फ पर गिरना या हमारे पाप के परिणाम का भुगतना। विभाजन के बाद यहूदा में रहने वाले यहूदियों ने भी इसे कठिन तरीके से सीखा। परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी देने के लिए यिर्मयाह को भेजा लेकिन वे तब तक इसे सुनने से इनकार करते रहे जब तक कि बहुत देर नहीं हो चुकी थी ।

यिर्मयाह जब बहुत छोटा ही था तबसे ही उसे भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाया गया था। परमेश्वर ने भयानक समय के कारण उसे शादी करने से मना कर दिया था। यहूदा के अंतिम पाँच राजाओं के शासनकाल के दौरान, उसने 66 वर्षों तक सेवा की। उसके(परमेश्वर के) संदेश ने उसका दिल तोड़ दिया और बोलते हुए वे अक्सर रो पड़ता था। इसलिए उसे "रोता हुआ भविष्यवक्ता" भी कहा जाता है। उसके शब्दों ने उसे इतना आहत किया कि वह प्रचार करना बंद करना चाहता था, लेकिन परमेश्वर ने उसे ऐसे नहीं करने दिया। उसकी लंबी वफादारी के बावजूद, उसके द्वारा कभी भी किसी का मन परिवर्तन नहीं हुआ। उसे खारिज कर दिया गया, उससे नफरत की गई, उसे पीटा गया, उसे काठ और जेल में डाल दिया गया, उस पर और राजद्रोह का आरोप लगाया गया। यरुशलम पर बबेलियों द्वारा कब्जा करने के बाद उसे यहूदियों के एक समूह द्वारा मिस्र जाने के लिए मजबूर किया गया था जो वहां से आजादी के लिए भाग गए थे। यिर्मयाह मिस्र में वृद्धावस्था में मर गया, शायद उसे पत्थरवाह करके मार डाला गया।

यहूदियों के लिए अंतिम अवसर (अध्याय 1-45) परमेश्वर, यिर्मयाह के द्वारा, यहूदियों को आने वाले विनाश की चेतावनी देता है। वे बहुत लंबे समय से बहुत बुरे रहे हैं। राष्ट्रीय पश्चाताप के लिए बहुत देर हो चुकी है, लेकिन लोग अभी भी पश्चाताप कर सकते हैं और उद्धार पा सकते हैं। पर ऐसे कोई नहीं करता है। वे पाप की गंभीरता को भूल चुके हैं। यिर्मयाह और शायद एक छोटे से विश्वासयोग्य अवशेष के अलावा कोई भी पाप को पाप नहीं कहेगा और पश्चाताप के लिए पुकारेगा । परमेश्वर के लोग पाखंडी, घमण्डी, अहंकारी और परमेश्वर के प्रति विपरीत थे। बाहरी रूप से वे बड़ी सफलता और समृद्धि के समय में रह रहे थे, लेकिन भीतर से वे भ्रष्ट और खाली थे। यिर्मयाह ने अपने शब्दों और कार्यों के द्वारा लोगों को उनके मार्गों के पापपूर्ण तरीके को दिखाने का प्रयास किया। उसने विवाह नहीं किया, पार्टियों या दावतों में नहीं गया, और परमेश्वर के सत्य को चित्रित करने के लिए वस्तुनिष्ठ पाठों का उपयोग करता था। उसने एक मिट्टी के घड़े को तोड़ दिया, यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर ने जो राष्ट्र बनाया था, उस पर परमेश्वर की संप्रभुता है। एक अन्य समय में उन्होंने लोगों को यह दिखाने के लिए लकड़ी का जूआ पहना कि वे जल्द ही बंधन में चले जायेंगे ।

फिर भी, न्याय के बीच आशा की किरण है। उन्हें 70 साल की गुलामी के बाद यरूशलेम लौटने की अनुमति दी जाएगी, और भविष्य में छुटकारे का समय आ रहा है जब परमेश्वर स्वयं दाऊद के सिंहासन पर हमेशा के लिए शासन करेगा। इसकी प्रत्याशा में और आशा दिखाने के लिए, यिर्मयाह शहर के गिरने से ठीक पहले जमीन खरीदता है जब सब कुछ निराशाजनक लगता है।

जैसे-जैसे लोगों को अपने खतरे के बारे में पता चला और बाबुल द्वारा विनाश निश्चित और जल्द लगने लगा था, तब भी वे पश्चाताप नहीं करते थे। वे इस समय तक बहुत कठोर और घमंडी थे। बाबेल के आने और शहर को नष्ट करने और अधिकांश लोगों को मार डालने या गुलाम बनाने के बाद भी, वे फिर भी परमेश्वर की ओर नहीं मुड़े। परमेश्वर की व्यवस्था यह है कि पाप का न्याय किया जाना चाहिए, इसे तोड़ा नहीं जा सकता।

अन्यजातियों के लिए अंतिम अवसर (अध्याय 46-51) -जो आप बोते हैं उसे काटने का यह सिद्धांत न केवल यहूदियों पर लागू होता है, बल्कि सभी राष्ट्रों पर लागू होता है, और जो पश्चाताप नहीं करते हैं उनका भी न्याय किया जाएगा। परमेश्वर पाप का न्याय करता है, सबसे पहले अपने लोगों के बीच (1 पतरस 4:17) लेकिन अंततः सभी के बीच।

परमेश्वर आज भी पाप का न्याय करता है- ऐसा न हो कि कोई यह सोचे कि परमेश्वर ने इस सिद्धांत को बदल दिया है, क्रूस को देखें। यह इस बात का परम प्रमाण है कि परमेश्वर पाप के बारे में क्या सोचता है। अगर वह अपने इकलौते प्यारे बेटे पर इसका न्याय करने को तैयार है, तो हम कैसे सोच सकते हैं कि वह हम पर इसका न्याय नहीं करेगा? वास्तव में, उसके क्रोध से हमारा एकमात्र बचाव क्रूस पर ही पाया जाता है। हमारे पाप पर परमेश्वर के न्याय को स्वीकार करने में यीशु ने हमारे लिए जो किया उसे स्वीकार करने से, हमारे पास क्षमा और अनन्त जीवन है। यीशु ने हमारे परिणामों को ले लिया, हमें उसके उद्धार के उपहार को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता, तो फिर हमारे पापों का न्याय होना जरूरी होता। एक पवित्र परमेश्वर पाप को अनदेखा नहीं कर सकता, यदि वह ऐसा करता तो वह परमेश्वर नहीं होता और हम एक ऐसे परमेश्वर से प्रेम और उसका सम्मान नहीं कर सकते। एक दिन, जल्दी या देर से, वह इस देश और दुनिया के पापों का न्याय करेगा क्योंकि यिर्मयाह के समय की तरह आज भी मनुष्य इस सिद्धांत पर विश्वास करने से इनकार करता है कि परमेश्वर पाप का न्याय करता है। फिर भी, हमारे पापों के लिए उसके भुगतान को स्वीकार करने से यह जीवन चाहे जो भी हो, हम उसमें अनन्त उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। वह क्या ही अनुग्रहकरी और दया करने वाला परमेश्वर है! सुनिश्चित करें कि आपके सभी पाप यीशु के लहू से ढके हुए हैं!

यिर्मयाह की रूपरेखा

प्रस्तावना: यिर्मयाह की बुलाहट 1

1. यहूदियों के लिए आखिरी मौका 2-45

क- यहूदा की निंदा 2-25

1. यहूदा न्याय के अधीन 2-6
2. यहूदा मूर्तिपूजा में 7-10
3. यहूदा विद्रोह में 11-15
4. यहूदा पाप में 16-20
5. यहूदा कैद में 21-25

ख- यिर्मयाह की आलोचना 26-29

ग- यहूदा की बहाली 30-33

घ- यिर्मयाह येरुसलम में 34-45

1. यरूशलेम पतन से पहले 34-36

2. यरूशलेम पतन के दौरान 37-39

3. यरूशलेम पतन के बाद 40-45

II. अन्यजातियों के लिए आखिरी मौका 46-51

मिस्र, पलिशती, मोआब, अम्मोन, एदोम, दमिश्क, अरब, एलाम, बाबेल

परिशिष्ट: यरूशलेम का पतन

विलापगीत :

पाप दुख लेकर आता है



शीर्षक: सेप्टुआजेंट(पुराने नियम का यूनानी रूप 2 -3 ई.पू मिस्र में रहने वाले यहूदियों के लिए लिखा गया था ताकि वह इसे पढ़ सकें,जो बाद में प्रारंभिक कलीसिया द्वारा भी अपना लिया गया था),यिर्मयाह का रोना

लेखक: यिर्मयाह

लेखन तिथि: लगभग 586 ई.पू

लेखन का स्थान:येरुशलेम

समय शामिल : येरुशलेम का पतन - 586 ई.पू

प्राप्तकर्ता: यहूदा और यरूशलेम के साथ-साथ वे सभी जिन्होंने यरूशलेम के पतन को देखा

प्रमुख आयत : 1:1 नगर कितना वीरान पड़ा है, जो एक समय लोगों से भरा होता था ! कैसे वह विधवा के समान है, जो कभी जाति जाति में बड़ी थी! वह जो प्रान्तों की रानी थी, अब दासी हो गई है।

मुख्य शब्द: सिधोन (यरूशलेम, 15 बार), यरूशलेम (7 बार), उजाड़ (7 बार) उद्देश्य: पाप के लिए यरूशलेम के विनाश पर यिर्मयाह के दुःख को दिखाने के लिए विषय : यरूशलेम के विनाश पर एक विलाप

एक क्षण के लिए आपने आप को इस अप्रिय स्थिति में रखें: जब कोई व्यक्ति कुछ समय से आपको चोट पहुँचाने का प्रयास कर रहा है। वे आपको शर्मिंदा करने और आपकी आलोचना करने में कोई कसर

नहीं छोड़ते हैं। वे आपके दोस्तों को आपके बारे में झूठ बोलते हैं और आपको शारीरिक रूप से नुकसान पहुंचाने की कोशिश भी करते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है यह और भी खराब होता जाता है। तब आप सुनते हैं कि उसका एक्सीडेंट हो गया है और उसे चोट लग गई है-गंभीरता से नहीं बल्कि दर्दनाक तरीके से। आपकी आंतरिक प्रतिक्रिया क्या होगी? आप मन ही मन में कैसा महसूस करेंगे? क्या आप उनके लिए दुःख में ज़ोर से रोएंगे? यिर्मयाह भी उन लोगों के साथ जिन्होंने उसे सताया और मारने की कोशिश की थी एक ऐसी ही स्थिति में था। जब वे पीड़ित हुए तो वह बहुत देर तक रोता रहा क्योंकि ये उसके लोग थे और उस का राष्ट्र थे। इस प्रकार उसे "रोता हुआ भविष्यद्वक्ता" के रूप में जाना जाता है।

विलापगीत "शोक करने" का अर्थ है "शोक में रोना, जोर से विलाप करना।" विलापगीत की पुस्तक 5 अंतिम संस्कार शोकसभा है, "कब्रिस्तान में एक परस्तिश।" यह बाइबिल की सबसे दुखद किताब है। इसे 586 ई. पू. में इज़राइल राष्ट्र के पतन के बारे में लिखा गया था। 1946 ई. तक यहूदियों ने वास्तव में अपनी भूमि पर फिर कभी शासन नहीं किया।

मान लीजिए कि चीन ने आपके देश पर आक्रमण किया हो और पूरे देश में अपने ढंग से काम किया हो, सभी इमारतों और फसलों को नष्ट कर दिया हो और या तो सभी लोगों को मार डाला हो या गुलाम बना लिया हो। अकाल इतना भयानक हो जाये कि लोग जीने के लिए कुछ भी खा ले, यहाँ तक कि अपने बच्चे भी। शहर नष्ट हो जाते हैं, लोग मारे जाते हैं। तेज धूप में लाशें फूल जाती हैं और फट जाती हैं। जो कुछ बचे हैं वे गुलामी के लिए रवाना किये गए हों। यहूदा और यरूशलेम के साथ यही हुआ था। यिर्मयाह जानता था कि ऐसा समय आ रहा है और 40 वर्षों तक लोगों को पश्चाताप करने की चेतावनी देता रहा, लेकिन किसी ने नहीं सुना ना माना। जैसे कि उसने अपने चारों ओर विनाश को देखा, उसने अपनी भावनाओं को 5 उदास कविताओं में लिखा, प्रत्येक को 22 आयातों में (बीच वाले को छोड़कर जो तीन गुना लंबा है - जिसकी 66 आयतें हैं)। स्मृति को आसान बनाने के लिए पहले चार बावन अक्षरी हैं। प्रत्येक कविता परमेश्वर से प्रार्थना करने में समाप्त होती है।

यरूशलेम मुहताज अवस्था में है (अध्याय 1)। यरूशलेम को एक अकेली विधवा के रूप में चित्रित किया गया है, जो अकेले शोक में बैठी और विलाप कर रही है। उसे रोते और विलाप करते, सहानुभूति और दया की माँग करते हुए चित्रित किया गया है, लेकिन उसे कुछ भी नहीं मिल रहा है। वह अपने अभिमान और आत्म-केंद्रितता में दीन हो चुकी है। उसके दुःख का वर्णन अध्याय 1 में किया गया है। अध्याय 2 में परमेश्वर लोगों के पाप के कारण क्रोधित है। इसलिए उन्हें परेशानी हो रहे हैं। पाप दुख लेकर आता है। अपने पाप का पश्चाताप करने और परमेश्वर की आज्ञा मानने से इनकार करने के कारण उनके साथ अविश्वासनीय रूप से बुरा हो रहा है। फिर भी, परमेश्वर दया का परमेश्वर है जो क्षमा करता है और पुनर्स्थापित करता है इसलिए अध्याय 3 (लंबी कविता) इस बारे में बात करती है कि यिर्मयाह कैसे आशावादी है। उसके शब्द दर्द से कांपते हैं क्योंकि वह खुद को पीड़ित लोगों में एक मानता है। यहूदी कठिन तरीके से सीख रहे हैं कि पाप दुख लेकर आता है। ऐसा लगता है कि हर किसी को अपने लिए यह सबक सीखने की जरूरत है, कठिन तरीके से। उस सिद्धांत का कोई अपवाद नहीं है, यहां तक कि निर्दोष भी दूसरों के पापों के लिए पीड़ित होते हैं। फिर भी यिर्मयाह परमेश्वर में अपनी आशा रखता है।

फिर से दुख को अध्याय 4 के रूप में वर्णित किया गया है जो फिर से बताता है कि यरूशलेम कैसे पराजित हुआ। वह कैसी थी और अब कैसी है, इसमें उसका विरोधाभास दिखाया गया है। उसके धन और वैभव का स्थान अकाल और दुख ने ले लिया है। अब बहुत देर हो चुकी है। यह सब लोगों के और अगुवाओं के पापों के कारण हुआ है। उन्हें तो विश्वास ही नहीं था कि ऐसा वास्तव में उनके साथ होगा, भले ही उन्होंने 150 साल पहले उत्तर में अपनी बहन देश इज़राइल के साथ ऐसा होते हुए देखा था। जिन

अगुवाओं को जान से नहीं मारा गया था, उन्हें जीवित लोगों द्वारा कोढ़ियों की तरह बेदखल कर दिया गया था।

अंतिम अध्याय, 5, दिखाता है कि लोगों के बीच आनंद नहीं है। वे यिर्मयाह से मदद की गुहार लगाते हैं और उसे अपने संकट और दुख के बारे में बताते हैं। इस अंतिम संक्षिप्त लेकिन सशक्त कविता में वे परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें पुनर्स्थापित करें। वे परमेश्वर की संप्रभुता को पहचानते हैं। पुस्तक संकट के एक शब्द पर समाप्त होती है: "जब तक कि तू ने हमें पूरी तरह से अस्वीकार नहीं किया है और हम पर हद से ज्यादा क्रोधित नहीं है"।

पुस्तक का संदेश स्पष्ट है: पाप दुख लेकर आता है। यह अदन वाटिका में शुरू हुआ और तब से हो रहा है। यदि हम पाप करते हैं तो वह हमें पश्चाताप करने के लिए विवश नहीं करेगा, परन्तु हम अपने पाप के परिणाम भुगतेंगे। याद रखो, पाप दुख लेकर आता है !

विलाप की रूपरेखा

I. निराशा 1-2

क- येरूशलेम खाली है 1

1. नहीं लोग हैं 1:1-11
2. कोई सहानुभूति नहीं है 1:12-22

ख-परमेश्वर क्रोधित है 2

1. क्रोधित परमेश्वर 2:1-10
2. एक रोता हुआ भविष्यद्वक्ता 2:11-19
3. एक पतित शहर 2:20-22

II. आशा 3

क-यिर्मयाह की करवाई 3:1-18

ख-यिर्मयाह की आशा 3:19-39

ग- यिर्मयाह की प्रार्थना 3:40-66

III. दृढ़ संकल्प 4-5

क- येरूशलेम हार गया है 4

1. एक पिटा हुआ नगर 4:1-11
2. एक नंगा नगर 4:12-22

ख- कोई आनंद नहीं है 5

1. "हमें स्मरण कर " 5:1-18

2. "हमें पुनर्स्थापित कर" 5:19-22

बाइबिल अवलोकन 19.

दानियेल



मुख्य घटना : दानियेल बाबेल की कैद में

मुख्य लोग: दानियेल, हनन्याह, अजर्याह, मिशाएल

बाइबल की पुस्तकें: दानियेल, यहजकिएल

बाइबल आयत: दानियेल 6:10-11 जब दानियेल को पता चला कि यह आज्ञा प्रकाशित हो चुकी है, तो वह अपने घर अटारी पर गया, जहां की खिड़कियां यरूशलेम की ओर खुलती थीं। जैसा उसने पहले करता था, वैसे ही वह दिन में तीन बार घुटने टेककर प्रार्थना करता, और अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता था।

समय: 605 - 536 ई.पू

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन, बाबेल

विभाजन

		यूसुफ		भविष्यद्वक्ता	
		याकूब		सुलेमान	
लज्पल	इसहाक	यहोशु	दाऊद	बाबेल	कैद
बाबेल	अब्राहाम	मूसा	शाऊल	असीरि	कैद

दानियेल इतना विशेष व्यक्ति है कि उसे आपने बाइबल अवलोकन में याद रखा होगा। वह उस समय बाबेल में रहता था जब यहूदी बन्धुआई में ले जाए गए। वह प्रार्थना करने वाला , एक वफ़ादार और एक महान व्यक्ति था, और उसने परमेश्वर से कई अद्भुत प्रकाशन प्राप्त किए थे। उसे 605 ईसा पूर्व में बाबेल ले जाया गया था (दानियेल 1:1-6)। उसने अपना सारा जीवन परमेश्वर की महिमा करते हुए व्यतीत किया। यहजेकेल भी इस समय बाबेल में था, जिसे 597 ईसा पूर्व में वहाँ ले जाया गया था।

यह हमारे अवलोकन में एक और दुखद चरण था, लेकिन एक ऐसा जिसे परमेश्वर अपने लोगों को, कम से कम उनमें से कुछ को तो , अपने पास वापस लाने के लिए इस्तेमाल किया था। यह उस समय के समान है जब वे मिस्र में बंधुआई में गए थे। यदि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी बने रहते तो इन दोनों बंधुआईओं में से कोई भी ना देखनी पड़ती।

दनिय्येल:

संप्रभुता



शीर्षक : " दनिय्येल" = "परमेश्वर मेरा न्यायी हैं"

लेखक: दनिय्येल

लेखन की तिथि: 605 - 525 ई.पू

लेखन का स्थान: बाबेल

शामिल समय: 80 वर्ष (605-525 ई.पू.)

प्राप्तकर्ता: बाबुल में रहने वाले यहूदी

मुख्य आयत: 7:13-18 "मैं ने रात को स्वप्न में देखा, और क्या देखता हूँ कि मनुष्य के पुत्र सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा है। वह उस अति प्राचीन के पास आया और उसे उसकी उपस्थिति में ले जाया गया। उसे अधिकार, महिमा और संप्रभुता की शक्ति दी गई थी; सभी लोगों, राष्ट्रों और हर भाषा के लोग उसकी पूजा करते हैं। उसका राज्य सदा का राज्य है जो कभी न टलेगा, और उसका राज्य ऐसा है जो कभी न मिटेगा। "मैं, दनिय्येल, आत्मा में व्याकुल था, और जो दर्शन मेरे मन में से गुजरे थे, वे मुझे विचलित कर गए थे। मैं वहां खड़े लोगों में से एक के पास गया और उससे इन सब बातों का सही अर्थ पूछने लगा। "तो उसने मुझे बताया और मुझे इसका अर्थ बताया: 'चार बड़े जानवर चार राज्य हैं जो पृथ्वी से उठेंगे। परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे, और सदा सर्वदा उसके अधिकारी रहेंगे।

प्रमुख शब्द: "राजा" 183 बार; "राज्य" 55 बार; "दनिय्येल" 74 बार

उद्देश्य: भविष्य के लिए परमेश्वर की महानता और योजना को दिखाने के लिए

विषय: राष्ट्रों और लोगों पर परमेश्वर की सम्प्रभुता

दनियेल की रूपरेखा

I. अन्यजातियों पर परमेश्वर की सम्प्रभुता 1-7

क- विश्वासयोग्य बालक (दनियेल 15 साल का है) 1

ख- प्रतिमा का दर्शन (दनियेल 18 वर्ष का है) 2

ग- भट्टी में (दनियेल 20 वर्ष का है) 3

घ- नबूकदनेस्सर का विनम्र होना (दानियेल 76 वर्ष का है) 4

ङ- दीवार पर लिखावट (दनियेल 86 साल के हैं) 5

च- शेरों की गुफा में (दनियेल 93 साल का है) 6

छ- 4 जानवरों का दर्शन (दनियेल 53 साल का है) 7

II. यहूदियों पर परमेश्वर की सम्प्रभुता 8-12

क- 2 जानवरों का दर्शन (दनियेल 54 साल का है) 8

ख- सप्ताहों का दर्शन (दनियेल 94 साल के हैं)

ग- इजराइल के दुश्मनों और उनके भविष्य का दर्शन (दनियेल 95 वर्ष का है) 10-12

1. शैतान का विरोध 10

2. मसीह-विरोधी का विरोध 11

3. इजराइल का छुटकारा 12

दनियेल से मिलें

मान लीजिए कि आज रात आपके देश पर हमला हुआ था और यह पराजित हो गया , और विजयी शत्रु आपको उनकी सेवा करने के लिए आपके परिवार से हटाकर अपनी राजधानी में ले गए हैं । तुम क्या सोचोगे? आपको कैसा महसूस होगा? आप क्या करेंगे? ठीक ऐसा ही दनियेल के साथ हुआ था। जब वह 14 वर्ष का था तब उसे यरूशलेम से बाबुल ले जाया गया था जब यहूदा पराजित हुआ (दानियेल 1:1-2)।

कैद में (14 वर्ष)- दनियेल नाम का अर्थ है, "परमेश्वर उसका न्यायी है।" उसके धर्मि माता-पिता ने उसका पालन-पोषण प्रभु के विश्वास में किया। उत्तरी राज्य, इजराइल , बहुत पहले ही अशूर के अधीन हो गया था। दक्षिण (यहूदा) में बहुत से लोगों ने सोचा कि उनके साथ ऐसा कभी नहीं होगा। उसके माता-पिता ने उसके बारे अलग तरह से सोचा और उसे इसके लिए तैयार किया। फिर भी, कोई अपने परिवार, दोस्तों, घर की जमीन - उनके पास सब कुछ खोने के लिए कैसे तैयार हो सकता है? वह जानता था कि

परमेश्वर सर्वोच्च है और अभी भी सभ हालातों को आपने नियंत्रण किये हुए, इसी बात पर उसने अपनी आशा रखी हुयी थी।

राजा का प्रशिक्षण कार्यक्रम (15 वर्ष)- दानियेल को बाबेल के राजा की सेवा करने के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए चुना गया था। दास के रूप में अत्यधिक काम करने वाली युवावस्था में मरने के बजाय यह अच्छा जीवन जीने का एक महान अवसर था। कोई भी इस मौके पर उछल जाता और उसने भी इसके लिए परमेश्वर का शुक्रिया अदा किया, लेकिन एक पेंच बाकी था। उसे आपने परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करना होगा और गैर-हलाल भोजन खाना होगा। बेशक वह जानता था कि उसे ऐसा करने पर एक दास के रूप में परिश्रम करने के लिए भेजा जा सकता है, उसने यह खाना खाने से इन्कार कर दिया। अंत किसी भी चीज को उचित नहीं ठहराता। वह विश्वासयोग्य रहेगा, तो परमेश्वर चाहे तो परिणामों का ध्यान जरूर रखेगा। परमेश्वर की स्तुति करो, उसने उसे समृद्ध करने और उसके द्वारा उठाए गए कदम का सम्मान करने के लिए चुना। उसके नाम को महिमा मिले !

नबूकदनेस्सर का सपना (18 वर्ष)- जल्द ही एक और समस्या सामने आ गई। राजा नबूकदनेस्सर ने एक भयानक स्वप्न देखा। वह अपने सलाहकारों को यह नहीं बताएगा कि यह क्या था क्योंकि वह जानता था कि वे उसे खुश करने के लिए इसकी कुछ ना कुछ व्याख्या करेंगे। वह केवल यह जान सकता था कि उन्होंने अलौकिक रूप से एक व्याख्या प्राप्त की थी या नहीं अगर उन्होंने स्वयं भी स्वप्न देखा होता। बेशक, उनमें से कि उनमें से कोई भी सपने को नहीं जान सकता था, इसलिए उसने उन सभी को जान मारने का फैसला किया! परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से, स्वप्न और उसके अर्थ को दानियेल पर प्रकट कर दिया और उसने इसे राजा को बताया, यह सुनिश्चित करते हुए कि परमेश्वर को इसके लिए सारी महिमा मिले! सपना एक बड़ी मूर्ति का था जिसका सोने का सिर बाबेल के राज्य को दर्शाता था, चांदी की छाती मादी-फारस के राज्य को दर्शाती थी, कांस्य की जांघें यूनान के राज्य को दर्शाती थी और लोहे की टांगें रोम के राज्य को दर्शाती थीं। यह विश्व इतिहास की रूपरेखा थी।

मूर्ति पूजा (20 वर्ष)- नबूकदनेस्सर स्वप्न से इतना प्रभावित हुआ कि उसने यह सब स्वयं पर लागू करने का निर्णय लिया। उसने अपने अभिमान में सोने की एक मूर्ति बनवायी और सभी से उसकी पूजा करने को कहा। दानियेल काम पर गया हुआ था, इसलिए उसके दोस्तों हन्नान्याह, अजर्याह और मीशाएल को तय करना था कि इसके बारे में क्या करना है। उपासना से इंकार करने का अर्थ था मृत्यु। उन्होंने उपासना करने से इनकार कर दिया और उन्हें आग के भट्टे में फेंक दिया जाना था। वे जानते थे कि परमेश्वर उन्हें छुड़ाने में सक्षम है, लेकिन वे नहीं जानते थे कि यह उनके लिए उसकी इच्छा थी या नहीं। यह थी, और वे आग की लपटों में सुरक्षित थे। बस इतना ही हुआ कि उन्हें बाँधने वाली रस्सियाँ जलकर राख हो गईं। उसके सर्वोच्च नियंत्रण के लिए परमेश्वर की स्तुति हो !

दर्शन # 1 (53 वर्ष)- कई वर्षों के बाद परमेश्वर ने दानियेल को उसके दिन से अंत तक आने वाले विश्व साम्राज्यों के बारे में अधिक विवरण दिया। एक मूर्ति के बजाय परमेश्वर ने आने वाले राज्यों की विशेषताओं का वर्णन करने के लिए जानवरों का इस्तेमाल किया: बाबेल के लिए शेर, मादी -फारस के लिए भालू, यूनान के लिए तेंदुआ और रोम के लिए एक जानवर (दानियेल 7)। इतिहास के भविष्य पर परमेश्वर का संप्रभु नियंत्रण स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ था (1 इतिहास 29:11)। "हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है, जो कुछ उसे भाता है, वह वही करता है" (भजन 115:3)। हम ना उसके बारे में सब कुछ समझ सकते हैं और ना इसके बारे में जो वह करता है (यशायाह 55:8), यह सब उसकी सर्वोच्च पसंद के द्वारा होता है (प्रकाशितवाक्य 4:11)। वह स्वर्गदूतों, प्रकृति, इतिहास अतीत, वर्तमान और भविष्य और सभी मानव जाति को नियंत्रित करता है।

दर्शन # 2 (54 वर्ष)- कुछ ही समय बाद, परमेश्वर ने उसे बीच के दो साम्राज्यों के बारे में बहुत अधिक विवरण दिया, जो जल्द ही आने वाले हैं (दानियेल 8)। वह उनमें सबसे अधिक रुचि रखता था। इस दृष्टि में एक मेंढा (मादी-फारस) और बकरा (यूनान) का उपयोग किया गया था। फोकस उनके दुश्मनों पर अधिक था, जो आने वाले समय के लिए उन्हें तैयार कर रहे थे। सिकंदर महान और एंटीओकस एपिफेन्स की भविष्यवाणी की गई थी और इनके बारे में कई विवरण दिए गए थे। परमेश्वर राष्ट्रों पर नियंत्रण करता है, यहाँ तक कि प्रत्येक राष्ट्र में प्रत्येक व्यक्ति पर भी। इससे दानियेल बहुत दीन हुआ, जैसा कि परमेश्वर के बारे में सोचने वाले हर व्यक्ति को दीन होना चाहिए।

नबूकदनेस्सर दीन हुआ (76 वर्ष)- हालाँकि हर कोई परमेश्वर के संप्रभु नियंत्रण के द्वारा दीन नहीं हुआ था। नबूकदनेस्सर बड़ा घमण्डी और अहंकारी था, और बड़े कामों का श्रेय लेता था, मानो कि जैसे बाबेल उसने परमेश्वर की सहायता के बिना ही बना लिया हो! परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी (दानियेल 4:29-34) लेकिन उसने खुद को दीन करने से इनकार कर दिया, इसलिए परमेश्वर ने उसे सात साल तक एक जानवर की तरह जीने और रहने की सजा दी जब तक कि वह मदद और छुटकारे के लिए परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ा। परमेश्वर ने उसे चंगा किया और उसे पुनर्स्थापित किया, और फिर उसने सारा श्रेय और महिमा परमेश्वर को देने लगा।

दीवार पर लिखावट (86 वर्ष) -बहुत समय पहले, हालाँकि, बेलशस्सर अपने पिता नबूकदनेस्सर की जगह राजा के रूप में स्थापित किया गया था। वह भी बहुत घमण्डी था और परमेश्वर को ठोठों में उड़ाता था। उसने मूर्तिपूजक तांडव के लिए यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर के बर्तनों का उपयोग करके परमेश्वर की निन्दा की थी। परमेश्वर ने दीवार पर लिखा कि न्याय आने वाला है (दानियेल 5)। कोई इसे पढ़ नहीं सकता था, इसलिए दानियेल को उसके लिए इसकी व्याख्या करने के लिए भेजा गया। भविष्यवाणी उसी रात पूरी हुई जब दारा और उसकी मादी-फारसी सेना ने बेखबर नगर में प्रवेश किया और बाबुल के राज्य पर अधिकार कर लिया।

शेरों की गुफा (93 वर्ष)- दारा उतना ही घमण्डी और आत्मनिर्भर था जितना कि उससे पहले के शासक थे, इसलिए उसे किसी ऐसे कानून पर हस्ताक्षर करने के लिए बहकाना आसान था जिसमें यह कहा गया था कि केवल उसकी ही पूजा की जा सकती है। जब दानियेल ने उसकी पूजा करने से इनकार कर दिया और इस के लिए उसे मौत की सजा की गई, तब दारा ने महसूस किया कि उसके घमंड ने उसे धोखा दिया है लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वह तो खुद को नहीं बचा सकता था, लेकिन परमेश्वर उसे बचा सकता था। कई भूखे शेरों के बीच भी वह सुरक्षित था क्योंकि वह परमेश्वर के सम्प्रभुता नियंत्रण के अधीन था जैसे कि वह सुरक्षित रूप से अपने बिस्तर पर सो रहा होता था। दारा ने इसके माध्यम से हर चीज पर परमेश्वर के पूर्ण नियंत्रण को पहचाना और उसकी आराधना करने लगा। वह यह चाहता था कि उसके राज्य में हर जन भी उसके (दानियेल के) परमेश्वर की आराधना करे।

दर्शन # 3 (94 वर्ष)- दानियेल परमेश्वर से भविष्य की उन बातों के बारे में प्रार्थना कर रहा था जो उसने उस पर प्रकट की थीं, उनका अधिक विवरण और जानकारी माँग रहा था। वह जानता था कि यहूदी 70 साल की बंधुआई के बाद बाबेल छोड़ सकते हैं (यिर्मयाह 25:11-12; 29:10)। तो क्या? परमेश्वर ने उसे बताया कि उनका भविष्य 70-7वर्षों की अवधियों का होगा। पहले 483 वर्ष तब होंगे जब वे यरूशलेम लौटने से लेकर जब तक कि मसीहा को अस्वीकार नहीं किया जाएगा (दानियेल 9)। तब अनिर्धारित समय के अंतराल के बाद एक अंतिम 7-वर्ष की अवधि होगी जब मसीहा दाऊद के सिंहासन पर हमेशा के लिए स्वयं को स्थापित करने के लिए वापस आएगा। क्या ही महान परमेश्वर है! "यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि यहोवा सनातन चट्टान है" (यशायाह 26:4)।

दर्शन # 4 (95 वर्ष की आयु) -इन बातों के बारे में जो यहोवा उसे दिखा रहा था, तीन सप्ताह तक प्रार्थना और उपवास करने के बाद, परमेश्वर ने उसे एक और दर्शन दिया। दानियेल की प्रार्थना के उत्तर के साथ भेजे गए दूत को शैतान की सेनाओं ने रोक लिया था (दानियेल 10)। स्वर्ग में इस आत्मिक युद्ध में जीत दिलाने के लिए दूतों का अतिरिक्त बल वाली सेना पलटन सामने आई। परमेश्वर ने दानियेल को भविष्य के बारे में अधिक जानकारी दी, विशेषकर आने वाले मसीह- विरोधी और हर-मगिदोन की लड़ाई के बारे में।

परमेश्वर पूरी तरह से हर चीज पर आपने नियंत्रण पर है। "नहीं, इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मुझे विश्वास है कि न तो मृत्यु और न ही जीवन, न ही स्वर्गदूत और न ही राक्षस, न वर्तमान और न ही भविष्य, न ही कोई शक्तियाँ, न ऊँचाई और न ही गहराई, और न ही सारी सृष्टि में, कोई है जो हमें ईश्वर के प्रेम से अलग कर पाएंगे जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है" (रोमियों 8:37-38)।

आपके लिए उसका संदेश है कि चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर पर भरोसा रखें। एली ने कहा, "वह यहोवा है; जो उसकी दृष्टि में अच्छा है उसे वही करने दे" (1 शमूएल 3:18)। अय्यूब ने कहा, "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा के नाम की स्तुति हो" (अय्यूब 1:21)। यीशु ने स्वयं कहा, "मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" उसने उन्हें प्रभु की प्रार्थना में प्रार्थना करना सिखाया, "तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो।" आप भी इसे अपनी प्रार्थना बना लें। सब कुछ और हर किसी पर परमेश्वर के सम्प्रभुता का नियंत्रण है इस सचाई में विश्राम करें। कोई बात नहीं, उस पर भरोसा रखो। "चाहे अंजीर पेड़ में न लगें, और न दाखलताओं में दाख लगें, चाहे जलपाई के पेड़ सूख जाएं, और खेतों में कुछ अन्न न उपजे, चाहे बाड़े में भेड़-बकरियां न हों, और न गोशालों में गाय-बैल हों, तौभी मैं तेरे कारण आनन्द करूंगा।" हे यहोवा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित रहूंगा। प्रभु यहोवा मेरा बल है; वह मेरे पाँव हिरण के पाँवों के समान बना देता है। वह मुझे ऊँचे स्थानों पर चढ़ने की शक्ति देता है" (हबक्कूक 3:17-19)।

यहेजकेल:

परमेश्वर की महिमा



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: यहजकेल ("परमेश्वर बल देगा")

लेखन की तिथि: 592 से 570 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: यहूदिया और बाबेल

समय शामिल: 592 से 570 ईसा पूर्व - 22 वर्ष

प्राप्तकर्ता: यहूदी, विशेष रूप से वे जो बाबेल में हैं

मुख्य आयत: 36:17-19, 24-28 "मनुष्य के सन्तान, जब इस्राएली अपने निज देश में रहते थे, तब वे आपने चालचलन से और कामों से उसको अशुद्ध करते थे। मेरी दृष्टि में उनका चाल चलन स्त्री के मासिक अशुद्धता के समान था।" तब मैं ने उन पर अपनी जलजलाहट भड़काई, क्योंकि उन्होंने देश में लोहू बहाया, और अपनी मूरतों के द्वारा उसे अशुद्ध किया है। मैं ने उनको जाति जाति में छोड़ दिया, और वे देश देश में तितर-बितर हो गए; मैं ने उनके कार्य एंड चालचलन के कारण उनको दण्ड दिया।

"क्योंकि मैं तुम्हें अन्यजातियों में से निकाल लूंगा; मैं तुम को सब देशों से इकट्ठा करूंगा, और तुम्हारे निज देश में लौटा ले आऊंगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; मैं तुझे तेरी सारी अशुद्धता और तेरी मूरतों से शुद्ध करूंगा। मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; मैं तेरे अंदर से पत्थर का हृदय निकालकर तुझे मांस का हृदय दूंगा। और मैं तुम में अपना आत्मा डालूंगा, कि तुम मेरी विधियों पर चलो, और चौकसी से मेरी व्यवस्था का पालन करो। तुम उस देश में बसोगे जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिया था ; तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा।

प्रमुख शब्द: "आप जानेंगे कि मैं यहोवा] हूं" (70 बार); "मनुष्य का पुत्र" (79 बार)

उद्देश्य: यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर पाप का न्याय करता है परन्तु एक दिन इजराइल को पुनर्स्थापित करेगा और उन्हें अपनी महिमा से भर देगा।

विषय: परमेश्वर की महिमा चली गई है, लेकिन एक दिन वापस आ जाएगी

परमेश्वर ने ब्रह्मांड की विशाल जटिलताओं और कोशिकाओं, परमाणुओं और डीएनए की सूक्ष्म जटिलताओं में अपनी महिमा प्रकट की है। यह सब हमें यह देखने में मदद करने के लिए है कि वह कितना महान परमेश्वर है (भजन 19:1; प्रकाशितवाक्य 4:11) ताकि हम उस पर बेहतर भरोसा करें और उसकी स्तुति करें (भजन संहिता 8:1)। वह जो कुछ भी करता है उसमें उसकी महिमा प्रकट होती है। यहां तक कि उसके लोगों का पराजित होना और कैद में ले जाना भी उसकी महिमा को दर्शाता है। यदि

उसके लोग उसकी सेवा करके उसकी महानता नहीं दिखाते हैं, तो वे उसके द्वारा अनुशासित होकर इसे दिखाएंगे। बाबेल द्वारा उनके पकड़े जाने का उद्देश्य उन्हें उनके पाप की गंभीरता को दिखाना था और उनको अपने हृदयों को वापस उसकी ओर मोड़ना था, ठीक वही जो क्लेश का उद्देश्य होगा। यहजेकेल के माध्यम से, परमेश्वर वर्तमान दुखों से परे सत्य को परमेश्वर और उसके लोगों के बीच नई निकटता के लिए प्रकट करता है जो एक दिन परिणाम लायेगा। अक्सर, परमेश्वर की ओर मुड़ने और उनके दुख को देखने के लिए, हमें दर्द और कष्ट उठाना पड़ता है। हमारे लिए इससे पहले ही इसे देखना बेहतर होता है, क्योंकि यह साड़ी प्रकृति और जीवन में स्पष्ट रूप से देखा जाता है, लेकिन अक्सर हमें इसे देखने के लिए उस स्तर तक आना पड़ता है। यहजेकेल का संदेश यही है।

यहूदा के पतन द्वारा देखी गई परमेश्वर की महिमा (यरूशलेम की घेराबंदी से पहले, 595-587 ई.पू. - अध्याय 1-24) - परमेश्वर यहजेकेल की पुस्तक में अपनी महिमा की झलक प्रकट करता है जो प्रकाशितवाक्य में है और जो यहजेकेल के समकालीन दानियेल ने देखी थी। यहाँ पर विदेशी प्राणियों और परमेश्वर की पवित्रता की रक्षा के लिए सौंपे गए स्वर्गदूतों के दृश्यों से भरे विस्तृत दर्शन हैं। यह सब परमेश्वर के सर्वोच्च वैभव और पवित्रता को दर्शाने के लिए है। शब्दों और कार्यों के माध्यम से, यहजेकेल को लोगों को चेतावनी देनी थी कि एक पवित्र परमेश्वर उनके पापों का न्याय करेगा। यदि वे उसकी आज्ञाकारिता में उसकी महिमा को पहचानते और प्रतिबिंबित नहीं करते, तो वे उसके द्वारा अनुशासित किये जायेंगे।

यहूदा के शत्रुओं द्वारा देखी गई परमेश्वर की महिमा (यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान, 586 ईसा पूर्व - अध्याय 25-32) - परमेश्वर न केवल अपने लोगों का न्याय करता है, वह उन सभी का भी न्याय करता है जो उसकी महिमा नहीं करते हैं। न्याय पहले परमेश्वर के लोगों के साथ शुरू होता है (1 पतरस 4:17)। हालाँकि यह वहाँ समाप्त नहीं होता है। अम्मोनियों, मोआबियों और एदोमियों का न्याय इसलिए किया जाता है कि वे यहूदा के पतन को देखकर प्रसन्न होते हैं, और उनके द्वारा परमेश्वर की सेवा करने से इन्कार करते हैं। सोर, सीदोन और मिस्र का भी न्याय होना है।

यहूदा के भविष्य द्वारा देखी गई परमेश्वर की महिमा (यरूशलेम की घेराबंदी के बाद, 585-570 ईसा पूर्व - अध्याय 33-48) - अब जबकि यरूशलेम गिर चुका है, यह भविष्य की ओर देखने और आने वाले बेहतर समय का क्षण है। परमेश्वर हमेशा अंधकार के समय में आशा प्रदान करता है। पाप के परिणाम होते हैं, लेकिन इसके माध्यम से हमें देखने के लिए परमेश्वर की महिमा हमेशा मौजूद रहती है। यहजेकेल के माध्यम से परमेश्वर उस समय की ओर इशारा करता है जब यहूदियों को भूमि पर पुनर्स्थापित किया जाएगा (33:1-14), एक भविष्यवाणी जो हमारे जीवनकाल के दौरान पूरी हो रही है। फिर आध्यात्मिक पुनरुत्थान और नवीनीकरण का समय आएगा, मंदिर के पुनर्निर्माण और आत्मा और सच्चाई में परमेश्वर की आराधना करने का समय आएगा। ये हमारे लिए भविष्य हैं, जो आने वाले क्लेश के समय में हो रहा होगा। फिर सहस्राब्दी में जो क्लेश के बाद होगा, सब परमेश्वर की आराधना करेंगे और उसे वह महिमा देंगे जिसके वह योग्य है, वह महिमा जो उसके लोगों को पूरे इतिहास में उसे देनी चाहिए थी। एक दिन आ रहा है जब सारी पृथ्वी परमेश्वर की महिमा को पहचानेगी और वह फिर से अपने लोगों के साथ पृथ्वी पर वास करेगा।

आपके और मेरे द्वारा देखी गई परमेश्वर की महिमा - आज, हमें अपने सभी कार्यों के द्वारा परमेश्वर की महिमा करनी होगी (1 कुरिन्थियों 6:20; रोमियों 9:23)। परमेश्वर ने हमें इसी लिए बनाया है (भजन

संहिता 96:7-8; 2 इतिहास 16:28-29)। मनुष्य आज परमेश्वर के स्थान पर मनुष्य की महिमा करता है (रोमियों 1:25)।

हमें परमेश्वर की महिमा कैसे करनी चाहिए? जो कुछ उसने हमारे लिए किया है उसकी सराहना करने के द्वारा और हमारी स्वयं की अपर्याप्तता और अयोग्यता को पहचानने के द्वारा (1 कुरिन्थियों 1:29-31), उसकी आज्ञाकारिता में एक पवित्र जीवन जीने के द्वारा (यूहन्ना 15:8; 1 कुरिन्थियों 10:31) और आराधना करने के द्वारा और उसकी स्तुति करते हुए (भजन संहिता 50:23; 89:12; 91:1) हम उसकी महिमा करते हैं। वह सारी महिमा के योग्य है (रोमियों 11:36; 16:27; गलातियों 1:5; 1 तीमुथियुस 1:17; इफिसियों 3:21)। सदैव। अमीन !

यहेजकेल की रूपरेखा

I. यहूदा के पतन से परमेश्वर की महिमा का दिखना 1-24

यरूशलेम की घेराबंदी से पहले 592-587 ई.पू

क- आने वाला न्याय 1-3

ख- प्रतीकों द्वारा अनुमानित निर्णय 4-5

ग- उपदेश के द्वारा भविष्यवाणी की गई 6-7

घ- दर्शनों द्वारा भविष्यवाणी की गई निर्णय) 12-19

ङ- पाने योग न्याय दण्ड 20-24

II. यहूदा के शत्रुओं द्वारा परमेश्वर की महिमा का देखे जाना 25-32

यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान 586 ईसा पूर्व

अम्मोन, मोआब, एदोम, पलिश्ती, सोर, सीदोन, मिस्र

III. यहूदा के भविष्य द्वारा देखी गई परमेश्वर की महिमा 33-48

यरूशलेम की घेराबंदी के बाद 585-570 ई.पू

क- इज़राइल के लिए नया चरवाहा 33-36

ख- इज़राइल के लिए नया जीवन 37-39

ग- इज़राइल के लिए नया मंदिर 40-43

घ- इज़राइल के लिए नई उपासना 44-48

बाइबिल अवलोकन 20.

एज्रा (वापसी)



मुख्य घटना : यहूदीयों का इजराइल लौट आना

मुख्य लोग: जरुब्बाबेल, एज्रा, नहेम्याह,

बाइबल की पुस्तकें: एज्रा, एस्तेर, हाग्वै, जकर्याह, नहेमायाह, मलाकी

बाइबल आयत: एज्रा 7:6 एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अध्ययन करने, और उसके मानने में, और इजराइल में उसकी विधियों और व्यवस्थाओं को सिखाने में अपने आप को पूरी रीति से लगा रखा था ।

एस्तेर 4:15-16 तब एस्तेर ने मोर्दकै के पास यह कहला भेजा, कि तू जाकर शूशन के सब यहूदियों को इकट्ठा कर, और मेरे लिये उपवास कर; तीन दिन और तीन रात तक ना कुछ खाना और ना कुछ पीना। मैं और मेरे दसियां भी उपवास करेंगी। जब यह हो जाएगा, तो मैं राजा के पास जाऊंगी, भले ही यह कानून के विरुद्ध हो। और यदि मैं नाश होती हूँ, तो मैं नाश हो जाऊंगी।

समय: 550 ई.पू

इस समय की विश्व घटनाएँ:

भारत में सिद्धार्थ ने गौतम बौद्ध धर्म की स्थापना ई. महावीर जैन ने जैन धर्म की स्थापना की थी।

फारस ने चीन में पाकिस्तान के राजनीती दर्शनक को पकड़ लिया

भौगोलिक स्थान: बाबेल, फिलिस्तीन

		विभाजन				
		यूसुफ		भविष्यद्वक्ता		
		याकूब		सुलेमान		
		लज्पल	इसहाक	यहोशु	दाऊद	बाबेल व
		बाबेल	अब्राहाम	मूसा	शाऊल	कैद
					असीरिन	कैद
4000 ई.पू.	3000 ई.पू.	2000 ई.पू.			1000 ई.पू.	1 ई.पू.

जब बाबेल में बन्धुवाई के सत्तर वर्ष समाप्त हो गए, तो परमेश्वर ने कुछ यहूदियों को बाबेल से घर लौटने की अनुमति दी, जैसा कि यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी (यिर्मयाह 25:12; 29:10)। कुछ जरुब्बाबेल के अधीन लौटे, कुछ बाद में एज्रा के साथ और अन्य बाद में नहेम्याह के साथ। हालाँकि, अधिकांश यहूदियों



ने वहां पर रहने और उस समृद्धि का आनंद लेने को चुना जिसका वे बाबुल में अनुभव कर रहे थे बजाय इसके कि वह उनके लिए परमेश्वर की इच्छा के स्थान पर लौट जाएँ, एक वादा किए गए देश में। जो लोग लौटें वे मूर्तिपूजा से ठीक हो गए थे और परमेश्वर के प्रति

विश्वासयोग्य थे। उनकी आस्था और विश्वास परमेश्वर में गहरा हो गया था और वे भूमि में रहने की कठिन परिस्थितियों को सहन करने के लिए तैयार थे ताकि वे परमेश्वर के प्रति वफादार रहें। मंदिर, फिर शहर की शहरपनाह के पुनर्निर्माण में बहुत काम करना बाकी था। उन्होंने अपने स्वयं के श्रेणियों के साथ-साथ अपने आसपास रहने वाले अन्यजातियों की धमकियों और उत्पीड़न से उठी कई समस्याओं का सामना किया, लेकिन उन्होंने सब सहन किया। फिर भी, बहुत से ऐसे थे जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे लेकिन पाप में भटक गए। परमेश्वर ने धर्मी पुरुषों को उन्हें चेतावनी देने के लिए भेजा और उन्हें अपने पास वापस लौटने को कहा, जैसा कि वह शुरू से ही करता आ रहा था।

नहेमायाह से मिलें

उसका नाम नहेमायाह है। वह यहूदियों का अगुवा था। कुछ लोग सोचते हैं कि अगुवा बनना कठिन है। यह वास्तव में काफी आसान है। बस अगुवा बनने के लिए जो जरूरी है वो है; अटूट धैर्य, अचूक अंतर्दृष्टि, दृढ़ स्थिरता, अटूट इच्छाशक्ति, न्याय का निर्णय, अथक शरीर, लोकहित भावना और सभी लोगों के लिए अटूट स्नेह। नहेमायाह के पास वह नहीं था। लेकिन परमेश्वर ने इसमें उसकी काफी मदद की।

यदि आप एक अगुवा हैं, तो शायद आप उस से कुछ सीख सकते हैं। अगर आपके पास नौकरी है, परिवार है या कोई दोस्त है तो आप अगुवा ही हैं। एक अगुवा वह होता है जो जानता है कि वह कहां जा रहा है और दूसरों को आपने पीछे कैसे चलाना है। एक अगुवा होना कुछ ऐसा ही है जो आप हैं, नाकि कुछ ऐसा जो आप करते हैं। यह एक कार्य है, दूसरों द्वारा प्रदान की जाने वाली उपाधि नहीं। उसके लिए ऐसा ही था।

यरूशलेम को बाबेल के हाथों में पड़ने के बाद नहेमायाह बाबेल में रहा। यह कहानी नहेमायाह के जन्म से 100 साल पहले बाबेल में शुरू होती है। यहूदा (यहोयाचिन) के दूसरे अंतिम राजा के पोते जेरुब्बाबेल ने यहूदियों के पहले समूह का नेतृत्व यरूशलेम में किया। हालांकि बहुत से लोग वापस नहीं लौटना चाहते थे - लगभग हर सौ में से एक ही वापस लौटना चाहता था। अधिकांश लोग बाबेल में समृद्धि और अच्छे जीवन को छोड़ कर एक उदास और बर्बाद देश में वापस नहीं जाना चाहते थे। बेशक कुछ, जैसे दानियेल था (जो अपने 60 के दशक में थे) बुढ़ापे के कारण वापस जाने के लिए असमर्थ थे।

जब जेरुब्बाबेल 15,000 के अपने समूह को वापस ले गया, तो परमेश्वर ने हागै और जकर्याह को प्रचार करने के लिए खड़ा किया, जबकि वह मंदिर के पुनर्निर्माण के कार्य का नेतृत्व कर रहा था। हालांकि, 20 साल तक रुकने से पहले वे अभी बहुत दूर नहीं पहुँच पाए थे। फिर उन्होंने अपना काम पूरा किया।

यह इस समय के दौरान था कि हद्दसाह, जिसे आप एस्तेर के नाम से बेहतर जानते हैं, परमेश्वर द्वारा उसका उपयोग, न केवल फारस में बल्कि फिलिस्तीन में भी यहूदियों को विनाश से बचाने के लिए, किया गया था।

जरुब्बाबेल के पचहत्तर वर्ष बाद, एज्रा लोगों के एक अन्य समूह को वापस यरूशलेम की ओर ले गया। वह उस व्यक्ति का परपोता था जो यरूशलेम के पतन के समय महायाजक था। वह यहूदी मामलों के राज्य सचिव के समकक्ष था। एज्रा एक ईश्वरीय विद्वान था जो पुराने नियम को दिल से जानता था। उसने एज्रा, इतिहास और भजन संहिता 119 की पुस्तकें लिखीं और साथ ही साथ व्यवस्थाविवरण और यहोशू जैसी अंतिम पुस्तकें भी लिखीं थीं। एज्रा ने पूरे पुराने नियम को संपादित किया, इसे चकोर इब्रानी लिपि में बदल दिया जिसका आज भी उपयोग किया जाता है। उसने ही सिनेगॉग सिस्टम (आराधनालय प्रणाली)

को शुरू किया जिस के आधार पर आपका चर्च और स्कूल सिस्टम बनाया गया है। आराधनालय प्रणाली (सिनेगॉग सिस्टम) ने यहूदियों को एक साथ रखा जब वे अपने मंदिर से दूर थे। एज्रा ने महासभा को भी विकसित किया, जिसमें 70 महान पुरुष यहूदियों को देश के अंदर और बाहर शासन करने के लिए स्थापित किया गया।

केवल 1,500 पुरुष उसके पीछे-पीछे गए। वह बाइबल शिक्षण देने और उन्हें परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश में लगा रहा। हालांकि उसे कुछ खास अच्छा नतीजा नहीं मिला।

पंद्रह साल बाद नहेम्याह सुर्खियों में आ गया। उसकी कहानी 445 ईसा पूर्व में शुरू होती है। उनका जन्म बाबेल में हुआ था। उसके दादा-दादी को यरूशलेम के पतन के समय बंदी बना लिया गया था। वह राजा अर्तक्षत्रस का मुख्य सलाहकार था। परमेश्वर ने उसे कुछ बहुत ही अनोखे तरीकों से इस्तेमाल किया। कुछ स्पष्ट नेतृत्व पाठ हैं जिन से हम नहेम्याह के जीवन से सीख सकते हैं।

एक अगुवा वह व्यक्ति होता है जो प्रार्थना करता है। जब उसने यरूशलेम में भयानक परिस्थितियों के बारे में सुना तो नहेमायाह ने लोगों की मदद के लिए किसी को भेजने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की - और क्या आप इसे नहीं जानते, परमेश्वर ने उसे ही भेजा! (नहेमायाह 1:1-4) परमेश्वर ने उसका उपयोग किया क्योंकि उसने उसके साथ प्रार्थना में इतना समय व्यतीत करता था।

एक अगुवा वह व्यक्ति होता है जो तैयारी करता है। जब वह अंत में यरूशलेम गया तो उसने पाया कि वहां हर कोई निराश और बहुत निराशावादी था (नहेमायाह 2:11-12)। यह निराशाजनक लग रहा था। उसने धैर्यपूर्वक जितनी प्रत्यक्ष जानकारी मिल सकी, एकत्र की, उसके बारे में प्रार्थना की, कुछ विश्वासयोग्य सलाहकारों से बात की और कुछ दूरगामी योजनाएँ बनाईं। उन्हें पूरा करने के लिए उसे छोटी दूरी के लक्ष्यों और आवश्यक कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक सभी चीजों का विवरण देता (नहेमायाह 2:4-8)। जब सही समय आया तो उसने अपनी योजनाओं को दूसरों के साथ साझा किया, और उन्हें अनुसरण करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया (नहेमायाह 2:17-18)। उसने सभी को काम सौंप दिया था इसलिए सभी के पास एक विशिष्ट कार्य था जिसे पूरा करना था। जब शत्रु उन्हें रोकने के लिये चढ़ाई करने पर थे, तब वे काम करते रहे और डर के मारे न झुके (नहेमायाह 4:3-9)। नहेम्याह ने परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए प्रार्थना की कि वह उनकी रक्षा करें, पर साथ ही साथ उसने एक पहरेदार भी बनाया। एक अच्छा अगुवा बनने के लिए प्रार्थना और काम दोनों की आवश्यकता होती है: प्रार्थना ऐसे करें जैसे कि सब कुछ परमेश्वर पर निर्भर करता है और काम ऐसे करें जैसे कि सब कुछ उन्हीं पर निर्भर करता है।

एक अगुवा वह व्यक्ति होता है जो दृढ़ रहता है। भोजन की कमी ने गरीब लोगों को अपने बच्चे अमीरों को बेचने के लिए मजबूर कर दिया था ताकि उनके पास अपने दूसरे बच्चों को खिलाने के लिए पैसा हो सके। 50% ब्याज के साथ पैसा उच्च दर पर उधार दिया जाता था। एक अगुवा को आंतरिक समस्याओं से जूझना चाहिए, जो अक्सर बाहर से हमलों की तुलना में, अधिक कठिन होती हैं। नहेम्याह को इन कठिनाइयों के बारे में कार्रवाई करनी थी, इसलिए उसने करवाई की भी। उसने वही किया जो आवश्यक था, भले ही वह लोकप्रिय न हो। वह सचाई पर खड़ा हुआ (नहेमायाह 5:9-11)

यहां तक कि जब दुश्मन के हमले तेज हो गए तब भी वह उन से ना डरा और ना काम को बंद होने दिया। हत्या की धमकियां भी उसे नहीं रोक सकी (नहेमायाह 6:1-4)। एक अगुवा डर के मारे बेदिल नहीं हो सकता!

एक अगुवा वह व्यक्ति होता है जो किसी चीज का शुद्धिकरण करता है। उसे उनके बीच से पाप और बुराई को दूर करने की आवश्यकता थी। एज्रा अभी भी प्रचार कर रहा था, और परमेश्वर ने उसके शब्दों का उपयोग, एक बेदारी/जागरूकता शुरू करने के लिए, किया। जीवन बदल गया और लोगों ने बाइबल का पालन करना शुरू कर दिया।

बाद में नहेम्याह बहुत ही कम समय के लिए बाबेल वापस चला गया और जब वह वापस लौटा तो उसने पाया कि अभी और शुद्धिकरण किया जाना बाकी था, क्योंकि लोग जल्दी से अपने पाप में लौट आए थे। प्रार्थना करना, तैयारी करना, दृढ़ रहना और शुद्ध करना एक ईश्वरीय अगुवे के निरन्तर कर्तव्य होते हैं। वे हमेशा आनंद दायक नहीं होते हैं, लेकिन वे निश्चित रूप से आवश्यक होते हैं! इनमें से किस पर आपको अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है? कुछ लक्ष्य निर्धारित करें और आज से ही शुरुआत करें। आपके पास नेता होने के बारे में कोई विकल्प नहीं है -- आप एक अगुवा हैं। लेकिन यह आप पर निर्भर करता है कि आप किस तरह के अगुवा हैं!

एज्रा: वापसी



शीर्षक: एज्रा, इसमें मुख्य चरित्र है

लेखक: एज्रा (याजक)

लेखन की तिथि: 456 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: येरूशलेम

शामिल समय: 81 वर्ष (538 - 457 ई.पू.)

प्राप्तकर्ता: बंधुवर्ग के बाद यहूदी लोग

मुख्य आयत: एज्रा 7:6-10 यह एज्रा बाबेल से आता है। वह मूसा की उस व्यवस्था का जिसे इजराइल के परमेश्वर यहोवा ने दीया था, उसका अच्छा उपदेशक था। राजा ने उसे वह सब कुछ दिया जो उसने मांगा था, क्योंकि उसके परमेश्वर यहोवा का हाथ उस पर था। इजराइल के कुछ लोग जिनमें याजक, लेवी,

गवैए, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक थे, राजा अर्तक्षत्र के सातवें वर्ष में यरूशलेम पहुंचे। एज्रा इस राजा के सातवें वर्ष के पांचवें महीने में यरूशलेम पहुंचा। पहिले महीने के पहिले दिन को वह बाबेल से कूच करके पांचवें महीने के पहिले दिन यरूशलेम पहुंचा, क्योंकि उसके परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर थी। क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अध्ययन करने, और उसके मानने में, और इजराइल में उसकी विधियों और व्यवस्थाओं को सिखाने में आपने आप को अर्पण किया हुआ था।

मुख्य शब्द: "ऊपर जाओ/ऊपर गए" "यरूशलेम" (47 बार)

उद्देश्य: इजरायल के इतिहास को दिखाने के लिए जैसे वे कैद से वापस आते और फिर से स्थापित होते हैं।

विषय: परमेश्वर से दूर होने पर उसके पास लौटने का महत्व।

राजा रिचर्ड III एक रात अपनी सेना के बीच घूमने निकला। वहां उसने अपनी पोस्ट पर एक गार्ड को गहरी नींद में सोते हुए पाया। आनन-फानन में उसने चाकू लिया और उसके दिल में वार कर दिया। उसने उसे एक नोट चिपका दिया, जिसमें कहा गया था: मैंने उसे सोते हुए पाया और मैंने उसे वैसे ही छोड़ दिया। यह अच्छी बात है कि हमारा राजा अपनी प्रजा के साथ ऐसा नहीं करता है जब वे आध्यात्मिक रूप से सोते हुए पाए जाते हैं! वह उन्हें सतर्कता में वापस लाने की कोशिश करता है। एज्रा की पुस्तक इस आत्मिक सत्य को दर्शाती है।

पुनस्थापना - यह पुस्तक उन यहूदियों के साथ शुरू होती है जो अपनी मूर्तिपूजा के कारण कैद में थे। फिर भी परमेश्वर उनके के साथ विश्वासयोग्यता से काम कर रहा है। इस अनुशासन ने उन्हें तब से मूर्तिपूजा में लौटने से रोक कर रखा हुआ है। परमेश्वर ने उन्हें भौतिक रूप से आशिषत किया। इस समय से पहले वे किसान और चरवाहे ही थे, लेकिन बाबेल में उन्होंने व्यवसायी और बैंकर बनना सीखा, व्यापार में वे अभी भी उत्कृष्ट हैं। परमेश्वर धर्मी अगुवाओं के साथ-साथ राजा सिरास के दिलों में काम कर रहा था ताकि उन्हें वापस आने की अनुमति मिल सके। उड़ाऊ पुत्र के पिता के समान, वह प्रेमपूर्वक उनकी वापसी की रह देखता है। वह 'दूसरे मौका देने वाला " परमेश्वर ' है।

जब जरुब्बाबेल ने देश पर लौटने के लिए एक पुकार भेजी, तो केवल 50,000 यहूदियों ने ही उत्तर दिया। यह बाबेल में रहने वाले यहूदी लोगों का बहुत छोटा प्रतिशत था। बहुसंख्यक अपनी नव-प्राप्त समृद्धि को छोड़ना नहीं चाहते थे। यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उसके लोग उस देश में रहें जो उसने उन्हें दिया था, परन्तु उन्होंने संसार में रहने को चुना। केवल एक बहुत प्रतिबद्ध ईश्वरीय लोगोया का छोटा सा डाल ही लौटा। सभी मानवजाति में से, यह हमेशा केवल एक छोटा अल्पसंख्यक

दल ही होता है जो यीशु के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करता है। और फिर यह भी उस समूह का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही होता है जो यीशु को आपने दैनिक जीवन में पहले स्थान पर रखता है और उसके शिष्य के रूप में जीवन जीता है।

देश में वापस आने पर, जरुब्बाबेल ने मंदिर का पुनर्निर्माण करना शुरू कर दिया। सन्निधियों इसका विरोध करने लगे, इसलिए 15 साल तक काम बंद रहा। इस दौरान हाग्वै और जकर्याह ने प्रचार किया। जब अंतः मंदिर का पुनर्निर्माण पूरा हो गया तो यह सुलैमान द्वारा बनाये गए मंदिर से इतना घटिया था कि जिन्होंने पहले वाले मंदिर को देखा था वे उसे याद करते थे और वे रो पड़ते थे ।

एस्तेर- एज्रा 6 और 7 के बीच 58 वर्षों का अंतराल है, जिसके दौरान एस्तेर की पुस्तक में दर्ज घटनाएँ घटित हुई थी।

सुधार- जरुब्बाबेल के अस्सी साल बाद, एज्रा दिखयी देता है। वह दूसरे समूह को वापस देश में ले जाता है। एज्रा एक याजक और शास्त्री था (आपने हाथ से बाइबल की नकल/प्रितिलिपि लिखता था)। वह प्रतिष्ठित रूप से पूरे पुराने नियम को दिल से जानता था और एक बहुत ही समर्पित विश्वासी था। उसने मामलों का निवारण करने और दुनिया भर के यहूदियों को मार्गदर्शन देने के लिए महासभा की स्थापना की थी। उसने आराधनालय प्रणाली की स्थापना की जो मंदिर से दूर रहते हुए यहूदियों को एक साथ बनाए रखती थी। यह शिक्षण देने, आराधना करने, संगति करने और सामुदायिक गतिविधियों का स्थान होता था। आज चर्च इसी आराधनालय पर आधारित है। एज्रा ने 1 और 2 इतिहास, एज्रा और भजन 119 भी लिखे थे। उसने पूरे पुराने नियम को संपादित किया, प्रेरित पुस्तकों को इकट्ठा किया और उन्हें पुराने नियम के रूप में बनाया जैसा कि आज हमारे पास है। उसने यह सुनिश्चित किया कि समूह और क्रम में, संपादित और अद्यतन तरीके से सभ सही स्थान पर थे। ऐसा करने में उसने पुराने इब्रानी लिपि को नए, वर्गाकार असीरियाई अक्षरों से बदल दिया, जो आज भी उपयोग में हैं। परमेश्वर ने एज्रा को उसके गहरे बाइबल ज्ञान के कारण चुना। वह इसका अध्ययन करता, अभ्यास करता और इसकी शिक्षा देता था (एज्रा 7:10)। बाइबिल परमेश्वर के पास लौटने की कुंजी है, कोई भावनात्मक अपील या दोष आदि नहीं। भूख न लगना बीमारी का लक्षण है। एज्रा खुद को और दूसरों को परमेश्वर के वचन का अच्छा, संतुलित आहार देता था।

केवल 1,514 समर्थ पुरुष ही उसके साथ लौटने को तैयार हुए। 4 महीने की यात्रा के बाद वे यरूशलेम पहुँचे, और उनको केवल यह जानने को मिला कि लोग फिर परमेश्वर से दूर हो चुके थे। अविश्वासियों के अंतर्जातीय विवाह के पाप ने लोगों को परमेश्वर से दूर कर दिया था। अविश्वासी पत्नियों को घर भेजना पड़ा। तब लोग फिर परमेश्वर की ओर मुड़े। पाप दुख लेकर आता है !

वापसी 1: जरुब्बाबेल 536 ईसा पूर्व

वापसी 2: एज्रा 458 ईसा पूर्व

वापसी 3: नहेमायाह 445 ईसा पूर्व

एज्रा की रूपरेखा

1. बहाली (जरुब्बाबेल, 538-516 ई.पू.) 1-6

क- परमेश्वर के लोगों का पुनर्निर्माण 1-3

1. बहाली का कार्य 1
2. लोगों का सूचीबद्ध किया जाना 2
3. पुनर्निर्माण 3

ख-परमेश्वर के मन्दिर का पुनर्निर्माण 4-6



1. मंदिर का विरोध 4
2. मंदिर के लिए सहारा 5
3. मंदिर का पूरा होना 6

(एस्तेर की पुस्तक 483-473 ई.पू.)

II. सुधार (एज्रा, 458-457) 7-10

क-परमेश्वर के याजकीयपन का पुनर्निर्माण 7-8

1. बहाली का कार्य 7
2. लोगों का सूचीबद्ध किया जाना 8
3. वापसी

ख-परमेश्वर की उपासना का पुनर्निर्माण 9-10

एसतेर :

परमेश्वर की दयापूर्ण देखभाल



शीर्षक: मुख्य पात्र के नाम पर

लेखक: अज्ञात (संभवतः मोर्दकै)

लेखन की तिथि: लगभग 473 ई.पू

लिखने का स्थान: शूशन, बाबेल

शामिल समय: 10 वर्ष (483 - 473 ईसा पूर्व)

(एज्रा की किताब के दौरान में हुआ)

प्राप्तकर्ता: फारसी साम्राज्य में फैले हुए यहूदी।

मुख्य आयत : 4:14 क्योंकि यदि तू इस समय चुप रहे, तो यहूदियों का छुटकारा और राहत तो और कहीं से भी हो जायेगा , परन्तु तू और तेरे पिता का घराना नाश हो जाएगा। और कौन जानता है कि तू ऐसे समय के लिए शाही पद पर आई हो ?"

मुख्य शब्द: यहूदी , यहूदी और दावत (51 बार)

उद्देश्य: इसका अध्ययन करना कि एस्तेर द्वारा सभी यहूदियों को विनाश से कैसे बचाया गया था ।

विषय: परमेश्वर की दयापूर्ण देखभाल

एक बार की बात है, एक मसीही व्यक्ति के पास हजारों पेड़ों का एक बाग था। उसका पूरा परिवार भोजन के लिए इसी पर निर्भर था। एक सुबह उसने आधे-अधूरे सेबों को अजीबोगरीब कीड़ों द्वारा नष्ट होते देखा। हर पेड़ प्रभावित हुआ पड़ा था। परिवार इकट्ठा हुआ और प्रार्थना की, फिर पूरे दिन कीड़ों को

चुनने में बिताया, लेकिन वे उठाए जाने की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ने लगे। पूरा दिन तेज गति से काम करते-करते थक कर और हताश होकर वे प्रार्थना करने के बाद सो गए। अगले दिन सुबह-सुबह उन्होंने सैकड़ों विचित्र पक्षियों को पेड़ों पर उतरते देखना शुरू किया। वे सारा दिन कीड़े खाते रहे लेकिन उन्होंने पेड़ों या सेबों को कभी नुकसान नहीं पहुँचाया। उन्होंने वहाँ तीन दिन बिताए, फिर चले गए। सारे कीड़े निकल गए और फसल बच गई। क्या यह कोई संयोग था ? बिल्कुल नहीं। हमारा सम्प्रभु परमेश्वर पूरी तरह हर चीज़ पर नियन्त्रण बनाये हुआ था। वह अपनों की परवाह करता है और उनका भरण-पोषण करता है। दुर्भाग्य से हम इस सब के बारे में भूल जाते हैं। जब हम भूल जाते हैं, तो हमें एस्तेर की पुस्तक पढ़नी चाहिए!

परमेश्वर के लोगों के लिए खतरा (एस्तेर 1 - 3) -एस्तेर के पहले अध्याय में एक घिनौनी/अनैतिक कहानी सामने आती है (एस्तेर 1)। दृश्य फ़ारस के महान शहर शूशन का है। दावतों की एक श्रृंखला के बाद (सचमुच एक बड़े नशे में मदहोश) राजा क्षयर्ष (दुनिया के इतिहास में जिसे ज़क्सर्स खा जाता है) जश्न उत्सव के समापन के लिए मनोरंजन की झलक बढ़ाने के लिए अपनी रानी वशती को आदेश देता है। मान- सम्मान के अपने स्वयं के मानकों के कारण, उसने इनकार कर दिया और उसे हमेशा के लिए राज्य से निकाल दिया गया। इसलिए राजा ने एक नई रानी के लिए विश्वव्यापी खोज शुरू कर दी ।

मोर्दैकै नाम का एक यहूदी, जो महल में मामूली नौकरी करता था, प्रतियोगिता में अपनी चचेरी बहन को (जिसे वह पाल रहा था) शामिल कर दिया और वह जीत गई ! अब यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यहूदियों को फारस में तो रहना नहीं था। उन्हें एज्रा या नहेम्याह के साथ लौटना चाहिए था, लेकिन वे यरूशलेम की गरीबी और कठिनाइयों के लिए फारस में की समृद्धि और चल रहा अच्छा जीवन नहीं छोड़ना चाहते थे। इस प्रकार वे परमेश्वर की इच्छा से बाहर हो चुके थे। परिणामस्वरूप हम देखते हैं की एस्तेर की पुस्तक में परमेश्वर के नाम, प्रार्थना या बलिदानों का कोई उल्लेख नहीं है। फिर भी, परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करने के अपने वादों को पूरा करता है।

एस्तेर के रानी बनने के बाद मोर्दैकै ने राजा को मारने की साजिश सुनी, एस्तेर को बताया, और उसने इसकी सूचना दी (एस्तेर 3)। साजिश बंद कर दी गई और राजा बच गया। यह सब परमेश्वर की योजना का हिस्सा है।

यह साजिश तब और गहरी हो जाती है जब हामान, प्रधान मंत्री और राजा का पसंदीदा व्यक्ति होने की हैसियत में, कानून के माध्यम से राज्य के सभी यहूदियों को मार डालने के लिए जोर देता है। मोर्दैकै के प्रति उसकी घृणा, जो उसके आगे नहीं झुकता था, उसे दयनीय हालत में ले आती है। यह परमेश्वर के छुटकारे के लिए दृश्य तैयार करता है। वह अपनी जाति को बचाने के लिए एस्तेर का उपयोग करता है और नहेम्याह को यरूशलेम लौटने और दीवारों का पुनर्निर्माण करने की अनुमति देने के लिए उसके सौतेले बेटे अर्तक्षत्र को प्रेरित करता है।

परमेश्वर के लोगों का उद्धार (एस्तेर 4 - 10) -जब मोर्दैकै ने सभी यहूदियों को नष्ट करने की साजिश के बारे में सुना तो वह वास्तव में परेशान हो गया और उसने एस्तेर को संदेश भेजा, कि वह अपने लोगों के लिए हस्तक्षेप करे, भले ही इसका मतलब उसकी मृत्यु ही क्यों ना हो। राजा से बात करना मना था, और यह प्रकट करना कि वह एक यहूदी थी, इसका मतलब उसकी मृत्यु भी हो सकती थी। हालाँकि वह साहसपूर्वक ऐसा करती है, राजा और हामान को एक भोज में आमंत्रित करती है जो सिर्फ उनके लिए ही होगा (एस्तेर 5)।

इस बीच मोर्दकै से घृणा करने के कारण हामान बहुत दुखी होता है। उसकी पत्नी का कहना है कि अगर वह एक बड़ा सूली बनाता है और मोर्दकै की हत्या की उम्मीद करता है तो वह बेहतर महसूस करेगा, इसलिए उसने इसे बनवा लिया।

एक रात राजा को सोने में कठिनाई हुई (उन छोटी चीजों में से एक जिनको परमेश्वर बड़े पैमाने पर उपयोग करता है)। उसने अपने इतिहास से पढ़ा और अपने जीवन को बचाने में मोर्दकै के काम को पाया, और अगले दिन उसे पता चलता है कि मोर्दकै को इसके लिए कभी भी पुरस्कृत नहीं किया गया था। वह इस पर कुछ करने का निश्चय करता है।

जब अहंकारी, आत्म-केन्द्रित हामान अगले दिन काम पर आता है तो राजा उससे पूछता है कि उसे क्या लगता है कि राजा को उस व्यक्ति का सम्मान करने के लिए क्या करना चाहिए जिसकी वह गहराई से सराहना करता है। यह सोचकर कि राजा उसका उल्लेख कर रहा है, हामान महिमा और सम्मान के अपने स्वयं के घमण्डपूर्ण स्वप्नों को प्रकट करता है, जिससे उसके वल यह पता चलता है कि राजा उसके शत्रु मोर्दकै के लिए पूछ रहा था - और उसे मोर्दकै का सम्मान करना था! कार्यालय में एक बुरे दिन के बारे में बात करो तो कैसा लगेगा!

उसी दिन के बाद में, जब हामान एस्तेर और राजा के साथ शाही खाने में आया, तो वह सारे यहूदियों को नाश करने का हामान का विधान प्रगट करती है। राजा को इस बात पर गुस्सा आया कि उसे कैसे बरगलाया गया था और अपने क्रोध पर नियंत्रण पाने के लिए वह कमरे से बाहर चला गया। हामान एस्तेर पर दया की भीख माँगने लगा, और जब राजा ने प्रवेश किया तो उसने सोचा कि हामान एस्तेर पर हमला कर रहा है। उसने हामान को फौरन उसी की बनायीं फाँसी पर मरवा डाला! इतना ही नहीं, बल्कि यहूदियों को उन लोगों को मारने की अनुमति थी जो उन्हें नष्ट करना चाहते थे। इसके अलावा, मोर्दकै को राजा के शीर्ष सलाहकार के रूप में हामान के पद पर पदोन्नत किया गया जाता है! सुखद अंत की बात करो, कैसे लगता है!

आज भी यहूदी इस महत्वपूर्ण छुटकारे को पूरीम के पर्व के रूप में मनाते हैं। वे उपहार देते हैं, एक साथ खाते हैं, और बच्चे एस्तेर की किताब में घटनाओं को फिर से नाटकीय रूप से दिखाते हैं (जिस तरह हम क्रिसमस मनाते हैं)। वास्तव में यह परमेश्वर की संप्रभुता और उसके लोगों के लिए उसकी दयापूर्ण देखभाल का एक अद्भुत अनुस्मारक है, यहां तक कि उनके लिए जो उसकी इच्छा से भी बाहर जीवन जीते हैं। हमारा परमेश्वर कितना महान है!

एसतेर की रूपरेखा

I. परमेश्वर के लोगों के लिए खतरा (परीक्षण) 1-3

क- वशती का तलाक 1

ख- एस्तेर की खोज 2

ग- मोर्दकै का समर्पण 2

घ - हामान का फरमान 3

II. परमेश्वर के लोगों का उद्धार (भरोसा और विजय) 4-10

क- मोर्दकै की निराशा 4

ख- एस्तेर का निर्णय 5

ग- हामान के योजना

घ - हामान की हार 6-7

ङ- क्षयर्य का फरमान 8

च- इज़राइल की मुक्ति 9क

छ -पुरीम के दिन 9ख

ज- मोर्दकै का शान 10

नहेम्याहः

नवीनीकरण



शीर्षक: मुख्य पात्र के नाम पर

लेखक: नहेम्याह

लेखन की तिथि: लगभग 420 ई.पू

लेखन का स्थान: येरूशलेम

समय शामिल: 30 वर्ष (445-415 ईसा पूर्व)

प्राप्तकर्ता: लौट कर आए हुए यहूदी

मुख्य आयत : 1:1-7 हनानी, मेरा एक भाई, यहूदा से कुछ और आदमियों के साथ आया था, और मैंने उसे उन बचे हुए यहूदियों के बारे में पूछा जो बंधुआई से बच गए थे, और यरूशलेम के बारे में पूछा। उन्होंने मुझ से कहा, "जो बंधुआई से बचकर प्रान्त में लौट आए हैं, वे बड़ी विपत्ति और अपमान में पड़े हैं। यरूशलेम की शहरपनाह टूट गई है, और उसके फाटक जले हुए हैं।" जब मैंने ये बातें सुनीं तो मैं बैठ गया और रोने लगा। कुछ दिनों तक मैंने स्वर्ग के परमेश्वर के सामने शोक मनाया और उपवास किया और प्रार्थना करता रहा।

मुख्य शब्द: दीवारें (32 बार) निर्माण (23 बार)

उद्देश्य: यह बताना कि कैसे नहेम्याह के अधीन यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण किया गया

विषय: नवीकरण/बहाली के लिए कदम

जब कोई " बेदारी " शब्द का प्रयोग करता है तो उसके मन में क्या आता है? क्या आप विशेष सभाओं की श्रृंखला के बारे में सोचते हैं?, और ऊँची आवाज़ वाले और भावपूर्ण प्रचार के बारे में सोचते हैं? वेबस्टर का कहना है कि यह पाप को सार्वजनिक रूप से मानने और नए सिरे से विश्वासी जीवन जीने की विशेषता के प्रति गंभीर लोगों के बीच धार्मिक विश्वास की एक हलचल है। मूल रूप से, बेदारी का अर्थ है जीवन

में वापस लाना। अंग्रेजी में री -वाईव "री " का अर्थ है फिर से करना, "वाईव" का अर्थ है जीवन। यह किसी ऐसी चीज को वापस लाने को संदर्भित करता है जो कभी जीवित थी। इसलिए बेदारी /पुनरुद्धार मूल रूप से परमेश्वर के लोगों को आत्मिक जीवन में लाने को संदर्भित करता है जो उसके पास एक नई निकटता/गंभीरता में वापस चले आ चुके हैं। यह उस सुसमाचार प्रचार से अलग है जो अविश्वासियों को पहली बार प्रतिबद्धता बनाने की अपील करता है। उद्धार खोया नहीं जा सकता, लेकिन हम ठंडे पड़ सकते हैं और हमें नवीनीकरण की आवश्यकता हो सकती है। समय-समय पर इतिहास के माध्यम से परमेश्वर ने पुनरुत्थान को चिंगारी दी है जिसने उसके लोगों को उसके पास वापस लाने के लिए कायर किया है। ऐसी ही एक बेदारी नहेम्याह के समय में आई थी।

पृष्ठभूमि- एज्रा यहूदियों के एक छोटे से अवशेष को उनकी मातृभूमि में वापस ले गया था, अधिकांश लोग बाबेल के ऐश्वर्य में रहना पसंद करते थे। पन्द्रह वर्ष बाद नहेम्याह के पास यह शब्द आया कि देश में चीजें अभी भी बुरी स्थिति में हैं (नहेम्याह 1)। यह उसकी गलती नहीं थी, और ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि वह 1500 मील दूर बैठे हुए कुछ कर सकता था। फिर भी...

1. जागृति/बेदारी एक समर्पित विश्वासी के साथ आरंभ होती है। नहेम्याह प्रार्थना और उपवास में परमेश्वर की ओर मुड़ा और ईमानदारी से प्रभु को पुकारने लगा। उसने अपने पाप और अपने लोगों के पापों का अंगीकार किया। उसने आपने आप को हर तरह से आवश्यक रूप से उपयोग किये जाने की लिए पूरी तरह से परमेश्वर के सामने समर्पित कर दिया। परमेश्वर ने आर्टैक्सर्ट्स राजा के दिल में काम किया ताकि वह उसे आवश्यक आपूर्ति दे कर वापस जाने दे सके। नहेम्याह को यरूशलेम लौटने की अनुमति दी गई।

2. जागृति/बेदारी पहले तो कुछ तैयार लोगों तक ही फैलती है। किसी भी अच्छी आग के लिए दो चीजों की जरूरत होती है: एक धक्कती चिंगारी और फिर आग को पकड़ने के लिए तैयार कुछ जलती तयार चीज़ें। नहेम्याह चिंगारी था, और सबसे पहला काम जो उसने यरूशलेम में किया वह कुछ अच्छे लोगों को खोजना था जो परमेश्वर के काम करने के लिए तैयार थे। उसने स्थिति का सर्वेक्षण किया और कार्य करने से पहले तथ्यों को इकट्ठा किया, फिर अपनी दृष्टि को कुछ लोगों तक फैलाया जो उसे इस काम के लिए तैयार मालूम होते हैं। आप सभी हरी लकड़ी को तुरंत पकड़ने की उम्मीद नहीं कर सकते, केवल सूखी और तैयार लकड़ी ही तुरंत पकड़ती है। बेदारी शुरू करने के लिए एक अच्छे ठोस ग्रुप की जरूरत होती है, फिर चिंगारी एजी बन कर फैलती है। जल्द ही दूसरों ने उसके दर्शन को पकड़ लिया और जल्द ही वे दीवारों का पुनर्निर्माण कर रहे थे।

3. जागृति/बेदारी के प्रसार के लिए विश्वासियों के बीच एकता होनी चाहिए। नहेम्याह ने लोगों को शहरपनाह पर काम करने के लिये संगठित किया, और हर एक अपने घर के पास काम करता था। हालाँकि, जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी, दुश्मनों ने इसका विरोध किया। हालाँकि, लोगों ने एक साथ खींच लिया। बेदारी के प्रसार के लिए एकता का होना महत्वपूर्ण है। अलगावाद, अक्षमता, कटुता, ईर्ष्या, आदि, जागृति की आग पर जलने से पहले ही पानी डाल सकते हैं।

4. जागृति /बेदारी परमेश्वर के वचन को जानकारी पर आधारित होनी चाहिए। नहेम्याह ने लोगों को इकट्ठा किया और एज्रा ने हर सुबह परमेश्वर के वचन को पढ़ा और सिखाया। उन्हें यह इतना पसंद आया कि वे पूछने लगे कि क्या वह दोपहर में भी ऐसा करेगा। परिणामस्वरूप उन्होंने स्वयं को दीन किया और परमेश्वर की आराधना करने लगे। वे अधिक से अधिक के लिए अगले दिन वापस आना चाहते थे! परमेश्वर के वचन की भूख जागृति के लिए एक आवश्यक संकेत है। न केवल उन्होंने इसे सीखा, बल्कि उन्होंने इसका पालन किया, और जो कुछ उन्होंने सीखा उसे अमल में लाए।

5. जागृति/बेदारी का अर्थ है प्रार्थना में पापों का अंगीकार करना। उसकी महिमा और उससे मिली पूर्व सहायता को स्वीकार करते हुए लोगों ने स्वचालित रूप से प्रार्थना की और अपने पापों को स्वीकार किया (नहेमायाह 9)। प्रार्थना, पाप के अंगीकार से शुरू होकर, जागृति के लिए आवश्यक है।

6. जागृति/बेदारी सार्वजनिक रूप से नए सिरे से प्रतिबद्धता दिखाने की ओर ले जाती है। लोगों ने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा की पुष्टि करके एज्रा की शिक्षा का उतर दिया। उन्होंने आधिकारिक रूप से केवल परमेश्वर का ही अनुसरण करने का वादा किया। यहूदियों ने सार्वजनिक रूप से वादा किया (नहेमायाह 10) कि वे अविश्वासियों से शादी नहीं करेंगे, सब्बत के दिन परमेश्वर की आराधना करेंगे, अपना दशमांश देंगे और मंदिर और उसके याजकों और लेवियों की देखरेख करने में मदद करेंगे।

7. जागृति/बेदारी का परिणाम बदले हुए जीवन में होता है। इसके परिणामस्वरूप लोग यरूशलेम में वापस चले आए और यह अन्य शहरों में भी समृद्ध हुआ। यरूशलेम की दीवारें और शहर परमेश्वर को समर्पित थे। मलाकी ने भी इस दौरान सेवकाई की थी।

8. वास्तविक चीज़ होने के परिणाम स्थायी होने चाहिए। 12 वर्षों तक नहेमायाह और एज्रा के नेतृत्व में सब कुछ अच्छा चलता रहा। फिर नहेमायाह को बाबेल जाना पड़ा और जब वह एक साल बाद वापस लौटा, तो उन्होंने जो प्रतिज्ञाएँ की थीं, वे टूट चुकी थीं। उन्होंने अविश्वासी पत्नियों से शादी कर ली थी और वे परमेश्वर के मंदिर की ठीक से देखभाल नहीं कर रहे थे। शीघ्र ही उन्होंने फिर से नहेमायाह की बुलाहट का जवाब दिया और एज्रा के नवीनीकरण और बेदारी की बुलाहट फिर से आई।

इससे पुराने नियम का इतिहास समाप्त हो गया। 400 वर्ष के मौन के बाद (जिसमें बाइबल की कोई किताब नहीं लिखी गई थी, लेकिन इस समय के दौरान मक्काबी रहते थे) यहुन्ना बप्तिस्मा देने वाला मसीह के लिए रास्ता तैयार करते हुए दिखाई देता है। इसके साथ नया नियम शुरू हुआ -- और बेदारी के लिए एक और बुलाहट। आप कहां पर हैं? क्या आपको नवीनीकरण की आवश्यकता है? क्या आपका आध्यात्मिक जीवन प्रज्वलित और जीवंत है, या इसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है? नहेमायाह का अनुसरण करें और, यदि परमेश्वर ने चाहा, तो आपके आसपास के लोगों में जागृति की शुरुआत जरूर होगी।

नहेमायाह की रूपरेखा

I. दीवारों का पुनर्निर्माण (नागरिक सुधार) 1-7

क- यरूशलेम लौटना 1-2

ख- दीवारों का पुनर्निर्माण 3-6

ग- लोगों को पुनर्स्थापित करना 7

II. वाचा का नवीनीकरण (धार्मिक सुधार) 8-10

क- कानून का पढ़ना 8

ख- लोगों की प्रतिक्रिया

ग- लोगों का पश्चाताप 9

घ- वाचा का नवीनीकरण 10

III. राष्ट्र का नवीनीकरण (राजनीतिक सुधार) 11-13

क- शहरों को फिर से आबाद करना 11-12

ख- दीवारों को पुनर्समर्पित करना

ग- लोगों को पुनर्जीवित करना 13

हागै:

प्राथमिकताएं



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: हागै ("मेरा जश्न भोज")

लेखन की तिथि: अगस्त से दिसंबर, 520 ई.पू

लेखन का स्थान: येरूशलेम

शामिल समय: अगस्त-दिसंबर, 520 ई.पू

प्राप्तकर्ता: वे जो कैद से लौटे आए थे

मुख्य आयत: 1:4 "क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन उजाड़ पड़ा है?"

2:9 'इस वर्तमान भवन का वैभव इससे पहले भवन के वैभव से कहीं अधिक होगा,' सर्वशक्तिमान यहोवा का यही वचन है। और इस स्थान में मैं शान्ति दूंगा, सर्वशक्तिमान यहोवा की यही वाणी है।"

मुख्य शब्द: "परमेश्वर का घर" (8 बार) "विचार करें" (5 बार)

उद्देश्य: लोगों को मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए प्रोत्साहित करना

विषय: भगवान हमारी पहली प्राथमिकता होना चाहिए

क्या आपने कभी ऐसा कुछ शुरू किया है जिसे आप ने पूरा नहीं किया हो ? ऐसा सबके साथ होता है। इसका क्या कारण होता है? हम रुचि या प्रेरणा खो सकते हैं या हमारे पास पर्याप्त समय नहीं हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि इसके पीछे एक ना एक कारण होता है। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम अपनी प्राथमिकताएं बदलते हैं। अब हम इसे उतना महत्वपूर्ण नहीं देखते जितना कि एक समय देखते थे। दुर्भाग्य से जीवन में कई अच्छे काम इसी वजह से नहीं हो पाते हैं। वे हमारे दिमाग में महत्वपूर्ण हो सकते हैं, लेकिन जब तक हम उन्हें अपने समय की प्रतिबद्धताओं में सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं देते, तब तक वे पूरे नहीं होंगे। बाइबल सीखने के महत्व को जानने का कोई मतलब नहीं बनता, जब तक कि हम इसे पढ़ने और अध्ययन करने में समय व्यतीत करने को प्राथमिकता नहीं देते।

हागै में प्रवेश -हागै ने बंधुआई से लौटने के बाद यहूदियों में यही बात सच पाई। हागै एज्रा के समय में जीवित रहा, यहूदियों द्वारा बाबेल से फ़िलिस्तीन को लौटाने के 14 साल बाद। उन्होंने इसकी नींव डालकर मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू किया था, लेकिन इसे कभी पूरा ना किया। हागै लोगों को बुलाता है कि जो कुछ उन्होंने परमेश्वर के लिए आरम्भ किया उसे पूरा करें।

पुनर्निर्माण के लिए बुलावा - (1) वे इस आईएम रात को पूरा क्यों नहीं कर पाए इस बात पर लोग कई बहाने बना रहे थे। लोगों ने बहाने बनाए: की वे बहुत व्यस्त थे और परमेश्वर के घर के लिए उनके पास समय नहीं था। उनकी प्राथमिकताएं गलत थीं। उनका जीवन गलत प्राथमिकताओं के परिणाम दिखा रहा था: असंतोष और हताशा। उन्होंने कड़ी मेहनत की लेकिन उनको कोई वास्तविक आनंद नहीं मिला। ज़रुब्बाबेल (राज्यपाल) और यहोशू (महायाजक) ने लोगों को पश्चाताप करने में अगुवाई की और मंदिर का काम फिर से शुरू हो गया।

सुनने के लिए पुकारो (2:1-9)- सात सप्ताह बाद, जब मंदिर लगभग पूरा हो गया था, वृद्ध लोग निराश होने लगे क्योंकि यह सुलैमान द्वारा बनाये गए मंदिर की तुलना कुछ भी ना था, जिसे वे अभी भी याद करते थे (लेकिन जिसे बबेलियों ने नष्ट कर दिया था)। हागै का कहना है कि उन्हें आपने अतीत में नहीं रहना है (वह समय वापस नहीं आएगा) और जो कुछ उनके पास है उसकी तुलना उस चीज़ से नहीं करनी चाहिए जो परमेश्वर ने दूसरों को दी है। परमेश्वर के लोग एक दूसरे के साथ किसी होड़ में नहीं होते हैं -- आज की कलीसियाओं के लिए यह एक अच्छा संदेश है। बाहरी दिखावे किसी भी तरह से पूरी कहानी नहीं बताते हैं। परमेश्वर मनुष्य के हृदय को देखता है, इमारतों के आकार को नहीं। परमेश्वर 'सांसारिक मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि सांसारिक चीजों पर।

पालन करने के लिए पुकारो (2:10-19) - दूसरे उपदेश के दो महीने बाद हागै ने तीसरा उपदेश दिया, लोगों को उनके विश्वास के बाहरी कार्यों और अनुष्ठानों पर ध्यान केंद्रित करने के बारे में चेतावनी दी, जबकि उनके हृदय कठोर और परमेश्वर से दूर हो चुके थे। वे केवल 'चर्च' चलाने की गति से गुजर रहे थे। हागै ने उन्हें अतीत से सीखने की चुनौती दी, क्योंकि इस पाखंड के कारण ही उन्हें पहली बार कैद में जाना पड़ा। उन्होंने फिर से पश्चाताप किया और परमेश्वर को पहला स्थान देने लगे।

विश्वास करने के लिए पुकारो (2:20-23) - बाद में उसी दिन हागै का चौथा लिखित उपदेश दिया गया। उसने उन्हें भविष्य पर अपनी दृष्टि बनाए रखने और प्रत्येक दिन उसके प्रकाश में जीने के लिए प्रोत्साहित किया। आज सही प्राथमिकताएं रखने का यही एकमात्र तरीका है। उसने उस समय के बारे में बात की जब मसीह इजराइल में शासन करने के लिए आएगा। अनंत वस्तुओं पर अपनी दृष्टि बनाए रखना ही आज सही प्राथमिकताएं रखने का एकमात्र तरीका है।

आप अपनी प्राथमिकताएं कैसे तय करते हैं? आपके जीवन के लक्ष्य क्या हैं (आप अपने जीवनकाल में क्या बनना या करना चाहते हैं)? उन्हें पूरा करने के लिए, आपको अगले साल क्या करना चाहिए? अब, उन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आपको हर दिन क्या करना चाहिए?

लक्ष्य के क्षेत्र	मैं क्या बनना चाहता हूँ या आपने जीवन में क्या पूरा करना चाहता हूँ	यह लक्ष्य पाने के लिए मुझे अब क्या करना चाहिए

आत्मिक रूप में	1. 2.	1. 2.
शिक्षा और व्यवसाय में	1. 2.	1. 2.
रिश्तों में	1. 2.	1. 2.

हागै की रूपरेखा

I. पुनर्निर्माण के लिए पुकार (उपदेश 1: मंदिर का निर्माण) 1:1-15

क- परमेश्वर की चेतावनी 1:1-6

ख- भगवान का समाधान 1: 7-8

ग- भगवान की चुनौती 1:9-11

घ - इजराइल की प्रतिक्रिया 1:12-15

II. सुनने के लिए पुकार (प्रवचन 2: परमेश्वर में साहस) 2:1-9

क-मंदिर (वर्तमान) 2:1-3

ख-वाचा (अतीत) 2:4-5

ग -मसीहा (भविष्य)

III. पालन करने के लिए पुकार (उपदेश 3: जीवन की शुद्धता) 2:10-19

क- आशीर्वाद की आवश्यकता 2:10-14

ख- आने वाली आशीष 2:15-17

ग - रोकी हुई आशीषें 2:18-19

IV. विश्वास करने के लिए पुकार (प्रवचन 4: भविष्य में विश्वास) 2:20-23

क- परमेश्वर अपनी शक्ति प्रकट करेगा 2:20-22

ख- परमेश्वर अपने राजकुमार को प्रकट करेगा 2:23

जकर्याह :

इतिहास



शीर्षक: भविष्यद्वक्ता के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: जकर्याह ("परमेश्वर याद रखता है")

लेखन की तिथि: 520-518 ई.पू

लेखन का स्थान: येरूशलेम

समय पूरा: 520 ई.पू. से लेकर भविष्य के अनंत काल तक

प्राप्तकर्ता: कैद से लौटे हुए

प्रमुख आयत: 9:9-10, हे सियोन की पुत्री, अति आनन्दित हो ! हे यरूशलेम की बेटी, जयजयकार कर! देख, तेरा राजा तेरे पास आता है, वह धर्मी है, और उद्धार लेकर आता है, नम्र और गदहे पर सवार, और गदहे के बच्चे पर स्वर हुआ आता है। मैं एप्रैम से रथों और यरूशलेम से युद्ध घोड़ों को दूर हटा दूंगा , और युद्ध का धनुष तोड़ दिया जाएगा। वह राष्ट्रों में शांति का प्रचार करेगा। उसका शासन समुन्द्र से समुन्द्र तक और नदी से पृथ्वी के छोर तक फैलेगा।

मुख्य शब्द: "प्रभु का वचन" (14 बार); "सेनाओं का यहोवा " (52 बार)

उद्देश्य: लोगों को मंदिर के पुनर्निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ भविष्य की घटनाओं का खुलासा करना।

विषय: इतिहास पर परमेश्वर का नियंत्रण है।

"द चांस वर्ल्ड" नामक बच्चों की एक किताब हुआ करती थी। यह एक ऐसी दुनिया का वर्णन करती थी जिसमें सब कुछ संयोग से हुआ था। सूर्य उदय हो सकता है या नहीं हो सकता है, या यह किसी भी समय

प्रकट हो सकता है, या चंद्रमा इसके बजाय ऊपर आ सकता है। जब बच्चे पैदा होते हैं तो उनके एक सिर या एक दर्जन सिर हो सकते हैं, और वे सिर उनके कंधों पर नहीं हो सकते हैं - कोई कंधे नहीं हो सकते हैं - लेकिन अंगों के बीचो बीच व्यवस्थित होते हैं। यदि कोई हवा में उछलता है तो यह भविष्यवाणी करना असंभव था कि वह फिर कभी नीचे आएगा या नहीं। वह एक घंटे पहले आया था, इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वह अगली बार ऐसा करेगा। हर दिन के लिए, अगली हलचल और परिणाम भिन्न होते थे, और आकर्षण शक्ति और बाकी सब कुछ घंटे से घंटे में बदलने वाला होता है। वह कैसी दुनिया होगी!

सौभाग्य से परमेश्वर ने संसार को ऐसा नहीं बनाया। उसके पास सुसंगत कानून हैं जो आपने प्रभाव में रहते हैं। हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां स्पष्ट रूप से हर चीज के पीछे एक शक्ति है, जो इसे नियंत्रित करती है और इसे जारी रखती है। यह केवल प्रकृति पर ही लागू नहीं होता, यह समय पर भी लागू होता है। परमेश्वर इतिहास का भी प्रभारी है। वहाँ भी कुछ संयोग से नहीं होता। यह सब वैसा ही है जैसा परमेश्वर योजना बनाता है और इसे नियंत्रित करता है। सब कुछ उस के नियंत्रण में है। इससे हमें बहुत आराम/संतुष्टि मिलने चाहिए!

जकर्याह -जकर्याह एक याजक और भविष्यद्वक्ता दोनों ही था। उसका दादा जरूबबबेल के साथ बाबेल से लौटा था और जब वह भविष्यवाणी करने लगा तब वह एक ही जवान था। हागै भी इसी समय और स्थान पर प्रचार कर रहा था। इस समय एस्तेर भी दुनिया के सभी यहुदियों के जीवन के लिए अपने संघर्ष से गुजर रही थी। यह सभ भी दिखाता है कि कैसे परमेश्वर सब हालातों पर नियंत्रण रखता है।

जकर्याह की पुस्तक छोटे भविष्यद्वक्ताओं में सबसे बड़ी है। यह नए नियम में प्रकाशितवाक्य के समान है: नए नियम के अंत में, ज्यादातर भविष्य की भविष्यवाणी के बारे में है और परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए लिखा गया है जैसे जैसे वे एक कठिन समय से होकर गुजरते हैं। दोनों यही दिखाती हैं कि वास्तव में इतिहास केवल "उसी की कहानी" है।

इतिहास का लक्ष्य (भाग 1) (8 दर्शन)। - पुस्तक के पहले खंड में 8 दर्शन हैं जो दिखाते हैं कि परमेश्वर इतिहास का प्रभारी हैं और इसे उस बिंदु तक ले जा रहा है जहां वह स्वयं यरूशलेम में शासन करेगा। सैल्मन मछली की तरह जो सहज रूप से अंडे देने के लिए घर लौटते हैं, परमेश्वर ने अपने पास लौटने के लिए मनुष्य में एक तंत बनाया हुआ है। सैल्मन मछली के सुभाव के विपरीत, हालांकि, यह मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा होती है जो उसे अक्सर विपरीत दिशा में ले जाती है। फिर भी, परमेश्वर मनुष्य के विद्रोह का भी अपनी महिमा के लिए उपयोग करता है। उसने मरियम और यूसुफ को बेतलेहेम ले जाने के लिए ऑगस्टस की जनगणना का उपयोग किया ताकि यीशु वहाँ पैदा हो और भविष्यवाणी को पूरा करे (मीका 5:2)। उसने यूहन्ना को वह दर्शन देने के लिए जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परिणित हुआ, डोमिनियन के बनवास के हुमक को यूहन्ना को पतमुस ले जाने के लिए उपयोग किया। परमेश्वर वास्तव में इतिहास का प्रभारी है। उसने स्पेनिश आर्मडा को नष्ट करने के लिए एक हवा का इस्तेमाल किया और प्रोटेस्टेंट इंग्लैंड को सुसमाचार फैलाने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया। उसने गर्वित नेपोलियन को हराने और यूरोप को बचाने के लिए बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़ों का इस्तेमाल किया। उसने सूर्य को उसकी प्रगति में रोक दिया ताकि यहोशू के समय में यहूदी अपने शत्रुओं को पराजित कर सकें।

इतिहास से सबक (4 संदेश)। तब जकर्याह ने लोगों को 4 उपदेश दिए। उसने उन्हें अपनी पिछली असफलताओं से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया - इतिहास से सीकहने के लिए प्रोत्साहित किया! लेकिन

कौन ऐसे करता है? क्योंकि वे केवल उपवास करने और परमेश्वर की सेवा करने के कार्य करते थे, वे कैद में चले गए। अब भी वे वही कर रहे हैं। वे 'चर्च चला रहे हैं,' लेकिन परमेश्वर उनके हृदय की प्राथमिकता नहीं है। जकर्याह उन्हें बताता है कि एक समय आ रहा है जब वे पूरी तरह से बहाल हो जाएंगे और परमेश्वर की उपस्थिति में होंगे, इसलिए उन्हें इस समय उसके लिए जीने के द्वारा, उस समय के लिए तैयारी करनी चाहिए।

इतिहास का लक्ष्य (भाग 2) (2 बोझ)। फिर जकर्याह आने वाले राजा के बारे में लिखता है। अपने पहले आगमन (अध्याय 9-11) में उसे अस्वीकार कर दिया जाएगा और क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। कई विवरण दिए गए हैं: चांदी के 30 टुकड़ों के लिए विश्वासघात किया जायेगा, शहर में एक गधे की सवारी करेगा, छेदे हाथ, दूसरों को बचाने के लिए मरना, आदि। उसे सेवक (3:8), शाखा (3:8), याजक (6:13), राजा (6:13), विश्वासघात किया हुआ (11:12-13), छेदा हुआ (12:10), सोता/फुवारा (13:1), चरवाहा (13:7), परमेश्वर (13:7-9) और सभ का प्रभु (14:5,9) कहा जाता है। दूसरा बोझ (अध्याय 12-14) मसीह के दूसरे आगमन के बारे में है, जब राज्य पृथ्वी पर स्थापित होगा और यरूशलेम मसीह-राजा के लिए आराधना का केंद्र होगा। जैसे जकर्याह ने मसीह के पहले आगमन के बारे में जो कुछ कहा था, वह सब सच हो गया था, वैसे ही दूसरे आगमन के बारे में भी सब कुछ सच हो जाएगा।

जकर्याह की रूपरेखा

I. 1 इतिहास से शिक्षण (8 दर्शन) 1-6

क- परमेश्वर देखता है 1

1. इजराइल की उदासीनय मतभेद 1:1-17
2. इजराइल का घटता प्रभाव 1:18-21

ख-परमेश्वर बोलता है 2-4

1. इजराइल की बहाली 2
2. इजराइल की धार्मिकता 3
3. इजराइल की बेदारी 4

ग- परमेश्वर शुरू करता है 5-6

1. दोष सिद्धि 5:1-4
2. निंदा 5:5-11
3. विजय 6

II. इतिहास से सबक (4 संदेश) 7-8

क- लोगों की विफलता 7

1. लोगों का अनुष्ठान 7:1-7

2. लोगों का हटाना जाना 7:8-14

ख-येरूशलेम का भविष्य 8

1. येरूशलेम का पुनःस्थापन 8:1-17

2. येरूशलेम में आनन्दित होना 8:18-23

III. इतिहास की परिणति (2 बोझ) 9-14

क- राजा ने खारिज कर दिया 9-11

1. राजा का आना 9

2. राजा की पुकार 10

3. राजा का सलीब पर चढ़ाया जाना 11

ख-राजा का शासन 12-14

1. राजा का उद्धार 12

2. राजा की प्रसन्नता 13

3. राजा का अधिकार क्षेत्र 14

मलाकी :

पश्चाताप



शीर्षक: नबी के बाद जिसने इसे लिखा था

लेखक: मलाकी ("परमेश्वर का सन्देशवाहक ")

लेखन की तिथि: 445 - 397 ईसा पूर्व

लेखन का स्थान: यहूदा

समय शामिल: 445 और 397 ईसा पूर्व के बीच

प्राप्तकर्ता: बाबेल से लौटने के बाद इजराइल

मुख्य आयत : 3:9-10 तूम एक श्राप के अधीन है-- तुम्हारा पूरा देश भी -- क्योंकि तुम मुझे लूट रहे हो। सारे दशमांश भण्डार में ले आओ, कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे। इस में मुझे देखो , सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, कि क्या मैं आकाश के झरोखे न खोल दूंगा , और इतनी आशीष न दूंगा कि तुम्हारे पास उसके रखने के लिये जगह न होगी।

प्रमुख शब्द: "तुम कहते हो " (11 बार), "किस चीज में" (6), "शापित" (7)

उद्देश्य: मंदिर और आराधना की लापरवाही के लिए फटकार

विषय: पश्चाताप करो और परमेश्वर की तरफ मन फिराओ

एक बार एक युवक था जो एक युवती के साथ 'प्यार में' था -- उसने उससे यही कहा था । सप्ताह में एक बार, अपनी छुट्टी के दिन, वह उस युवती से मिलता था -- मतलब अगर उसके पास कोई और मिलने वाला ना होता तो, थकान महसूस ना करता होता तो , या फिर उसे कहीं और ना जाना होता तो। उस युवती को अच्छे संगीत और महान साहित्य से प्यार था लेकिन उस युवक को इन दोनों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वास्तव में, जब वह उसके आसपास था तो वह बेचैन और व्याकुल होता था। "वह उसके पास अधिक क्यों नहीं आता है और अधिक समय तक उसके साथ क्यों नहीं बैठता है ?" वह इस बात से हैरान और परेशान थी ।

कारण यह था कि युवक अभी भी अपनी एक बूढ़ी प्रेमिका की देखभाल करता था। हालाँकि वह इससे अलग होने के लिए तैयार हो गया था, फिर भी वह सप्ताह में कई घंटे उसके साथ बिताता था। ऐसा लगता

था कि उनमें अब भी बहुत कुछ समान्य है: वे दोनों एक सी चीज़ों से प्यार करते थे, एक से लोगों से प्यार करते थे और एक से मनोरंजन का अनद उठाते थे। फिर भी जिस युवती से उसने हाल ही में अपने प्यार का इज़हार किया था, उसके लिए वह इससे ज्यादा वफादारी नहीं दिखा सकेगा।

मैं यहाँ किसी की अनुरूपता बनाने की कोशिश कर रहा हूँ? दुर्भाग्य से यह बहुत ही स्पष्ट है: उस समय परमेश्वर के लोग, यहूदी, परमेश्वर के प्रति इसी तरह के सुभाव के ही थे। ऐसा आज भी होता है। मन्त्रों मानी जाती हैं और वादे किए जाते हैं, लेकिन दुनिया का खिंचाव बीच में आ जाता है। शब्दों का और कामों का कोई मेल नजर नहीं आता है।

खेल पारी का अंत। आपकी टीम का अंतिम बल्लेबाज करीज पर है और आप 50-0 से पीछे हैं। यह एक प्रकार का धुंधला/अनहोना दिखता है! मलाकी बल्लेबाजी करने के लिए कदम रखने वाले अंतिम खिलाड़ी की तरह है, जो घरेलू टीम को आध्यात्मिक विश्वासयोग्यता में वापस लाकर परमेश्वर के लिए खेल जीतने की कोशिश कर रहा है। क्या वह ऐसा कर सकता है ?

मलाकी नहेमायाह जो अगुवा था उसके समय में रहा और इसी उसने समय सेवकई की। मलाकी वह भविष्यद्वक्ता था जिसने लोगों को उपदेश दिया। पुस्तक का लगभग 90% हिस्सा सीधे परमेश्वर द्वारा बोली गई वाणी है। पुस्तक पश्चाताप की पुकार के साथ बंद होती है। यह पुस्तक एक प्रकार की कड़ी है, पुराने और नए नियम के बीच एक पुल के रूप में है।

परमेश्वर के प्रेम पर प्रश्न (1:1-5) -पुस्तक की शुरुआत, परमेश्वर के अपने लोगों के प्रति अपने प्रेम को स्पष्ट रूप से घोषित करने के साथ, होती है, परन्तु उन्होंने उसके प्रेम पर संदेह किया। "तू हमें कैसे प्यार कर सकता है ?" उन्होंने अपनी शंका और आत्म-दया में पूछा। परमेश्वर जवाब देते हुए कहता है कि उनके अतीत में उसके कार्य उसके प्यार को साबित करते हैं। चाहे उन्होंने कुछ भी किया हो या नहीं किया हो, फिर भी परमेश्वर उनसे प्रेम करता था। वह चाहता है कि उसके लोग प्यार और सुरक्षित महसूस करें और बदले में उससे प्यार करके उसके प्यार का जवाब दें।

परमेश्वर के नियमों की अस्वीकृती (1:6 - 3:15)- परमेश्वर अपने लोगों से संपूर्ण सम्मान और भक्ति की उम्मीद करता जिसके वह योग्य भी है, लेकिन अक्सर वह इसे प्राप्त नहीं करता है। मलाकी के दिनों में अगुवे लोगों को आपने विश्वासघात के कारण मार्ग से भटका रहे थे। बाहरी रूप से परमेश्वर का अनुसरण करने का दावा करते हुए, उन्होंने गैर-विश्वासी अन्यजातियों में विवाह किए और उन्हें अपनी मूर्तिपूजक मूर्तियों को इजराइल में लाने दिया था। पूरे देश में परिवार टूट रहे थे और तलाक होना आम बात थी। क्योंकि परमेश्वर ने उनकी जीवन शैली का न्याय नहीं किया था, वे कहने लगे कि वे जो कर रहे थे, परमेश्वर उसे मंजूरी दे रहा था ! उन्होंने परमेश्वर के कार्य को और कार्यकर्ताओं को आर्थिक रूप से समर्थन ना दिया जैसे उनको करने का आदेश दिया गया था। वे अहंकारी और जिद्दी थे। उनको पश्चाताप करने, "अपना मन बदलने" और अपनी दिशा बदलने की आवश्यकता थी। उन्हें आपने सुभाव और कर्म में मुड़ने की जरूरत थी। यदि वे नहीं करते हैं तो परमेश्वर की ओर से न्याय होगा।

परमेश्वर का न्याय आ रहा है (3:16 - 4:6)- इजराइल में विश्वासयोग्य अल्पसंख्यक लोग हैं और परमेश्वर उन्हें याद रखने का वादा करता है, भले ही वे उन परिणामों को भुगतेंगे जिनका पूरा देश सामना कर रहा होगा। हालाँकि, अधिकांश लोगों को या तो पश्चाताप करने या फिर न्याय दण्ड भुगतने की ज़रूरत है। दुर्भाग्य से, जब मलाकी ने प्रचार किया, ना उस समय और ना उसके बाद ही उन्होंने पश्चाताप किया। पुस्तक आने वाले न्याय दण्ड के वादे के साथ समाप्त होती है, अगर उनके द्वारा, परमेश्वर के दूत के पश्चाताप के संदेश को, स्वीकार नहीं किया जाता है। मलाकी 4:5-6 "सुन, यहोवा के उस बड़े और

भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तेरे पास एलियाह नबी को भेजूंगा। वह पिताओं का मन उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों का मन उनके पिताओं की ओर फेरेगा; नहीं तो मैं आकर इस देश को शाप से मारूंगा।"

यह भविष्यद्वक्ता एलियाह के समान होगा। वह मलाकी की तरह पश्चाताप के संदेश का प्रचार करेगा। यदि लोग पश्चाताप करते हैं, तो उन्हें क्षमा किया जाएगा और बहाल किया जाएगा। परमेश्वर की इतनी गहरी इच्छा है कि वह शीघ्र ही अपने मसीह को भेजेगा, परन्तु पहले वह इस दूत को उसके लिए मार्ग तैयार करने के लिए भेजेगा (3:1-6)। पश्चाताप की इस पुकार और आने वाले दूत की प्रतिज्ञा के साथ पुराना नियम समाप्त होता है। चार सौ साल बाद नया नियम यूहन्ना के साथ खुलता है, जो पश्चाताप के उसी संदेश का प्रचार करता हुआ आता है और मलाकी की भविष्यवाणियों को पूरा करता है। पश्चाताप करने के लिए परमेश्वर का संदेश आज भी दिया जा रहा है। वह चाहता है इसके योग्य हिया कि हमारा सब कुछ पूरे अस्तित्व के साथ, न कि केवल कुछ अंश ना केवल कभी-कभी, उसके लिए समर्पित हो। जो भी व्यवहारिक कमी पेशी है उसके लिए पश्चाताप होना चाहिए और उसका परिवर्तन होना चाहिए। परमेश्वर अभी भी अपने लोगों से प्रेम करता है और आपने घर में उनका स्वागत करता है। जितना अधिक समय हम पश्चाताप को टालेंगे उतने ही अधिक के लिए हमें पश्चाताप करना होगा और पश्चाताप करने के लिए समय घटता जायेगा! पथ के शुरू में बताई गयी कहानी के युवक की तरह मत बनो जिसकी हरकतें उसके प्यार के शब्दों से मेल नहीं खाती हैं।

मलाकी की रूपरेखा

I. परमेश्वर के प्रेम पार प्रश्न 1:1-5

क- परमेश्वर: "मैं तुमसे प्यार करता हूँ" 1: 1-2 ए

ख- लोग: "तू हम से कैसे प्रेम कर सकता है ?" 1:2ख

ग- परमेश्वर : "मैंने इसे साबित कर दिया है" 1:3-5

II. परमेश्वर के नियमों की अस्वीकृती 1:6-3:15

क- धोखा 1:6-14

ख- अविश्वासयोग्यता 2:1-9

ग- "मिश्रित" विवाह 2:10-12

घ - पारिवारों का टूटना 2:13-16

ङ- अवज्ञा 2:17

च- यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में भविष्यवाणी 3:1-6

छ- लूट 3:7-12

ज- अहंकार 3:13-15

III. परमेश्वर का आने वाला न्याय 3:16-4:6

क- अधर्मी लोग 3:16-18

ख- ईश्वरीय न्याय 4:1-6

बाइबिल अवलोकन 21

400 मौन वर्ष



मुख्य कार्यक्रम: पुराने और नए नियम के बीच

मुख्य लोग: मक्बबीस

बाइबल की पुस्तकें: ??

बाइबिल कविता:??

समय : 430-5 ईसा पूर्व

इस समय की विश्व घटनाएँ: सिकंदर महान द्वारा भारत पर आक्रमण

भारत का राजनीतिक रूप से अंधकार युग, कला के लिए स्वर्ण युग ,अशोक का भारत में सम्राट बनना ।

यूनान: फ़ारसी और पेलोपोनेसियन के बीच युद्ध ।

यूनानी शास्त्रीय युग: पार्थेनन, सुकरात, प्लेटो, यूरिपिड्स सिकंदर ने फारस पर विजय प्राप्त की, सील्यूसिड्स उसके बाद सम्राट बना ।

चीन में हान राजवंश ।

रोमन गणराज्य का उदय, कार्थेज, यूनान , एशिया माइनर और मिस्र पर विजय और मक्बबीस का विद्रोह इजराइल में सील्यूसिड्स को गिरा देता है ।

भौगोलिक स्थान: फिलिस्तीन

याकूब

यूसुफ

सुलेमान

न्यायी

विभाजन

भविष्यद्वक्ता

आशूर की कैद

बाबेल की कैद				
लज्पल	इसहाक	यहोशु	दाऊद	से वापस
बाबेल	अब्राहाम	मूसा	शाऊल	
4000 ई.पू.	3000 ई.पू.	2000 ई.पू.	1000 ई.पू.	1 ई.पू.

इतिहास के बारे हमारे अवलोकन के पुराने नियम के भाग में इस अंतिम अवधि को "400 मौन वर्ष" कहा जाता है क्योंकि उस समय के दौरान कोई भी बाइबल पुस्तक नहीं लिखी गई थी और यहूदियों का अधिकांश भाग परमेश्वर से दूर हो गया था। लेकिन बाकी दुनिया में मलाकी और मत्ती के बीच वाले समय में बहुत कुछ हो रहा था। इस समय के दौरान लगातार तीन विश्व साम्राज्यों ने संसार संचालित किया : फारस, यूनान और रोम। सिकंदर महान ने अपना जीवन जीया और मर गया। उसने भी, एक समय के लिए इजराइल पर अपना नियंत्रण किया। यहूदियों ने मक्बीस परिवार के अधीन विद्रोह किया और यूनान से अस्थायी स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन इसे रोम की शक्ति के हाथों में खो दिया। जबकि इस समय के दौरान कोई प्रेरित बाइबिल पुस्तक नहीं लिखी गई थी, पर कई अपोकलिफा पुस्तकें लिखी गई थीं। उन दिनों हाल ही में कैथोलिक चर्च ने उन्हें अन्य धार्मिक शास्त्रों के साथ एक स्तर पर माना था, लेकिन 1500 वर्षों के लिए उन्हें केवल समय के लेखन के रूप में मान लिया गया। हालांकि, उनमें समय अवधि के बारे में ऐतिहासिक जानकारी होती है। परमेश्वर इस समय का उपयोग मसीह के आने के लिए सभी को तैयार करने के लिए कर रहा था।

400 मौन वर्ष

फिल्म निर्देशक अल्फ्रेड हिचकॉक (1899-1980) ने अज्ञात के बारे में गाइडपोस्ट्स (1959) में एक दृष्टांत बताया। एक बार एक राजा था जिसको यह सिद्धी प्राप्त हुयी कि उसकी दो इच्छाएँ पूरी की जाएगी। उसकी पहली इच्छा थी- भविष्य देखना था, लेकिन जब उसने देखा कि आगे भविष्य में क्या है - सुंदरता और दर्द - तो उसने तुरंत अपनी दूसरी इच्छा पूरी करने के लिए कहा कि भविष्य छुपा रहे। "मैं स्वर्ग का धन्यवाद करता हूँ," रहस्य के स्वामी ने घोषणा की, "कि आगामी कल किसी आदमी का नहीं। यह केवल परमेश्वर का है।"

इतिहास = उसकी कहानी वास्तव में, सारा इतिहास परमेश्वर का है: अतीतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल। हर एक घटना उसके वश में है, यहाँ तक कि एक पक्षी का भूमि पर आ बैठना भी (मत्ती 10:29)। संसार के सबसे शक्तिशाली राष्ट्रों का उदय और पतन भी परमेश्वर के नियंत्रण में है (दानियेल 2:32-47; प्रेरितों के काम 4:25)। नियंत्रण से बाहर महसूस होने वाली दुनिया में यह बहुत सुकून देने वाली बात है।

इसका सबसे अच्छा उदाहरण है यीशु का धरती पर आना। परमेश्वर कहता है कि यह उसी समय हुआ था जिस समय को ऐसा होने के लिए परमेश्वर ने चुना था : गलातियों 4:4 परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। परमेश्वर सही

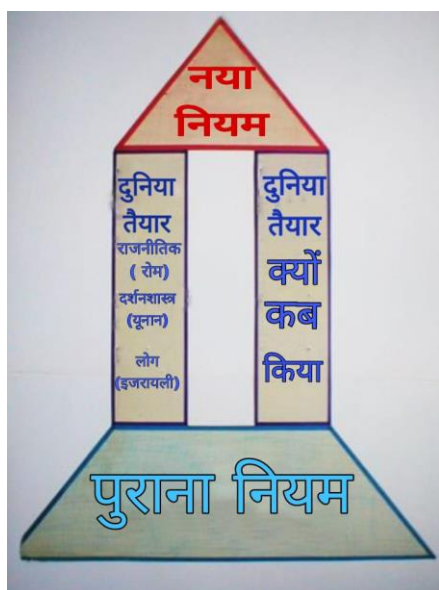
समय की प्रतीक्षा में बैठा नहीं रहा, उन्होंने इतिहास को सक्रिय रूप से नियंत्रित किया ताकि जब वे पृथ्वी पर आए तो सभी आवश्यक हालत मौजूद हों। इस विशेष समय को इतना खास क्या बनाया गया ?

वहां लोगों के तीन मुख्य समूह थे जिन्हें परमेश्वर ने यीशु के पहले आगमन के लिए संसार को तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया। इनका उस समय जीवन के सभी क्षेत्रों पर प्रभाव था। राजनीतिक (रोम), दार्शनिक शास्त्र (यूनान) और लोग (इज़राइल) के क्षेत्र में सब कुछ पूरी तरह से तैयार था।

यूनान (दार्शनिक शास्त्र) यूनान ने 334 ईसा पूर्व में फारस से फिलिस्तीन तक को आपने आधिकार में कर लिया था जब सिकंदर पूरे क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर रहा था। जब 323 में उसकी मृत्यु हो गई तो पटॉल्मी ने वहाँ 219 ईसा पूर्व तक शासन किया जिसके बाद सेल्यूसिड्स ने वहां अपनी सत्ता संभाली। इस समय के दौरान यह क्षेत्र यूनानी संस्कृति, विचारधारा और दार्शनिक शास्त्र से पूरी तरह से संतृप्त थी (एक प्रकार का मानवतावाद जो आज के नए युग की विचारधारा से बहुत अलग नहीं है)। जिसे बहुत से यहूदियों ने इसे आने दिया, जिसका नेतृत्व बहुत ही खुली-सोच वाले यहूदियों के एक समूह ने किया था, जिन्हें सदूकी कहा जाता है। परमेश्वर ने इस यूनानी विचारधारा का उपयोग लोगों को आने वाले मसीह और प्रारंभिक कलीसिया के प्रसार के लिए तैयार करने के लिए किया, क्योंकि यूनानी विचारधारा उत्तर की तलाश कर रही थी, लेकिन इसे खोजने के सभी प्रयासों के बावजूद, लोगों के दिलों को भरने के लिए वास्तव में कुछ भी उत्पन्न नहीं हो सका था। एपिक्यूरियंस, स्टोइक्स, एकेडमिक्स, ऑफोर्जिज्म, पायथागोरियन्स, साइनिक्स, स्केप्टिक्स और कई अन्य थे। सुकरात, प्लेटो और अरस्तू लोगों को प्रभावित कर रहे थे। ईश्वर केवल एक बौद्धिक पागलपन था। आम लोगों की वफादारी और ध्यान की मांग करने वाला कोई मजबूत देवी-देवता नहीं था। सवाल तो पूछे जाते थे लेकिन जवाब नहीं दिया जाता था।

यूनानी का विश्व्यापी भाषा के रूप में प्रसारित होना दुनिया पर और बाइबिल पर एक महान प्रभाव था। अब लोग एक दूसरे से एक आम भाषा में बात कर सकते थे - यह प्रारंभिक कलीसिया के त्वरित प्रसार के लिए बहुत आवश्यक था। यूनानी न केवल एक विश्व्यापी भाषा थी, बल्कि यह एक बहुत सटीक भाषा थी। नए नियम की सभी धर्म वैज्ञानिक बारीकियों और स्वादों को व्यक्त करने के लिए बस यही एक चीज आवश्यक थी। परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से यूनानी भाषा को अपने वचन के लिए तैयार किया था।

इज़राइल (लोग) जबकि यूनानियों ने फिलिस्तीन की भूमि को बहुत प्रभावित किया, उन्होंने लोगों के दिलों को कभी नहीं जीता। एंटीओकस एपिफेन्स ने सबसे भयानक तरीके से मंदिर को अपवित्र किया और हर उस यहूदी को मार डाला जो किसी भी तरह से अपने धर्म का पालन करता था। यहां तक कि बाइबिल



के एक पद का हवाला देना भी मौत की सजा पाने का जुर्म था। हस्मोनीन परिवार के नेतृत्व में म्क्काबीस विद्रोह ने यहूदी स्वतंत्रता वापस हासिल की और 25 दिसंबर, 164 ईसा पूर्व मंदिर के पुन मख्सूसियत के साथ समाप्त होता है। दुर्भाग्य से हस्मोनी शासन जल्द ही लगभग उतना ही अत्याचारी हो गया जितना कि सेल्यूसिड्स या उनसे पहले वाले थे। रूढ़िवादी यहूदियों का एक आंदोलन था जो चाहता था कि राष्ट्र वापस परमेश्वर की ओर मुड़े और उसका वचन फैले। फरीसियों ने गृहयुद्ध में लोगों का नेतृत्व किया जिसने सब कुछ बदतर कर दिया। इसने राष्ट्र को इतना कमजोर कर दिया कि रोमियों ने यूनानियों को हराकर 63 ईसा पूर्व में फिलिस्तीन पर आसानी से कब्जा कर लिया।

हालाँकि, इस सब के दौरान, यहूदी दुनिया के लगभग हर देश में जा रहे थे। यह फैलाव प्रारंभिक कलीसिया के प्रसार के लिए बहुत ही बुनियादी साबित होने वाला था। यहूदी एक परमेश्वर के अपने संदेश को, जैसा बाइबिल में प्रकट करते हैं, जो चाहते थे कि उनके लोग एक पवित्र जीवन जियें, जो प्रत्येक राष्ट्र के लिए, प्रारंभिक चर्च के प्रसार के लिए आधार तैयार कर रहे थे। उनके आराधनालय सबसे पहले यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उत्तम स्थान बन गए थे। सभास्थल के नमूने पर चर्च बन गया। साथ ही इस समय अवधि के दौरान सेप्टुआजेंट (LXX) का अनुवाद किया गया था। पहली बार यहूदी, और कोई भी जो यूनानी पढ़ सकता था, अपने लिए बाइबल पढ़ सकता था। इससे सुसमाचार के प्रसार का मार्ग भी खुल गया। परमेश्वर यह सब होने देने के लिए काम कर रहा था।

रोम (राजनीतिक) जबकि यूनानियों ने पुरुषों के दिमाग को प्रभावित किया, रोम ने उनके शरीर को नियंत्रित किया। दुनिया के उस पूरे हिस्से पर रोम का अधिकार भी आने वाले समय के लिए नींव तैयार करने में महत्वपूर्ण था। पहली बार विश्व शांति हुई, और यह कई सौ वर्षों तक चली। इसका मतलब था कि कहीं के लिए भी यात्रा करना सुरक्षित था। रोम ने यात्रा के लिए अद्भुत सड़कों का निर्माण किया। जहाज से यात्रा करना भी सुरक्षित था। समुद्री डाकू और लुटेरों को नियंत्रण में रखा गया था।

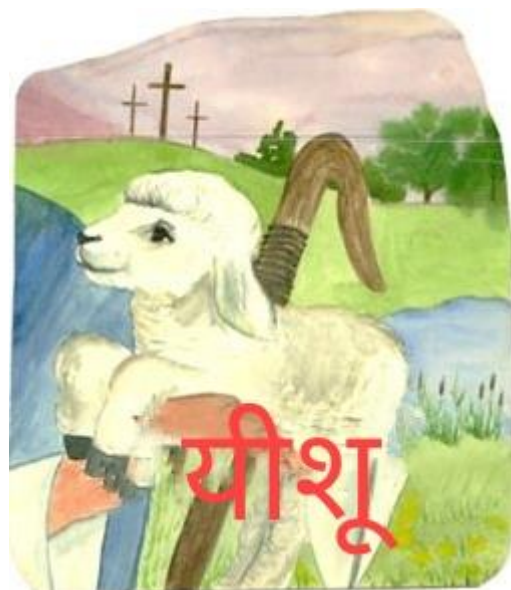
शांति के साथ-साथ तकनीकी प्रगति के कारण, अब यह हर किसी को अपने लिए अधिकांश समय अपना भोजन उगाने में व्यतीत करना जरूरी नहीं था। बहुत से लोग शहरों में चले गए और अन्य काम धंदे अपनाने लगे। इससे पौलूस और अन्य शुरुआती मिशनरियों के लिए उन शहरों में जाना संभव हो गया जहां लोग पहले से ही इकट्ठा थे और प्रचार कर रहे थे। यह एक खेत से दूसरे खेत जाने की तुलना में कहीं अधिक कुशल था!

फिर, रोम ने धार्मिक स्वतंत्रता की अनुमति भी दे दी। वे यह निर्देश नहीं देते थे कि किसकी पूजा की जाये या किसकी पूजा ना की जाए। लोग अपने लिए खुद फैसला कर सकते थे। उनके पूर्वज जिन पुराने देवताओं और मूर्तियों की पूजा करते थे, उनकी अब उनमें ज्यादा दिलचस्पी नहीं रही और अक्सर वे शहरों में उनकी नई जीवनशैली पर लागू नहीं होते थे। शहर का जीवन नई समस्याओं को भी अपने साथ ले आया था। पाप का बोलबाला था। शराबखोरी, अनैतिकता, समलैंगिकता, वेश्यावृत्ति, अपराध, हत्या, जबरन वसूली और राजनीतिक भ्रष्टाचार बड़े पैमाने पर थे। जीवन में अर्थ, शांति और संतुष्टि देने के लिए कुछ तो चाहिए था। यीशु के संदेश के लिए मंच तैयार हो चुका था।

गलातियों 4:4 परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ। परमेश्वर इतिहास, समस्त इतिहास पर नियंत्रण किये हुआ है। उसके पास सब कुछ वैसा ही है जैसा वह चाहता था कि यीशु के पहले आगमन के लिए हो। वह अभी वही कर रहा है, जो यीशु की वापसी के लिए तैयार होना चाहिए है। यह उसकी दुनिया है। जो कुछ घटित होता है उसके ऊपर वह सम्प्रभुता वाला प्रभु है। **उसके नाम की स्तुति करो!**

बाइबिल अवलोकन - 22

यीशू



मुख्य घटनाएँ: यीशु का जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान

मुख्य लोग: यीशु, उस के अनुयायी

बाइबिल की पुस्तकें: मत्ती, मरकुस, लूका, यहून्ना

बाइबल आयत: यूहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

समय: लगभग 4 ईसा पूर्व से 30 ईस्वी तक

इस समय की विश्व घटनाएँ: रोम दुनिया पर राज करता है

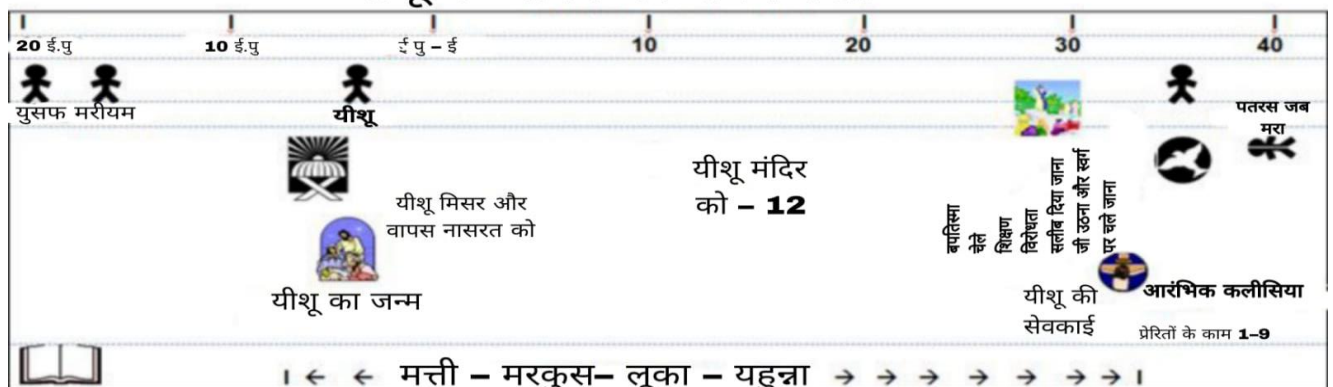
भौगोलिक स्थान: फ़िलिस्तीन

बाइबिल के इतिहास में इस स्तर के साथ हम पुराने नियम को छोड़ कर नए नियम में प्रवेश करते हैं। अब तक हमने मनुष्य की असफलता और उद्धार की आवश्यकता को देखा है। अब हम उस आवश्यकता के लिए परमेश्वर के समाधान को देखते हैं। परमेश्वर ने स्वयं हमारे स्थान पर क्रूस पर मरने के लिए और फिर जीवन में वापस आने के लिए पृथ्वी पर आने को स्वर्ग छोड़ दिया, यह साबित करते हुए कि उसने पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की है।

चार सुसमाचार यीशु के जीवन को अलग अलग कोण/बिंदु से दिखाते हैं। उत्पत्ति 3:15 में परमेश्वर ने शैतान और परमेश्वर के बीच युगों दर युगों तक चलने वाली लंबी लड़ाई की भविष्यवाणी की है , और यह भी कि कैसे परमेश्वर स्वयं शैतान और पाप को हराने के लिए पृथ्वी पर आएगा। यह सब यीशु के द्वारा किया गया था और उत्पत्ति 3:15 की भविष्यवाणी पूरी हुई।

नासरत के यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान बाइबिल और समस्त विश्व इतिहास का मुख्य आकर्षण है। यह अब तक की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। इतिहास की हर चीज ने और बाइबल ने इस घटना से पूर्व, उसके पहले आगमन की ओर इशारा किया है। उसके स्वर्ग चले जाने के बाद इतिहास और बाइबल में सब कुछ, जो उसने क्या किया था उस पर निर्भर था। वह पूरे इतिहास और पूरे जीवन का उच्च बिंदु, केंद्रीय बिंदु और मुख्य केंद्र है। यीशु को आपके जीवन का भी केंद्रीय बिंदु और आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होना चाहिए।

यीशू के जीवन की समय रेखा



यीशु अपने जन्म से पहले

यदि आप एक ऐसे यहूदी होते जो यीशु के जन्म के समय जीवित थे, तो आप आने वाले मसीहा के बारे में क्या जानते होते ? परमेश्वर के धरती पर आने के बारे में आप क्या समझ पाते? ये दिलचस्प और सोचने पर मजबूर करने वाले सवाल हैं। यह समझना कि उस समय यहूदी परमेश्वर के बारे में यीशु के रूप में पृथ्वी पर आएगा, क्या और कितना जानते थे, इसे जानना, यीशु के जीवन को समझने के लिए, बहुत महत्वपूर्ण है।

ट्रिनिटी- प्रारंभिक चर्च परिषदों ने फैसला किया कि "केवल एक ही ईश्वर है, लेकिन ईश्वरत्व की एकता में 3 शाश्वत और समान व्यक्ति हैं, जो सार में तो समान हैं लेकिन व्यक्तित्व में भिन्न हैं।" परमेश्वर पिता (यूहन्ना 6:27; इफिसियों 4:6), परमेश्वर पुत्र (इब्रानियों 1:8) और परमेश्वर पवित्र आत्मा (प्रेरितों के काम 5:3-4) (मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:14)) तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर है। बाइबल कहती है कि किसी भी व्यक्ति ने किसी भी समय परमेश्वर पिता को नहीं देखा है (यूहन्ना 1:18; 1 यूहन्ना 4:12)। पवित्र आत्मा की भूमिका स्वयं को प्रकट करने की नहीं है परन्तु पुत्र पर ध्यान केन्द्रित करने की है (यूहन्ना 16:13-14)। इसलिए यह हमेशा ही परमेश्वर पुत्र है जो बाइबल में -पुराने और नए नियम दोनों में दिखाई देने वाला परमेश्वर है।

थियोफनीज- परमेश्वर के मनुष्य पर प्रकट होने की घटनाएं, पुराने नियम में दर्ज हैं। आमतौर पर इसे "यहोवा का दूत" लिखा गया है, यह हमेशा परमेश्वर पुत्र को संदर्भित करता है (मतलब यीशु अपने जन्म से पहले - उत्पत्ति 16:13; 22:15-18; 24:7; 32:24-32; होशे 12:4)। इसलिए जो यहूदी यीशु के समय में अपनी बाइबल जानते थे, वे जानते होंगे कि परमेश्वर अतीत में मनुष्य के सामने प्रकट हुआ था, और फिर से प्रकट होगा। यद्यपि, मनुष्य पर परमेश्वर के प्रकट होने से कहीं अधिक जानकारी है।

प्रकार - पुराने नियम में परमेश्वर -पुत्र के बारे में ऐसे प्रकार/रूप हैं जो उसके बारे में कही गई बातों से कहीं अधिक है (लूका 24:27)। यह एक तरह से उसकी तस्वीरें भी हैं। प्रकार कहे जाने वाले ये चित्र उलटी छाया की तरह होते हैं। पहले आप परछाई देखते हैं (जो पुराना नियम है) और फिर असली चीज़ देखते हैं (जो है नया नियम)। उदाहरण के लिए, दाऊद यीशु का एक प्रकार (तस्वीर) है, जिसकी उन दोनों के बीच कई समानताएं हैं, दाऊद के जीवन की चीज़ें जो यीशु के बारे में अधिक दर्शाती हैं। यीशु ने स्वयं खम्भे पर साँप को आपने स्वयं की तस्वीर/प्रकार के रूप में इस्तेमाल किया (यूहन्ना 3:14) और उसने योना का भी उसी तरह से इस्तेमाल किया (मत्ती 12:40)। मिलापवाले तम्बू, याजकपन, भेंट प्रणाली, पवित्र दिन, जैसी चीज़ों में यीशु के चित्रों/प्रकारों का अध्ययन करने से परमेश्वर पुत्र के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

भविष्यवाणियां- रब्बियों ने पुराने नियम के 456 मसीहा सम्बन्धित हिस्सों की सूची बनाई है। ये प्रकारों की तुलना में परमेश्वर के पुत्र और उसके पृथ्वी पर आने के बारे में अधिक सटीक जानकारी देते हैं। उदाहरण के लिए, बाइबल ने कहा कि वह स्त्री के वंश से आएगा (उत्पत्ति 3:15); एक कुंवारी से पैदा हुआ (यशायाह 7:14), अब्राहाम के वंश से (उत्पत्ति 12:3,7; 17:7; 22:18), यहूदा के गोत्र से (उत्पत्ति 49:10), दाऊद के घराने से (उत्पत्ति 12:3,7; 17:7; 22:18) भजन सहिता 132:11; 2 शमूएल 7:12-13; यिर्मयाह 23:5), और इसहाक का वंश (उत्पत्ति 21:12)। उसके बेटलेहेम में पैदा होने की भविष्यवाणी की गई थी (मीका 5:2), उसे इम्मानुएल कहा गया (यशायाह 7:14), उसे मिस्र से बाहर बुलाया गया (होशे 11:1) और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से पहले (मलाकी 3:1; यशायाह 40:3)। उनके जीवन, व्यक्तित्व, सेवकाई, संदेश, कार्यों, मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बहुत सी अन्य भविष्यवाणियाँ भी प्रचुर मात्रा में

हैं। खगोलीय संभावनाएं हैं कि इनमें से कुछ संयोग से भी पूरी हो सकती हैं। केवल परमेश्वर ही इन सबकी भविष्यवाणी कर सकता था और उन्हें पूरा कर सकता था।

परमेश्वर का पुत्र मनुष्य के रूप में - उसके पास एक मानव शरीर था (गलातियों 4:4; लूका 2:52; 1 यूहन्ना 1:1; मत्ती 26:12) लेकिन पापरहित था (इब्रानियों 4:15)। उसके पास एक मानवीय प्राण और आत्मा भी थी (मत्ती 26:38; लूका 23:46)। जैसे एक मनुष्य को भूख लगती है उसे भी लगती थी (मत्ती 4:2), प्यास लगती थी (यूहन्ना 19:28), थक जाता था (यूहन्ना 4:6), उदास हो जाता था (यूहन्ना 11:35) और परीक्षा में पड़ा (इब्रानियों 4:15)। उसके मानवीय नाम थे (मत्ती 1:21) और वह एक मानवीय मृत्यु मरा।

परमेश्वर का पुत्र देवता के रूप में - उसे परमेश्वर कहा गया (इब्रानियों 1:8; मत्ती 16:16; 26:61-64)। वह सर्वशक्तिमान (मत्ती 28:18), सर्वज्ञानी (यूहन्ना 1:48), सर्वव्यापी (मत्ती 18:20) और अपरिवर्तनीय (इब्रानियों 13:8) था। वह जीवन था (यूहन्ना 1:4) और सत्य (यूहन्ना 14:6)। उसने परमेश्वर के कार्य किए: जैसे: सृष्टि की रचना करना (यूहन्ना 1:3), प्रकृति को बनाए रखना (कुलुस्सियों 1:17), पाप को क्षमा करना (लूका 7:48), मरे हुएों को जीवित करना (यूहन्ना 5:25), पाप का न्याय करना (यूहन्ना 5:27)) और पवित्र आत्मा भेजना (यूहन्ना 15:26)। उसने मनुष्यों (मत्ती 14:33) और स्वर्गदूतों (इब्रानियों 1:6) द्वारा आराधना को स्वीकार किया। उसने पिता के साथ अपनी समानता का दावा किया (यूहन्ना 14:23; 10:30)। बार-बार उसने परमेश्वर की ओर से भेजे जाने का दावा किया (यूहन्ना 4:34; 5:37; 7:16; 7:28-29; 8:16; 8:26; 9:4; 11:42; 14:24; 16:28; 17:18; 17:23)।

मसीह के व्यक्तित्व में विरोधाभास - यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों था। वह भूखा था (मत्ती 4:12) तौभी उसने बहुतों को खिलाया (यूहन्ना 6:1-14)। वह प्यासा था (यूहन्ना 19:28-29) तौभी जीवन का जल देता है (यूहन्ना 4:10-14; 7:37)। वह थका हुआ था (यूहन्ना 4:26) तौभी विश्राम देता है (मत्ती 11:28)। वह प्रार्थना करता था (मत्ती 14:23) फिर भी प्रार्थना का उत्तर देता है (यूहन्ना 14:3,14)। वह चाँदी के 30 टुकड़ों में बिक गया (मत्ती 26:14-15) तौभी संसार को छुड़ाता है (1 पतरस 1:18-19; 1 यूहन्ना 2:2)। उसके पास अपना सिर धरने की जगह नहीं थी (मत्ती 8:20) तौभी उसने सब कुछ बनाया (यूहन्ना 1:3)। वह मर गया तौभी वह जीवन देता है (यूहन्ना 6:51,44)। वह मारा गया (इब्रानियों 2:14) तौभी मृत्यु को नाश करता है (1 कुरिन्थियों 15:26, 54)। उसने अपना प्राण दिया, फिर उसे ले लिया (यूहन्ना 10:17-18)।

यदि आप उस समय जीवित होते जब यीशु का जन्म हुआ था तो आपको निर्णय लेना पड़ता : क्या आप स्वयं परमेश्वर के पृथ्वी पर आने के विवरण पर विश्वास करते ? क्या आप मानते कि वह फिर से आएगा जैसा कि भविष्यवाणियों ने कहा था? क्या आप झुकते और उसे अपने जीवन का प्रभु और परमेश्वर बनाते? क्या आप उसे ईश्वर और मनुष्य के रूप में - ईश्वर-मनुष्य मसीहा के रूप में पहचानते ? उस समय रहने वाले अधिकांश लोगों ने सच्चाई को अस्वीकार कर दिया और उससे दूर हो गए। अधिकांश अभी भी करते हैं। आप क्या कहते हैं? तथ्य सामने हैं। वे बदले नहीं हैं।

यदि वह ईश्वर है, तो इसका मतलब है कि ब्रह्मांड में सब कुछ उसके नियंत्रण में है - जिसमें आपका और मेरा जीवन भी शामिल है। वह महामहिम ब्रह्मांड का राजा, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (प्रक 19)। वह परमेश्वर है और वह राजा है। सुनिश्चित करें कि वह आपका राजा है।

प्रमाण- यीशु परमेश्वर है

क्या 2,000 साल पहले यीशु नाम का एक आदमी वास्तव में फिलिस्तीन में रहता था? निश्चित तौर पर इसमें कोई शक या सवाल नहीं है। कोई भी संसारिक इतिहासकार इस पर सन्देह नहीं करता है, क्योंकि यह इतिहास का एक प्रमाणित तथ्य है। यीशु के दिनों के कई इतिहासकारों ने उसके बारे में लिखा था। हालाँकि, जो अधिकतर बहस का विषय है, वह यह है, कि क्या वह परमेश्वर था या नहीं। क्या वह हर किसी की तरह सिर्फ एक मनुष्य था, या वह वास्तव में एक परमेश्वर था? क्या सिर्फ इतना ही था कि उसने ऐसा कहा था कि वह था? या उसके अनुयायियों ने बाद में इस तरह से लिखा कि उसे परमेश्वर बना दिया हो, जबकि उसके पास उसका अपना ऐसा कोई दावा था ही नहीं? इन उत्तरों के निहितार्थ बहुत अच्छे हैं। हम मसीही होते हुए इनके बारे में कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं? आइए हम बाइबल के भीतर और बाहर उसके ईश्वरत्व के कुछ प्रमाणों को देखें।

प्रभु, मंदबुद्धि या झूठा

सबसे पहली बात, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था। उसके जीवन का पूरा कार्यकाल इसी ओर इशारा करता है। उसने मौखिक रूप से कई बार परमेश्वर होने का दावा किया (यूहन्ना 8:58; 10:30; 17:5; आदि)। उसने पूजा को ऐसे स्वीकार किया जैसे वह ईश्वर हो। उसने पाप को क्षमा करने में सक्षम होने का दावा किया (मरकुस 2:5)। अब, हम उस व्यक्ति को क्या कहें जो परमेश्वर होने का दावा करता है? अगर आपका पड़ोसी परमेश्वर होने का दावा करने लगे तो आप क्या कहेंगे? ऐसे व्यक्ति के बारे में तीन विकल्प या संभावनाएँ होती हैं। वह पागल है, मंदबुद्धि है, क्योंकि वह वास्तव में सोचता है कि वह परमेश्वर है, लेकिन गलत है। वह जानता है कि वह परमेश्वर नहीं है, लेकिन वह हर किसी को समझाने की कोशिश करता है कि कुछ भी हो वह परमेश्वर है, इसलिए वह झूठा है। या फिर वह वास्तव में प्रभु है और सबका प्रभु है! क्या वह परमेश्वर है, या पागल है या झूठा है; हमारे लिए यही विकल्प हैं। बस एक अच्छा आदमी, एक अच्छा शिक्षक, एक नैतिक आदर्श--ये किसी ऐसे व्यक्ति, के लिए विकल्प नहीं होते, जो परमेश्वर होने का दावा करता है! यदि वह पागल या झूठा है तो वह एक अच्छा, अच्छा व्यक्ति के रूप में मने जाने की योग्य नहीं है। यदि वह प्रभु है तो वह इस योग्यता से परे है कि वह एक अच्छे, उत्तम व्यक्ति से कहीं अधिक है। इस प्रकार वह या तो परमेश्वर है जिसकी पूजा की जाती है और जिसका आज्ञा पालन किया जाता है या फिर एक बहुरूपीया जिसे भुला दिया जाता है और अनदेखा किया जाता है।

पूरी हुई भविष्यवाणियाँ

यह साबित करने के लिए कि वह प्रभु है, हम बाइबल की ओर मुड़ते हैं, न कि उन चमत्कारों और दावों के हिस्सों की ओर जो संभवतः उसकी मृत्यु के बाद लेखकों द्वारा बनाए जा सकते थे, बल्कि पुराने नियम की भविष्यवाणियों की ओर मुड़ते हैं, जिनकी पूर्ति नकली नहीं हो सकती थी। मसीहा के बारे में पुराने नियम की 61 भविष्यवाणियों की सूची नीचे दी गई है, जिनकी पूर्ति नए नियम में भी दर्ज है:

1. स्त्री के वंश से जन्म: उत्पत्ति 3:15 (गलतियों 4:4, मत्ती 1:20)

2. एक कुंवारी से जन्म: यशायाह 7:14 (मत्ती 1:18,24,25; लूका 1:26-35)
3. परमेश्वर का पुत्र: भजन संहिता 2:7; 1 इतिहास 17:11-14; 2 शमूएल 7:12-16 (मत्ती 3:17; 16:16 (मरकुस 9:7; लूका 9:35)
4. अब्राहाम का वंश उत्पत्ति 22:18; 12:2-3; (मत्ती 1:1; गलातियों 3:16)
5. इसहाक का पुत्र: उत्पत्ति 21:12 (लूका 3:23,34; मत्ती 1:2)
6. याकूब का पुत्र: गिनती 24:17; उत्पत्ति 35:10-12; (लूका 3:23,34; मत्ती 1:2; लूका 1:33)
7. यहूदा का गोत्र: उत्पत्ति 49:10 (लूका 3:23,33; मत्ती 1:2; इब्रानियों 7:14)
8. यिशै का पारिवारिक वंश: यशायाह 11:1, 10 (लूका 3:23,32; मत्ती 1:6)
9. दाऊद का घराना: यिर्मयाह 23:5; 2 शमूएल 7:12-16; भजन संहिता 132:11 (लूका 3:23,31; मत्ती 1:1; 9:27)10. बेतलेहेम में जन्म: मीका 5:2 (मत्ती 2:1; यूहन्ना 7:42; मत्ती 2:4-8) ; लूका 2:4-7)
11. भेंटें उपहारित किया गया: भजन संहिता 72:10; यशायाह 60:6 (मत्ती 2:1,11)
12. हेरोदेस बच्चों का कत्लेंआम करता है: यिर्मयाह 31:15 (मत्ती 2:16)
13. उसका पूर्व-अस्तित्व: मीका 5:2; यशायाह 9:6-7; भजन संहिता 102:25 (कुलुस्सियों 1:17; यूहन्ना 1:1-2; 8:58; प्रकाशितवाक्य 1:17)
14. वह प्रभु कहलाएगा; भजन संहिता 110:1; यिर्मयाह 23:6 (लूका 2:11; 20:41-44)
15. वह इम्मानुएल होगा (परमेश्वर हमारे साथ): यशायाह 7:14 (मत्ती 1:23; लूका 7:16)
16. वह भविष्यद्वक्ता होगा: व्यवस्था विवरण 18:18 (मत्ती 21:11; लूका 7:16; यूहन्ना 4:19; 6:14; 7:40)
17. वह याजक होगा: भजन संहिता 110:4 (इब्रानियों 3:1; 5:5-6)
18. वह न्यायी होगा: यशायाह 33:22 (यूहन्ना 5:30; 2 तीमुथियुस 4:1)
19. वह राजा होगा: भजन संहिता 2:6; जकर्याह 9:9; यिर्मयाह 23:5 (मत्ती 27:37; 21:5; यूहन्ना 18:33-38)
20. उस पर पवित्र आत्मा का विशेष अभिषेक होगा : यशायाह 11:2 (मत्ती 3:16-17; 12:17-21; मरकुस 1:10-11)
21. परमेश्वर के लिए उसका उत्साह: भजन संहिता 69:9 (यूहन्ना 2:15-17)
22. दूत उसे आगे आगे चलेगा : यशायाह 40:3 (मत्ती 3:1-2; 3:3; 11:10)
23. गलील से उसकी सेवकाई शुरू होगी: यशायाह 9:1 (मत्ती 4:12,13,17)
24. सेवकाई में चमत्कार : यशायाह 35:5, 6क; 32:3,4 (मत्ती 9:32,33,35; 11:4-6; यूहन्ना 5:5-9)
25. दृष्टान्तों का शिक्षक: भजन संहिता 78:2 (मत्ती 13:34)
26. उसे मन्दिर में प्रवेश करना था: मलाकी 3:1 (मत्ती 21:12)

27. उसे एक गधे पर यरूशलेम में प्रवेश करना था: जकर्याह 9:9 (लूका 19:35,36,37; मत्ती 21:6-11)
28. यहूदियों के लिए "ठोकर का पत्थर": भजन संहिता 118:22; यशायाह 8:14; 28:16 (1 पतरस 2:7; रोमियों 9:32-33)
29. अन्यजातियों को "प्रकाश": यशायाह 60:3; 49:6 (प्रेरितों के काम 13:47,48a; 26:23; 28:28)
30. एक दोस्त द्वारा धोखा दिया गया : भजन 41:9; 55:12-14 (मत्ती 10:4; 26:49-50; यूहन्ना 13:21)
31. चाँदी के 30 सिक्कों में बिका: जकर्याह 11:12 (मत्ती 26:15; 27:3)
32. परमेश्वर के भवन में डाला जाने वाला धन: जकर्याह 11:13 (मत्ती 27:5)
33. कुम्हार के खेत के लिए दी गई कीमत: जकर्याह 11:13बी (मत्ती 27:7)
34. आपने शिष्यों द्वारा त्याग दिया गया: जकर्याह 13:7 (मरकुस 14:27, 50; मत्ती 26:31)
35. झूठे गवाहों द्वारा आरोपित: भजन संहिता 35:11 (मत्ती 26:59-61) 36 आरोप लगाने वालों के सामने गूंगा: यशायाह 53:7 (मत्ती 27:12-19)
37. घायल हुआ और कुचला गया: यशायाह 53:5; जकर्याह 13:6 (मत्ती 27:26)
38. मारा गया और उस पर थूका गया : यशायाह 50:6; मीका 5:1 (मत्ती 26:67; लूका 22:63)
39. उसका ठठा किया गया: भजन संहिता 22: 7,8 (मत्ती 27:31)
40. क्रूस के तले गिरा: भजन संहिता 109:24-25 (यूहन्ना 19:17; लूका 23:26; मत्ती 27:31-32)
41. हाथ और पैर छेदे गए: भजन संहिता 22:16; जकर्याह 12:10 (लूका 23:33; यूहन्ना 20:25)
42. चोरों के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया: यशायाह 53:12 (मैथ्यू 27:38; मार्क 15:27,28)
43. उसने अपने उत्पीड़कों के लिए मध्यस्थता की: यशायाह 53:12 (लूका 23:34)
44. अपने ही लोगों द्वारा ठुकराया गया: यशायाह 53:3; भजन 69:8; 118:22 (यूहन्ना 7:5,48; 1:11; मत्ती 21:42,43)
45. बेमतलब उसके साथ बैर किया गया: भजन संहिता 69:4; यशायाह 49:7 (यूहन्ना 15:25)
46. दोस्त दूर खड़े थे: भजन संहिता 38:11 (लूका 23:49; मरकुस 15:40; मत्ती 27:55-56)
47. लोगों ने सिर हिलाया: भजन संहिता 109:25; 22:7 (मत्ती 27:39)
48. उस पर नजर रखी गई: भजन संहिता 22:17 (लूका 23:35)
49. वस्त्र फाड़ लिए गए और उन पर चिट्ठी डाली गई: भजन संहिता 22:18 (यूहन्ना 19:23-24)
50. प्यास सहन की : भजन संहिता 69:21; 22:15 (यूहन्ना 19:28)
51. उसको पित्त और सिरका दिया गया: भजन संहिता 69:21 (मत्ती 27:34)
52. उसका एक त्यागे हुए व्यक्ति सा रोना: भजन संहिता 22:1 (मत्ती 26:46)

53. खुद को परमेश्वर के लिए समर्पण किया : भजन संहिता 31:5 (लूका 23:46)
54. उसकी हड्डियाँ नहीं टूटी: भजन संहिता 34:20 (यूहन्ना 19:33)
55. उसका दिल टूट गया: भजन 22:14 (यूहन्ना 19:34)
56. उसका पसली छेदी गई: जकर्याह 12:10 (यूहन्ना 19:34)
57. भूमि पर अंधेरा होना : आमोस 8:9 (मत्ती 27:45)
58. अमीर आदमी की कब्र में दफनाया गया: यशायाह 53:9 (मैथ्यू 27:57-60)
59. पुनरुत्थान: भजन संहिता 16:10; 30:3; 41:10; 118:17; होशे 6:2 (प्रेरितों के काम 2:31; लूका 24:46; मरकुस 16:16)
60. स्वर्ग पर उठाया गया : भजन संहिता 68:18ए (प्रेरितों के काम 1:9)
61. परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान: भजन संहिता 110:1 (इब्रानियों 1:3; मरकुस 16:19; प्रेरितों के काम 2:34,35)

इतिहास में कोई दूसरा कभी भी इन्हें पूरा करने के आस पास भी नहीं आया, और कोई भी कभी भी ऐसा कर ही नहीं सकता है क्योंकि 70 ईस्वी में यरूशलेम में सभी यहूदियों के जन्म रिकॉर्ड और गोत्रों के रिकॉर्ड नष्ट कर दिए गए थे। इनकी पूर्ति भी परमेश्वर के वचन के रूप में बाइबल की प्रामाणिकता के साथ-साथ इस तथ्य को भी प्रमाणित करती है कि यीशु परमेश्वर है।

केवल 1 से 8 के सच होने की सम्भावना 10 में से 1 होगी जिसमें 16 शून्य होंगे। (यदि प्रत्येक मौका पर एक चांदी का डॉलर सिक्के हो और उन्हें टेक्सास राज्य के किनारे-किनारे रखा गया हो , तो वे पूरे राज्य को 2' गहराई तक ढाप दे ! एक सिक्के पे निशान लगाया गया हो, और किसी को नहीं। एक आदमी की आंखों पर पट्टी बांधें दे और उसे किसी दिशा में भी चलने दें , उसके दसंवारा एक को चुनना ठीक ऐसा ही होगा जो पहली 8 भविष्यवाणियों के समान है!

पुनरुत्थान

वास्तव में, यीशु के ईश्वरत्व का प्रमाण का गिरना या ऊपर उठना, पुनरुत्थान की सच्चाई पर निर्भर है। उसने कहा कि वह जीवन में वापस आएगा, फिर उसने ऐसा करने का दावा भी किया। उसके अनुयायियों ने भी स्पष्ट रूप से उसके लिए यही दावा किया। क्या वे सही थे? सबसे पहले, इसे माने जाने का कारण यह है कि मृत्यु से अनन्त शरीर में पुनरुत्थान होने जैसा कुछ ऐसा काम नहीं है जो व्यक्ति के अधिकार में हो! यह बहुत ही अविश्वसनीय, बहुत ही असाध्य होगा, इसे बनाना किसी के लिए भी असंभव होगा।

यदि यीशु जीवित नहीं हुआ होता, तो उसके शरीर के साथ और क्या हो सकता था? कुछ लोग कहते हैं कि शिष्यों ने उसके शरीर को चुरा लिया, लेकिन सवाल यह है कि वे प्रचार करने का साहस कैसे प्राप्त करते जो उनके पास पहले था ही नहीं ? जिस चीज के बारे में वे जानते होते कि वो झूठ है, उसके लिए वे अपनी जान जोखिम में क्यों डाल देते ? तो, कुछ दुसरे लोग कहते हैं, दुश्मनों ने शरीर चुरा लिया था। अगर ऐसा होता, तब उन्होंने यह कहा होता और इसे पुनरुत्थान का खंडन करने के लिए सबूत के रूप में दिखाया होता, जब पहली बार पुनरुत्थान का दावा किया गया था। कोई भी सिद्धांत एक साथ 500 से अधिक लोगों के चश्मदीद गवाहों के होने की व्याख्या नहीं करता है जिन्होंने यीशु को सूली पर चढ़ाने

के बाद जीवित देखा था। बेहोशी का सिद्धांत अधिक सामान्य है, कि यीशु वास्तव में कभी नहीं मरा, लेकिन बेहोशी की हालत में चला गया था। लेकिन अनुभवी रोमन जल्लादों द्वारा तो उसके दिल में एक भाला मारने के बाद उसे मृत घोषित कर दिया था। वह 3 दिन पूरी तरह से बिना भोजन या पानी, कपड़े में लपेटा और 100 पाउंड/40 किलोग्राम मसालों से ढका रहा। आपने कपड़ों को कोकून के आकार में छोड़ते हुए, जैसे कि वह अभी भी उनमें था, कपड़े की लपेटों से बाहर निकलने के लिए, कीलों से छिदे हुए हाथों से विशाल चट्टान को अंदर से बिना किसी हथके के हटाते हुए, रोमी सैनिकों पर हावी हो जाने, कीलों से छिदे हुए पैरों पर कई मील चलने, और फिर जिनसे वह मिला यह साबित करने के लिए कि उसके पास एक श्रेष्ठ, अनन्त शरीर था, उसको पुनरुत्थान करना ही एक मात्र काम था जो उसे करना ही था; पुनरुत्थान में विश्वास करने से अधिक इन बातों पर विश्वास करने की अधिक आवश्यकता है!

पुनरुत्थान के अतिरिक्त प्रमाण भी है। यीशु 500 से अधिक लोगों को 10 बार दिखाई दिया। यदि पुनरुत्थान नहीं हुआ था तो हम शिष्यों में परिवर्तन, प्रारंभिक कलीसिया का प्रसार, पौलुस का परिवर्तन, प्रभु भोज की शुरुआत और बपतिस्मा, आराधना के दिन का शनिवार से रविवार में परिवर्तन होना और उसके जीवन से प्रभाव की व्याख्या कैसे करते हैं जो आज भी पड़ता है। राल्फ वाल्डो इमर्सन ने कहा, "यीशु का नाम इतना लिखा नहीं गया है जितना दुनिया के इतिहास में दर्ज किया गया है। कोई " झूठा या पागल ऐसा नहीं कर सकता!

यदि परमेश्वर मनुष्य बन गया हो , तो आप उससे यही उम्मीद करेंगे:

तर्क की एक और लाइन जो आप अपने आप से पूछेंगे, "यदि परमेश्वर मनुष्य बन गया है, तो हम उससे क्या उम्मीद करेंगे?" यीशु ने वह सब पूरा किया जिसकी हम उम्मीद करते!

1. जीवन में असामान्य प्रवेश करेगा। कुंवारी जन्म अब तक का सबसे असामान्य प्रवेश द्वार है। यह भी कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई आपने दम पर कर सकता होता अगर कोई ऐसा करना छठा भी तो कि वह ऐसा कर दे। अगर यह सच ना होता तो किसी कुंवारी के द्वारा जन्म की बात पर कभी कैसे विचार किया जाता?

2. पाप रहित होगा। यीशु ने पापरहित होने का दावा किया (यूहन्ना 8:46)। जिन लोगों ने उसके जीवन को देखा, वे इस दावे से सहमत हैं: उसके शिष्य जो उसके साथ 24 घंटे रहते थे (पतरस, यहून्ना, मत्ती, आदि), उसके भाई (याकूब, यहूदा) जिन्होंने उसे पारिवारिक जीवन में और दूसरों के साथ देखा था, यहां तक कि उसके शत्रु भी उसके जीवन में किसी भी पाप की ओर इशारा नहीं कर सकते थे (सलीब पर डाकू , पीलातुस, क्रूस पर सूबेदार ने उसके निर्दोष होने की गवाही दी)।

3. अलौकिक को चमत्कार के रूप में प्रकट होगा। यीशु ने आश्चर्यकर्म करने का दावा किया, और उन्हें मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, पतरस, यहूदा और याकूब ने प्रमाणित किया।

4. दूसरों से अलग होने का तीव्र भाव रखेगा। यीशु ने स्वयं को भिन्न, अद्वितीय, के रूप में देखा और दूसरों ने भी उसे उसी रूप में देखा। यहाँ तक कि यहूदी और रोमन इतिहासकारों ने भी उसे अन्य मनुष्यों के समान नहीं देखा, जैसा कि आज कुरान और कई विद्वान देखते हैं।

5. अब तक ना बोले गए सबसे महान शब्द बोलेगा। यीशु ने कहा कि उसके शब्द कभी नहीं टलेंगे और वे कभी नहीं टले! दूसरे लोग कहते थे कि जैसा उसने कहा वैसा कोई नहीं बोला, और यह अब भी सच है। यीशु वह व्यक्ति है जिसे धार्मिक और संसारिक इतिहासकारों, शिक्षकों और दार्शनिकों द्वारा सबसे अधिक उद्धृत किया गया है।

6. जिसका एक स्थायी विश्वव्यापी प्रभाव होता। इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि यीशु इस ग्रह पर अब तक का सबसे प्रभावशाली जीवन है।

7. मनुष्य में आध्यात्मिक भूख को संतुष्ट करेगा। यीशु ने मत्ती, पतरस, नीकुदेमुस, जक्कई, कुएँ पर स्त्री, और अनगिनत अन्य में की आंतरिक ज़रूरतों को पूरा किया, और युगों से लेकर आज तक करता है। सचमुच यीशु संतुष्ट करता है!

8. मृत्यु पर शक्ति का प्रयोग करेगा। यीशु ने मृत्यु पर अधिकारी होने का दावा किया और इसे अपने पुनरुत्थान द्वारा सिद्ध किया। वह मृतकों को वापस जीवन में लाया: नाईन की विधवा के बेटे को, सूबेदार के नौकर को, लाजर को और दोरकास को (पतरस के माध्यम से)। (इन पंक्तियों के साथ अधिक जानकारी के लिए जोश मैकडॉवेल द्वारा "एविडेंस दैट डिमांड्स ए वर्डिक्ट" देखें।)

क्या यीशु परमेश्वर था? इसका फैसला अपने लिए आपको करना होगा। हालाँकि, अगर वह नहीं था, तो कोई भी कभी भी नहीं होगा। यदि यीशु परमेश्वर नहीं था, तो वह ऑस्कर के हकदार तो था !

मसीह के ईश्वरीय दावे

परमेश्वर के साथ समानता का दावा - मत्ती 28:19; यूहन्ना 5:17-18; 12:45; 13:20; 14:1, 9

परमेश्वर के साथ एक होने का दावा- मत्ती 4:7; लूका 4:12; 8:39; यूहन्ना 10:30, 36-38; 17:11, 21-22; 20:28

परमेश्वर द्वारा भेजे जाने का दावा -4:34; 5:37; 7:16, 28-29; 8:16; 9:4; 11:42; 14:24; 16:28; 17:18, 23

परमेश्वर का पुत्र होने का दावा -मत्ती 16:17; 22:42-45; मरकुस 12:35-37; 14:61-62; लूका 20:41; यूहन्ना 9:35-37; लूका 22:69-70

स्वर्ग से होने का दावा -यूहन्ना 6:33, 35, 51

परमेश्वर के गुण होने का दावा -यूहन्ना 8:42; 16:15; 17:5; 14:6

सर्वज्ञता होना - मत्ती 11:21-22; 22:18; लूका 10:13; यूहन्ना 16:30-31

सर्वव्यापी होना - मत्ती 18:20; 28:20

सर्वशक्तिमान होने का दावा -मरकुस 14:61-63; लूका 22:69-70; यूहन्ना 2:19, 10:18; 11:25-27

पाप क्षमा करना - मरकुस 2:5,9,10; लूका 5:20-21; 7:48-49

ईश्वरीय अधिकार -मत्ती 7:21-23; 28:18

सम्मान - यूहन्ना 5:22-23

पूर्व-अस्तित्व- यूहन्ना 8:58; 17:5

यीशु का जीवन - एक अवलोकन

जब नासरत के यीशु का जन्म हुआ, तो उसके माता-पिता के अलावा पूरे रोमन साम्राज्य में किसी ने परवाह नहीं की। यीशु का जन्म गुमनामी में हुआ था और उसकी सेवकाई गुमनामी में शुरू हुई थी। पहले वर्ष केवल मुट्ठी भर लोग ही उसके बारे में जानते थे और उसका अनुसरण करते थे। धीरे-धीरे उसकी शवि फैलती गई। हालाँकि, वह मात्रा की तुलना में गुणवत्ता में अधिक रुचि रखता था। फिर भी, हर किसी को यह निर्णय लेने की आवश्यकता थी कि क्या वे उसे स्वीकार करें या अस्वीकार करें।

पहले साल के बाद, उसकी लोकप्रियता अपने चरम पर पहुंच गई। उसने शिष्यों के साथ पूरे गलील की यात्रा की और यह साबित करने के लिए चमत्कार किए कि वह मसीहा था। यदि वह उनके लिए मुफ्त भोजन देना जारी रखता तो अधिकांश उसका अनुसरण करते रहते। इसके बजाय, उसने उन्हें सब कुछ त्यागने और उसके पीछे चलने की चुनौती दी। जनता ने एक सैन्य नेता की जय-जयकार की होती जो रोमन दासता के जुए को उतारने के लिए एक सेना खड़ी करेता। यीशु ने उन लोगों के लिए उच्च मानक निर्धारित किए जो उसका अनुसरण करेंगे: कि वह उसे हर चीज में और हर समय, सबसे पहले और आपने जीवन में किसी भी चीज में 100% पह स्थान पर रखें। यह एक उच्च आवश्यकता है, और आज भी बहुत से लोग इसे पूरा करने को तैयार नहीं होते हैं। परिणामस्वरूप, यीशु की लोकप्रियता में गिरावट आई।

जैसे-जैसे इसमें गिरावट आई, विरोध बढ़ता गया। धार्मिक अगुवे तो शुरू से ही उसके खिलाफ थे। जब उसने पहली बार मन्दिर को शुद्ध किया, तो उसने आरम्भ से ही उनके पाप की ओर संकेत किया। धीरे-धीरे, वे अधिक से अधिक लोगों को यीशु के खिलाफ करने में सक्षम हो गए। लोग यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करने को तैयार थे। जहाँ वे अटके हुए थे वह परमेश्वर के सामने उनके पाप और जिएदारी को स्वीकार करने के साथ साथ होता था। अभिमान मनुष्य को अभी भी परमेश्वर से दूर रखता है।

जैसे-जैसे जनता की राय बदलती गई, वैसे-वैसे यीशु का संदेश और तरीके भी बदलते गए। लोगों के पास आने वाले राज्य का अपना संदेश देने के बजाय, उसने अपना समय अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करने और उन्हें अनुशासित करने में बिताया। उसने कम से कम चमत्कार किए, क्योंकि लोगों को पर्याप्त प्रमाण मिल चुके थे और उन्हें और अधिक की आवश्यकता नहीं थी। वह किसी को विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करने वाला था। उसने अपने अनुयायियों को सच्चाई प्रकट करने के लिए दृष्टान्तों के साथ शिक्षा देना शुरू किया और साथ ही इसे उन लोगों से छिपाया भी जो स्वीकार नहीं करने वाले थे। हर जगह किसी के पास जाने के बजाय, उसने चेलों को प्रशिक्षित किया कि जब वह चला भी जाए तो वे उसके बाद भी चलते रहें।

तीसरे वर्ष के अंत के बाद पासा डाला गया। विरोध रोज ब रोज बढ़ता गया। धार्मिक अगुवे उसे और उसके संदेश को रोकने के लिए उसे मौत के घाट उतारने के लिए प्रतिबद्ध हो चुके थे। उन्हें इस बात का कम ही पता था कि ऐसा करना हमेशा के लिए इसकोजारी रहने का आश्वासन देने के लिए बस यही आवश्यक था।

उनके पास फैसला करने का मौका था। अब हमारी बारी है। क्या आप स्वीकार करेंगे या अस्वीकार करेंगे? क्या आप केवल 'मुफ्त भोजन' के पीछे भाग रहे हैं -- वह आपके लिए क्या कर सकता है? क्या आप उसका अनुसरण करने के लिए अपना क्रूस उठाने की उसकी चुनौती का पालन करने के लिए तैयार हैं? इसका अर्थ उन लोगों के लिए भी अस्वीकृति और विरोध होगा जो उसका अनुसरण करते हैं। कोई सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता। फिर भी, यह जीवन को पूरी तरह से जीने का सबसे अच्छा तरीका है, इस एक जीवन को अनंत काल तक महत्व देने के लिए। उन्होंने जो गलती की, उसे मत करो। उसका अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्याग दो।

अंधकार (गायब हो रहा है)		लोकप्रियता (कम हो रही है)		विरोध (बढ़ रहा है)	
			विस्तारित सेवकाई		
		आरंभिक सेवकाई		विशेष सेवकाई	आमान पर चले जाना
	शुरुआत				निर्णय घटनाएं
जन्म	26 आखिर से पतझड़ 27	27 की गर्मियां	27 के आखिर से 28 के पतझड़ तक 28 की गर्मियां 28 के आखिर से 29 की पतझड़	29 की गर्मियां	29 के आखिर से 30 की पतझड़
अवतार		प्रारंभिक यहूदा	प्रारंभिक मध्य गलीली	आखिरी गलीली	आखिरी यहूदा
				पेरान	पेरान
	1 वर्ष		2 वर्ष	3 वर्ष	4 वर्ष

मत्ती :

यीशु - राजा



शीर्षक : लेखक के नाम पर नामित

लेखक: मत्ती, कर वसूली करने वाले, शिष्य

लेखन की तिथि: लगभग 60 ई.

लेखन का स्थान: सीरिया में अन्ताकिया

समय शामिल: यीशु का पूरा जीवन

प्राप्तकर्ता: हर जगह रहने वाले यहूदी

मुख्य आयत : यीशु मसीह की वंशावली का अभिलेख, अब्राहाम की सन्तान, दाऊद की सन्तान: 1:1

मुख्य शब्द: "पूरा होना" (17 बार); "स्वर्ग का राज्य" (32 बार)

उद्देश्य: पुराने और नए नियम को जोड़ता है

विषय: यीशु इजराइल का राजा है, यहूदी मसीहा जिसका वादा किया गया था

मान लीजिए कि आपके हाथ में 10 सिक्के थे, आप ने उन्हें हिलाया, फिर अपना हाथ खोला। इसकी क्या संभावना है कि वे सभी सीधे तरफ से ही गिरेंगे? आपको क्या लगता है कि सभी सिक्कों को सीधा लाने के लिए कितनी बार कोशिश करनी पड़ेगी? अंदाजे के तौर पर आपको लगेगा कि एक हज़ार से अधिक कोशिशों में ऐसा हो जायेगा! अब इन सिक्कों को यीशु की भविष्यवाणियां समझिए। सिक्के के केवल दो पहलू होते हैं जिसमें - 50-50 की सम्भावना होती है। भविष्यवाणियों के पूरे होने के बजाए न पूरा होने के और भी कई तरीके हैं। अगर पहली बार ही सभी 10 सिक्के सीधे पड़ जाए तो क्या होगा! मान लीजिए कि आपने इसे फिर से किया और वे सभी सीधे ही पड़े थे, और बार-बार - कुल मिलाकर 30 बार और हर बार हर सिक्का सीधा ही पड़ा था। आपको जरूर सोचेंगे कि कुछ तो खास चाल है, कि नहीं? ठीक ऐसा ही मसीह की भविष्यवाणियों के साथ भी है। उसने मसीहा के बारे में 300 से अधिक भविष्यवाणियों में से प्रत्येक को पूरा किया। यह जबरदस्त प्रमाण है कि यीशु ही मसीहा हैं।

मत्ती ने लिखा था कि यीशु ने भविष्यवाणी को पूरा किया कि यीशु ही मसीहा था। ताकि "यह पूरा हो सके" उसके सुसमाचार में लगभग 20 बार आता है। मत्ती सभ यहूदियों में सबसे अधिक शिक्षित और एक

उत्कृष्ट लेखक था। उसने साथी यहूदियों को लिखा, जो मसीहा के बारे में पुराने नियम की भविष्यवाणियों को जानते थे, सिर्फ यह दिखाने/बताने के लिए कि यीशु ने भविष्यवाणियों को पूरा किया है। उसने अपने लेख में पुराने नियम के 50 सीधे उद्धरण और पुराने नियम के लिए 75 संकेत शामिल किए हैं -जो किसी भी अन्य सुसमाचार से दोगुना अधिक है।

मलाकी में, मसीहा की आशा की जाती है। पुराना नियम उसकी खोज बंद कर देता है। "सुन, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तेरे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। 6 वह पिताओं के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके पिताओं की ओर फेरेगा; नहीं तो मैं आकर भूमि को श्राप से मारूंगा।" (मलाकी 4:5) मत्ती में हम देखते हैं कि मसीहा इन भविष्यवाणियों को पूरा करता हुआ आ चुका है।

मसीहा -शब्द 'मसीहा' एक हिब्रू शब्द है जिसका अर्थ है 'अभिषिक्त व्यक्ति'। शब्द 'क्राइस्ट' इसका यूनानी भाषा में शब्द है। भाविश्वक्ता, याजक और राजा सभी अभिषिक्त होते थे। मसीहा एक में ही यह सभी थे। मत्ती में, और सामूहिक रूप से यहूदियों के लिए, मुख्य जोर मसीहा राजा के रूप में था। मत्ती अपने पाठकों को यही दिखाता है - यीशु प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा-राजा है।

I. राजा प्रकट हुआ है (1:1 - 9:30) मसीहा होने का दावा करने वाले किसी यहूदी से पहला प्रश्न जो कोई यहूदी करेगा, वो यह होगा, "क्या आप दाऊद के प्रत्यक्ष वंशज हैं?" मत्ती यहीं से शुरुआत करता है। वह अपने सांसारिक पिता यूसुफ के माध्यम से यीशु को यह कानूनी दर्जा देता है (1:1-7)। एक समस्या जो उत्पन्न होती है, और वह है

यहोयाकीन के सभी शारीरिक वंशजों पर तो एक श्राप है, फिर उस वंश से कोई राजा कैसे आ सकता है? जिसका समाधान यह है कि यीशु उसके शरीरिक वंशज नहीं था, बल्कि केवल कानूनी तौर पर। मत्ती कुंवारी जन्म के बारे में समझाते हुए समझाता है कि यह कैसे हो सकता है (1:18 - 2:23)। लगभग एक दर्जन बार मत्ती ने पुराने नियम को यह दिखाने के लिए उद्धृत किया कि कैसे प्रत्येक कदम ने मसीहा के बारे में एक- एक भविष्यवाणी को पूरा किया।

फिर वह बताता है कि किस प्रकार राजदूत राजा की ताजपोशी करने आए (3:1-17), और कैसे उसने अपने पाप-रहित होने को प्रमाणित किया जब शैतान ने उसकी परीक्षा की (4:1-11)। राजा अपने राज्य के लिए अपने नैतिक नियमों को निर्धारित करता है (5:1 - 7:25)। इस प्रकार मत्ती दिखाता है कि यीशु अपने जन्म से और उस सब से जो उसने कहा उसके द्वारा मसीहा साबित हुआ है। आगे वह उसके कामों के द्वारा उसकी योग्यता दिखाएगा।

यीशु के शब्दों को दिखाते हुए, चमत्कार पर चमत्कार दर्ज किये गए हैं (8:1 - 9:30)। वह केवल मनुष्य (वंशावली और जन्म) ही नहीं है, वह ईश्वर (चमत्कार) भी है

II. राजा का विरोध किया जाता है (10:1 - 16:12) जबकि कुछ ने राजा के संदेश को स्वीकार किया, बहुतों ने इसे अस्वीकार कर दिया (10:1 - 12:50)। यीशु के आने वाले राज्य के दृष्टांत एक नमूने को दिखाते हैं जिसमें पहले अस्वीकृति होती है और अंत में स्वीकृति की जाती है (13:1-52)। इस बीच, मसीहा को हेरोदेस द्वारा, उसके अपने परिवार द्वारा और धार्मिक शासकों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है (13:53-16:12)।

III. राजा को अस्वीकार किया जाता है (19:13 - 27:66) क्योंकि जनता ने उसे अस्वीकार कर दिया, यीशु ने अपनी सेवकाई को उन लोगों को प्रशिक्षित करने में बदल दिया जो विश्वास करते थे, ताकि उसके जाने के बाद वे यह कार्य करते रहें (16:13 - 20:28)। उसने उन्हें अपनी होने वाली अस्वीकृति और मृत्यु के बारे में सिखाया और बताया कि उसके बाद क्या होगा।

खजूरी रविवार' के दिन यीशु ने कार्यों और शब्दों से पूरे राष्ट्र को स्पष्ट रूप से दिखाया कि वह मसीह राजा था (21:1-11)। कुछ ने तो स्वीकार किया, लेकिन अधिकांश ने अस्वीकार कर दिया। वह अपने सिंहासन कक्ष, मंदिर (21:12-22) को शुद्ध करने के लिए चला गया (21:12-22) और उन लोगों से, अपने शासन की रक्षा करने लगा, जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था (21:23 - 23:39)। जैतूनी उपदेश में (24:1 - 25:46) यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि उसका राज्य कब आएगा। इस बीच, राजा को ठुकरा दिया गया और क्रूस पर चढ़ाया गया (26:1 - 27:66)।

IV. राजा जी उठता है (27:66 - 28:20) मृत्यु और पाप पर राजा की शक्ति, मरे हुए में से, उसके द्वारा जी उठने में दिखाई देती है। इस प्रकार मत्ती यीशु को मसीहा राजा के रूप में दिखाता है, भले ही धार्मिक शासकों ने और पूरे राष्ट्र ने उसे अस्वीकार कर दिया था। आपका क्या विचार है - क्या वह आपका राजा है?



मत्ती की रूपरेखा

I. राजा की तैयारी (राजा प्रकट होता है) 1-9

क- राजा का व्यक्तित्व 1:1-4:11

1. उसकी वंशावली 1:1-7

2. उसका आगमन 1:18-2:23

3. उसका राजदूत 3:1-17

4. उसका विरोधी 4:1-11

ख-राजा का उद्देश्य 4:12-25

ग- राजा का उपदेश 5:1-7:29

घ- राजा का प्रमाण 8:1-9:30

1. प्रदर्शनी 1: शक्ति 8:1-34

2. प्रदर्शनी 2: क्षमा 9:1-17

3. प्रदर्शनी 3: शक्ति 9:18-38

II. राजा का नमूना (राजा का विरोध होता है) 10-16:12

क-राजा का कार्यक्रम 10:1-11:1

ख-राजा की समस्याएं 11:2-12:50

ग-राजा के दृष्टान्त 13:1-52

घ-राजा का उत्पीड़न 13:53-16:12

1. उसके अपने नगरवासियों द्वारा 13:53-58

2. हेरोदेस द्वारा 14:1-36

3. शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा 15:1-39

4. फरीसियों और सद्दूकियों द्वारा 16:1-12

III. राजा का उपदेश (राजा अस्वीकार किया जाता है) 16:13-27:66

क-राजा के सिद्धांत 16:13-20:28

1. उसकी कलीसिया के बारे में 16:13-20

2. उसकी मृत्यु के बारे में 16:21-28

3. उसकी महिमा के बारे में 17:1-21

4. उसके विश्वासघात के बारे में 17:22-23

5. करों/टैक्स के बारे में 17:24-27

6. नम्रता के बारे में 18:1-35

7. मानवीय समस्याओं के बारे में 19:1-26

8. राज्य के बारे में 19:27-20:28

ख-राजा की प्रस्तुति 20:29-28:39

1. राजा की शक्ति 20:29-34

2. राजा की प्रस्तुति 21:1-11

- 3. राजा की शुद्धि 21:12-22
- 4. राजा से आमना-सामना 21:23-22:46
- 5. राजा की अस्वीकृति 23:1-39
- ग- राजा की भविष्यवाणी 24:1-25:46

- 1. मन्दिर का नाश 24:1-2
- 2. युग के अन्त के चिन्ह 24:3-28
- 3. उसके आने के चिन्ह 24:29-25:46

घ- राजा की सजा 26:1-27:66

- 1. तैयारी 26:1-16
- 2. फसह 26:17-30
- 3. विश्वासघात 26:31-56
- 4. परीक्षा 26:57-27:26
- 5. सलीब दिया जाना 27:27-66

IV. राजा की प्रमुखता (राजा का उत्थान) 28

- क- राजा की शक्ति 28:1-10
- ख - राजा के विरुद्ध पक्षपात 28:11-15
- ग- राजा की प्रजा 28:16-20

मरकुस :

यीशु – सेवक



शीर्षक: लेखक के नाम पर जिसने इसे लिखा था

लेखक: मरकुस, पौलूस का युवा मित्र

लेखन की तिथि: लगभग 50 ई.

लेखन का स्थान: रोम

समय शामिल: यीशु के सेवकाई

प्राप्तकर्ता: अन्यजातिया / गैर यहूदी

मुख्य आयत: इसलिए यहाँ तक कि मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने नहीं, परन्तु सेवा करने आया है और अपना जीवन बहुतों के लिए फिरोती के रूप में देने आया है।" (मरकुस 10:45)

मुख्य शब्द: "सीधा" (अंग्रेजी भाषा की बाइबिल ईडीशन -के .जे.वी में 40 बार; एन.आई.वी में "तुरंत" "तुरंत"); "भीड़" (17 x)

उद्देश्य: वितरित करने के लिए- पतरस के उपदेश (सुसमाचार पथ) का संक्षिप्त विवरण ।

विषय: मसीह को सिद्ध और पूर्ण विश्वासयोग्य सेवक के रूप में दिखाने के लिए

आज कई कलीसियाओं में एक व्यक्ति जो एक 'डीकन' है, उसको एक ऐसे पद पर आसीन होने के रूप में देखा जाता है जिसकी कई लोग चाहत करते हैं, क्योंकि उन्हें अक्सर दूसरों से कुछ एक स्तर ऊपर बैठे हुए देखा जाता है। नए नियम में, यद्यपि, एक ' डीकन ' (वेटर)वह था जो मेजों पर प्रतीक्षा करता था - एक सेवक/दास। कलीसिया के अगुवों को परम सेवक यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए दूसरों के सेवक होने चाहिए। "मैं सेवा करवाने नहीं, परन्तु सेवा करने आया हूँ" (मरकुस 10:45)।

मरकुस ने यीशु को एक सेवक दिखाने के लिए लिखा था -मरकुस ने अपने छोटे सुसमाचार में यीशु के एक सेवक /दास होने की तस्वीर चित्रित करता है। जबकि मती ने यहूदियों को यीशु को मसीहा/राजा के रूप में दिखाने के लिए लिखा था, मरकुस ने अन्यजातियों को यीशु को सेवक के रूप में दिखाने के लिए लिखा था । हालाँकि ऐसा लगता है कि अंतिम भोज उसके घर के ऊपरी कमरे में आयोजित किया

गया था, तो भी मरकुस यीशु के साथ नहीं था। मरकुस ने वह लिखा जो जो पतरस ने सिखाया और प्रचार किया, तो वास्तव में मरकुस के सुसमाचार में शब्द पतरस के हैं।

मरकुस में 40 से अधिक बार "इसी घड़ी" और "तुरंत" का उपयोग किया जाता है। ध्यान यीशु के कार्यों और चमत्कारों पर है। उसके उपदेशों या दृष्टान्तों की मायनो के बहुत उद्धरण नहीं हैं। आखिरकार, एक सेवक अपने कार्यों से जाना जाता है, न कि इस से कि वह, अच्छा नौकर होने का कितना बड़ा दावा करता है!

एक नौकर वह है जो जानबूझकर, स्वेच्छा से, बलिदान और खुशी से अपने लक्ष्यों को छोड़ देगा ताकि वह किसी और को उनके लक्ष्यों को पूरा करने में मदद कर सके। मरकुस यीशु को ऐसा ही करते हुए दिखाता है। जीवन में उसने परमेश्वर की हर इच्छा के अनुसार उसकी आज्ञा का पालन करते हुए उसकी सेवा की, और मृत्यु में उसने हमें छुटकारा दिलाने के लिए अपने प्राणों को त्याग कर उसकी सेवा की।

1. सेवक का दूसरों से अलग होना (1:1-13) मरकुस की शुरुआत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से होती है (1:1-8)। यीशु के जन्म, माता-पिता आदि का कोई उल्लेख नहीं है। आखिरकार, दास की पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण होती ही नहीं है। साथ ही यह बात भी है कि, मरकुस के गैरयहूदी पाठक उस तरह की चीजों में दिलचस्पी भी नहीं रखते थे, जितनी कि मत्ती के यहूदी पाठक रखते थे। यीशु का बपतिस्मा दिखाता है कि यीशु परमेश्वर की सेवा करने के लिए स्वयं को समर्पित कर रहा है (1:9-11) और शैतान के प्रलोभनों के प्रति उसका विरोध करना (1:12-13) उसे केवल अपने स्वामी के प्रति 100% आज्ञाकारी होने के रूप में दिखाता है। जब यहून्ना को गिरफ्तार किया गया तो अकर्षण का ध्यान यीशु पर चला गया।

II. सेवक की सेवा (1:14 - 10:52) आमतौर पर एक सेवक/गुलाम के पास सेवक/गुलाम नहीं होते, लेकिन यीशु के पास थे (1:14-20)। उसने शिष्यों को आपने जैसा सेवक बनने के लिए उसका अनुसरण करने के लिए बुलाया था। इसके बाद मरकुस चमत्कारों की एक श्रृंखला को यह दिखाने के लिए सूचीबद्ध करता है कि सेवक होते हुए भी, यीशु परमेश्वर भी था और इसलिए सेवकों को बुला सकता था (1:21 - 3:12)। बहुमत ने इसे खारिज कर दिया, लेकिन कुछ ने माना। जो लोग उसके साथ थे, वे दिन में 24 घंटे, सप्ताह में 7 दिन उससे यह सीखने के लिए थे कि सेवक कैसे बनें (3:13-35)। यीशु ने उन्हें कहानियों (दृष्टान्तों) का उपयोग करते हुए सिखाया, उन्हें परमेश्वर की सेवा करने का महत्व दिखाया (4:1-34)।

इसके आगे मरकुस दिखाता है कि कैसे यह सेवक प्रकृति, दुष्टात्माओं, बीमारी, मृत्यु, तिरस्कार और शारीरिक कष्टों पर प्रभुता करता था (4:35-9:1)। इस बिंदु पर उसके उद्धृत कुछ शब्द हैं, उसकी महिमा, मृत्यु, नरक, तलाक, बच्चों और अनन्त जीवन के बारे में उसकी शिक्षाएँ (9:2 - 10:52)।

III. सेवक का बलिदान (11:1 - 15:47) एक सेवक की सच्ची परीक्षा उसकी अधीनता होती है। यीशु ने अपने अनुयायियों से ऐसा कुछ भी करने के लिए नहीं कहा जो वह खुद करने को तैयार नहीं था - और उसने सबसे बुरा किया। स्वयं को राजा दिखाने के बाद (11:1-11) और अस्वीकार किए जाने के बाद, वह अपने अनुयायियों को सिखाता चला गया कि उसके जाने के बाद एक सेवक की तरह कैसे रहना है (11:12 - 13:37)। कुछ लोगों ने उसे पहचाना कि वह वास्तव में कौन था, और स्वयं को जीवन भर उसकी सेवा करने के लिए समर्पित कर दिया (14:1-9)। हालांकि, उनके सबसे करीबी अनुयायियों में से एक ने उन्हें चांदी के 30 टुकड़ों के लिए धोखा दे दिया - एक गुलाम की कीमत (14:10-11)। फिर भी, यीशु अपने स्वामी की इच्छा के अधीन था। यह दिखाते हुए कि सूली पर चढ़ाने के लिए यह उसकी स्वतंत्र इच्छा थी, उसने प्रभु भोज की स्थापना की (14:2-52)। उसने अपनी गिरफ्तारी और अनुचित मुकदमों को भी स्वीकार किया, जिसका नतीजा उसके सलीब पर चढ़ना निकला (14:53 - 15:47)।

IV. सेवक की संप्रभुता (16:1-20) ऐसा प्रतीत होता था कि पीड़ित सेवक का अंत हो गया - लेकिन ऐसा नहीं था! कष्ट तो अंत हुआ, लेकिन उसकी सेवा का नहीं। वह फिर से जी उठा (16:1-8)। मरकुस के पास पुनरुत्थान और उसके बाद के समय के बारे में कहने के लिए बहुत थोड़ा है, केवल अपने पाठकों को यह बताने के लिए पर्याप्त है कि ऐसा हुआ था। वह अब सेवक नहीं है, उसके अनुयायियों को अब पृथ्वी पर उसकी सेवा का काम संभालना है।

क्या आप यीशु को एक सेवक के रूप में देखते हैं? क्या आप उसे अपने सेवक के रूप में देखते हैं, जो आपके लिए मरा? चूंकि उसने हमारे लिए ऐसा किया है, इसलिए उसके पास यह अधिकार है कि वह हमसे कहे कि हम उसके लिए अपना जीवन दे दें, उसके लिए अपना हर दिन हर पल उसके लिए जीकर उसके लिए मर कर। वह हमारे लिए मध्यस्थता करके, हमारी मदद करके और हमारी रक्षा करके, हमारी ज़रूरतें पूरी करके और हमें शैतान के विनाश से बचाकर हमारी सेवा कर रहा है। वह चाहता है कि हम इस जीवन में एक दूसरे की सेवा करके उसकी सेवा करें। चूंकि वह इसे करने के लिए अब यहाँ नहीं है, वह चाहता है कि यह कार्य हमारे द्वारा किया जाए। याद रखें, हर कोई किसी न किसी की सेवा करता है। यदि यह परमेश्वर की सेवा नहीं है, तो यह स्वयं की सेवा है, पाप के सेवा है या फिर शैतान की सेवा है। ईमानदारी से देखें, आप किसकी सेवा करते हैं? आपके कौन से कार्य कहते हैं कि आप सेवा करते हैं? आप कितने अच्छे सेवक हैं? अपनी सेवा को बेहतर बनाने के लिए अब आप क्या कर सकते हैं?

मरकुस की रूपरेखा



I. सेवक सेवा में अपना जीवन देता है (एक जीवित उदाहरण, 27-30 ईस्वी) 1-10

क- उद्धारकर्ता की लोगों से अलगपन 1:1-13

1. सेवक का भेजा जाना 1:1-8
2. सेवक का मुहरबंद होना 1:9-11
3. सेवक का पाप रहित होना 1:12-13

ख- सेवक की सेवा 1:14-10:52

1. सेवकों का सेवक 1:14-20
2. सेवक की श्रेष्ठता 1:21-3:12
3. सेवक के लोग 3:13-35

4. सेवक की कहानियाँ 4:1-34

5. सेवक की सर्वोच्चता 4:35-9:1

क-एक तूफ़ान पर 4:35-41

ख-राक्षसों पर 5:1-20

ग- बीमारी और मृत्यु पर 5:21-43

घ- अस्वीकरण 6:1-6 पर

ङ-12 लोगों पर 6:7-13

च- हेरोदेस पर 6:14-29

छ- भूख पर 6:30-44

ज- अकर्णशक्ति पर 6:45-52

झ- बीमारी पर 6:53-56

ञ- परंपरा पर 7:1-23

ट- अन्यजातियों पर 7:24-30

ठ- गूंगे और बहरेपन पर 7:31-37

ड- भुखमरी पर 8:1-9

ढ- फरीसियों पर 8:10-13

ण- पाप पर 8:14-21

त- अंधेपन पर 8:22-26

थ- ओवर पीटर 8:27-33

द- चेलों के जीवन पर 8:34-9:1

6. सेवक के बयान 9:2-50

7. सेवक के वचन 10:1-52

II. दास बलिदान में अपना जीवन देता है (एक मरने वाला उद्धारकर्ता, अंतिम सप्ताह ईस्वी सन् 30) 11-16

क- सेवक का बलिदान 11-15

1. सेवक की स्थिति 11:1-11

2. सेवक की फिटकार 11:12-19

3. सेवक के उपदेश 11:20-13:37

4. सेवक की पवित्रता 14:1-9

5. सेवक का बिकना 14:10-11

6. सेवक का समर्पण 14:12-52

क- अंतिम भोज की तैयारी 14:12-16

ख- अंतिम भोज में भाग लेना 14:17-21

ग- प्रभु भोज की स्थापना 14:22-25

घ- गतसमनी की और चलना 14:26-31

ङ- गतसमनी में प्रार्थना 14:32-42

च- विश्वासघात और गिरफ्तारी 14:43-52

7. सेवक की सजा 14:53-15:15

क- कैफा से पहले मसीह 14:53-65

ख- पतरस का इनकार 14:66-72

ग- पीलातुस के सामने मसीह 15:1-15

8. सेवक की पीड़ा 15:16-47

क- सैनिकों द्वारा दुर्व्यवहार 15:16-20

ख- यीशु का सलीब दिया जाना 15:21-32

ग- यीशु की मृत्यु 15:33-41

घ- यीशु का दफन किया जाना 15:42-47

ख- सेवक की संप्रभुता 16

1. सेवक का आश्चर्य 16:1-8

2. सेवक की सफलता 16:9-18

3. सेवक का बैठना 16:19-20

लुकाः
यीशु- मनुष्य



शीर्षक: लेखक के नाम पर

लेखक: लूका, एक गैर-यहूदी चिकित्सक

लेखन की तिथि: लगभग 60 ई

लेखन का स्थान: रोम

समय शामिल: मसीह का पूरा जीवन

प्राप्तकर्ता: थियोफिलस, उसके बाद हर कोई

मुख्य आयत: क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोई हुई वस्तुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।" (लूका 19:10)

मुख्य शब्द: "मनुष्य का पुत्र" (26 बार)

उद्देश्य: यीशु के बारे में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर थियोफिलस के विश्वास की पुष्टि करना (1:3-4)।

फिर यीशु को मनुष्य के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करने के लिए (यीशु की मानवता पर जोर दिया गया है)

जिसे इज़राइल ने अस्वीकार कर दिया (जिससे अन्यजातियों के प्रवेश के लिए द्वार खुल गया)।

विषय: इस तथ का सटीक विवरण देना कि यीशू पूर्ण रूप से ईश्वर-मनुष्य है।

बाइबल में यीशु के लिए सैकड़ों नामों का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन जो नाम उसने अपने लिए चुना वह "मनुष्य का पुत्र" था। इसका लूका में 27 बार प्रयोग किया जाता है। यदि यीशु ने स्वयं को "मसीहा" कहा होता, तो लोग यह सोचते कि वह एक मिलिट्री अगुवा होने का दावा कर रहा है, जो रोम के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए आया होगा, क्योंकि लोग यही सोचते थे, कि मसीहा ऐसा ही करेगा।

लूका ने यीशु को एक मनुष्य के रूप में दिखाने के लिए लिखा - शीर्षक "मनुष्य का पुत्र" दानियेल के दर्शन से आता है कि परमेश्वर-पुत्र भविष्य की घटनाओं को प्रकट करने के लिए आ रहा है (दानियेल 7:13; 8:17)। इसका उपयोग करना ईश्वरता के लिए एक स्पष्ट दावा तो है, लेकिन इसके साथ ही मनुष्य की पहचान भी है। यहूदी मुहावरे में " किसी का बेटा होना , " मतलब यह होता कि वे आपने पिता से कम नहीं है। बल्कि, इसका अर्थ है 'कि यह से संबंधित है , उसका हिस्सा है , उसका का विस्तार है ।' इस प्रकार, जब यीशु ने इसका इस्तेमाल किया, और लूका ने अपने सुसमाचार को इसके चारों ओर केंद्रित किया, तो दानियेल के नजरिये से परमेश्वर के साथ उसके संबंध को नहीं देखा गया था , बल्कि यीशु की मनुष्य के रूप में पहचान पर ध्यान केंद्रित किया गया था। : "मनुष्य का बेटा।" मसीहा को परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही होना था। जबकि यूहन्ना यीशु पर परमेश्वर के रूप में ध्यान केंद्रित करता है, लूका एक मनुष्य के रूप में उस पर ध्यान केंद्रित करता है।

लूका निश्चित रूप से यीशु के मानवीय पक्ष के बारे में लिखने वाला व्यक्ति था। एक डॉक्टर के रूप में, वह लोगों के शारीरिक पहलू के प्रति बहुत माहिर था। एक वैज्ञानिक के रूप में, लूका अपने विषय को बहुत ही अध्याशीलता, निष्पक्ष तरीके से देखता है। वह जिन चमत्कारों को शामिल करता है वे शारीरिक चंगाई के हैं, और वह अपने विवरण में काफी विशिष्ट है।

लूका के सुसमाचार में यीशु के जन्म, बचपन और घरेलू जीवन का पूरा विवरण है। वह यीशु के मानवीय पक्ष और भावनाओं को दिखाता है। सामाजिक संपर्कों और मानवीय संबंधों पर जोर दिया जाता है। उसके प्रार्थना जीवन पर जोर दिया जाता है। दबे कुचले और जरूरतमंद व्यक्तियों में उसकी रुचि भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह नए नियम की सबसे लंबी किताब है।

I. मनुष्य के पुत्र का आना (1:1-4:13) - लूका यीशु की मानवीय शुरुआत: जन्म और बचपन (1:1 - 2:59) का सबसे पूर्ण और विस्तृत विवरण देता है। बपतिस्मा लेने के द्वारा वह मानवता के साथ अपनी पहचान स्थापित कर रहा था और मनुष्य को पाप से पश्चाताप करने के लिए बुला रहा था (3:1-22)। जबकि मत्ती में यीशु की राजशाही /राजवंशीय वंशावली शामिल है, लूका आदम से लेकर मरियम के माध्यम से उसके मानवीय वंश होने को दर्ज करता है (3:23-38)। शैतान द्वारा उसे प्रलोभन में डालने से यह स्पष्ट होता है कि वह एक मनुष्य के रूप में प्रलोभन के अधीन था: जैसे भूख, दर्द, अकेलापन, घमण्ड, आदि। उसने एक मनुष्य के रूप में प्रलोभनों का सामना किया (4:1-13)।

II. मनुष्य के पुत्र का जीवन (4:14 - 9:50) - मसीहा होने का यीशु का पहला दावा नासरत में किया गया था, लेकिन वहाँ के लोग, जिन्होंने उसे वहाँ बड़े होते हुए देखा था, वे उसे केवल एक मनुष्य के रूप में देख सकते थे, परमेश्वर और मनुष्य के रूप में नहीं (4:14-30)। यह साबित करने के लिए कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं था, यीशु ने अपना अधिकार दिखाने के लिए चमत्कार किए। उसके पास राक्षसों पर, बीमारीयों पर, शिष्यों पर, अशुद्धता पर और विकृति पर अधिकार था (4:31 - 6:11)।

यीशु, अपने संदेश के अनुसार जीवन जीकर, अनुयायियों, पुरुषों और महिलाओं के एक मजबूत समूह को आकर्षित कर रहा था जो उसके जैसा जीवन जीना चाहते थे। हमें यह दिखाने के लिए कि पृथ्वी पर जीवन कैसे जीना है, यह एक कारण है कि वह मनुष्य बना: (6:12-49)। एक मनुष्य के रूप में उसने अन्य लोगों की परवाह की और उन्हें चंगा करने और खिलाने के द्वारा अपनी करुणा दिखाई (7:1 - 9:50)। फिर उसे यह दिखाने के लिए रूपान्तरित किया गया कि वह एक मात्र मनुष्य होने से बढकर है।

III. मनुष्य के पुत्र का संघर्ष (9:51 - 19:27) जबकि लोग यीशु द्वारा प्रदान की गयी चंगाई औरखिलाए गए मुफ्त भोजन लेने के लिए तो तेज थे, लेकिन वे उसकी जीवन शैली का पालन नहीं करना चाहते थे (9:51 - 11:54)। जिन्होंने ऐसा किया, उसने उन्हें सिखाया कि जैसे परमेश्वर चाहता है उन्हें वह जीवन कैसे जीना है (12:1 - 19:27)। उसने पाखंड/ढोंग के खिलाफ चेतावनी दी, प्रेम और उद्धार के बारे में सिखाया, यहां तक कि अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में भी चेतावनी दी।

IV. मनुष्य के पुत्र का क्रूस पर चढ़ना (19:28 - 23:56)- उसकी मृत्यु ठीक वही है जो आगे घटित हुई। जब उसने स्वयं को ईश्वर-मनुष्य मसीहा के रूप में प्रस्तुत किया, तो अधिकांश ने उसे अस्वीकार

कर दिया। वह जोर जोर से रोने लगा क्योंकि उसका दिल इस बात पर टूट रहा था कि यरूशलेम द्वारा उसे अस्वीकार करने येरूशलेम के लिए का क्या अर्थ होगा, उसने यह दिखाया कि वह जानता है कि हम क्या महसूस करते हैं और किस स्थिति से होकर गुजरते हैं (19:28-44)। उसने अन्य भावनाएँ भी दिखाई - जैसे क्रोध, जब उसने मंदिर को शुद्ध किया (19:45-48)। प्रभु भोज में उसने मानवीय साहचर्य की आवश्यकता दिखाई जब वह अकेला होगा (22:7-38)। गतसमनी में उसने भावनात्मक पीड़ा का अनुभव किया (22:39-46), जैसा कि उसने तब किया जब अनुचित मुकदमे की कारवाई के दौरान उसका मजाक उड़ाया गया (22:47-53)। पतरस द्वारा किये गए इन्कार ने भी उसे चोट पहुँचाई (22:54-62)। जब उन्होंने उसे पीटा और क्रूस पर चढ़ाया तो उसने अत्यधिक शारीरिक पीड़ा का अनुभव किया (22:63 - 23:49)। वह मनुष्य के रूप में मरा और गाड़ा गया (23:50-56)।

V. मनुष्य के पुत्र की उचाई (24:1-53) परन्तु वह इसका अंत नहीं था। वह शारीरिक रूप से फिर से जीवित हो गया, यह दिखाते हुए कि उसके सभी अनुयाई भी ऐसा ही होंगे (24:1-49)। उसके पास यह एक नया पुनरुत्थान वाला शरीर था जिसने उसके सांसारिक, मानव शरीर को बदल दिया था।

एक मनुष्य के रूप में यीशु के बारे में सोचना आपको कैसा लगता है: उसका अपने आप को हममें से एक होने के लिए दीन करना क्योंकि वह हमसे प्यार करता था, उसका हमारे अनुसरण के लिए एक उदाहरण स्थापित करना, हमें अनुसरण करने के लिए परमेश्वर का सिद्ध स्तर दिखाना, और हमारे पापों के लिए भुगतान करना- मतलब सलीब पर चढ़ना? वह जानता है कि जब हम परीक्षा में होते हैं, अकेले होते हैं, क्रोधित होते हैं, दर्द में होते हैं या तनाव में होते हैं तो हम किस स्थिति से होकर गुजर रहे होते हैं। वह समझता है। वह उस स्थिति में रहा है। उसके पास जाओ और वह सब समझ जाएगा।

लूका की रूपरेखा

I. मनुष्य के पुत्र का आना (तैयारी) 1-4:13

- क- मनुष्य के पुत्र का मौसैरा भाई (यूहन्ना का जन्म) 1:5-80
- ख- मनुष्य के पुत्र का पालना/झुला (यीशु का जन्म) 2:1-38
- ग- मनुष्य के पुत्र का बचपन (यीशु बड़ा हुआ) 2:39-52
- घ- मनुष्य के पुत्र की बुलाहट 3:1-22
- ङ-मनुष्य के पुत्र का इतिहास (वंशावली) 3:23-38
- च. मनुष्य के पुत्र की चुनौती (प्रलोभन) 4:1-13

II. मनुष्य के पुत्र का व्यवसायक जीवन (पहचान) 4:14-9:50

- क- मनुष्य के पुत्र का अंगीकार 4:14-30
- ख- मनुष्य के पुत्र की विजय 4:31-6:11
 - 1. राक्षसों पर 4:31-37
 - 2. बिमारियों पर 4:38-44
 - 3. शिष्यों पर 5:1-11
 - 4. अपवित्रता पर 5:12-16
 - 5. दोषों पर 5:17-26
 - 6. निंदकों पर 5:27-39

7. दिनों पर 6:1-5
8. मांदगी पर 6:6-11
- ग- मनुष्य के पुत्र के साथी 6:12-49
 1. शिष्यों की बुलाहट 6:12-16
 2. शिष्यों के लक्षण 6:17-49
- घ- मनुष्य के पुत्र की करुणा 7:1-9:50
 1. बीमारी में 7:1-10
 2. मृत्यु में 7:11-17
 3. शक में 7:18-35
 4. पापियों को 7:36-50
 5. वित्त के बारे 8:1-3
 6. दृष्टांत के माध्यम से दिखाया गया है 8:4-21
 7. तूफान में 8:22-25
 8. राक्षसों पर 8:26-39
 9. मृत्यु और निराशा में 8:40-56
 10. चेलों के माध्यम से 9:1-9
 11. भौतिक आवश्यकताओं के लिए 9:10-17
 12. भविष्यवाणी के 9:18-50

III. मनुष्य के पुत्र का संघर्ष (निर्देश) 9:51-19:27

- क- मनुष्य के पुत्र की आलोचना 9:51-62
- ख- मनुष्य के पुत्र द्वारा अधिकार 10:1-24
- ग- मनुष्य के पुत्र की पुष्टि 10:25-11:13
- घ - मनुष्य के पुत्र की निंदा 11:14-54
 1. राष्ट्र द्वारा अस्वीकृति 11:14-36
 2. धार्मिक अगुओं द्वारा अस्वीकृत 11:37-54
- ङ- मनुष्य के पुत्र द्वारा संचार 12:1-19:27
 1. कपट के बारे में 12:1-12
 2. लोभ के बारे में 12:13-34
 3. विश्वासयोग्यता के बारे में 12:35-48
 4. विभाजन और चिह्नों के बारे में 12:49-59
 5. पश्चाताप के बारे में 13:1-9
 6. कपट के बारे में 13:10-17
 7. राज्य के बारे में 13:18-35
 8. गैर लचीले लोगों के बारे में 14:1-6
 9. फूले हुए लोगों के बारे में 14:7-11
 10. आमंत्रित लोगों के बारे में 14:12-14
 11. असमान्य लोगों के बारे में 14:15-24
 12. आयाश लोगों के बारे में 14:25-35
 13. पापी लोगों के लिए प्रेम के बारे में 15:1-32

14. दौलत के बारे में 16:1-31
15. क्षमा के बारे में 17:1-6
16. सेवा के बारे में 17:7-10
17. आभार व्यक्त करने के बारे में 17:11-19
18. राज्य के बारे में 17:20-37
19. प्रार्थना के बारे में 18:1-4
20. राज्य में प्रवेश के बारे में 18:15-30
21. उसकी मृत्यु के बारे में 18:31-34
22. उद्धार के बारे में 18:35-19:10
23. विश्वासयोग्यता 19:11-27 के बारे में

IV. मनुष्य के पुत्र का सलीब दिया जाना (बलिदान) 19:28-23:56

क- मनुष्य के पुत्र की ताजपोशी 19:28-44

ख- मनुष्य के पुत्र के साथ मुकाबला 19:45-22:6

1. मंदिर की सफाई 19:45-48
2. मंदिर में शिक्षण 20:1-21:38
3. यहूदा शैतान के वश में 22:1-6

ग- मनुष्य के पुत्र की संगती /प्रभु भोज 22:7-3:8

घ- मनुष्य के पुत्र की ताड़ना 22:39-23:25

1. गतसमनी 22:39-46
2. गिरफ्तारी 22:47-53
3. पतरस का इनकार 22:54-62
4. मसीह का पीटा गया 22:63-65
5. मसीह महासभा के सामने 22:66-71
6. मसीह पीलातुस के सामने 23:1-5
7. मसीह हेरोदेस के सामने 23:6-12
8. मसीह दूसरी बार पीलातुस के सामने 23:13-25

ङ- मनुष्य के पुत्र की सलीब 23:26-56

1. सलीब पर चढ़ाना 23:26-49
2. दफनाया जाना 23:50-55
3. कब्र में 23:56



V. मनुष्य के पुत्र का उँचाई (विजय) 24:1-53

क- मनुष्य के पुत्र में परिवर्तन 24:1-49

ख- मनुष्य के पुत्र का समाप्ति 24:50-53

यहुन्ना :
यीशु -परमेश्वर का पुत्र



शीर्षक: लेखक के नाम पर जिसने इसे लिखा

लेखक: यूहन्ना, यीशु का प्रिय शिष्य

लेखन की तिथि: लगभग 80-90 ई

लेखन का स्थान: इफिसुस

शामिल समय: यीशु का जीवन

प्राप्तकर्ता: विश्वासी

मुख्य आयत: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए"। (यूहन्ना 3:16)

मुख्य शब्द: "पिता" (121); "दुनिया" (78); "विश्वास" (98), "प्यार" (57); "जीवन" (52); "बेटा" (42)

उद्देश्य: मत्ती, मरकुस और ल्यूक में दर्ज जानकारी सहित यीशु के जीवन का एक लिखित विवरण जोड़ना।

विषय: यह दिखाने के लिए कि यीशू परमेश्वर है, दुनिया का उद्धारकर्ता हैं।

मत्ती द्वारा यीशु को मसीहा के रूप में दिखाने के लिए यहूदियों को लिखे जाने के वर्षों बाद, यीशु को मनुष्य के रूप में दिखाने के लिए अन्यजातियों को मरकुस द्वारा लिखे जाने के बाद, और लूका द्वारा यीशू को एक मनुष्य के रूप में दिखाने के लिए लिखे जाने के बाद, यहून्ना ने लिखा और ऐसी जानकारी जोड़ी जो दूसरों द्वारा प्रस्तुत नहीं की गई थी। यदि उसने ऐसा नहीं किया होता, तो यीशु के सांसारिक जीवन के बारे में हमारा ज्ञान मात्रा और गुणवत्ता दोनों में बहुत कम और कमजोर होता।

यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर के रूप में दिखाने के लिए लिखा- यूहन्ना, सुसमाचार लिखने के लिए सबसे पूर्ण व्यक्ति था, क्योंकि वह करीबी तीन लोगों में से एक था, और शायद पृथ्वी पर यीशु के सबसे निकट था, क्योंकि उसे "वह शिष्य कहा जाता था, जिसे यीशु प्यार करता था"। यह जानते हुए कि हर कोई यहून्ना को उस उलेख से पहचान लेगा, इसका मतलब यह है कि वे बहुत करीब रहे होंगे। इसी लिए यूहन्ना यीशु के जीवन पर एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान कर सकता था। मत्ती, मरकुस और लूका को समदर्शी सुसमाचार कहा जाता है क्योंकि उनमें लगभग एक जैसी सूचना मिलती है। जबकि यहून्ना में 92% नई सूचना है। यूहन्ना का ध्यान केन्द्रित यह दिखाने पर है कि यीशु परमेश्वर है। छह बार उसे "मनुष्य का पुत्र" कहा जाता है।

I. परमेश्वर के पुत्र की ईश्वरीयत्व (1:1-18) यूहन्ना यीशु की स्वर्गिय वंशावली के साथ शुरू करता है, यह दिखाते हुए कि वह हमेशा परमेश्वर था और दुनिया के निर्माण से पहले परमेश्वर के साथ था। वास्तव में, यूहन्ना कहता है कि उसने संसार की रचना की, फिर परमेश्वर के संदेश के साथ हम तक पहुँचने और हमारे पाप के लिए मरने के लिए मनुष्य बन गया। लूका यीशु की मनुष्यत्व को ("मनुष्य का पुत्र") दिखाता है और यूहन्ना उसके ईश्वरीयत्व को ("परमेश्वर का पुत्र") दिखाता है। ये शुरूआती आयतें पूरी किताब का सारांश देते हैं। फिर वह विस्तार करता है और विवरण डालता है जो इस बात को दिखाता है कि यीशु वास्तव में परमेश्वर था।

II. परमेश्वर के पुत्र के साथ बहस (1:19 - 12:50)- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा (1:19-51) और पानी को दाखमधु में बदलना वाले चमत्कार (2:1-11), और मंदिर की शुद्धिकर्ण (2:12-25) के द्वारा यीशु को परमेश्वर दिखाया गया है (1:19-51)। उसने स्वयं को नीकुदेमुस (3:1-21), एक सामरी स्त्री (4:1-42), और कफरनहूम के एक रईस व्यक्ति (4:43-45) के सामने प्रकट किया। हालांकि, हर किसी ने, उसके ईश्वरीय होने के दावों पर विश्वास नहीं किया था। आश्चर्यकर्मों के बावजूद धार्मिक शासकों ने अविश्वास किया (5:1-47)। जब लोगों ने पाया कि वह उनकी आवश्यकताओं की प्रतीक्षा करने के लिए वहाँ नहीं है, तो वे भी उससे मुड़ गए (6:1-71)। इसके बाद यूहन्ना यीशु और धार्मिक शासकों के बीच बहस की एक श्रृंखला को दिखाता है (7:1 - 12:11), सभी विभिन्न तरीकों से दिखाते हैं कि यीशु परमेश्वर था। यह खंड यीशु के विजयी प्रवेश (12:12-50) द्वारा उसके परमेश्वर-मनुष्य मसीहा होने के दावे के साथ समाप्त होता है।

III. परमेश्वर के पुत्र के कानून /आदेश/फैसले (13:1 - 17:26) यूहन्ना अपने आधे सुसमाचार को यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में विस्तार से जानकारी देने के लिए उपयोग करता है। वह पृथ्वी पर उसके अंतिम भोजन के दौरान यीशु की शिक्षाओं के विस्तृत विवरण के साथ आरंभ करता है (13:1 - 16:33)। उसने भविष्य की भविष्यवाणी की आगे क्या होगा, फिर उसने अपने अनुयायियों के लिए प्रार्थना की (17:1-20) जैसे वह अभी भी हमारे लिए प्रार्थना करता है।

IV. परमेश्वर के पुत्र का इनकार (18:1 - 19:42) -हालाँकि उसके पास प्रतिरोध करने की शक्ति थी, फिर भी यीशु ने अधिकारियों को उसे गिरफ्तार करने दिया (18:1-11) और उसे अपमानजनक करवाई की एक श्रृंखला के माध्यम से निकलने दिया (18:12 - 19:16), जो सलीब पर उसकी मृत्यु का नतीजा बना (19:17-42)। यहाँ तक कि यह उसके ईश्वरत्व को दर्शाता है कि उसने हमारे पापों का भुगतान किया और पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की।

V. परमेश्वर के पुत्र का भाग्य (20:1 - 21:25)- निश्चित रूप से, यीशु परमेश्वर है, इसका अंतिम प्रमाण उसका पुनरुत्थान है (20:1 - 21:25)। यह, अंत पूरी तरह से दिखाता है कि वह कौन है। यह कहा गया है कि यीशु या तो परमेश्वर है, या झूठ का दीवाना हैं। इतनी बार परमेश्वर होने का दावा करने के बाद, कोई रास्ता नहीं है कि वह सिर्फ एक अच्छा शिक्षक और अच्छा उदाहरण ही हो सकता है। यदि कोई बार-बार ईश्वर होने का दावा करता है, हमेशा अस्तित्व में है और पाप को क्षमा करने में सक्षम है, तो वह या तो पागल (दीवाना), झूठ बोल रहा है (झूठा) है या वह जो (परमेश्वर) होने का दावा करता है। आपकी समझते हैं, मानते हैं एंड विश्वास करते हैं ?

यूहन्ना की रूपरेखा

I. परमेश्वर के पुत्र का ईश्वरीयत्व (आ रहा है) 1:1-18

II. परमेश्वर के पुत्र के साथ बहस (मुकाबला) 1:19-12:50

क- परमेश्वर के पुत्र का प्रदर्शन 1:19-4:54

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा 1:19-34
2. यूहन्ना के चेलों को 1:35-51
3. काना में एक शादी समारोह के दौरान 2:1-11
4. मन्दिर में 2:12-25
5. नीकुदेमुस के लिए 3:1-21
6. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा 3:22-36
7. सामरी स्त्री के लिए 4:1-42
8. कफरनहूम के एक अधिकारी के लिए 4:43-54

ख- परमेश्वर के पुत्र के साथ झगड़ा 5:1-12:50

1. यरूशलेम में एक पर्व के दौरान 5:1-47
2. गलील में फसह के समय 6:1-71
3. तम्बू के पर्व पर 7:1-10:21
4. अर्पण के पर्व पर 10:22-42
5. बेथनी में 11:1-12:11
6. यरूशलेम में 12:12-50

III. परमेश्वर के कानून/फैसले/फरमान (आराम) 13:1-17:26

क- परमेश्वर के पुत्र द्वारा घोषणाएं 13:1-16:33

1. क्षमा के बारे में 13:1-20
2. उसके विश्वासघात के बारे में 13:21-30
3. उसके चले जाने के बारे में 13:31-38
4. स्वर्ग के बारे में 14:1-14
5. पवित्र आत्मा के बारे में 14:15-26
6. शांति के बारे में 14:27-31
7. फलदायी होने के बारे में 15:1-17
8. दुनिया के बारे में 15:18-16:6
9. पवित्र आत्मा के बारे में 16:7-15
10. उसकी वापसी के बारे में 16:16-33

ख- परमेश्वर के पुत्र का स्पष्ट विचार 17:1-26

IV. परमेश्वर के पुत्र का इनकार (क्रूस पर चढ़ाना) 18:1-19:42

क- परमेश्वर के पुत्र के बारे में निर्णय 18:1-11

ख- परमेश्वर के पुत्र की गिरावट 18:12-19:16

1. हन्ना के सामने 18:12-23

2. कैफा के सामने 18:24-27
3. पीलातुस के सामने 18:28-19:16
- ग -परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु 19:17-42
 1. सलीब पर चढ़ाया जाना 19:17-37
 2. दफन किया जाना 19:38-42

v. परमेश्वर के पुत्र की भाग्य (पुनरुत्थान) 20:11-21:25

- क- परमेश्वर के पुत्र का प्रसव 20:1-10
- ख- परमेश्वर के पुत्र का रक्षा पक्ष 20:11-21:25
1. मरियम मगदलीनी के सामने 20:11-18
 2. चेलों के सामने (थोमा को छोड़) 20:19-25
 3. चेलों के सामने (थोमा के साथ) 20:26-31
 4. सात चेलों के सामने 21:1-14
 5. पतरस और यूहन्ना के सामने 21:15-25

यहून्ना में सात बार "मैं हूँ"

1. "मैं जीवन की रोटी हूँ": (6:35)
2. "मैं जगत की ज्योति हूँ" (8:12)
3. "मैं भेड़शाला का द्वार हूँ" (10:7, 9)
4. "मैं अच्छा चरवाहा हूँ" (10:11, 14)
5. "मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ" (11:25)
6. "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ" (14:6)
7. "मैं सच्ची दाखलता हूँ" (15:1, 5)



मत्ती, मरकुस, लूका, यहून्ना :
आपसी तुलना के रूप में और विपरीत रूप में

मत्ती, मरकुस, लूका, यहून्ना। उनके नाम हमारे लिए बहुत परिचित हैं। वे ठीक उसी क्रम में, हमारे दिमाग में एक साथ फिट बैठते हैं। हम उनसे इतने परिचित हैं कि हम उन्हें आँखे बंद करके मान लेते हैं। लेकिन फिलिपस, पतरस और पौलूस क्यों नहीं ? या सिर्फ इन्द्रिरस क्यों नहीं ? चार सुसमाचार ही क्यों? यही चार क्यों? आखिरकार नया नियम ही क्यों? सुसमाचारों की सही व्याख्या करने में सक्षम होने के लिए इन प्रश्नों के उत्तर जानना बहुत महत्वपूर्ण है। जवाब काफी दिलचस्प हैं।

एक नया नियम क्यों? -परमेश्वर के दृष्टिकोण से, नया नियम पुराने नियम के अधूरे प्रकाशन को पूरा करने के लिए था (इब्रानियों 1:1-2; यिर्मयाह 31:31-34; मल 3:1), पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति दिखाने के लिए (लूका 4: 21; यूहन्ना 13:18; 17:12; प्रेरितों के काम 1:16), उद्धार का मार्ग पूरी तरह से प्रस्तुत करने के लिए (यूहन्ना 20:31) और परमेश्वर के लोगों को उसके लिए जीने के लिए सभी आवश्यक जानकारी देने के लिए आया था (यूहन्ना 4:25; 17) :8; 16:12-13; मत्ती 16:18; इफिसियों 5:23-32)। मनुष्य के दृष्टिकोण से, यह पृथ्वी पर यीशु के जीवन का एक स्पष्ट और सटीक विवरण रखने के लिए लिखा गया था। क्योंकि चश्मदीद गवाह मर रहे थे और विधर्म बढ़ रहे थे और झूठी शिक्षाएँ फैला रहे थे। साथ ही, मसीही धर्म फैल रहा था और विस्ता हो रहा था, और सत्य को दूर दूर तक ले जाने का सबसे अच्छा तरीका था इसका लिखित रूप में होना।

पहले सुसमाचार क्यों? - पुराना नियम आने वाले उद्धारकर्ता के बारे की गयी प्रतिज्ञाओं और भविष्यवाणियों को दर्शाता है और यह भी कि उसके आने की आवश्यकता क्यों है। सुसमाचार दिखाते हैं कि यीशु ने उन भविष्यवाणियों को पूरा किया और मनुष्य की ज़रूरतों को पूरा किया। प्रेरितों के काम में मसीहा के आने के परिणाम दिखाए जाते हैं। पत्रियाँ इसमें मसीहा की शिक्षा के साथ साथ उसके कार्य और उनके परिणाम के बारे अतिरिक्त जानकारी जोड़ती हैं और यह कि हमारे दैनिक जीवन पर यह सब कैसे लागू होता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सभी चीजों की अंतिम नतीजे को दिखाती है, जब सभी भविष्यवाणियाँ पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा दाऊद के सिंहासन पर बैठने से पूरी होती हैं।

एक से अधिक सुसमाचार क्यों? -विभिन्न लोगों ने यीशु को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा। उन्होंने अलग - अलग तरह के लोगों के लिए लिखा। कई लेखक यह पुष्टि करने में मदद करते हैं कि दूसरे क्या कहते हैं, और वे एक दूसरे के विवरणों पर प्रकाश डालते हैं।

चार सुसमाचार क्यों? -कानून को 2 गवाहों की गवाही की आवश्यकता थी (व्याख्या 19:15; मत्ती 18:16) । इस महत्वपूर्ण बात के लिए सही यहाँ गवाहों की संख्या से दुगनी हो जाती है। इसके अलावा, बाइबल में और यहूदियों के लिए नंबर चार सांसारिक पूर्णता के लिए मना जाता है: कम्पास पर चार मौसम की दिशाएँ, एक इमारत में चार दीवारें, चंद्रमा के चार चरण, आदि। इसके साथ ही मत्ती, मरकुस, लूका और यहून्ना धरती पर यीशु के जीवन की पूर्णता को दिखाते हैं।

ये चार सुसमाचार क्यों? - वास्तव में कई अन्य सुसमाचार यीशु के संदेश को फैलाने में मदद करने के लिए लिखे गए थे, लेकिन नए नियम में शामिल नहीं हैं। जो चार शामिल हैं यह वे थे जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं चुना था। उसने उन्हें प्रेरित किया और उन्हें हमारे लिए परिपूर्ण रखा।

कौन सा सुसमाचार सबसे पहले लिखा गया था? -अधिकांश विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पतरस के संदेश को ट्रेक्ट के रूप में दर्ज करते हुए, मरकुस ने सबसे पहले लिखा। लगभग 10 साल बाद, 60 के दशक में, मत्ती और लूका ने लिखा। उनके पास मरकुस का सुसमाचार था और उसने जो कुछ लिखा

था उन्होंने उस का विस्तार किया। फिर, 20 साल बाद, यूहन्ना ने यीशु के ईश्वरत्व पर ध्यान केंद्रित करते हुए उसमें जो उन्होंने लिखा था बाहुत सी नई सामग्री को जोड़ते हुए आपने लेखन को पूरा किया।

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की तुलना किस के साथ होती है? - मत्ती, मरकुस और लूका को 'समदर्शी' सुसमाचार कहा जाता है क्योंकि उनमें बहुत कुछ 'पर्यायवाची' समानता रखते हैं। वे सभी वस्तुतः समान घटनाओं को शामिल करते हैं। हालाँकि, यूहन्ना में लगभग सभी (92%) नई सामग्री शामिल है जिसे उन्होंने कवर नहीं किया था। समदर्शी सुसमाचार एक व्यक्ति के रूप में उनके बारे में तथ्य देते हुए, यीशु के बाहरी जीवन पर संक्षिप्त ध्यान केन्द्रित करते हैं। यूहन्ना गहराई में जाता है और यीशु को परमेश्वर के रूप में दिखाने/पेश करने पर ध्यान केंद्रित करता है। मत्ती का ध्यान यीशु के प्रति भविष्यवाणी किया हुआ पराक्रमी राजा है। मरकुस उसे आज्ञाकारी, दीन सेवक के रूप में दिखाता है। लूका उसे पूर्ण, आदर्श मनुष्य के रूप में चित्रित करता है। मत्ती ने यहूदियों को यह विश्वास दिलाने के लिए लिखता है कि यीशु ही मसीहा है (1:1; 23:37-39), मरकुस अन्यजातियों में सुसमाचार फैलाने के लिए (10:45), लूका उसके सांसारिक जीवन का सटीक इतिहास देने के लिए (10:10)) और यूहन्ना विश्वासियों को परमेश्वर के रूप में यीशु की शक्ति में भरोसा करके बढ़ने में मदद करने के लिए लिखता है (3:16)।

मत्ती पहले क्यों आता है? -चूँकि मरकुस तो पहले लिखा गया था, फिर मत्ती को पहले क्यों रखा गया है? अधिकारिक रूप से, मत्ती पुराने नियम को नए नियम के साथ यह दिखाते हुए जोड़ता है कि नासरत के यीशु ने भविष्यवाणियों को पूरा किया है और वास्तव में, वह ही वादा किया हुआ मसीहा है। मरकुस यहूदी धर्म बाहर चला जाता है, लेकिन पूरी तरह से नहीं। लूका मसीह को अन्यजातियों के उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है। यूहन्ना तब एक मजबूत, स्पष्ट घोषणा के साथ समाप्त करता है कि यीशु सार रूप में परमेश्वर है, जो समस्त मानव जाति का उद्धारकर्ता है।

यह विशेष रूप से कैसे लागू होता है? -विजयी प्रवेश यीशु के जीवन की बहुत कम घटनाओं में से एक है जिसका चारों सुसमाचारों में शामिल है। यह इतना महत्वपूर्ण और इतना निर्णायक था कि प्रत्येक को इसे शामिल करना पड़ा। हम इसे उनके विभिन्न दृष्टिकोणों और उद्देश्यों के उदाहरण के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इससे पता चलता है कि क्यों सुसमाचारों में भिन्नताओं को समझना इतना महत्वपूर्ण है।

मत्ती ने इसे 15 आयते (21:1-11, 14-17), मरकुस ने 11 आयते (11:1-11), लूका ने 16 आयते (19:29-44) और यूहन्ना ने 8 आयते (12:12-19) दी हैं। मरकुस एक संक्षिप्त विवरण के रूप में पहले लिखता है , और यीशु को एक विनम्र सेवक के रूप में दिखाता है स्वयं को उपलब्ध कराता है, लेकिन स्वयं को इजराइल में धकेलता नहीं है। मत्ती, जो मरकुस की कहानी में अधिक विवरण जोड़ता है, तीन भविष्यवाणियों के इर्द-गिर्द अपने विवरण की संरचना करता है जिसे मसीह ने उस समय पूरा किया था (जकर्याह 9:9; भजन संहिता 118:26; 8:2), उन्हें उद्धृत करते हुए और अपने यहूदी पाठकों को दिखाते हुए कि कैसे यह इस तथ को और अधिक प्रमाणित करता है कि यीशु ही मसीहा है। लूका भी मरकुस के विवरण पर विस्तार करता है। डॉक्टर लूका यीशु के मनुष्य होने के रूप में ध्यान केंद्रित करता है , हमारे जैसा एक मनुष्य, लेकिन एक वह मनुष्य जो परमेश्वर भी था। वह दर्ज करता है कि यीशु रोया (41) एक आदमी के रूप में लेकिन भविष्य की भविष्यवाणी भी की (43) परमेश्वर के रूप में। केवल लूका ही यह दर्ज करता है जब धार्मिक शासक उसे आपने शिष्यों (39) को रोकने के लिए मनुष्य यीशु को चुनौती देते हैं (39) उसके साथ-साथ यीशु की प्रतिक्रिया को भी दर्ज करता है कि अगर वे चुप रहेंगे तो पत्थर चिल्लाएंगे (40) क्योंकि वे उसे मसीहा घोषित कर रहे हैं - ईश्वर और मनुष्य दोनों एक ही में। यूहन्ना, अंत

में लिखते हुए, उन विवरणों को नहीं दोहराता है जिसे दूसरे पहले ही दर्ज कर चुके हैं, लेकिन अपने विषय के अनुसार, यह दिखाता है कि यीशू ही परमेश्वर है। वह उसके पुनरूत्थान (16) और आश्चर्यकर्मों को जो वह कर रहा था (18) उनका उल्लेख करता है।

इसी लिए चारों सुसमाचारों के लेखन के इतिहास को उनकी सटीक व्याख्या करने के लिए इन्हें समझना महत्वपूर्ण है। यह सच है कि सारा पवित्रशास्त्र हमारे लिए प्रेरित और महत्वपूर्ण है (2 तीमुथियुस 3:16)। परमेश्वर का वचन इतना विशेष, इतना महत्वपूर्ण, इतना सटीक, इतना अद्भुत और इतना जीवन देने वाला है कि हमें इसमें जितना हो सके खुद को डुबो लेना चाहिए। आज कुछ समय बाइबिल में बिताएं।



यीशु के जीवन का कालक्रम
कालानुक्रमिक क्रम में यीशु के जीवन की प्रमुख घटनाओं की सूची नीचे दी गई है।

घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यहून्ना	स्थान

वंशावलीया	1:1-17		3:23-38	1:1-18	
5 ई. पू. to 26 ईस्वी					
यहुन्ना के जन्म की घोषणा			1:5-25		येरूशलेम
यीशू के जन्म की घोषणा	1:18-25		1:26-38		नासरत
मरीयम एलिशबा को मिलने जाती है			1:39-56		यहूदा के पहाड़
यहुन्ना का जन्म			1:57-80		यहूदा के पहाड़
यीशू का जन्म			2:1-12		बेत्लहम
ज्ञानी पुरुषों का आना	2:1-22				बेत्लहम
मिस्र के लिए पलायन			2:13-22		मिस्र
यीशू का बचपन	2:23		2:22-40		नासरत
मंदिर में जाना			2:41-52		येरूशलेम
26 ईस्वी का पतन					
यहुन्ना मार्ग तयार करता है	3:1-12	1:1-8	3:1-20		यार्दन नदी
यीशू अपनी सेवकाई शुरू करता है	1:1-17; 3:13-17	1:9-11	3:21-38	1:19-34	यार्दन नदी
यीशू की परीक्षाएं	4:1-11	1:12-13	4:1-13		यहूदा के पहाड़
27 ईस्वी का पतझड़					
पहले शिष्य				1:35-51	यहूदा के पहाड़
पहला चमत्कार				2:1-11	काना
काफ़नाहूम में सेवकाई				2:12	काफ़नाहूम
27 ईस्वी की गर्मिया					
1 st पसह, मंदिर , निकोदिम्स				2:13-3:21	येरूशलेम
यहूदिया में प्रारम्भिक सेवकाई				3:22-36	यहूदा
27 ईस्वी का पतन					
सामरी स्त्री				4:1-42	सामरी
गालील में प्रारम्भिक सेवकाई	4:17	1:14-15	4:14-15	4:43-45	गालील
रईस के पुत्र को चंगा करना				4:46-54	काना
28 ईस्वी का पतझड़					
नासरत में प्रचार करना			4:16-30		नासरत
काफ़नाहूम में शिक्षण , चमत्कार	4:12-17; 8:14-17	1:21-45	4:31-5:7		काफ़नाहूम
शिष्यों का बुलाना (चार का)	4:18-22	1:16-20	5:8-11		गालील सागर
चंगाई और छुटकारा		1:21-45	4:31-5:16		काफ़नाहूम
चंगाई , मत्ती को बुलाना	9:1-17	2:1-22	5:17-39		काफ़नाहूम

28 ईस्वी की गर्मिया					

2 पसह, चंगाई				5:1-47	येरूशलेम
सब्ब की विरोधता	12:1-14	2:23-3:6	6:1-11		गलील
बहुनों को चंगा करना	12:15-21;4:23-25	3:7-12	6:17-19		हतीन के सींग
12 शिष्यों का चुनाव	10:2-4	3:13-19a	6:12-16		हतीन के सींग
पहाड़ी उपदेश	5:1-7:29		6:20-49		हतीन के सींग
सूबेदार का सेवक	8:5-13		7:1-10		काफ़नाहूम
नैन की विधवा का पुत्र			7:11-17		नैन
यहुन्ना बपतिस्मा देने वाले का संदेश	11:2-30		7:18-35		गलील
यीशू का अभिषेक			7:36-50		गलील
शिष्यों के साथ गलील का दौरा			8:1-3		गलील
शस्त्रिओ और फरिसिओं चनौती	12:22-45	3:19b-30			गलील
28 ईस्वी का पतन					
सागर के किनारे शिक्षण	12:46-13:53	3:31-4:34	8:4-21		गलील का सागर
सागर के किनारे चमत्कार	8:23-9:26	4:35-5:43	8:22-56		गलील का सागर
घूगे बहरे मन्थ्य का चंगा होना	9:27-34				काफ़नाहूम
29 ईस्वी की पतझड़					
नासरत में दूसरी बार अस्वीकृति	9:35; 13:54-58	6:1-6			नासरत
शिष्यों को अधिकार	9:36-11:1	6:7-13	9:1-6		गलील
यहुन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु	14:1-12	6:14-29	9:7-9		मन्नस
29 ईस्वी की गर्मिया					
यीशू 5,000 को खिलाता है	14:13-23	6:30-46	9:10-17	6:1-15	गलील का सागर
यीशू पानी पर चलता है	14:24-36	6:47-56		6:16-21	गलील का सागर
जीवन की रोटी				6:22-71	काफ़नाहूम
बिना हाथ धुले खाना खाते हैं	15:1-20	7:1-23			काफ़नाहूम
घूंगी -बहरी लड़की चंगाई पाती है	15:21-31	7:24-37			फोनीशिया
यीशू 4,000 को खिलाता है	15:32-38	8:1-9			देकपोलिश
चिन्हों की मांग	15:39-16:12	8:10-21			मगदान
अंधा मनुष्य चंगाई पाता है		8:22-26			बैथसैदा
पतरस यीशू का इकरार करता है	16:13-20	8:27-30	9:18-21		मत्ती हर्मून
मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्याणी	16:21-28	8:31-9:1	9:22-27		मत्ती हर्मून
रूपांतरण	17:1-13	9:2-13	9:28-36		मत्ती हर्मून
दनाव्रस्त लड़का	17:14-20	9:14-29	9:37-43a		मत्ती हर्मून
मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्याणी	17:22-23	9:30-32	9:43b-45		गलील
करो का भुगतान	17:24-27	9:33a			काफ़नाहूम
नम्रता पर बातचीत , क्षमा	18:1-35	9:33-50	9:46-50		काफ़नाहूम

घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यहुन्ना	स्थान
29 ईस्वी का पतन					

तम्बु, विभचारी महिला				7:1-8:11	येरूशलेम
जगत की ज्योति				8:12-59	येरूशलेम
यीशू गलील छोड़ता है					गलील
जन्म से अँधा व्यक्ति चंगाई पता है				9:1-41	येरूशलेम
अच्छा चरवाहा				10:1-21	येरूशलेम
70 शिष्यों को बाहर भेजा भेजना			10:1-24		यहूदिया
नेक सामरी			10:25-37		यहूदिया
मरीयम और मारथा को मिलने जाना			10:38-42		यहूदिया
प्रार्थना करने के विषय में शिक्षण			11:1-13		यहूदिया
फरीसियों की आलोचना			11:14-54		यहूदिया
द्रष्टान्त और शिक्षण			12:1-13:9		यहूदिया
सब्ब, चंगाई के लिए बचाव पक्ष			13:10-21		यहूदिया
अर्पण, यार्दन के आगे				10:22-42	येरूशलेम
30 ईस्वी का पतझड़					
उद्धार के बारे शिक्षण			13:22-30		पेरिया
यीशू को हेरोदीस के बारे में चनौती			13:31-35		पेरिया
यीशू फरीसियों के घर में			14:1-24		पेरिया
शिष्यत्व की लागत			14:25-35		पेरिया
उड़ाउ पुत्र का द्रष्टान्त			15:1-16:31		पेरिया
विश्वास, क्षमा पर यीशू का मत			17:1-10		यहूदिया
लाज़र का जीवन में वापस आना				11:1-54	Bethany
10 कोड़ीयों को चंगा करना			17:11-19		यहूदिया
राज्य का आगमन			17:20-37		यहूदिया
द्रष्टान्त, द्रढ़ता			18:1-14		यहूदिया
तलाक पर येसू का मत	19:1-12	10:1-12			पेरिया
छोटे बच्चों को आशिष देना	19:13-15	10:13-16	18:15-17		पेरिया
युवा धनि शासक	19:16-20:16	10:17-31	18:18-30		पेरिया
सलीब की भविष्यवाणी	20:17-19	10:32-34	18:31-34		पेरिया
याकूब और यहून्ना की फिटकार	20:20-28	10:35-45			पेरिया
2 अंधे मनुष्य चंगाई पाते हैं	20:29-34	10:46-52	18:35-43		यरीहो
जक्की को मिलने जाना			19:1-10		यरीहो
कुण्ड का द्रष्टान्त			19:11-27		बेथनी
बेथनी में अभिषेक	26:6-13	14:3-9	11:55-12:11		बेथनी
अंतिम सप्ताह , रविवार					
विजय प्रवेश	21:1-11	11:1-11	19:28-44	12:12-19	येरूशलेम
अंतिम सप्ताह, सोमवार					
अंजीर के पेड़ को श्राप	21:18-19	11:12-14			येरूशलेम
मंदिर में अधिकार	21:12-17	11:15-19	19:45-48		येरूशलेम
यूनानीयों को मिलना				12:20-36	येरूशलेम

घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यहून्ना	स्थान
अंतिम सप्ताह, मंगलवार/बुधवार					
अंजीर के पेड़ का सुख जाना	21:20-22	11:20-25			येरूशलेम

मसीह के अधिकार पर सवाल	21:23-27	11:27-33	20:1-8		
चेतावनी का द्रष्टान्त	21:28-22:14	12:1-12	20:9-19		येरूशलेम
यहूदियों से प्रश्न	22:15-40	12:13-34	20:20-40		येरूशलेम
यीशू एक प्रश्न पूछता है	22:41-46	12:35-37	20:41-44		येरूशलेम
फरीसियों पर हाथ	23:1-39	12:38-40	20:45-47		येरूशलेम
विधवा का छोटा दान		12:41-44	21:1-4		येरूशलेम
जैतूनी कथा	24:1-26:2	13:1-37	21:5-38		येरूशलेम
षड्यंत्र : याजक/यहूदा, अभिषेक	26:3-16	14:1-11	22:1-6		
याहुदी की अविश्वासी				12:37-50	येरूशलेम
अंतिम सप्ताह , ब्रसिपत्वर					
पसह का पर्व, प्रभु भोज	26:17-30	14:12-26	22:7-30	ये	
मसीह की अलविदा	26:31-35	14:27-31	22:31-38	13:31- 16:33	येरूशलेम
विश्वसियों के लिए प्रार्थन				17:1-26	येरूशलेम
अंतिम सप्ताह , शुक्रवार					
गत्स्त्री	26:36-46	14:32-42	22:39-46	18:1	येरूशलेम
विश्वसघात और त्रिफ्तारी	26:47-56	14:43-52	22:47-56	18:2-11	येरूशलेम
यहूदियों द्वारा करवाई	26:57-27:10	14:53-72	22:54-71	18:12-27	येरूशलेम
रोमियों द्वारा करवाई	27:11-31	15:1-20	23:1-25	18:28- 19:16	येरूशलेम
सलीब दिया जाना	27:32-56	15:21-41	23:26-49	19:16-37	येरूशलेम
दफन	27:57-61	15:42-47	23:50-56	19:38-42	येरूशलेम
अंतिम सप्ताह, शनिवार					
कब्र पर पहरा	27:62-66				येरूशलेम
अंतिम सप्ताह , रविवार					
पुनरुत्थान	28:1-10	16:1-11	23:56- 24:12	20:1-18	येरूशलेम
सुरक्षा कर्मियों की रिपोर्ट/खबर	28:11-15				येरूशलेम
अमोस की तरफ यात्रा		16:12-13	24:13-35		अमोस की सड़क
येरूशलेम में प्रकट होना		16:14	24:36-43	20:19-25	येरूशलेम
पुनरुत्थान के बाद प्रकट होना					
थोमा को प्रकट होना				20:26-31	येरूशलेम
7 को प्रकट होना				21:1-24	गलील सागर
11 को प्रकट होना	28:16-20	16:15-18			गलील
500 को , याकूब को प्रकट होना				। कुरि. 15:6	गलील
प्रकट होना और स्वर्गरोहण		16:19-20	24:44-53	प्रेरितों के 1:4- काम 11	येरूशलेम
यहुन्ना की तसदीक				21:25	

यीशु के समय में फिलिस्तीन का भूगोल

में अधिक भौतिकवादी और न्यायवादी थे। वह घमंडी, ठंडे और कट्टरवादी प्रतिष्ठा के लोग थे। वे जीवन के सभी क्षेत्रों में पूर्णतावादी थे, और अपने आप व दूसरों के प्रति सख्त रुखी थे। ऐसा उनके धर्म पर भी लागू होता है। शायद इस से यही पटा चलता है कि क्यों इस क्षेत्र से इतने कम लोग ही यीशु के पीछे चलते हैं। इसकी प्रसिद्धि का मुख्य दावा यरूशलेम है, जो तब परमेश्वर का विशेष शहर और उसकी सांसारिक राजधानी था, पृथ्वी पर एकमात्र ऐसा शहर जिसके बारे में उसने कहा कि वह उसका था और जिसे उसने अपनी उपस्थिति से सुशोभित किया हुआ था।

सामरिया -गलील और यहूदिया के बीच का क्षेत्र था। इसका नाम क्षेत्र के मुख्य शहर सामरिया के नाम पर रखा गया था। जब यहोशू ने उस देश को कनानियों के हाथ से जीत लिया, इसमें मनश्शे, एप्रैम और गाद के गोत्र बस गए थे। राष्ट्र के विभाजन के समय सामरिया शहर उत्तर (इजराइल) की राजधानी बन गया। जब अश्शूरियों ने उत्तरी राज्य पर विजय प्राप्त की, तो वे सबसे अच्छे यहूदियों को ले गए और उनकी जगह अन्यजातियों को स्थानांतरित कर गए। इसने लोगों की एक मिश्रित नस्ल, का निर्माण किया जो 'सामरी' कहलाती है। उत्तर और दक्षिण के शुद्ध-खून वाले यहूदी उनके मिश्रित खून के कारण उनसे घृणा करते थे और उन्हें अस्वीकार कर देते थे। उन्हें उनसे या उनकी जमीन से कोई लेना-देना नहीं होता था।

सामरिया की भूमि गलील और यहूदिया का एक मिश्रण थी। यह गलील के समान था लेकिन थोड़ा खुरदरा और कम विकसित था। वे अपने धर्म में अर्ध-यहूदी थे। वे पैनटाटिऊक (उत्पत्ति - व्यवस्थाविवरण) पर विश्वास करते थे परन्तु उन्होंने यरूशलेम के बजाये सामरिया को अपनी आराधना का स्थल बना लिया था। याजको के बिना और मंदिर के बिना होते हुए, उन्होंने अपने स्वयं के रीति- रिवाजों और विश्वास धाराओं को प्रतिस्थापित किया था। इस कारण भी यहूदी उनसे नफरत करते थे। जब यीशु ने एक सामरी को अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम दिखाने वाले उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया, तो इससे पूर्ण यहूदी चौंक गए थे (नेक सामरी का दृष्टान्त - लूका 10:29-37)। नेक सामरी घायल यहूदी के प्रति उन अच्छे और पूर्ण यहूदियों की तुलना में अधिक दयालु था जो दूसरी तरफ से होकर निकल गए थे। सामरी की दयालुता इस बात के आलोक में और भी अधिक अर्थपूर्ण है कि एक सामरी के रूप में यहूदियों द्वारा उसको कैसे देखा जाता था और उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता था।

यीशु को सामरिया के लोगों से सच्चा प्यार था। वे उसे प्रत्युत्तर देने के लिए तयार थे। वह वहाँ विशेष रूप से एक अनैतिक स्त्री को अनन्त जीवन देने के लिए गया था (यूहन्ना 4)। यहूदी कभी सामरी लोगों से बात नहीं करते थे, और न ही उनकी भूमि पर पैर रखते थे। एक पुरुष कभी भी किसी महिला से सार्वजनिक रूप से बात नहीं करता था, खासकर अगर वह पुरुष को रब्बी (धर्म गुरु) होता था, और इससे भी आगे बढ़े तो कोई अगर महिला अनैतिक होती। इस सब के प्रकाश में, यीशु का कुँ पर स्त्री के पास पहुँचना और भी उल्लेखनीय था, जैसे उसकी प्रतिक्रिया देखी जाती है। कई अन्य लोगों ने बिना किसी चमत्कार के यीशु पर विश्वास किया। यह यहूदियों के विपरीत है, जिनके पास चमत्कारों के बारे में तो बहुत कुछ था, लेकिन उन्होंने उस विश्वास को नहीं दिखाया जो सामरी दिखाते थे! और वह कहानी का अंत नहीं है। जब पुनरुत्थान के बाद फिलिपूस सामरिया लौटा तो एक बड़ी बेदारी आई (प्रेरितों के काम 8), गलील या यहूदिया से भी बड़ी।

नक्शे पर ध्यान दें: समृद्ध, शिक्षित, सुसंस्कृत शहरी यहूदिया ने लगभग पूरी तरह से यीशु को अस्वीकार कर दिया; ग्रामीण गलील अधिक उत्तरदायी था पर अस्वीकार कर दिया था, लेकिन सामरिया ने इन दोनों

से भी अधिक प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। इससे हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। आज भी यही सत्य है। "बहुत धनी लोगों को नहीं" बाइबल कहती है (1 कुरिन्थियों 1:26-27) परमेश्वर विनम्र को आशीष देता है, लेकिन घमंडीयों और अभिमानियों को अस्वीकार करता है। "वह हमें और अधिक अनुग्रह देता है। इसलिए पवित्र शास्त्र कहता है: 'परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।'" (याकूब 4:6; 1, 5:5; अय्यूब 30:12; नीति 3:34)। यदि आप यीशु के दिनों में फिलिस्तीन में रहते होते, तो आप कहाँ फिट बैठते हैं।

जैसे-जैसे हम यीशु के जीवन से होकर गुजरते हैं, हम इसे समझने में आसान बनाने के लिए इसे विभिन्न वर्गों में विभाजित करेंगे। हम उसके जन्म, बपतिस्मा और प्रलोभन, आश्चर्यकर्मों, शिक्षाओं, सलीब पर चढ़ने, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण को देखेंगे।

22a यीशु का जन्म होता है

मत्ती 1:1-2:23; लूका 1:1-3:38; यूहन्ना 1:1-18

इतिहास में सही समय पर, परमेश्वर ने मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए स्वर्ग छोड़ दिया। जबकि कई चमत्कारी घटनाएं घटीं जो इस कहानी का हिस्सा थीं, उसका वास्तविक जन्म बहुत ही सामान्य था। वह एक बच्चे के रूप में आया जबकि वह आदम की तरह एक पूर्ण विकसित व्यक्ति के रूप में आ सकता था। लेकिन वह जीवन के उन सभी चीजों का अनुभव करने के लिए आया जिन में से हम में होकर गुजरते हैं, जैसे हम जीते हैं वैसे ही जीने के लिए, लेकिन पापरहित होते हुए। उसने स्वेच्छा से अपने ईश्वरत्व के उस भाग को अलग रखा जो उसके जीवन को आसान बना सकता था (सर्वज्ञता होने को, सर्वशक्तिमान होने को, सर्वव्यापी होने को) परन्तु फिर भी वह परमेश्वर था (फिलिप्पियों 2:5-8)। उसने इसी प्रकार जीवन का सामना किया जैसे हम सामना करते हैं, इसलिए वह जानता है कि हम पर क्या बीत रही होती है, वह तो फिर भी निष्पाप था (इब्रानियों 4:15; 2:16-17)।

यीशु का जन्म होता है

जिब्राईल जकरिया के पास आता है (लूका 1:5-25) याजकों की बड़ी संख्या के कारण, वे वर्ष में कई सप्ताह बारी-बारी से यरूशलेम में सेवा करते थे। बाकी समय अपने गृह क्षेत्रों में ही सेवा करते हैं : शिक्षा देना, न्याय करना, प्रोत्साहित करना और किसी भी तरह से मदद करना जो वे कर सकते थे। जब यरूशलेम में यह मंदिर में सेवा करते थे, तो उन हजारों लोगों की बलिदान, पूजा और धार्मिक कार्यों में मदद करते थे जो हर दिन मंदिर में आते थे। दिन का मुख्य आकर्षण सुबह का समय और देर दोपहर होता था, जब एक याजक दीवट पर बत्ती को काटने के लिए पवित्र स्थान में जाता और सुनहरी वेदी पर ताजी धूप लगाता (यह परमेश्वर के लिए एक मधुर स्वाद के रूप में प्रार्थना की एक तस्वीर है)। देर दोपहर दोनों में सबसे महत्वपूर्ण समय होता था। इन कर्तव्यों की विशेष प्रकृति के कारण, कर्तव्यों को पूरा करने के लिए याजकों को पर्वी डालने के द्वारा चुना जाता था। सौभाग्यशाली, वास्तव में, वह याजक होता था जिसे उसके जीवनकाल में काम से काम एक बार तो चुना ही जाएगा। जकर्याह ने कई वर्षों तक सेवा की थी और मगर इस दिन से पहले वह इस काम के लिए कभी नहीं चुना गया था।

परमेश्वर के घर में प्रवेश करना एक विशेषाधिकार होता था लेकिन साथ ही एक जिम्मेदारी भी होती थी, क्योंकि परमेश्वर किसी को भी जो उसके आशीर्वाद के बिना प्रवेश करता, मार सकता था। यह अफवाह थी कि मौत का फरिश्ता उन्हें दिखाई देगा और वे मर जाएंगे। आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि जब जकर्याह ने जिब्राईल को देखा तो वह इतना डरा हुआ क्यों था।

जब उसे बताया गया कि उसका एक बेटा होगा और उसने अविश्वास किया, तो जकर्याह संतानहीन होने के सभी वर्षों में की कुछ चोट, और कड़वाहट भी निकाल रहा था। बच्चों को परमेश्वर का आशीर्वाद माना जाता था, और संतान न होना परमेश्वर का श्राप मना जाता था। यह एक भयानक कलंक होता था, खासकर उस व्यक्ति के लिए जो एक याजक के रूप में परमेश्वर की सेवा करने की कोशिश कर रहा होता है! जब वह और इलीशिबा निःसंतान रखेगा तो परमेश्वर उन बहुत से लोगों को जो उसे प्यार नहीं करते थे बच्चों की आशीष क्यों देगा ?

जिब्राईल मरीयम को दिखाई देता है (लूका 1:26-38)- एक अजनबी आदमी को अपनी उपस्थिति में प्रवेश करने और उससे बात करने के लिए मरीयम को बहुत अजीब लगा होगा। उसकी दुनिया में तो ऐसी चीजें कभी होती ही नहीं थी।

मरीयम एलिशबा से मिलने जाती है (लूका 1:39-56) -जबकि मरीयम निस्संदेह अपने माता-पिता के विश्वास और समझ को जानती थी, वह जानती थी कि उसके बारे में स्थानीय गपशप क्या सकती है। अलौकिक गर्भावस्था वाले किसी से बात करना भी बहुत मददगार होगा। शायद उसके परिवार में कोई उसके साथ एलिशबा के पास गया होगा, या वह स्थानीय दोस्तों के काफले के साथ गई होगी जो दक्षिण की ओर जा रहे थे। वहाँ पहुँचने में कई दिन लग जाते, पैदल चलना पड़ता और रात में डेरा डालना पड़ता ।

यहुत्ता का जन्म होता है (लूका 1:57-80)- यह प्रथा थी कि बच्चे का नाम परिवार के किसी सदस्य के नाम पर ही रखा जाता था, पहले बेटे का नाम पिता के नाम पर रखा जाता था। ऐसा ना करने से अक्सर यह व्याख्या की जाती थी, यह दावा किया जाता था कि बेटा उसका नहीं था। जब जकरयाह ने अपने बेटे का नाम अपने नाम पर नहीं रखा तो सब बहुत चौंक गए! निश्चित रूप से एलिशबा विश्वासघाती नहीं थी? वास्तव में परमेश्वर स्वयं इस पुत्र का नाम विशेष प्रकार से उसका अपना होने का दावा कर रहा था। वह ही उसका पालन-पोषण और प्रशिक्षण करेगा, और उसने उसने किया भी।

जिब्राईल यूसुफ को दिखाई देता है (मत्ती 1:18-25) - मैं यूसुफ की बहुत प्रशंसा करता हूँ। मरीयम को जिब्राईल से बात करने का एक दिन और एलिशबा के साथ कई महीनों तक बात करने का समय था। वह जानती थी कि वह अभी तक कुंवारी है। यूसुफ के पास बस एक ही सपना था, और उसने उस पर अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। उसके गर्भवती होने के बावजूद भी वह शादी करना चाहता था, लेकिन कानून तो इसे मना करता था, पर परमेश्वर का अनुसरण करते और उसकी आज्ञा का पालन करते हुए, वह उसके कानून के खिलाफ नहीं गया। जबकि व्यभिचार के लिए पत्थर मारने का चलन ज्यादा नहीं रहा था, फिर भी यह एक संभावना बनी हुयी थी। यूसुफ के लिए दूसरे विकल्प भी खुले थे। वह अपनी प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखते हुए और अपना दहेज वापस प्राप्त करते हुए, अन्य युवतियों के लिए एक उदाहरण छोड़ने के रूप में आराधनालय में उसे सार्वजनिक रूप से बदनाम कर सकता था। बदला लेने का यह कानूनी तरीका होता था, किसी ऐसे व्यक्ति को वापस चोट पहुँचाना जिसने आपको चोट पहुँचाई हो। अंतिम विकल्प वह है जो यूसुफ ने चुना था: एक शांत तलाक जहां मरीयम को बजाय वह खुद अपमान और तिरस्कार का खामियाजा उठाएगा । वह अपनी प्रतिष्ठा और दहेज खो देंगा, लेकिन मरीयम की रक्षा की जाएगी। मरीयम द्वारा इतना गहरा विश्वासघात महसूस करने के बावजूद, यूसुफ ने फिर भी उसकी रक्षा के लिए खुद को बलिदान करने का फैसला किया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने ऐसे व्यक्ति को अपने बेटे का सांसारिक पिता बनने के लिए चुना!

यीशु का जन्म (लूका 2:1-20) जबकि क्रिसमस कार्ड अक्सर दिखाते हैं कि यीशु एक खलिहान में पैदा हुआ था, इतिहासकार और विद्वान मानते हैं कि यह एक गुफा जैसा स्थान था। बेथलहम में चूना पत्थर की पहाड़ियों पर गुफाएँ हैं, और इनका स्थानीय घरों द्वारा जानवरों को रखने के स्थान के रूप में उपयोग किया जाता था। लकड़ी बहुत दुर्लभ थी और घरों को बनाने के लिए इस्तेमाल नहीं की जाती थी, खलिहान या शेड के मुकाबले तो बहुत ही कम थी। साथ ही, कुछ नगरों में 'सराय' होती थी, जो वास्तव में यात्रा करने वाले चरवाहों के अपने झुंड रखने के स्थान होते थे, जबकि उनको यात्रा करने से पहले रात काटनी

होती थी। केवल बड़े शहरों में ही कोई अपने काम धंधे की देखरेख करने और यात्रा करने वाले चरवाहों को चारा बेचने के लिए नियुक्त करता था। बेथलहम इतना बड़ा नहीं था कि उसमें एक 'सराय का कोई रखवाला /कर्मचारी होता। हालाँकि, एक छोटी सी गुफा में पैदा होना, यीशु के पहले आगमन के लिए बहुत उपयुक्त था। उसके जन्म और मृत्यु दोनों में यूसुफ नाम के एक व्यक्ति द्वारा उसके शरीर से लहू पोंछे जाने के बाद उसे कपड़े की पट्टियों में लपेटा गया था। उसे अंधेरे में एक गुफा में एक ठंडे पत्थर की शेल्फ पर रखा गया था, जिससे अधिकांश अज्ञान थे और इसे अस्वीकार करते थे। जीवन में उसका प्रवेश इस संसार से उसके जाने का एक पूर्वाभास था।

चरवाहों को आने वाली आराधना के लिए चुनना कुछ ऐसा था जो केवल परमेश्वर ही करता , क्योंकि चरवाहे समाज में सबसे नीचे थे, अस्वीकार किए गए और सभी के द्वारा हीन दृष्टि से देखे जाते थे। मारे गए निर्दोष जानवरों के नुकसान को वे सबसे अच्छी तरह समझ सकते थे, क्योंकि शायद उनके द्वारा पाले गए कुछ भेड़ों का पालन मंदिर के बलिदानों के लिए ही किया जाता था। दाऊद इन्हीं पहाड़ियों पर चरवाही करता था।

यीशु मंदिर में प्रस्तुत है (लूका 2:21-38)- लड़कों के लिए मंदिर में समर्पित होना अनिवार्य नहीं था, लेकिन मरियम और यूसुफ ने यीशु के प्रति अपना सम्मान दिखाने के लिए ऐसा किया। बच्चे के जन्म से मरियम की शुद्धि की रस्म सबसे पहले आई। शिमोन शायद कार्यवाहक याजक था। भेंट करने के लिए उनके पास केवल कबूतर ही थे, इससे पता चलता है कि वे कितने गरीब थे।

मजूसीयों/ज्ञानियों का आगमन (मत्ती 2:1-18) यह एक और जगह है जहां हमारे क्रिसमस कार्ड हमारे धर्मशास्त्र को प्रभावित करते हैं। मजूसी वास्तव में फारस के राजा-निर्माता श्रेणी के लोग थे। उनके साथ रक्षा बल के साथ सैकड़ों लोग सफेद घोड़ों पर (और कुछ ऊँटों पर टेंट और सामान ले जाने के लिए) आए होंगे। तैयार होने और यात्रा करने में महीनों तक का समय लग गया होगा। वास्तव में, यीशु के लिए यूनानी शब्द अब 'शिशु' नहीं बल्कि 'युवा बच्चा' है। साथ ही, मरियम और यूसुफ इस समय तक एक घर में जा चुके थे। वे काफी समय पहले अपने घर से निकले थे। नासरत वापस जाने और मरियम की प्रारंभिक गर्भावस्था के बारे में गपशप करने के बजाय, वे जकरिया के पास बेथलहम में रहना चाहते थे।

22बी बपतिस्मा और परीक्षा 26 ईस्वी के आखिर में

मत्ती 3:1 - 4:11, मरकुस 1:1-13, लूका 3:1-4:13; यूहन्ना 1:19-34

यीशु का बचपन सामान्य था, लेकिन प्रथा के अनुसार किशोरावस्था में शादी नहीं की। वह 30 साल की उम्र तक घर पर रहा जब उसके मौसरे भाई, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रचार करना शुरू किया और सभी को उनके मसीहा के आने के लिए तैयार करने के लिए पश्चाताप करने के लिए पुकारा। यूहन्ना की इस मान्यता को स्वीकार करने के बाद कि वह परमेश्वर का मसीहा है, वह आने वाली बातों के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए जंगल में चला गया। वहाँ शैतान ने उसे पाप करने के द्वारा अयोग्य ठहराने की कोशिश की, लेकिन यीशु ने पवित्रशास्त्र को प्रस्तुत करते हुए विरोधी के हर प्रयास का विरोध किया और लड़ाई जीत ली।

हर किसी के जीवन में एक निर्णायक समय आता है, एक ऐसा समय जब उन्हें चुनना होता है कि कौन सा रास्ता अपनाना है। इतिहासिक घटनाओं के इन फैसलों को अक्सर तब तक पूरी तरह से महसूस नहीं किया जाता है जब तक की वर्षों तक का समय नहीं बीत जाता है। कभी-कभी हम जानते हैं कि हम कोई सकड़ा मार्ग (एक ऐसा मार्ग जिस से वापसी नहीं हो सकती) पार कर रहे हैं और कभी-कभी नहीं। यीशु ने अपने जीवन में इस समय को पूरी तरह से महसूस किया। उसने लगभग 30 साल अपने पिता, यूसुफ के साथ काम करते हुए, पत्थर और लकड़ी से चीजों को निर्माण करने में बिताए थे। तब परमेश्वर का आत्मा उसकी आत्मा में हलचल करने लगा, और उसे उस स्थान पर खींच लाया जहाँ उसका सम्बन्धी यूहन्ना बपतिस्मा देता था। वह इस बात से अच्छी तरह वाकिफ था कि यह रास्ता किस दिशा में जाएगा।

यीशु के जीवन में इन अंशों की पूरी तरह से व्याख्या करने के लिए उन दिनों जो कुछ हो रहा था, उसके सभी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रभावों को समझना महत्वपूर्ण है। हमारा उद्देश्य सभी पहलुओं में संपूर्ण होना नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और भौगोलिक तथ्यों को इंगित करना है जो हमें यूहन्ना की सेवकाई के साथ-साथ यीशु के बपतिस्मा और परीक्षा को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं।

बपतिस्मा देने वाला (मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-18) -जब उसके बूढ़े माता-पिता मर गए तो यूहन्ना जंगल रहने लगा और वहीं पर पला-बढ़ा था। उसकी जीवन शैली एस्सेन और कुमरान (जिन्होंने मृत सागर स्क्रोल लिखे थे (बाइबिल के पेजों) और उनको छिपाया हुआ था) के लोगों के समान थी, लेकिन वह किसी भी समूह का हिस्सा नहीं था। परमेश्वर के नजीर (संख्या 6) के रूप में उसने किसी भी मृत वस्तु को नहीं छुआ (जिसमें कुछ कहते हैं, मांस खाना भी शामिल होता है), ना अपने बाल कटवाए, या अंगूर का कोई फल (शराब या जूस) नहीं पिया।

आधुनिक प्रचारकों के विपरीत, यूहन्ना ने लोगों से कहा कि आकर उसे ढूँढ़ें। इसमें अक्सर कई दिन लग जाते थे। फिर उन्होंने जो सुना वह था पश्चाताप करने का संदेश। लोग क्यों जाते? परमेश्वर की आत्मा ने उन्हें खींचा था। कुछ लोग कहते हैं कि यह एक विश्राम/सब्बत वर्ष था, जब विश्राम/सब्बत संबंधी बातों के लिए समय होगा, साथ ही इनमें लोगों की रुचि भी होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना 29 ईस्वी के आखिर में रोश हसनाह के पास आया, जो पश्चाताप पर केंद्रित था।

यूहन्ना अपने आप को एक 'आवाज़ देने वाला' कहता है। जब कोई राजा किसी क्षेत्र में आ रहा होता था तो वह एक 'आवाज़ देने वाले' को आगे भेजता था ताकि लोग उसके आने की तैयारी कर सकें। वे सड़कों की मरम्मत करते और राजा के लिए यात्रा को सुरक्षित और आसान बनाने के लिए क्षेत्र को साफ करते।

बपतिस्मा के बारे यहूदियों को जानकारी था। उनके सभी आराधनालयों तालाबों के पास या जल स्रोतों के पास बनाया गया था, क्योंकि पानी का उपयोग धार्मिक शुद्धिकरण के लिए किया जाता था (प्रेरितों के काम 16:13 देखें)। पानी में धुलाई एक डुबकी के रूप में की जाती थी जो शुद्धीकरण की एक तस्वीर थी। इस प्रकार यहूत्रा जो कर रहा था, यहूदी उससे वाकिफ थे। इसलिए भी, उसने यह नहीं सोचा कि उसे यीशु को बपतिस्मा देना चाहिए।

बपतिस्मा प्राप्त (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:19-23)- किसी के लिए शादी न करना बल्कि अपनी तीस साल की आयु में घर पर रहना बहुत असामान्य होता है। अपने कारागिरी उपकरणों को छोड़ना और अपने माता और पिता को अलविदा कहना कठिन रहा होगा, जब वह अपने स्वर्गीय पिता का अनुसरण कर रहा था। इसके आगे क्या होगा, यीशु को इसके बारे कितना मालूम था ? क्या वह विवरण जानता था या केवल अस्पष्ट सामान्यताएँ? याद रखें, उसने स्वेच्छा से उन सभी ईश्वरीय गुणों को अलग कर दिया था जो मनुष्य के जीवन को आसान बनाते देते (फिलिप्पियों 2:6-8)। वह अभी भी पवित्र और धर्मी और शाश्वत था, अपने गुणों को बनाए हुए था। वह स्वेच्छा से अपने ईश्वरत्व में किसी भी चीज़ का उपयोग ना करने का फैसला करता है जो उसे हम में से किसी पर भी लाभ पहुंचा देती, क्योंकि वह उन सभी चीज़ों से गुज़रा जिनसे हम गुज़रते हैं (इब्रानियों 2:18; 4:14-15)। इस प्रकार उसने आपने सर्वज्ञता होने के गुण को भी एक ओर रख दिया था। यही कारण है कि वह अपने पिता के साथ प्रार्थना में इतना समय बिताया करता था। उसने अपना निर्देशन आत्मा के द्वारा प्राप्त किया, जैसा कि आज हम सभी के लिए उपलब्ध है। उसने पपरीक्षा/प्रलोभन और शैतान का सामना ठीक वैसे ही जैसे आज हम करते हैं।

शैतान (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-13; लूका 4:1-13)- परमेश्वर का आत्मा यीशु को जंगल में ले गया, जो कि यरूशलेम और मृत सागर के बीच एक अर्ध-रेगिस्तानी क्षेत्र है। यह एक बहुत ही सुखी, बंजर जगह है- जो रहने के लिए भयानक लेकिन एकांत और गोपनीयता के लिए विशेष था। यीशु के पास अपने स्वर्गीय पिता से जुड़ने और स्वयं को सेवा के लिए तैयार करने का समय का उपयोग करने गया था। वह अपनी प्रार्थना और परमेश्वर के साथ संगति में इतना गम्भीर था कि उसने पूरे समय कुछ न खाया, हालाँकि ऐसा लगता है कि जब उसको मिला तो उसने पानी पी लिया। शैतान ने उसके उपवास के 40वें दिन तक उसे नहीं छोड़ा। उस समय तक, शरीर एकत्रित वसा से जीवित रहता है, लेकिन उस समय के बारे में वसा पूरी तरह से समाप्त हो जाती है और शरीर खुद को खिलाने के लिए अपने अंगों को खाना शुरू कर देता है। यह भुखमरी कहलाती है और जल्द ही मृत्यु में समाप्त हो जाती है। उपवास के पहले दो दिनों के बाद, भूख का दर्द दूर हो जाता है - लगभग 40वें दिन तक जब बर्दाशत करना बहुत कठिन हो जाता है! इस प्रकार खाने के लिए पत्थर को रोटी में बदलने का शैतान का प्रलोभन बहुत ही वास्तविक था। रोटी लेने और उसे खाने में कोई बुराई नहीं थी। यीशु ने स्वयं गलील की झील के किनारे 4,000 और 5,000 के लिए रोटी बनाई थी। इसमें बस गलत यह था कि यह परमेश्वर का समय नहीं था। अक्सर हमें कोई ऐसा काम करने का लालच नहीं होता जो अपने आप में सही हो, लेकिन उसका समय गलत होता है (शादी, सेक्स, नौकरी में बदलाव, स्थानांतरण, खरीदारी, आदि)।

धैर्यपूर्वक परमेश्वर के मार्गदर्शन की प्रतीक्षा करना इस सब की कुंजी है। फिर शैतान उसे (शारीरिक या मानसिक रूप से - हम नहीं जानते और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि समय ऐसा ही था) मंदिर के ऊँचे किनारे पर ले गया और उसे नीचे कूदने की चुनौती दे डाली, यह जानकर कि स्वर्गदूत उसे पकड़ लेंगे। यहूदियों का विश्वास था कि मसीहा मंदिर के ऊँचे किनारे से आएगा, और एक आदमी को वहाँ से

कूदते और स्वर्गदूतों द्वारा पकड़े जाने को देखना निश्चित रूप से सभी को इतना प्रभावित करता कि वे निश्चित रूप से उसे उसी समय मसीहा बना देते। फिर से, मसीहा के रूप में पहचाने जाने में कुछ भी गलत नहीं था - इसलिए तो वह आया था। हालाँकि साधन अंत को सही नहीं ठहराते। इसका मतलब होता सलीब पर चढ़ने को टालना। सलीब पर चढ़े बिना मुकुट प्राप्त करना बहुत ही आकर्षक रहा होता, लेकिन यह बहुत गलत भी रहा होता। याद रखें कि जब आप परीक्षा में पड़ते हैं, तो आसान रास्ता न निकालें।

अंत में शैतान ने अपनी अति-गहरी चाल का उपयोग किया, जिसे उसने नहीं सोचा था कि उसे चलानी पड़ेगी लेकिन वह जीतने के लिए इसको चलाने के मलिए भी तैयार था। उसने पहले निष्पाप मनुष्य आदम पर इसका प्रयोग किया था, उसे परमेश्वर के समान बनने का अवसर प्रदान किया था, और वह मनुष्य शीघ्र ही गिर गया। उस समय शैतान ने आदम से सभी सांसारिक राज्यों का शासन जीत लिया था। अब वह उसे अपने जाल में फँसाने के लिए इस्तेमाल करने के लिए तैयार था और यीशु को पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर की तरह शासन करने की तत्काल पहुँच प्रदान करने के लिए तैयार था। समस्या यह थी कि इसका अर्थ भी फिर सलीब चढ़ने को टालना होगा। साथ ही, शैतान से अपना अधिकार प्राप्त करने का अर्थ यह होगा कि वह शैतान के अधीन था - वही जिसे वह गद्दी से हटाने आया था।

ये प्रलोभन बहुत सूक्ष्म/चतुराई भरे थे। वे बेहद संवेदनशील समय पर आ चुके थे। वे सभी यीशु की वैध जरूरतों को पूरा करने के लिए थे, लेकिन उसके अपने तरीके और उसके आपने समय में पूरा करने के लिए होते, नाकि परमेश्वर के तरीके से ना उसके समय पर। वे आत्म-केंद्रित थे और वर्तमान- केंद्रित थे, और लम्बी अविधि तक दूसरों के लिए क्या बेहतर था इस से इनका कोई लेना देना ना होता। शैतान ने आदम और हव्वा (उत्पत्ति 3) के साथ वही मूल काम किया था, और आज भी उसी तरह से काम करता है (1 यूहन्ना 2:16)। सावधान रहे!

22सी चमत्कार

27ईस्वी के पतझड़ से 28 ईस्वी की गर्मियों तक

मत्ती 4:12-23:45. मरकुस 1:14-3:30, लूका 4:14-8:3, यूहन्ना 1:35-5:47

कई ऐसे थे जो मसीहा होने का दावा करते हुए आए थे। लोगों को कैसे पता चलता कि इतने नक्लीचियों में स्वयं परमेश्वर कौन था जो पृथ्वी पर आया था? यह तो केवल वह होगा जिसके पास परमेश्वर की सामर्थ्य थी, जो केवल वही कर सकता था जो स्वयं परमेश्वर ही कर सकता था। कोई कैसे विश्वास करता कि यीशु

एक आत्मा को चंगा कर सकता है और पाप को क्षमा कर सकता है? जब वे कहते हैं कि वह एक शरीर को चंगा करता है, जिसे वे देख सकते हैं, तो वे जानेंगे कि वह एक हृदय को चंगा कर सकता है, जिसे वे देख नहीं सकते थे। दान्व्यस्त लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालने से वे जानेंगे कि उसकी शक्ति शैतान की शक्ति से अधिक थी। इसलिए अपने संदेश को प्रमाणित करने के लिए, यीशु ने पहले दो साल चमत्कार करते हुए बिताए। यह परमेश्वर का एक तरीका था बस यह दिखने के लिए कि वह कौन था। जब लोग उसके कार्यों पर विश्वास करेंगे, तब वे उसके वचनों पर भी विश्वास करेंगे।

वर्ष 1: चमत्कार

27 ईस्वी के आखिर के दौरान यीशु के लिए सब कुछ "ठीक" चल रहा था। पहले वह उस स्त्री से कुएँ पर मिला, फिर वह गलील लौट आया जहाँ उसका अच्छा स्वागत हुआ, और अन्त में उसने एक रईस के बेटे को चंगा कर दिया। दरअसल, इस समय सब कुछ बहुत अच्छी तरह से चल रहा था। इन घटनाओं को दर्ज करने वाला यहून्ना एकमात्र सुसमाचार लेखक था।

कुएँ पर स्त्री (यूहन्ना 4:5-42) -पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, यीशु ने सामरिया के क्षेत्र से होते हुए सामरिया शहर तक जाते हुए अपने घर गलील में लौटने का फैसला किया। वह अभी भी लगभग अस्पष्टता में सेवकाई कर रहा था, बस उसने स्वयं को इजराइल राष्ट्र के लिए ही प्रकट करना शुरू किया था। यह कार्य जितना महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक था, व्यक्तिगत आत्माएँ उससे भी अधिक महत्वपूर्ण थीं। परमेश्वर हमेशा लोगों को कार्यों से पहले स्थान पर रखता है।

जब वह कुएँ पर अकेले रह गया तो यीशु एक महिला से मिलता और बात करता है, जो दिन की धधकती गर्मी में पानी लेने वहाँ आई थी। उसने शायद इस लिए अकेले रहने के लिए ऐसा किया, क्योंकि अन्य महिलाएं उसके 5 पतियों को छोड़ अब 6वें के साथ, जिस से उसकी शादी नहीं हुयी थी, रहने वाली महिला सोचकर कई कुछ बोलती। प्यार की तलाश करते हुए, वह वासना की शिकार हो गई - ऐसा आज भी एक सामान्य विकल्प के रूप में होता है। यीशु यह जानता था और अपने बिना शर्त प्रेम के साथ उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए उसे ढूँढता है।

वह हैरान थी कि एक यहूदी, विशेष रूप से एक आदमी, विशेष रूप से एक रब्बी उसे ढूँढ लेगा और वास्तव में उसके साथ बातचीत शुरू करेगा! यह अभी पूरी नहीं हुयी थी! और तो और, उसने उसकी बाल्टी से पानी पीने की इच्छा जिताई। यहूदी न तो गैर-यहूदियों को कभी छुहते, न ही उनके किसी समान को छुहते - अगर वह उसका पानी पीता है तो वो औपचारिक रूप से अशुद्ध हो जायेगा!

जबकि उसने उससे पानी मांगा, वह वास्तव में वह था जो उसे जीवन का पानी देना चाहता था - आध्यात्मिक जल, उसे उसके पूरे जीवन के लिए तरोताजा और संतुष्ट करने के लिए। वह भ्रमित और अनिश्चित थी, लेकिन निश्चित रूप से दिलचस्पी रख रही थी! जब वह अंत में समझ गई कि वह किस चीज की पेशकश कर रहा है - अनन्त जीवन - तो वह इसे पाने के मौके पर उछल पड़ी। अपनी संतुष्टि के लिए यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह मसीहा था, परमेश्वर स्वयं पृथ्वी पर आया है, वह वापस शहर गई और सभी को उसके चमत्कारी प्रस्ताव के बारे में बताने लगी।

यीशु उन लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कई दिनों तक वहाँ रहा जो उसके उद्धार के मुफ्त उपहार में रुचि रखते थे। यह वास्तव में यीशु के लिए उत्साहजनक रहा होगा कि उसे उनके पूरे हृदय की प्रतिक्रिया मिली, विशेष रूप से उस विरोध के बाद जो वह पहले से ही वह यरूशलेम में यहूदी अगुवों से प्राप्त कर रहा था।

बहुतों ने विश्वास किया और यीशु का अनुसरण करने लगे। इसने पुनरुत्थान के बाद फिलिपूस और अन्य शिष्यों के नेतृत्व में उस क्षेत्र में एक महान बेदारी की नींव रखी। सचमुच इस कुँ के पास हुई इस मुलाकात में सब कुछ बहुत अच्छा हुआ!

गलील में अच्छी तरह से स्वागत किया गया (यूहन्ना 4:43-45)- जब तक यीशु अंततः गलील वापस आया, तब तक यरूशलेम में फसह के पर्व में जो कुछ हुआ था, उसके बारे में बात फैल चुकी थी। किसी ऐसे व्यक्ति में रुचि तेजी से फैल रही थी जो मंदिर से पैसे बदलने वालों को भगाएगा! उन्होंने उसके चमत्कारों के बारे में भी सुना था और उनमें काफी दिलचस्पी दिखाई थी। क्या यह मसीहा था? यह सब क्या हो रहा था?

एक जमाने में जब समाचार कवरेज नहीं होता था, टेलीफोन नहीं था, इ मेल भी नहीं ती, शब्द केवल बोलने से ही फैलते थे। फिर भी, यह काफी प्रभावी था। चूँकि लोगों के लिए मनोरंजन या उत्साह के रूप में वस्तुतः कुछ भी नहीं था, शक्तिशाली धार्मिक शासकों को बाहर निकालने वाले किसी व्यक्ति के बारे में समाचार, जिससे अधिकांश लोग गुप्त रूप से नाराज रहते थे, ने बहुत ध्यान आकर्षित कर लिया और उसकी चर्चा करने लगे। और कुछ किए बिना, लोग वह सब पता लगाना चाहते थे जो वे कर सकते थे। उस आदमी को देखना जिसने ऐसा किया था, साथ ही साथ उसने जो चमत्कार किए थे, उसके लिए समय खर्च करना करना गलत नहीं था। जिज्ञासा बहुत प्रबल थी, शायद आध्यात्मिक प्रतिबद्धता से भी अधिक प्रबल।

रईस मनुष्य के बेटे को चंगा किया जाना (यूहन्ना 4:46-54) -जब यीशु सामरिया के माध्यम से दक्षिण से आते हुए गलील में आया, तो काना उन स्थानों में से एक था जहाँ वह सबसे पहले पहुँचता। एक राजकीय अधिकारी, आपने एक बीमार बेटे के साथ जिसके बारे में लग रहा था कि वह जल्द ही मर जाएगा, यीशु के पास मदद माँगने आता है। यीशु ने उसके पास जाए बिना ही उसके पुत्र को चंगा कर दिया। यह लंबी दूरी पर से चंगा किये गए लोगों में से पहला था।

जब पिता ने घर आकर देखा कि उसका पुत्र ठीक उसी समय चंगा हो गया है, जिस समय यीशु ने कहा, कि वह चंगा हो जाएगा, तो उस मनुष्य और उसके सारे घराने ने विश्वास किया। यीशु के चमत्कार करने का कारण इस बात को दिखाना था कि उसका संदेश परमेश्वर की ओर से था।

गलत मत समझिए, ऐसा नहीं है कि यीशु लोगों की परवाह नहीं करता था और उन्हें अच्छी तरह से नहीं देखना चाहता था, क्योंकि वह वास्तव में उनको देखता था। हालाँकि, अगर यह केवल उसका था, या यहाँ तक कि चंगाई उसका मुख्य कारण था, तो उन सभी के बारे में क्या कहेंगे जिनको उसने चंगा नहीं किया? क्या ऐसा है कि उसने उनकी परवाह नहीं की? चमत्कार यीशु के 'सबूत' थे, यह दिखाने के लिए कि उसने जो कुछ भी खा या किया है उस पर परमेश्वर की मंजूरी/ मुहर है। चमत्कार केवल समापन का एक साधन थे, अपने आप में समापन नहीं थे। वे लोगों को यह दिखाने के लिए थे कि यीशु इसके योग्य था की उस की बात सुनी जाये, ताकि वह उस उद्धार के उपहार के बारे में बता सके जो वह उनको दे रहा था। शारीरिक चंगाई तो कुछ वर्षों तक चलेगी, उसके बाद व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी। आध्यात्मिक चंगाई न

केवल इस जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि अनंत काल को भी प्रभावित करती है। यीशू को सबसे ज्यादा इसी बात की चिंता थी। इसीलिए, एक साल कुछ अधिक समय के बाद उसने वस्तुतः सार्वजनिक चमत्कार करना बंद कर दिया -- लोग केवल भौतिक लाभ ही चाहते हैं जो वह दे सकता था (जैसे चंगाई, मुफ्त भोजन, आदि) लेकिन उसके संदेश को सुनने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। दुर्भाग्य से आज भी बहुत से लोग हैं, जो यीशु के पास केवल उसी के लिए आते हैं जो कुछ वे उस से प्राप्त कर सकते हैं, न कि वे जो उसे कुछ वह उसे दे सकते हैं। यीशु चाहता है कि हम उसका अनुसरण करें क्योंकि हम उससे प्यार करते हैं और जो कुछ भी वह चाहता है उसे करने के लिए तैयार हैं, चाहे कुछ भी हो। यदि आप उसका अनुसरण करते हैं क्योंकि वह आपको शांति और आनंद दे सकता है, आपके दोषों को दूर कर सकता है, संकट के समय में आपकी सहायता कर सकता है, आदि, तो आप उसका अनुसरण कर रहे हैं कि आप इससे क्या प्राप्त कर सकते हैं। ये अच्छे फायदे हैं, लेकिन उसकी सेवा करने का हमारा मुख्य कारण यह नहीं होना चाहिए। यह सब आत्म-केन्द्रित है, यीशु केन्द्रित नहीं। अभी के लिए, हालांकि, हर किसी को यीशु के कहे हर शब्द में दिलचस्पी थी (लूका 4:14-15)। उसने उनसे कहा कि वे अपने पापों का पश्चाताप करें और उसके उद्धार के सुसमाचार पर विश्वास करते हुए उसका अनुसरण करें (मत्ती 4:17; मरकुस 1:15)। आज हमारे लिए भी उसका यही संदेश है -- इसे चूकें नहीं!

चमत्कार- यह इतिहास में चमत्कारों के चार प्रमुख समयों में से तीसरा था। पहला था मूसा और यहोशू के समय में, दूसरा था एलिय्याह और एलीशा के समय में, और चौथा क्लेशकाल के दौरान होगा। प्रत्येक मामले में, परमेश्वर अपने चुने हुए दूतों को प्रमाणित कर रहा है और सबको दिखा रहा है कि उनके पास उसकी शक्ति और संदेश है।

चमत्कार प्राकृतिक घटनाओं का संयोग नहीं है। यह जादू नहीं है। यह एक उच्च कानून द्वारा प्राकृतिक कानूनों के ऊपर से होकर चल रहा है। यीशु ने उन्हें 'चिन्ह' कहता था। हमने महसूस किया कि वे एक उद्देश्य के लिए किए गए थे - इस बात का प्रमाण देने के लिए कि यीशु परमेश्वर था। जोर चमत्कार पर नहीं था बल्कि इस पर कि यह यीशु के बारे में क्या सिखाता था। यदि उसके पास शारीरिक बीमारियों पर अधिकार है, तो वह आध्यात्मिक बीमारियों को भी ठीक कर सकता है। यदि वह दुष्टात्माओं से छुटकारा दे सकता है, तो वह पाप से भी छुटकारा दे सकता है। यदि वे भौतिक दृष्टि दे सकता है तो वह आध्यात्मिक दृष्टि भी दे सकता है। यदि वह भौतिक रोटी खिला कर तुर्प कर सकता है, तो वह आध्यात्मिक मन्ना खिला कर भी तुर्प कर सकता है। यदि वह शारीरिक रूप से मृत लोगों को वापस जीवन में ला सकता है, तो वह आत्मिक रूप से मृत लोगों के साथ भी ऐसा ही कर सकता है। यदि वह समुन्द्र में तूफान को रोक सकता है, तो वह हमारे विरुद्ध शैतान के आक्रमणों को भी रोक सकता है। जब हम असहाय होते हैं, वह उद्धार कर सकता है।

कोई एक तरीका नहीं था: कुछ ने चंगा होने के लिए कहा, दूसरों ने नहीं खा। कुछ को विश्वास था; दूसरे तो यह भी नहीं जानते थे कि यीशु कौन था। जो भी बीमारी हो, जो भी जरूरत हो - यीशु ने उसे पूरा किया। उनका प्रकृति पर पूरा नियंत्रण था: समुन्द्र को शांत करना, एक अंजीर के पेड़ को श्राप देना, पानी को शराब में बदलना, बहुत सारी मछलियाँ पकड़ना जब एक क्षण पहले वहाँ कोई भी मछली नहीं थी - ये सब यीशु ने सिर्फ एक शब्द के साथ किया है। चमत्कार अंत का साधन थे, अपने आप में अंत नहीं। इसलिए फिलिस्तीन में हर बीमार व्यक्ति ठीक नहीं हुआ।

शैतान चमत्कार भी कर सकता है। वह अपने दिखावों से परमेश्वर की सामर्थ्य की नकल कर सकता है (मत्ती 7:22-23)। हालाँकि, उसकी शक्ति परमेश्वर द्वारा सीमित राखी गयी है। वह यीशु की शक्ति को नहीं रोक सकता। जेम्स और जैम्ब्रीज़ ने मूसा की नकल की और उसको चुनौती दे दी, लेकिन परमेश्वर की शक्ति से हार गए।

वर्ष 2: प्रचार करना

28 ईसवी का पतझड़ यीशु की सेवकाई में बहुत सक्रिय समय था। मसीहा होने के उके दावों की चर्चा फैल रही थी। लोगों की रुचि बहुत थी। लोग यीशु के दावों के बारे में फैसला करने लगे थे। कुछ ने माना, दूसरों ने नहीं। यह एक महत्वपूर्ण समय था, गति किस तरफ जाएगी? क्या राष्ट्र उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करेगा या उसे अस्वीकार कर देगा ?

नासरत में अस्वीकृति (लूका 4:16-30) -जैसा कि यीशु हमें बताता है (प्रेरितों के काम 1:8) हमें सबसे पहले उसके संदेश के साथ अपने परिवार और दोस्तों के पास जाना है। जैसा कि यीशु ने पाया, हालाँकि, वे हमेशा तयार नहीं रहेंगे। जब यीशु अपने नगर, नासरत वापस गया, जहाँ वह लगभग 4 से 30 वर्ष की आयु तक रहा था, तो उसे अस्वीकार कर दिया गया था। उन्हें यह सोचकर गर्व था कि मसीहा उनके शहर से आता है, लेकिन जब समय आया कि वे उसके प्रति समर्पण करें और आज्ञाकारिता में उसका अनुसरण करें, उन्होंने ऐसा नहीं करना चाहते थे। स्वीकार करना ही बहुत बड़ी बात थी। आज की तरह किसी दूसरे राज्य के 'विशेषज्ञ' पर विश्वास करना आसान हो गया है। किसी ऐसे व्यक्ति पर विश्वास करना बहुत कठिन हो गया है जिसे आप बचपन से जानते हैं, जिसे आपने बड़े होते देखा है, जिसका 'कपड़ा तक आपने बदला है,' बोलने के लिए कई कुछ ।

हम आज उसमें चलते हैं, और यीशु ने भी ऐसा ही किया। वास्तव में, नासरत में यह इतना बुरा था कि उन्होंने वास्तव में यीशु को मारने की कोशिश तक की, लेकिन वह अलौकिक रूप से छुड़ाया गया क्योंकि यह उसके मरने का समय, स्थान या तरीका नहीं था।

परिणामस्वरूप, तथापि, वह रहने के लिए कफरनहूम चला गया (मत्ती 4:13-16), क्योंकि वहीं उसका विस्तारित परिवार रहता था। उनके कई नए अनुयायी और शिष्य वहीं से थे, और अच्छी संख्या में इस विस्तारित परिवार का हिस्सा थे। वे उसे स्वीकार कर रहे थे।

मछली पकड़ना (लूका 5:1-10) -यीशु के वहाँ चले जाने के कुछ ही समय बाद एक दिन वहाँ उसके अनुयायियों के लिए एक विश्वास-परीक्षा हुई। पतरस और अन्य लोग रीति के अनुसार सारी रात मछली पकड़ते रहे, और थके हारे और खाली हाथ घर आए। उन्होंने अपने जालों की मरम्मत और सफाई में काफी समय बिताया और बिस्तर पर जाने का इंतजार कर रहे थे जब यीशु ने उन्हें वापस बाहर जाने और अपने जालों को गहरे पानी में डालने के लिए कहा। यह मछली पकड़ने का गलत स्थान और गलत समय था, साथ ही उन्हें अपना जाल फिर से साफ करने होगा। साथ ही वे काफी थके हुए और निराश भी थे। कई बार यीशु हमसे जो चाहता है वह हमें समझ में नहीं आता है। आज हमारे विश्वास की परीक्षा भी होती है।

हालाँकि, जैसा कि आप जानते हैं, उन्होंने बेहद मछलियाँ पकड़ीं! इससे उनका विश्वास यीशु में बहुत बढ़ गया। इसके तुरंत बाद, उसने पतरस, अन्धियास, याकूब और यूहन्ना से कहा कि वे अपना सारा समय उसके साथ बिताने के लिए मछली पकड़ना छोड़ दें, ताकि वह उन्हें सिखा सके कि मछली के रूप में

मनुष्यों को कैसे पकड़ा जाए (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; मरकुस 1:16-20; लूका 5:10-11)। उनके पास पर्याप्त विश्वास और प्रतिबद्धता थी कि वे उसकी सेवा करने के लिए अपने सफल व्यवसाय को छोड़ देंगे। जब वह हमें उसका अनुसरण करने के लिए, अपनी दुनिया में जो संतोषजनक और सफल लगता है, उसे छोड़ने के लिए बुलाता है, तो हमें संकोच नहीं करना चाहिए या पीछे नहीं हटना चाहिए।

आराधनालय में दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति का चंगा होना (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37)- एक और घटना जो उसके कफरनहूम जाने के बाद होती है, वो है आराधनालय में एक दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति की चंगाई। यीशु ने दुष्टात्माओं को बोलने नहीं दिया, परन्तु उन्हें बाहर निकाल दिया। जिस किसी ने भी इस घटना को देखा, वह यीशु की शक्ति और अधिकार के बारे में अधिक जागरूक हो गया, यहाँ तक कि शैतान के ऊपर भी उसकी इतनी शक्ति है।

पतरस की सास का चंगी होना (मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)-

आराधनालय में सभा के बाद, शायद वही जिसमें दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को छुड़ाया गया था, पतरस ने शिष्यों को भोजन के लिए घर पर आमंत्रित किया। समस्या यह थी कि उसकी सास बीमार थी और इसलिए उसकी पत्नी उसकी देखभाल में व्यस्त थी। पतरस अक्सर बिना किसी पूर्वविचार या योजना के आवेगपूर्ण ढंग से कार्य करता था। यीशु ने इस बार पतरस की सास को इतनी जल्दी और पूरी तरह से चंगा करके उसकी मदद की न केवल उसका बुखार उतर गया, बल्कि उसकी ताकत और ऊर्जा तुरंत वापस आ गई ताकि वह पतरस की पत्नी को अचानक आए मेहमानों को खिलाने में मदद कर सके। यीशु हमारी दैनिक जरूरतों, हमारे पारस्परिक व्यवहार और हमारे दैनिक काम के बोझ के बारे में चिंता करता है।

4 शिष्यों के साथ गलील की यात्रा (मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:35-39; लूका 4:42-44)- जल्द ही यह उसके संदेश को फिर से आसपास के समुदायों तक ले जाने का समय था, इसलिए यीशु उन 4 पूर्व-मछुआरों को ले गया जिन्हें उसने बुलाया था कि वे उसके साथ रहें, साथ ही साथ यह उनके लिए एक शिक्षण और प्रशिक्षण का समय के लिए भी था। ऐसा लगता है कि कफरनहूम में बहुत से लोग चंगाई के लिए उसके पास आ रहे थे -- वे इससे क्या प्राप्त कर सकते थे। उन्हें उसमें उतनी दिलचस्पी नहीं थी जितनी खुद में थी। इस प्रकार, यह अन्य लोगों के पास जाने का समय था जिन्होंने अभी तक नहीं सुना था। वह स्थानीय आराधनालयों में जाता और वहाँ संदेश देता, लोगों को चंगा करता और दुष्टात्मा से छुटकारा देता। उसे सुनने और देखने के लिए दूर-दूर से भारी भीड़ उमड़ पड़ती।

जिन लोगों को यीशु ने चंगा किया उनमें एक कोढ़ी था (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16)। उसे चंगा करने के बाद, यीशु ने उसे वहाँ के याजकों के प्रमाण के रूप में सीधे यरूशलेम जाने के लिए कहा कि यीशु ही मसीहा था। इसके बजाय, उसने सबको बताना शुरू कर दिया कि उसके साथ क्या हुआ था। दुर्भाग्य से बहुत से लोग यीशु के पास केवल चंगाई के लिए आए - क्योंकि वे यीशु से कुछ प्राप्त कर सकते थे। परिणामस्वरूप यीशु पीछे हट गया। उसने हमेशा अपने अनुयायियों को अपने राज्य का निर्माण करने के लिए बुलाया, उसने कभी भी उनकी इच्छाओं का पालन करने के लिए समर्पण नहीं किया ताकि वे अपने स्वयं के छोटे राज्यों का निर्माण कर सकें।

लकवा ग्रस्त मनुष्य चंगा होता है (मत्ती 9:1-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26) -जब वह कफरनहूम वापस आया, तो यीशु ने चमत्कारिक कार्यों के द्वारा अपने मौखिक दावों को सिखाना और

उनका समर्थन करना जारी रखा। ऐसा ही एक लकवाग्रस्त व्यक्ति था जिसको चंगा किया गया था जिसे छत से नीचे लाया गया था क्योंकि यीशु के पास जाने का कोई और रास्ता नहीं था। इस घटना में यीशु की शारीरिक और आध्यात्मिक चंगाई के बीच स्पष्ट संबंध दिखाई देता है, क्योंकि यीशु ने कहा कि उसने उसे शारीरिक रूप से चंगा किया, बाहरी प्रमाण के रूप में कि वह उसे आध्यात्मिक रूप से चंगा कर सकता था और किया था (उसके पापों को क्षमा करके और उसके अपराध को दूर करके)। धार्मिक शासक इस बात से नाराज थे, लेकिन आम लोग चकित और प्रभावित थे।

मत्ती की बुलाहट (मत्ती 9:9-13; मरकुस 2:13-17; लूका 5:27-32) - मत्ती नाम के एक ऐसा व्यक्ति जिसे बुरी नजरों से देखा जाता है क्योंकि वह चुंगी लेने वाला था, वह कफरनहूम की सड़कों पर काम करता था, जितना वह चाहता था उतना इकट्ठा करता था और उसका कुछ हिस्सा रोम को दे देता था। यहूदियों द्वारा मत्ती से घृणा किए जाने के बावजूद, यीशु जानता था कि उसका हृदय खाली है और, जब उसने मत्ती को उस काम को छोड़ने और उसका पूर्ण-समय अनुयायी बनने के लिए कहा, तो मत्ती ने तुरंत स्वीकार कर लिया। उसके पूर्ण परिवर्तन का प्रमाण यह था कि वह चेलों में खजांची बनना भी नहीं चाहता था, यहूदा को उस काम को संभालने के लिए छोड़ दिया था। यीशु ने मत्ती को उन लोगों के उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया जिनके लिए वह आया था: वे जो जरूरतमंद हैं और इसे जानते हैं। जब तक हम अपनी आवश्यकता को नहीं जानते और उसे यीशु के पास नहीं ले जाते, वह कभी भी पूरी तरह से नहीं भरेगा। शैतान के विकल्प कभी संतुष्ट नहीं करते हैं।

दावत और उपवास (मत्ती 9:14-17; मरकुस 2:18-22; लूका 5:33-39) - यहून्ना बपतिस्मा देनेवाले के अनुयायियों का एक प्रतिनिधिमंडल आया और उसने यीशु से पूछा कि उसने उपवास क्यों नहीं किया जैसा उन्होंने किया था। उसने उनको समझाया कि इसके लिए एक समय आयेगा, लेकिन अब जब मसीहा यहाँ था तो यह आनन्द का समय है। और यह आनन्द का समय था। नासरत के लोगों और धार्मिक शासकों (दोनों का गौरव) द्वारा उनकी अस्वीकृति को छोड़कर, यीशु हर जगह अच्छी तरह से स्वीकार किया जा रहा है जहाँ वह जाता है। अब तक।

22घ शिक्षण

28 ईस्वी के आखिर-30ईस्वी के पतझड़ तक

मत्ती 8:23-20;34; 26:6-13, मार्क 3:31-10:52, ल्यूक 8:4-9:50, जॉन 6:1-11:54

चंगाई और छुटकारे के चमत्कार करने के बावजूद, अधिकांश लोगों ने यीशु को अपने मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दिया। कुछ लोग एक मिलिट्री अगुवा चाहते थे जो रोम को पराजित करे और उनकी राष्ट्रीय स्वतंत्रता को बहाल करे। दूसरों ने खुद को दीन करने और पश्चाताप करने के यीशु की पुकार के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त की। फिर भी अन्य लोग उसे पहल पर रखने और उसके लिए जीवन जीने के

लिए आवश्यक कीमत नहीं चुकाना चाहते थे। अपने घमण्ड के कारण, उन्होंने अपने भले कामों में विश्वास रखना अधिक पसन्द किया। इसलिए यीशु ने अपनी साढ़े तीन साल की सेवकाई के लगभग आधे रास्ते में अपने ध्यान में एक सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव किया। भीड़ को अपने पीछे चलने और खुद को मसीहा के रूप में घोषित करने के लिए आमंत्रित करने के बजाय, उसने उन लोगों की ओर रुख किया जिन्होंने उस पर विश्वास किया था और जिनको उसने प्रशिक्षित किया था। शिक्षा देने वाले शिष्यों ने भीड़ को उपदेश देने का काम ले लिया। दृष्टांतों ने चमत्कारों को बदल दिया। यीशु के चले जाने पर काम को आगे बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए यीशु ने 12 आदमियों को भी चुना। यह पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई के अंतिम आधे समय का महत्व बन गया।

वर्ष 3 की शुरुआत

28 ईसवी के आखिर के दौरान की मुख्य घटनाएँ गलील सागर के चारों ओर घूमती हैं। यीशु घर से थोड़ा पास ही रह रहा था। संभवतः वह तम्बू के पर्व के लिए शुरुआत में यरूशलेम गया था, लेकिन उस यात्रा के बारे में कुछ भी दर्ज नहीं किया गया है। यीशु की सेवकाई में एक सूक्ष्म लेकिन विशिष्ट परिवर्तन हुआ है। अब वह अपने शब्दों को मनवाने के लिए सभी के सामने चमत्कार करते हुए, अपने संदेश के साथ जनता तक पहुँचने की कोशिश नहीं कर रहा है। अब वह अपने शिष्यों को प्रशिक्षित कर रहा है, उन्हें अपने स्थान पर लेने के लिए तैयार कर रहा है (हालाँकि उन्हें अभी तक इसका एहसास नहीं है)। जनता के लिए चमत्कार उसके अनुयायियों के लिए दृष्टांतों से बदले जा चुके हैं। वह एक सदा बहार सामान्य शिक्षण उपकरण का उपयोग करना शुरू करता है: छोटी कथाएँ जो सत्य को समझाने और बताने में मदद करती हैं। इससे उसके अनुयायियों के लिए उनका अर्थ स्पष्ट हो जाता है। लेकिन यह उसकी विशेष सच्चाइयों को उन लोगों से भी छुपाता है जो इन को अस्वीकार करेंगे और इनका मजाक उड़ाएंगे।

स्वर्ग के राज्य के दृष्टांत (मत्ती 13:1-53; मरकुस 4:1-34; लूका 8:4-18) - एक दिन गलील की झील के किनारे यीशु ने अपने शिष्यों को दृष्टांतों की एक श्रृंखला सुनाई जो समझाती थी कि क्या हो रहा था और क्या आगे होगा। उसे अस्वीकार किया जा रहा था, इसलिए नहीं कि उसमें किसी चीज़ की कमी थी, बल्कि इसलिए कि बहुतों ने अपने हृदयों को कठोर कर लिया था या अपने आप को पहल पर रखा था (बोने वाले का दृष्टांत)। फिर भी, कुछ उसे स्वीकार करेंगे और उसमें बढ़ेंगे, लेकिन वे एक अल्पसंख्यक ही होंगे।

हालाँकि, उस अल्पसंख्यक के बीच भी, दुश्मन फसल को नुकसान पहुँचाने के लिए जंगली बीज बोएगा। शैतान उन्हें गुमराह करने और भ्रमित करने के लिए सच्चे लोगों के बीच झूठे शिष्यों को स्थापित करेगा। अंततः परमेश्वर की जीत होगी, लेकिन झूठे अनुयायियों से सच्चे बताना अक्सर मुश्किल होगा।

सरसों के बीज और खमीर के दृष्टांत दिखाते हैं कि राज्य का विकास धीमा शुरू होगा (सलीब पर चढ़ाए जाने के समय पर एक मुट्ठी भर लोग), लेकिन अंततः यह पूरी पृथ्वी को शामिल करने के लिए बढ़ेगा (मिलेनियम के दौरान)। हालाँकि, जो लोग उसे खोजते हैं, उनके लिए यीशु कहतता है कि यह खेत में छिपे खज़ाने या एक व्यापारी को बढ़िया मोति मिलने जैसा है। वे उसके साथ यह संबंध बनाने के लिए अपना कुछ भी और सब कुछ त्याग देंगे। उनके लिए जो उसे खोजते हैं, वह सबसे अच्छी बात होगी, जो उनके साथ या हमारे साथ कभी जीवन में हुयी होगी !

यीशु ने समुन्द्र को शांत करता है (मत्ती 8:8, 23-27; मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25)-

बाद में उस दिन यीशु अपने शिष्यों के साथ एक नाव में सवार होकर झील के दूसरी ओर चला गया। थके होने के कारण (यीशु हर तरह से मानव था जैसा कि हम हैं और इसलिए जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं) वह सो गया। यहाँ तक कि भयानक तूफान भी उसे नहीं जगा पाया, इसलिए शिष्यों ने जगाया। उसने आँधी को डाँटा और तुरन्त, उसी क्षण तूफान थम गया। यहां तक कि हिलता हुआ पानी भी बैठ गया। उसके शिष्य चकित थे! उन्होंने सैकड़ों चमत्कार देखे थे जो उसने किए थे, इसलिए उन्हें आश्चर्य नहीं हुआ। हालाँकि यह कुछ ऐसे अलग है जैसे फंदे में आपकी गर्दन फंसी हुयी है!

गदरेनियों के आदमियों को छुड़ाया (मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-20; लूका 8:26-39) यह हो सकता है कि शैतान यीशु को उसकी मंज़िल से दूर रखने की कोशिश कर रहा था क्योंकि वह जानता था कि यीशु उसके इलाके पर हमला कर रहा है। दो आदमी जो बुरी तरह से दान्त्रस्त थे और कब्रिस्तान में नग्न भागते थे, खुद को काटते थे और उन्हें पकड़ने वाली जंजीरों को तोड़ देते थे, इतने सारे राक्षसों द्वारा वास किये गए थे कि उन्होंने खुद को 'लश्कर' कहा। यीशु ने तुरन्त उन्हें उन लोगों में से निकाल दिया, जो अपने सही दिमाग में लौट आए और यीशु पर विश्वास करने लगे। हालाँकि, स्थानीय लोग चाहते थे कि यीशु वहां से चला जाए, क्योंकि उसने दुष्टात्माओं को सूअरों (अशुद्ध जानवरों और यहूदियों के लिए निषिद्ध) के एक झुंड में जाने की अनुमति दी, जो स्वयं डूब गए थे। हालाँकि, पुरुष अपने गृह क्षेत्र में उसके गवाह बन गए। उन्होंने प्रेरितों द्वारा बाद के कार्य की नींव रखी।

याईर की बेटी को फिर से ज़िंदा करना (मत्ती 9:18-19, 23-26; मरकुस 5:21-24, 35-43; लूका 8:40-42, 49-56)-

जो करने के लिए उसने झील को पार किया, उसे पूरा करने के बाद, यीशु कफरनहूम वापस चला गया, जहाँ याईर नाम का एक यहूदी अगुवा आया और उसने यीशु से अपनी मरने वाली बेटी को चंगा करने के लिए कहा। इस आदमी के घर के रास्ते में, यीशु को एक स्त्री ने रोका जिसका 12 साल से खून बह रहा था (मत्ती 9:20-22; मरकुस 5:25-34; लूका 8:43-48)। वह विश्वास में आगे बढ़ी और उसे छुआ, और उसने उसे चंगा किया। हालाँकि, इस व्याकुलता ने यीशु की प्रगति को धीमा कर दिया और इससे पहले कि वह याईर की बेटी तक पहुँच पाता, यह खबर आई कि वह मर चुकी है इसलिए उसके आने का कोई और कारण ही नहीं बनता था। यीशु फिर भी वहाँ गया और लड़की को वापस जीवन में लाया! यह दूसरी बार था जब उसने ऐसा किया था (नार्इन की विधवा के बेटे की बात पहली थी; लाजर तीसरा और आखिरी होगा)। यीशु ने जो किया वह लड़की को पुनर्जीवित करना था ताकि वह अपने पार्थिव शरीर में जीवित रह सके जब तक कि वह फिर से मर न जाए। यीशु के शरीर का क्या होगा पुनरुत्थान, एक नया शरीर जो इस पृथ्वी के असूलों तक सीमित नहीं है। हमें भी ऐसा ही मिलेगा!

अंधे लोगों को चंगा किया गया (मत्ती 9:27-31) यीशु ने दो अंधे लोगों को चंगा किया जो विश्वास में उसके पास आए थे, लेकिन उनसे कहा कि जो कुछ हुआ है वह किसी को न बताना। वह नहीं चाहता था कि भीड़ आए ताकि वह उनके लिए चमत्कार करे। वह समय बीत चुका था।

दुष्टात्मा से ग्रस्त गूंगा व्यक्ति चंगा हुआ (मत्ती 9:32-34) दो अंधे व्यक्तियों की चंगाई के ठीक बाद, एक दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति जो बोल नहीं सकता था, यीशु के पास लाया गया। यीशु ने दुष्टात्मा को बाहर निकाल दिया और वह व्यक्ति यीशु की स्तुति करते हुए बोलने लगा। लोगों ने भी यीशु की प्रशंसा की। हालाँकि, धार्मिक शासक विश्वास नहीं करते थे। वे चमत्कार से इनकार नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने इसका स्रोत बदल दिया। वह कहने लगे कि उसके पास राक्षसों पर अधिकार शैतान की तरफ से था, इस

प्रकार यह कहते थे कि वह शैतान की शक्ति से कार्य कर रहा था, परमेश्वर की शक्ति से नहीं। इनका इस तरह से उसे अस्वीकार करना इतना प्रबल था कि वे उसके सामने कभी खुल कर नहीं आएंगे। वे उसकी लोकप्रियता से जलते थे। जब उसने उन्हें और उनके नियमों को नहीं माना तो वे क्रोधित हुए।

इस तरह कुछ महीने पहले शुरू हुआ बदलाव अब भी जारी है, बढ़ भी रहा है। जबकि व्यक्ति अभी भी उद्धार के लिए यीशु के पास आ सकते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि पुरे राष्ट्र ने उसे अस्वीकार कर दिया है। धार्मिक अगुवे तो करते ही हैं, और बहुसंख्यक लोग या तो उसके खिलाफ हैं क्योंकि वे उसके प्रति समर्पण नहीं करना चाहते हैं, या फिर किसी ना किसी तरह से उसको मानने के लिए लापरवाह थे। आप कहाँ पर खड़े हैं?

परिवर्तन का समय

28 ईस्वी की गर्मियां यीशु की सांसारिक सार्वजनिक सेवकाई के 3+ वर्षों के मध्य को चिह्नित करती है। अब तक सब ठीक है। नासरत में और धार्मिक शासकों द्वारा उनके अभिमान और ईर्ष्या भावनाओं में यीशु की अस्वीकृति की गई है, लेकिन अधिकांश लोग तयार और इच्छुक हैं, वे उसके पास चंगाई के लिए आ रहे हैं और उसके मसीहा होने के दावों को सुन रहे हैं। हालांकि जल्द ही यह बदलने वाला है। अब जब लोग उसके दावों को जान गए हैं, तो वे उसकी मांगों को भी सुनना शुरू करेंगे। वह केवल उनके जीवन को आसान और अधिक सुखद बनाने के लिए नहीं आया था। वह उन्हें अपने पीछे चलने और सब कुछ त्याग करते हुए उसकी सेवा करने के लिए के लिए उनको बुलाने आया था। यह लगभग उतना लोकप्रिय काम नहीं है। फिर भी, ईमानदारी से यीशु को उन्हें बताया। उसने लोगों को उसके आजीवन शिष्यत्व होने के लिए अपने नजरिए को नहीं बदला या कोई मीठी गोली नहीं दी, ताकि लोग और अधिक गिनती में उनका अनुसरण करने के लिए आएं। 31 ईसवी की गर्मी उन लोगों को जो उसका अनुसरण कर रहे थे चुनौती देने का समय और उन्हें कुछ कठिन चुनाव करने के लिए प्रेरित करने का समय था, चुनाव हम सभी को करना होगा।

एक अपंग व्यक्ति को सब्त के दिन एक कुण्ड में चंगा किया जाता है (यूहन्ना 5:1-47)

यीशु ने यरूशलेम में होने वाली उन सभी 3 मुख्य पर्व स्थायों में भाग लिया जिसमें पुरुषों को शामिल होना होता था: घोषणा (दिसंबर), फसह (अप्रैल) और तम्बू (सितंबर)। जब वहाँ फसह के पर्व के लिए, ठीक 2 साल पहले जहाँ वह मार दिया जाएगा और एक साल नीकुदेमुस के साथ उसकी बातचीत के बाद, उसने एक अपंग व्यक्ति को चंगा किया। उसने इसे एक समय के रूप में लोगों को यह सिखाने के लिए उपयोग किया कि वह कौन था और क्यों आया था।

सब्त विवाद

शिष्य सब्त के दिन अनाज तोड़ते हैं (मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5) - यरूशलेम से लौटते समय, गलील से गुजरते समय, यीशु और शिष्यों ने खेतों के किनारे चलते चलते अनाज की बालें तोड़ लेते हैं। (चलते समय खाने के लिए खेतों में, इसे परमेश्वर के कानून द्वारा भी अनुमति और समर्पित थी)। चलते-चलते उन्होंने बालों को रगड़कर कच्चा अनाज खा लिया। धर्मगुरुओं ने इसका इस्तेमाल उन पर व्यवस्था तोड़ने का आरोप लगाने के लिए किया, क्योंकि उन्होंने ऐसा सब्त के दिन किया था। बेशक यीशु ने उनके मानव-निर्मित नियमों को तोड़ा था, परन्तु

परमेश्वर के नियमों को नहीं। यीशु ने इस अवसर का उपयोग करके उन्हें यह दिखाने की कोशिश की कि परमेश्वर बाहरी कार्यों की तुलना में हृदय के व्यवहार के बारे में अधिक चिंतित होता है। हमें खुद इस चीज पर ध्यान रखने की जरूरत है।

सूखे हाथ वाला मनुष्य सब्ब के दिन चंगा हो जाता है (मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)- जब यीशु ने कफरनहूम के आराधनालय में प्रवेश किया, तो वहाँ एक व्यक्ति था जिसका हाथ सुखा हुआ था। क्या वह सब्ब के दिन उसे चंगा कर सकता था? अवश्य, यीशु ने कहा -- भलाई करना और दूसरों की सहायता करना हमेशा उचित है। फिर यीशु ने उसे चंगा किया। हालांकि, अब पहली बार था जब धार्मिक अगुवे यीशु से छुटकारा पाने के लिए उसे कैसे मार सकते हैं, इसकी साज़िश रचने लगते हैं। उसे रोकने का और कोई उपाय नहीं है, और उसके दावों को सत्य मानना उनके लिए अकाल्पनीय है। उसे हटाया जाना चाहिए।

यीशु पहाड़ी देश में वापस आता है

वह चंगा करता है (मत्ती 12:15-21; मरकुस 3:7-12) यीशु को मारने की उनकी इच्छा को जानते हुए, और यह कि समय, स्थान और साधन सही नहीं हैं, यीशु गलील के ग्रामीण इलाकों में चला गया। जब उसने यात्रा कर रहा था तो उसने चंगाई और छुटकारे के चमत्कारों के साथ अपने संदेश का समर्थन करते हुए प्रचार किया।

वह चेलों को बुलाता है (मरकुस 3:13-19; लूका 6:12-16) उत्तरी गलील में हाटिन के चोटीओं पर पहुंचकर, यीशु परमेश्वर की इच्छा की खोज में प्रार्थना करने में रात बिताता है। सुबह में, उसने सभी अनुयायियों में से 12 पुरुषों को अपने साथ दिन के 24 घंटे, सप्ताह के 7 दिन रहने के लिए चुना। एक रब्बी द्वारा शिष्यों को चुनने और प्रशिक्षित करने का यह विशिष्ट तरीका था। जब यीशु महसूस करता है कि बड़ी संख्या में लोग उससे दूर हो रहे हैं और देश उसे अस्वीकार कर रहा है, तो योजना "बी" शुरू हो जाती है। वह उन लोगों को प्रशिक्षण देना शुरू करेगा जो उसके जाने के बाद भी कार्य को आगे बढ़ाएंगे। भीड़ के लिए उपदेश देने और चमत्कार करने से हट कर शिष्यों के एक छोटे समूह को पढ़ाने और प्रशिक्षित करने में एक सूक्ष्म बदलाव शुरू होता है।

वह प्रचार करता है (मत्ती 5:1 - 8:1; लूका 6:17-49) अनुयायियों को बुलाने वाले एक रब्बी के रूप में, यीशु उन्हें और उन सभी को जो सुन रहे हैं वही बताता है जिसकी वह अपने अनुयायियों से मांग करता है। उन्हें यह बताने के बजाय कि वह उनके लिए क्या करेगा, जैसा कि एक अच्छा राजनेता जो समर्थक चाहता है वह करता है, वह उन्हें बताता है कि वह उनसे अपने लिए क्या करवाना चाहता है। बेशक वे अंततः इसके मुख्य लाभकारी होंगे, लेकिन अक्सर ऐसा संदेश मनुष्य के मूल स्वार्थ और अभिमान के विरुद्ध प्रहार करता है। इसी प्रकार पर्वत के उपदेश ने भी अनुयायियों को सब कुछ त्यागने और पूरी तरह से उसका अनुसरण करने के लिए कहा था, चाहे इसकी कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। यह वोही चुनौती है जो वह अभी भी उन्हें देता है जो आज उसका अनुसरण करते हैं। यह आसान नहीं है, लेकिन लाभ 'इस दुनिया से आगे' है।

यात्रा, शिक्षण और चंगाई

सूबेदार का सेवक चंगा होता है (मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10) जब यीशु वापस कफरनहूम गया, तो उसने रोमी सेना में एक गैर-यहूदी अधिकारी के एक सेवक को चंगा किया, और उसके महान विश्वास की सराहना की। कभी-कभी आश्चर्य होता है कि कौन यीशु पर विश्वास करेगा और कौन नहीं।

विधवा के बेटे को जीवित करना (लूका 7:11-17) इन महीनों में यीशु हमेशा चलता-फिरता रहता था। जैसे ही वह नाईन के पास पहुँचा, उसने एक विधवा के बेटे को फिर से जीवित कर दिया। मृतकों को वापस लाना इस बात का सकारात्मक प्रमाण होना चाहिए कि उसके पास जीवन और मृत्यु पर अधिकार है। यीशु सुनिश्चित कर रहा है कि कोई भी उसे जानने और उस पर विश्वास करने के अवसर मिले बिना ना रह जाये। इस चमत्कार की व्याख्या नहीं की जा सकती!

यूहन्ना के कुछ प्रश्न हैं... (मत्ती 11:2-19; लूका 7:18-35) यूहन्ना, जो जेल में है, आश्चर्य करने लगता है कि क्या यीशु वास्तव में मसीहा है। उसने भी उम्मीद की थी कि अब तक हर कोई उसका अनुसरण कर रहा होगा, लेकिन बहते प्रभावशाली धार्मिक अगुवे, पूरी तरह से उसके और उसके दावों के खिलाफ हैं। वह भ्रमित है। यीशु उसे समझाता है कि सिर्फ इसलिए कि हर कोई उसे स्वीकार नहीं कर रहा है इसका मतलब यह नहीं है कि वह मसीहा नहीं है। यह उनके दिलों की कठोरता और उनकी आत्म-केंद्रितता है जो उन्हें विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगने और उसके लिए अपना जीवन जीने से रोकती है।

गलील शहर यीशु को अस्वीकार करते हैं (मत्ती 11:20-30) यीशु ने उन स्थानों को चेतावनी दी थी जिन्होंने बहुत से बड़े चमत्कार होते देखे थे, फिर भी उसे अस्वीकार कर दिया था, कि वे न्याय के अधीन हैं और इसके लिए बहुत जवाबदेह थे।

यीशु के चरणों का पहला अभिषेक (लूका 7:36-50) इस सारी निराशा और अस्वीकृति के बीच, अभी भी आशा की उज्ज्वल किरणें हैं और परवर्तित जीवन हैं। जबकि एक धार्मिक शासकों के घर में, बमुश्किल सभ्य तरीके से उसके साथ व्यवहार किया जा रहा होता है, तब एक अनैतिक महिला आती है और यीशु के चरणों में अपने हृदय के साथ-साथ अपनी जीवन भर की कमाई उंडेल देती है। वह यीशु के प्रेम और क्षमा को प्राप्त करती है,

12 के साथ गलील के लिए दूसरी यात्रा (लूका 8:1-3) इस बार यीशु 12 को आपने साथ ले जाता जब वह एक शहर से दूसरे शहर जाता था। वह दुष्टात्मा से ग्रस्त अंधे और गूंगे मनुष्य को चंगा करता है (मत्ती 12:22-37; मरकुस 3:20-30)। उसने उन लोगों से कहा जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था कि उसके चमत्कारों को अस्वीकार करने के बाद उनके लिए एकमात्र अतिरिक्त 'चिन्ह' जो वे प्राप्त करेंगे, वो योना (उसका पुनरुत्थान) का चिन्ह होगा (मत्ती 12:38-45)। यहां तक कि उसका परिवार और दोस्त भी उसके खिलाफ होने लगे थे, और यह कहने अलगे थे वह पागल है कि वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा है (मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21)।

सचमुच 28 ईस्वी की गर्मी एक महत्वपूर्ण मोड़ बन चुकी थी, न कि बेहतर के लिए। प्रत्येक जन को यीशु के दावों के बारे में निर्णय करना चाहिए। आपने क्या फैसला किया? आप कहां पर खड़े हैं?

12 शिष्य

नाम	परिवार	घर	व्यवसाय	सेवकाई	मृत्यु

इन्ड्रिआस	योनस और योआना का पुत्र पतरस का भाई	बैथसैदा काफ़नाहूम	मछुआरा यहुन्ना का शिष्य	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19, 8:1, 11:1, 18 एफ़सुस, रूस, स्किथियो यूनान में सेवकाई कटा था	स्किथिया में x रुपी सलीब पर बंधा गया मरने से 2 दिन पहले तक प्रचार करता रहा 30.11.69 को मृत्यु हुयी
नथानिएल बर्थाल्मई	कोई जानकारी नहीं	काना	मछुआरा यहुन्ना का शिष्य	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19, 8:1, 11:1, 18) एशिया माइनर में फिलिपुस के साथ आर्मीनिया में	जीवित ही की खाल उतार दी गयी, सिर काट दिया गया और क्रूर राजा अशितअगुस द्वारा समुन्द्र में फेक दिया गया था
याकूब (गर्जन का पुत्र)	ज़ब्दी का पुत्र **	बैथसैदा – काफ़नाहूम	मछुआरा यहुन्ना का शिष्य	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19, 8:1 , 11:1 , 18)	हेरोदीस अन्तिपस द्वारा सिर काट दिया गया था , 44 ईस्वी में प्रेरितों के काम 12:1-2
याकूब (छोटा)	क्लिओपास का पुत्र *	काफ़नाहूम	मछुआरा	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18 -19, 8:1 ,11:1 , 18) फलिस्तीन और मिस्र	मिस्र में सलीब चड़ा दिया गया था
यहुन्ना	ज़ब्दी का पुत्र **	बैथसैदा काफ़नाहूम	मछुआरा यहुन्ना का शिष्य	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 3;5:18-19,8:1 , 11: 1, 18) यहुन्ना 1, 2, 3, यहुन्ना , प्रकाशितवाक्य , एफ़सुस में मरीयम के साथ रहा) पत्मोस टापू पर	अपनी मौत मरा शहादत पाने का रह असफल हुआ
यहूदा तदिउस	क्लिओपास का पुत्र *	काफ़नाहूम	मछुआरा	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5 :18-19, 8:1, 11:1, 18) अशुर और फारस	फारस और सीरिया में मोटे डंडों से पीट पीट कर मर दिया गया था
याबुदा इस्करोती	कोई जानकारी नहीं	यहूदिया, इकलौता ऐसा जो गलील से नहीं था	खजांची	कोई नहीं	अतम हत्या कर ली थी
मत्ती (लेवी)	क्लिओपास का पुत्र *	काफ़नाहूम	चुंगी लेने वाला बहुत पड़ा लिखा	येरूशलेम , (प्रेरितों के काम 5:18-19, 8:1 , 11:1,18) मत्ती सुसमाचार लिखा , कुश और फारस	मिस्र में कुल्हाड़ी के साथ सिर 2 टुकड़ों में काट दिया गया था
पतरस शमौन	योनस और योआना का पुत्र इन्दिरिअस का भाई	बैथसैदा , काफ़नाहूम	मछुआरा यहुन्ना का शिष्य	येरूशलेम,शुरुआती कलीसिया का अगुवा (प्रेरितों के काम2:11, 15) 1, 2 पतरस का लेखक , एशिया माइनर, बर्तानिया (?) और रोम, अपनी पत्नी के साथ	उसकी पत्नी की शहादत के तुरंत बाद उसे उल्टा करके सलीब पर चदय गया
फिलिपुस	अनजान , युन्नानी नाम	बैथसैदा	कोई जानकारी नहीं	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5: 18-19, 8:1, 11:1 , 18) फ्रिगीय , गलतिया , फ्रांस (?) एशिया माइनर	हिरापोलास,(कुलुसिया का पास)में एक खम्भे से बंद कर फांसी पर लटकाया गया
शमोन (तेजस्वी)	अनजान	गलील	तेजस्वी, गोपनीय स्वतंत्रता सेनानी	मछुआरा ,येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-19, 8:1, 11:1, 18) भिन भिन स्थानों पर सेवकाई करता रहा	सलीब दिया गया

थोमा	क्लियोपास का पुत्र *	काफ़नाहूम	मछुआरा	येरूशलेम (प्रेरितों के काम 5:18-198:1, 11:1, 18 ,) पार्थिय , फारस और भारत	पूर्वी भारत में भले से मार दिया गया

* क्लियोपास को हलफर्ड भी कहा जाता है, जो शायद यूसुफ का भाई था; मरियम उसकी पत्नी यीशु के साथ उसकी सेवकाई के दौरान थी; ऐसा लगता है कि बच्चे मत्ती और थोमा (जुड़वाँ?), छोटा याकूब और यहूदा तदिउस थे, इसलिए शायद यह सभी यीशु के खुनी भाई थे

** जब्दी की पत्नी सलोमी थी, जो मरियम की बहन थी, बच्चे याकूब और यूहन्ना थे, वे यीशु के मौसरे भाई थे

अस्वीकृति

29 ईस्वी के पतझड़ तक, यह स्पष्ट था कि यीशु को अस्वीकार किया जा रहा था और यदि संभव हुआ तो उसे मार दिया जायेगा। हालात ऐसे हो रहे थे कि यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार ना किया जाये। धार्मिक शासक और संपूर्ण राष्ट्र अपने जीवन में स्वयं को उसके शासन के अधीन नहीं करने जा रहे थे। जिन लोगों ने दीवार पर लिखत नहीं देखी थी, वे केवल शिष्य थे। वे अभी भी इस भ्रम में थे कि जल्द ही जब यीशु दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा तो वे यरूशलेम में उच्च नेताओं में से एक होगा। यीशु इससे बेहतर जानता था।

नासरत में दूसरी अस्वीकृति (मत्ती 13:54-58; मरकुस 6:1-6) – यह समय यीशु के लिए अपने गृह नगर नासरत लौटने का था, ताकि नासरत के लोगों को उसके पीछे चलने का एक और मौका दिया जा सके। शायद उसके जीवन में पहली बार वहाँ वे लोग हैरान हो गए थे। शायद अब उनके पास सोचने और सुनने का समय है। हो सकता है... लेकिन कुछ नहीं हो रहा था ! जब उसने फिर से आराधनालय में उपदेश दिया , जैसा कि रब्बियों को ऐसा करने की अनुमति दी गई थी, लोग उसके प्रति अपनी अस्वीकृतिक भावनाओं में तेज और मजबूत थे। यह उनका आखिरी मौका था, उनका आखिरी फैसला। यीशु फिर से उनके आराधनालय में वापस नहीं जाएगा, और नासरत की यात्रा के बारे में कुछ भी दर्ज नहीं है।

12 का बाहर भेज दिया जाना

नासरत को छोड़कर, **यीशु ने अपने बारह शिष्यों को दो-दो करके भेजता है** (मत्ती 9:35 - 10:15; मरकुस 6:7-11; लूका 9:1-5)। यह न केवल उनके प्रशिक्षण का हिस्सा था, उसके जाने के बाद काम को जारी रखने के लिए, बल्कि यह उसके संदेश के साथ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने का भी एक तरीका था। सभी ने किसी न किसी तरह से सुना था, लेकिन यीशु चाहता था कि हर एक को विश्वास करने का अधिक से अधिक अवसर मिले। यह वही काम है जो उसने अभी-अभी नासरत के साथ किया था।

उन्हें बाहर भेजने से पहले, यीशु ने विस्तार से बताया कि क्या उम्मीद की जानी चाहिए (मत्ती 10:16-23)। उसके अधिकांश शब्द अस्वीकृति से निपटने के बारे में थे। वह उन्हें चेतावनी दे रहा था और तैयार कर रहा था ताकि वे चकित न हों। जब लोग हमारे संदेश को अस्वीकार करते हैं तो हमें भी हैरान/परेशान नहीं होना चाहिए। फिर भी यीशु हमें वैसे भी भेजता है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर किसी के पास जितना संभव हो उतना स्पष्ट अवसर मिल सके ।

तब यीशु ने उनसे शिष्यत्व के बारे में बात की (मत्ती 10:24-42)। आखिर बाहर भेजे जाने और अस्वीकृत होने के बारे में सुनकर उन्हें कैसा महसूस हो रहा था? उन्हें जाने की जहमत क्यों उठानी चाहिए थी? एक शिष्य को आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब वह उस स्थिति से गुजरता है जिससे उसके गुरु को गुजरना पड़ता है। एक शिष्य अपने गुरु की सेवा करने के लिए अपनी सभी इच्छाओं और लक्ष्यों को त्याग कर देता है। शिष्यत्व आसान नहीं है। इसकी बहुत कीमत चुकानी पड़ती है। इसकी कीमत हम सभी को चुकानी पड़ती है। लेकिन जब यीशु अपने शिष्यों के लिए अपना सब कुछ दे रहे हैं। परमेश्वर और उसके राज्य की सेवा में आपने जीवन देने से बेहतर इसका क्या उपयोग हो सकता है? परिणाम यह हुआ कि शिष्यों ने समर्थ के साथ परमेश्वर के वचन को फैलाया (मत्ती 11:1; मरकुस 6:12-13; लूका 9:6)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मर जाता है (मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14-29; लूका 9:7-9)- कहीं ऐसा न लगे कि यीशु के सामने कैसा समय आ गया, इस बारे में कोई सन्देह न हो, यूहन्ना अब मार डाला जाता है। उसके संदेश को अस्वीकार कर दिया जाता है और उसके शब्दों को चुप कराने के लिए उसकी हत्या कर दी जाती है। जो अग्रदूत के साथ होता है वह उसके साथ होता है जिसने उसे मार्ग तैयार करने के लिए भेजा होता है। यीशु यह जानता है। स्पष्ट रूप से यह अंत की शुरुआत है। अब यह केवल कुछ समय की बात है कि स्वयं यीशु भी मारा जाता है। यीशु के पास पृथ्वी पर जीवन का एक वर्ष का समय बचा है।

यीशु को अस्वीकार क्यों किया गया? यहूदियों ने उसे अपना मसीहा और राजा क्यों नहीं स्वीकार किया था? यदि वह उनसे बिना कुछ माँगे ही देता तो वे क्षण भर में उसके पीछे हो लेते। मुफ्त खाना, बीमारी से चंगाई-- सब यही चाहते हैं। लेकिन जब उसने तब उन्हें (और अब हमें) अपने पाप और लाचारी को स्वीकार करके, क्षमा और बहाली के लिए उसके पास आने के लिए कहता है, यह अक्सर व्यक्ति से अधिक उनका घमंड होता है। फिर जो लोग उसके उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करेंगे, यीशु उन्हें (और हमें) चुनौती देता है कि वे अपने स्वयं के जीवन और इच्छाओं को छोड़ दें ताकि वे प्रतिदिन उसकी सेवा करें और अपनी स्वयं की बजाय उसकी इच्छा पूरी करें। एक आत्म-केन्द्रित व्यक्ति के लिए, जो शुरुआत से ही ईश्वर के अस्तित्व के बारे में सुनिश्चित नहीं है, उसे ऐसा जीवन पूरी तरह से मजाक लगता है! पूरी दुनिया के प्रति उनका नजरिया पूरी तरह से अलग होता है, बहुत अलग है।

जीने के लिए छह महीने

32 ईसवी के आखिर में यीशु जानता था कि उसके पास जीने के लिए केवल 6 महीने ही हैं। यीशु जानता था कि वह मर जाएगा क्योंकि पूरा देश, साथ ही अधिकांश लोग उसे अस्वीकार कर रहे थे। उसने अपने अनुयायियों को दो बार बताया, लेकिन उन्होंने इसके बारे में पुनरुत्थान के बाद तक भी नहीं सोचा। 32 ईसवी के आखिर के दौरान यीशु की गतिविधियों को इसके प्रकाश में देखने से नई रोशनी मिलती है। वह इसका प्रतिउत्तर कैसे देगा? वह क्या करेगा? आइए देखते हैं।

अपने ही भाइयों (यूहन्ना 7:2-10) और सामरिया के लोगों (मत्ती 8:19-22; लूका 9:51-62) द्वारा अस्वीकार किए जाने के एक नए दौर के बावजूद, यीशु तम्बु के पर्व के लिए यरूशलेम गया (यूहन्ना 7) :11-52)। वहाँ रहते हुए उसने व्यभिचार में पकड़ी गई एक स्त्री को छुड़ाया (यूहन्ना 7:53 - 8:11)। उसने लोगों को

यह बताने की कोशिश की कि वे अन्धकारके प्रति सावधान रहें परन्तु उसके प्रकाश का अनुसरण करें (यूहन्ना 8:12-20), क्योंकि ऐसा करने से वे परमेश्वर का अनुसरण करेंगे, शैतान का नहीं (यूहन्ना 8:21-59)। यह दिखाने के लिए कि वह आध्यात्मिक अंधकार और अंधेपन को दूर कर सकता है, उसने एक व्यक्ति को शारीरिक अंधकार/अंधेपन से चंगा किया। उनका भाव अभी भी एक सेवक का सा ही था। अपने और अपनी आवश्यकताओं के बारे में सोचने के बजाय, क्या उचित थी और क्या नहीं थी, वह दूसरों तक पहुँचता रहा, उनकी ज़रूरतों को पूरा करता रहा और कोशिश करता रहा और उन्हें उद्धार की ओर ले जाये। उसने कहा कि वह अच्छा चरवाहा था जो अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण देने जा रहा था (यूहन्ना 10:1-21)। अपने जीवन के अंतिम महीनों में भी, यीशु ने दूसरों को और उनकी ज़रूरतों को पहल पर रखा। उसने अपना सब कुछ दूसरों के लिए देना जारी रखा, अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध रहने को, चाहे कुछ भी क्यों ना हो।

तम्बू के पर्व के बाद, गलील के कफरनहूम में अपने घर जाने के बजाय, जहाँ उसके अधिकांश अनुयायी रहते थे, जहाँ उन्हें कुछ सात्वना और समर्थन मिल सकता था, यीशु यहूदिया में रहने लगा। चूँकि अंत निकट था, वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि सभी को सुनने और प्रतिक्रिया देने का उचित अवसर मिल सके। इस तथ्य के बावजूद कि उनके हृदय कठोर थे और यहूदियों की ओर से बहुत कम प्रतिक्रिया भी बहुत काम थी, यीशु ने उन तक पहुँचने के लिए वह सब कुछ किया जो वह कर सकता था। उसके 12 शिष्यों में से केवल एक यहूदिया से था, और वह यहूदा था। अधिक क्षेत्र कवर करने और अधिक लोगों तक पहुँचने के लिए, और उनके प्रशिक्षण को जारी रखने के लिए, यीशु ने अपने 70 अनुयायियों को दो-दो करके भेजा, उन्हें चेतावनी दी कि उनको हमेशा स्वीकार नहीं किए जाएंगे (लूका 10:1-24)।

अपने मूल्यों को सिखाने के लिए यीशु ने भले सामरी का दृष्टान्त बताया (लूका 10:25-37)। उसने अपनी अच्छे मित्रों मरियम, मार्था और लाजर के साथ समय बिताया (लूका 10:25-37) और उन्हें सेवकाई का पाठ भी दिया। दूसरों की सेवा करना उसका विषय था (लूका 11:1-13)। एक गूंगे को चंगा करने के बाद भी (लूका 11:14-28) लोगों ने मांग की कि वह उनके लिए साबित करे कि वह परमेश्वर है (लूका 11:29-36)। यीशु ने कहा कि उनके लिए एकमात्र प्रमाण पुनरुत्थान होगा ("योना का चिन्ह")।

यीशु ने कपट की निंदा की (लूका 12:1-12) और उन्हें लोभ के विरुद्ध चेतावनी दी (लूका 12:13-34)। उसने उन्हें सतर्क रहने के लिए प्रोत्साहित किया (लूका 12:35-41) और साथ ही विश्वासयोग्य भी (लूका 12:42-48)। उसने उन्हें वह सिखाया जिसकी वह उम्मीद करता था (लूका 12:49-53) और उन्हें समय के संकेतों को देखते रहने के लिए कहने लगा (लूका 12:54-59)। उसने उन्हें मन फिराने और उस पर विश्वास करने के लिए बुलाता था (लूका 13:1-9)। उसने कुछ चंगाई की, जैसे जब उसने एक अपंग स्त्री को चंगा किया (लूका 13:10-17), लेकिन बड़े समूहों के सामने बड़ी संख्या में चंगाई का समय बहुत पहले बीत चुका था। उसने आने वाले राज्य के बारे में सिखाया, कि यह धीमी घती से शुरू होगा और धीरे-धीरे बढ़ेगा (लूका 13:18-21)। यह निश्चित रूप से धीरे-धीरे शुरू हो रहा था।

फिर, जब समर्पण के पर्व का समय आया, तो यीशु फिर से यरूशलेम गया (यूहन्ना 10:22-39)। उसकी मौत अब कुछ ही महीने दूर थी। उसने आपने पिछले महीने का समय ज़रूरतमंद लोगों तक पहुँचने में बिताया था।

आप देखिए, यीशु का स्वयं का बलिदान सलीब पर ही आरंभ नहीं हुआ। यह उससे बहुत पहले शुरू हो चुका था। वास्तव में यह संसार के बनने से पहले ही शुरू हो गया था, जब ट्रिनिटी के दूसरे व्यक्ति ने स्वेच्छा से एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने और हमारे पापों के लिए मरने की इच्छा जाहिर की थी (प्रकाशितवाक्य 13:8)। पृथ्वी पर उसका पूरा अस्तित्व उसके शत्रुओं के साथ-साथ उसके मित्रों के लिए एक आत्म-त्याग और बलिदान के रूप में था (यूहन्ना 13)। यह जानते हुए कि उसका समय कम था, उसका जीवन नहीं बदला, इसने केवल उसके ध्यान को और घती दी। हमारे साथ भी ऐसा ही होना चाहिए। जैसे वह "हमारे पांव धोता है," वैसे ही हमें "एक दूसरे के पांव धोना" है (यूहन्ना 13:14)। हमें भी, दूसरों के लिए त्यागपूर्ण सेवा का जीवन जीना होगा, उन्हें और उनकी ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों से पहले रखना होगा। हमें भी, दूसरों की सेवा के लिए दैनिक बलिदान में अपना जीवन लगाते हुए आपने स्वामी जैसा बनना है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमारी अपनी जायज़ ज़रूरतें नहीं हैं, और न ही इसका मतलब यह है कि हमें लोगों को अपना इस्तेमाल करने देना चाहिए, अपना फ़ायदा उठाने देना चाहिए और हम पर हावी होने देना चाहिए। हमें कबूतर के समान भोले परन्तु सर्प के समान बुद्धिमान होना है (मत्ती 10:16)। यह आसान नहीं है, वास्तव में मानवीय रूप से यह असंभव है, लेकिन उसकी मदद से सब कुछ संभव होता है। अपने लिए जीना एक खालीपन है और इसका मतलब है सब कुछ खो देना। परमेश्वर और दूसरों के लिए जीना ही जीवन के अर्थ और उद्देश्य को पाने का एकमात्र तरीका है, अभी और अनंतकाल के लिए (मत्ती 10:39)। चुनना आपको है। समझदारी के चुनें।

यीशु का अंतिम सप्ताह

अंत लाज़मी है। यीशु को अस्वीकार कर दिया गया है और वह मर जाएगा। इसको कुछ भी नहीं बदलेगा, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा द्वारा कुछ चुनने के लिए मजबूर नहीं करेगा। हालाँकि, बाकी लिखत को पढ़ने की ज़रूरत है, अंतिम घटना घटी। अब बात सही समय का इंतजार करने की है। मेमे को फसह के दिन मरना चाहिए, और वह अभी भी 3 महीने दूर है। इंतजार करना हमेशा सबसे कठिन होता है। किसी का मन किसी भी हद तक जा सकता है। ऐसे समय में ध्यान केन्द्रित बनाये रखना बहुत कठिन होता है, लेकिन 30 ईसवी के पतझड़ के दौरान यीशु ने यही किया।

सारे गलील को पूरी तरह से सुसमाचार प्रचार किया गया था। सभी ने यीशु के बारे में सुना था। प्रत्येक के पास अधिक जानने का अवसर था। लोगों ने मन बना लिया था। दिल लगा लिए थे। उनका फैसला यह था : यीशु एक अच्छा व्यक्ति है, मुफ्त भोजन बहुत अच्छा है, और अगर वह रोमनों को उखाड़ फेंकेगा यह तो बहुत अच्छा होगा - लेकिन सब कुछ छोड़ देना और उसे परमेश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में उसका पालन करना, यह करने और होने से बहुत जयादा है!

यह जानकर, यीशु पेरिया (यूहन्ना 10:40-42) चला गया, जो यरदन के पूर्व में एक क्षेत्र है। न केवल वह वहां सुरक्षित था (वह जानता था कि अभी उसके मारे जाने का समय नहीं आया है), लेकिन वह उन लोगों को मौका देने में सक्षम था जिन्होंने उसके पीछे चलने का मौके के बारे नहीं सुना था। उसने वहाँ वही उपदेश दिया जो उसने गलील और यहूदिया में दिया था। केवल लूका ने ही वहाँ यीशु की शिक्षाओं को लिखती रूप में दर्ज किया। उसने उद्धार के बारे में बात की (13:22-30) और उन्हें हेरोदेस के बारे में चेतावनी दी (13:31-35)। उसने एक फरीसी के घर में चंगाई की (14:1-6) और एक अभिलाषी मेहमान (14:7-14) और महाभोज (14:15-24) के दृष्टांत सुनाए। शिष्यता के महत्व के बारे में समझाने के बाद (14:25-35) उसने एक खोई हुई भेड़, खो गए सिक्के और खो गए पुत्र (15:1-32) और एक अन्यायी भण्डारी (16:1-13) के बारे में दृष्टांत दिए। ये उन्हें पूरी तरह से यीशु का अनुसरण करने के महत्व को दिखाने के लिए और उन लोगों के न्याय और हानि के बारे में बताने के लिए कहे गए थे जो उसका अनुसरण नहीं कर रहे थे। उसने लालच के खिलाफ चेतावनी दी (16:14-17) और तलाक के बारे में सवालों के जवाब दिए (16:18)। उसकी सबसे प्रसिद्ध शिक्षाओं में से एक थी, लाजर और धनवान व्यक्ति (16:19-31) की, यह पद/हैसियत और संपत्ति में विश्वास रखने वालों के खिलाफ एक और चेतावनी थी। उसने अपना समय वहाँ क्षमा (17:1-6) और सेवक होने के महत्व (17:7-10) के बारे में सिखाते हुए समाप्त किया।

फिर एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना आई। यीशु के जीवन को देखते हुए, कोई भी इसे कई बार देख सकता है जब ऐसा लगता है कि वह यहूदियों को, यह तय करने के लिए कि क्या वे उसे स्वीकार करेंगे या अस्वीकार करेंगे, मजबूर करने के लिए अपने रास्ते से बाहर चला गया। पहली बार तब था, जब उसने अपने बपतिस्मे के बाद पहली बार मंदिर में आकर दुकानदरों और सर्राफों को खदेड़ दिया था। इसने धार्मिक नेताओं को जहाँ चोट पहुँचाई - वो उनके बटुए थे! वे उसे देखने और एक या दूसरे तरीके से खड़े होने के लिए मजबूर हो गए थे। अब भी वह वही काम करने जा रहा है - कुछ इतना बड़ा कदम कि वे देखे और एक या दूसरे तरीके से कार्य करने के लिए कदम उठाएँ। ऐसा काम उनकी नाक के नीचे, वह लाजर को वापस जीवन में लाकर करेगा, और फिर कुछ सप्ताह बाद एक गधे पर सवार होकर शहर में खुद को मसीहा और राजा घोषित करके करेगा। इन घटनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था।

लाजर का जी उठना (यूहन्ना 11:1-44) स्पष्ट रूप से एक अलौकिक चमत्कार था कि कोई भी इससे इनकार नहीं कर सकता था या इसकी व्याख्या नहीं कर सकता था। यह यरूशलेम के इतने निकट था कि वहाँ के बहुत से लोग लाजर को जानते थे (जाहिर तौर पर एक धनी और प्रभावशाली व्यक्ति) और उससे बात करने आए थे कि उसके साथ क्या हुआ था। जब धार्मिक शासकों ने इसकी जाँच की तो उन्हें इस पर कोई दूसरी टिप्पणी करने का कोई तरीका न मिला। उन्होंने फैसला किया कि यीशु और लाजर दोनों को इस अजीबोगरीब आंदोलन को रोकने के लिए मरना होगा जो इतना तेजी से बढ़ रहा था और लोगों से इतना सहयोग प्राप्त कर रहा था। उन्हें जलन हो रही थी। जबकि अधिकांश लोगों ने यीशु को मसीहा और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया, बहुमत ने घमंडी और ताकतवर धार्मिक शासकों के साथ उसके संघर्ष में उसका पक्ष लेते थे। उन घटनाओं को तेज गति देने के बाद जो जल्द ही उसकी मृत्यु में समाप्त हो जाएंगी, यीशु तब एप्रैम को वापस चला गया जहाँ वह सुरक्षित था (यूहन्ना 11:45-54) क्योंकि पाप के लिए मरने का अभी भी समय नहीं आया था।

यीशु ने अपनी अंतिम यात्रा गलील और सामरिया में से हो कर की और 10 कोढ़ियों को चंगा किया (लूका 17:11-19)। उसने आने वाले राज्य के बारे में (लूका 19:20-37), प्रार्थना में लगे रहने के महत्व (लूका 18:1-8) और उचित मनोवृत्ति (लूका 18:9-14) के बारे में सिखाया। यीशु ने आखिरी बार अपनी आँखें यरूशलेम की ओर करके अपने गृह क्षेत्र का दौरा किया। केवल वही जानता था कि इसके आगे क्या होने वाला है जब उसने गलील को छोड़ा और दक्षिण की ओर चला गया।

फिर यीशु ने पेरिया में फिर से घूमा, और उस काम को पूरा किया जो उसने वहाँ शुरू किया था। उसने फिर से तलाक के बारे में सिखाया (मत्ती 19:1-12) और कैसे मनुष्य को राज्य में प्रवेश करने के लिए एक छोटे बच्चे की तरह बनना है (मरकुस 19:13-15)। एक अमीर युवा शासक उसके पास आया और अनन्त जीवन के बारे में पूछने लगा, लेकिन यीशु जानता था कि इससे पहले कि वह वास्तव में यीशु का अनुसरण कर सके, उसे अपने पैसे के प्यार से निपटना होगा (मरकुस 19:16-22)। जैसे-जैसे समय कम होता जा रहा था, यीशु ने शिक्षा (मत्ती 19:23-30) और दृष्टान्तों (मत्ती 20:1-16) का उपयोग करके अनन्त जीवन के बारे में बात करने पर ध्यान केंद्रित किया। उसने उनसे कहा जो सुनेंगे कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और फिर से जी उठेगा (मत्ती 20:20-28) लेकिन कोई भी इसके बारे में विचार करना नहीं चाहता था, इसलिए उन्होंने इसे वास्तव में पंजीकृत नहीं होने दिया। अभिमान और आत्म-केन्द्रितता आदर्श प्रतीत होती है, जिसके लिए एक बार यीशु ने याकूब और यूहन्ना को इसके लिए डाँटा था (मरकुस 20:20-28)।

पेरिया को छोड़कर, यीशु अपने बपतिस्मा और परीक्षा के बाद अपने चौथे फसह के पर्व के लिए यरूशलेम की ओर चल पड़ा। यरीहो के रास्ते में उसने कुछ अंधे लोगों को चंगा किया, जिनमें से एक (बरतिमाई) उसका अनुयायी बन गया (लूका 18:35-43)। जक्कई यरीहो का एक और निवासी था जिसने यीशु के प्रेम और क्षमा का प्रतिउत्तर दिया और उसके पीछे चलने के लिए सब कुछ त्याग दिया (लूका 19:1-10)। यीशु ने फिर से अपने अनुयायियों को चेतावनी दी कि राज्य में देरी होगी (लूका 19:11-29), लेकिन लोग वही सुनना चाहते हैं जो सुनने की वे आशा करते थे। यीशु के अनुयायी केवल यीशु के आने वाले इजराइल के हुकुमरान होने, और उसके साथ उनके ऊँचे पदों के बारे में सुनना चाहते थे। इस प्रकार, वह पृथ्वी पर अपने जीवन की अंतिम घटनाओं के लिए यरुशलम की ओर अपनी आँखें घुमाते हुए वास्तव में अकेला ही चला गया।

जब यीशु पृथ्वी पर अपने अंतिम सप्ताह में बैतनिय्याह की ओर चला, तो उसके मन में क्या विचार आए होंगे? जल्द ही इंतजार खत्म हो जाएगा, और पीड़ा शुरू हो जाएगी: अस्वीकृति और पीड़ा और दर्द। यीशु ने पृथ्वी पर अपने जीवन के मकसद को ईमानदारी से पूरा किया था, यहाँ तक कि इन पिछले कुछ महीनों में जब अंतिम चुनाव निश्चित था। लोगों के लिए उस का रवैया अभी भी प्यार और धैर्य वाला था। वह घबराया नहीं, डरा नहीं या भागा नहीं। वह अंत तक वफादार बना रहा। प्रतीक्षा के कठिन समय में वह हमारे लिए विश्वासयोग्यता का क्या ही उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। उसकी मदद से हम भी, एक अच्छा रवैया रख सकते हैं और ईमानदारी से दृढ़ बने रह सकते हैं चाहे कुछ भी क्यों ना आने वाला हो।

22ई सलीब पर चढ़ना

30 ईस्वी का पतझड़

मत्ती 21:1-27:66, मरकुस 11:1-15:47, लूका 19:28-23:56, यूहन्ना 12:12-19:42

यीशू की अपनी आने वाली मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में यीशू की शिक्षाओं के बावजूद, और इसके बारे में पुराने नियम की कई भविष्यवाणियों के प्रकाश में, जो यीशू के साथ हुआ था उसके लिए उसके शिष्य बिकूल तैयार नहीं थे। धार्मिक नेताओं और अधिकांश लोगों की अस्वीकृति के नतीजे के रूप में यीशू को सलीब चढ़ाया गया। ईर्ष्यालु नेताओं का उसे चुप कराने का एकमात्र यही तरीका था। लेकिन परमेश्वर ने सबसे बुरी इतना बुरा होने दिया जो जो कभी ना हुआ था और इस बुरे का उसने इस्तेमाल और इसके नतीजे में इतना अच्छा होने दिया जितना कभी ना हुआ था और ना हो ही सकता था। उसने उस घटना को एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जिसके द्वारा वह स्वयं हर उस पाप के लिए भुगतान करेगा जो कभी भी किया गया हो / होगा, और हमारे अनन्तकाल नरक की सजा को उस पर डाल दिया। पूर्ण मनुष्य के रूप में वह हमारी जगह पर एक विकल्प हो सकता है, पर परमेश्वर के रूप में वह बहुत कम समय में ही संघनित नरक में अनंत काल की पीड़ा को सहन कर सकता है। समय कम था, लेकिन पीड़ा अकाल्पनीय थी। वह ऐसा क्यों करता ? एक ही कारण है - हमारे लिए उसका प्यार!

पृथ्वी पर यीशू का अंतिम सप्ताह

फुटबॉल गेम में जैसे-जैसे समय कम होता जाता है, वैसे-वैसे हर स्त्रैप और हैंडऑफ़ का महत्व बढ़ जाता है। बास्केटबॉल खेल में जैसे ही समय समाप्त होने लगता है, प्रत्येक पास और शूट विशेष महत्वपूर्ण हो जाता है। गलती के लिए कोई जगह नहीं बचती है। छोटी-छोटी गलतियां बड़ी आपदाओं में बदल जाती हैं। हर हरकत और हर कार्य मायने रखता है। पृथ्वी पर अपने अंतिम दिनों के दौरान यीशू के साथ भी ऐसा ही था। उसकी घड़ी 0 के करीब और करीब आ रही थी। यीशू के सिवाए और किसी को भी इसका एहसास नहीं हुआ था (और या शायद मारीयम को ऐसा एहसास हुआ हो जिसने लाजर के घर पर उसका अभिषेक किया था)। यीशू जानता था कि प्रत्येक शब्द का, प्रत्येक गतिविधि का महत्व बहुत अधिक था। अब, विशेष रूप से, गलती करने के लिए कोई स्थान ही नहीं था। दुनिया के बनने से पहले जिसकी योजना बनाई गई थी वह पूरा होने के लगभग करीब आ चूका था। परमेश्वर द्वारा बनाई गई 'खेल योजना' को पूरा करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण समय था। इस प्रकार यीशू के जीवन के अंतिम दिन विशेष अर्थ ग्रहण करते हैं। और जिस तरह सुपरबाउल के अंत में जीत दिलाने वाले मैच की अंतिम श्रृंखला का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया जाता है और उन्हें याद रखा जाता है, उसी तरह यीशू के अंतिम दिन भी उसके जीवन की पिछली गतिविधियों की तुलना में और भी अधिक ध्यान देने योग्य ठहरते हैं।

यह सब शुक्रवार, 27 मार्च, 30 ईस्वी में आरम्भ हुआ जब यीशू बैतनिय्याह में आया था (यूहन्ना 12:1; लूका 19:28)। दूसरों के लिए यह यूहन्ना द्वारा यीशू को बपतिस्मा दिए जाने के बाद से यरूशलेम की एक और (चौथी) फसह यात्रा थी। हालाँकि, यीशू के लिए घटनाओं का बहुत अधिक महत्व था। धार्मिक शासकों ने पहले ही तय कर लिया था कि यीशू के प्रभाव को फैलने से रोकने के लिए उन्हें उसको जन से मारना ही होगा (यूहन्ना 11:55-57)। येरूशलेम के बिल्कुल बाहरी इलाके में लाजर का कुछ ही समय पहले हुआ पुनर्जीवन, कुछ ऐसा था जिसके साथ धार्मिक शासक मुकाबला नहीं कर सकते थे। यीशू और उसके शिष्य शायद मरियम, मार्था और लाजर के साथ-साथ बेथानी में अन्य मित्रों के साथ आराधनालय सभाओं

में गए थे। ऐसा करने का यह उसका अंतिम अवसर होगा, क्योंकि अगले शुक्रवार को तो वह कब्र में होगा।

शनिवार, 28 मार्च, 30 ई. सब्ब का दिन था, इसलिए अधिक यात्रा नहीं हो सकी थी। मरियम ने यह भांपते हुए कि क्या होने वाला था, अपने प्रेम को दर्शाने के तरीके के रूप में यीशु का बहुमूल्य इत्र से अभिषेक किया था (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:2-8)। यह अलविदा कहने का उनका तरीका भी था। जब लालची यहूदा ने इसे पैसे की 'बर्बादी' कह कर इसकी आलोचना की, तो यीशु ने उसे डाँटा। यह यहूदा के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ प्रतीत हो रहा था, जिसने यीशु को धोखा देने के लिए अपने दिल में योजनायें बनाना शुरू कर दीया था।

अगले दिन, रविवार, 29 मार्च, 30 ई. वह दिन था जब धार्मिक शासकों ने लाजर को भी मारने की योजना बनाई थी (यूहन्ना 12:9-11)। उसकी गवाही यीशु के लिए बहुतों को प्रभावित कर रही थी। तब अंतिम प्रमुख मोड़ आया, जब यीशु ने शाब्दिक रूप से सभी को यह तय करने के लिए मजबूर किया कि क्या वे उसे स्वीकार करेंगे या अस्वीकार करेंगे। यह सोमवार, मार्च 30, 30 ईस्वी के दिन हुआ। यह ऐसा ही था जब जिम बॉवी ने अपना चाकू लिया और अलामो में गंदगी में एक रेखा खींची थी, और प्रत्येक व्यक्ति को चुनौती दी कि वह जहां पर है वहीं रहे या रेखा को पार करे। यीशु ने स्पष्ट रूप से और सार्वजनिक रूप से मसीहा-राजा होने का दावा करते हुए जैतून के पहाड़ से पूर्वी द्वार में आकर, एक नए नवेले गधे की सवारी करके, और लोगों को खजूर की शाखाओं को लहराते हुए "होसन्ना" कहने की अनुमति दी, इस प्रकार प्रतीकों का निम्नलिखित द्रष्टांतों का उपयोग किया जो स्पष्ट रूप से उसे मसीहा होने के दावे को समर्थन करते थे (मत्ती 21:1-9; मरकुस 11:1-10; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19)। यह बात सब के समझ में आ गयी थी। उसके अनुयायियों ने उसकी स्तुति की और उसका समर्थन किया, और धार्मिक शासकों ने उन्हें यह सब रोकने के लिए कहा। इस बिंदु तक यीशु ने लोगों से कहा था कि वे दूसरों को न बताएं कि वह कौन है, लेकिन अब वह हर किसी को ऐसी स्थिति में डाल रहा है जहां उन्हें या तो उसकी शोभायात्र में शामिल होना चाहिए या इसे दूर हो जाना चाहिए। केवल एक अल्पसंख्यक ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। केवल यीशु, यह जानते हुए कि यहूदियों के साथ-साथ स्वयं के लिए इसका क्या अर्थ है, जब वह शहर के निकट आया तो वह जोर-जोर से रोने लगा। लोग पिघल गए और शहर के लोगों ने आश्चर्य और संदेह के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की (मत्ती 21:10-11; मरकुस 11:11)। ओह, कुछ लोगों ने प्रतिक्रिया दी, जैसे कि मंदिर में लड़कों की गीत मंडली करती है (मत्ती 21:14-16), लेकिन नेताओं और अधिकांश लोगों ने मसीहा होने के इस दावे को खारिज कर दिया। कम से कम इसके माध्यम से यीशु ने उन्हें स्वीकार उसे करने का एक और स्पष्ट, उचित अवसर दिया था। कोई यह नहीं कह सकता था कि वह उसके दावे को नहीं जानता है। कोई नहीं कह सकता था कि वह इससे अज्ञान था। यीशु ने फिर से बैतनिय्याह में रात बिताई (मरकुस 21:17; मरकुस 11:11)।

यीशु के पास अपनी मृत्यु से पहले सेवा करने के लिए तीन दिन शेष थे, और उसने उनका पूरा उपयोग किया। मंगलवार, 31 मार्च, 30 ई. को उसने शहर में जैतून के पहाड़ के नीचे रास्ते में एक अंजीर के पेड़ को श्राप दिया (मत्ती 21:18-19; मरकुस 11:12-14)। हरे-भरे और स्वस्थ दिखने वाले इस पेड़ के करीब से निरीक्षण करने पर पता चला कि यह फल नहीं दे रहा है। यही इसके अस्तित्व का उद्देश्य था। यह एक नकली था, एक पाखंडी था। वृक्ष, निस्संदेह, इजराइल देश की एक तस्वीर थी। जब उसने मंदिर में प्रवेश किया, तो उसने एक बार फिर सर्पियों को बाहर निकाल दिया (मत्ती 21:12-13; मरकुस 11; 15-18), उसने अपनी सेवकाई को उसी तरह समाप्त किया जैसे उसने इसे शुरू किया था। उस दिन उसने जो

सुनने वाले थे उन्हें बहुत उपदेश दिया (यूहन्ना 12:20-36), फिर जैतून के पहाड़ पर रात बिताने चला गया (मरकुस 11:19)। इसने उसे सोचने और प्रार्थना करने के लिए और अधिक गोपनीय समय प्रादान किया और साथ ही साथ इसने मरियम, मार्था और लाजर से खतरे को दूर कर दिया।

यीशु और उसके शिष्यों ने बुधवार, 1 अप्रैल, 30 ई. को यरूशलेम जाते समय उस अंजीर के पेड़ को पार किया जिसे उसने एक दिन पहले श्राप दिया था। वह मुर्दा और मुरझाया हुआ था, मानो वह कई महीनों से सुखा पड़ा हुआ हो (मत्ती 21:21-22; मरकुस 11:20-25)। मंदिर के प्रांगण में प्रवेश करने पर, यीशु तुरंत धार्मिक शासकों के साथ एक लंबी और कड़वी बातचीत में पड़ गया, जिसमें सुबह का अधिकांश समय निकल जाता था (मत्ती 21:23 - 23:39; मरकुस 1:27 - 12:40; लूका 20:1- 47)। वे सार्वजनिक रूप से यीशु को बदनाम करने के तरीकों की तलाश करते रहे, लेकिन उसने उनके हर जोर को टाल दिया और अपने मुद्दे की बात करने लगा, जिससे उनके पाखंड और आत्म-केंद्रितता का पता चला चूका था। जब वह अंत में समाप्त हो गया, तो यीशु, उनकी कठोरता से थके हुए और दुखी हुए, कुछ शांत प्रतिबिंब के लिए महिलाओं के दरबार में चले गए। वहां उसने कुछ ऐसा देखा जिसने वास्तव में उन्हें उत्साहित किया। एक गरीब स्त्री ने प्रेम और भक्ति में अपना सब कुछ परमेश्वर को दे दिया था (मरकुस 12:41-44; लूका 21:1-4)। कुछ ऐसे थे जिन्होंने परमेश्वर से प्रेम किया और उसे पहला स्थान दिया था। जैसे ही उन्होंने मंदिर क्षेत्र छोड़ा, यीशु ने इसके विनाश की भविष्यवाणी की और शिष्य के प्रश्नों का उत्तर दिया कि यह कब होगा और यह कैसा होगा (मत्ती 24:1-25:46; मरकुस 13:1-37; लूका 21:5-36)। उसने उस समय तक का सबसे स्पष्ट स्पष्टीकरण दिया कि वह कब वापस आएगा।

बाद में, फिर से मंदिर में, यीशु ने उपदेश देना और शिक्षा देना जारी रखा (यूहन्ना 21:37-38)। उसने फिर से अपने सलीब पर चढ़ने की भविष्यवाणी की (यूहन्ना 22:1)। इस बीच, धार्मिक नेता यीशु की गिरफ्तारी की योजना बना रहे थे (मत्ती 26:3-5; मरकुस 14:1-2; लूका 22:20) और यहूदा को पकड़वाने की उसकी पेशकश पर पक्का कर रहे थे (मत्ती 26:14-16; मरकुस 14: 10-11; लूका 22:3-6)।

अगले दिन, गुरुवार, 2 अप्रैल, 30 ईस्वी, समय समाप्त हो जाएगा और यह सब खत्म हो जाएगा। यानि शून्य।

यीशु का अंतिम दिन

यह इस प्रकार था: वह क्षण जिसकी ओर सारा इतिहास इशारा करता आ रहा था। यह हर समय का केंद्र बिंदु था: भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना थी, जो अब तक की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी, एक ऐसी घटना जिसने सभी के लिए और हमेशा के लिए सब कुछ बदल दिया था। ऐसा जो न कभी कुछ हुआ, न कभी होगा, यह इतना महत्वपूर्ण था। यह एक था। हाँ यह एक था।

गुरुवार, 2 अप्रैल, 30 ईस्वी अन्य दिनों की तरह प्रातःकाल हुआ। शक्क की लहर एक कम्बल की तरह नगर पर शाई हुई थी (यूहन्ना 12:37-43)। यीशु ने अंतिम बार प्रचार करने के लिए मंदिर में प्रवेश किया (यूहन्ना 12:44-50)। इस बीच यीशु ने कुछ शिष्यों को फसल की तैयारी के लिए भेजा था जो गलील के लोग उस शाम को मनाएंगे (मत्ती 26:17-19; मरकुस 14:12-16; लूका 22:7-13)। अधिकांश लोग, बाकी

सभी लोग, इसे मनाने के लिए अगले दिन का इंतजार करते थे। जेठे पुरुष के रूप में, यीशु (और अन्य शिष्य) फसह की तैयारी में पूरे दिन उपवास कर रहे थे।

उस शाम सूर्यास्त के बाद चले ऊपरी कमरे में इकट्ठे हुए, जो शायद यूहन्ना मरकुस का घर था। यीशु ने कमरे में प्रवेश किया और अपनी पीडाओं से गुजरते हुए सलीब तक पहुंचने तक के लिए उनकी सहायता के लिए अपनी आवश्यकता को व्यक्त किया। इसके बजाय उसे जो कुछ मिला वह थी उनकी अपरिपक्व, आत्मकेंद्रित बहस और शिकायत। कोई भी दूसरे की सेवा नहीं करना चाहता था, और इसकी बदबू पूरे कमरे में फैली हुई थी। यीशु को उनके हृदय के साथ-साथ उनके पैर भी धोने पड़े थे, और उसे उनको आने वाली घटनाओं की चेतावनी दी (मत्ती 26:20-35; मरकुस 14:17-31; लूका 22:14-38; यूहन्ना 13:1-38)। यद्यपि किसी ने भी, यहाँ तक कि पतरस ने भी उसकी चेतावनियों को गंभीरता से न लिया। उसकी फटकार को सुनने के बजाय, वे उसके द्वारा उनको छोड़ देने की संभावना से भयभीत हो गए। उनसे मदद हासिल करने के बजाय उल्टा यीशु को उन्हें मदद देने की ज़रूरत पड़ गयी थी (यूहन्ना 14:1-31)। उसने यहूदा को एक अंतिम चेतावनी दी, और उसे अपने प्यार का आश्वासन देते हुए (उसे रोटी का टुकड़ा देते हुए) यहूदा को अपनी योजना से बचने का एक तरीका पेश किया। यहूदा ने इसे ठुकरा दिया और वहां से चला गया।

जैसे ही यह महत्वपूर्ण शाम प्रकट हुई, यीशु ने फसह के मेमे के शरीर को कुरबानी के लिए दिए जाने और बहाए गए लहू के अर्थ को आपने आप में बदल दिया: उसकी अपनी देह जो दी जानी थी और लहू जो बहाया जाने वाला था (मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; लूका 22:17-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-32)।

यह देर रात हो चुकी थी जब भोजन एक गीत (भजन) के साथ समाप्त हुआ (मत्ती 26:30; मरकुस 14:26; लूका 22:39)। जब वे यरूशलेम की अंधेरी, सुनसान सड़कों से गुज़र रहे थे, यीशु ने उन्हें अपने विदाईगी शब्द कहे: फलने-फूलने के लिए दाखलता की डाली के समान बनो (यूहन्ना 14:31-16:33)। उसने आज अपने लिए, उनके लिए और हमारे लिए भी प्रार्थना की (यूहन्ना 17:1-26)।

इतना थके होने के बावजूद जब वे गतसमनी में दाखिल हुए तो यीशु ने प्रार्थना की। वह शायद शुक्रवार, 3 अप्रैल, 30 ईस्वी पूर्व का समय था। उसे फिर से शिष्यों के सहयोग की आवश्यकता थी लेकिन वे फिर इसमें असफल रहे (मत्ती 26:36-46; मरकुस 14:32-42; लूका 22:40-46; यूहन्ना 18:1)। शीघ्र ही यहूदा यीशु को गिरफ्तार करने वाले दल का नेतृत्व करता हुआ, जो ठीक उसी स्थान पर गया था जहाँ वह जानता था कि यहूदा उसे ढूँढ़ने आएगा। जब उसने कहा "मैं हूँ" या जब जब पतरस ने एक हमले का नेतृत्व करने की कोशिश की तो वह अपनी शक्ति से गिरफ्तारी से बच सकता था। यीशु जानता था कि यह रास्ता नहीं है और उसने आसान रास्ता निकालने के प्रलोभन का विरोध किया।

लगभग 3 बजे उन्हें उनके पहले धार्मिक कचहरी में करवाई (यूहन्ना 18:12-23) के लिए हन्ना के पास ले जाया गया, फिर लगभग 4 बजे कैफा के पास (मत्ती 26:57-72; मरकुस 14:53-70; लूका 22:54-) 58; यूहन्ना 18:18, 24-25)। वे पागलों की तरह उसके विरुद्ध कोई ऐसा आरोप ढूँढ़ने के लिए छटपटा रहे थे जो टिका रहे। वे जानते थे कि निष्पक्ष सुनवाई के लिए वे अपनी पुस्तक के प्रत्येक नियम को तोड़ रहे हैं। जब यहूदा ने उन्हें सूचित किया कि यीशु को उनकी साजिश के बारे में पता है और यह उनकी मदद करने का आखिरी मौका होगा, तो उन्हें जल्द से जल्द कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ा। सुबह

लगभग 5 बजे, महासभा के चुने हुए सदस्य जो हत्रा का समर्थन करेंगे, चाहे उसने जो भी प्रस्तावित किया हो, आवश्यक प्रतीक्षा अवधि, प्रमाण, निष्पक्ष परीक्षण, कानूनी बचाव पक्ष, आदि के विपरीत होकर यीशु की निंदा करने के लिए एकत्रित हुए। (मत्ती 26:73 - 27:1; मरकुस 14:70 - 15:1; लूका 22:59-71; यूहन्ना 18:26-27)। नफरत और ईर्ष्या ने उन्हें मजबूर कर दिया। यही वह समय था जब शैतान ने यहूदा से अपना प्रभाव हटा लिया और उसे कुचल दिया। जब उसने जो कुछ किया था उसकी वास्तविकता के साथ अपराधबोध और पछतावे ने यहूदा को तोड़ कर रख दिया, तो उसने एकमात्र उपाय के रूप में, अपने जीवन को ही खत्म करना सही समझा (मत्ती 27:3-10; प्रेरितों के काम 1:18-20)।

अब लगभग सुबह के 6 बज चुके थे। यीशु को मौत की सजा पर मंजूरी प्राप्त करने के लिए पिलातुस के पास ले जाया गया, क्योंकि यहूदी रोमी हकुमत की मंजूरी के बिना ऐसा नहीं कर सकते थे। पीलातुस कुछ समय के लिए बहुत कठिन महसूस करता दिखाई दिया (मत्ती 27:2-14; मरकुस 15:1-5; लूका 23:1-5; यूहन्ना 18:28-38)। यहाँ तक कि उसने यीशु को लगभग 7 बजे (लूका 23:6-12) हेरोदेस के पास भेज दिया, लेकिन 8 बजे तक वह उसे फिर पीलातुस के सामने वापस लाया गया, जिसको अंतः दबाव में आकर ना चाहते हुए भी उसकी मौत की साजिश को मंजूरी देनी पड़ती है (मत्ती 27:15-26; मरकुस 15:6) -15; लूका 23:13-25; यूहन्ना 18:39-19:16)। जब जब यहूदी कैसर से शिकायत करते थे, पीलातुस का काम कम स्थिर हो जाता था। पिलातुस ने यीशु को लगभग इतना पीटे जाने तक की सजा दी थी यह उम्मीद करते हुए कि यहूदी इसे पर्याप्त सजा मानेंगे, फिर उसने उन्हें यीशु या बरअब्बा को छोड़ने के रूप में पेशकश के, लेकिन अन्ना द्वारा खरीदे हुए इन लोगों की भीड़ में से किसी को अपना मन बदलने का कारण नहीं दिया। सुबह 8:45 बजे यीशु गोलगोथा के रास्ते में था, दूसरों के लिए हानि के रूप में सड़कों पर लेजाया गया (मत्ती 27:31-32; मरकुस 15:20-21; लूका 23:26-31; यूहन्ना 19:16-17). सुबह 9 बजे तक वह सलीब पर था (मत्ती 27:33-37; मरकुस 15:22-26; लूका 23:33-38; यूहन्ना 19:17-22)।

सलीब पर चढ़ाना सबसे क्रूर मृत्यु थी जिसका मनुष्य अविष्कार कर सका था। यह किसी को अधिकतम समय के लिए अधिकतम मात्रा में दर्द देने को संयोजित करता था। बेहोशी या मौत से राहत नहीं मिलती थी, जबकि भयानक दर्द घंटों और दिनों तक जारी रहते थे। यीशु पर सैनिकों ने कई बार धूका, उपहास किया, घूंसे मारे और उसके सिर पर लंबे नुकीले कांटों का ताज पहनाया गया। दो दिन तक वह बिलकुल नहीं सोया था और भोजन भी केवल एक समय किया था। उसकी पीठ पर इतनी चाबुक मारी गई थी की उसके शरीर की टुकड़े उड़ते थे, जहां तक हड्डी और नसें दिखने लग गई थीं। उसके शरीर पर नमक से भरा हुआ एक वस्त्र डाल दिया गया था, जोई सलीब पर चढ़ाने के समय हिंसक रूप से खींचा गया था।

शरीर के तरल पदार्थ की कमी होने से यीशु सूख रहा था। वह गैंग्रीन से ग्रसित हो गया था। उनकी कलाई और टखनों के माध्यम से कीलें कष्टदायी पीड़ा का कारण बनीं हुई थी। फिर अपनी माँ सहित सभी के सामने नग्नता की सार्वजनिक शर्मिंदगी के साथ-साथ उपहास और ताने भी थे। सूली पर चढ़ाए जाने के कारण साँस लेने में भी तकलीफ होता था, क्योंकि हर बार जब वे साँस लेता है, तो एक व्यक्ति को आपने आप को कीलों से ऊपर खींचना पड़ता है, खुरदरी लकड़ी पे टिकी हुयी अपनी खुली पीठ को रगड़ना पड़ता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु के पास कहने के लिए बहुत कुछ नहीं था (मत्ती 27:35-50; मरकुस 15:24-37; लूका 23:34-46; यूहन्ना 19:23-39)। हालांकि, सबसे बुरा यह था कि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को वापस ले लिया और यीशु को त्याग दिया क्योंकि उसने हमेशा किए गए हर पाप के परिणामों को उस पर उंडेल दिया था। उस समय के दौरान यीशु पर नरक में अनंत काल तक अनुभव

करने वाला सब कुछ डाला गया था! जैसे ही शैतान और उसकी दुष्टात्माओं ने यीशु को सताते हुए जशन कर रहे थे, परमेश्वर और उसके दूत बेबसी से देख रहे थे। मानुषों की आत्माओं के लिए लड़ाई जारी थी। हमारा अनंत भाग्य बीच में लटका हुआ था। क्या यीशु और सहन करेगा? क्या वह कोशिश भी करेगा (वह आपने आप को बचाने के लिए कुछ स्वर्गदूतों को बुला सकता था और अपनी इस पीड़ा से छुटकारा पा सकता था)। छह घंटे तक लड़ाई चलती रही। अंत में, अपराह्न 3 बजे अब तक किए गए प्रत्येक पाप के लिए अनन्त दंड का भुगतान किया गया। परमेश्वर का न्याय संतुष्ट था। यीशु विजेता था। पृथ्वी पर उसका काम पूरा हो चुका था, 100% पूरा हो गया था। "यह समाप्त हो गया है," उसने इसकी घोषणा की और स्वेच्छा से स्वर्ग लौट गया। उसी क्षण, फसह के मेमने को वेदी पर बलि किया गया, और मंदिर का पर्दा फट गया, यह दिखाते हुए कि कीमत चुका दी गई थी और अब प्रत्येक व्यक्ति को जब भी वे चाहें परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया गया था। यह सब इससे भी अधिक यीशु के ईश्वरत्व की गवाही थी (मत्ती 27:51-54; मरकुस 15:38-39; लूका 23:45, 47)। उसके शरीर को एक कब्र में रखा गया था (मत्ती 27:55-66; मरकुस 15:40-47; लूका 23:48-56; यूहन्ना 19:31-42), लेकिन वह स्वयं हमेशा के लिए स्वर्ग में जीवित था, जहां उसने कहा था वह चोर होगाजो साथ वाली सलीब पर था ("आज तू मेरे साथ स्वर्ग में होगा")। उसने यह किया! उसने वास्तव में इसे खींच लिया! ब्रह्मांड के इतिहास में सबसे बड़ी जीत हासिल की जा चुकी थी।

एक मनुष्य ने, सारी मानवजाति के लिए लड़ते हुए, पाप, शैतान और मृत्यु को पराजित कर दिया था। सचमुच, "पूरा हुआ!"

यीशु के अंतिम घंटे

यह इस प्रकार लिखा गया है मानो की इसे यीशु के स्थान पर छोड़े गए व्यक्ति बरअब्बा ने ही लिखा हो।

"शालोम ! मेरा नाम बरअब्बा है। वास्तव में यह बार-अब्बा है। बार का अर्थ है पुत्र और अब्बा का अर्थ है पिता। मैं "पिता का पुत्र" था क्योंकि मेरे पिता एक प्रसिद्ध रब्बी थे। मेरा पहला नाम बहुत ही सामान्य था - यीशु, जो पुराने नियम में यहोशू के समान था। इस प्रकार मैं यीशु बार-अब्बा (यीशु, पिता का पुत्र) था और मैं इजराइल के संसारिक छुटकारे के लिए लड़ रहा था। मेरा जीवन की राह दूसरे यीशु, बार-यूसुफ, जो इजराइल के आत्मिक छुटकारे के लिए काम कर रहा था उसके साथ मिल गया था। हमारे रास्ते कैसे पार हो गए!

पृष्ठभूमि "मैं एक राज विद्रोही था। मैं एक गोपनीय नेता था। हम रोम के खिलाफ विद्रोह चाहते थे और जब भी हम कर सकते थे सैनिकों की हत्या कर देते थे। आज आप हमें आतंकवादी कहेंगे। हम खुद को जोशीले कहते थे।

"मैं, हर किसी के लिए नफरत और कड़वाहट से भरा हुआ था। अगर कोई हमारी तरफ नहीं था तो वह हमारा दुश्मन था। उसमें यह दूसरा यीशु भी शामिल था। मैंने पहली बार उसके बारे में शमौन जोशीले से सुना, जिसने हमें उसके शिष्यों में से एक होने के लिए छोड़ दिया था। जब उसने मुझे प्यार और शांति

के इस बेहतर तरीके के बारे में बताने की कोशिश की तो मैंने उस पर थूका और वहां से चला गया। मुझे बात करने में बहुत धिन आती थी।

“मैं उस यीशु को व्यक्तिगत रूप से कभी नहीं मिला। वह उसी जेल में था जिसमें मैं था लेकिन दूसरी जगह। उस समय जेल की कोई शर्तें नहीं होती थीं। मुकदमे तक जेल केवल एक अस्थायी जगह होती थी, और फिर किसी को कोड़े मारे जाते, कोई मार दिए जाता और कोई रिहा कर दिए जाता। वह 13 अप्रैल, 30 ई. का दिन था और मैं आपने मारे जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे गिरफ्तार कर लिया गया था और मुझे दोषी पाया गया था और उस सुबह मुझे मरना था। यह दूसरों के लिए एक उदाहरण के रूप में एक सार्वजनिक, भयानक मौत सजा होने वाली थी।

रिहाई - “मैकाबियाई समय से फसह के पर्व पर एक कैदी को रिहा करने का रिवाज़ था, जो मिस्र की गुलामी से यहूदियों की रिहाई का प्रतीक था। रोम ने इस प्रथा को आगे बढ़ाया और माना। स्पष्ट था कि पीलातुस ने दूसरे यीशु को रिहा करने के लिए इस रीती का इस्तेमाल किया था। मैं अपनी कोठरी से भीड़ की आवाज़ सुन सकता था, लेकिन पीलातुस को नहीं। मैंने सुना है कि भीड़ “बरअब्बा” का जाप करना शुरू कर देती है, फिर एक विराम के बाद “क़ूस पर चढ़ाओ! क़ूस पर चढ़ो! क़ूस पर चढ़ो! मैंने मान लिया कि मैं बर्बाद हो गया था। जैसे ही सूली पर चढ़ाये जाने की सच्चाई मेरे ऊपर आ बसी, एक ठंडी ठंड ने मुझे झकझोर कर रख दिया। मैं भी उतना ही सख्त और ठंडा था, लेकिन फिर भी मैं इंसान था! जब सैनिक मेरे सेल के दरवाज़े से घुसे और मुझे खींचकर बाहर ले गए तो मैंने मान लिया कि यह वही होने जा रहा है। जब उन्होंने एक साइड का दरवाजा खोला और मुझे बाहर गली में फेंक दिया तो मुझे विश्वास नहीं हुआ! मैं जल्दी से भागा, लेकिन बहुत दूर तक नहीं। मेरे दो दोस्त अब भी वहीं थे, जो इस दिन मारे जाने वाले थे। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं उन्हें छोड़कर जा रहा हूँ, हालांकि मैं वापस अंदर जाने वाला नहीं था। मैं बहुत उत्सुक/हैरान था कि मुझे क्यों छोड़ा गया है। क्या यह कैदियों की अदला-बदली थी? यदि हां, तो मेरी जगह पर कौन आ रहा था?

“जब मैंने देखा कि यह वही दूसरा यीशु है तो मैंने उसकी परवाह नहीं की। मैं उससे नफरत करता था। वह कमजोर था। वह भीड़ को एक सेना में बदल सकता था और रोमनों से लड़ सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। मुझे उस तरह की कायरता के लिए कोई सम्मान नहीं था। फिर भी, मेरे अंदर कुछ बदलने लगा। पहली बार जब से मैं एक बच्चा था तब से मुझे अज किसी दूसरे इंसान के लिए दया, दुख महसूस होने लगा। मुझे लगता है कि यह इसलिए है क्योंकि मैं उसके साथ पहचान बना सका था। वह मेरे क़ूस पर मेरी जगह ले रहा था।

गोलगोथा के लिए - “फिर मैंने उसे पहली बार गोलगोथा की तरफ मेरी सलीब उठाए हुए जाते देखा। यह पूरी सलीब का वजन 200 पाउंड/80 किलोग्राम था। इसके साथ परमेश्वर की ओर से एक भयानक श्राप मिला हुआ था (व्यवस्थाविवरण 21:23)। बेशक उन्होंने शहर से बाहर निकलने से पहले, उसे और मेरे दो दोस्तों को लंबा रास्ता तय कराया, सड़कों पर ऊपर और नीचे गुमाया की। यह इतना ज्यादा था कि वे उन्हें देख सकते थे। उनके अपराध तख्तियों पर लिखे गए थे जिन्हें आगे आगे ले जाया जा रहा था, फिर उनकी सलीबों पर कीलों से ठोंक दिया गया था। अजीब बात है, उनका सारा कहना था कि वह “यहूदियों का राजा” था।

“शहर के बाहर जाना बहिष्करण, परमेश्वर द्वारा अस्वीकृति को चित्रित करता है। वहीं ‘बलि का बकरा’ भेजा जाता था। मुझे आश्चर्य हुआ कि कोई व्यक्ति जो परमेश्वर होने का दावा करता है, वह इसे कैसे

संभालेगा। इससे पहले कि वह वहाँ पहुँचे, हालाँकि, यह सब उसके लिए शारीरिक रूप से बहुत अधिक था इसलिए कुरेनी के शमौन को काम में लगाया गया था।

निष्पादन- "गोलगोथा एक भयानक जगह थी! इसका मतलब 'खोपड़ी' था, और वह स्थान ऐसा दिखता भी था। हर तरफ मौत की गंध और आभास था। हालाँकि, एक मादक पदार्थ (पित्त या लोहबान) चढ़ाकर कुछ दया दिखाई जाती थी। आश्चर्यजनक रूप से यीशु ने इसे अस्वीकार कर दिया। इसने मुझे हैरान कर दिया।

"मैंने देखा कि उसे नंगा करके लकड़ी में पीछे की ओर फेंक दिया गया था। जैसे ही उसकी कच्ची, खून से लथपथ पीठ खुरदरी लकड़ी से टकराई, मैंने अपने आप को ना चाहते हुए भी वहाँ से हटा लिया। मैं दूर हो गया क्योंकि उसकी बाँहें फैली हुई थीं और कीलें ठोंकी गई थीं, और फिर उसके पैर भी। वह मेरी सलीब थी। वहाँ मुझे होना चाहिए था.....

"सलीब को उठा लिया गया था और एक झटकेदार धमाका के साथ उसके लिए बनाये गए गढ़े में गिरा दिया गया था। वहाँ वही था। उसके हाथ और घुटने थोड़े मुड़े हुए थे ताकि वह अपने फेफड़ों में हवा भरने के लिए खुद को ऊपर खींच सके। शायद सलीब पर चढ़ाए जाने की हालत के बारे में आज के डॉक्टर के अनुसार सही उद्धारण दे रहा हूँ।

"सलीब को जमीन पर रखा जाता है और थके-टूटे हुए आदमी को जल्दी से अपने कंधों को लकड़ी पर पीछे की ओर फेंक दिया जाता है। सेनापति कलाई के सामने हिस्से पर वसाद दुःख को महसूस करता है। वह कलाई बीचो बीच लकड़ी में एक भारी, चौकोर लोहे की कील ठोकता है। जल्दी से वह दूसरी तरफ जाता है और फिर यही काम करता था, सावधानी बरतते हुए कि बाहों को बहुत कसकर न खींचे, लेकिन इसमें कुछ लचीलेपन और हलचल की अनुमति दें। फिर सलीब को उस जगह में उठा लिया जाता है। बाएं पैर को दाहिने पैर के ऊपर पीछे की ओर दबाया जाता है, और दोनों पैरों को फैलाकर, पैर की उंगलियों को नीचे करके, प्रत्येक के बीचो बीच एक कील ठोंक दी जाती है, जिससे घुटने मुड़ जाते हैं। पीड़ित को अब सलीब पर चढ़ाया गया है। जैसे-जैसे वह कलाई में नाखूनों पर अधिक भार के साथ धीरे-धीरे झुकता जाता है, उँगलियों के साथ-साथ तेज दर्द की अंदरूनी पीड़ा उठती है और मस्तिष्क में विस्फोट करने के लिए बाँहों में फैल जाती है- कलाई में कील मध्य नसों पर दबाव डाल रहे हैं। जैसे ही वह इस खिंचाव की पीड़ा से बचने के लिए खुद को ऊपर की ओर धकेलता है, वह अपने पैरों के माध्यम से कील पर पूरा वजन डालता है। वह फिर से अपने पैरों की हड्डियों के बीच की नसों को चीरते हुए कील की दर्द भरी पीड़ा को महसूस करता है। बाहों की थकान के रूप में, ऐंठन उसकी मांसपेशियों के माध्यम से तैरती है, उसे गहरी अथक, और धड़कते दर्द में उलझा देती है। इन ऐंठन के साथ सांस लेने के लिए खुद को ऊपर की ओर धकेलने में बेहद कमजोरी आ जाती है। हवा को फेफड़ों में खींचा जा सकता है लेकिन बाहर नहीं निकाला जा सकता है। वह एक छोटी सी सांस लेने के लिए खुद को ऊपर उठाने के लिए संघर्ष करता है। अंत में, कार्बन डाइऑक्साइड फेफड़ों और रक्त प्रवाह में बनना शुरू होता है, और ऐंठन आंशिक रूप से कम हो जाती है। बीच बीच में, वह साँस छोड़ने और जीवन देने वाली ऑक्सीजन लाने के लिए खुद को ऊपर की ओर धकेलने में सक्षम होता है। असीम दर्द के घंटे, तोड़े मरोड़े जाने का चक्र, जोड़ों में अत्यंत कष्ट की ऐंठन, बीच बीच में आक्सीजन का खतम होना, हृदय से ज्यादा दर्द का दर्द उसकी फटी हुई पीठ से फटता हुआ जैसे वह लकड़ी से रगड़कर ऊपर और नीचे चलता है। फिर एक और पीड़ा शुरू होती है: एक गहरा, कुचलने वाला दर्द छाती में गहरा होता है क्योंकि

पेरिकार्डियम(दिल के उपपर की लेयर) धीरे-धीरे धतू से भर जाता है और हृदय को सिकोड़ना शुरू कर देता है। यह अब लगभग खत्म हो गया है - ऊतक तरल पदार्थ की कमी एक नाजुक स्तर पर पहुंच गई है - सुकड़ा हुआ हृदय टिशू लेयर में भारी, मोटे, ठंडे खून को पंप करने के लिए संघर्ष कर रहा है - प्रताड़ित फेफड़े हवा के छोटे घूंटों में हांफने के लिए बेअसर प्रयास कर रहे हैं . वह अपने माँस्पेशियों में से रेंगती हुई मौत की ठंडक को महसूस कर सकता है... अंत में, वह अपने शरीर को मरने की अनुमति सकता है..."

इसलिए वह अधिक बात नहीं कर रहा था, और जब वह बात करता था , तो वह दूसरों के लिए करता था : उन लोगों के लिए जो सलीब पर चढ़ा रहे थे, और मेरे एक मित्र के लिए जो उसके साथ वहां था और उसकी अपनी मां की सहायता के लिए ।

अंत आता है- "फिर आधी रात की तरह अंधेरा हो गया। यहां तक कि मैं हवा में एक भयंकर ठंडक महसूस कर सकता था। भले ही मैं उन में विश्वास नहीं करता था, फिर भी मैं यह सोचने में मजबूर था कि शैतान और उसके राक्षस हर जगह थे, वे उस पर हमला कर रहे थे जब वह मेरी जगह लटका हुआ था। वह चिल्लाया, सचमुच चिल्लाया, कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है। मुझे बाद में पता चला कि उस दौरान वह वास्तव में नरक में मेरी जगह ले रहा था। फिर, 3 घंटे की अंधेरी यातना के बाद, उसे शांति मिली। उसने कहा कि उसका काम पूरा हो गया था और ऐसा लग रहा था कि वह स्वेच्छा से मर गया है। तब सूरज फिर से चमका, लेकिन उसी क्षण भूकंप आ गया। शैतान और पाप पराजित हो चुके थे। स्त्री के वंश ने वास्तव में सर्प, जो स्वयं शैतान है उसको को हरा दिया था (उत्पत्ति 3:15)। क्या ही समय था ! मेरा मतलब , इसने वास्तव में मुझे छू लिया। उसने मेरी जगह ले ली, आप जन सकते हैं कि मेरा इससे क्या मतलब है?

22एफ पुनरुत्थान

30 ईस्वी का पतझड़

मत्ती 28:1-20, मरकुस 16:1-20, लूका 23:56-24:53, यूहन्ना 20:1-12:25

दुनिया के इतिहास में अब तक के सबसे बुरे दिन के तीन दिनों के बाद , आज तक का यह सबसे अच्छा दिन साबित हुआ ! यीशू जो जीवन में वापस आ चुका था ,उस ने अपने आप को अपने शिष्यों और अनुयायियों पर प्रकट किया था । पाप और मृत्यु को हमेशा के लिए जीत लिया गया था, और सभी उस महिमाभरे सत्य में आनन्दित थे।

हर वो कहानी जिसका अंत सुखद हो सब को पसंद आती है। दुर्भाग्य से जीवन की कई कहानियों का अंत सुखद नहीं होता है। इसका है। क्या कभी! इसे अब तक की सबसे महान कहानी कहा गया है। यह निश्चित रूप से इसको तक का सबसे महान अंत बताया गया है। यह हमारे लिए महान है, हमारे दृष्टिकोण से बहुत अच्छा है, क्योंकि जैसे हम शुरुआत के देखते हैं हमउसी तरह अंत को भी स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यरूशलेम में रविवार, 5 अप्रैल, 30 ई. को तो यीशु के मित्रों और शिष्यों को अंत का पता नहीं था ।

जब यीशु की मृत्यु हुई और उसे दफनाया गया, तो उन्होंने सोचा कि यह उनकी सभी आशाओं और सपनों का अंत है। जिन लोगों को यीशु के फिर से उठने की प्रतिज्ञा की बात याद थी, वे धार्मिक शासक थे, जिन्होंने कब्र को सील कर दिया और रोमन सैनिकों के एक रक्षक मंडली को बाहर तैनात कर दिया था ।

शुक्रवार को 3 बजे दुपहर से सूर्यास्त (1 दिन) तक सब कुछ शांत था और सूर्यास्त शुक्रवार से सूर्यास्त शनिवार (2 दिन) तक सब्त था। आंदोलन और गतिविधि गंभीर रूप से सीमित थी। सूर्यास्त के बाद शनिवार (तीसरा दिन) महिलाएं यीशु के शरीर को सुगंधित मसालों से ढकने के लिए कब्र पर वापस जा सकती थीं (क्षय से आने वाली बदबू को खत्म करने के लिए)। रात का सफर खतरनाक था। फिर भी, महिलाएं दिन के उजाले से पहले जल्द से जल्द कब्र पर जाने के लिए निकल गईं (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1; लूका 24:1; यूहन्ना 1)। उन्हें सील और पहरेदारों के बारे में पता भी नहीं था। मुझे नहीं पता कि उन्होंने बड़े पत्थर को कैसे स्थानांतरित करने की उम्मीद की थी!

परमेश्वर, उनकी जरूरतों को उनके जानने से पहले ही जानता था। रात के दौरान उसने सैनिकों को डराने (मत्ती 28:11-15) और पत्थर को हटाने के लिए एक स्वर्गदूत भेजा - यीशु के बाहर निकल जाने के नहीं बल्कि महिलाओं को अंदर आने देने के लिए ! जब वे चल रहे थे तो महायाजक प्रथम फल के उत्सव पर हैकल के फटे परदे के सामने जौ फसल का पूला हिला रहा था। यह पहली फसल थी, और वादा था इसके और आने का। हमारे लिए यीशु का पुनरुत्थान बिलकुल यही चीज है।

खैर, जब औरतें कब्र पर पहुँचीं तो उन्होंने पाया कि पत्थर तो हटा पड़ा है क्योंकि दो स्वर्गदूत कब्र के अंदर और एक बाहर था । वे चौंक गईं ,, डर गईं, भ्रमित हो गईं। "डरो मत, वह यहाँ नहीं है, वह अपने कहे अनुसार जी उठा है!" यह उनके लिए एक कोमल आदेश और उनको कुछ याद दिलाने का वचन था। उसे पुनर्जीवित नहीं किया गया था, कि जब वह बूढ़ा हो जाता तो और फिर मर जाता था। वह पुनरुत्थित हुआ था - उसके पास एक महिमा भरा नया शरीर था। उलझन में पड़ी , महिलाएं ऊपरी कमरे में लौट आईं और पतरस और यहून्ना से कहने लगी कि किसी ने यीशु के शरीर को चुरा लिया है! हालात बद से बदतर हो गए थे! यहून्ना ने पतरस को दौड़ते हुए पीछे छोड़ दिया क्योंकि वह जवान था और पहले पहुँच गया था। उसने बाहर रुक कर इधर-उधर देखा। जब पतरस आया तो वह तुरंत अंदर चला गया लेकिन भ्रमित हो गया था और यह भी नहीं जानता था कि क्या सोचा जाए। तब यहून्ना ने भीतर

जाकर देखा कि यीशु की चादर कोकून की नाई ढँकी हुई है, और वहीं पड़ा है, मानो कि भीतर का मनुष्य भाफ बन कर गायब हो गया हो। सिर के सेफ को बड़ी सफाई से मोड़ा गया था और किनारे पर रख दिया गया था। जबकि यूहन्ना को अभी भी पुनरुत्थान के बारे में यीशु की भविष्यवाणियां याद नहीं आ रही थी, उसने महसूस करना शुरू कर दिया था कि संकेत इस तथ्य की ओर इशारा कर रहे थे कि यीशु जीवित था (मत्ती 28:2-7; मरकुस 16:2-8; लूका 24:2-8) यूहन्ना 20:1)। यह सोचते सोचते वे वापस ऊपर वाले कमरे में चले आए।

इस बीच मरीयम मगदलीनी, महिलाओं की अविवाहित नेता थी, जिस में से सात दुष्टात्माएँ निकाली गई थीं, यूहन्ना और पतरस के पीछे-पीछे कब्र पर वापस जाने लगी थीं। वह बहुत धीमी गति से यात्रा कर रही थी और बेकाबू रो रही थी। उसने एक अलग रास्ता लिया होगा, क्योंकि जब वे वापस लौटे तो उसने पुरुषों को नहीं देखा था। जब वह कब्र पर पहुंची तो वह बस वहां होना चाहती थी जहां यीशु आखिरी बार गया था, उसके साथ जिससे वह बहुत प्यार करती थी थोड़ा बहुत जुड़ने का उसका यही तरीका था ! स्वर्गदूतों में से एक ने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही है। फिर यीशु ने स्वयं उससे वही बात पूछी। उसने, यह सोचते हुए कि वह माली था जिसने यीशु के शरीर को लिया था, पूछा कि वह कहाँ है ताकि वह उसे मिल सके। "मरीयम" यीशु ने कहा और वह तुरंत जान गई कि वह कौन था। वह अपने घुटनों पर गिर गई और उसे गले लगा लिया, इस इरादे से कि वह उसे फिर कभी अपनी दृष्टि से ओझल न होने देगी ! यीशु को उसे बताना पड़ा कि चीजें बदल गई थीं और वह शारीरिक रूप से उससे मिली नहीं रह सकती थी जैसा वह पहले मिलती थी (मरकुस 16:9; लूका 24:12; यूहन्ना 20:2-18)।

मरीयम मगदलीनी के बारे में चिंतित अन्य महिलाओं ने कब्र तक उसका पीछा करना शुरू कर दिया। जब वे पहुंची तो उन्होंने वही देखा (मत्ती 28:8-10; मरकुस 16:10-11; लूका 24:9-11)। वे आदमियों को यह बताने के लिए लौटीं थी जो हुआ था, लेकिन आदमियों को बहुत संदेहवादी थे।

कुछ समय बाद, पतरस स्वयं ही बाहर चला गया होगा, क्योंकि यीशु उसे व्यक्तिगत रूप से दिखाई दिया था (1 कुरिन्थियों 15:5)। यह उसके लिए मेल-मिलाप का अद्भुत समय रहा होगा। आखिर, जब उसने यीशु को आखिरी बार देखा था, तो उसने इनकार किया था कि वह उसे कभी जानता भी नहीं था! इस मुलाकात के बारे में कुछ भी दर्ज नहीं है, क्योंकि यह यीशु और पतरस के बीच का एक निजी समय था।

22जी स्वर्गरोहण और वर्तमान 30 ईस्वी के पतझड़ - वर्तमान

मरकुस 16:19-20, लूका 24:44-53, प्रेरितों के काम 1:4-11

अपने पुनरुत्थान के चालीस दिनों के बाद, यीशु शारीरिक रूप में अपने चेलों की आँखों के सामने स्वर्ग में चढ़ गया। यह इस बात का आश्वासन था कि वह स्वर्ग में था और अपने स्वर्गीय सिंहासन से अपनी देह, कलीसिया की अगुवाई करेगा। वहाँ वह हमारे लिए प्रार्थना करता है, हमारी रक्षा करता है और पृथ्वी पर अपना कार्य उन लोगों के द्वारा जारी रखता है जो उसकी सेवा करते हैं।

सभी चले आखिरी बार यरूशलेम में इकट्ठे हुए और जैतून के पहाड़ पर बैतनिय्याह शहर से बाहर चले गए। वे वहाँ कई बार गए थे और जब वे जा रहे थे तो अच्छी और बुरी दोनों तरह की यादें उनके दिमाग में चल रही थीं। वे जानते थे कि यही वह स्थान था जहाँ परमेश्वर की शिकनाह "महिमा" (उसकी शाब्दिक उपस्थिति) स्वर्ग में चढ़ गयी थी जब उसने यहजेकेल के समय में मंदिर को छोड़ा था। वे यह भी जानते थे कि यीशु ने कहा था कि वह एक दिन फिर से पृथ्वी पर आएगा, और यही वह स्थान होगा जहाँ उसका पैर जमीन को छूएगा! वे जानते थे कि वह जल्द ही जाने वाला है, लेकिन वे उसके बिना कैसे काम चलाएंगे? उन्हें उसकी बहुत जरूरत थी। वे उसके बिना आगे नहीं बढ़ सकते थे। जैसा कि अक्सर पिछले वर्षों में होता रहा था, यीशु उनके प्रश्न का उत्तर उनके पूछने से पहले ही दे देता था। यह अजीब बात थी कि वह उनके विचारों को कैसे पढ़ सकता था - लेकिन फिर वह परमेश्वर है, है ना? उसने जल्दी से उन्हें याद दिलाया कि पवित्र आत्मा, जिसके बारे में वह अक्सर बात करता था (खासकर सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले की रात के अंतिम भोज में), उनमें वास करेगा और वह करेगा जो वह उनके लिए किया करता था - और इससे भी अधिक करेगा! उसने उनसे कहा कि वे यरूशलेम में पवित्र आत्मा के आने की प्रतीक्षा करें। तब पवित्र आत्मा उन्हें दिखाएगा कि आगे क्या करना है। उनमें उसकी उपस्थिति रहने से वे अच्छी तरह से प्रबंधन करने में सक्षम होंगे।

जब वह ये बातें कह ही रहा था, तो वह स्वर्ग पर चढ़ने लगा। उसने अभी ऊपर जाना शुरू किया ही था और तुरंत सभी शिष्यों को पता चल गया कि यह अलविदा का समय है। यह उस समय की तरह नहीं था जब वह अस्थायी रूप से चला गया था। यह एक अध्याय का अंत और दूसरे का शुरू था।

फिर से उनके सवालियों का अनुमान लगाया गया और उनका जवाब दिया गया - इस बार 2 स्वर्गदूतों ने कहा कि यीशु निश्चित रूप से वापस आएगा, और यह ठीक उसी तरह होगा जैसे वह गया था। बाद में, जब पवित्र आत्मा आया और उन सब में वास किया, तो उसने शिष्यों को इन बातों को याद रखने में मदद की जैसा कि यीशु ने कहा था कि पवित्र आत्मा करेगा।

शिष्यों को अन्य शब्द याद आए जो उसने उनसे उस समय कहे थे जब उन्होंने आखिरी बार ऊपरी कमरे में एक साथ भोजन किया था। "तुम्हारा मन व्याकुल न हो। परमेश्वर पर भरोसा रखो, मुझ पर भी भरोसा रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता। मैं वहाँ तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो: जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ का मार्ग तुम जानते हो। (यूहन्ना 14:1-4) यह जानते हुए कि वह उनको आपने साथ आकर रहने के लिए एक जगह तैयार करने जा रहा था, उन्हें बहुत तस्सली मिली। यह इस का और अधिक भी आश्वासन था कि वे उसके साथ अनंत काल व्यतीत करेंगे! यह जानना कि जो आने वाला है वह वास्तव में हमें भविष्य में हमारे लिए जो कुछ भी हो सकता है उसका सामना करने में मदद कर सकता है!

स्वर्गारोहण के समय उन्होंने यीशु की उपस्थिति को खो दिया, परन्तु उन्होंने जितना खोया उससे कहीं अधिक प्राप्त किया। वह हमारे दरमियाँन रहने के बजाय, तब पवित्र आत्मा के माध्यम से अपने लोगों के अंदर रहने लगा। यह उन सभी के लिए एक सत्य है जो उस पर अपना विश्वास रखते हैं। यीशु को कलीसिया का सिर होने के लिए स्वर्ग जाना पड़ा (इब्रानियों 10:12, 13; इफिसियों 4:8, 10; भजन संहिता 68:1) और इसके साथ ही साथ पवित्र आत्मा भेजने के लिए भी (यूहन्ना 16:7, 14; प्रेरितों के काम 2: 33; यूहन्ना 14:16-19)। अब जबकि वह स्वर्ग में है, वह हमारा मध्यस्थ और रक्षक है, वह परमेश्वर के दाहिने हाथ बिराजमान होकर हमारे लिए विनती करता है (रोमियों 8:34; इब्रानियों 6:20)। इसलिए वह अभी हमारे अंदर है और जब हम मरेंगे तो हम हमेशा के लिए उसके साथ रहेंगे! कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इसे कैसे देखते हैं, यह एक अच्छा बात है!

बाइबिल अवलोकन 23

पतरस



मुख्य घटना : प्रारंभिक कलीसिया की शुरुआत



प्रेरितों के काम : प्रारंभिक कलीसिया



शीर्षक: पवित्र आत्मा के कार्यों के आधार पर
लेखक: लूका

लेखन की तिथि : लगभग 63 ईसवी

लेखन का स्थान: विभिन्न स्थान

शामिल समय: 30-60 ई

प्राप्तकर्ता: थियोफिलस, हर कोई

प्रमुख आयत : "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और तुम यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे।" (प्रेरितों के काम 1:8)

मुख्य शब्द: "पवित्र आत्मा" (54 बार); "नाम" (33 बार), "गवाह" (12 बार)

उद्देश्य: सुसमाचारों में यीशु के सांसारिक जीवन के तथ्य जो शामिल हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रारंभिक कलीसिया की शुरुआत के बारे में कहानी को जारी रखती है और पत्रियों को समझने के लिए पृष्ठभूमि निर्धारित करती है।

विषय: जी उठे प्रभु के कार्यों ('कृत्यों') के रिकॉर्ड को जारी रखना।

पुराना नियम एक उद्धारकर्ता के लिए हमारी आवश्यकता को दर्शाता है और इसके साथ ही एक उद्धारकर्ता को भेजने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा को दर्शाता है। सुसमाचार दिखाते हैं कि यह सब कुछ यीशु में पूरा कैसा हुआ। प्रेरितों के काम की पुस्तक यीशु के स्वर्गारोहण के बाद की कहानी को उठाती है (1:1-26)। यह दिखाती है कि कैसे मुट्ठी भर विश्वासियों ने, पवित्र आत्मा से भरकर, कलीसिया की शुरुआत की और दुनिया में परमेश्वर के संदेश को फैलाया। पत्रियाँ प्रेरितों के काम के समय में कलीसियाओं और व्यक्तियों को लिखे गए पत्र हैं। प्रकाशवाक्य सभी युगों की अंतिम पूर्ति को दर्शाता है।

लेखक लूका- लूका ने लूका और प्रेरितों के काम दोनों पुस्तकें लिखी है। जबकि पौलूस ने नए नियम में सबसे अधिक किताबें लिखी हैं, 13, और यहून्ना ने साथ दूसरे स्थान पर बने रहते हुए 5, लूका ने ने सबसे अधिक पत्र लिखे। प्रेरितों के काम नामक उसकी पुस्तक उसके दल्वारा लिखे गए लूका के सुसमाचार की अगली करवाई थी। यह एक ऐतिहासिक पुस्तक है, एक संक्रमणक पुस्तक है। यह हमारे लिए प्रत्येक विवरण में लागू करने के लिए धर्मशास्त्र नहीं है, बल्कि यह व्यवस्था से अनुग्रह तक, इज़राइल से कलीसिया तक, यहूदियों और अन्यजातियों से मसीह की दुल्हन तक संक्रमण का एक सटीक ऐतिहासिक दस्तावेज है। किसी भी बदलाव में समय लगता है और यह विभिन्न चरणों से गुजरता है। यह आरम्भिक कलीसिया के बारे में भी यही सच था।

यह पुस्तक 1:8 में दी गई रूपरेखा का अनुसरण करती है: "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और तुम यरूशलेम में और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे।"

I. "यरूशलेम" (1-7) प्रेरितों के काम के पहले भाग में ध्यान यरूशलेम पर है। (1)पतरस आरम्भिक कलीसिया की अगुवाई करता है। (2)इस विवरण को यीशु के स्वर्गारोहण के साथ शुरू किया गया है।

यरुशलम में शुरुआती कलीसिया की शुरुआत दर्ज की गई है - पेंटेकोस्ट। (3) युवा चर्च की घटनाओं को फिर सूचीबद्ध किया गया है: एक अपंग ठीक हो गया। (4) पतरस और यहूना गिरफ्तार होते हैं और रिहाकिये जाते हैं। (5) हनन्याह और सफीरा आपने धोखे के कारण मर जाते हैं। (6) काम के बोझ के साथ मदद करने के लिए 7 उपयाजक चुने जाते हैं। (7) स्तिफनुस की मृत्यु।

II. "यहूदिया और सामरिया" (8-12) परमेश्वर ने यरूशलेम में मसीहीयों के खिलाफ उत्पीड़न की इस पहली लहर का इस्तेमाल किया ताकि वे सुसमाचार के साथ तितर-बितर हो सकें। उन्हें ऐसा पहले करना चाहिए था लेकिन उन्होंने नहीं किया था, अब उन्हें करना यह काम करना ही होगा। (8) सामरिया में फिलिप का प्रचार और इथियोपी खोजे, (9), पौलूस का परिवर्तन (10), और गैर-यहूदी कुरनेलियुस और उसके घराने को पतरस द्वारा सुसमाचार का प्रचार (10-11) में ऐतिहासिक तत्व शामिल हैं। कलीसिया यरूशलेम में रहने वाले यहूदियों से पूरे फिलिस्तीन में रहने वाले यहूदियों और अन्यजातियों तक फैल गयी है।

III. "पृथ्वी के अंत तक" (13-28) इस तीसरे खंड में ध्यान पौलूस और उनकी मिशनरी यात्राओं पर जाता है - उनमें से 3 (13 - 20)। पौलूस वह व्यक्ति था जिसने सुसमाचार को अन्यजातियों तक पहुँचाया था और एशिया माइनर और यहाँ तक कि यूरोप में भी कलीसियाएँ शुरू की थी। पुस्तक पौलूस की गिरफ्तारी और परीक्षण के लिए रोम की यात्रा (21-28) के साथ समाप्त होती है। अपनी रिहाई के बाद उसने यात्रा करना जारी रखा, फिर रोम में शहीद हो गया। अब हमारी बारी है कि हम सुसमाचार लें और इसे फैलाएं। जैसे रिले दौड़ में, हर एक की अपनी भूमिका निभाने की बारी होती है। अब इस पीढ़ी के हिस्से के रूप में आपकी बारी है। मिशाल को मत गिराओ!

पाठ	1-7	8-12	13-28
क्षेत्र	येरूशलेम	यहूदिय-सामरिया	पृथ्वी के अंत शोर तक
लोग	यहूदी	सामरी	अन्य जातियाँ
मनुष्य	पतरस	फिलिपुस (पतरस / पौलूस)	पौलूस
कलीसिया	स्थापित	अतिरिक्त क्षेत्र	फैलना
समय	2 वर्ष (33-35 ईस्वी)	13 वर्ष (35-48)	14 वर्ष (48-62 ईस्वी)
	1. यीशू का स्वर्गरोहण 2. पवित्र आत्मा का बप्तिस्मा 3. अपांग को चंगा करना 4. पतरस और यहूना की रिहाई 5. हन्नैया और सफीर द्वारा छल/धोखा 6. साथी, 7 उपयाजक 7. स्तिफनुस की कब्र	मिशनरी यात्रा पाठ वर्ष 8. फिलिपुस का प्रचार करना 9. पौलूस की परिवर्तन 10-11 पतरस मार्गदर्शक के रूप में 12. लोगों का प्राथना करना	पहली मिशनरी यात्रा 13-14 दूसरी मिशनरी यात्रा 16-18 तीसरी मिशनरी यात्रा 19-20 रोम 21-28 दौरा रोम ... 1 1/2 Gal 1 5 2 1/2 4 5 5 1 ... 1 थि स्लो 1 कुर. 1 इ फी 1 तीमो. 2 तीमो 2 थि स्लो 2 कुर रोमि ओ फि लप. तीतु स तीमो पुस्तकें याकूब मरकुस प्रइता काम मत्ता लू का इब्रान आन यहूदा यहूना 1 यहूना 2

							1 पतरस 2 पतरस	यहुन्ना 3 य हु न्ना प्रका स.

प्रेरितों के काम की रूपरेखा

I. स्थापना (यरूशलेम में यहूदियों के लिए पतरस) ईस्वी 33-35 1-7

- क- यीशु का स्वर्गारोहण 1
- ख- पवित्र आत्मा का बपतिस्मा 2
- ग - अपंग का चंगा होना 3
- घ - पतरस और यहून्ना कारिहा होना 4
- ङ- हनन्याह और सफीरा द्वारा धोखा 5
- च- साथी , 7 उष्याज्क 6
- छ- स्टीफन की जी कब्र 7

II. विस्तार (फिलिपूस से सामरिया में सामरी) ई. 35-48 8-12

- क- फिलिपूस का प्रचार 8
- ख- पौलूस का परवर्तन 9
- ग- पतरस एक मार्गदर्शक के रूप में 10-11
- घ - प्रार्थना करते लोग 12

III. विस्तार (पौलूस का हर जगह अन्यजातियों के लिए जाना) ई. 48-62 13-28

- क- पहली मिशनरी यात्रा 13-14
- ख- येरूशलेम परिषद 15
- ग - दूसरी मिशनरी यात्रा 16-18
- घ - तीसरी मिशनरी यात्रा 19-20



- ङ- रोम की यात्रा 21-28

याकूबः सत्य विश्वास



शीर्षक: लेखक के नाम पर

लेखक: जेम्स, यीशु का आधा भाई

लेखन की तिथि: 45 ईस्वी (नए नियम की पहली पुस्तक)

लेखन का स्थान: येरूशलेम

समय शामिल : 45 ईस्वी

प्राप्तकर्ता: हर जगह के यहूदी जो यीशू के विश्वासी हैं

प्रमुख आयत: "अरे मूर्ख मनुष्य, क्या तू प्रमाण चाहता है कि कर्म के बिना विश्वास व्यर्थ है?" 2:20

मुख्य शब्द: "विश्वास" (16 बार); :कार्य : (15 बार)

उद्देश्य: यह कि याकूब हर जगह रहने वाले यहूदी विश्वासीयों के साथ संवाद कर सके। यदि उद्धार कार्यों के द्वारा नहीं था, तो मसीही जीवन में अच्छे कार्यों की क्या भूमिका थी?

विषय: सच्चा विश्वास सच्चे कार्यों को उत्पन्न करता है।

मान लीजिए कि आपके चर्च में कोई गिर गया है और उसमें कोई शारीरिक हलचल नहीं है। आपको कैसे पता चलेगा कि वे मर गया है ? आप जीवन के संकेतों की जाँच करेंगे: उसकी नब्ज और साँस की जाँच करेंगे। जब साँस चलती है तो इसका मतलब जीवन है, जब साँस नहीं चलती है तो इसका मतलब जीवन नहीं है। याकूब कहता है कि यही बात आत्मिक रूप से भी सत्य है। कोई कैसे पता लगा सकता है दुसरे के शरीर में आध्यात्मिक जीवन है या नहीं? यदि अच्छे कार्य हैं तो जीवन है, यदि अच्छे कार्य नहीं हैं तो

इसका मतलब आध्यात्मिक जीवन नहीं है। यह पटा लगन इतना आसान है। "कार्यों के बिना विश्वास मुर्दा है" यह, याकूब का विषय है।

विश्वास और कार्य - याकूब की पत्नी नए नियम की सबसे पहली लिखी गयी पुस्तक है। चार सौ साल का मौन टूट गया है। मलाकी के बाद से कुछ भी प्रेरित नहीं हुआ है। अब परमेश्वर का आत्मा फिर से मनुष्य को लिखने के लिए प्रेरित करता है। उनकी पहली समस्या है अनुग्रह और कार्यों का संबंध। दूसरी पुस्तक, गलातियां है जो इसी विषय के बारे में लिखी गई है। प्रत्येक जन हृद से बचना चाहता है।

अब जबकि बिना किसी यहूदी व्यवस्था का पालन किए मसीही बन सकते हैं, तो पवित्र जीवन का स्थान क्या रह जाता है? यदि इसे मुक्ति नहीं मिलती है, तो एक ईश्वरीय जीवन क्यों जियें? यदि उद्धार मुफ्त है, तो इससे क्या फर्क पड़ता है कि हम कैसे भी जीते हैं? अच्छे कार्य हमारे उद्धार को अर्जित नहीं करते हैं, लेकिन वे दिखाते हैं कि हमारे पास पहले से ही उद्धार है। वे विश्वास के चिन्ह हैं। यदि विश्वास सच्चा है, तो यह व्यक्ति के जीने के तरीके में प्रकट होगा। विश्वास के द्वारा उद्धार का परिणाम, बदली हुई प्राथमिकताओं, ईश्वरीय उद्देश्यों, विनम्रता, प्रेम, गवाही देने की इच्छा और यीशु के समान जीवन में दिखाई देता है।

याकूब मनुष्य - यीशु का भाई था। जब यूहन्ना का भाई याकूब मारा गया, तो वह यूहन्ना के साथ, यरूशलेम में आरम्भिक कलीसिया का अगुवा बना। यह याकूब यीशु के साथ बड़ा हुआ लेकिन उसने तब तक विश्वास नहीं किया जब तक कि उसने पुनरुत्थान के बाद अपने आधे भाई यीशु को देख ना लिया था।

I. सच्चा विश्वास और परीक्षण (1 - 2)- याकूब परीक्षण और परीक्षाओं के दौरान विश्वास के बारे में बात करते हुए शुरू करता है। यह कहना एक बात है कि हम ईश्वर में विश्वास करते हैं और उस पर भरोसा करते हैं, यह कहना दूसरी बात है कि जीवन दर्दनाक और अनुचित है। यह दिलचस्प है कि याकूब को दर्द की समस्या से निपटते हुए नए नियम की शुरुआत करनी चाहिए थी। पुराने समय के परीक्षण की सत्य कथा की पहली पुस्तक, अय्यूब, उसी विषय के बारे में है! सच्चा विश्वास बाधाओं पर विजय प्राप्त करता है।

II. सच्चा विश्वास और बात (3)- सच्चा विश्वास दिखाने का दूसरा तरीका हमारे शब्दों से है। चूंकि वे दिखाते हैं कि हमारे दिल में क्या है, जब हमारा दिल बदलेगा तो हमारी बातचीत भी बदल जाएगी। जब हम परमेश्वर की बुद्धि को खोजते हैं तब हम यीशु के समान अधिक बनते हैं और हमारा जीवन इसे सभी क्षेत्रों में दिखता है। हमारे जीवन को यह दिखाने के लिए कि हमें परमेश्वर की बुद्धि की तलाश करनी चाहिए, संसारिक बुद्धि की नहीं। परमेश्वर के तरीके मनुष्य के तरीकों से अलग होते हैं। परमेश्वर की प्राथमिकताएँ और मूल्य संसार की प्राथमिकताओं और मूल्य से अलग होते हैं।

III. सच्चा विश्वास और परेशानियाँ (4) -आध्यात्मिक जीवन का एक और प्रमाण है कि एक व्यक्ति आपने प्रलोभन का कैसे सामना करता है। सबकी परीक्षा होगी, और परीक्षा पाप नहीं है, परन्तु जीवन में पाप पर निरन्तर प्रगति तब देखी जाएगी जब कोई विश्वास से जीवन जीता है। यह जरूरी नहीं है कि तत्काल पूर्ण जीत हो, लेकिन उस दिशा में प्रगति अवश्य होनी चाहिए। विश्वास का परिणाम होता है एक व्यक्ति का सांसारिकता से अपना मान हटा लेना।

IV. सच्चा विश्वास और भरोसा (5) -भौतिकवाद के विषय पर टिके रहना, सच्चा विश्वास चीजों को अस्थायी रूप में देखता है न कि जीवन में मुख्य चीज के रूप में। सच्चे विश्वास का परिणाम होता है धैर्य, ईश्वरीय बोलचाल और प्रार्थना।

अब, क्या आप साबित कर सकते हैं कि आप जीवित हैं? ठीक है, शारीरिक रूप से आप सांस ले रहे हैं, तो आपके पास शारीरिक जीवन है। आध्यात्मिक रूप से क्या है? क्या आपके पास आध्यात्मिक जीवन है? क्या आपके जीवन में अच्छे कार्य हैं, आत्मा का फल, मसीह के समान आप में पुनरुत्पादन हो रहा है? यदि नहीं, तो अब आपके जीवन में क्या होने की आवश्यकता है ताकि वे अच्छे कार्य किए जा सकें जिनकी परमेश्वर उम्मीद करता है?

याकूब की रूपरेखा



अभिवादन 1:1

I. सच्चा विश्वास और परीक्षण (कार्य) 1-2

क- सच्चे विश्वास की परीक्षा होती है 1:2-18

1. परीक्षाओं का उद्देश्य 1:2-12
2. परीक्षाओं की श्रेणी 1:13-16
3. परमेश्वर का उद्देश्य 1:17-18

ख- सच्चे विश्वास की जीत होगी 1:19-2:26

1. वचन के द्वारा 1:19-27
2. भाइयों के साथ 2:1-13
3. उसके विश्वासों में 2:14-26

II. सच्चा विश्वास और बातचीत (शब्द) 3

क- सच्चा विश्वास जीभ को वश में करता है 3:1-12

1. जीभ लगाम लगाता 3:1-4
2. घमण्डी जीभ को 3:5-12

ख- सच्चे विश्वास को शिक्षा की आवश्यकता है 3:13-18

III. सच्चा विश्वास और परेशानियाँ (सांसारिकता) 4

क- सच्चा विश्वास प्रलोभन को डांट देता है 4:1-13

1. दुनियावी हितों को 4:1-2
2. दुनियावी परिणामों को 4:3-6
3. दुनियावी उपचार को 4:7-10
4. दुनियावी के लक्षण को 4:11-13

ख- सच्चा विश्वास अस्थायी चीजों की लापरवाही करता है 4:14-17

IV. सच्चा विश्वास और भरोसा (चेतावनी) 5

क- सच्चा विश्वास खज़ाना/दौलत नहीं चाहता 5:1-6

ख- सच्चा विश्वास इनाम पैदा करता है 5:7-20

1. पहला इनाम: धैर्य 5:7-11
2. दूसरा इनाम : ईश्वरीय बोली 5:12
3. तीसरा इनाम : प्रार्थना 5:13-18
4. चौथा इनाम : पश्चाताप 5:19-20

1 पतरस : दुःख पीड़ा



शीर्षक: लेखक के नाम पर

लेखक: पतरस

लेखन की तिथि: 63 ईस्वी

लेखन का स्थान: 'बाबेल' (रोम?)

प्राप्तकर्ता: यहूदी विश्वासी जो हर जगह बिखरे हुए हैं

मुख्य आयत : प्रिय मित्रो, आप जिस दुखभरी परीक्षा से गुजर रहे हैं, उस पर आश्चर्य न करें, की जैसे आपके साथ कोई अनोखी बात हो रही हो। 13 परन्तु आनन्दित रहो, कि तुम मसीह के दुःखों में सहभागी हो, कि जब उसकी महिमा प्रगट हो, तब तुम आनन्दित हो। 4:12-14

प्रमुख शब्द: "पीड़ित होना " (16 बार, अंतर्निहित 6 बार); "महिमा" (16 बार); "अनुग्रह" (10 बार)

उद्देश्य: पतरस सताए गए यहूदी विश्वासियों को जो जगह-जगह पर बिखरे हुए हैं सांत्वना देना चाहता है। वह उन्हें उन परीक्षाओं के लिए भी तैयार करना चाहता है जो अभी आगे आनेवाली हैं। वह यह कार्य उन्हें वह अद्भुत आशा दिखाकर करता है जो आगे है (1:13) और हमारे लिए मसीह की उदाहरण के द्वारा (2:21-23)।

विषय: सताए गए और पीड़ित मसीहीयों को प्रोत्साहन

जब आप कुछ गलत करने के लिए पीड़ित होते हैं, जैसे गति की सीमा को तोड़ना और अनुचित टिकट प्राप्त करना, तो इसका परिणाम भुगतना आसान होता है, क्योंकि आप जानते हैं कि आपको वही मिल रहा है जो आप को मिलना बनता है। लेकिन जब आप कुछ सही करने के लिए पीड़ित होते हैं, जैसे सच बोलने के लिए नौकरी से निकाल दिया जाना, तो इसे सहन करना बहुत कठिन होता है। हमारे पास दो विकल्प हैं कि कैसे प्रतिक्रिया दें: दुनिया की तरह (बदला लेकर , प्रतिशोध के रूप में, कड़वाहट दिखा कर) या यीशु की तरह।

कई प्रारंभिक मसीहीयों ने अपने विश्वासों के लिए अन्यायपूर्ण उत्पीड़न का सामना किया। यहूदी विश्वासियों के लिए यह और भी कठिन था क्योंकि वे भी यहूदी धर्म द्वारा सताए जाते थे और उनको अपने परिवार, दोस्तों और आय को खोना पड़ता था । पतरस सभी को लिखता है, लेकिन विशेष रूप से वह यहूदी मसीहीयों को, इस उत्पीड़न के बावजूद उन्हें विश्वासयोग्य बने रहने में मदद करने के लिए लिखता है।

I. उद्धार (1:1 - 2:10) पहले पतरस वापस जाता है और उन्हें उनके उद्धार की याद दिलाता है और मसीह में जो कुछ उनके पास है। जब आप पीड़ित होते हैं तो हमेशा याद रखें कि आपको जो मिलता है वह आपके खोने से कहीं अधिक होता है!

II. समर्पण (2:11 - 3:12) पूरे 2:11 - 3:12 में दो विषय साथ-साथ चलते हैं: अधीनता और पीड़ा। पतरस उन्हें प्रोत्साहित करता है कि वे अपनी सरकार के, पत्नियों को कि वे आपने पतियों के, अन्य विश्वासियों, कलीसिया के अगुवों और यहां तक कि अविश्वासियों को भी उनके प्रति एक अच्छी गवाही देने के लिए समर्पित करें। क्योंकि हमारे पास उद्धार है, हमें समर्पण करना है चाहे कुछ भी हो जाए।

III. दुःख सहन (2:11 - 3:12) कठोर और प्रतिशोधपूर्ण होने के बजाय समर्पण करने का स्वाभाविक परिणाम दुःख ही होता है। हम तब भी पीड़ित होते हैं जब हम समर्पण नहीं करते हैं, लेकिन जब हम करते हैं, तो हम अक्सर और भी अधिक पीड़ित होते हैं। यीशु हमारे लिए एक उदाहरण है। पतरस का कहना है कि मसीह के दुःख उठाने से परमेश्वर की महिमा होती है और हमें भी दुःख उठाने के माध्यम से प्राप्त करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और उस पर निर्भर रहना चाहिए। प्रत्येक मसीही

को दुख की दुनिया को मसीही दृष्टिकोण से देखे जाने की आवश्यकता है। जब हम इसके माध्यम से उस पर भरोसा करते हैं यह हमें और अधिक यीशु के समान बनाने और परमेश्वर की महिमा करने के लिए साबित होती है। क्या आपके बारे में यह सच है? यह निश्चित रूप से ऐसा ही होना चाहिए!

1 पतरस की रूपरेखा

शुरू 1:1



I. उद्धार (विश्वास) 1:2-2:10

क- चुने हुए और बिखरे हुए तीर्थयात्रियों के लिए 1:1-2

ख- विरासत 1:3-5

ग- परीक्षण में आनन्द 1:6-9

घ- उद्धार का प्रकाशन 1:10-12

ङ- मसीही जीवन जिएं 1:13-16

च- परमेश्वर पर भरोसा रखें 1:17-21

छ-उद्धार की सर्वोच्चता 1:22-25

ज- बाइबल का पालन करें 2:1-3

झ- मसीह हमारी चट्टान 2:4-8

ञ- याजकीय विशेषाधिकार 2:9-10

II. समर्पण (व्यवहार)

क- सरकार को समर्पण करे 2:11-17

ख.-अन्यायपूर्ण पीड़ा को स्वीकार करें 2:18

ग- पत्नियां आपने पति के अधीन हो 3:1-6

घ- पति अपनी पत्नी से प्रेम करें 3:7

ङ- अन्य विश्वासियों के साथ मेलमिलाप रखो 3:8-12

च- दूसरों को गवाही दें 3:15

छ- मसीह हमारे लिए उदाहरण 3:22

ज- आने वाले न्याय के बारे की जागरूकता में जीना 4:7

झ- सेवा और संगति प्रेम भावना में 4:8-12

ञ- कलीसिया के अगुवे 5:1-4

ट- अन्य विश्वासियों के प्रति समर्पण 5:5

ठ- आशीष पाने के लिए नम्र बनिए 5:6-7

III. पीड़ा (मार) 3:13-5:11

क- अन्यायपूर्वक दुःख उठाना 2:18-20

ख- यीशु ने हमारे लिए दुःख उठाया 2:21-25

ग- भलाई के लिए दुःख उठाना , बुराई के लिए नहीं 3:13-14, 16-17

घ- यीशु मृत्यु में दुःख उठाने का हमारे लिए उदाहरण 3:18-22

ङ- यीशु हमारे जीवन में दुःख भोगने का उदाहरण 4:1-6

च- मसीह के लिए दुःख उठाना महिमा लाता है 4:12-16

छ- परमेश्वर पर भरोसा रखें 4:17-19

ज- विश्वास द्वारा शैतान का विरोध करें 5:8

ञ-अन्य विश्वासियों का उदाहरण 5:9

ट- पीड़ा परमेश्वर की आशीष लाती है 5:10

समापन 5:12

2पतरस:

विश्वास रखें



शीर्षक: लेखक के नाम पर

लेखक: पतरस

लेखन की तिथि: 64 ईस्वी

लेखन का स्थान: अज्ञात (रोम?)

प्राप्तकर्ता: यहूदी विश्वासी जो हर जगह बिखरे हुए हैं

मुख्य आयत: परन्तु उस समय में भी झूठे भविष्यद्वक्ता थे, जैसे तुम्हारे बीच भी झूठे शिक्षक होंगे। वे गुप्त रूप से विनाशकारी पाषंडों का परिचय देंगे, यहाँ तक कि उस प्रभु को जिसने उन्हें आपने लूक से खरीदा है उसका इंकार करके आपने ऊपर तेजी से विनाश लाएंगे। 2:1

प्रमुख शब्द: "ज्ञान" (16 बार); "न्याय" (4 बार)

उद्देश्य:

विषय: झूठे शिक्षकों के हमले के खिलाफ विश्वासियों को मजबूत करने और पुष्टि करने के लिए।

पतरस प्रारंभिक चर्च का पहला अगुवा था, पौलूस दूसरा। प्रेरितों के काम की पुस्तक का पहला भाग पतरस के बारे में है, दूसरा भाग पौलूस के बारे में है। आशावादी पतरस ने नवजात कलीसिया का पालन-पोषण किया ताकि वह स्थापित हो सके और बढ़ना शुरू कर सके। गुसैल पौलूस ने जवान कलीसिया को आकार दिया और झूठे शिक्षकों और इसे गुमराह करने वालों से बचाया। पतरस यीशु के साथ था जब वह पृथ्वी पर था, पौलूस उस समय नहीं था। एक एक आम मछुआरा था, पौलूस एक प्रशिक्षित उच्च वर्ग का धार्मिक अगुवा था। पतरस मुख्य रूप से यहूदियों में सेवकाई करता था, पौलूस मुख्य रूप से अन्यजातियों में सेवकाई करता था। फिर भी इन भिन्नताओं के बावजूद वह एक ही समय में एक ही प्रभु की सेवा करते थे। दोनों ही प्रथम-महान उत्पीड़न के दौरान रोम में शहीद हुए थे। पतरस को उल्टा सूली पर चढ़ाया गया था, पौलूस का सिर काट दिया गया था (एक आसान मौत क्योंकि वह एक रोमन नागरिक था)। उनमें से प्रत्येक ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले अपनी अपनी अंतिम पुस्तक लिखी थी। पौलूस का 2 तीमुथियुस था, पतरस का था 2 पतरस। उन दोनों को पता था कि वे जल्द ही मर जाएंगे जब उन्होंने लिखा और अपने अनुयायियों को हर हाल में विश्वासयोग्य रहने के लिए प्रोत्साहन दिया। दोनों ने ईश्वर में गहरी आस्था और विश्वास व्यक्त किया। दोनों ने उन 'अन्तिम दिनों' में अधर्म (पाखंड) के विरुद्ध चेतावनी दी। 2 तीमुथियुस का विषय है 'विश्वासयोग्य सेवा'। 2 पतरस का विषय है 'विश्वास रखो'।

पतरस ने 1 और 2 पतरस एक ही श्रेणी के श्रोताओं के लिए लिखा - यहूदी विश्वासी चाहे वे कहीं भी थे। 1 पतरस में उसने कलीसिया के बाहर के लोगों से पीड़ित होने के बारे में बात की: उत्पीड़न, आदि। 2 पतरस में वह कलीसिया के भीतर के लोगों से पीड़ित होने के बारे में बात करता है: झूठे शिक्षक और अधर्मी (पाखंडी)। यह 'वेदी पर जहर' सबसे खराब किस्म का हरकत है। इससे एकमात्र बचाव है 'विश्वास बनाए रखना।' बाइबल के सच्चे सिद्धांत के प्रति वफ़ादार रहना। सबसे अच्छा बचाव एक मजबूत अपराध है। यह झूठे शिक्षकों के विरुद्ध का भी सत्य है।

I. विश्वास की दृढ़ता (1:3-21)- पतरस अपने पाठकों से विनती करता है कि चाहे कुछ भी हो जाए परमेश्वर के साथ चलना जारी रखें। वह कहता है कि अभी के लिए यही एकमात्र तरीका है, और यह अनंत काल के लिए प्रतिफल लाएगा। इसके समर्थन में वह अपनी स्वयं की गवाही के साथ-साथ पवित्रशास्त्र के अधिकार का भी उपयोग करता है। जब विश्वासी अपने विश्वासों में स्वस्थ और दृढ़ होंगे, तो झूठी शिक्षाएँ उनके बीच पैर जमाने में सक्षम नहीं होंगी।

II. विश्वास के लिए विवाद/झगड़े (2:1-22) -पतरस उन्हें याद दिलाता है कि झूठे शिक्षक हमेशा रहे हैं और हमेशा रहेंगे। वे सत्य की नकल करते हैं, जो वे सिखाते हैं उसे सत्य जैसा बना देते हैं। वे गुप्त रूप से सच्चाई को कमजोर करते हैं और चतुराई से सत्य को पाप के साथ बदल देते हैं, कभी-कभी थोड़ा इधर-उधर होते हैं जब तक कि यह अंततः पकड़ न बना लें। पतरस का कहना है कि उनका न्याय होगा और उनकी निंदा की जाएगी, उन स्वर्गदूतों की तरह जो लूसिफ़ेर के साथ गिराए गए थे, नूह की पीढ़ी के लोगों की तरह, सदोम और अमोरा के लोगों की तरह। वह उनके आचरण, उनके दावों और उनकी शिक्षा को मन्त्रे वालों को उजागर करता है। हालाँकि इन सभी मामलों में परमेश्वर धर्मी लोगों को को बचाता है।

III. पृथ्वी का विनाश (3:1-18) -झूठे शिक्षकों के प्रमुख विधर्मी शिक्षकों में से एक है यीशु के दूसरे आगमन का इन्कार करना। यदि यीशु वापस नहीं आता है तो इसका मतलब है कि उसने झूठ बोला, वह परमेश्वर नहीं है, अविश्वासियों को दंडित नहीं किया जाएगा और विश्वासियों को पुरस्कृत नहीं किया जाएगा। पतरस विस्तार से बताता है कि प्रभु का वो दिन कैसा होगा। वह अपने पाठकों को आश्चस्त करता है कि जो विश्वासी हैं उन्हें बख्शा जाएगा, लेकिन दूसरों का न्याय किया जाएगा। वह उन्हें बताता

है कि अभी तक ऐसा न होने का एकमात्र कारण परमेश्वर की दया है, कि और लोगों के पश्चाताप की प्रतीक्षा कर रहा है। विश्वासयोग्य बने रहने की प्रेरणा के रूप में इसका उपयोग करते हुए पत्रस समाप्त करता है। तैयार रहो, वे कहता है - यीशु किसी भी समय वापस आ जाएगा! क्या आप तैयार हैं? क्या आप यीशु के जल्द लौटने के प्रकाश में जी रहे हैं? क्या होगा अगर वह आज आए तो ? क्या आप तैयार हैं?

2 पत्रस की रूपरेखा

शुरू 1:1-2



I. विश्वास की दृढ़ता (अनुग्रह में बढ़ना) 1

क- परमेश्वर के साथ चलने की प्रेरणा 1:3-11

1. अच्छी तरह से शुरू करने का कला 1:1-4
2. अच्छी तरह से चलने की कला 1:5-9
3. अच्छी तरह से पूरा करने का कला 1:10-11

ख- परमेश्वर के वचन द्वारा चुनौती 1:12-21

1. एक प्रेरित की गवाही 1:12-18
2. पवित्रशास्त्र का अधिकार 1:19-21

II. विश्वास के करण विवाद/झगड़े (ज्ञान में वृद्धि) 2

क- झूठे शिक्षकों का सिद्धांत 2:1-3ए

ख- झूठे शिक्षकों का भाग्य 2:3ख -9

1. उस भाग्य की निकटता 2:3बी
2. उस भाग्य की प्रकृति 2:4-9

ग- झूठे शिक्षकों के कार्य 2:10-22

1. उनके आचरण का पर्दाफाश होता है 2:10-14
2. उनके दावों का पर्दाफाश होता है 2:15-19
3. उनकी शिक्षा मामले वालों का पर्दाफाश होता है 2:20-22

III. विश्वास की समाप्ति (उम्मीद में वृद्धि) 3

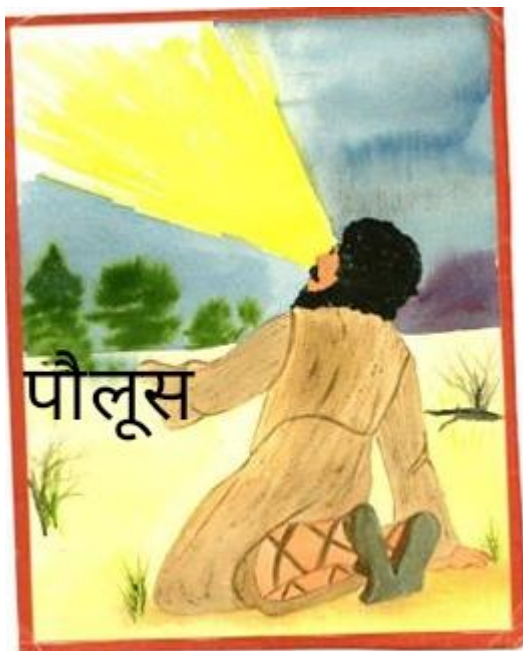
क- प्रभु के दिन का इन्कार 3:1-9

1. अतीत में अलौकिक हस्तक्षेप का इन्कार करना 3:1-7
2. वर्तमान में अलौकिक हस्तक्षेप का इन्कार 3:8-9

- B. प्रभु के दिन के द्वारा छुटकारा 3:10-13
1. प्रकृति का छुटकारा 3:10
 2. विश्वासियों का छुटकारा 3:11-12
- C. प्रभु के दिन का विलम्ब 3:14-15क
1. परिश्रम में विलम्ब - विश्वासी 3:14
 2. कयामत में देरी - अविश्वासी 3:15क , 9ख
- ग- प्रभु के दिन का सिद्धांत 3:15ख -18
1. पौलूस की घोषणा 3:15ख -16क
 2. अज्ञानीयों द्वारा तोड़ मरोड़ 3:16ख
 3. वचन में रक्षा 3:17
 4. मसीह पर निर्भरता 3:18

बाइबिल अवलोकन 24

पौलूस



मुख्य घटनाएँ : प्रारंभिक कलीसिया का विकास

मुख्य लोग: पौलूस और उसके सहायक

बाइबिल की पुस्तकें: प्रेरितों के काम 13-26, याकूब, पौलूस की पत्रियाँ

बाइबल की आयत: 2 तीमुथियुस 4:7-8 मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रक्षा की है।

8 अब मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी जो उसके प्रगट होने की बात जोहते हैं।

समय: 34-96 ईस्वी

इस समय की विश्व घटनाएँ:

थोमा भारत आता है और वहाँ एक कलीसिया शुरू करता है रोम वेल्स की विजय को समाप्त करता है , क्लॉडियस अपने पति को जहर देती है और अपने बेटे नीरो को सम्राट बना देती है (बाद में वही उसे मार डालता है) रोम आग से जलता है, यहूदीया रोम का विद्रोह करता है

70 ईस्वी में टाइटस द्वारा येरुशलैम को नष्ट किया जाता है, वेसुवियस पर्वत में विस्फोट किया जाता है जिसमे 20,000 मारे जाते है

भौगोलिक स्थान: भूमध्यसागरीय क्षेत्र, फिलिस्तीन से स्पेन तक

जैसे-जैसे प्रारंभिक कलीसिया बढ़ती और फैलती गई, उसे भीतरी और बाहरी विरोध का सामना करना पड़ा। कलीसिया को सही रास्ते पर रखने के लिए एक मजबूत व्यक्ति की जरूरत थी। पतरस के कोमल व्यक्तित्व ने पहले अंगारों की तब तक रक्षा की जब तक कि वे आग की लपटों में नहीं फूट कर फैलने नहीं लगे। फिर आग पर काबू पाने और इसे सही दिशा में बढ़ने के लिए पौलूस जैसे किसी व्यक्ति की जरूरत थी। पौलूस शिक्षा और व्यक्तित्व के द्वारा सिर्फ एक आदमी था। परमेश्वर ने आरम्भिक कलीसिया

बनाने के लिए पौलुस का उपयोग किया, परन्तु उसने कलीसिया का उपयोग भी पौलुस को यीशु के समान अधिक बनाने के लिए किया।

चमत्कारों का समय जो यीशु के साथ शुरू हुआ था, इस दौरान जारी रहा, लेकिन शिष्यों द्वारा किए गए चमत्कार जल्द ही फीके पड़ गए और बंद हो गए। लगभग 38 ईस्वी में, पतरस लुद्दा में सेवकाई कर रहा था जब परमेश्वर ने एनीस नाम के एक व्यक्ति को चंगा करने के लिए उसका इस्तेमाल किया (9:32-35)। पास के याफा में वह दोरकास नाम की एक महिला को वापस जीवन में लाया था (9:36-43)। परमेश्वर ने इन बातों का उपयोग इसलिए किया था कि लोग सुसमाचार को सुने। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये चमत्कार एक केवल एक वचन बोलने या स्पर्श से किए गए थे। हीलिंग तात्कालिक और 100% पूर्ण और हमेशा के लिए थी। सभी चंगे हो जाते थे, ऐसा नहीं कि केवल कुछ ही होते थे और कुछ नहीं। जैविक रोग ठीक हो जाते थे और मुर्दे जीवित हो जाते थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे लोगों के बीच एक बदले हुए जीवन की गवाही इस बात का प्रमाण बन गई कि सुसमाचार में शक्ति थी। 35 ईस्वी में सभी चंगे हो जाते थे (प्रेरितों के काम 5:16)। 60 ईस्वी तक कुछ ही ठीक होते थे। इपफ्रुदीतुस (फिलिप्पियों 2:25-27) और स्वयं पौलुस के शरीर में का काँटा चंगा नहीं हुआ था। 67 ईस्वी में कुछ चंगे हुए थे। त्रुफिमस (2 तीमुथियुस 4:20) और तीमुथियुस का पेट ठीक नहीं हुआ था। आज परमेश्वर बदले हुए जीवन की गवाही को जीवन को छूने और बदलने की अपनी शक्ति के प्रमाण के रूप में उपयोग करता है। यही एक कारण है कि हमारे लिए इस समय में यीशु के लिए एक पवित्र जीवन जीना इतना महत्वपूर्ण है।

24क पौलूस, पृष्ठभूमि

पौलूस उन लोगों में से एक था जो सब कुछ 100% करते हैं, चाहे वह कलीसिया का विरोध कर रहा हो या समर्थन कर रहा हो। उसने कभी भी कुछ भी आधा-अधूरा नहीं किया।

पौलूस की वंशवली - पौलूस उसका लातिनी (रोमन) नाम था और शाऊल उसका यहूदी नाम था, जो घर में इस्तेमाल किया जाता था। उसका परदादा, बिन्यामीन गोत्र से था जो तर्शस में बसने के लिए गलील के गिस्काला को छोड़कर चले गए थे।

गृह नगर तर्शस 15 लाख लोगों का एक समृद्ध शहर-राज्य था जिसकी अपनी सरकार थी। यह वित्त और शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था। एक यहूदी के लिए बड़ा होने के लिए यह एक बहुत ही सांसारिक शहर था।

माता-पिता - पौलूस के पिता धनी फरीसी थे। वह स्थानीय भेड़ों के लंबे काले ऊन से तंबू बनाने का पेशेवर था। वह तर्शस का एक शासनीय अधिकारी और एक रोमी नागरिक भी था, जो किसी के लिए भी गर्व और विशेषाधिकार की बात थी। पौलूस की मां के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। शायद वह बीमार थी, शायद उसकी बहन के जन्म के समय उसकी मृत्यु हो गई थी। किसी तरह उसकी बहन आखिर यरूशलेम में बीएस गयी थी, यह हो सकता था कि जब उसकी माँ की मृत्यु हो गई तो उसे रिश्तेदारों ने वहाँ उसे पालन पोषण किया था।

शिक्षा - पौलूस मुख्य रूप से घर पर रह कर ही पढाई -लिखाई की थी। आराधनालय में उसे इब्रानी सिखाई गयी थी। 13 साल की उम्र तक वह यहूदी इतिहास, कविता और नबियों में महारत हासिल कर चुका होगा। उसके पास एक उत्कृष्ट दिमाग और अद्भुत यादाश्त शक्ति थी।

भाषा - पौलूस जैसा कि उस समय के अधिकांश लोग थे, बहुभाषी था। वह बचपन से यूनानी जानता था, यह उस समय की मुख्य भाषा थी। अरामी आम भाषा थी जो यहूदी अपने घरों में इस्तेमाल करते थे। इब्रानी विद्वानों की भाषा थी जिसे लड़के बाइबल का अध्ययन करने के लिए सीखते थे। उसे लातिनी का भी अच्छा कार्यसाधक ज्ञान था।

वयवसाय - तंबू बनाना एक साधारण व्यवसाय था, लेकिन यहूदियों का मानना था कि सभी लड़कों को एक हस्तकला / हाथ का हुनर जरूर सीखना चाहिए और यह जानना चाहिए कि काम करना क्या होता है। तंबू आम चीज होती थी जो कारवां, खानाबदोश और सेना द्वारा उपयोग किए जाते थे। पौलूस ने शटल को आगे-पीछे धकेलते हुए कपड़ा बुनने में कई घंटे बिताता होगा। इससे उसका दिमाग सोचने के लिए स्वतंत्र हो जाता था। उसका दिमाग शायद परमेश्वर और यहूदी मान्यताओं पर केंद्रित रहता था।

विश्वास -जब वह तर्शस में रहता था, तो उसे वहाँ अच्छा नहीं लगता था। बाल की पूजा, अनैतिकता, और परमेश्वर के उपासकों के उत्पीड़न ने उसके हृदय को अपने पूर्वजों की भूमि की ओर मोड़ दिया होता।

गृह जीवन -पौलूस का घर ईश्वर की आज्ञाकारिता पर जोर देने के साथ धर्म दया का स्थान लगता था। शायद बाहरी अनुरूपता पर अत्यधिक जोर दिया जाता था।

बढ़ता हुआ -पौलूस 13 साल की उम्र में बार मिट्ज्वा (यहूदी धर्म रस्म जो बच्चे के बचपन को पूरा करने पर होती है) से गुज़रा, जो शायद तब हुयी थी जब उसने यरूशलेम की अपनी पहली यात्रा की थी। वह अपने पिता और अन्य पुरुषों के साथ गया होगा जो विभिन्न आध्यात्मिक और/या व्यावसायिक कारणों से यात्रा कर वहाँ गए थे। यह न केवल धार्मिक रूप से एक विशेष समय था, बल्कि पौलूस को अपनी बहन को देखने/मिलने का मौका भी मिला था। कुछ समय बाद पौलूस प्रसिद्ध रब्बी गमलीएल के पास प्रशिक्षण और अध्ययन के लिए वापस आता है। यीशु ने भी उसके साथ समय बिताया था जब वह कई वर्षों पहले अपने बार मिट्ज्वा के लिए मंदिर गया था। पौलूस का प्रशिक्षण लंबा और कठिन होता। उसे न केवल इब्रानी शास्त्रों बल्कि उन पर यहूदी व्याख्याओं और टिप्पणियों में भी महारत हासिल करनी जरूरी होती: मिश्रा, जेमेरा और तारगम। उसने अपनी बौद्धिक प्रतिभा से अपने साथ पढ़ने वालों को बहुत जल्दी पीछे छोड़ दिया। उसके पास एक बहुत ही तार्किक दिमाग और उत्कृष्ट यादाश्त शक्ति, उपजाऊ कल्पना और विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति थी। क्योंकि वह हमेशा खुद से और दूसरों से बहुत उम्मीद करता था, ऐसा लगता था कि उसके करीबी दोस्त बहुत नहीं थे। प्रशिक्षण में कई अन्य केवल बाहरी अनुरूपता

(पाखंड) और दूसरों को प्रभावित करने के बारे में चिंतित रहते थे। पौलूस हमेशा सही कारण के लिए सही काम करने के बारे में चिंतित रहता था। बाहर से तो ऐसा प्रतीत होता था कि उसने पूर्णता प्राप्त कर ली है, लेकिन भीतर वह अहंकार, वासना और भौतिकवाद से जूझ रहा था।

तर्श को लौटना - तीस के दशक के आरंभ में, पौलूस तर्श लौट आया और वहाँ के आराधनालय में अगुवा बन गया, तंबू बनाकर अपना निर्वाह करते हुए वह धर्म शास्त्रों का शिक्षण देता था। शायद तम्बू बनाते समय के दौरान ही उसकी मुलाकात बरनबास से हुई थी।

शारीरिक कदकाठी - पौलूस पुष्ट, मजबूत और अच्छी शारीरिक रूप का प्रतीत होता है। बताया जाता है कि वह 5 फुट से कम ऊँचाई, चौड़े कंधे, बारीकी से बुनी हुई भौहें और मोटी दाढ़ी वाला व्यक्ति था। उसकी नाक लम्बी, टेढ़ी थी। वह समय से पहले ही सिर से सफेद और फिर गंजा हो गया था। अपने रूपांतरण के अनुभव से उसकी आँखों में परेशानी रहती थी। दोस्तों ने कहा कि वह बदसूरत था, दुश्मनों उसके लिए 'अप्रिय' शब्द को प्राथमिकता देते थे। दुनिया पर उसका बड़ा प्रभाव उसकी शारीरिक बनावट से नहीं आया था।

विवाह - जबकि पौलूस के जीवन में की बहुत जानकारी नहीं है, उसके लिखतों की जानकारी, यहूदी इतिहास और परंपराओं के ज्ञान से, हम उसके बारे में कुछ बातें को इकठा करके कई बातों का अंदाजा लगा सकते हैं। ऐसा लगता है कि वह एक समय में शादीशुदा था और शायद उसका एक बेटा भी था। शायद दोनों माँ बेटे की मौत उस महामारी में हुई हो जो उन दिनों बहुत आम हो गयी थी। उसका दिल कैसे टूट गया होगा और वह उदास हो गया होगा! ऐसा हो सकता है कि की इसके आलावा 14 अप्रैल, 33 ई. की घटनाओं से, जिसने उसे यरूशलेम लौटने का कारण बना दिया होगा। उस दिन दोपहर 12 बजे हर तरफ अंधेरा छा गया था। दुपहर 3 बजे भूकंप ने दुनिया को हिला दिया था और फिर से रौशनी चमक उठी थी। ये बातें स्पष्ट रूप से अलौकिक थी। जब यरूशलेम से नासरत के यीशु के सलीब पर चढ़ाए जाने की अजीबोगरीब घटनाओं के बारे में खबर आई, तो पौलूस को इसकी छानबीन करने के लिए विविष कर दिया था। एक कट्टर यहूदी होने के नाते, पौलूस इस नए विधर्म को समाप्त करने के लिए कुछ भी करना चाहता था। शायद यह सारी चोट और दर्द, अवसाद और शून्यता, क्रोध और घृणा में उन लोगों के लिए प्रकट हुई जिन्होंने इस यीशु को मसीहा के रूप में देखा था। पौलूस यरूशलेम में इस नए आंदोलन का विरोध करने के लिए आ बसा था, उसके पास सब कुछ था।

पौलूस उत्पीड़क - आपने आप को इस नए उद्यम में झोंकने से उसे अपने खोए हुए परिवार की यादों से निकलने में मदद मिलेगी और साथ ही उसे एक नई चुनौती भी मिलेगी, जो अंदर की उसके खाली जगह को भर देती। यह चलते रहने का एक कारण था। वह यरूशलेम में तंबू बनाने वालों की सड़क पर रहता था और काम करता था, लेकिन जितना भी हो सकता वह धार्मिक शासकों के साथ समय बिताता था। वह यरूशलेम में एक प्रमुख फरीसी बन गया। नीकुदेमुस, अरिमतियाह का यूसफ और स्तिफनुस जैसे लोग जिनकी वह प्रशंसा और सम्मान करता था, अब उसके घृणित शत्रु बन गए थे। पौलूस सबसे छोटी उम्र के महासभा के सदस्यों में से एक था, और इस प्रकार इज़राइल में सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक बन गया था। उसका पूरा भविष्य उसके सामने पड़ा था।

आध्यात्मिक इच्छाएं - फिर भी स्पष्ट रूप से पौलूस का जीवन खाली था, वह जीवन के वास्तविक अर्थ और उद्देश्य की खोज कर रहा था। एक आदर्श यहूदी बनने के लिए वह जितनी मेहनत करता, उतना ही वह खालीपन महसूस करने लगता। आखिरकार उसने उस हाथ ना आने वाली शांति के लिए प्रयास करना बंद कर दिया जो उससे दूर हो गई थी। वह आपने आप को कानून और परंपरा के बोझ तले कुचला हुआ महसूस करता था, लेकिन परमेश्वर को खोजने का कोई और तरीका नहीं जानता था। ये सभी निराशाएँ और भय उसने उन लोगों पर निकाले जिनको वह यहूदी धर्म के शत्रुओं के रूप में देखता

था। जब उन्होंने दावा किया कि उनके पास जवाब है और जिस शांति की वह तलाश कर रहा है उनके पास है, तो उसने उनके खिलाफ और भी अधिक प्रतिक्रिया व्यक्त की, जिससे यह उनके खिलाफ उसकी एक व्यक्तिगत लड़ाई बन गई।

केवल यीशु संतुष्टी देता है - पौलूस के पास वह सब कुछ था जो दुनिया दे सकती है, वह सब कुछ जिसकी कोई भी चाहत कर सकता है। उसका एक अच्छा, महत्वपूर्ण, सहायक और प्यार करने वाला परिवार था। यहूदी धर्म (हिब्रू) और धर्मनिरपेक्ष (यूनानी) ज्ञान दोनों में ही उसके पास बेहतरीन शिक्षा थी। एक तंबू बनाने वाले और एक रब्बी के रूप में भी उसका एक सफल व्यवसायक जीवन था। वह महासभा (यहूदी जीवन के सभी क्षेत्रों में शासन करने की शक्ति के साथ दुनिया भर में इज़राइल में शीर्ष 70 पुरुषों की सर्वोच्च न्यालय) में था। वह बढ़ रहा था, क्योंकि वह अभी भी अपनी आयु में जवान ही था। वह अपने धर्म में लगभग सिद्ध था, बाहरी रूप से पापरहित था। ऐसा लग रहा था कि उसके पास यह सब है। लेकिन अंदरूनी तौर पर वह खाली था और खोज रहा था। वह एक ऐसी चीज से चूक गया था जो उसे संतुष्ट कर सकती थी - यीशु का नाम। उसने यीशु के बारे में बहुत सुना था कि वह उसकी आवश्यकताओं का उत्तर है। उसका दोस्त स्तिफनुस उसे अक्सर बताया करता था। वे उसी आराधनालय के समय से अच्छे मित्र थे जब पौलुस अध्ययन करने से पहले यरूशलेम में रहता था। स्तिफनुस उतना ही मधुर था जितना पौलुस अपघर्षक था। स्तिफनुस के पास शांति थी, और वे उत्तर थे जो पौलुस खोज रहा था। यीशु को मसीहा साबित करने वाले स्तिफनुस के तर्कों का पौलुस विरोध नहीं कर सका। पौलुस ने इस सब के पूरे निहितार्थ को समझ लिया, अगर नासरत का यीशु वास्तव में वादा किया हुआ मसीहा होता तो व्यक्तिगत रूप से उसके लिए और पूरे यहूदी धर्म के लिए इसका क्या मतलब होता। यह उसकी एक चीज़ को छीन लेगा जिस पर पौलुस ने अपना जीवन स्थापित किया था - "यहूदी कानून और प्रथाएँ"। अंत में, चूंकि वह स्तिफनुस के शब्दों को किसी भी तरह से चुप नहीं करा सका, उसने महासभा के एक सदस्य के रूप में अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए स्तिफनुस को पथरों से मारवा डाला।

पूरी तरह से सताया जाना - हालांकि, इससे पौलुस के मामले का समाधान नहीं हुआ। वास्तव में बात और बिगड़ गई। उसने एक पागल आदमी की तरह मसीहीयत पर हमला किया। उसका व्यक्तित्व और ईश्वर की बातों के लिए उसका उत्साह, उसकी पत्नी और बेटे के खोने का दर्द, उसका आध्यात्मिक खालीपन जो वह महसूस करता था, और मसीहीयों के प्रति उसकी ईर्ष्या से भरे अनुभव, ऐसा लगता था कि उसने जो कुछ भी चाहा, वह सब मसीहीओं को नष्ट करने और मर डालने के लिए प्रेरित करता था। वह घरों और आराधनालयों में घुस जाता था। उसने बूढ़ों और महिलाओं के साथ-साथ बच्चों को भी कैद कर लेता था उनको या मार डालता था। दूसरों को पीट पीट कर अपंग कर देता था। इन सब के दौरान, हालांकि, पौलुस सुसमाचार के साथ गहरे और गहरे संपर्क में आ रहा था। जैसे-जैसे उसने उनकी सेवाओं को फ़िल्टर किया और उनकी 'परीक्षाओं' में उनका बचाव पक्ष सुनता, उसने इस यीशु के बारे में अधिक से अधिक जान लिया। उसने उन लोगों से भी सुना जो यीशु के चमत्कारों के चश्मदीद गवाह थे और जिन्होंने यीशु द्वारा दिए गए पूरे भाषणों को याद किया था। उसने देखा कि उसके द्वारा उन्हें दी गई बड़ी से पीड़ा भी उनके आनंद को कम नहीं कर सकी। कोई भी कुछ नहीं कर सकी। उनके पास कुछ ऐसा था जिसकी उसमें कमी थी और वह इसके कारण उनसे और भी अधिक घृणा करता था।

मसीहीयत फैलती है- अंत में यरूशलेम में मसीहीओं को शहर से बाहर निकाल दिया था या वे इतने गोपनीय हो गए थे कि वे आसानी से नहीं मिल सकते थे। यरूशलेम इस नए पंथ से सुरक्षित लग रहा था, लेकिन इसे बाहर निकालने के बजाय, पौलुस ने देखा कि उसने इसे चारों ओर फैला दिया था। जैसे किसी आग को बुझाने के लिए उस पर लात मारना, केवल यह महसूस करता है कि इसकी प्रत्येक चिंगारी ने एक नई आग शुरू कर दी जहाँ भी वह गिरी है, पौलुस ने महसूस किया कि जो लोग यरूशलेम को

छोड़कर चले गए थे वे अपना संदेश कहीं और ले जा रहे थे। यरूशलेम को केवल शुद्ध करने से ही संतुष्ट नहीं, पौलुस चाहता था कि यह विश्वास हर जगह पूरी तरह से मिट जाए। वह जानता था कि अगर उसने इसे जल्द ही नहीं रोका तो यह नष्ट करने की उसकी क्षमता से दूर फैल जाएगा। यह दमिश्क से उत्तर तक में पहले से ही एक मजबूत जड़ें जमा रहा था। अगर उसे जड़ जमाने और बढ़ने दिया गया, तो यह नहीं कहा जा सकता कि यह विधर्म कहां तक फैलेगा और इससे क्या नुकसान होगा!

दमिश्क की राह पर -दमिश्क में बड़ी यहूदी आबादी थी, जिसने इस नए संदेश के प्रसार के लिए दमिश्क को तैयार कर दिया था। पौलुस को आवश्यक आधिकारिक परवाने मिल चुके थे, वह यहूदी सैनिकों (लेवियों) और अन्य अधिकारियों को इकट्ठा किया, और अपने मुख्यालय को दमिश्क ले जाने के लिए निकल पड़ा। वहाँ वह एक बार और हमेशा के लिए इस तरह की इश्वरीय निन्दा को समाप्त कर देगा। दमिश्क 150 मील दूर उत्तर की ओर यदि गधे पर की जाये तो 4 दिन की यात्रा थी। उन्होंने गलील से होते हुए गोलन हाइट्स को पार किया, फिर हेर्मोन पर्वत को। ये सब, अपने लोगों के साथ इन स्थानों पर परमेश्वर द्वारा किये गए साहसिक कारनामों की याद दिलाते हैं। पौलुस परमेश्वर में इस जीत और संतोष को क्यों नहीं पा सका जो उसके पूर्वजों को मिलता था? वह अपराध बोध, खालीपन और शांति से रहित था। उसे अपने मिशन की अंतिम सफलता के बारे में भी संदेह था, हालांकि हर बार जब वे उसके सामने आते तो वह उन्हें अपने दिमाग के पीछे फेंकता रहता था। वह उस दर्द से दुखी था जो उसके उत्पीड़न से इतने सारे लोग सहन कर रहे थे, लेकिन वह इसे यहूदी धर्म को उसके दुश्मनों से छुटकारा दिलाने के लिए उचित ठहराता था। फिर भी, इन मसीहीयों के बारे में कुछ तो था ...

परिवर्तन! -अचानक सूरज से भी बड़ी रोशनी, खुद शिक्नाह (परमेश्वर की महिमा), पौलुस और उसके साथ यात्रा कर रहे पूरे समूह पर दिखाई दी। वे सभी इसके आगे गिर पड़े। सभी ने एक आवाज सुनी, लेकिन शब्द केवल पौलुस ने : "तुम मुझे क्यों सताते हो?" वे एक ऐसे आदमी द्वारा बोले गए थे जो पौलुस का हमउमर रहा होगा, और तुरंत पौलुस को पता चल गया था कि यह कौन था, भले ही उसने उस आदमी को पहले कभी नहीं देखा था। अपने सन्देह की पुष्टि के लिए पौलुस ने पूछा, "तू कौन है?" उत्तर वही था जिसकी उसने उम्मीद की थी, "मैं यीशु हूँ। एक पल में जो अनंत काल सा लग रहा था, पौलुस जान गया था कि वह उन लोगों से प्यार करता है जिन्हें वह सता रहा था, और वह पौलुस से भी प्यार करता था। तुरंत पौलुस ने आत्मसमर्पण कर दिया। उसके सारे पुराने धार्मिक तर्क पिघल गए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उसके साथी यहूदी क्या सोचेंगे या यहूदी धर्म में वह क्या भविष्य छोड़ रहा है। स्तिफुनस हसी था, पौलुस गलत था - यह इतना ही आसान था। इसे स्वीकार करने से उसको वो मिल गया जो पौलुस अपने जीवन में तलाश कर रहा था, उसकी आत्मा में तुरंत मीठी शांति की बाढ़ आ गई। उसने अपना जीवन 100% नासरत के यीशु, यहूदी मसीहा, परमेश्वर स्वयं मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने वाले के अधिकार के सामने समर्पित कर दिया था। पौलुस के पास एक नया स्वामी था जिसकी उसने जीवन भर आपने दीन समर्पण के साथ सेवा की।

नए जीवन के पहले कुछ दिन- पौलुस अगले 3 दिनों के लिए अंधा था। वास्तव में, उसकी दृष्टि जीवन भर प्रभावित रही। यह एक निरंतर याद दिलाता था कि कब परमेश्वर ने उसे तोड़ा, क्योंकि याकूब के लंगड़ा होना भी उसके जीवन में इसी तरह की घटना की याद दिलाता रहा। वे तीन दिन बिना अन्न-जल के व्यतीत हुए, क्योंकि उसे खाने की कोई इच्छा नहीं थी। वह इतना केंद्रित था, इसके नएपन से इतना अभिभूत था कि वह दिन रात बस यही सोच सकता था। गर्वित, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर पौलुस को दमिश्क में हाथ पकड़ कर ले जाना पड़ा और दूसरों की देखभाल में रहना पड़ा। वह कोई विजयी नायक नहीं था, बल्कि एक जीता हुआ उड़ाऊ पुत्र था। उसके पास सोचने के लिए काफी समय था। स्तिफुनस एक टाइम बम था जो उसके दिमाग में फट गया। उसने एक के बाद एक पल को याद किया कि स्तिफुनस ने जो जो शब्द कहे थे, और हर एक ने एक तेज तलवार की तरह उसके घर पर वार किया। वह इतना अंधा

कैसे हो सकता था? वह इसे कैसे चूक सकता था? यह इतना स्पष्ट था, अब उसके लिए बहुत स्पष्ट है। अपराधबोध और पछतावे ने उसे लहरों में बहा दिया, उसके बाद अनुग्रह और शांति। स्तिफुनस के शब्द हमेशा उसके साथ रहेंगे। वे उन शब्दों के लिए बुनियादी ढाँचा ढाँचा जाएँगे, जो स्वयं पौलुस बोलेंगे। जो अब पौलुस स्तिफुनस के शब्द बोल रहा होगा। यह ऐसा था जैसे स्तिफुनस अभी भी जीवित था - निश्चित रूप से उसका संदेश जीवित था। तब परमेश्वर ने हनन्याह नाम के एक व्यक्ति को पौलुस के पास भेजा। हनन्याह के लिए यह काफी विश्वास का कार्य था जो प्रार्थना कर रहा था कि पौलुस ना आए, और अगर आता भी है तो वह उसे न खोज सके! अनन्या के माध्यम से, पौलुस ने अपनी दृष्टि प्राप्त की और सार्वजनिक रूप से वयस्क बपतिस्मा (विसर्जन) देने के द्वारा अपना नया विश्वास दिखाया। पौलुस ने अगले कुछ दिन दमिश्क में बिताए और आराधनालय में तुरंत प्रचार करने लगा कि यीशु मसीहा था। वह कैसा समय रहा होगा! हालाँकि, कुछ लोगों ने शायद सोचा था कि वह कलीसिया में घुसने और यह पता लगाने के लिए कि कौन मसीही था ताकि वह उन्हें मार सके अपनी इस गतिविधि को एक चालकी चाल के रूप में इस्तेमाल कर रहा था। हालाँकि, इस हंगामे के कारण, वह दमिश्क में अधिक समय तक नहीं रह सका।

बुनियादी प्रशिक्षण - पौलुस ने अगले दो साल अरब के रेगिस्तान में बिताए, 35 ईस्वी की गर्मियों से लेकर 37 ईस्वी की गर्मियों तक। वह एक प्रकार से अपने जीवन की रक्षा के लिए भाग गया था, इसके साथ साथ लेकिन अपने नए विश्वास के बारे में अधिक जानने के लिए भी उसने ऐसे किया था। उसने इन वर्षों के दौरान परमेश्वर पर निर्भर रहना सीखा। परमेश्वर ने उसे आध्यात्मिक सच्चाइयाँ सिखाई और यह भी सिखाया कि पुराने नियम के बारे में जो जानकारी उसके पास पहले से ही थी उसे मसीही धर्म में कैसे लागू किया जाना है। उसने और अधिक सीखा, शायद यह भी कि उसे निर्देश के लिए सीधे यीशु से मिलना है। उसके पास इस नई विश्वदृष्टि को अपने जीवन में सोचने, प्रतिबिंबित करने, पचाने और जोड़ने करने का समय था। वह जन भी गया उसने दूसरों को गवाही दी और सिखाया कि वह अपने नए विश्वास को साझा कर रहा है और साझा करना सिखा रहा है। उसके पास आध्यात्मिक रूप से विकसित होने का समय था। उसी रेगिस्तान में मूसा के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने इस समय का उपयोग पौलुस के आत्मिक विकास के लिए किया।

प्रशिक्षण काल - 37 ईस्वी की गर्मियों से इसके आखिर तक, पौलुस ने अपना कुछ दमिश्क में, फिर यरूशलेम में और अंत में तर्श में व्यतीत किया। उसने अपने नए ज्ञान को व्यावहारिक स्थितियों में लागू करना शुरू किया, यीशु के बारे में सिखाने और उपदेश देने का अनुभव प्राप्त किया। येरूशलेम विशेष रूप से पौलुस पर कठोर था, क्योंकि उसके परिवर्तन की कहानी पर यहूदियों को विश्वास नहीं था जो उस पर भरोसा नहीं करते थे। केवल उसका पुराना मित्र बरनबास उसके साथ खड़ा रहा और दूसरों को विश्वास में एक भाई के रूप में पौलुस को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करता रहा। सताव अब खत्म हो गया है और पौलुस वचन फैलाने में मदद कर रहा है, कलीसिया में शांति और विकास का समय आ गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय के दौरान भी पौलुस अपने घर तर्श चला गया था। मुझे आश्चर्य है कि पौलुस के जीवन में इस बदलाव के प्रति उसके पिता और वहां के अन्य लोगों की क्या प्रतिक्रिया रही होगी? वह वास्तव में उन्हें भी चाहता होगा कि वे सब अपना विश्वास यीशु में लायें, लेकिन हम नहीं जानते कि किसी ने ऐसा किया होगा या नहीं। ऐसा लगता है कि सभास्थल के अगुओं द्वारा उसे 5 बार डांटा/फिटकारा गया था, इसलिए जितना वे विश्वास नहीं कर रहे थे, वह भी उतनी जल्दी छोड़ने वाला नहीं था। कुछ लोगों का कहना है कि इसने उसके स्वास्थ्य को कमजोर कर दिया था और वह जीवन भर झुका रहा। उसके परिवार से और यहूदी धर्म से पूरी तरह से दूरी यहाँ और अभ हुयी थी।

आरंभिक सेवकाई - तब पौलुस 37 ईस्वी की पतझड़ से लेकर 43 ईस्वी सन् की वसन्त तक सीरिया और किलिकिया गया - 5½ वर्ष के समय। उसने सेवकाई की, परन्तु उसने सीखा भी। उसने स्वयं यात्रा की क्योंकि परमेश्वर उसे आगामी मिशनरी यात्राओं के लिए तैयार कर रहा था जिसका नेतृत्व वह खुद

करेगा। उसने प्रचार किया, कलीसीयाओं को स्थापित किया और उनको मजबूत किया, और दुखों के माध्यम से धैर्य करना सीखा। हो सकता है उसने मृत्यु का अनुभव भी किया हो और इस समय के दौरान वह फिर से जीवित हो गया हो (2 कुरिन्थियों 12:1-10)। उसके जीवन और हृदय में पूर्ण, संपूर्ण परिवर्तन आ गया था। अब उसके पास वह संतोष और शांति थी जो इतने लंबे समय से उससे दूर थी। उसका जीवन पूरी तरह से पलट गया था। बाहरी रूप से वह ऊपर से नीचे तक गया (यहूदी धर्म में एक नेता होने से यीशु के एक शिष्य के पास)। अंदरूनी रूप से, हालाँकि, चीजें नीचे से ऊपर तक चली गईं (अशांति से शांति और संतुष्टि तक)। अंततः पौलुस अन्ताकिया में आ बसा जहाँ एक बहुत मजबूत मसीही कलीसीया शुरू हो गई थी, और जहाँ विश्वासियों को पहले 'मसीही' कहा जाने लगा था। यही वो स्थान है जहाँ पर कहानी 'बेन हूर' घटित होती है। पौलुस वहाँ कलीसीया में एक अगुवा बन गया था - शीर्ष पुरुषों में से एक नहीं बल्कि प्रशिक्षण में एक अगुवा। परमेश्वर उसे आगामी मिशनरी कार्यों के साथ अन्यजातियों के लिए तैयार कर रहा था जिसका पौलुस खुद जल्द ही नेतृत्व करने वाला था।

24ख पहली मिशनरी यात्रा

अन्ताकिया की कलीसीया ने स्वयं को यीशु मसीह में विश्वासियों के नए आंदोलन के केंद्र के रूप में पाया। उत्पीड़न ने मुख्य ध्यान को यरूशलेम से हटा दिया था, और अन्ताकिया पर केन्द्रित कर दिया था, जहाँ विश्वासियों को पहली बार 'मसीही' कहा गया था।

परमेश्वर ने वहाँ की छोटे बालक रूपी कलीसीया का नेतृत्व करने के लिए विभिन्न राष्ट्रों और संजातीय पृष्ठभूमियों से एक अगुवाई करने वाले क्षेत्र के तौर पर गठित किया था। उस समूह के छोटे लोगों में से शाऊल नाम का व्यक्ति भी था। वह बरनबास द्वारा वहाँ लाया गया था, शायद एक मुख्य अगुवा के रूप में, शिक्षण में मदद करने के लिए (प्रेरितों के काम 12:1)।

अप्रैल, 48 ईस्वी परमेश्वर स्पष्ट रूप से उनमें से कुछ के दिलों में पहले से ही काम कर रहा था ताकि वे उन लोगों तक सुसमाचार ले जा सके जिन्होंने इसे अभी तक नहीं सुना। शायद बरनबास साइप्रस और शाऊल, जो बहुत पहले से मित्र थे, उन्होंने मुक्ति कार्य की योजना के साथ जाने की बात की थी। पर्वत क्रमवार उत्तर की ओर, पूर्व में रेगिस्तान और दक्षिण में यरूशलेम था। जाने की प्राकृतिक दिशा पश्चिम की ओर थी।

जब वहाँ की कलीसीया परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज कर रही थी और उसकी महानता को आराधना कर रही थी, आत्मा ने उन्हें दिखाया कि उन्हें इस यात्रा पर बरनबास और शाऊल को भेजना चाहिए (आयत 2)। कलीसीया ने इस बारे में प्रार्थना की और उपवास किया, उन्हें कार्य के लिए समर्पित किया, और स्वयं को उनके लिए प्रार्थना करने और उनका समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध किया (आयत 3)।

अप्रैल - जून, 48 ईस्वी बरनबास और शाऊल सेल्यूकिया, साइप्रस और सलामिस (4-5) गए। वे जहाँ कहीं भी जाते प्रचार करते थे, पहले आराधनालयों में, फिर जहाँ कहीं भी लोग इकट्ठा हो सकते थे (5)।



जून 48 ईस्वी जब पाफुस में उनका सामना एक यहूदी तांत्रिक से हुआ, जो शैतान की शक्ति से काम करता था, जिसका नाम इलीमास था (6-12)। परमेश्वर ने उसे इस तरह अंधा कर दिया कि उसकी महिमा हुई और बहुतों ने विश्वास किया (12)। हालांकि यहां पर अगुवाई में बदलाव हुआ है। आयत 7 कहती है कि "बरनबास और शाऊल" वहां गए, फिर, शैतान की ताकतों को हराने के लिए परमेश्वर द्वारा शाऊल का इस्तेमाल किया गया (9-11)। यहाँ से हम शाऊल को अगुआ के रूप में देखते हैं। "पौलुस और उसके साथी" (13)।

शाऊल (इब्रानी नाम) को अब पौलूस (रोमन नाम) के नाम से जाना जाता है क्योंकि उसकी सेवकाई का ध्यान यहाँ अन्यजातियों पर जाता है। स्वाभाविक रूप से वे उसे 'पौलुस' कहेंगे।

पौलूस के प्राकृतिक अगुवा कौशल सबसे आगे आए और उन्होंने अगुवाई का जिम्मा संभाला। हालाँकि, ध्यान देने योग्य बात यह है कि वह इस परिवर्तन के लिए सही समय आने तक का धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। उसने खुद आपने आप को आगे नहीं बढ़ाया। यह भी ध्यान देने की बात है कि बरनबास उसके साथ कोई प्रतियोग्यता खेल नहीं खेल रहा था और बदलाव को स्वाभाविक रूप से आने दे रहा था। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह पहले स्याथान पर है या दूसरे स्थान पर है, उसका मकसद सिर्फ यह था कि परमेश्वर का काम हो रहा है और यीशु की महिमा हो रही है। निश्चय ही हमें आज भी पौलुस और बरनबास जैसे और लोगों की आवश्यकता है!

उस समय भी हर कोई उनके जैसा नहीं था। दरअसल, मदद करने के लिए आया मरकुस कुछ ही देर बाद घर लौट गया था। क्या वह नहीं चाहता था कि पौलुस उसके चाचा बरनबास को पीछे हटाकर अगुवाई करे? क्या यह यात्रा उसके लिए बहुत लंबी और कठिन थी? क्या वह अपने घरवालों की यादों में खोया रहता था? उनके प्यार में डूबा हुआ था? क्या वह लोगों की प्रतिक्रिया पर निराश था? क्या वह अन्यजातियों को बचाए हुए नहीं देखना चाहता था? क्या उसे किसी बीमारी की चिंता थी? ऐसा लगता है

कि पौलूस इस समय मलेरिया से बीमार होगा और उसे गलतिया में उपचार के लिए वापस लाया गया था। क्या मरकुस को इससे डर था? जो भी कारण हो, मरकुस पक्षत्याग व्यवहार ने वास्तव में पौलूस को अंदरूनी रूप से इतना दुखी कर दिया था कि वह उसे दूसरी मिशनरी यात्रा पर साथ आने पर असहमत था। बरनबास उसे ले गया और वे अपनी यात्रा पर चले गए। हालाँकि, बाद में, पौलूस और मरकुस फिर से मिल गए और मसीह की खातिर एक साथ काम करने लगे।

48 ईस्वी की जुलाई के शुरू से सितम्बर के मध्य तक, लोगों की प्रतिक्रिया इतनी स्कारात्मक थी कि लोग बार बार संदेश को सुनना चाहते थे और इस लिए पौलूस और बरनबास को फिर पिसिदिया के अन्ताकिया में और 2 महीने ठहरे रहे (13-14)। पौलूस ने यहाँ आराधनालय में लोगों को यीशु के बारे में एक लंबा सन्देश दिया (14-41)। अन्यजातियों के नगरों में रहने वाले यहूदियों के लिए उसके सन्देशों में से यह विशिष्ट था। पहले वह दिखाता है कि एक उद्धारकर्ता का वादा किया गया है (16-25)। वह पुराने नियम के धर्मग्रंथों को उद्धृत करता है और एक उद्धारकर्ता की जरूरत को दिखाने के लिए ऐतिहासिक उदाहरणों का उपयोग करता है। फिर वह एक उद्धारकर्ता प्रदान किए जाने की बात करता है (36-37)। वह यीशु के जीवन के बारे, सलीब पर चढ़ने के बारे और पुनरुत्थान के बारे में बताता है। वह यीशु को उनके मसीहा और परमेश्वर (38-41) के रूप में स्वीकार करने के निमंत्रण के साथ समाप्त करता है। वह उन्हें चेतावनी भी देता है कि यदि वे यीशु की ओर नहीं फिरेंगे तो क्या होगा।

मध्य जुलाई से मध्य सितंबर, 48 ईस्वी इस संदेश की प्रतिक्रिया इतनी सकारात्मक थी कि लोग और अधिक सुनना चाहते थे, इसलिए पौलूस और बरनबास पिसिदिया के अन्ताकिया में दो महीने तक शिक्षण और प्रचार करते रहे। यहूदियों ने उनके संदेश को अस्वीकार कर दिया, लेकिन अन्यजातियों ने इसका स्वागत किया (42-52)। यह बात गलातिया सहित पूरे भौगोलिक क्षेत्र में फैल गई। इस समय के दौरान पौलूस ने वहाँ कुछ यात्राएँ कीं, और वहाँ के लोगों के साथ एक करीबी रिपोर्ट बनाई। उसका मलेरिया इतना बुरा हो गया था कि उन्हें उसकी देखभाल करनी पड़ी (गलतियों 4:13-15)। ये लोग अव्यवस्थित, स्वतंत्र और कई तरह से असभ्य थे। इस मिशनरी यात्रा के अंत में पौलूस के अन्ताकिया लौटने के बाद, उसने लोगों को वापस एक पत्र लिखा। यह उसका पहला पत्र था जो गलातियों की पुस्तक, बाइबल में दर्ज है। अन्त में जिन्होंने सन्देश को अस्वीकार किया था, उन्होंने पौलूस और बरनबास को नगर से बाहर भेज दिया, सो वे इकुनियुम को चले गए।

अक्टूबर 48 फरवरी 49 ई. के अंत तक, -इकुनियुम में पौलूस और बरनबास सबसे पहले आराधनालय में गए, जैसा कि उनका तरीका था (प्रेरितों के काम 14:1-5)। कुछ यहूदियों ने विश्वास किया, परन्तु बहुतों ने अस्वीकार किया और अन्यजातियों को उनके विरुद्ध भड़काया। अपना शारीरिक नुकसान होने से बचने के लिए वे वहाँ से भाग गए।

मार्च से मध्य जून 49 ई. तक पौलूस और बरनबास लुकोनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में गए। ये छोटे, ग्रामीण गाँव थे। पूरा इलाका उबड़-खाबड़ और प्राचीन था। तीमुथियुस, लोइस और यूनीके लुस्त्रा में रहते थे। परमेश्वर ने लुस्त्रा (8) में एक विकलांग व्यक्ति को चंगा करने के लिए पौलूस और बरनबास का उपयोग किया। लोगों का मानना था कि वे देवता हैं और वे उनके सामने बलि चढ़ाना चाहते थे (9-13)। स्थानीय परंपरा कहती है कि अतीत में ज़्यूस और हेर्मिस, देवता, लुस्त्रा आए थे, लेकिन उन्हें अस्वीकार कर दिया गया था, इसलिए उन्होंने शहर को नष्ट कर दिया। लोककथाओं ने कहा था कि वे एक दिन लौटेंगे। पौलूस और बरनबास उनके जैसे दिखते थे, और उनके चमत्कारी चिन्ह लोगों को यही साबित करने के लिए लग रहे थे।

हालांकि, उन्होंने देवता होने से इनकार किया (14-18), और लोगों को यीशु की ओर दयां करने की प्रेरणा देने की कोशिश। फिर भी, स्थानीय लोग उन्हें देवता बनाना चाहते थे। तब कुछ यहूदी, जो पौलुस, बरनबास और सुसमाचार का विरोध करने के लिए सौ मील की यात्रा करके आए थे, वहाँ पहुँचे और उन्होंने भीड़ को पौलुस और बरनबास के विरुद्ध भड़का दिया। उन्होंने पौलुस पर पथराव किया और शहर के बाहर उसे नशीला पदार्थ पिला दिया, और उसे मरा हुआ छोड़कर चले गए (20)। ऐसा लगता है कि वह सचमुच मर गया था और परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर दिया। पौलुस इस समय के बारे में 2 कुरिन्थियों 12:1-5 में बताता है। पौलुस के लिए यह कितना उत्साहजनक, प्रेरक अनुभव रहा होगा!

49 जून का अंत - अगले दिन पौलुस और बरनबास दिरबे गए। वहाँ प्रतिक्रिया बहुत अच्छी और सकारात्मक थी (21)। वे सिलिशियन द्वार में से से पौलुस के घर तर्जाने के लिए एक छोटा रास्ता तय कर सकते थे, लेकिन उन्होंने अपने कदम पीछे खींच लिए ताकि वे उन कलिसीयाओं को फिर से देख सकें, उन्हें प्रोत्साहित कर सकें और उन्हें मजबूत कर सकें (22-23)।

जुलाई-सितम्बर 49- वे लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया से होते हुए मार्ग में (21), फिर पिसिदिया, पंफूलिया, पिरगा और अत्तलिया से होकर चलते रहे। उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि जिन कलिसीयाओं को उन्होंने शुरू किया था वे बढ़ रही थी।

सितम्बर 49 - अप्रैल 50 वापस अन्ताकिया में उन्होंने बताया कि कैसे परमेश्वर ने यहूदियों और अन्यजातियों में समान रूप से कार्य किया था। उन्होंने वहाँ कई महीने बिताए। इस दौरान पौलुस ने गलातियों को पत्र लिखा। समय सफलतापूर्वक व्यतीत हो गया था, क्योंकि कई अन्यजातियों ने सुसमाचार का जवाब दिया था। शीघ्र ही परमेश्वर ने पौलुस के हृदय में उन कलिसीयाओं का फिर से दौरा करने और तब तक यात्रा करने का विचार रखा जब तक कि वचन अब हम तक नहीं फैल गया है।

24 ग येरूशलेम कौंसिल (समिति)

हम सभी "अनुग्रह से उद्धार" जैसे शब्दों को जानते हैं, लेकिन फिर भी हम अक्सर उद्धार या मसीही जीवन में 'शर्तें' जोड़ देते हैं। जब मैं एक नया नया विश्वासी बना था, तो मुझे कुछ अच्छे मसीहीयों द्वारा शिष्य बनाया गया था, दुर्भाग्य से जिन्होंने मुझे कुछ बहुत ही चतुर लेकिन मजबूत कानूनवाद से परिचित कराया। मेरा विश्वास यह था कि अगर मैं कुछ विशेष काम करूँगा (या नहीं करूँगा) तो मैं अधिक आध्यात्मिक हो जाऊँगा। अगर मैं कुछ खास तरीकों से बात करता और काम करता हूँ तो मैं तुरंत पुराने, अधिक परिपक्व विश्वासियों में से एक बन सकता था। वास्तव में निर्णय लेने के लिए मेरे पास बहुत बातें थी, क्योंकि ऐसा लगता था कि मसीही व्यवहार के बारे में सब कुछ पहले से ही तय किया जा चुका था। पहनना ओढ़ना, बालों की लंबाई और स्टाइल, काम-काज, मनोरंजन, समय और धन का उपयोग - सभी स्पष्ट रूप से निर्धारित किए जा चुके थे। मुझे तो केवल इनका पालन ही करना था।

परमेश्वर ने मुझे इससे बाहर निकाला, और मैं न्यायपूर्वक या आलोचनात्मक नहीं होना चाहता हूँ। मैं उस अनुग्रह की सराहना करता हूँ जो अब यीशु में मेरे पास है। यह मजाकिया सा तो लगता है, लेकिन मेरा

मसीही जीवन अब भी बाहरी तौर पर वैसा ही है जैसा तब था। जो तबमैंदील हुआ है वो मेरा अंदरूनी मकसद या नजरिया है जो काफी हद तक बदल गया है। मैं दूसरों को प्रभावित करने के लिए, परमेश्वर को प्रभावित करने के लिए या खुद को प्रभावित करने के लिए चीजों को करने के खतरे से अच्छी तरह वाकिफ हूँ। मैं जो कुछ भी करता हूँ या मुझे जो कुछ भी करना है वह यीशू के प्रति प्रेम और विश्वासयोग्यता की प्रतिक्रिया के रूप में करना चाहिए। मैं जो कुछ भी करता हूँ उसको करने का मेरा पहला और एकमात्र यही मकसद होना चाहिए। यदि इसके आलावा मैं किसी दुसरे मकसद से करता हूँ तो यह कानूनवाद होता है। इसमें परमेश्वर से कुछ कमाने या पाने का मेरे द्वारा प्रयासकिया जाना भी शामिल है। परमेश्वर को प्रभावित करने के लिए मैं बिल्कुल कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। मेरे पास जो कुछ भी है या हमेशा रहेगा वह केवल उसकी कृपा से है। केवल एक चीज जिसने उसे हमेशा प्रभावित किया वह था सलीब पर यीशु का कार्य। शैतान, हमारे घमण्ड से, हमारा पेट भर देगा और हमें सोचने पर मजबूर कर देगा कि हम परमेश्वर के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन सच यह है कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं। शैतान जो कुछ भी कर सकता है वह करेगा कि हमारा ध्यान परमेश्वर के अनुग्रह से हटा कर और मनुष्य के कार्यों पर केन्सेद्रित करवा दे।

मैं परमेश्वर की अद्भुत कृपा के लिए उसका धन्यवाद करता हूँ। मैं हमेशा इसमें बना रहना चाहता हूँ। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मैं किसी भी तरह से लोगों को कानूनवाद और बाहरी गतिधियों के झमेले में पड़ने के लिए प्रभावित नहीं करता हूँ। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि तब कैसा होता यदि ऐसी स्थिति होती कि हमें उद्धार पाने या मसीही जीवन जीने के लिए कुछ चीजें करनी होती (या छोड़नी होती)। परमेश्वर इसको इस रूप में बे बना सकता था, परन्तु उसने इसे वैसा नहीं बनाया, उसके नाम की स्तुति हो।

पतझड़, 49 ई. - कलीसिया की समस्या - यह सब कोई नई बात नहीं है। प्रारंभिक मसीहीगण यहूदी थे जो कानून का पालन करते हुए बड़े हुए थे, तब उन्होंने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया था। फिर, जैसे-जैसे परमेश्वर के राज्य का प्रसार हुआ, बहुत से अन्यजातियों ने यीशु पर विश्वास करना शुरू कर दिया, उसकी मुक्ति के मुफ्त उपहार को स्वीकार करते गए। हालाँकि, कुछ आरम्भिक कलीसिया के अगुवों ने इन अन्यजातियों को सिखाते थे कि उन्हें भी यहूदी व्यवस्था का पालन करना जरूरी है (प्रेरितों के काम 15:1)। इसका अर्थ है खतना करना, खाने पीने के नियम, बलिदान और प्रसाद खाना, पहनना ओढ़ना, त्योहार/पर्व, दशमांश देना, सब्त का पालन करना और जीवन के हर क्षेत्र में जो व्यवस्था है उसको मनना। पौलूस और बरनबास ने इसका बहुत विरोध किया (आयत 2अ) क्योंकि उन्होंने देखा था कि परमेश्वर ने उनकी पहली मिशनरी यात्रा में अन्यजातियों में कैसे काम किया था। एक मसीही को यहूदी कानून का पालन करना जरूरी है या नहीं, यह मुद्दा इतना बड़ा हो गया था कि उन्हें एहसास होने लगा कि इस मुद्दे पर, उन्हें यरूशलेम जाना होगा और वहाँ के प्रेरितों और अगुवों से सलाह लेनी होगी (2अ)। अपने ऊपर आध्यात्मिक अधिकार रखने वालों के पास जाना हमेशा महत्वपूर्ण होता है। जो अधिक अनुभवी और आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होते हैं, उन्हें निर्णय लेने देना चाहिए।

बैठक #1 - जब वे यरूशलेम पहुंचे (आयत 3) उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया (आयत 4अ)। उन्होंने प्रेरितों को वह सब कुछ बताया जो उनकी मिशनरी यात्रा में सामने था (आयत 4बी)। यह पौलूस, बरनबास और अगुओं के बीच एक निजी बैठक थी। ऐसा प्रतीत होता है कि तीतुस भी उनके साथ था (गलातियों 2:1-2)। वह एक अन्यजाति से था जो व्यवस्था के बिना ही यीशु में उद्धार के लिए आया था।

बैठक #2 अगली बार समस्या पर चर्चा करने के लिए एक सामान्य, खुली बैठक आयोजित की गई। जो यह कहते कि उद्धार के साथ-साथ व्यवस्था का पालन करना आवश्यक है, उन्होंने अपनी बात पहले रखी (आयत 5; गलातियों 2:3-5)। पौलूस और बरनबास ने भी अपने अनुभवों के बारे में बताया।

बैठक #3 फिर प्रेरितों और अगुवों ने चर्चा करने और प्रश्न पर विचार करने के लिए अकेले में बैठक की (आयत 6)। पतरस ने कुरनेलियुस के बारे में अपनी गवाही को साझा कीया और यह कि परमेश्वर ने उसे क्या दिखाया था (आयत 7-11)। बरनबास और पौलुस ने साझा किया कि परमेश्वर ने उनके द्वारा क्या-क्या कीया था (पद 12)।

फिर याकूब के बोलने की बारी थी। वह आरम्भिक कलीसिया का मुखिया था, इसलिए अन्तिम निर्णय उसी की जिमेदारी था। उसने अपने निर्णय को बाइबल पर आधारित किया, नाकि व्यक्तिगत अनुभव पर (आयत 15-18)। अक्सर आज हम उस व्यक्ति से प्रभावित होते हैं जिसने एक या दूसरा अनुभव किया हो, जब हमारा अंतिम निर्णय करने का अधिकार परमेश्वर का वचन है। याकूब वचन पर वापस गया और उस पर अपना निर्णय आधारित किया। उसने अमोस 9:11-12 को उद्धृत करते हुए कहा कि अन्यजाति भी परमेश्वर को खोज सकते हैं। ऐसा करने के लिए उन्हें यहूदी बनने की ज़रूरत नहीं है। याकूब अपना फैसला देने के लिए इसका इस्तेमाल करता है। ध्यान दें कि उनके पास सभी वोट अधिकार नहीं थे। लोकतंत्र ठीक है, लेकिन परमेश्वर की सरकार की व्यवस्था हमेशा एक ईश्वरीय प्रभुसत्ताधारी रही है, न कि बहुसंख्यक लोगों द्वारा शासित।

वैसे भी, याकूब का निर्णय यह था कि अन्यजातियों को उद्धार या मसीही जीवन जीने के लिए व्यवस्था का पालन करना जरूरी नहीं था (आयत 19)। आज हमारे लिए यह क्या रखता है! यदि निर्णय अलग रहा होता, तो हम यीशु के दिनों में फरीसियों की तरह रहते, खाते, कपड़े पहनते, बोलते और काम करते रहते ! क्या आप उसके लिए गवाही देने की कल्पना कर सकते हैं! फिर भी, उन्होंने अन्यजातियों को चेतावनी दी कि अब वे अपनी नई स्वतंत्रता का उपयोग अपने यहूदी भाइयों के सामने ठोकर का कारण बनने के लिए ना करें। यहूदी उनके सामने ठोकर का कारण (कानून) नहीं रख सकते थे, और वे अपने यहूदी भाइयों के साथ ऐसा नहीं कर सकते थे। उन्हें विचारशील होना था (आयत 20-21)। वे न तो अपनी स्वतंत्रता का लाभ उठा सकते थे और न ही ऐसा कुछ कर सकते थे जिससे यहूदियों की आत्मा को अंदरूनी ठेस पहुंचे। हमें भी, अन्य विश्वासियों के विवेक के बारे में विचार करना चाहिए और अपनी स्वतंत्रता को इस तरह से प्रयोग नहीं करना चाहिए जिससे वे अपने मसीही जीवन में ठोकर खाएं।

बैठक # 4 बात फैल गई, और इसे अन्य कलीसीयाओं में ले जाने के लिए पुरुषों को चुना गया गया (आयत 22)। इसमें विशेष रूप से महत्वपूर्ण था अन्ताकिया, क्योंकि वह मसीहीयत का नया केंद्र बन रहा था और तेजी से यरूशलेम की जगह ले रहा था।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर कोई जानता है कि इस फैसले के पीछे कौन था, और लोग यह नहीं कहते हैं कि पौलूस न इसे बना रहा था, उन्होंने उन पुरुषों के साथ भेजने के लिए एक पत्र भी लिखा (आयत 23-29)।

सर्दी, 49-50 ईस्वी- अन्ताकिया इस निर्णय पर खुश था, और कलीसिया एक नए विकास की तेज गति पर थी (आयत 30-35)। ऐसा लगता है कि जब कभी उन्होंने सफलतापूर्वक चुनौती का सामना किया, उसके बाद विकास में तेजी आई। परमेश्वर इसी तरह से भगवान काम करता है। यह वह समय था जब

पौलुस ने पतरस को सार्वजनिक रूप से उन लोगों के साथ, अपनी नजरों में कानूनवादी थे, समझौता करने पर बुरी तरह टोक दिया था। (गलतियों 2:11-14)।

अप्रैल, 50 ईस्वी- इस मुद्दे के सुलझ जाने के बाद, पौलुस वापस जाना चाहता था और उन कलीसियाओं का दौरा करना चाहता था जिन्हें उसने शुरू किया था, ताकि उन्हें प्रोत्साहित करे और उन्हें मजबूत कर सके (आयत 36)। वह मरकुस को साथ लेने के बारे में बहुत असहमत था, इसलिए वे अलग हो गए (आयत 37-40)। बरनबास ने मरकुस को ले लिया, परन्तु उसकी जगह पौलुस ने सीलास को ले लिया। इसके बाद प्रेरितों के काम में पौलुस और सीलास के सीरिया और किलिकिया से होकर जाने की कहानी अति है (आयत 41)। जबकि इस 'तीव्र असहमति' ने स्पष्ट रूप से इन दोनों मित्रों को बेहद दुखी कर दिया, इस से केवल यह दिखता है कि परमेश्वर के सेवक कैसे हैं। बाद में पौलुस ने मरकुस को साथ मिलाप किया और सेवकाई में उसके योगदान को स्वीकार किया, लेकिन तब तक मरकुस भी कार्य को बहुत बढ़ा चुका था। कम से कम परमेश्वर की महिमा हुई और सभी चीजों ने अच्छे के लिए काम किया, क्योंकि अब दो मिशनरी दल बाहर जा रहे थे।

अपने जीवन में सावधान रहें, यह सुनिश्चित करें कि आप जो कुछ भी करते हैं उसको करने में आप आपने दम पर विश्वास नहीं करते हैं या इसके लिए कोई घमंड नहीं करते हैं। हमारे पास जो कुछ भी है और जो है वह केवल प्रभु के अनुग्रह से है। कभी भी दूसरों को उनके बाहरी दिखावे से मत आंकिए। हम फल का मूल्यांकन कर सकते हैं, लेकिन उद्देश्यों का न्याय नहीं कर सकते। आप भी दूसरों को उतनी कृपा दिखाए जितनी आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपको दिखाए!

गलातियाँ :

मसीही स्वतंत्रता



शीर्षक: प्राप्तकर्ताओं के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 49 ई.

लेखन का स्थान: अन्ताकिया

प्राप्तकर्ता: गलातियां में कलीसिया (एशिया माइनर)

प्रमुख आयत: "यह उस स्वतंत्रता के लिए है कि जिसमें मसीह ने हमें स्वतंत्र किया है। इसलिए बने रहो, और फिर से अपने ऊपर दासता के जूए का बोझ पड़ने से न दब जाओ।" 5:1

प्रमुख शब्द: "मसीह" (43 बार); "कानून" (32); "मांस" (18); "विश्वास" (22); "आत्मा" (15)

उद्देश्य: पाठकों को यह दिखाने के लिए कि कानून का उद्देश्य हमें मसीह की ओर ले जाना है (3:24) और मसीह का उद्देश्य हमें मुक्त करना है (5:1), मसीही स्वतंत्रता लाना है।

विषय: यह दिखाने के लिए कि एक विश्वासी कानून और कानूनवाद से मुक्त है।

जब मैं मसीही जीवन में नया ही था तो मुझे मॉर्मन चर्च के साथ-साथ हर्बर्ट डब्ल्यू आर्मस्ट्रांग के रेडियो चर्च ऑफ गॉड में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। जैसे मैंने इन समूहों में जांच की, मैंने पाया कि उनमें से प्रत्येक के आधार में प्रथाओं का एक सेट था जिसका पालन करना अनिवार्य है। बड़ी चीजें, यहां तक कि जीवन की छोटी चीजें भी विनियमित थीं और किसी भी घटना के लिए विशिष्ट

प्रतिक्रियाएं निर्धारित की हुयी थी। हालांकि, यह बहुत असामान्य नहीं लग रहा था, क्योंकि मैं जिस बैपटिस्ट चर्च का सदस्य था, वह भी लगभग उसी तरह का ही था। नए सदस्य पुराने सदस्यों से सलाह लेते थे, कि किस स्थिति में कैसे कपड़े पहने, कैसे कार्य करें, कैसे बात करें और कैसे सोचें। यदि कोई नहीं जानता होता था, तो उन्हें केवल पूछना ही होता था और उत्तर तुरंत दिया जाता था। सब कुछ साफ़ साफ़ था। पहले तो यह अच्छा लगता था क्योंकि मुझे अपने आप निर्णय नहीं लेने पड़ते थे। वे सब बने बनाये होते थे। एक नए मसीही के रूप में, मैं ऐसे अभिनय कर सकता था और उन लोगों की तरह दिख सकता था जो अपने पूरे जीवन में मसीही जीवन जी रहे थे। जो व्यक्ति सिर्फ़ इन 'नियमों' का पालन करता था, उसके लिए तत्काल आध्यात्मिकता उपलब्ध थी। हालांकि, जल्द ही, मुझे एहसास हो गया कि मेरा मसीही जीवन अन्य मसीही लोगों के द्वारा चलाया जा रहा था और उनके लिए जीया जा रहा था, न कि मसीह के लिए। दूसरे क्या सोचेंगे, मैं जो कुछ भी करता सिर्फ़ इस डर से करता। यह एक खालीपन था। ओह, इसने मेरे अभिमान को तो ऊँचा उठाता था, लेकिन वह 'व्यक्तिगत संबंध' कहाँ था जिसकी मुझे इतनी लालसा थी?

फिर बाइबल कॉलेज में, मैंने बाइबल की जिस पहली किताब का गहराई से अध्ययन किया, वो गलातियाँ की किताब थी - ठीक वही किताब जिसकी मुझे ज़रूरत थी! पौलूस उन लोगों को लिख रहा था, जो उसी दुविधा का सामना कर रहे थे जिसका मैं कर रहा था। उसने अभी-अभी अपनी पहली मिशनरी यात्रा पूरी की थी, जो एशिया माइनर से होते हुए गलतिया के क्षेत्र में जा रही थी। वहाँ पर कई कलिसियाएँ शुरू की गयी थी, लेकिन पौलूस के जाने के बाद, कुछ यहूदी मसीही जो यह कहते हुए आए कि मुक्ति प्राप्ति के लिए सभी यहूदी कानूनों का पालन करना ज़रूरी है, और इस तथ से लोगों को गुमराह करते थे। इसलिए जब पौलूस अन्ताकिया वापस आया, तो उसने उन्हें व्यवस्था और अनुग्रह के संबंध के बारे में उन्हें और मुझे दुरुस्त करने के लिए यह लिखा। उसने जो लिखा उससे उसने तीन प्रमाण दिए कि हम कैसे हर कानून से कैसे और मुक्त हैं। ये इस प्रकार हैं:

I. जीवनी प्रमाण (1:10-2:21) एक स्वतंत्र प्रकाशन- पहले तो पौलूस अपने बारे में विस्तार से बात करता है, कुछ ऐसा जो वह किसी अन्य पुस्तक में नहीं करता है। हालाँकि, किसी अन्य पुस्तक में वह ऐसे लोगों को नहीं लिख रहा है जो उस पर और उसके उद्देश्यों पर अविश्वास करते हों। उसे यह साबित करना होगा कि परमेश्वर उसके माध्यम से बोल रहा है नहीं तो कोई भी उसकी कुछ भी बात नहीं सुनेगा। इस प्रकार वह पहले अपनी गवाही देता है।

पौलूस बताता है कि उसे अपना संदेश सीधे यीशु से मिला था, यहूदी रब्बियों से नहीं, क्योंकि वे तो उसके विरोध में थे (1:10-14), और न ही प्रेरितों से क्योंकि वे उस से दूर रहते थे (1:15-17)। ना ही उसने अपना सन्देश यहूदिया की कलीसियाओं से प्राप्त किया है, क्योंकि उसने न तो उनसे सीखा है (1:18-24) और न ही किसी और से सीखा है (2:1-18)। उसने स्वयं व्यवस्था का पालन करने में उन सब में बेहतर था, फिर भी वह अपने अनुभव से जानता था कि वह खाली था (2:19-21)।

II. धर्मशास्त्रीय प्रमाण (3:1 - 4:31) विधिवाद की विफलता - यह दिखाने के बाद कि उसके पाठक संदेश के स्रोत पर भरोसा कर सकते हैं, वह (पौलूस) अब संदेश पर ही ध्यान केंद्रित करता है। वह उन्हें स्मरण दिलाता है कि यदि वे अनुग्रह के कारण बचाए गए हैं, तो उन्हें इसी प्रकार मसीही जीवन जीना भी चाहिए (3:1-5)। कोई भी प्रणाली जो मनुष्य या ईश्वर को प्रभावित करने या प्रसन्न करने पर ध्यान केंद्रित करती है, विफल हो जाती है क्योंकि ध्यान बाहरी कार्य विधियों पर होता है, आंतरिक मनोवृत्ति पर नहीं। यहाँ तक कि पौलूस अब्राहाम का उपयोग मुक्ति और विश्वास के द्वारा मसीही जीवन जीने के उदाहरण

के रूप में करता है, इससे पहले कि परमेश्वर उसे कोई व्यवस्था देता (3:6-22)। वास्तव में व्यवस्था हमें दास बनाती है, स्वतंत्र नहीं करती (4:8-31)।

III. व्यवहारिक प्रमाण (5:1 - 6:10) स्वतंत्रता का प्रभाव -यह दिखाने के बाद कि व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास करना जीवन जीने का एक घटिया तरीका है, पौलुस यीशु के पीछे चलने को जीवन जीने का एक श्रेष्ठ तरीका बताता है। कानूनवाद परमेश्वर के न्याय के अधीन है, क्योंकि यह यीशु के द्वारा पूरा किए गए कार्य को बढ़ाना चाहता है। कानूनवाद हमारे बहरी कार्य को बढ़ाता है और हमारे घमण्ड को तगड़ा करता है। परमेश्वर चाहता है कि हम प्रेम से उसकी आज्ञा मानें और उसकी सेवा करें। जब हम प्रेम से आज्ञापालन और सेवा करते हैं तो हमारे जीवन में परिणाम स्पष्ट होते हैं : पवित्र आत्मा का फल, विनम्रता और नम्रता, विश्वासयोग्यता, दृढ़ता, यह कुछ नाम हैं (5:25-6:10)।

एक महिला ने एक ऐसे व्यक्ति के लिए काम करती थी जिसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। हर दिन वह उसे काम करने के लिए एक सूची देता था और वह उन्हें करती थी क्योंकि वह उसे सप्ताह के अंत में इसके लिए भुगतान करता था। आखिरकार उन्हें एक-दूसरे से प्यार हो गया और उन्होंने शादी कर ली। उसने पाया कि वह वही काम करती थी जो करने का उसे भुगतान किया जाता था और बहुत कुछ, लेकिन अब ना कोई सूची थी और ना ही कोई भुगतान था। उसने अब वो सब आपने प्यार में होकर हटा दिया था। उसका मकसद बदल गया था। परमेश्वर की सेवा करने में आपका मकसद क्या है? अगर यह मकसद प्यार नहीं है, तो यह सही नहीं है।

गलातियों की रूपरेखा

शुरू: 1:1-9



I. मसीही स्वतंत्रता का बाइबिल प्रमाण (एक स्वतंत्र प्रकाशन) 1-2

- क- मानव शिक्षण से स्वतंत्र 1:10-17
- ख- यहूदी कलिसीयाओं से स्वतंत्र 1:18-24
- ग- यहूदीकरण करने वाले भाइयों से स्वतंत्र 2:1-10
- घ- प्रेरितों के दबाव से स्वतंत्र 2:11-18
- ङ-स्वार्थ से स्वतंत्र 2:19-21

II. मसीही स्वतंत्रता का धर्मास्तिक प्रमाण (कानूनवाद की विफलता) 3-4

- क- व्यक्तिगत अनुभव द्वारा दिखाया गया है 3:1-5
- ख- पुराने नियम के शिक्षण द्वारा दिखाया गया है 3:6-14

- ग- वादे की प्राथमिकता द्वारा दिखाया गया 3:15-22
- घ- परिपक्व विश्वास की श्रेष्ठता द्वारा दिखाया गया 3:23-4:7
- ङ- विपरीत व्यवहार के खतरे द्वारा दिखाया गया 4:8-11
- च- प्रतिविरोधिक मंशाओं द्वारा दिखाया गया 4: 12-20
- छ- हाजरा के उदाहरण द्वारा दिखाया गया 4:21-31

III. मसीही स्वतंत्रता का व्यावहारिक प्रमाण (स्वतंत्रता का प्रभाव) 5-6

- क- विधिवाद के परिणाम 5:1-12
- ख- स्वतंत्रता की परिभाषा 5:13-15
- ग- व्यक्तिगत अभ्यास 5:16-24
- ग- समाजिक व्यवहार 5:25-6:10
- समापन 6:11-18

24घ- दूसरी मिशनरी यात्रा



पौलूस एक जगह पर बैठे रहने वाला नहीं था। वह हमेशा परमेश्वर के लिए आगे बढ़ना चाहता था: खुशखबरी फैलाने के लिए, कलीसिया शुरू करने के लिए और विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिए। पहली मिशनरी यात्रा से लौटने के छह महीने बाद वह फिर से इस कार्य में सरगर्म हो गया था। उन 6 महीनों के दौरान वह यरूशलेम कौंसिल (प्रेरितों के काम 15) में गया और गलातियों को लिखा था। अब वह फिर से उनको मिलने जाना चाहता है।

मई 50 ई. पौलुस इस बार दिरबे और लुस्तारा (प्रेरितों के काम 16:1) में रुकते हुए एशिया माइनर की ओर बढ़ता है, जहाँ तीमुथियुस भी उनके साथ मिल जाता है।

50 ई की मई के अंत से जून के मध्य तक- पौलूस, सीलास और तीमुथियुस फिर इकुनियुम जाते हैं (पद 2-3) और वहां सेवा करते हैं। उसने तीमुथियुस का, जो कि आधा यहूदी था, खतना करवाया ताकि वह उन ईमानदार और वफादार यहूदियों के सामने ठोकर का कारण न बने जो यह सोच सकते हैं कि यह लोग व्यवस्था से अपनी स्वतंत्रता का दिखावा कर रहे थे। उन्होंने अगले 6 सप्ताह, उस क्षेत्र में कलीसीयाओं का दौरा करने और उन्हें यरूशलेम कौंसिल के निर्णय के बारे में बताने हेतु, वहां बिताए (आयत 4)। इससे कलीसिया में एक और वृद्धि हुई (आयत 5)।

जुलाई 50 ई.- वे फ्रूगिया और गलातिया (आयत 6) से होते हुए कुलुस्से, लौदीकिया, हिएरापोलिस, फिलेदिलफिया, सरदीस, थुआतीरा, पिरगमुम और स्मरना जैसे स्थानों में रुकते हुए यात्रा करते रहे। वे उत्तरी एशिया माइनर में आगे बढ़ना चाहते थे लेकिन परमेश्वर के आत्मा ने उन्हें दिखाया कि यह उसकी (परमेश्वर की) इच्छा नहीं थी (आयत 6ख -7)। इसके बजाय वे त्रोअस को चले गए (आयत 8)। वहाँ पौलुस

को एक दर्शन आया जिसमें आ आदमी उन्हें मकिदुनिया (आयत 9-10) बुला रहा था इसलिए वे वहाँ चले गए।

अगस्त 50 ई.- वे मकिदुनिया में सबसे पहले फिलिप्पी में रुके (पद 11-12)। जब वे उस स्थान पर गए जहाँ यहूदी इकट्ठे होते थे, तो उन्होंने वहाँ केवल स्त्रियों ही दिखाई दी (आयत 13)। यहाँ पर पौलूस एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और अत्यधिक प्रेरित मनुष्य था, जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर द्वारा यूरोप के महाद्वीप में सुसमाचार फैलाने हेतु प्रवेश करने के लिए निर्देशित किया गया था (हालाँकि अन्य लोग पहले से ही अपने साथ यूरोप में सुसमाचार ला चुके थे)। उसे अपने सभी श्रम और कार्यों के लिए किस प्रकार का स्वागत मिलता है? मुट्ठी भर महिलाएं ही दिखती हैं! हम ऐसी बातों को बहुत स्पष्ट रूप से नोटिस करते हैं। पौलूस बिल्कुल भी निराश नहीं दिखता है। वह वहाँ की नेता जिसका नाम लुदिया था, उस से मिला, जिसने पौलूस के संदेश को सुना, यीशु को स्वीकार किया और अपने पूरे घराने के साथ बपतिस्मा लिया (आयत 14)। पुरुष लोग भी उसके घर में रहे (आयत 15)।

अन्य लोग वहाँ नई कलीसिया में शामिल हो गए: वहाँ एक दासी थी जिसे पौलूस ने राक्षसों से आजाद किया था (आयत 16-24) और दारोगा जिसे पौलूस ने आत्महत्या करने से बचा लिया था, जब भूकंप के बाद पौलूस और अन्य जेल से बचने के लिए भागे नहीं थे (आयत 25-) 34)। अन्य कई कलीसिया का हिस्सा बन गए जैसे कि क्लेमेंट, यूओदिया, सिट्चे और कई और। भूकंप की घटना के तुरंत बाद पौलूस चला गया, हालाँकि (आयत 35-40)। यह सुसमाचार को लेकर और इसे अन्य स्थानों पर लगाने का समय था।

नवंबर 50ई. - थिस्सलुनीका में (प्रेरितों के काम 17:1) पौलूस अपनी रीति के अनुसार पहले तो आराधनालय में जाता है (आयत 2-3)। कुछ यहूदी, कई अन्यजाति के लोग जो यहूदी धर्म में जीत गए थे और कई प्रमुख स्त्रियों ने विश्वास किया और पौलूस का अनुसरण करने लगे (आयत 4)। यहूदी अगुवे इतने ईर्ष्यालु थे कि उन्होंने पौलूस और उसके साथ के अन्य लोगों को हानि पहुँचाने के लिए हंगामा शुरू कर दिया (आयत 5-9)।

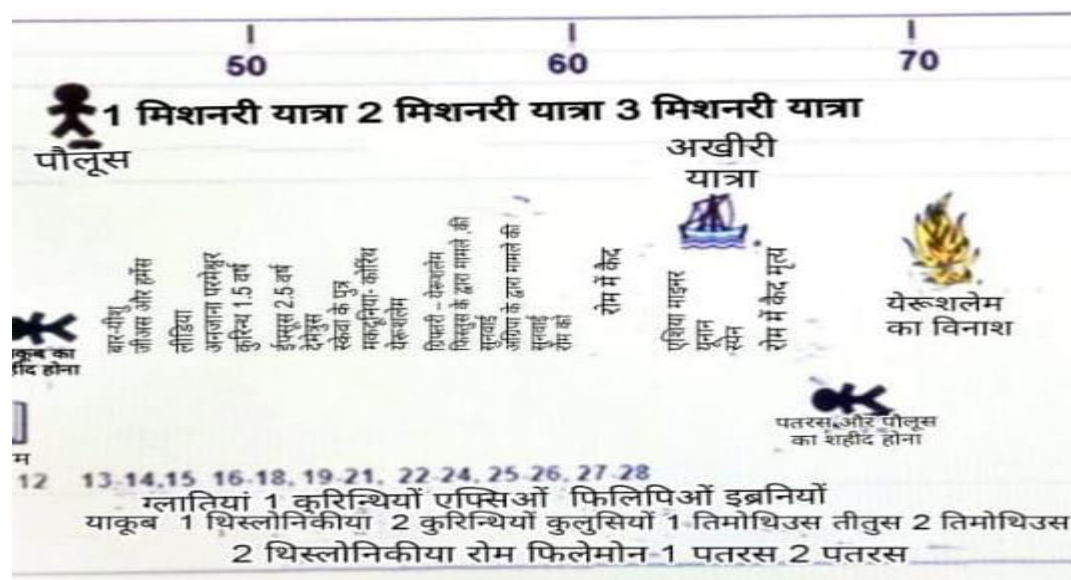
फरवरी 51 ई. - पौलूस, सीलास और तीमुथियुस रात में खुद को बचाने के लिए वहाँ से निकल गए (आयत 10)। जैसे ही स्थिति सामान्य हो गई, उन्होंने लौटने की योजना बनाई, लेकिन अन्य घटनाओं ने इसे रोक दिया, इसलिए बाद में पौलूस ने केवल तीमुथियुस को उनकी मदद करने के लिए वापस भेज दिया (2 थिस्सलुनीकियों 3:2)। इस बीच वे बिरिया गए, जहाँ उन्हें यहूदियों के बीच सुसमाचार के प्रति अधिक परिपक्व, खुली प्रतिक्रिया मिली। बहुतों ने विश्वास किया और वचन के उत्तम पड़ने वाले बन गए (प्रेरितों के काम 17:11-12)। हालाँकि, जल्द ही यहूदी थिस्सलुनीका से आए और लोगों को पौलूस के खिलाफ उकसाने लगे, इसलिए उसे फिर से अपने जीवन बचाने के लिए भागना पड़ा, जबकि सीलास और तिमोथियुस बिरिया में काम को जारी रखने के लिए रुके रहे (आयत 13-15)।

देर से फरवरी 51ई. - इस बीच पौलूस एथेंस गया जहाँ उनकी मूर्तिपूजा ने उन्हें इतना परेशान किया कि उसने यीशु को उनका 'अनजान परमेश्वर' होने के बारे में बात करने लगा (आयत 16-34)। वहाँ पर प्रतिक्रिया बहुत कम थी, जैसा कि उच्च शिक्षा और 'प्रबोधन' के शहरी क्षेत्रों में अक्सर होता है।

मार्च 51 ई- एथेंस के व्यवहार से बहुत निराश होकर, पौलुस कुरिन्थुस चला गया (प्रेरितों के काम 18:1)। वहाँ वह रुका और तम्बू बनाने वालों अक्विला और प्रिस्किल्ला के साथ काम पर लग गया (आयत 2-3)। प्रत्येक सप्ताह के दिन वह आराधनालय में प्रचार करता था (आयत 4)। पौलुस के लिए ये कठिन दिन थे। वह अकेला था, शारीरिक और भावनात्मक रूप से सूखा हुआ था, आर्थिक रूप से टूट गया था, बहुतों द्वारा उद्धार को अस्वीकार करने पर दुखी था और एथेंस और कुरिन्थ में अनैतिकता और मूर्तिपूजा के बारे में परेशान था। तब सीलास और तीमुथियुस उसके साथ फिर से जुड़ गए (आयत 5) तो सेवकाई में कुछ सुधार हुआ। एक नई कलीसिया शुरू हुई (आयत 6-7) और बहुत से लोगों ने उद्धार पाया। तब परमेश्वर रात के दर्शन में पौलुस को दिखाई दिया और उसे प्रोत्साहित किया कि चाहे कितनी भी बुरी स्थिति क्यों न हो, वह कुरिन्थ में प्रचार करता रहे (आयत 9-10)। पौलुस वहाँ डेढ़ वर्ष तक रहा (आयत 11)। उस समय के दौरान उसने कुरिन्थुस, किंखिया (रोमियों 16:21) और अखाया (2 कुरिन्थियों 1:1) में कलीसियाओं की स्थापना की। उसने थिस्सलुनीका को पत्र लिखे। पहला 51 ई. की गर्मियों की शुरुआत में था। तीमुथियुस उनके पास पत्र ले गया और थोड़ी देर रुक वहाँ गया। उसी समय के बाद में पौलुस ने उन्हें फिर से पत्र लिखा।

जब लगभग डेढ़ वर्ष बीत चुके थे, तो पौलुस को न्यायालय में लाया गया परन्तु न्यायाधीश ने मामले को बाहर कर दिया (आयत 12-17)। इसके तुरंत बाद वह घर वापस चला गया (पद 18)।

सितंबर से नवंबर 52 ई.- पौलुस ने किंखिया में अपने बाल कटवाए थे क्योंकि उसने एक मन्त्रत मानी हुयी थी (आयत 18ख), फिर इफिसुस गया (आयत 19) जहाँ उसने प्रिसिला और अक्विला काम करने के लिए छोड़ दिया था। वे चाहते थे कि पौलुस रुके, और वह इफिसुस में और अधिक समय बिताना चाहता था, लेकिन उसने उनसे कहा कि वह लौट आएगा (आयत 20-21)।



फिर वह कैसरिया गया और कलीसिया को सलाम किया, फिर अन्ताकिया (आयत 22) लौटा, जहाँ वह 53 ई. के पतझड़ तक ठहरा रहा।

पतझड़ से गर्मियों तक 53 ई.- पौलूस एक जगह शांत नहीं बैठ सकता था! उसने गलातिया और फ्रूगिया में यात्रा करना जारी रखा (आयत 23)। इस बीच अपुल्लोस, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के सन्देश का एक प्रतिभाशाली वक्ता, इफिसुस आया। अक्विला और प्रिस्किल्ला ने उसे यीशु के क्रूस पर चढ़ने और पुनरुत्थान पर अधिक जानकारी दी (आयत 24-26)। वह आरम्भिक कलीसिया के लिए एक उत्कृष्ट प्रचारक बन गया (पद 27-28)।

**1 थिस्सलुनीकियों:
यीशु फिर से आ रहा है**



शीर्षक: प्राप्तकर्ताओं के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 51 ईस्वी

लेखन का स्थान: कुरिन्थ

प्राप्तकर्ता: थिस्सलुनीका की कलीसिया

मुख्य वचन: क्योंकि वे खुद ही बताते हैं कि तूम्ने हमारा कैसा स्वागत किया। वे बताते हैं कि तुम किस प्रकार मूरतों से हट कर परमेश्वर की ओर फिरे, कि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो, जिसे उस ने मरे हुआओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है (1:9-10)

प्रमुख शब्द: "आराम" (6 बार); "(प्रभु का) आना" (4)

उद्देश्य: थिस्सलुनीका के विश्वासियों की उनके विश्वास के करण सराहना करना और आलोचना के खिलाफ खुद का बचाव करना। वह उन्हें कठिनाई के क्षेत्रों में निर्देश भी देता है: जैसे यौन-सम्बन्धित शुद्धता, प्रेम और विशेष रूप से मसीह के दूसरा आगमन के बारे में।

विषय : मसीह का दूसरा आगमन

जब गिदोन के 10,000 सक्षम सैनिक पानी पीने गए, तो उनमें से केवल 300 ही चुने गए। ये वे थे जो ऊपर देख कर पानी पीते थे। आज हमें भी अपने शत्रुओं को हराने के लिए 'ऊपर देखते हुए' की स्थिति में होना चाहिए। थिस्सलुनिकियों के लिए पौलुस का यही संदेश है।

पौलूस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर थिस्सलुनीका में एक कलीसिया शुरू की। यह यूरोप की धरती पर स्थापित केवल दूसरी कलीसिया थी। इसके पास बहुत अवसर थे लेकिन इसे भरी उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। पौलूस ने कुरिन्थ से उन्हें उनके दुख के समय में प्रोत्साहित करने के लिए यह पत्र लिखा था।

इससे हट कर देखें: समस्याएं (अध्याय 1) पौलूस उन्हें विश्वासयोग्यता में प्रोत्साहित करता हुआ उनके लिए प्रार्थना करना शुरू कर देता है। वह उनके फलवंत होने के लिए उनकी प्रशंसा करता है: सुसमाचार को ग्रहण करने और उसे आगे बढ़ाने के द्वारा। उनकी ईश्वरीय शक्ति तेजी से फैल रही थी। पौलूस चाहता है कि वे परमेश्वर की ओर देखें और उस पर कि उसने उनके लिए क्या किया है, न कि उनके अपने दुख और उत्पीड़न पर ध्यान करते रहे।

इससे हट कर देखें: अस्थायी (अध्याय 2) फिर पौलूस खुद को उन हमलों और आलोचनाओं से बचाता है जो थिस्सलुनीका में कुछ लोग उसके बारे में फैला रहे थे। वह उन्हें विश्वास दिलाता है कि उसके उद्देश्य और तरीके दोनों शुद्ध थे। उसका ध्यान परमेश्वर की सेवा करने पर था, न कि पैसा कमाने पर या अपने लिए प्रतिष्ठा पाने पर। वह उन्हें भी प्रोत्साहित करता है कि वे भी जिस कठिन समय का सामना कर रहे हैं, वे इस समय के दौरान इस अस्थायी दुनिया पर ध्यान न दें।

इससे हट कर देखें: प्रलोभन (अध्याय 3) पौलूस उन्हें बताता है कि उसने तीमुथियुस को उनकी मदद करने के लिए भेजा था, कि वे विश्वासयोग्यता से अपने दुखों को निशानों को सहन करें, और उनके बारे में तीमुथियुस की अच्छी खबर ने वास्तव में पौलूस को भी प्रोत्साहित किया था। वह प्रार्थना करते हुए इस खंड को समाप्त करता है कि वह बहुत जल्द व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने में सक्षम होगा। उन्हें यह बताने के बाद कि किन किन चीजों से हट कर देखें, फिर वह उन्हें यह बताता है कि किन किन चीजों की ओर उन्हें देखना है:

इस की ओर देखें: तुरही (अध्याय 4) पौलूस उन्हें चुनौती देता है कि वे अपने जीवन में शुद्ध रहें, क्योंकि उनमें से कुछ अपनी पुरानी मूर्तिपूजक अनैतिकता में बने रहे हैं। वह इस बात पर जोर देता है कि उन्हें एक-दूसरे से प्यार करना है। वह उन लोगों को सुधारता है जिन्होंने कहा था कि उन्हें कोई काम नहीं करना है क्योंकि यीशु जल्द ही वापस आ रहा है। फिर वह बाइबल में स्वर्गरोहण का सबसे पूर्ण विवरण देता है (4:13-18)। एक दिन तुरही बजेगी और जिन्होंने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है, उनके शरीर तुरंत बदल दिए जाएंगे और उन्हें स्वर्ग ले जाया जाएगा। जो पहले ही मर चुके हैं उनके पास स्वर्ग में अस्थायी शरीर हैं और उनके पार्थिव शरीरों को उस समय उठाया जाएगा और स्वर्ग में ले जाया जाएगा। इस प्रकार हमें मृत्यु से डरने की ज़रूरत नहीं है और न ही उन विश्वासियों के मरने का शोक करना है जो हमसे पहले मर चुके हैं। उत्पीड़न में मारे गए लोग पहले स्वर्ग को प्राप्त करते हैं! यीशु किसी भी दिन वापस आ सकता था, उनके सांसारिक कष्टों को समाप्त कर सकता था। इस प्रकार वे ऊपर देखते हुए, तुरही की प्रतीक्षा करते हुए जीवन जीते रहना है।

इस की ओर देखें: जीत (अध्याय 5) स्वर्ग रोहण के तुरंत बाद क्लेश होगा। जिस उत्पीड़न को वे सह रहे थे, वह क्लेश नहीं था। विश्वासी परमेश्वर के न्याय के अधीन नहीं हैं ('क्रोध' आयत 9; रोमियों 8:1)। इस समय तक, उन्हें विजयी मसीही जीवन जीना चाहिए, विकास करते हुए और दूसरों की सेवा करते हुए। पौलूस उनके संपूर्ण अस्तित्व के लिए प्रार्थना करते हुए समाप्त करता है। उसने प्रार्थना करता था कि वे तब तक एक पवित्र मसीही जीवन व्यतीत करें जब तक कि यीशु उनके लिए वापस न आ जाए। यह

जानने और याद रखने से कि यीशु उनके लिए वापस आ रहा था , वे इस जीवन के कष्टों को उचित दृष्टिकोण में रख सकते थे। वह उन्हें विश्वास दिलाता था कि परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा। फिर वह अपने लिए प्रार्थना के लिए अपने विशिष्ट अनुरोध के साथ, एक अभिवादन के साथ , एक जिमेदारी देने के साथ और एक आशीर्वाद के साथ समाप्त करता है।

एक दिन एक व्यवसायी एक स्कूल में आया और उसने बच्चों से वादा किया कि एक दिन वह लौटेगा और उन सभी के लिए एक विशेष उपहार लाएगा, जो उसके आने तक आपने डेस्क साफ रखेंगे। कक्षा में एक निश्चित लड़की वास्तव में यह पुरस्कार प्राप्त करना चाहती थी इसलिए वह हर सोमवार सुबह अपनी डेस्क को साफ करने के लिए खुद को निर्धारित कर लिया। यह जानते हुए कि यह लंबे समय तक साफ नहीं रहेगा, क्योंकि लड़की सामान्य रूप से बहुत साफ-सुथरी व्यक्ति नहीं होती थी, शिक्षक ने उससे पूछा कि क्या हुआ अगर वह आदमी शुक्रवार को आ गया तो। उसने सोमवार और शुक्रवार को अपनी डेस्क साफ करने का फैसला किया। फिर जब उससे पूछा गया कि क्या होगा यदि वह बुधवार को आएगा, तो उसने फैसला किया कि उसे हर सुबह अपनी डेस्क साफ करने की जरूरत है। लेकिन क्या होगा अगर वह दिन के अंत में आए तो ? अंत में उसने महसूस किया कि उसे जो करने की आवश्यकता थी वह अपनी डेस्क को हर समय साफ रखना था। पौलूस चाहता है कि हम थिस्सलुनिकियों की तरह हमेशा यीशु के जल्द लौटने के बारे में जागरूक रहें और उसके लिए तैयार रहें।

अपनी समस्याओं या कठिनाइयों पर ध्यान न दें, बल्कि उस की वापसी पर ध्यान दें!

1 थिस्सलुनीकियों की रूपरेखा



शुरू :1:1

I. हट कर देखना 1-3

क- मुसीबत 1

1. धन्यवाद की प्रार्थना 1:2-4
2. चुनाव के सबूत 1:5-10

ख- अस्थायी 2

1. पौलूस 2:1-12
2. थिस्सलुनीकियों 2:13-20

ग- प्रलोभन 3

1. पौलूस की चिंता 3:1-5
2. तीमुथियुस की शान्ति 3:6-10
3. समापन प्रार्थना 3:11-13

II. 4-5 तक देखें

क- तुरही 4

1. विश्वासी का आचरण 4:1-12
2. विश्वासी की तस्सली 4:13-18

ख- जीत 5

1. यहोवा का दिन 5:1-11
2. लोगों के कर्तव्य 5:12-22
3. समापन प्रार्थना 5:23-24

समापन 5:23-28

2 थिस्सलुनीकियों: यीशु जल्द आ रहा है



शीर्षक : प्राप्तकर्ताओं के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 51 ई., 1 थिस्सलुनीकियों लिखने के बाद जल्दी ही

लेखन का स्थान: कोरिंथ

प्राप्तकर्ता: थिस्सलुनीका की कलीसिया

मुख्य आयत : यह तब होगा जब प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। वह उन्हें दण्ड देगा जो परमेश्वर को नहीं जानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते। उस समय वे अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे, और यहोवा के साम्हने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर हो जाएंगे जिस दिन वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करने वालों में, खुशी में चकित करने के लिये आएगा। इसमें तुम सब शामिल हैं, क्योंकि तुम ने हमारे द्वारा दी गई गवाही का विश्वास किया है। (1:7ख-10)

प्रमुख शब्द: "प्रभु का दिन"

उद्देश्य: 1 थिस्सलुनीकियों 2 थिस्सलुनीकियों यह सिखाता है कि स्वर्गरोहण क्या है - यह सिखाता है कि स्वर्ग रोहण कब होगा कुछ नया सिखाता है - स्वर्गरोहण - गलत को सही करता है - स्वर्गरोहण का समय

मुख्य रूप से कलीसिया के बारे में - मुख्य रूप से शैतान, मसीहविरोधी, दुनिया के बारे में
विषय : थिस्सलुनीका के विश्वासियों को यह बताना कि मसीह क्लेश से पहले वापस आ जाएगा, और उन्हें यह समझाने के लिए भी कि उन्हें मसीह के आने तक जीवन कैसे जीना है।

स्वर्गरोहण की सच्चाई सभ मसीही सिद्धांतों में सबसे शानदार है। यह आश्चर्यजनक रूप से उत्साहजनक और मानने योग्य है। यह जानकर कि यीशु जल्द ही उन लोगों को स्वर्ग ले जाने के लिए वापस आ जाएगा जो उसके साथ विश्वास करते हैं, हमेशा के लिए उसके साथ रहने के लिए एक तस्सली भरी और प्रेरित करने वाली बात है। फिर भी, इसके सरल सत्य के बावजूद, इस सरल सिद्धांत को लेकर बहुत भ्रम और गलतफहमी पैदा हो गई है। यह समझना आसान है कि इस खूबसूरत सच्चाई को भ्रमित करने और इसे धुंधला करने के लिए शैतान वह सब कुछ करेगा जो वह कर सकता है। उसने पौलुस के दिनों में भी ऐसा ही किया था।

पौलुस द्वारा थिस्सलुनीका की कलीसिया को लिखे जाने के कुछ ही समय बाद, उनमें यीशु का उनके लिए वापस आने के बारे में बताते हुए, गलत विचार विकसित होने लगे जिन्होंने इस सच्चाई के आराम को उनसे दूर कर दिया। उदाहरण के लिए, थिस्सलुनीका में कुछ झूठे शिक्षक कहने लगे कि वे जिस सताव का सामना कर रहे थे वह क्लेश था जो पहले ही शुरू हो चुका था। फिर भी पौलुस ने कहा कि स्वर्गरोहण क्लेश से पहले आयेगा। क्या सच था? कौन सही था?

I. मसीह के पुनर्आगमन के बारे में चिंता (अध्याय 1) फिर से पौलुस पीड़ा के समय में उनकी विश्वासयोग्यता के लिए धन्यवाद देने के साथ आरंभ करता है। वह उन्हें आश्वासन देते हुए कहता है कि परमेश्वर उन्हें उन परीक्षाओं का अनुभव कराने की अनुमति देने में, जिनसे वे गुजर रहे थे, अनुचित नहीं था। उसने उन्हें याद दिलाया कि भविष्य में क्या होगा, यदि वे मसीह के लौटने से पहले नहीं मरे हैं तो। यदि उन्होंने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगे तो यीशु के वापस आने पर उन्हें तुरंत स्वर्ग ले जाया जायेगा। यदि उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया होगा तो वे क्लेश में जीवित रहेंगे और स्वयं को परमेश्वर के न्याय के अधीन पाएंगे।

पौलुस फिर प्रार्थना करता है कि परमेश्वर उनके आज्ञाकारी जीवन में अपनी इच्छा को पूरा करना जारी रखेंगे, और वे उसकी महिमा करेंगे। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि वे सही कर रहे हैं और परमेश्वर के न्याय के अधीन नहीं हैं, क्योंकि क्लेश अभी तक शुरू नहीं हुआ था। फिर वह यह साबित करता चला जाता है कि ऐसा नहीं हो सकता कि वे पहले से ही क्लेश में होते।

II. मसीह-विरोधी के प्रकट होने के बारे में उत्तर (अध्याय 2) नहीं, पौलुस कहता है, आप स्वर्ग रोहण से नहीं चूके हैं और ना ही परमेश्वर के न्याय में प्रवेश किये हैं। उसका प्रमाण यह है कि मसीह विरोधी अभी तक प्रकट नहीं हुआ है, और जब वास्तव में क्लेश शुरू होगा तो मसीह विरोधी वहीं पर होगा। वास्तव में, वह स्वर्ग रोहण के बाद तक प्रकट ही नहीं हो सकता है, केवल तब, जब कलीसिया और पवित्र आत्मा चले जाते हैं। मसीह-विरोधी को संभवतः अभी प्रकट नहीं किया जा सका है, क्योंकि स्वर्ग रोहण का पहले आना अवश्य है। तथ्य यह है कि, क्योंकि वे अभी भी यहाँ थे, इससे यह साबित होता है कि स्वर्गरोहण नहीं हुआ था।

पौलूस तब दानियेल और यहजेकेल द्वारा मसीहविरोधी और पृथ्वी पर उसके कार्यों के बारे में दिए गए कई विवरणों का निर्माण करता है। पौलूस तब उनकी आध्यात्मिक स्थिति के लिए धन्यवाद देता है जैसा कि इसे उनके आसपास की धोखेबाज दुनिया के विपरीत देखा जाता है। वह उन्हें उस समय और अपने पहले पत्र में जो कुछ उसने उन्हें सिखाया था, उसमें दृढ़ता से खड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

III. उनके काम पर लौटने के बारे में प्रार्थना (अध्याय 3) पौलूस ने तब अंतिम समस्या का समाधान किया जो स्वर्ग रोहण के बारे में उत्पन्न हुई थी। कुछ ने काम करने से इस आधार पर मना कर दिया था क्योंकि स्वर्गारोहण किसी भी समय हो सकता है, तो परेशान क्यों होना? पौलूस उनके साथ बहुत मजबूत हो गया, वह बताने लगा कि अगर कोई खुद का समर्थन करने के लिए अपने काम का हिस्सा नहीं करेगा, तो किसी को भी उसकी मदद करने के लिए कुछ भी नहीं करना चाहिए! परमेश्वर के लोगों के लिए एक पवित्र मसीही जीवन जीना कितना महत्वपूर्ण है।

हम वास्तव में यह नहीं जान सकते हैं और न ही जान पाएंगे कि यह स्वर्ग रोहण का समय क्या है, लेकिन हम बता सकते हैं कि समय कब करीब आता है (मत्ती 24:36-39)। दबाव पहले महसूस किए जा सकते हैं, लेकिन जनना तब तक शुरू नहीं होता जब तक कि दर्द ('संकेत') करीब और कठोर न हो जाएं। पौलूस फिर प्रार्थना के साथ समाप्त करता है। उन्होंने कहा कि वे परमेश्वर की उपस्थिति, शांति और अनुग्रह के प्रति सचेत रहेंगे। अंतिम आशीर्वाद और अभिवादन के बाद, पुस्तक बंद हो जाती है।

2 थिस्सलुनीकियों की रूपरेखा



शुरू : 1:1-2

I. मसीह के पुनआगमन की चिंता (प्रोत्साहन) 1

क- धन्यवाद देना 1:3-10

ख- मध्यस्थता 1:11-12

II. मसीह-विरोधी के प्रकटीकरण के बारे में उत्तर (स्पष्टीकरण) 2

क- एक गलतफ़हमी का सुधार 2:1-2

B. पाप के मनुष्य का प्रकटीकरण 2:3-

1. उसका चरित्र 2:3-5

2. उसका रोकनेवाला 2:6-7

3. उसकी सेवकाई 2:8-10

ग- अविश्वासियों का न्याय 2:11-12

घ- धन्यवाद और प्रार्थना 2:13-17

II. उनके काम पर लौटने के बारे में प्रार्थना (प्रबोधन) 3

क- प्रार्थना के लिए पुकार 3:1-5

ख- अनुशासन के लिए पुकार 3:6-15 बंद 3:16-18

24ड तीसरी मिशनरी यात्रा

जब पौलूस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा से लौटे, तो उन्होंने गलातिया (प्रेरितों के काम 18:23) में यात्रा करना जारी रखा, लेकिन वापस आने के 6 महीने बाद पौलूस फिर से एक और मिशनरी यात्रा के लिए रवानगी लेता है।



सितम्बर 53 ई. अपने वचन के अनुसार पौलुस इफिसुस में दोस्तों के साथ समय बिताने के लिये वापस चला जाता है। यह एशिया माइनर का सबसे बड़ा, सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली शहर था और कलीसिया के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान था। वास्तव में, मसीही धर्म का केंद्र, जो यरूशलेम से अन्ताकिया में स्थानांतरित हो गया था, जल्द ही इफिसुस और फिर अंत में रोम में स्थानांतरित होने वाला था। यहून्ना और मरीयम, यीशु की मां भी यहां रहते थे।

पौलुस की बात सुनने के बाद, जिन्होंने केवल यहून्ना के बपतिस्मे के बारे में सुना था, यीशु पर विश्वास किया और पवित्र आत्मा प्राप्त को किया, उनको उन सभी यहूदियों और अन्यजातियों के साथ एकजुट किया जिन्होंने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया हुआ था (प्रेरितों के काम 19:1-7)। उनको यह मालूम नहीं था कि विदेशी भाषाओं में बोलना एक चिन्ह था की वे शामिल हो चुके हैं, जैसा वे लोग मानते थे, जिन्होंने इस चिन्ह को प्राप्त किया था: यहूदी (प्रेरितों के काम 2), आधे यहूदी (प्रेरितों के काम 8), फिलिस्तीन में रहने वाले अन्यजाति (प्रेरितों के काम 10-11) और विभिन्न स्थानों पर रहने वाले अन्यजाति (अधिनीयम 19)। यह आखिरी बार था जब यह उपहार दिया जाता, क्योंकि कुरिन्थियों की ज्यादातियों को पौलूस द्वारा दुरुस्त करने के अलावा इसका कोई और उल्लेख नहीं किया गया है।

सितम्बर - नवम्बर 53 ई. तीन महीने तक पौलुस आराधनालय में हियाव से बोलता रहा, जब तक कि यहूदी उसके विरुद्ध अपने मन को कठोर न किया, और तब वह वहां से चला गया (प्रेरितों के काम 19:8-9)।

53 दिसंबर - 55 दिसंबर ई. 2 साल तक पौलुस एक स्थानीय लेक्चर हॉल में प्रतिदिन शिक्षण देता था (आयत 10)। उस समय इफिसुस और उसके आस-पास के क्षेत्र में हर कोई सुसमाचार के संपर्क में आ चुका था। चमत्कार होते रहे, बस यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर की शक्ति, उन मूर्तियों के पीछे की राक्षसी/शैतानी, जिनकी वे वहां पूजा करते थे, शक्ति से अधिक है बढ़ी है (11-20)। इतिहास कहता है कि पौलुस अपुल्लोस, एक्विला, प्रिस्किल्ला और अन्य शिष्यों को प्रशिक्षित करने और शहर में गवाही देने के अलावा प्रतिदिन 5 घंटे पढ़ाया कर्ता था (प्रेरितों के काम 20:20 च)। वह शायद पैसे कमाने के लिए तंबू बनाने का काम करता था। उसने कुलुस्सिया, लौदीकिया, हिएरोपोलिस, स्मरना, पेरगमम, थुआतीरा, सरदीस, फिलाडेल्फिया और अन्य स्थानों में कलीसियाओं को शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह कम से कम एक बार जेल गया था (2 कुरिन्थियों 11:23-27)। यह उसका एक स्थान पर सबसे लम्बे समय तक रहने का रिकॉर्ड है।

पौलुस कोई सुपर-हीरो नहीं था। उसने उन सभी समस्याओं और निराशाओं का सामना किया जो हम करते हैं। वह शारीरिक भावनाओं से भरे कुरिन्थियों से परेशान था और उसने उनको 2 पत्र लिखे, एक तो खो गया और दूसरा हमारा 1 कुरिन्थियों का है। वह उस धन को ले जाना चाहता था जिसे उसने यरूशलेम में इकट्ठा किया था परन्तु वह ऐसा करने में सक्षम नहीं था (आयत 21-22)। उसके ऊपर भयानक परीक्षण और कष्ट थे, जिनको वह "पशुओं से लड़ना" कहता है (प्रेरितों के काम 20:17-19; 1 कुरिन्थियों 15:30-32; 2 कुरिन्थियों 1:8-11)। बाहर बहुत विरोध था और भीतर बहुत तनाव था (प्रेरितों के काम 20:19)। फिर भी, वह परमेश्वर के बल पर एक-एक दिन दृढ़ रहा।

56 ई. की पतझड़ - जब दीना देवी की मूर्तियाँ बनाने वालों की ओर से उसके विरुद्ध एक बड़ा उपद्रव खड़ा हो गया, तो पौलुस ने महसूस किया कि यह वहां से चले जाने और कहीं और सेवा करने का समय था (प्रेरितों के काम 19:23-41)। परमेश्वर ने अक्सर दंगों और अस्वीकृति का इस्तेमाल किया जिससे वह एक नए समूह में जाने के लिए विवश हो जाता। जब परमेश्वर चाहता है कि हम किसी और के साथ काम करने के लिए आगे बढ़ें, तो बहुत बार हम एक साथ सब कुछ छोड़ देते हैं।

56 ई. की गर्मियां - पौलुस त्रोआस गया जहाँ उसने कुरिन्थियों को तीसरा (खोया हुआ) पत्र लिखा। तीतुस के कुरिन्थु से लौटने में असफल होने के कारण वह विचलित हो गया था इसलिए वह उसे ढूँढ़ने चला गया (2 कुरिन्थियों 12:13)।

56 ई. की गर्मियों के आखिर में - पौलुस नेपोलिस में उतता, फिर फिलिप्पी में गया। वहाँ की कलीसिया उसके द्वारा शुरू की गई सभी कलीसियाओं में सबसे पवित्र और मददगार कलीसिया थी, इसलिए उनके साथ समय बिताना उसके लिए उत्साहजनक और मददगार रहा होगा। हालाँकि वे इसे वहन नहीं कर सकते थे, फिर भी वे उसके समर्थन के लिए पैसे भेजते रहते थे। वे बड़े बड़े उत्पीड़न से गुजर रहे थे और कई मारे जा रहे थे।

56 ई. का शुरू - इसके बाद पौलुस थिस्सलुनीका और बेरिया चला गया (प्रेरितों के काम 20:1-2)। तीमुथियुस पौलुस के साथ फिर से जुड़ गया, जो अपने शरीर के काँटे से बहुत पीड़ित था। कुरिन्थ के विश्वासियों के कारण होने वाली समस्याओं से वह उदास और विचलित हो गया था। तब तीतुस कुरिन्थु से बहुतों द्वारा पाप से पश्चाताप का शुभ समाचार लेकर आया। फिर भी, वहाँ अनेक लोग पौलुस के घोर विरोधी थे।

इसके बाद पौलुस निकोपोलिस जाता है, जहाँ का जलवायु उसके स्वास्थ्य के लिए बेहतर था, और वहाँ उसने कुरिन्थियों को अपना अगला पत्र (2 कुरिन्थियों) लिखा। उन्होंने इलिसिकम का भी दौरा किया, जो एक विशाल प्रांत था जो उनके रास्ते से बाहर था और जिसमें पुराने बुतपरस्त धर्मों (आज यूगोस्लाविया और अल्बानिया) के साथ आक्रामक, लड़ाकू लोग शामिल थे।

नवम्बर 56 ई. पौलुस सर्दी बिताने के लिए कुरिन्थु लौटा (प्रेरितों के काम 20:2ख)। उसने विश्वासियों को विश्वासयोग्य बने रहने और एथेंस, किंख्रिया, आदि के क्षेत्र में अन्य कलिसीयाओं तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित किया। उसकी योजना स्पेन और रोम जाने की थी, लेकिन उसे टालना पड़ा क्योंकि उसे इसके लिए एकत्र किए गए धन को येरूशलेम में रहने वाले गरीब, पीड़ित विश्वासी के पास लेजाना पड़ा। इसलिए, उसने रोम के लोगों को यह कहते हुए एक पत्र लिखा कि वह थोड़ी देर बाद आएगा और उन संदेशों का सारांश देगा जो वह उन्हें देना चाहता था। उसकी निराशा हमारी आशीष है, क्योंकि अभी हमारे पास रोमियों की पुस्तक लिखती रूप में मजदूद है।

मार्च - मई 57 ई. यहां तक कि उसके जीवन के खिलाफ एक साजिश के कारण उन योजनाओं को बदल दिया गया (प्रेरितों के काम 20:3) इसलिए वह मकिदुनिया से होता हुआ वापस चला गया, इसने उसके धैर्य की परीक्षा ली होगी। उसके व्यवधान भी बाधित होते हैं। उसे योजनाओं में आपने किये गए परिवर्तन को बार-बार बदलना पड़ता है। इससे किसी को भी कोई छूट नहीं है। संगति और सुरक्षा के लिए उसके पास मित्र भी थे (पद 4-5)। 6 अप्रैल को उन्होंने फिलिप्पी के बंदरगाह नेपोलिस से समुद्री यात्रा की। उनको त्रोआस जाने में 5 दिन लगे और उन्होंने वहां 15-19 अप्रैल तक प्रतीक्षा की कि अन्य लोग उनके साथ जुड़ेंगे। फिर उन्होंने 20-25 अप्रैल तक वहां सेवा की। यह उस समय की बात है जब इतितुखुस (एक जवान लड़का) सो गया और खिड़की से गिरकर मर गया, परन्तु परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर दिया। पौलुस, लूका और अन्य लोग नाव से असोस, मितिलीन, किओस, समोस, मिलेतुस और इफिसुस सोमवार, 25 अप्रैल से शनिवार, 30 अप्रैल तक गए। वह सोमवार, 2 मई तक इफिसुस में रहे। वहां उसने अगुओं के साथ लम्बी बात चीत की। इफिसुस छोड़ना सभी संबंधित लोगों के लिए एक कठिन और दुखदायक घटना थी। पौलुस ने सोर के लिए एक जहाज पर बैठा और मंगलवार मई 10 को वहां पहुंचा, वहां उसके सात दिनों में उस से बिनती की गई, कि यरूशलेम न जाए; क्योंकि वहां उस के लिए एक बड़ी मुसीबत इंतजार कर रही थी, उसने कैसरिया तक (20 मई) को पैदल यात्रा की और फिलिप के घर पर रुके। अगबुस ने फिर से उसे गिरफ्तार किए जाने की चेतावनी दी, लेकिन पौलुस ने परमेश्वर की अगुवाई का पालन किया और मंगलवार 27 मई को यरूशलेम पहुंचा। पौलुस की आखिरी प्रमुख मिशनरी यात्रा खत्म हो गई थी। परमेश्वर के पास एक पूरी तरह से नए प्रकार का कार्य उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

1 कुरिन्थियों:
सांसारिक ज्ञान/बुद्धि



शीर्षक : प्राप्तकर्ताओं के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 55 ईस्वी

लेखन का स्थान: इफिसुस

प्राप्तकर्ता: कुरिन्थुस की कलीसिया

मुख्य आयत : क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है।

... पर सब कुछ उचित और व्यवस्थित तरीके से किया जाना चाहिए।

... पर परमेश्वर का धन्यवाद हो ! वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। 14:33; 14:40; 15:57

मुख्य शब्द: "बुद्धि, प्रेम, पुनरुत्थान, सलीब , आत्मा, शरीर, उपहार, भ्रष्टाचार"

उद्देश्य: उन संसारिकता के हालातों को सम्बोधित करना जो कुरिन्थ की कलीसिया को पराजित कर रहे थे।

विषय: मनुष्य के सांसारिक ज्ञान के बजाय परमेश्वर के ज्ञान के द्वारा मसीही आचरण में त्रुटियों को ठीक करना।

हम आम तौर पर सोचते हैं कि आज कलीसिया के लिए सबसे बड़ा खतरा बाहर से आता है: उत्पीड़न, अत्याचार आदि। हालांकि, वास्तविक खतरा बाहर से नहीं बल्कि अंदर से आता है। हम अक्सर खुद ही अपने सबसे बड़े दुश्मन होते हैं! कुरिन्थ की कलीसिया के लिए यह विशेष रूप से सत्य है। वे विश्वासी तो थे, लेकिन वे रहते अविश्वासियों की तरह थे। कलीसिया समाज को प्रभावित नहीं कर रही थी। समाज कलीसिया को प्रभावित कर रहा था।

कुरिन्थ -कुरिन्थ शहर वर्तमान यूनान में था। यह यूनानी था, लेकिन बहुत 'रोमी' था क्योंकि यह पूरे क्षेत्र की राजधानी था। यह इतना बड़ा था जिसमें 2.5 लाख लोग रहते थे, यह आपने आप में गर्व और आनंद से भरपूर था। यह आपनी बहुत अनैतिकता से प्रसिद्ध था। किसी को 'कोरिंथिया का वासी' कहना एक बहुत बड़े अपमान की बात होती थी। पौलूस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में, 50-52 ईस्वी पर वहां गया था। जब उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया गया, तो उसने एक कलीसिया शुरू कर दी और डेढ़ साल तक वहां रहा। उसने वास्तव में वहाँ की कलीसिया को 4 पत्र लिखे। जिनमें से हमारे पास बाइबल में दूसरा है जिसे (1 कुरिन्थियों कहा जाता है) और चौथा है जिसे (2 कुरिन्थियों कहा जाता है) है। पौलूस फिर 3 महीने के लिए उनके पास गया। यह बहुत ही सांसारिक और शारीरिक कलीसिया थी। लोग विश्वासी थे, लेकिन उनका विश्वदृष्टि, उनका मकसद, उनकी प्राथमिकताएं और उनकी विचार प्रक्रियाएं

वैसी ही थीं जैसी वे उनके उद्धार से पहले थीं। वे संसार के तरीकों और ज्ञान के अनुसार जी रहे थे, परमेश्वर के नहीं। इसलिए पौलूस उन्हें लिखता है।

I. विभाजन (1 - 4) उनके अधर्मी दृष्टिकोण और मूल्यों के कारण, उन्हें उद्धार के बाद वही समस्याएँ हो रही थीं जो उन्हें पहले थीं। वे एक दूसरे से अपनी तुलना कर रहे थे और जो अलग थे उन्हें नीच देख रहे थे। उनके आपने-आपने समूह थे जिनके आधार पर वे अनुसरण करते थे: जैसे पौलूस के, अपुल्लोस के, पतरस या मसीह के ('सुपर-आध्यात्मिक' लोग ऐसा होना का दावा करते थे)। वे सामाजिक स्थिति और भौतिक साधनों पर भी विभाजित समूहों में थे। यहाँ तक कि वे कुछ आत्मिक वरदानों को भी एक दुसरे से श्रेष्ठ बनाते थे और उस पर मतभेद भी करते थे। इस चीज ने उनकी एकता को कमजोर कर दिया था और अन्य समस्याएँ भी कड़ी कर दी थीं।

II. गड़बड़ियाँ (5 - 6) हालातों पर दुनिया का दृष्टिकोण लेने में, उन्होंने आपने आप को पापों के लिए खोल दिया था। परिवारिक रिश्तों में व्यभिचार, संगी विश्वासियों के विरुद्ध मुकदमे, अनैतिकता को एक समान्य स्थिति के रूप में सहन कर लिया जाता था और स्वीकार कर लिया जाता था। पौलूस को उन्हें चेतावनी देनी पड़ी और उन्हें दिखाना पड़ा कि वे इन मामलों में कैसे गलत हैं।

III. कठिनाइयाँ (7-14) जबकि केवल कुछ ही लोग अनैतिकता और अदालती मुकदमों में शामिल थे, ऐसा लगता है कि हर कोई अन्य तरीकों से प्रभावित हो रहा था। उद्धार से पहले वाले आपने विश्वासों और विचारों का पालन करके, वे अन्य क्षेत्रों में परेशानी का सामना कर रहे थे। किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करने के बारे में क्या जो विश्वासी नहीं था? यदि कोई मसीही बन गया और उसका साथी नहीं बना, तो क्या वे उस साथी को छोड़ सकते हैं? तो तलाक क्यों नहीं जब बाकी संस्कृति की तरह चीजें कठिन हो गई हो? शादी से पहले यौन संबंध या शादी के बाहर यौन रिश्ते स्थापित करने में क्या गलत था? क्या मूर्तियों को चढ़ाया गया सस्ता मांस खाना ठीक था? एक महिला को अपने पति के अधीन क्यों होना चाहिए? एक आदमी को अपने परिवार की अगुवाई क्यों करनी चाहिए? मूर्तिपूजक प्रेम भोज मनाने और उसमें प्रभु भोज जोड़ने में क्या गलत था? जिस व्यक्ति के पास जीभ जैसा प्रभावशाली आध्यात्मिक उपहार था, वह आध्यात्मिक रूप से उस व्यक्ति से श्रेष्ठ क्यों नहीं मना जाना चाहिए था जिसके पास वह उपहार नहीं था? कलीसियाई सेवा के दौरान किसी के उपहार को दिखाने में क्या गलत था? सूची आगे और आगे बढ़ती जाती थी।

IV. अविश्वास (15) इन सांसारिक विचारों और व्यवहारों की ऊँचाई इतिनी थी कि पुनरुत्थान पर सवाल उठाया जाता था। मृत्यु से वापस आने के बारे में सोचने का कोई मतलब ही नहीं था। लेकिन पुनरुत्थान के बिना, उनके विश्वास में बाकि क्या रह जाता था? यदि यीशु कभी मरे हुएों में से नहीं उठा तो कोई शक्ति नहीं है, कोई आशा नहीं है, कोई क्षमा नहीं है - कुछ और नहीं बल्कि एक और विश्वास प्रणाली है जो न तो दूसरों से बेहतर है और न ही कोई बुरी है। उनकी सोच वहीं जा रही थी, और इसीलिए पौलूस उन्हें जल्द से जल्द और सीधे सीधे लिखने के लिए प्रतिबद्ध था।

आप क्या कहते हैं? आपके विश्व दृष्टिकोण, आपके मूल्य और विश्वास प्रणाली के बारे में क्या है? क्या यह दुनिया के साथ अधिक मेल खाते हैं या बाइबिल के साथ अधिक मेल खाते हैं? मेरा मतलब उससे नहीं है जिसे आप मानने का दावा करते हैं, मेरा मतलब उससे है जिसका आप दैनिक जीवन में अभ्यास करते

हैं। मूल्यों और लक्ष्यों, प्राथमिकताओं और उद्देश्यों में आप अपने आसपास के अविश्वासियों से कितने अलग हैं? आज कई आधुनिक कोरिंथियन विश्वासी हैं - सुनिश्चित करें कि आप उनमें से एक तो नहीं हैं!

1 कुरिन्थियों की रूपरेखा

शुरू :1:1-9

I. विभाजन ("बुद्धि") 1-4

क- शारीरिक विभाजन 1:10-4:21

ख- भौतिक विभाजन 11:22-23, 33-34

ग- आध्यात्मिक विभाजन 12:16-17, 21-25

II. गड़बड़ियाँ ("धार्मिकता") 5-6

क- अनाचार 5:1-13

ख - मुकदमें 6:1-8

ग- अनैतिकता 6:9-20

III. कठिनाइयाँ ("पवित्रता") 7-14

क- विवाह 7:1-40

ख- व्यक्तिगत स्वतंत्रता 8:1-11:1

ग- अधीनता 11:2-16

घ- सहभाग्यता 11: 17-34

ड- आचरण 12:1-14:40

IV. अविश्वास ("छुटकारा ") 15

समापन 16:1-24

2 कुरिन्थियों: एक ईश्वरीय सेवकाई



शीर्षक : प्राप्तकर्ताओं के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 55 ईस्वी का आखिर

लेखन का स्थान: इफिसुस

प्राप्तकर्ता: कोरिंथ में मसीही कलीसिया

मुख्य आयत: क्योंकि हम अपने आप का प्रचार नहीं करते, परन्तु यीशु मसीह को प्रभु जानकर, और यीशु के कारण अपने आप को तुम्हारे दास जानकर प्रचार करते हैं। ... इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं , मानो परमेश्वर हमारे द्वारा अपनी पुकार दे रहा हो। हम मसीह की ओर से तुम से बिनती करते हैं: परमेश्वर से मेल मिलाप कर लो। परमेश्वर ने उसे, जिसमें कोई पाप नहीं था, हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें। 4:5; 5:20-21

प्रमुख शब्द: "सेवकाई " (18 बार), "महिमा, घमंड" (20 बार)

उद्देश्य :

1 कुरिंथियों	2 कुरिंथियों
उद्देश्य और व्यावहारिक	विषय और व्यक्तिगत

एक प्रारंभिक कलीसिया के चरित्र में अंतर्दृष्टि	पौलूस के चरित्र में अंतर्दृष्टि
विचारपूर्वक निर्देश	भावपूर्ण गवाही
बुतपरस्ती प्रभावों के खिलाफ चेतावनी	यहूदी प्रभावों के खिलाफ चेतावनी

विषय: पौलूस सुसमाचार के एक सच्चे सेवक के रूप में अपना बचाव करता है और कुरिन्थियों के साथ एक अच्छे संबंध को पुनः स्थापित करता है।

पृष्ठभूमि - पॉल ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर डेढ़ वर्ष कुरिन्थु में बिताए। वह इफिसुस को चला गया और अपुल्लोस कुरिन्थु में कुछ देर और ठहरा रहा। तब पौलूस ने कुरिन्थियों को अनैतिकता की निंदा करते हुए एक पत्र लिखा और उनसे गरीबों के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए कहा। हमारे पास इस पत्र की नकल नहीं है। जब इफिसुस में कुरिन्थु में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के बारे में पौलूस के पास खबर आई, तो उसने उन्हें वह पत्र लिखा जिसे हम 1 कुरिन्थियों कहते हैं। तीमुथियुस चीजों को निपटाने में मदद करने के लिए कोरिंथ गया, लेकिन मुश्किलें और जायदा खड़ी हो गईं। पौलूस के हालिया पत्र का मुकाबला करने के लिए, उसके प्रेरित अधिकार पर सवाल उठाया जा रहा था। तीमुथियुस व्यक्तिगत रूप से इस मामले को लेकर पौलूस के पास गया और पौलूस कोरिंथ द्वारा थोड़े समय के लिए रुक गया, जिसके दौरान कलीसिया में किसी ने घोर अपमान किया। उसके जाने के बाद, पौलूस ने उस पैसे के बारे में एक पत्र भेजा जो वे यरूशलेम के लिए एकत्रित कर रहे थे, यह पत्र हमारे पास नहीं है। तीतुस ने यह पत्र दिया और फिर पौलूस के पास खबर लानी थी। पौलूस इस खबर को जानने के लिए इतना व्याकुल था कि वह तीतुस से मिलने के लिए बाहर निकल पड़ा। वे आधे रास्ते में एक दूसरे से टकरा गए, और जब तीतुस ने अच्छी खबर के रूप में जब पौलूस को यह बताया कि उन लोगो ने पौलूस के शब्दों पर ईश्वरीय प्रतिक्रिया की थी, तो पौलूस ने इस पर खुशी मनाई। इससे पौलूस को इतनी खुशी हुई कि उसने तुरंत उन्हें एक और पत्र लिखा, जिसे हम 2 कुरिन्थियों कहते हैं। बाद में पौलूस वहाँ गया और तीन महीने तक रहा, इस दौरान उसने रोमियों को पत्र लिखा। 2 कुरिन्थियों, पौलूस की पत्रियों में वो है जिसे उनसे निज जीवन से जुड़ा हुआ है और उसके खुद के द्वारा लिखा हुआ है। यह उसके व्यक्तिगत जीवन और सेवकाई के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो कहीं और नहीं देखा जाता है। उसके खिलाफ झूठे आरोपों के कारण, पौलूस ने अपने और अपनी सेवकाई के बारे में उन बातों को प्रकट किया जो उसने कभी नहीं लिखी होती। अगर यह डींग मारने जैसा लगता है, तो यह वास्तव में सिर्फ आत्मरक्षा के रूप में है। पौलूस जानता था कि वे परमेश्वर की सच्चाई पर विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि वे उसे परमेश्वर के सच्चे दूत के रूप में नहीं देख लेते। इसके माध्यम से हमें पौलूस के जोशीले, मानवीय पक्ष की दुर्लभ अंतर्दृष्टि मिलती है। यह पत्र उसके दिल से आता है, रोमियों के विपरीत जो उसके सिर से आता है।

I. पौलूस का पद - अधिकार (1:12 - 7:16) झूठे शिक्षकों से पौलूस को बहुत परेशानी हुयी थी। वे अक्सर कलीसियाओं में प्रशंसा के नकली पत्र ले जाते थे ताकि वे कलीसियाओं में सेवकाई कर सकें और कलीसिया द्वारा इसके लिए भुगतान प्राप्त कर सकें। यह सब करते समय वे पौलूस के रंग-रूप और बोलने चालने की क्षमता की आलोचना करते। वे कहते कि उसके पास कोई प्रेरितिक अधिकार नहीं है क्योंकि वह यीशु के 12 शिष्यों में से एक नहीं था। पौलूस उनके आरोपों का जवाब देता है और इस बारे में बात करता है कि वह क्या कर रहा था और क्यों कर रहा था। वह दिखाता है कि उसके वचन परमेश्वर

की ओर से हैं, और इसलिए उनका उस पर विश्वास करना और उसे स्वीकार करना सही था। वह इस बात को अपने दिल से बताता है कि वह जो कर रहा है, क्यों कर रहा है।

II. संतों के लिए योगदान (8:1 - 9:15) जहाँ भी वह जाता, पौलुस अन्यजाति की कलीसियाओं को प्रोत्साहित करता था कि वे अपने गरीब भाइयों की सहायता के लिए यरूशलेम को भेजने के लिए धन इकट्ठा करें। यहूदियों के द्वारा सुसमाचार अन्यजातियों तक पहुँचाया जाता था , और अब वे उनकी सहायता कर सकते हैं। यरुशलम में यहूदी जो विश्वासी बन गए उन्होंने अपने परिवार, नौकरी , सब कुछ खो दिया था। पौलुस इस बारे में भी कुरिन्थियों से बात करता था , यह दिखाते हुए कि ज़रूरतमंद विश्वासियों की मदद करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

III. पौलूस का परिचय पत्र (10:1 - 13:10) पौलूस कलीसिया में कुछ लोगों के साथ बहुत नरम होने के आरोपों का जवाब देता है। वह यीशु के उदाहरण का क्षमा और दया के लिए उल्लेख करता है। उस पर अपनी सेवकाई के लिए आर्थिक मदद स्वीकार नहीं करने का आरोप था, और वह बताता है कि उसने आपने इस अधिकार का प्रयोग क्यों नहीं किया था। वह उन्हें आपने उस समय के बारे में भी बताता है जब वह मर गया था और जीवन में वापस आने से पहले स्वर्ग चला गया था। वह कितना अद्भुत अनुभव था!

अं

त में, पौलूस उन्हें पश्चाताप करने और झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों से हट कर 100% परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए कहता है, इसलिए जब पौलूस वहां पहुंचेंगा तो चीजें ठीक होंगी। वह कहता है कि वह प्यार और खुशी में आना चाहता है , डांटने या अनुशासन करने से नहीं। उसने वादा किया कि वह जल्द ही आएगा और निस्संदेह साबित करेगा कि परमेश्वर ने उसे और उसकी शिक्षाओं का समर्थन किया है।

2 कुरिन्थियों की रूपरेखा



I. पौलूस का पद अधिकार (स्पष्टीकरण) 1-7

क- सेवकाई का विश्वास 1:1-2:11

ख- सेवकाई का चरित्र 2:12-6:10

1. सेवकाई में विजय 2:12-16

2. सेवकाई के लिए योग्यता 2:17-3:6

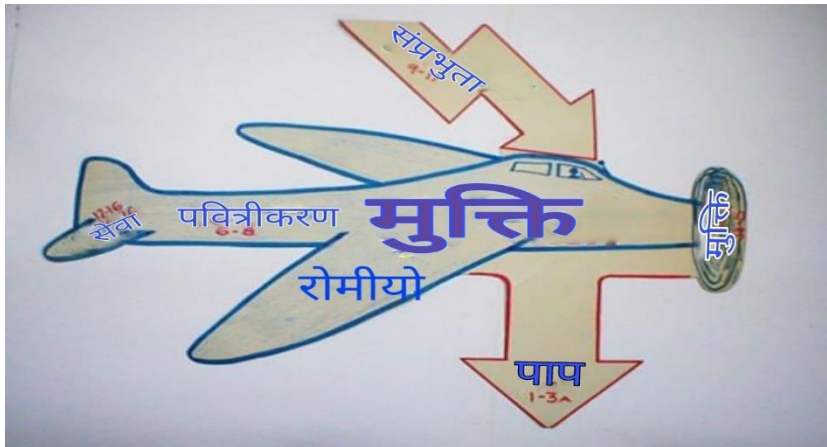
3. सेवकाई के लिए आधार 3:6-4:6

- 4. सेवकाई में परीक्षण 4:7-12
- 5. सेवकाई में संभावनाएं 4:13-5:10
- 6. सेवकाई का कार्यक्रम 5:11-21
- 7. सेवकाई का विवरण 6:1-10
- ग- सेवकाई के प्रति प्रतिबद्धता 6:11-7:16

II. संतों के लिए योगदान (प्रबोधन) 8-9

- क- मकिदुनिया से इकत्रत दान 8:1-9
- ख- कुरिन्थु में बी इक्स्ट दान 8:10-9:15
- III. पौलूस का परिचय पत्र (सत्यापन) 10-13
 - क- सेवकाई की प्रशंसा 10:1-18
 - ख- सेवकाई में आचरण 1:1-12:18
 - 1. पौलूस के कार्य 11:1-15
 - 2. पौलूस की पीड़ा 11:16-33
 - 3. पौलूस का दर्शन 12:1-10
 - 4. पौलूस की निःस्वार्थता 12:11-18
 - ग- सेवकाई के लिए चिंता 12:19-13:14

रोमियों :
मुक्ति/उद्धार



शीर्षक : प्राप्तकर्ताओं के लिए नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 56 ई.

लेखन का स्थान: कोरिंथ

प्राप्तकर्ता: रोम की कलीसिया

मुख्य आयत : मैं सुसमाचार से नहीं लजित नहीं हूँ, क्योंकि यह हर एक विश्वासी करनेवाले के उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है: पहिले तो यहूदी के लिए फिर यूनानी के लिए। क्योंकि सुसमाचार में परमेश्वर की ओर से धार्मिकता प्रगट होती है, एक ऐसी धार्मिकता जो पहिले से अन्त तक विश्वास से है, जैसा लिखा है, कि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। 1:16-17

प्रमुख शब्द: "मसीह" (39 बार), "विश्वास" (37 बार), "धर्मी ठहराना" 17 बार

उद्देश्य: एक ऐसे स्थान पर मसीही धर्म के मूल सत्य का शिक्षण करना, जहां वह लंबे समय से जाना चाहता था लेकिन नहीं जा सका।

विषय: उद्धार और मसीही जीवन जीने के बारे में सब कुछ।

प्रत्येक उपदेशक का सपना होता है कि उसके जीवन में कम से कम एक बार ऐसा अवसर आए जब वह बिना किसी समय सीमा के और बिना किसी रुकावट से जो वह चाहता है कह सके। शायद इसीलिए हममें से बहुत से लोग किताब लिखने का सपना देखते हैं। हालांकि, हममें से अधिकांश लोगों को बिना समय सीमा के उपदेश देने और सिखाने के अवसर के लिए स्वर्ग तक प्रतीक्षा करनी होगी। हममें से बहुत कम लोगों को धरती पर ऐसा मौका मिलता है। पौलूस भाग्यशाली लोगों में से एक है। वह पूरी रात प्रचार करने के लिए जाना जाता था, लेकिन उसके पास अभी भी समय की कमी थी। उसने एथेंस में मुक्ति और मसीही जीवन पर अपना शिक्षण देना शुरू किया, लेकिन वह पूरा नहीं कर पाया। अंत में, रोमियों को लिखित रूप में, वह यह सब कहने में सक्षम हुआ!

रोमियों की महानता - रोमियों शायद नए नियम की सबसे बेहतरीन किताब है। कई लोगों का कहना है कि अगर उन्हें रखने और इस्तेमाल करने के लिए बाइबल की सिर्फ एक ही किताब चुननी होती तो वह रोमियों की किताब ही होगी। इसने किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में अधिक महान बेदारी लाने में अगुवाई की है और इसके कार्य क्षेत्र के कारण, यह अन्य पुस्तकों से ऊपर नजर आती है। पॉल के अन्य लेख विशिष्ट समस्याओं या सैद्धांतिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए थे। रोमियों में वह अपना विषय

चुनने के लिए स्वतंत्र है, और उसने आपने आपने विषय के रूप में चुना है, "हमारे जीवन में उद्धार और उसके परिणाम"। चुनने के लिए इससे बड़ा विषय नहीं है।

विश्वास से जीना - पौलुस में अपने विषय को बताते हुए शुरू करता है 1:16-17 : "धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।" यह वास्तव में हबक्कूक की पुस्तक से उद्धृत किया गया है जिसने मार्टिन लूथर के मन-परिवर्तन और सुधार का नेतृत्व किया। यह वास्तव में पौलुस द्वारा अरामी भाषा में शब्दों का एक कलाकृती(खेल) है। पहले तो वह कहता है कि जो धर्मी ठहराए जाते हैं, वे परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करते हुए, विश्वास के द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे। इसका विस्तार रोमियों 1-4 में किया गया है- फिर वह यह भी कहता है, कि जो विश्वास से धर्मी ठहरे हैं, वे उसी विश्वास से अपना प्रतिदिन का जीवन व्यतीत करें। इसका विस्तार रोमियों 5-15 में किया गया है। यह बात न केवल इस पुस्तक को सारांशित करती है बल्कि हमारे स्वयं के जीवन को भी सारांशित करती है।

I. पाप - सभी का दोष (1:18 - 3:20) समाधान दिखाने से पहले, पौलुस समस्या दिखाता है - पाप। वे जो परमेश्वर के प्रकाशन के बिना हैं (अन्यजाति) पाप के दोषी हैं। परमेश्वर के प्रकाशन वाले (यहूदी) भी पाप के दोषी हैं। वास्तव में, सभी दोषी हैं और निन्दित ठहरते हैं।

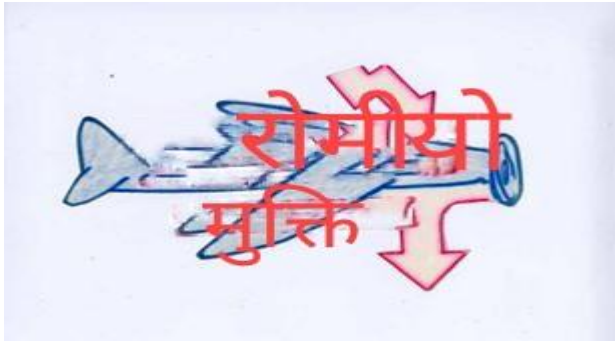
II. उद्धार/मुक्ति - प्रावधान सभी के लिए है (3:21 - 5:21) परमेश्वर ने यीशु मसीह के रूप में हमारे पापों के लिए इस प्रावधान का प्रबंध किया (3:21-31)। उद्धार के इस उपहार को स्वतंत्र रूप से विश्वास के द्वारा स्वीकार करना हम पर निर्भर करता है (4:1-25)। जब हम स्वीकार करते हैं, तो हमारे पास उद्धार की आशीषें और लाभ सब कुछ होता है (5:1-11)। यह सब यीशु में मुफ्त में दिया जाता है (5:12-21)। हालाँकि किताब यहीं खत्म नहीं होती है। मुक्ति तो बस इसकी शुरुआत है, फिर आती है यीशु के लिए जीने की आज्ञा।

III. पवित्रता - प्रावधान सभी विश्वासियों के लिए (6:1 - 8:39) उद्धार के बाद हमें परमेश्वर के लिए एक पवित्र जीवन जीना चाहिए। हमारे पाप का भुगतान कर दिया गया है और पापों को हटा दिया गया है, इसलिए वास्तविक व्यवहार में हमें पाप में नहीं रहना है (6:1-23)। हम पाप की शक्ति से मुक्त हो गए हैं जिसके द्वारा हम एक समय नियंत्रित किये जाते थे। अनुग्रह कोई पाप करने का बहाना नहीं है। व्यवस्था का पालन करने का प्रयास करने से हमें कभी भी पाप पर विजय प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि यह उसका उद्देश्य नहीं है (7:1-25)। हमारी स्वतंत्रता केवल यीशु में है (8:1-39)। यदि रोमियों की पत्नी बाइबल का मुकुट का मोती है, तो रोमियों 8 इस पूरे मोती में इसकी सबसे अधिक सुंदरता का केंद्र बिंदु है। यह निश्चित रूप से याद रखने योग्य अध्याय है। यह यीशु में हमारी विजय को दिखाता है।

IV. संप्रभुता - यहूदियों और अन्यजातियों के लिए प्रावधान (9:1 - 11:36) जो अन्यजातियों के साथ अब विश्वास द्वारा स्वीकार किया गया, यहूदियों के बारे में क्या? परमेश्वर ने उन्हें अब्राहाम के दमाध्यम से अपनी संप्रभुता में चुना। भले ही उन्होंने अवज्ञा की और उसे विफल कर दिया, वह उन्हें अस्वीकार नहीं करता। वह अस्थायी रूप से उन्हें अलग कर सकता है ताकि अन्यजाति उद्धार के लिए आ सकें, लेकिन वे एक दिन उद्धार के लिए यीशु की ओर मुड़ेंगे और परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में पुनर्स्थापित होंगे।

v. सेवा - दैनिक जीवन के लिए प्रावधान (12:1 - 15:13) पौलूस जैसा कि वह हमेशा करता है, उस सिद्धांत को दैनिक जीवन पर लागू करने के लिए जो उसने अभी-अभी सिखाया है, निष्कर्ष निकालता है। वह शिक्षक से उपदेशक बन जाता है। वह हमारे दैनिक जीवन (12:1-21), दैनिक आचरण (13:1-14), और दैनिक संबंधों (14:1 - 15:13) के बारे में बात करता है। आप इस सबसे खास किताब में समय बिताएं। यह विशेष प्रतिज्ञाओं और आशीषों का खजाना है।

रोमियों की रूपरेखा



प्रारंभिक संदेश 1:1-17

I. पाप (उद्धार की आवश्यकता) 1:18-3:20

क- वे जो बाइबल नहीं जानते दोषी हैं 1:18-32

ख- वे जो बाइबल जानते हैं दोषी हैं 2:1-3:8

ग- समस्त मानवजाति दोषी है 3:9-30

II. उद्धार (उद्धार का मार्ग) 3:21-5:21

क- परमेश्वर का प्रावधान - मसीह 3:21-31

ख- भगवान की शर्त - विश्वास 4: 1-25

ग- मनुष्य का मुफ्त लाभ 5:1-11

1. दोषमुक्त 5:1क, 9क
2. परमेश्वर के साथ शान्ति 5:1ख
3. परमेश्वर के अनुग्रह में प्रवेश 5:2क
4. आशा में मगन 5:2बी-4
5. परमेश्वर का प्रेम 5:5क, 6-8
6. पवित्र आत्मा 5:5बी
7. परमेश्वर के क्रोध से बचाया जाना 5:9बी, 10बी
8. परमेश्वर से मेल मिलाप 5:10-11

घ. मसीह का मुफ्त प्रावधान 5:13-21

III. पवित्रता (उद्धार का जीवन) 6:1-8:39

क- पाप से मुक्त 6:1-23

ख- व्यवस्था से मुक्त 7:1-21

ग- शारीरिक अभिलाषायों से मुक्त 8:1-39

1. नयी स्वतन्त्रता 8:1
2. जीवन का नया नियम 8:2
3. नयी समर्थ 8:3-4
4. नई इच्छाएं 8:5
5. नए परिणाम 8:6
6. नया रवैया 8:7
7. जीवन का नया क्षेत्र 8:8-10
8. नई गारंटी/जमानत 8:11
9. नई भगती 8:12
10. नया कर्तव्य 8:13
11. नया मार्गदर्शन 8:14
12. परमेश्वर के साथ नई घनिष्ठता 8:15
13. नए रिश्ते 8:16-17
14. नया विशेषाधिकार 8:17-18, 20-22
15. नई आशा 8:23-25
16. नई संभावना 8:17बी, 18बी, 19
17. नई सहायता 8:26-27
18. नया भरोसा 8:28-30
19. नया आश्वासन 8:31-39

IV. संप्रभुता (उद्धार की क्षेत्र) 9:1-11:36

- क- इजराइल का अतीत: चुनाव 9:1-29
 ख- इजराइल की भेंट: अस्वीकृति 9:30-10:21
 ग- इजराइल का भविष्य: उद्धार 11:1-36

V. सेवा (उद्धार की सेवा) 12:1-15:13

- क- दैनिक जीवन 12:1-21
1. सेवा और स्वयं 12:1-2
 2. सेवा और उपहार 12:3-8
 3. सेवा और विश्वासी 12:9-16
 4. सेवा और अविश्वासी 12:17-21
- ख- दैनिक आचरण 13:1-14
1. सेवा और सरकार 13:1-7
 2. सेवा और प्रेम 13:8-10
 3. सेवा और समर्पण 13:11-14
- ग- दैनिक संबंध 14:1-15:13
- समापन संदेश 15:14-16:27

24च रोम की यात्रा

पौलूस के जीवन में इस समय को अंत की शुरुआत कहा जा सकता है। जबकि वह लगभग कोई 12 वर्ष से अधिक जीवित रहेगा और सेवा करेगा, लेकिन वह अब एक प्रमुख प्रचारक और कलीसिया शुरू करने वाले के रूप में नहीं रहेगा। जैसे-जैसे कलीसिया बढ़ती और फैलती है, वह अब उसका अगुवा नहीं रहेगा। वह अभी भी कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखेगा, और इस प्रकार सिद्धांत तैयार करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी, लेकिन जब कलीसिया आगे बढ़ेती है तो वह इसका कोई मुख्य व्यक्ति नहीं होगा। कोई व्यक्ति भी उसकी जगह नहीं लेगा, बल्कि इसके बजाय परमेश्वर विभिन्न क्षेत्रों में काम करने के लिए तीमुथियुस, तीतुस, मरकुस और कई अन्य लोगों के समूह को खड़ा करेगा। कलीसिया इतनी अधिक फैली हुई है कि कोई भी एक व्यक्ति इस सब का संयोजन और नेतृत्व नहीं कर सकता है। लूका वफादारी से हर हाल में पौलूस के साथ रहता है और हमारे लिए लिखती रूप में सब कुछ दर्ज करता है कि पौलूस 57 से 62 ईस्वी तक किन हालातों से होकर गुजरता है (प्रेरितों के काम 21-28)।

शुक्रवार, 27 मई, 57 ईस्वी इस चेतावनी के बावजूद कि उसे जेल में डाल दिया जाएगा, पौलुस अपना मिशन पूरा करने के लिए यरूशलेम जाता रहा। वह वहाँ के गरीब यहूदी विश्वासियों की मदद के लिए भेंट का पैसा देता है और याकूब को बताता है कि परमेश्वर दुनिया भर में अन्यजातियों के बीच क्या कर रहा है। यरूशलेम में यहूदी विश्वासी व्यवस्था का पालन करने वाले इस के लिए बहुत पाबंध थे कि विश्वासियों द्वारा व्यवस्था का पालन पूरी तरह किया जाए। वे इतनी जल्दी व्यवस्था से अनुग्रह की ओर मुड़ने के लिए चाहवान नहीं थे। इस बात के कारण उनके और अन्यजातियों के विश्वासियों के बीच समस्याएँ उत्पन्न हो गयी थी। यरूशलेम कौंसिल को इस तरह के एक मुद्दे को हल करना था (प्रेरितों के काम 15)। अन्यजातियों के साथ उसकी बड़ी भागीदारी होने के कारण, और क्योंकि उसका मुख्य जोर उन्हें यहूदी व्यवस्था का पालन करने के लिए मजबूर करना नहीं था, यरूशलेम में यहूदी विश्वासी पौलुस पर व्यवस्था पूरी ना करने के लिए जोर देने का आरोप लगा रहे थे।

बेशक यह सच नहीं था, लेकिन अफवाहें इतनी भयानक बातें हो सकती हैं जिनका रोका जाना अति जरूरी होता है। कोई भी अगुवा नहीं चाहता था कि कलीसिया दो भागों में विभाजित हो जाए जैसे कि यहूदी कलीसिया और अन्यजाति कलीसिया। पौलूस की उच्च दृष्टि के कारण कुछ तो उसके प्रति आकर्षित होंगे और अन्य उसके विरोध में एकत्रित होंगे। पौलूस ने सोचा कि वह यह दिखाने के लिए कुछ करके इससे बच सकता है कि वह कानून पालन किये जाने के विरोध में नहीं था, अगर यह सही कारण के लिए किया जाये तो (परमेश्वर का सम्मान करने के लिए, ना कि मुक्ति कमाने के लिए)। इस प्रकार यह निर्णय लिया गया कि वह उन चार यहूदियों के बलिदानों के लिए भुगतान करेगा जो बलिदान चडाना तो चाहते थे लेकिन चडाने की कीमत वहन नहीं कर सके थे। इससे यह साबित होना चाहिए कि वह व्यवस्था को मानने के खिलाफ नहीं था।

रविवार, 29 मई शनिवार सप्ताह का दिन था, इसलिए इसे काम से मुक्त रखने के सम्मान में कुछ भी नहीं किया गया था, लेकिन रविवार को पौलूस ने 7 दिनों के लिए इन पुरुषों के बलिदानों के लिए भुगतान किया।

बृहस्पतिवार, जून 2 अपनी आदत के अनुसार, पौलुस अध्ययन करने, सिखाने, प्रार्थना करने और आराधना करने के लिए प्रतिदिन मन्दिर/हैकल जाता था। एशिया के रहने वाले कुछ पुराने शत्रुओं ने उसे मन्दिर में देखा। उन्होंने उसे शहर में पहले इफिसियों में रहने वाले गैर-यहूदी पुरुष के साथ देखा था और इस लिए अब इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पौलूस अब भी उसको आपने साथ लिए मंदिर में उपस्थित

है। जब यह अफवाह फैली तो एक दंगा भड़क उठा, मंदिर के वर्जित क्षेत्र में किसी अन्यजाति को लाने का दंड था उस गैर-यहूदी के लिए तत्काल मृत्यु। वहां पर कोई अन्यजाति न मिला, परन्तु उन लोगों की संख्या जो पौलुस का विरोध इस लिए करते थे, क्योंकि वह एक मसीही था, बढ़ती गयी और फैलती गयी, यहां तक कि उन्होंने उसे ढूंढ़कर मार डालना भी चाहा। एंटोनिया के रोमी सैनिकों ने पौलुस को बचाया और उसे वहां से ले गए क्योंकि वह पिटाई से बहुत घायल हो गया था और चलने के योग्य नहीं रहा था। रोमी सोचते थे कि पौलुस उपद्रवी था और यह जानकर हैरान रह गए थे कि वह एक पड़ा लिखा रोमी नागरिक था। उसे उस भीड़ से बात करने की अनुमति मिली जो उसके साथ साथ चली आ रही थी और उसने अपने जीवन का एक सारांश दिया। जब वह अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदियों के लिए परमेश्वर द्वारा उद्धार प्रदान करने के बारे में बात करने लगा, तो भीड़ फिर से भड़क उठी और उसे मारने की कोशिश करने लगे, इसलिए रोमियों ने उसे सुरक्षित रखने के लिए जेल में डाल दिया।

शुक्रवार, जून 3 महासभा, जो इजराइल के शासकिय परिषद था उसने कुछ प्रमुख व्यक्तियों को रोमियों के पास यह बताने के लिए भेजा कि वे पौलुस से क्यों घृणा करते हैं। पौलुस, बोलने वाले को यह ना जानते हुए वह महायाजक था, उसकी शाब्दिक आलोचना करने लगा रूप से उसका अपमान किया जिस पर एक यहूदी गार्ड ने इसके लिए पौलुस को एक थप्पड़ जड़ दिया। जब पौलुस को एहसास हुआ कि वह आदमी कौन था तो उसने माफी मांगी। फिर उसने पुनरुत्थान के बारे में बात करना शुरू किया, जिसने सद्बकियों और फरीसियों, जो दोनों मुख्य राजनीतिक दल थे, आपस में गरम बहस करने के लिए मजबूर कर दिया क्योंकि इस मामले में उनमें से प्रत्येक का विश्वास अलग-अलग था। उस रात, जब पौलुस सो रहा था, यीशु ने पौलुस को दर्शन दिया और उससे कहा कि वह हिम्मत रखे, क्योंकि उसे यरूशलेम में यीशु के बारे में गवाही देनी होगी। कई वर्षों से यह पौलुस का सपना रहा था। वह नहीं जानता था कि यह कैसे होगा।

शनिवार, जून 4 इस बीच, 40 यहूदियों का एक समूह ने एक मत होकर और प्रतिज्ञा की कि जब तक पौलुस मर नहीं जाता, तब तक वह भोजन नहीं करेगा। उन्होंने साजिश रची कि कैसे वे सबसे आसानी से उसके जीवन को समाप्त कर सकते हैं। किसी ना किसी तरह पौलुस के भानजे को, जो यरूशलेम में रहता था, उसको इस साजिश के बारे में पता चल गया और उसने पौलुस को बता दिया, और उसने आगे रोमी अधिकारियों को बता दिया। उसके जीवन की रक्षा के लिए, रोमियों ने पौलुस को कैसरिया में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया जहां सुरक्षा अधिक मजबूत थी और यहूदी विरोध कम से कम थी। रोमी सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी की निगरानी में, पौलुस को रात के समय वहां से ले जाया गया। वे रास्ते में एक बार रुके और सुरक्षित कैसरिया पहुंचे।

गुरुवार, 9 जून फेलिक्स एक भूतपूर्व गुलाम था जिसने अपनी पत्नी को उसके पहले पति से चुरा लिया था। वह एक अच्छा फौजी व्यक्ति था, लेकिन राजनीतिक नेतृत्व में बहुत अच्छा परिवर्तन नहीं कर पाया था। धार्मिक अगुवे और उनके वकील फेलिक्स और उसके दरबार के सामने पौलुस के खिलाफ आरोप लगाने के लिए यरूशलेम से वहां पहुंचे थे। उन्होंने पौलुस पर राजद्रोह का और गड़बड़ी फैलाने का आरोप लगाया। पौलुस ने अपना बचाव पक्ष खुद किया। फेलिक्स ने कहा कि वह बाद में फैसला जारी करेगा और उसने पौलुस को घर में नजरबंद कर दिया ताकि उसके दोस्त उस को मिल सकें।

मध्य-जून उस मुकदमे के तुरंत बाद, फेलिक्स ने अपनी पत्नी द्रुसिला के साथ एक और मुकदमा चलाया, जो किसी तरह से एक यहूदी पृष्ठभूमि वाली खतरनाक महिला थी। उन्होंने पौलुस की गवाही फिर से सुनी,

कोई फैसला नहीं किया, और कहा कि वे बाद में फिर सुनवाई करेंगे। उन्होंने मामले को रिश्वत के लिए रोक रखा था, जिसके बाद वे उसे छोड़ देते।

जुलाई 59 दो साल बीत गए थे जबकि पौलूस अभी भी घर में नजरबंद था। फ़ेलिक्स की जगह पर फेस्तुस आ गया था जो सम्मानीय, निष्पक्ष और यहूदियों के लिए अच्छा था, जिन पर शासन करना काफी कठिन था। यरूशलेम के धार्मिक शासकों ने फेस्तुस से प्रार्थना की कि उन पर दया करते हुए वह पौलूस के मुकदमे का तबादला यरूशलेम में कर दे, यह सदभावना का एक प्रदर्शन है। पौलूस ने इससे इनकार कर दिया, क्योंकि वह जानता था कि यरूशलेम पहुंचने से पहले ही उसे घात लगाकर मार दिया जाएगा।

जब फेस्तुस ने चाहा कि वह यरूशलेम जाए, तो पौलूस ने कैसर से अपील की, एक विशेष अधिकार जो रोमन नागरिकों के पास था, जैसे कि हमारे सर्वोच्च न्यायालय में अपील करना हमारा अधिकार होता है। नीरो उस समय सीज़र था।

बाद में जुलाई 59 में अग्रिप्पा ने बिरनीके जो उसकी बहन/पत्नी थी उसके साथ मिलकर पौलूस के मामले की सुनवाई की। अग्रिप्पा एक चतुर राजनेता था। उसके पिता ने याकूब का सिर काट दिया था। फेस्तुस ने उसी से सलाह मांगी कि कैसर के पास जाने की जो पौलूस की अपील लगाई है उस को कैसे निपटारा जाए, क्योंकि कुछ यहूदी धार्मिक लोगों को छोड़कर वास्तव में पौलूस के खिलाफ कोई आरोप नहीं था। उसको ईन आरोपों के लिए कैसर के पास नहीं भेजा जा सकता था, लेकिन यदि उसे रिहा करें तो से धार्मिक शासकों का क्रोध कम होगा। यह बिल्कुल भी एक बुद्धिमान राजनीतिक कदम नहीं होगा।

अगले दिन पौलूस ने उन सब के सामने फिर अपनी गवाही दी, और उन्हें विश्वास करने का निमंत्रण दिया। वे रुक गए और पौलूस को दूर हटा दिया। अब वे उसे छोड़ भी नहीं सकते थे, क्योंकि उस ने कैसर की दोहाई लगाई थी।

मध्य अगस्त - अक्टूबर 4, 59 पौलूस क्रेते के लिए रवाना हुए।

अक्टूबर 5 वे फेयर हवेंस पहुंचे। रोम जाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी क्योंकि मौसम खतरनाक हो गया था, लेकिन सूबेदार पतझड़ तक इंतजार नहीं करना चाहता था इसलिए उसने किस्मत पर छोड़ते हुए रवाना होने का फैसला किया।

अक्टूबर 10-24 निश्चित रूप से, वे एक भयानक तूफान में फंस गए जो जहाज को एक समुद्र तट पर ले गया।

अक्टूबर - फरवरी 60 पौलूस और अन्य लोगों ने माल्टा में सर्दियाँ बिताईं। पौलूस ने शीतकालीन सेवकाई करते हुए बिताईं।

मार्च 60 की शुरूआत में पौलूस एपियन मार्ग से रोम पहुँचा। जेल में अपने 2 वर्षों के दौरान उसने इफिसुस, कुलुस्से, फिलिप्पी और फिलेमोन को पत्र लिखे, ये पत्र आज हमारी बाइबल में मौजूद हैं।

इफिसियों:

"मसीह में"



शीर्षक : प्राप्तकर्ताओं के लिए नामित

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 60 ईस्वी

लेखन का स्थान: रोम (जेल में)

प्राप्तकर्ता: इफिसुस की कलीसिया

मुख्य आयत : हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। ... प्रभु के लिए एक बंधी के रूप में, मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप उस बुलाहट के योग्य जीवन जिएं जो तुम ने प्राप्त की है। 1:3; 4:1

प्रमुख शब्द: "में" (93 बार); "अनुग्रह" (12 बार); "चलना" (8 बार); "शरीर" (8 बार)

उद्देश्य: "मसीह में" मुख्य वाक्यांश

रोमियों: हम "मसीह में" धर्मी ठहराए गए हैं (3:24)

1 कुरिन्थियों: हम "मसीह में" पवित्र किए गए हैं (1:2)

2 कुरिन्थियों: हम "मसीह में" सिद्ध हुए हैं (11:19)

गलातियों: हम "मसीह में" मुक्त हुए हैं (2:4)

इफिसियों: हम "मसीह में" ऊंचे किये गए हैं (1:3)

फिलिप्पियों: हम "मसीह में" हर्षित हैं मसीह" (1:26)

कुलुस्सियों: हम "मसीह में" पूर्ण हैं (2:9)

फिलेमोन: हम "मसीह में" अनुग्रहित हुए हैं (15)

1 थिस्सलुनीकियों: हम "मसीह में" आशान्वित हैं (1:3)

2 थिस्सलुनीकियों: हम "मसीह में" महिमा पाते हैं (1:12)

1 तीमुथियुस: हम "मसीह में" विश्वासयोग्य हैं (1:18)

2 तीमुथियुस: हम "मसीह में" विजयी हैं (14:6)

तीतुस: हम "मसीह में" उदाहरण बने हैं (2:7)

विषय: विश्वासी की स्वर्गीय स्थिति और दैनिक जीवन जो इस स्थिति से मेल खाता है।

मान लीजिए कि आपका एक लंबे समय से गुमशुदा रिश्तेदार मर जाता , और अपनी पूरी संपत्ति केवल आपके लिए छोड़ जाता है। वकीलों ने आपको ढूँढ लिया है और इस समय आपसे संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि आपको बताया जा सके कि ये सभी धन दौलत अब आपके हैं। यह पहले से ही तुम्हारा है, तुम्हें अभी इसका पता नहीं है! यह असंभव लग सकता है, लेकिन यह सच है। परमेश्वर आपसे संपर्क करने की कोशिश कर रहा है। इफिसियों एक ऐसा पत्र है जिसे वह आपके विरासत में मिले धन और आशीषों के बारे में खबर करने के लिए भेज रहा है। यह किसी भौतिक(संसारिक) संपत्ति के बारे में नहीं है जो सड़ जाएगी और पीछे रह जाएगी, यह एक ऐसी संपत्ति के बारे है जो अन्तकाल के लिए आपकी है।

इफिसुस - इफिसुस शहर अपने दिन के शीर्ष 3 शहरों में से एक था जैस्सा आज के दिन न्यू यार्क है। पौलूस ने वहां 3 साल बिताए थे। यह एक कलीसिया के लिए बहुत ही रणनीतिक स्थान था।

मसीह में हम (1 - 3) पौलूस उद्धार के बारे में बात करना शुरू करता है, कैसे परम पिता परमेश्वर ने इसकी योजना बनाई (अतीत, वर्तमान और भविष्य का चुनाव - 1: 4-6) वह नक्शानवीस/आर्किटेक्ट था जिसने डिजाइन बनाया था। इसके बाद पौलूस परमेश्वर पुत्र के बारे में लिखता है जिसने इसे प्रदान किया (भूत, वर्तमान और भविष्य का छुटकारा- 1:7-12)। वह निर्माता है जिसने परमेश्वर के डिजाइन का अनुसरण किया। अंत में वह परमेश्वर पवित्र आत्मा के बारे में लिखता है जिसने हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के उत्थान को लागू किया - 1:13-14। यह वही है जो यीशु द्वारा परमेश्वर के डिजाइन के अनुसार बनाए गए शीर्षक विलेख/पटे को वितरित करता है।

निस्संदेह, यह सब अनुग्रह से है (2:8-9)। परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। वह हमारे बारे में सब कुछ जानता है और फिर भी हमसे प्यार करता है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमने उसके प्रेम को अर्जित करने के लिए किया हो या कुछ ऐसा जो हम कर सकते हैं। यह स्वतंत्र रूप से और बिना किसी शर्त से दिया जाता है। यह अनुग्रह है। उसके प्रेम को अर्जित करने के लिए या उसके प्रेम को खोने के लिए हम कुछ नहीं कर सकते हैं। यदि हम चाहें, तो हम उसके प्रेम को अस्वीकार कर सकते हैं, या यहाँ तक कि स्वयं परमेश्वर को भी अस्वीकार कर सकते हैं। लेकिन वह हमें प्यार करना कभी बंद नहीं करेगा। जब हम उसके प्रेम को पहचानने और स्वीकार करने का निर्णय लेते हैं, तो हमें ऐसा आनंद महसूस होगा जैसा हमने पहले कभी नहीं किया होगा।

मसीह हम में -

(1-3) वही बनो

जो तुम हो (4-6)

विश्वासी की कर्मक स्थिति	विश्वासी का अभ्यास
स्वर्गीय स्थिति	संसारिक हालत
मसीह में हमारी विरासत	मसीह में हमारा जीवन
सिधांत	अभ्यास

जैसा कि उसका तरीका है, पौलूस अपने लेखन के दूसरे भाग में वही चीज लागू करता है जो वह पहले भाग में सिखाता है। मसीह में हमारी स्थिति के कारण हमें उसके जैसा जीवन जीना चाहिए। हमें पवित्र जीवन जीना चाहिए। **जैसा यीशू जीता।** वह इसे विशेष रूप से पतियों, पत्नियों, माता-पिता, बच्चों, दासों और स्वामियों पर लागू करता है। वह इसे आध्यात्मिक युद्ध और हमारे कवच पर एक सबसे महत्वपूर्ण खंड के साथ समाप्त करता है। जो लोग यीशु की तरह और यीशु के लिए जीना चाहते हैं, बेहतर होगा कि वे अपने आध्यात्मिक विकास के लिए लड़ने को तैयार रहें, क्योंकि दुश्मन आध्यात्मिक रूप से बढ़ने के हर प्रयास का विरोध करेगा।

इफिसियों की रूपरेखा



शुरू 1:1-2

I. मसीह में हम

II. (विश्वासी की स्थिति - स्वर्गीय स्थिति) 1-3

III.

क- चुना हुए और मुहरबंद 1:3-23

1. आत्मिक आशीष 1:3
2. परमेश्वर पिता ने इसकी योजना बनाई है 1:4-6
3. परमेश्वर पुत्र ने इसे प्रदान किया है 1:7-12
4. परमेश्वर पवित्र आत्मा ने इसे लागू किया 1:13-14
5. पौलूस प्रार्थना करता है 1:15-23

ख- अनुग्रह द्वारा बचाए गए 2:1-10

1. समस्या 2:1-3

- 2. समाधान 2:4-8
- 3. शर्त - विश्वास 2:8-10
- ग- एक देह में संयुक्त 2:11-22
- घ- देह में बराबर 3:1-21

IV. हम में मसीह (विश्वासी का अभ्यास - सांसारिक स्थिति) 4-6

- क- अन्य विश्वासियों से संबंध 4:1-6
- ख- आत्मिक वरदानों से संबंध 4:7-16
- ग- पूर्व जीवन से संबंध 4:17-32
- घ- बुराई से संबंध 5:1-17
- ङ- पवित्र आत्मा से संबंध 5:18-21
- च- गृह जीवन से संबंध 5:22-6:4
- छ- दास और स्वामी से संबंध 6:5-9
- ज- शैतान से संबंध 6:10-20
- समापन 6:21-24

फिलिपिओं:

आनंद



शीर्षक : प्राप्तकर्ताओं के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 60-61 ई

लेखन का स्थान: रोम (जेल में)

प्राप्तकर्ता: फिलिपी की कलीसिया

मुख्य आयत : प्रभु में सदा आनन्दित रहो। मैं इसे फिर से कहूंगा: आनन्दित रहो ! 4:4

मुख्य शब्द: "खुशी (आनंद)" 18 बार; "दिमाग / सोचो" 10 बार

	गलातियों	ईफ़ीसियों	फिलिपीयों	
शैली	तार्किकसंगत बहस	शिक्षण देना और लागु करना	सूचित करने और तस्सली देना	
मुख्य विषय	मुक्ति (व्यवस्था से मुक्त)	मसीह ('मसीह में' एक विश्वासी की संपत्ति)	आनंदमय जीवन	
उद्देश्य	सही	निर्देश देना	प्रेरित करना	
रवैया	तीखी फटकार	शांत, विजयी	कोमल, हर्षित	

विषय: प्रभु में आनन्दित रहो!

प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक नीत्शे ने एक बार मसीहीयों के बारे में कहा : "मैं उनके उद्धार में विश्वास करूंगा यदि वे उद्धार पाए हुए लोगों की तरह कुछ और दिखाई दें !" आरम्भिक कलीसिया ने अपने आनन्द के कारण उनके संसार पर गहरा प्रभाव डाला। पौलूस अपने पसंदीदा कलीसियाओं में से एक, फिलिपीयों की कलीसिया को उनके आनंद में प्रोत्साहित करने के लिए लिखता था। किसी में कुछ सुधार करने में

कोई समस्या नहीं होती है, बल्कि साझा करने में खुशी मिलती है - और पौलूस ने यह जेल में से लिखा था!

फिलिप्पी फिलिप्पी शहर थिस्सलुनीका के पास था। यह एक यूनानी शहर था जिसमें पौलूस अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर गया था, उन्हें यह पत्र लिखने से लगभग 6 या 7 साल पहले। जब फिलिप्पी के विश्वासियों ने यह सुना कि पौलूस बन्दीगृह में है, तो उन्होंने इपफ्रुदीतुस को रोम भेजा कि वह जाकर देखे कि पौलूस कैसा है और उसे उपहार के रूप में पैसा दे। उसे अपने कमरे और भोजन के लिए पैसे की जरूरत थी, क्योंकि वह घर में नजरबंद था और इन चीजों का इंतजाम उसे खुद ही करना होता था। इपफ्रुदीतुस ने महसूस किया कि पौलूस, उनकी सोच से कहीं अधिक जरूरतमंद था, इसलिए वह वहां रुक गया और पौलूस को देने के लिए पैसे कमाने के लिए काम करने लग गया। इस दौरान वह बीमार पड़ गया और लगभग मर ही गया। जब वह ठीक हो गया, तो पौलूस ने उसे इस पत्र के साथ फिलिप्पी वापस भेज दिया। वह चाहता था कि वहाँ उसके मित्र इसके लिए आनन्दित रहें कि इपफ्रुदीतुस ठीक था और पौलूस खुद भी ठीक था। फिलिप्पियों की हमारी यह पुस्तक वह पत्र है जिसे पौलूस ने उसके साथ भेजा था।

I. मदद करने में आनंद (1:3-11) पौलूस ने उन्हें उनकी चिंता करते हुए और उनके की मदद के लिए धन्यवाद देने के साथ शुरू करता है। वह उनके लिए प्रार्थना करता है। फिर वह जो कुछ दिल से कहना चाहता था, उसे कहता है।

II. दुख में आनंद (1:12-30) उनको ऐसा लगता था कि जेल ने पौलूस की सेवकाई को समाप्त कर दिया था, परन्तु पौलूस ने कहा, नहीं! उसने स्पष्ट रूप से बताया कि उसके कष्टों ने वास्तव में सुसमाचार को बढ़ावा दिया है, क्योंकि इस इन हालातों के माध्यम से वह पहरेदारों और कैसर के घराने को गवाही देने में सक्षम हुआ था (जिनमें से कई विश्वासी बन गए थे), और उसको प्रार्थना करने के लिए बहुत अधिक समय मिलता था। साथ ही उसके जेल में रहने के कारण हर जगह विश्वासियों और कलिसीयाओं को उसके काम के साथ-साथ उसके लिए प्रार्थना करने के लिए भी प्रेरित किया था। साथ ही, उसने इस समय का उपयोग, हमारे नए नियम के एक महत्वपूर्ण भाग को लिखने, के लिए किया: फिलिप्पियों, इफिसियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन। वास्तव में "जो प्रभु से प्रेम रखते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं" (रोमियों 8:28)।

इसके अलावा, पौलूस अपने कष्टों को उसे और अधिक मसीह के समान बनाने का एक माध्यम देखता और समझता था। उसने उन्हें उत्साहित किया कि जब कभी वे भी कष्टों का सामना करें तो दृढ़ और निडर रहे।

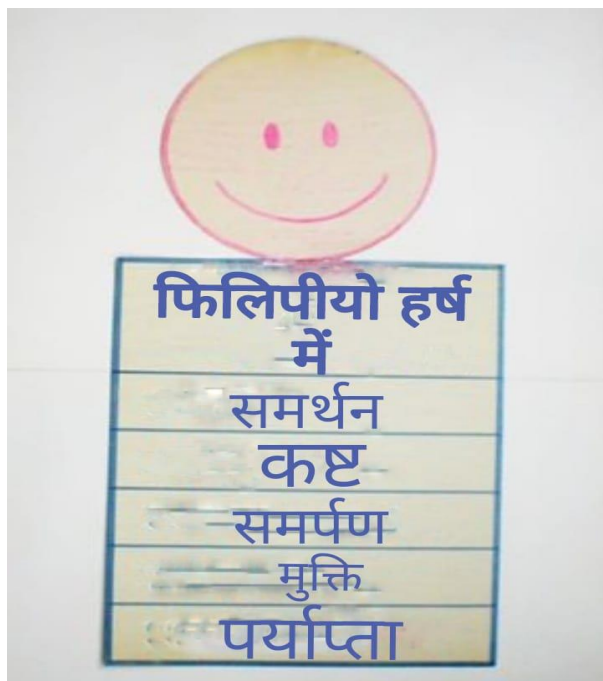
III. अधीनता में आनंद (2:1-30) इसके बाद पौलूस ने यीशु को हर बात में पहला स्थान देकर अपने आनन्द को पूरा करने के लिए उन्हें उत्साहित किया। वह उन्हें एकता, विनम्रता और आत्म-बलिदान के लिए बुलाता है। वह मसीह का, तीमुथियुस का, इपफ्रुदीतुस का और स्वयं का उदाहरण के रूप में उपयोग करता है। जीवन में उन्हें किन हालातों का समना करना पड़ता है इस से कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए, उन्हें इस सब को उनके लिए परमेश्वर की इच्छा मान कर आपने आप को समर्पण करना चाहिए। इससे उन्हें बहुत खुशी और शांति मिलेगी।

IV. उद्धार में आनंद (3:1 - 4:3) पौलुस उन्हें उन झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देता है जो हर जगह इतने प्रचलित हैं। वे किसी के अधीन नहीं हैं और उनके पास परमेश्वर का आनंद नहीं है। पौलुस उन्हें चुनौती देता है कि वे उसके उदाहरण का अनुसरण करें, झूठे शिक्षकों का नहीं।

V. पर्याप्तता में आनंद (4:4-19) पौलुस प्रार्थना करता है कि वे अपने सभी कामों में शांति और आनंद पाते रहें। वह आपने जेल में रहने दौरान अपने लिए परमेश्वर द्वारा शक्ति प्रदान करने के लिए आनन्दित होता है और उसके प्रति उनकी चिंता और बलिदान पर आनन्दित होता है। वह जानता है कि वे उसे पैसे नहीं भेज सकते थे, लेकिन फिर भी भेजे थे। उसके लिए पैसे से ज्यादा जो वे उसकी चिंता करते थे वो मायने रखती है। वह उन्हें विश्वास दिलाता है कि परमेश्वर उन्हें उनके बलिदान के लिए आशीष और पुरस्कार देगा और उन्हें आश्चस्त करता है कि उसे सब कुछ अच्छी तरह मिलता है।

पौलुस अपने उस समय के विशिष्ट पत्र-लेखन शैली में आपने पत्र को समाप्त करता है। वह फिलिप्पी के कुछ लोगों को सलाम (शांति के शब्द) और छोटे संदेश भेजता है और अपने साथ के कुछ लोगों की ओर से उन्हें सलाम भेजता है। उनके लिए उनका प्यार स्पष्ट है, जैसा कि उसके लिए उनका प्यार स्पष्ट है। इस प्रकार वे एक दूसरे में आनन्दित होते हैं। आप कैसे हैं? क्या दूसरे आपके आनंद को देख कर इसके लिए यीशु की महिमा करते हैं? क्या आप उस आनंद से भरे हुए हैं जो दूसरों को उद्धारकर्ता की ओर खींचता है? यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगें कि वह आपको अपनी आत्मा का यह फल भी दे !

फिलिपींओं की रूपरेखा



शुरू 1:1-2

I. मदद करने में आनंद 1:3-11

क- उनके लिए पौलुस का धन्यवाद देना 1:3-8

ख- उनके लिए पौलुस का प्रार्थना करना 1:9-11

II. दुःख में आनन्द 1:12-30

क- दुःख सुसमाचार का प्रसार करते हैं 1:12-18

ख- दुःख मसीह की महिमा करते हैं 1:19-26

ग - दुःखों के समय के लिए उत्साह 1:27-30

III. अधीनता में आनन्द 2:1-30

क- उत्साह 2:1-4

ख- उदाहरण 1: मसीह 2:5-11

ग- लागू करना 2:12-16

घ- उदाहरण 2: पौलूस 2:17-18

ङ- उदाहरण 3: तीमुथियुस 2:19-24

छ- उदाहरण 4: इपफ्रुदस 2:25-30

IV. उद्धार में आनन्द 3:1-4:3

क- चेतावनी/ताड़ना 3:1

ख- फालतू शिक्षको (कलीसिया में के वे लोग जो मसीही में होते हुए मूसा की व्यवस्था के पालन करने को लाज़मी देहाते थे) का खतरा 3:2-6

ग-पौलूस का उद्देश्य 3:7-16

घ- उत्साह 3:17-4:3

V. पर्याप्तता में खुशी 4:4-19

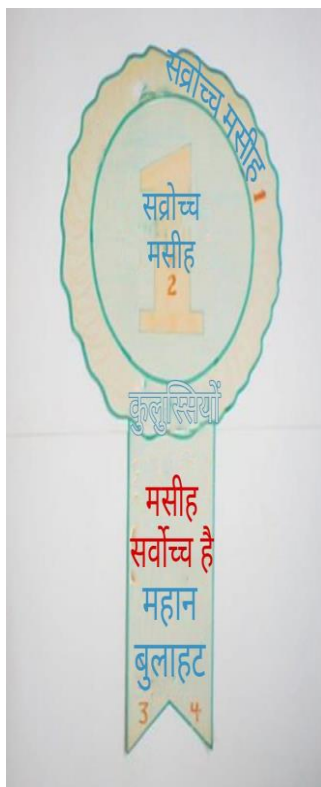
क-शांति 4:4-9

ख- शक्ति 4: 10-13

ग- प्रावधान 4:14-19

घ- समापन 4:20-23

कुलुस्सियों मसीह सर्वोच्च है



शीर्षक : प्राप्तकर्ताओं के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 60 ईस्वी

लेखन का स्थान: रोम (जेल में)

प्राप्तकर्ता: कुलुस्से की कलीसिया

प्रमुख आयत: और जिसने हमें आत्मा में तुम्हारे प्रेम के बारे में भी बताया ... और तुम्हें मसीह में परिपूर्णता दी गई है, जो सारी सामर्थ्य और अधिकार का शिरोमणि है। 1:8; 2:10

मुख्य शब्द: "सिर" (3 बार)

उद्देश्य:

	अच्छी शिक्षा देना	झूठी शिक्षा को दुरुस्त करना
मसीही के बारे	रोमियों	गलातियों
उद्धार के बारे	इफिसियों	कुल्ससीओं

विषय: मसीह की श्रेष्ठता को प्रदर्शित करना - वह न केवल कलीसिया का बल्कि पूरे ब्रह्मांड का सिर है।

मेरे गृहनगर में मुख्य सड़क के ठीक सामने एक ग्रे कंक्रीट(बजरी) की इमारत है। यह शहर की ना तो सबसे बड़ी और ना ही सबसे छोटी इमारत है। मुझे देखते ही याद आया कि मैं आपने बचपन में अक्सर इसे पास से आता जाता था लेकिन कभी इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। ओह, मैं एक या दो बार इसके अंदर तो गया था, लेकिन इसकी मुझे कोई विशेष बात याद नहीं थी। फिर एक रविवार को मैं एक कलीसिया के साथ जो वहां पर आराधना करने के लिए इकठे होते थे, अंदर गया और वहां मुझे अच्छी संगति, स्तुति और आराधना का समय, सीखने और विकास करने का एक स्रोत मिला। अब जब मैं इस के पास से होकर निकलता हूं तो मेरे लिए इस इमारत का अर्थ बिल्कुल अलग है।

नए नियम में एक किताब है जो काफी हद तक इसके समान है। यह न तो सबसे बड़ी है और न ही सबसे छोटी है। हम सभी जानते हैं कि यह वहां है और अक्सर इसके पास से होकर आते-जाते हैं, यहां तक कि समय-समय पर रुकते भी हैं। हालाँकि, हम वास्तव में यह देखने के लिए समय नहीं निकालते हैं कि इसके अंदर क्या है। यह वह पुस्तक है जिसे हम कुलुस्सियों कहते हैं।

पृष्ठभूमि- कुलुस्से बड़े लौदीकिया के निकट एक छोटा नगर था। हालाँकि वह पास के क्षेत्र में था, हमारे पास पौलुस का कुलुस्से जाने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। वहां की कलीसिया को नजदीकी कुछ कलीसियाओं द्वारा शुरू किया गया था जिन्हें पौलुस ने शुरू किया था। पौलुस ने उन्हें यह पत्र रोम की जेल में रहते हुए लिखा था। क्योंकि यह इफिसियों की पुस्तक की सामग्री के समान है, इसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है और इफिसियों को अध्ययन के लिए चुना जाता है।

पौलुस ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए लिखा कि वे परमेश्वर के प्रति सच्चे बने रहें और "ज्ञानवाद" कहलाने वाली झूठी शिक्षा के प्रति सावधान रहें। यहूदा और 1 यूहन्ना भी इस विधर्म का खंडन करते हैं। गूढ़ज्ञानवादियों का मानना था कि बौद्धिक रूप से प्रबुद्ध कुछ लोग बाकी सारी मनुष्य जाती के लोगों से बहुत ऊपर थे। उनके लिए, 'परमेश्वर' एक मानव-रहित शक्ति थी और उन्होंने पाप के लिए मुक्ति को अस्वीकार कर दिया था। उनके कई झूठों को शैतान आज के दिन 'नए युग' के नाम से बना-पका रहा है। पौलुस इस विधर्म का खंडन करता है, इसकी विसंगतियों और अशुद्धियों को दिखाकर नहीं बल्कि यीशु की सच्चाई को दिखाकर। यह हमारे लिए भी एक अच्छा सबक है। दूसरे की झूठी शिक्षा पर हमला करने के बजाय, यीशु को सत्य के रूप में ऊपर उठाएं। पौलुस दिखाता है कि मसीह हर किसी से और सब पर सर्वोच्च है।

I. श्रेष्ठ मसीह है (1:15-29) मसीह को सारी सृष्टि और कलीसिया के सिर के रूप में उंचा किया गया है। उसे सभी चीजों के मिलाने वाले के रूप में भी सराहा जाता है, कि केवल वही जो ईश्वर और मनुष्य को फिर से जोड़ता है। वह इस बात की तरफ संकेत करता है कि उसने हमारे विकल्प के रूप में सलीब पर अपने कार्य के द्वारा ऐसा किया है। पौलुस का कहना है कि सच्चा ज्ञान केवल यीशु को जानने से आता है, न कि किसी नकली प्रणाली के माध्यम से जो स्वयं सभ प्रकार के उत्तर रखने का दावा करती है।

II. श्रेष्ठ मसीही हैं (2:1-23) पौलुस कहता है कि मसीह तर्कज्ञान से उंचा है और उनसे आग्रह करता है कि वे सभी झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों से पूरी तरह से दूर हो जाएं। वह इसके ओर इशारा करता है कि कानूनाद की हर प्रणाली विफल हो जाती है, जो यह नहीं मानती कि हम मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने

और पुनरुत्थान के माध्यम से उस सब से मुक्त हो जाते हैं। पौलूस यह भी दर्शाता है कि मसीह हर प्रकार की गुप्त शिक्षा या तपस्या की हर प्रणाली से बड़ा है।

III. श्रेष्ठ बुलाहट है (3:1 - 4:6) जल्द ही यीशु हमारे लिए वापस आएगा, इसलिए पौलूस कहता है कि अब भी हमें उसके जैसा बनना है, क्योंकि तब तो हम पूरी तरह से उसके जैसे हो जायेंगे। इसके बाद वह इसे हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में लागू करता है: दैनिक जीवन, पारिवारिक संबंध, काम की जिम्मेदारियां, और हमारे अपने व्यक्तिगत आध्यात्मिक जीवन में भी।

यह कहा गया है कि यदि मसीह सबका प्रभु नहीं है, तो वह बिल्कुल भी प्रभु नहीं है। सुनिश्चित करें कि वह आपके जीवन में सबसे पहले हैं, एक ऐसा सर्वोच्च व्यक्ति जो सबसे ऊंचा है। यदि वह आपके जीवन में सब कुछ नहीं है, तो इसका मतलब वह आपके जीवन में अपने उचित, योग्य स्थान पर नहीं है!

कुलुस्सियों की रूपरेखा



शुरू 1:1-4

I. श्रेष्ठ मसीह (मसीह की सर्व-पर्याप्तता) 1

क- मसीह का चरित्र 1:15-23

1. सारी सृष्टि का सिर 1:15-20
2. सब बातों का मेल करानेवाला 1:21-23

ख- मसीह का अधिकार 1:24-29

II. श्रेष्ठ मसीही (मसीह के बारे में विधर्म) 2

क- तर्कज्ञान से ऊंचा 2: 1-10

ख- कानूनवाद से ऊंचा 2:11-17

ग- गुप्त शिक्षाओं से ऊंचा 2:18-19

घ- तपस्या से ऊंचा 2:20-23

III. श्रेष्ठ बुलाहट (मसीह की ओर से पुनरुत्थान जीवन 3-4

क- हमारी बुलाहट की निश्चितता 3:1-4

ख- हमारी बुलाहट की विशेषताएं 3:5-4:6

1. दैनिक जीवन में 3:5-17
 2. गृह जीवन में 3:18-21
 3. नौकर-मालिक के रिश्ते में 3:22-4:1
 4. प्रार्थना में 4:2-4
 5. बोलने और गवाही देने में 4:5-6
- समापन 4:7-18

फ़िलेमोन:
मसीही शिष्टाचार



शीर्षक : प्राप्तकर्ता के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 60 ईस्वी

लेखन का स्थान: रोम (जेल में)

प्राप्तकर्ता: फिलेमोन, कुलुस्से का एक धनी और प्रभावशाली विश्वासी ।

मुख्य आयत : इसलिए यदि तुम मुझे एक भागीदार मानते हैं, तो उसका स्वागत करें जैसे आप मेरा स्वागत करते हैं। 18 यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो वह मुझ पर डाल दे।

19 मैं, पौलूस, यह बात अपने हाथ से लिख रहा हूं। मैं इसका भुगतान कर दूंगा - यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि तुम आपने सरे जीवन के लिए मेरे ऋणी हो। 17-19

प्रमुख शब्द: "प्यार," "मांगना," "लाभदायक," "सेवक "

उद्देश्य: पौलूस फिलेमोन को उसके दास पर अनुग्रह करने के लिए विनती करता है

उनेसिमस जो भाग गया था और अपनी सेवा में वापस नहीं आ रहा है।

विषय : मसीही शिष्टाचार और क्षमा

कई साल पहले रीडर्स डाइजेस्ट मैगजीन ने निम्नलिखित लेख को छापा था। हाल ही में एक मित्र के साथ बात करते हुए, मैंने टिप्पणी की, कि प्रतिष्ठा संकेत मिलना मुश्किल हो रहा है। बहुत से लोग, अगर वे आपने लिए कोई एक बड़ी बेताबी से चाहते हैं, तो वे एक नई कार, एक फर कोट, एक फ्लोरिडा छुट्टी, एक नाव, एक घर , किसी खास क्लब की सदस्यता, या यहां तक कि एक कॉलेज की डिग्री भी प्राप्त कर सकते हैं। मैंने पूछा, "एक आदमी को दूसरों से अलग करने के लिए, "क्या रह गया है," ?" "शिष्टाचार,"

उसने उत्तर दिया, "बस अच्छे शिष्टाचार।" फिलेमोन का छोटा पत्र पौलूस को एक महान व्यक्ति, शिष्टाचार वाला व्यक्ति दिखने के रूप में दूसरों से अलग करता है।

पृष्ठभूमि - पौलूस ने जेल से फिलेमोन को उसकी रिहाई से ठीक पहले लिखता है। फिलेमोन का दास उनेसिमुस, फिलेमोन को लूटने के बाद उसके पास से भाग गया था। वह रोम में पौलूस से मिला था, जब पौलूस उसे उद्धार की ओर ले गया। उनेसिमुस पौलूस के साथ रहा और उसकी सहायता करता रहा, जब पौलूस घर में नजर बन्द था तो यह लड़का पौलूस के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ था। फिलेमोन पौलूस का घनिष्ठ मित्र था। पौलूस ने वर्षों पहले उद्धार पाने के लिए उसकी अगुवाई की थी। वह कुलुस्से की कलीसिया के अगुवों में से एक था। कुलुस्से की कलीसिया बनाने वाली गृह कलीसियाओं में से एक कलीसिया के लोग उसके घर में इकठा होते थे। अब पौलूस उनेसिमुस को उसके स्वामी के पास एक पत्र देकर भेजकर फिलेमोन को उसे क्षमा करने के लिए कह रहा है। जब पत्र का बारीकी से अध्ययन किया जाता है तो कोई भी कई तरह से देख सकता है कि पौलूस कई तरह से मसीही शिष्टाचार का प्रयोग करता है।

पौलूस फिलेमोन को " एक दोस्त से दोस्त को "लिखकर शुरू करता है। वह 'आपना रुतबा नहीं दिखाता ' और न ही आपने शिष्यत्व अधिकार का उपयोग करता है। शिष्टाचार छोटे-छोटे बलिदानों से बनता है, जैसे दूसरों को पहल पर रखना। यह दूसरों के लिए सच्चे प्यार का रवैया है जो दिल से होना चाहिए।

I. फिलेमोन की प्रशंसा (4-7) पौलूस फिलेमोन के लिए प्रार्थना करते हुए शुरू करता है, परमेश्वर को उसे आशीष देने के लिए कहता है। फिर वह उसे आपने लिए और सुसमाचार के लिए किए सभी अच्छे कामों के लिए उसकी प्रशंसा करता है। लोगों की तारीफ करना बहुत महत्वपूर्ण है और यह बहुत अच्छे शिष्टाचार को दिखाता है। दूसरी तरफ लोगों की आलोचना करना आसान है और इससे किसी का भला नहीं होता। याद रखें कि यह पत्र पहली बार पूरी कलीसिया के सामने पढ़ा गया था। यह सिर्फ फिलेमोन को देने के लिए नहीं लिखा गया था, लेकिन पूरी कलीसिया के लिए था। पौलूस का प्रशंसा करना फिलेमोन के लिए अच्छा था, क्योंकि यह अगले अनुरोध के लिए एक आधार था।

II. उनेसिमुस के लिए दलील (8-17) पौलूस चाहता है कि फिलेमोन उनेसिमुस के लिए अधिकारों का उसी तरह से त्याग करे जैसे पौलूस आपने अधिकारों का फिलेमोन के लिए त्याग करता है। वह चाहता है कि वह भी प्रेम पर आधारित विनम्र और दयालु बने। पौलूस उनेसिमुस को वापस उसके पास भेजकर फिलेमोन को अपना प्रेम दिखा रहा है और फिलेमोन को क्षमा करने के लिए किसी दबाव का उपयोग नहीं कर रहा है। पौलूस चाहता है कि फिलेमोन उनेसिमुस को क्षमा करके और उसे वापस स्वीकार करके उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करे। पौलूस यहां तक बताता है कि ओनेसिमस जेल में उसके लिए बहुत उपयोगी रहा है, और बिना किसी आरोप के उसे वापस स्वीकार करना स्वयं पौलूस को स्वीकार करने जैसा होगा। वह यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव तर्क का उपयोग कर रहा है कि फिलेमोन इस मामले में एक ईश्वरीय, विनम्र निर्णय पर आए। वह उसे जबरदस्ती या चालाकी से चलाने की कोशिश नहीं कर रहा है, नहीं तो उसने उनेसिमुस को वापस ही नहीं भेजा होता। वह ईमानदारी से फिलेमोन के लिए एक सही काम करने का रह आसान बनाना चाहता है। पौलूस फिलेमोन के साथ वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसा वह समान परिस्थितियों में व्यवहार करना चाहेगा - जो किसी भी करवाई में सुनहरा नियम होता है।

पौलूस का कहना है कि वह फिलेमोन का दोस्त, सहकर्मी, भाई और साथी है। उनेसिमुस को अस्वीकार करना पौलूस को अस्वीकार करना सा होगा और ऐसी बात सोच से भी परे है। ध्यान दें कि पौलूस कभी भी उनेसिमुस के छोड़े जाने के कारण को सुलझाने की कोशिश नहीं करता। यह किसकी गलती थी? क्या गलत हो गया? इस तरह से चीजों की तह तक जाना बहुत मुश्किल होता है, अक्सर यह हालातों को बद से बदतर बना देता है। मसीही शिष्टाचार का अर्थ है अपराध या निर्दोषता साबित किए बिना क्षमा करना।

III. पौलूस का वादा (18-22) पौलूस का कहना है कि वह उनेसिमुस के कर्ज का भुगतान भी करेगा ताकि फिलेमोन को नुकसान न उठाना पड़े। निश्चय ही फिलेमोन कभी भी पौलूस को ऐसा नहीं करने देगा। पौलूस फिलेमोन से जो उम्मीद करता है, उसमें बहुत सकारात्मक है, यह कहते हुए कि वह जानता है कि वह सही काम करेगा। यह किसी के प्रति आलोचनात्मक या निंदनीय होने से कहीं अधिक प्रभावी होता है। पौलूस ने यह कहते हुए निष्कर्ष निकालता कि वह जेल से रिहा होने पर मिलने आएगा, और वह शायद जल्द ही आया भी था। इस प्रकार हम मनुष्य पौलूस और अन्य विश्वासियों के साथ उसके संबंधों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि को देखते हैं। यह हमारे लिए भी एक बढ़िया मिसाल है। याद रखें, आप बहुत विनम्र नहीं हो सकते!

फिलेमोन की रूपरेखा



पौलूस की प्रस्तावना 1-3

I. फिलेमोन की प्रशंसा 4-7

क- फिलेमोन के लिए प्रार्थना 4

ख- फिलेमोन की प्रशंसा 5-6

ग- फिलेमोन में खुशी 7

II. उनेसिमुस के लिए दलील 8-17

क- पौलूस का व्यक्तित्व 8-10

ख- उनेसिमुस की लाभप्रदता 11-16

ग- उनेसिमुस को क्षमा करना 17

III. पौलूस का हल 18-22

क- उनेसिमुस के लिए भुगतान 18-20

ख- पौलूस की प्रतिज्ञा 21

ग- पौलूस का उद्देश्य 22, पौलूस की व्यक्तिगत नफरत 23-25

24 छ अंतिम यात्राएँ पौलूस की अंतिम यात्राएँ

मार्च 60 - मार्च 62 ईस्वी रिहा होने से पहले पौलूस ने रोम में 2 साल जेल में रहते हुए बिताए। पौलूस कलीसिया के कुछ अगुवों को सिखाने में सक्षम था, क्योंकि वहाँ पहले से ही एक मज़बूत कलीसिया स्थापित की जा चुकी थी। बहुत से यहूदी अगुवे आते और रुचि के साथ उनकी बातें सुन्ते जब वह उन्हें अपनी कहानी सुनाता। तीमुथियुस, इपफ्रास, लूका, उनेसिमुस, मरकुस, देमुस और अन्य लोगों ने वहाँ पौलूस के साथ समय बिताया। उसने पत्र लिखे जो हमारी बाइबल में पुस्तकें बन गए हैं: इफिसियों, कुलुस्सियों, फिलिप्पियों और फिलेमोन। आखिरकार उसे रिहा कर दिया गया। यहूदियों ने उसकी रिहाई का कभी विरोध नहीं किया; वे जानते थे कि वे उसे रोक नहीं सकते हैं।

अन्य घटनाएँ - इस समय के दौरान आरम्भिक कलीसिया में अन्य घटनाएँ घटित हो रही थीं। मत्ती और लूका दोनों ने 60 ईस्वी के आसपास अपने सुसमाचार लिखे थे। 62 ईस्वी में यीशू का भाई याकूब शहीद हो गया था। लगभग उसी समय पतरस रोम गया था।

मार्च 62 - 67 के आखिर तक पौलूस इन साढ़े 5 वर्षों के दौरान स्वतंत्र था। वह यात्रा करता रहा और सेवा करता रहा, लेकिन समय और परीक्षणों ने उनके स्वास्थ्य को तोड़ कर रख दिया था। अन्य लोग कलीसिया को आगे बढ़ा रहे थे, परन्तु परमेश्वर के पास अभी भी पौलूस के लिए एक स्थान और कार्य बाकी था। हालांकि किसी भी हद तक यकीन के साथ बताना तो मुश्किल है, फिर भी हम इस समय के दौरान पौलूस की यात्रा का एक मोटा मोटा विवरण एक साथ रख सकते हैं।

पतझड़ से 62 ईस्वी के आखिर तक पौलूस तीमुथियुस के साथ इफिसुस जाता है और उसे वहीं छोड़ देता है (1 तीमुथियुस 1:3)।

62-63 की सर्दियाँ पौलूस फिलिप्पी गया, मकिदुनिया जो उसकी प्रिय कलीसिया थी (फिलिप्पियों 1:26; 2:24)। यह एकमात्र ऐसा स्थान था जिसे वह सबसे ज्यादा प्यार करता था वह था इफिसुस। उसने यहां सर्दी बिताई। इस दौरान उसने तीमुथियुस को एक पत्र लिखा, जो इफिसुस की कलीसिया के साथ संघर्ष कर रहा था। मजबूत इरादों वाली महिलाएं और झूठे शिक्षक तनाव से उसके पेट में गांठ पैदा कर रहे थे, और वह इफिसुस छोड़ने की अनुमति चाहता था, लेकिन पौलूस ने उसे मजबूती से हालातों से निपटने के लिए कहा। उसने कई व्यावहारिक सलाह भी दीं। पौलूस ने तीमुथियुस के साथ शामिल होने की योजना बनाई थी, लेकिन वह ना हो सका, इसलिए उसने इसके बजाय यह पत्र लिखा था।

63 की पतझड़ से 64 की पतझड़ तक का समय पौलूस ने यह वर्ष एशिया माइनर में बिताया। सबसे पहले वह इफिसुस गया जहाँ वह संघर्ष कर रहे तीमुथियुस की सहायता करने में सक्षम था। इफिसुस क्षेत्र के सभी कलीसीयाओं के संचालन का केंद्र था और यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान था। यूहन्ना और मरियम भी इफिसुस में रह रहे थे। आस-पास अन्य कलीसियाएँ थीं (प्रकाशितवाक्य 2-3 में की 7 कलीसियाएँ) और पौलूस भी उनमें गया था।

लौदीकिया और हियरापुलिस में, इपफ्रास अगुवाई करता था। वह पौलूस का घनिष्ठ मित्र था, जो जेल में पौलूस से मिलने गया था। उस क्षेत्र में झूठे शिक्षक बड़े पैमाने पर थे और पौलूस कलीसीयाओं में सत्य को मजबूत करने में मदद करने के लिए वहां गया था। ये दोनों शहर एक दुसरे से 6 मील दूरी पर एक ही घाटी में थे, जिनके बीच एक नदी बहती थी। कुलुस्से कुछ और ऊपर की ओर था, जो लगभग 10 मील

की दूरी पर था। पौलुस द्वारा लिखे जाने के बाद इपफ्रास ने उन्हें यह पत्र दिया था, जिसे हम कुलुस्सियों की पुस्तक कहते हैं।

इस समय के दौरान, पौलुस ने कुलुस्से की अपनी पहली यात्रा की, हालाँकि वह उन्हें पहले ही लिख चुका था। इपफ्रास ने वहाँ कलीसिया की स्थापना की जब पौलुस जेल में था। फिलेमोन वहाँ रहता था, और पौलुस ने कहा कि जब कभी हो सका वह उससे मिलने आएगा। साथ ही उनेसिमुस भी वहाँ था और पौलुस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि वह ठीक है और साथ ही साथ रोम में पौलुस की गिरफ्तारी के दौरान उसकी सभी मदद के लिए उसे धन्यवाद देना चाहता था। अप्पिया भी वहीं रहती थी, जो पौलुस की एक और घनिष्ठ मित्र थी। अरखिप्पुस वहाँ के पादरियों में से एक था और वह पौलुस को भी जानता था। वह फिलेमोन का पुत्र था।

अन्य घटनाएँ - जब पौलुस इफिसुस क्षेत्र में था उस समय दूसरे स्थानों में महत्वपूर्ण बातें चल रही थीं। लूका ने अपने दोस्त थियोफिलस को लूका के सुसमाचार के अनुवर्ती के रूप में प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा। 18 जुलाई, 64 ईस्वी को सर्कस मैक्सिमस के पूर्वोत्तर छोर पर देर रात आग लग गई। दुकानों का यह स्तंभ अत्यधिक अग्नि लपटों में था और तेज हवाओं ने आग को और अधिक भड़का दिया था। 5 दिनों तक इसका जोरदार असर बना रहा जिसमें रोम का अधिकांश भाग जल गया था।

अफवाह यह थी कि नीरो ने इसे स्वयं शुरू किया था ताकि वह रोम को वैसे ही बना सके जैसा वह चाहता था। इसका जबाब घड़ने के लिए उसने मसीही लोगों को बलि का बकरा बना डाला। तब से एक बड़ा उत्पीड़न शुरू हुआ।

इसी समय के दौरान, 64 ईस्वी में, नीरो द्वारा शहीद किये जाने से कुछ ही समय पहले पतरस ने यह पत्र लिखा जिसे हम 2 पतरस कहते हैं।

64 की पतझड़ से 66 की पतझड़ तक - नीरो को खुश करने के लिए स्थानीय अधिकारियों ने हर जगह मसीही लोगों को मारना शुरू कर दिया। नेताओं की विशेष रूप से ढूँढा जाने लगा था, और पौलुस अन्य सभी अगुवों की सूची में ऊपर था। इस कारण वह स्पेन गया, एक ऐसी यात्रा पर जिसे वह वैसे भी कुछ समय के लिए करना चाहता था। यह पतरस के लिए शहीद होना का परमेश्वर का निर्धारित समय था, पौलुस का नहीं। मकदूनिया और एशिया माइनर में उसका काम हो चुका था। अन्य पादरी लोग अब कलिसीयाओं का नेतृत्व करने में लगे हुए थे और अच्छा काम कर रहे थे। उत्पीड़न ने चीजों को वैसे भी समय के लिए भूमिगत(अंडरग्राउंड) कर दिया था। इस प्रकार पौलुस एशिया माइनर से मैसिलिया (जिसे आज मार्सिले कहते हैं), स्पेन के लिए रवाना हो गया।

सभी मुख्य नगरों में यहूदी और ईश्वर से डरने वाले लोग रहते थे। पौलुस एक नए काम की नई शुरुआत करना चाहता था जहाँ कोई नहीं था, वह किसी और की नींव पर निर्माण नहीं करना चाहता था। स्पेन में उसने पाया कि वहाँ कुछ विश्वासी थे, लेकिन प कोई संगठित कलीसिया नहीं थी जिसकी पहुँच दूर तक हो।

अन्य घटनाएँ - जब पौलुस स्पेन में था, उस समय इब्रानियों का पत्र लिखा गया था, संभवतः पौलुस के शिष्य प्रिस्किल्ला द्वारा यह लिखा गया था। यहूदी युद्ध कहो या रोम के खिलाफ विद्रोह, यह भी शुरू हो गया था। यह 70 ईस्वी में यहूदियों की हार और उनके राष्ट्र के विनाश के साथ समाप्त हुआ।

66 ईस्वी की गर्मियों की शुरूआत - इसके बाद पौलुस क्रेते में तीतुस से मिलने गया और वहां की कमजोर कलीसियाओं को संगठित करने में मदद करने लगा। यहूदी धर्म फल-फूल रहा था और पाखंडवाद प्रबल हो रहा था। पौलूस वास्तव में वह सब करने के लिए लंबे समय तक तो नहीं रह सका, जो करने की आवश्यकता थी, लेकिन उसने काम शुरू कर दिया।

66 की गर्मी ऋतू - इसके बाद पौलुस मिलेतुस में त्रुफिमस के साथ मिलाने गया, जो एक इफिसुस वासी था और यूनान छोड़कर यहूदिया के लिए पौलुस के साथ चला गया था। यरूशलेम में वह पौलुस की गिरफ्तारी का निर्दोष कारण था, जिस के बारे में उन्होंने कहा था कि पौलुस उसे भीतरी अदालत में लाया था। वह वहीं बीमार हो गया और पौलूस के साथ यात्रा नहीं कर सका।

इसके बाद पौलुस इफिसुस गया जहाँ उनेसिफुरुस ने उसकी मदद की। एक बार फिर उसने पौलूस की मदद करने के लिए खुद को जोखिम में डाला, जैसा कि उसने पौलूस के जेल में होने पर किया था। तीमुथियुस भी वहाँ था। वहाँ पर हुमिनयुस और फिलेतुस नाम के झूठे शिक्षक भी थे।

वहाँ रहते हुए, तीतुस के सामने आने वाली समस्याओं में उसे प्रोत्साहित करने और सलाह देने के लिए पौलुस ने तीतुस को वापस लिखा। वह पत्र हमारी बाइबिल में तीतुस की पुस्तक है।

66 ईस्वी का आखिर पौलूस ने वहाँ रहते हुए कार्पस का दौरा किया और वहाँ अपना लबादा, किताबें और चर्मपत्र छोड़ दिए। फिर वह इरास्तुस को देखने के लिए कुरिन्थ की यात्रा पर निकल पड़ा, इरास्तुस वहाँ संघर्ष कर रही कलीसिया का नेतृत्व करने में मदद कर रहा था। योजना यह थी कि तीतुस को निकोपोलिस में पौलूस से मिलाया जाये जहाँ वे एक साथ सर्दी तक रहेंगे।

66-67 की सर्दियाँ - निकोपोलिस सर्दियों के दौरान आसपास के क्षेत्र तक पहुँचने के लिए एक अच्छी जगह थी। पौलूस ने उस समय के दौरान इलिरियम की सभी कलीसियाओं के साथ काम किया। उसकी मदद करने के लिए उसके साथ अरतिमास और तुखियस भी थे।

67 की पतझड़ से आखिर तक - इसके बाद पौलुस मकदुनिया और यूनान गया। यह उसकी सेवकाई का अंतिम स्थान होगा। यह अच्छा था कि उसे अपनी प्रिय फिलिप्पी की कलीसियाओं को एक बार और देखने का मौका मिला।

यह स्पष्ट है कि आरम्भिक कलीसिया के विकास के पीछे परमेश्वर का हाथ था। उसने अगुवाओं को चुना, प्रशिक्षित किया और नियुक्त किया। उसने तय किया कि कौन जीवित रहेगा और कौन मरेगा। यह उसकी कलीसिया है। वह इसका सिर है। परमेश्वर ने जो भी भूमिका उसके लिए चुनी थी, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, पौलूस उसे निभाने के लिए तैयार था। उसके पास एक सेवक का हृदय था और वह राज्य के लिए एक विश्वासयोग्य कार्यकर्ता था - जो आज हमारे लिए एक उत्तम उदाहरण है।

पौलूस की रोम के लिए दूसरी यात्रा

यह हमारे घर वापसी के समय या तरीके को प्रकट करने की परमेश्वर की योजना का हिस्सा नहीं है। जो ईश्वर के हृदय में छिपा हुआ है। जितना हम इसे नहीं जानते हैं यह उतना ही अच्छा है। हालांकि, अक्सर हम संकेतों को पढ़ सकते हैं और इसे आते हुए देख सकते हैं। पौलूस के साथ भी कुछ ऐसा ही था। परमेश्वर ने उसे उन परिस्थितियों से उसकी आने वाली मृत्यु का अनुमान लगाने की अनुमति दी जिनमें से वह होकर गुजर रहा था।

67 ईस्वी का आखिर- मसीही लोग कहीं भी सुरक्षित नहीं थे। अब वे यहूदी धर्म के एक संप्रदाय के रूप में सुरक्षित नहीं थे। उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता और मार डाला जाता था, या कोलिज़ियम में मनोरंजन के लिए रोम भेज दिया जाता था। मसीही अगुवाओं की विशेष रूप से खोजबीन हो रही थी। पौलूस अभी भी सब जीवित मसीही लोगों में बड़ी प्रतिष्ठा वाला मसीही अगुवा था, इसलिए उसको पकड़ना वास्तविक एक पुरस्कार पाने के तुल्य था।

इफिसुस में रहते हुए, सिकन्दर नाम के एक ताम्बा कारीगर ने बदला लेने के लिए और धन पाने के लिए इसको एक मौके के रूप में देखा, इसलिए उसने पौलूस को धोखा दिया और फिर पैसों के लिए उसके खिलाफ गवाही दी।

उसकी हैसियत के कारण पौलूस को सीधे रोम भेजा गया था। सर्दियों में जहाज़ की छोटी यात्रा कठिन थी, और पौलूस बूढ़ा और कमजोर हो चुका था। उसने आपने साथ एक विश्वासघात, त्यागपन, अकेला और असविकृत महसूस किया। देमास ने इस संसार के प्रेम-जाल के कारण उसे त्याग दिया था। क्रेसेन्स उसी रास्ते गलातिया को चला गया। तीतुस को सेवकाई करने के लिए सल्माटिया जाना पड़ा। फिर भी, विश्वासयोग्य लूका, पौलूस के साथ रहा।

पौलूस रोम में - यह एक अलग रोम था जिसमें पौलूस ने इस समय प्रवेश किया था, और एक अलग पौलूस था जिसने इसमें प्रवेश किया था। वह जानता था कि अंत निकट है और वह तैयार था। आग ने रोम को शारीरिक और मानसिक रूप से बदल दिया था। हर जगह (जर्मनी में हिटलर की तरह) नीरो का उत्पीड़न, भय और आतंक मंडरा रहा था। रोम का अधिकांश भाग अभी भी खंडहर की हालत में था। अन्य भागों में नई, बड़ी इमारतें और गलियाँ बन चुकी थीं। जेल और भी भयानक थी। यह कोई घर पर नजर-बंद होने जैसा नहीं था बल्कि एक जेल कोठड़ी में जंजीर थी। कुछ दोस्त खुद को और अपने परिवार को बहुत जोखिम में डालकर, साहसपूर्वक उसके पास मिलने गए थे। हालांकि, किसी ने भी मुकदमे में उसके साथ खड़े होने की हिम्मत नहीं की, नहीं तो वे भी मर गए होते। प्रचार करने और सिखाने के लिए सभी के ज़िंदा रहने की ज़रूरत थी।

पौलूस का दिमाग अभी भी मजबूत था, लेकिन वह जानता था कि उसका शरीर इस्तेमाल हो चुका था। वह अपने जीवन से संतुष्ट था और इस बात से कि उसने इसका उपयोग कैसे किया था। कुछ चीजें थीं जो वह अलग तरीके से करी होती, जैसे कि मसीही लोगों को ना मारा होता, लेकिन एक बार जब उसने प्रकाश को देखा, तो वह उसका अनुसरण करने लगा।

वह जानता था कि उसका मुकदमा निष्पक्ष नहीं होगा, क्योंकि मौत की सजा पहले ही पास हो चुकी थी। वह बस समय - समय की बात थी। कोई भी सत्य की तलाश नहीं कर रहा था, पर केवल पौलूस को मारने के बहाने की तलाश कर रहा था। क्योंकि उसकी कोठरी ठंडी, अंधेरी और उबाऊ थी, इसलिए पौलूस ने अपना लबादा, किताबें और चर्मपत्र अपने पास लाने को कहा। वह अपने अंतिम दिन परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हुए बिताना चाहता था।

क्योंकि वह सार्वजनिक शत्रु #1 था, पौलूस को कार्सर (जिसे बाद में मैमार्टिन कहा जाता है) जेल में रखा गया था। यह कैपिटोलिन पर्वत के तल पर था। पौलूस खुद एक भूमिगत(अंडर ग्राउंड) कक्ष में था, जहां केवल छत के एक छेद से ही पहुंचा जा सकता था। एक दोस्त क्या ला सकता है इसके अलावा कोई रोशनी नहीं थी। छत में बने छेद से ही खाना अंदर गिराया जाता था।

यह जानते हुए कि इसका अर्थ उनकी मृत्यु भी होगा, पौलूस नहीं चाहता था कि दूसरे लोग उससे मिलने आएँ और मर जाएँ। कलीसिया को स्वस्थ और विकसित रखने के लिए प्रत्येक की आवश्यकता थी। तुखियुस जो पिछली बार उसके साथ बन्दीगृह में था, अब इफिसुस में था। इरास्तुस कुरिन्थु में था। ट्रौफिमस मीलेतुस में था, तीतुस डालमतिया (इलियरिकम) में और क्रेसेंस गलतीया में था। देमास ने संसार के लिए परमेश्वर का वचन छोड़ दिया था। फैगेल्लिउस और हर्मोगेनेसे धर्मत्यागी बन गए थे और पौलूस के खिलाफ काम कर रहे थे। केवल वफादार लूका ही पौलूस के साथ था। इन वर्षों में उनके बीच कितना जुड़ाव विकसित हुआ होगा और वे सब कुछ जो एक साथ होकर उन्होंने सहन किया होगा। वे एक दूसरे के लिए क्या ही तस्सली बने होंगे। मुझे यकीन है कि परमेश्वर ने पौलूस की मदद और समर्थन करने के लिए जो कुछ किया उसके लिए लूका को पौलूस के साथ बराबर ही आशीष दी है। लूका के बिना, पौलूस वो सब कुछ नहीं कर पाता जो वह कर सका। एक भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितनी दूसरी होती है। यदि आप नेतृत्व में हैं, तो महसूस करें कि जो लोग आपका समर्थन करते हैं वे आपकी सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। यदि आप सहायक हैं, तो याद रखें कि आपकी भूमिका और इनाम उतना ही महान है जितना आप समर्थन करते हैं।

यह कोई कहने वाली बात नहीं है कि पौलूस ने दूसरों को कभी अनदेखा नहीं किया था, खासकर तीमुथियुस और मरकुस को। तीमुथियुस इफिसुस में था, पौलूस के मरने से पहले रोम में पौलूस से मिलने की दिल जन से कोशिश कर रहा था। कुछ समय के लिए, पौलूस के साथ अपने जुड़ाव के कारण वह खुद भी जेल में रहा था। पहली मिशनरी यात्रा पर अलग होने के बाद मरकुस कई साल पहले पौलूस के साथ फिर से मिला था। तब से दोनों परिपक्व हो गए थे और काफी बढ़ गए थे।

पौलूस का परीक्षण # 1 रोम को जलाने के लिए मसीहीयों का नेतृत्व करने के आरोप से पौलूस को बरी कर दिया गया क्योंकि उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं मिला था। सिकंदर जो एक ताम्बा कारीगर था पौलूस के खिलाफ गवाही देने के लिए रोम तक आया था। उसे झूठी गवाही देने के लिए भुगतान किया गया था। हालाँकि, पौलूस का कहना था कि उसने अपने साथ यीशु की उपस्थिति को एक विशेष तरीके से महसूस किया था, जैसा कि हम सभी महसूस करेंगे अगर हम भी कभी ऐसी कठिन परिस्थितियों में पड़ते हैं तो। हालाँकि, इस परीक्षण में उसके पास उपदेश देने या अपना बचाव करने का कोई मौका नहीं था।

यह 67 के आखिर दिनों की बात है जब कि पौलूस ने अपना अंतिम पत्र लिखा - तीमुथियुस के सब लोगों को। यह बहुत दिलचस्प था और उनके आपसी रिश्ते के कारण और भी महत्वपूर्ण था, उन्हें यह महसूस हो रहा था कि यह उनका अंतिम संपर्क साबित हो सकता है। क्या ही आशीष भरी बात है कि वे शब्द आज हमारे लिए सुरक्षित रखे गए हैं! "क्योंकि मैं प्यिऔ की नाई उंडेला जाता हूं, और मेरे जाने का समय आ पहुंचा है। 7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रक्षा की है। 8 अब मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी जो उसके प्रगट होने की बात जोहते हैं। (2 तीमुथियुस 4:6-8)

पौलूस का परीक्षण # 2 पहले तो पौलूस पर मजिस्ट्रेट द्वारा मुकदमा चलाया गया था, और अब खुद नीरो द्वारा। नीरो अपने जीवन के अंत में, अपने सबसे बुरे समय पर था। वह हर अपराध से दागदार था: अपनी माँ, पत्नियों और सबसे अच्छे दोस्तों का हत्यारा था। पौलूस को कैदी के कपड़ों में चित्रित करें, एक मुड़े शरीर वाला, सफेद बालों वाला और गंजा, परमेश्वर और मनुष्य की महिमा के लिए अपना जीवन दे रहा है। कितनी विडम्बना की बात है कि नीरो जैसा कोई व्यक्ति पौलूस जैसे किसी व्यक्ति का न्याय कर रहा है! इस दुनिया में तो चीजें इसी तरह चलती हैं, लेकिन अगली दुनिया में नहीं! इस सब के बारे में पौलूस का रवैया ईश्वरीय था, न कि आत्म-दया का और ना कुढ़वाहट का। "यकीनी रूप से जो कोई मसीह यीशु में भक्ति का जीवन जीना चाहे वह सताया जाएगा" (2 तीमुथियुस 3:12)। हम नहीं जानते कि इस परीक्षण में पौलूस के पास अपने विश्वास को साझा करने का एक आखिरी मौका था या नहीं, लेकिन यह जानकर कि परमेश्वर कैसे काम करता है, मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर परमेश्वर ने उसे यह एक अंतिम विशेषाधिकार दिया था।

68 की पतझड़ - पौलूस की मृत्यु "तो हमारे प्रभु के बारे में गवाही देने में शर्म ना करो, और ना ही मुझे उसका बंदी होने से शर्म ना करो। परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य से, सुसमाचार के लिए मेरे साथ दुःख उठाने में सहभागी बनो,

9- जिस ने हमारा उद्धार किया है, और पवित्र जीवन के लिए बुलाया है, नहीं कि इस लिए कि हम ने कुछ किया है, परन्तु उसके आपने उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार। यह अनुग्रह हमें आदिकाल से पहले मसीह यीशु में दिया गया था,

10- परन्तु अब यह हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा दिखाई दिया है, जिसने मृत्यु को नाश किया, और जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान किया है।

11- और मैं इस सुसमाचार का अग्रदूत, और प्रेरित, और शिक्षक ठहराया गया हूं।

12- इस कारण मैं ऐसा दुःख उठाता हूं, जैसा मैं उठा रहा हूं। फिर भी मैं लज्जित नहीं हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ जिस पर मैं ने विश्वास किया है, और मुझे निश्चय है, कि जो कुछ मैं ने उसे उस दिन के लिए सौंपा है, उस की वह रखवाली कर सकता है। (2 तीमुथियुस 1:8-12) "यीशु मसीह को याद रखो, जो मरे हुएों में से जी उठा, और दाऊद के वंश से निकला। यह मेरा सुसमाचार है,

9- जिसके कारण मैं एक अपराधी की नाई जंजीरों में जकड़े जाने तक दुःख उठा रहा हूँ। लेकिन परमेश्वर का वचन जंजीर नहीं है।

10- इसलिये मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है, अनन्त महिमा के साथ प्राप्त करें।

11- यह बात सच है, कि यदि हम उसके साथ मर गए, तो उसके साथ जीएंगे भी;

12- यदि हम सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। यदि हम उसका इन्कार करेंगे, तो वह भी हमारा इन्कार करेगा;

13- यदि हम बेविश्वासी भी हो जाएँ , तो वह विश्वासयोग्य बना रहेगा, क्योंकि वह स्वयं आपने आप का इन्कार नहीं कर सकता। (2 तीमुथियुस 2:8-13)

क्योंकि वह एक रोमी नागरिक था इसलिए उसे प्रताड़ित नहीं किया जा सकता था। पौलूस का सिर शहर की दीवारों के बाहर तलवार से काट दिया गया था। उसे यह सुनिश्चित करने के लिए अच्छी तरह से सुरक्षित रखा गया था कि कहीं मसीही लोग उसे छुड़ाने के लिए हमला न करें। अविश्वासी दर्शकों ने इस बात को उसकी हार के रूप में देखा, लेकिन वास्तव में यह पौलूस की जीत की शोभायात्रा थी। दिलचस्प बात यह है कि कुछ महीने बाद खुद नीरो की मृत्यु हो गई। उसके दो साल बाद येरूशलेम गिर गया (2 सितंबर, 70 ईस्वी) और इसके साथ एक युग का अंत और दूसरे की शुरुआत हुई। ईश्वर की जलती हुयी मशाल यहूदियों से मसीही लोगों तक पहुंच गई। (अस्थायी रूप से)

तीमुथियुस: कलीसिया का नियम /अनुशासन



शीर्षक : प्राप्तकर्ता के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 62 ई.

लेखन का स्थान: मक्दूनीया

प्राप्तकर्ता: तीमुथियुस, एक युवा पादरी- मित्र

मुख्य आयत : यदि मुझे आने में देर हो जाए , तुम जान लो कि परमेश्वर के घराने में, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और सत्य का खंभा और बुनियाद है, उसको कैसा व्यवहार करना चाहिए।

... पर संतुष्टि के साथ धार्मिकता बहुत बड़ा लाभ है। ... परन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन सब से दूर भाग जाना, और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा करते रहना। 12 विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़। उस अनन्त जीवन को थामे रख जिसके लिये तू बुलाया गया था जब तू ने बहुत गवाहों के साम्हने इसका अच्छा अंगीकार किया था। ... तीमुथियुस, जो तुझे सौंपा गया है उसकी रक्षा कर। अधर्म की बक-बक और विरोधी विचार जिसे झूठा ज्ञान कहा जाता है उस सब से दूर रहना , 3:15; 6:6, 11-13, 20

प्रमुख शब्द: "अच्छा" (22 बार); "ईश्वरत्व" (8); "सिद्धांत" (8); "सिखाना/शिक्षक" (7)

उद्देश्य: पौलूस एक पादरी के रूप में अपने युवा प्रशिक्षु के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है। वह उसे झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देता है और समझाता है कि उसे कलीसिया का संचालन कैसे करना चाहिए।

विषय: कलीसिया के अनुशासन को सही करना।

इससे पहले कि हम यह भी जान पाते कि हमारा पहला बच्चा लड़का होगा या लड़की, परमेश्वर ने हम दोनों के दिलों में उसका नाम 'तीमुथियुस' रखा क्योंकि वह एक युवा पादरी होगा। बाइबल में तीमुथियुस किसी के लिए भी अनुसरण करने के लिए एक उत्तम उदाहरण है। एक यूनानी पिता और यहूदी मां से जन्मे, पौलूस द्वारा अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर यीशु में उद्धार के लिए उसका नेतृत्व किया गया था। उसकी माँ, यूनीके, और नानी, लोइस, दोनों का उस पर अच्छा ईश्वरीय प्रभाव था। अपने आत्मिक वरदानों और तीव्र परिपक्वता के कारण, और इसलिए भी कि वह स्वाभाविक रूप से उसके साथ बहुत अच्छी तरह घुल-मिल गया था, पौलूस ने तीमुथियुस को अपने साथ आने और अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में मदद करने के लिए कहा। उसने फिलिप्पी, थिस्सलुनीका, बेरिया और कुरिन्थु में कलीसिया स्थापित करने में पौलूस की सहायता की। पौलूस ने उन्हें कलीसियाओं में कठिन परिस्थितियों को ठीक करने के

लिए अपना आधिकारिक 'समस्या-निवारक' के रूप में हर जगह भेजा, जहाँ पौलूस स्वयं जाने में असमर्थ था। यह कई सालों तक चलता रहा। तीमुथियुस और पौलूस अंत के बहुत करीबी बन गए थे। वह शायद रोम में पौलूस के साथ था जब पौलूस को दूसरी बार वहां कैद किया गया था। यह गिरफ्तारी पौलूस के कत्ल के साथ समाप्त हुई थी। तीमुथियुस स्वयं एक शहीद के रूप में मरा था, जिसको रोमी सरकार द्वारा मारा गया था।

पृष्ठभूमि - 1 तीमुथियुस, पौलूस की मृत्यु से लगभग 3 वर्ष पहले लिखा गया था। तीमुथियुस को इफिसुस में समस्याओं का निवारण करने के लिए भेजा गया था जबकि पौलूस कहीं और सेवकाई कर रहा था। पौलूस ने इफिसुस में उसके साथ शामिल होने की उम्मीद की थी, लेकिन उसे देरी हो गयी थी, इसलिए उसने तीमुथियुस को यह पत्र लिखकर निर्देश दिया कि जब तक वह वहां नहीं पहुंचता तब तक उसे कैसे आगे बढ़ना है। इस प्रकार हमारे पास पौलूस की अंतर्दृष्टि है कि एक कलीसिया को कैसे चलना चाहिए। पौलूस का इफिसुस न पहुँच पाना पौलूस और तीमुथियुस दोनों के लिए निराशाजनक था, लेकिन निश्चित रूप से हमारे लाभ के लिए था।

I. तीमुथियुस का अभिषेक (1:3-20) - जाहिर तौर पर आरामप्रस्त तीमुथियुस के लिए चीजें सुचारू रूप से नहीं चल रही थीं। झूठे शिक्षकों, दबंग महिलाओं और कलीसिया के संघर्षों ने उसे बेवस कर दिया था कि उसने पौलूस से पूछा कि क्या वह पौलूस की कृपया से इफिसुस छोड़ सकता है। यह इतना बुरा था कि इससे उसे पेट की समस्या हो रही थी! पौलूस ने उसे स्पष्ट रूप से रहने और विरोध का सामना करने के लिए कहा। जबकि पौलूस के लिए यह कठिन न होता, लेकिन तीमुथियुस स्पष्ट रूप से काफी अलग स्वभाव का व्यक्ति था। इस प्रकार से पौलूस इस में तीमुथियुस को इस कठिन कार्य में प्रोत्साहित और सहायता करता है। वह उसे सलाह और मार्गदर्शन देने के साथ-साथ उसके वहां रहने और काम करने के उसके फ़र्ज़ की याद दिलाता है। किलिसिया को नियम /अनुशासन की आवश्यकता थी और वही इसे लाने वाला व्यक्ति था।

II. कलीसिया का संगठन (2:1 - 3:16) पौलूस फिर कलीसिया में प्रार्थना के महत्व के बारे में बात करता है और इसका नेतृत्व के द्वारा होना चाहिए। वह सलाह देता है कि मसीही महिलाओं की पहचान आत्मा के आंतरिक श्रृंगार से होनी चाहिए, न कि शरीर के बाहरी लिबास से। उनके जीवन से अच्छे कार्यों और इज्जत की भावनाएँ दिखाई देनी चाहिए। पुरुष को अगुवे होना हैं, महिलाओं को उनके समर्थक होना हैं। सच यह है कि इफिसुस में ऐसा नहीं हो रहा था।

फिर पौलूस तीमुथियुस को बताता है कि प्राचीनों और उपयाजकों के लिए क्या योग्यताएँ होनी चाहिए। पुरुष नेतृत्व को भी वहां सीधा/दुरुस्त करने की जरूरत थी। कलीसिया के नेतृत्व के लिए किसे चुनना है यह हमेशा एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय होता है। चूँकि पौलूस अपनी आशा के अनुसार वहाँ जाने में सक्षम नहीं था, इसलिए उसने तीमुथियुस को निर्देश दिया कि वह कैसे अगुवों चुनाव करे और उनका उपयोग करे।

III. तीमुथियुस का संचालन (4:1 - 6:19) - 1 तीमुथियुस का यह अंतिम भाग कलीसिया में तीमुथियुस के स्वयं के रहन-सहन और कार्य से संबंधित है। पौलूस उसे झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देता है और उसे एक ईश्वरीय शिक्षक होने के उसके फ़र्ज़ की याद दिलाता है। पौलूस कलीसिया के बारे एक परिवार के रूप में बात करता है और तीमुथियुस को कलीसिया के लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करने

के लिए प्रोत्साहित करता है जैसे वह परिवार के सदस्यों के साथ व्यवहार करता होता: इज्जत और सम्मान के साथ।

1 तीमुथियुस में सूचीबद्ध पौलूस के मानकों के मुताबिक आपकी कलीसिया कहाँ पर है? यदि यह उन सिद्धांतों को पूरा नहीं कर रही है तो इसका मतलब कुछ तो गलत है। यदि पौलूस जीवित होता तो वह आकर चीजों को ठीक कर देता। वह नहीं है और वह नहीं करेगा, परन्तु परमेश्वर है और वह करेगा। तीमुथियुस बनो और अपनी कलीसिया में नियम/ अनुशासन लाओ।

1 तीमुथियुस की रूपरेखा



शुरू 1:1-2

I. तीमुथियुस का अभिषेक (तीमुथियुस को प्रभार सौंपना) 1

क- पौलूस झूठे शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी देता है 1:3-11

ख- पौलूस परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही देता है 1:12-17

ग- पौलूस तीमुथियुस को सेवक के रूप में नियुक्त करता है 1:18-20

II. कलीसिया का संगठन (कलीसिया को चुनौती) 2-3

क- प्रार्थना भी की विनती 2:1-8

ख- महिलाओं की अधीनता 2:9-15

ग- अगुवों की निगरानी 3:1-16

1. प्राचीन 3:1-7

2. उप्याजक 3:8-13

3. कलीसिया का उद्देश्य 3:14-16

III. तीमुथियुस का संचालन (तीमुथियुस का आचरण) 4-6

क- जिमेदारी का सर्वेक्षण 4:1-15

1. शत्रु: झूठे शिक्षक 4:1-5

2. फ़र्ज़: एक ईश्वरीय शिक्षक बनें 4:6-16

ख- निभर रहने वालों की सहायता 5:1-6:2

1. छोटे या बड़े लोगों के लिए 5:1-2
 2. विधवाओं को 5:3-16
 3. प्राचीनों को 5:17-25
 4. स्वामियों और दासों को 6:1-2
- ग- ईश्वरत्व की श्रेष्ठता 6:3-19
1. झूठे शिक्षकों के ऊपर 6:3-5
 2. भौतिकवाद के ऊपर 6:6-19
- समापन 6:20-21

तीतुस :

दैनिक चाल चलन



शीर्षक : प्राप्तकर्ता के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 62 ई

लेखन का स्थान: कुरिंथ

प्राप्तकर्ता: तीतुस, एक युवा पादरी है जिसे पौलूस सेवकाई के लिए प्रशिक्षण दे रहा है।

मुख्य आयत: क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह जो उद्धार लाता है, वह सब मनुष्यों पर प्रगट हुआ है।

12- यह हमें अधर्म और सांसारिकता के जनून को " ना " कहना सिखाता है, और इस वर्तमान युग में आत्म-नियंत्रित, ईमानदार और ईश्वरीय जीवन जीने के लिए रह दिखाता है,

13 -जैसे हम उस धन्य आशा की प्रतीक्षा करते हैं - अर्थात हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की,

14- जिसने हमें छुड़ाने के लिए खुद को हमारे लिए दे दिया सारी दुष्टता ताकि हम शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो उसकी अपनी हो, और भलाई करने को उत्सुक हो। ... परन्तु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की करूणा और प्रेम प्रगट हुआ,

5- तब उस ने हम को धर्म के कामों के कारण नहीं, परन्तु अपनी करूणा के कारण बचाया। उसने हमें पवित्र आत्मा के द्वारा नए जन्म के स्नान और नवीनीकरण के माध्यम से बचाया,

6- जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के माध्यम से हम पर उदारता से उंडेला,

7- ताकि उसके अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाने पर, हम अनन्त जीवन की आशा करते हुए उसके वारिस बन सकें।

8- यह बात विश्वास करने योग्य है। और मैं चाहता हूं कि तुम इन बातों पर जोर दो, ताकि जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे भलाई करने के लिए चौकस रहें। ये बातें सभी के लिए उत्तम और लाभदायक हैं।

2:11-14; 3:4-8

प्रमुख शब्द: "अच्छा" (11 बार); "अच्छे कार्य" (6 बार); "ध्वनि" (5 बार)

उद्देश्य:

1 तीमुथियुस	तीतुस	2 तीमुथियुस
अधिकतर उपदेशक	अधिक उपदेशक नहीं	अधिकतर उपदेशक
सुसमाचार की रक्षा करना 6:20	सुसमाचार का अभ्यास करना	सुसमाचार का प्रचार करना 4:20

विषय : एक पवित्र जीवन कैसे जीएं ।

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के बाद, पौलुस यरूशलेम गया जहाँ उस पर झूठा आरोप लगाया गया और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी सुरक्षा के लिए उसे कैसरिया ले जाया गया जहां उसे 2 साल तक नजरबंद रखा गया। पौलुस ने कैसर को अपील की और उसे रोम ले जाया गया। रास्ते में उसका जहाज डूब गया। आखिरकार उसे रिहा कर दिया गया क्योंकि यहूदी उसके खिलाफ कोई आरोप साबित नहीं कर सके थे । इसके बाद पौलुस इफिसुस चला गया और तीमुथियुस को वहाँ छोड़कर पूरे इलाके की कलीसियाओं की मदद करने लगा। पौलुस उत्तरी यूनान में कार्य करता रहा और तीमुथियुस को फिर लिखने लगा, वह उसे, उसके काम में उसे प्रोत्साहित करते हुए, कलीसिया के नियम अनुशासन और संगठन (1 तीमुथियुस) के बारे में समझाता है। इसके बाद पौलुस क्रेते गया और वहाँ तीतुस को उन कलीसियाओं की देखरेख करने के लिए छोड़ देता है। शीघ्र ही पौलुस क्रेते को छोड़कर कुरिन्थु चला गया। वहां से उसने तीतुस को प्रोत्साहित करने के लिए पत्र लिखा। आखिरकार वह फिर से इफिसुस में आ गया जहाँ उसे दूसरी बार गिरफ्तार किया गया और मसीही होने के अपराध के लिए रोम वापस ले जाया गया। वहाँ बन्दीगृह से उसने तीमुथियुस को फिर से लिखा (2 तीमुथियुस)।

पृष्ठभूमि 1 और 2 तीमुथियुस के बीच सथित तीतुस की पत्नी है जो 1 तीमुथियुस के समान है। तीतुस एक अन्यजाति/गैर यहूदी था जिसकी पौलुस ने, उद्धार के लिए, अगुआई की थी । अगुवों को यह दिखाने के लिए कि एक गैर यहूदी खतना किए बिना को कैसे बचाया जा सकता है, पौलुस उसे यरूशलेम परिषद में ले गया । तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत में तीतुस का फिर से उल्लेख होता है। पौलुस ने उसे नाजुक समस्याओं से निपटने के लिए कुरिन्थ भेजा (ठीक उसी तरह जैसे तीमुथियुस को इफिसुस भेजा था)। मुख्य रूप से, तीतुस ने क्रेते की कलीसियाओं के साथ मिलकर काम किया, ठीक वैसे ही जैसे तीमुथियुस ने इफिसुस की कलीसियाओं के साथ मिलकर काम किया था ।

I. अगुवों का आचरण (1:5-16) पौलुस तीतुस को याद दिलाते हुए आरंभ करता है कि कलीसिया के अगुवों को कैसे रहना और कार्य करना था। उपयाजकों और प्राचीनों के लिए योग्यताएं और आवश्यकताएं बताई गई थीं। पौलुस उन्हें झूठे शिक्षकों के और उनसे पैदा होने वाले खतरे के बारे में भी चेतावनी देता है। तीतुस क्रेते द्वीप पर हर जगह नहीं हो सकता था, इसलिए उसे वहां के अलग अलग घरेलु -कलीसीयाओं की देखरेख के लिए भरोसेमंद नेताओं की आवश्यकता थी। यह वही सेट-अप था जिसका उपयोग उन सभी स्थलों में किया जाता था जहाँ कहीं भी कलिसियएं होती थे।

II. आम लोगों का आचरण (2:1-10) पौलुस तीतुस को बताता है कि सभी विश्वासियों को कैसा जीवन जीना है। वृद्ध पुरुषों को आत्म-नियंत्रित होना चाहिए, महिलाओं को इज्जतदार और वफादार होना चाहिए, युवा पुरुषों को समझदार होना चाहिए। सभी को दूसरों के लिए ईश्वरीय उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। सेवकों को भी, ईश्वरीय, आज्ञाकारी जीवन जीना चाहिए।

सब बातों में उन्हें अनुग्रह से जीना चाहिए। उन्हें भक्तिहीन अभिलाषाओं और इच्छाओं से दूर रहें। उन्हें यह बात याद करते हुए जीना चाहिए कि यीशु उनके लिए किसी भी समय वापस आ सकता है और उन्हें हमेशा तैयार रहना चाहिए। पवित्रता, परमेश्वर के लोगों की विशेषता होनी चाहिए।

देश की सरकार के संबंध में उन्हें अच्छे नागरिक होने चाहिए। उन्हें सभी लोगों के लिए भलाई करने के लिए तैयार रहना चाहिए, वे जो कहते और करते हैं उसमें ईमानदार, सभी के लिए अनुग्रहकारी और क्षमाशील, और हर समय विचारशील और विनम्र होना चाहिए। इस से दूसरों को एक मसीही होने का नमूना दिखाई देगा। उन्हें आपस में कलह और विवादों को टालना चाहिए।

कोई भी जो इन सिद्धांतों का पालन नहीं करता है उसे अनुशासित किया जाना चाहिए ताकि वे पश्चात्ताप कर सकें या निकल दिए जा सकें। यह पाप की गंभीरता को तो दिखाएगा और कलीसिया को शुद्ध भी रखेगा। मसीही जीवन जीना अनिवार्य है, कोई वैकल्पिक नहीं। यह एक आवश्यकता है, सुझाव नहीं। आप कैसे हैं?

तीतुस की रूपरेखा



शुरू 1:1-4

I. नेताओं का आचरण (प्राचीनों के लिए आवश्यकताएँ) 1

क- परमेश्वर के, स्वयं के और दूसरों के संबंध के बारे में 1: 5-9

1. प्राचीनों के लिए कारण 1:5
2. प्राचीनों के लिए आवश्यकताएँ 1:6-9

ख- झूठे शिक्षकों के संबंध में 1:10-16

1. झूठे शिक्षकों का वर्णन 1:10-12
2. प्राचीनों का कर्तव्य 1:13-14
3. झूठे शिक्षकों द्वारा दलबदली 1:15-16

II. आम लोगों का आचरण (कलीसिया के लिए नियम) 2-3

क- उनकी अपनी उम्र और स्थिति के संबंध में 2:1-10

1. वृद्ध पुरुष 2:1-2

2. वृद्ध महिला 2:3-5
 3. जवान आदमी 2:6
 4. तीतुस 2:7-8
 5. सेवक 2:9-10
- ख- संसार के संबंध में 2:11-15
1. अनुग्रह से जीना, संसार के अनुसार नहीं 2:11-12
 2. स्वर्गारोहण के लिए जीवन, संसार के लिए नहीं 2:13
 3. मसीह के लिए जीवन, संसार के लिए नहीं 2:14-15
- ग- देश सरकार के संबंध में 3:1
- घ- सभ लोगों के संबंध में 3:1-7
- ङ- अधर्मी लोगों के संबंध में 3:8-11
1. अच्छे कामों को बनाए रखना 3:8
 2. मूर्खताई के झगड़े से दूर रहो 3:9
 3. अनुशासनहीन लोगों का अनुशासन 3:10-11
- समापन 3:12-14

1 तीमुथियुसः विश्वासयोग्य सेवा



शीर्षक : प्राप्तकर्ता के नाम पर

लेखक: पौलूस

लेखन की तिथि: 64 ईस्वी

लेखन का स्थान: रोम (दूसरी बार जेल में)

प्राप्तकर्ता: तीमुथियुस, एक युवा पादरी

मुख्य आयत: वचन का प्रचार करें; अनुकूल हालातों में और अनुकूल हालातों के बाहर भी प्रचार करनेके लिए तयार रहना; बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ डांटते और दुरुस्त कर और प्रोत्साहित कर। 3 -क्योंकि ऐसा समय आएगा, जब मनुष्य खरा उपदेश न सह सकेंगे। इसके बजाय, वे अपनी इच्छाओं के अनुरूप, वे अपने आस-पास बड़ी संख्या में शिक्षकों को इकट्ठा करेंगे, जो वही शिक्षा देंगे जो सुनने के लिए उनके कान सुनना चाहते हैं। 4- वे सच्चाई से आपने कान फेर लेंगे और काल्पनिक किस्सों की ओर मुड़ेंगे। 5- पर तू सब बातों में सचे रहना, दुःख उठाना , सुसमाचार प्रचार का काम करना , और अपनी सेवकाई के सब कामों को पूरा करना 4:1-5 ।

मुख्य शब्द: "अच्छा" (5 बार)

उद्देश्य: पौलूस उस युवक के लिए अधिक मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है जिसे वह पासबनी में प्रशिक्षण दे रहा है। वह उसे बताता है कि धर्मत्याग के समय में एक सच्चे सेवक के रूप में कैसे जीना है। वह तीमुथियुस को भी उसके पास जल्दी से आने के लिए कहता है, क्योंकि वह मार डाला जाने वाला था।

विषय : पौलूस के अंतिम शब्द ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करना है।

पौलूस 30 वर्षों से भी अधिक समय से भगवान की सेवा ईमानदारी से कर रहा है। उसकी पहली मिशनरी यात्रा को 20 साल हो चुके हैं। उसने बहुत कुछ सहा है, बहुत त्याग किया है, और अक्सर मृत्यु के नज़दीक रहा है। उसके प्रतिभाशाली, तेज दिमाग और मजबूत व्यक्तित्व ने शुरुआती कलीसिया को उसके कठिन विकासशील वर्षों में आगे बढ़ाया था जबकि झूठे शिक्षक और ईर्ष्यालु राजनीतिक नेता इसे नष्ट करने की पूरी कोशिश कर रहे थे। अब वह फिर से जेल में है। अपने पहले कारावास के 5 वर्षों में पौलूस उन कलितीयुसों को देखने के लिए यात्रा करने में सक्षम है जो उसने शुरू की हैं और साथ ही उन जगहों पर नई कलिसियाएं शुरू की हैं जहां वह कभी नहीं गया था। अब उसका अन्त निकट है और पौलूस यह

जानता है। परमेश्वर ने कलीसिया को मार्गदर्शन देने के लिए स्थानीय अगुवों की एक नई पीढ़ी को खड़ा किया है। पौलूस शारीरिक रूप से थका हुआ व्यक्ति है। वह एक व्यक्ति को एक अंतिम पत्र लिखता है (वफादार लूका के अलावा जो अंत तक उसके साथ था) जिसे वह किसी से भी ज्यादा प्यार करता है, विश्वास में उसका बेटा, तीमुथियुस। 2 तीमुथियुस में पौलूस के अंतिम शब्द दर्ज हैं, उसका अंतिम संचार ठीक उस समय जब वह मृत्यु का सामना कर रहा होता है। यदि किसी समाचार रिपोर्टर ने इस समय पौलूस का इंटरव्यू लिया होता तो वे उससे पूछता कि क्या उसे इस बारे में कोई संदेह है कि उसने अपना जीवन कैसे व्यतीत किया। "पौलूस ने खा होता, यह इसके लायक ही था?" "हाँ!" पौलूस पुष्टि करता, "और भी बहुत कुछ।" "आपके पास आपने

अनुयायियों के लिए अंतिम बिदाई के शब्द क्या हैं?" अगर रिपोर्टर पूछता। पौलूस ने उत्तर दिया होता "वफादार रहे।" वास्तव में, यही 2 तीमुथियुस का संदेश है। "वफादार रहे!"

पृष्ठभूमि - विश्वासियों के लिए उत्पीड़न बढ़ से बढ़तर होता जा रहा है। हजारों विश्वासी शहीद हो रहे हैं। उन्हें निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार के बिना ही रोम का दुश्मन माना जाता है। फिर जब नीरो ने रोम को जला दिया और इसका दोष मसीहीयों पर मढ़ दिया तो बात और बिगड़ गई। हर बात के लिए सब उन्हें ही दोष देने लगे। पतरस भी जेल में है, जल्द ही उल्टा सूली पर चढ़ाया जाने वाला है। पौलूस जग-जाहिर दुश्मन नंबर एक है। इफिसुस में रहते हुए उसके साथ विश्वासघात किया गया और उसे धोखा दिया गया, और इस प्रकार अब वह स्वयं को रोम की कैद में देखता है। वह घर में नजरबंद नहीं है, लेकिन मौत की सज़ा का पुरा होने की प्रतीक्षा में एक कालकोठरी में है। यह हालत सभी प्रकार के ढोंग को दूर कर देती है और एक व्यक्ति के दिल और मूल को बयाँ करती है। जब कोई व्यक्ति मौत का सामना करता है तो उसके सारे मुखौटे उतर जाते हैं। यही चीज 2 तीमुथियुस को एक ऐसा प्रकाशमान करने वाला पत्र बना देती है।

I. परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य (1:3-18) - पौलूस तीमुथियुस को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने और परमेश्वर की महिमा के लिए शिक्षा के अपने आत्मिक वरदान का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए आरम्भ करता है। सारे अत्याचारों के चलते, ऐसा लगता है कि तीमुथियुस अवसाद से लड़ रहा था और पौलूस उसे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने और सुसमाचार के लिए लज्जित न होने के लिए प्रोत्साहित करने और प्रेरित करने की पूरी कोशिश करता है। पौलूस नहीं चाहता कि तीमुथियुस अपने कष्टों के कारण बुरा महसूस करे। वह कहता है कि सुसमाचार के लिए दुःख सहना एक वास्तविक सौभाग्य है। कई लोग दबाव में आकर दल-बदली कर रहे हैं, लेकिन पौलूस तीमुथियुस से कहता है कि वह सुनिश्चित करे कि वह यीशु के प्रति वफादार रहे।

II. आपने आप के प्रति विश्वासयोग्य (2:1-26) - फिर पौलूस तीमुथियुस के लिए उदाहरण के रूप में विश्वासयोग्यता के सात दृष्टांतों का उपयोग करता है: एक शिक्षक, सैनिक, खिलाड़ी, किसान, कार्यकर्ता, पात्र और दास। यह जानते हुए कि तीमुथियुस के लिए हालात वास्तव में और भी बढ़तर हो जाएँगे, पौलूस यह सुनिश्चित करना चाहता है कि वह सच्चा बना रहे।

III. दूसरों के प्रति विश्वासयोग्य (3:1 - 4:15) - परिस्थितियाँ कितनी भी खराब क्यों न हों, पौलूस तीमुथियुस को परमेश्वर और उसकी सेवकाई के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए कहता है। वह उसे विश्वास दिलाता है कि वह ईश्वर की इच्छा में है, और उसे जीने के लिए कहता है कि जब वह मर जाएगा तो उसे इससे खुशी मिलेगी। पौलूस का संदेश है की सब चीजों को अनंतकाल के दृष्टिकोण से देखे। पौलूस उन

लोगों की प्रशंसा करते करते जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं, पत्र को समाप्त करता है। यदि संभव हुआ तो मरने से पहले वह तीमुथियुस को एक बार और देखना चाहता है। हम नहीं जानते कि वह समय पर वहां पहुंचा या नहीं। कुछ का कहना है कि जब उसने पौलूस को मिलने की कोशिश की तो उसे भी गिरफ्तार कर लिया गया था। यदि ऐसा था भी तो वह रिहा होने के बाद इफिसुस में कुछ समय के लिए यूहन्ना के साथ तब तक सेवा करता रहा जब तक कि वह अपनी विश्वासयोग्यता के लिए शहीद नहीं हो गया।

पौलूस आज हमें भी वही बात कहता है - विश्वासयोग्य बने रहो। यही, यीशु का भी अपने अनुयायियों से, अनुरोध था। आप कैसे हैं। क्या आप वफादार हैं? क्या आप परीक्षा पास कर रहे हैं? सुनिश्चित करें!

2 तीमुथियुस की रूपरेखा



शुरू 1:1-2

1. परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य (सुसमाचार के प्रति दृढ़ रहें) 1

क- विश्वासयोग्य रहने की जिम्मेदारी 1:3-18

1. परमेश्वर के उपहार का प्रयोग करें 1:3-6
2. लज्जित न हों 1:8
3. सुसमाचार के कष्टों को साझा करें 1:8
4. सत्य को थामे रहिए 1:13
5. अपनी सेवकाई बनाये रखें 1:14

ख- विश्वासयोग्य रहने के कारण 1:3-18

1. परमेश्वर के आत्मा का स्वरूप 1:7
2. उद्धार का उद्देश्य 1:9
3. यीशु की उपलब्धियाँ 1:10

4. सेवकाई का उद्देश्य 1:11-12
5. बहुतों द्वारा दलबदली 1:15-18

II. आपने आप के प्रति विश्वासयोग्य (सुसमाचार तो पारित करें) 2

वफादारी की तस्वीरें

1. शिक्षक 2:2
2. सैनिक 2:3-4
3. एथलीट 2:5
4. किसान 2:6
5. कार्यकर्ता 2:15-19
6. पात्र 2:20-22
7. गुलाम 2:23-26

III. सेवक होने के प्रति विश्वासयोग्य (सुसमाचार की रक्षा करें) 3-4

क- विश्वासयोग्यता के लिए चुनौतियाँ 3:1-9

ख- विश्वासयोग्यता से शान्ति 3:10-4:15

1. अत्याचार के बावजूद शांति 3:10-16
2. परमेश्वर की इच्छा में होने का आश्वासन 4:1-5
3. जीवन में एक अच्छी समाप्ति 4:6-7
4. जीवन के बाद एक अच्छा भविष्य 4:8
5. इस जीवन में अच्छे दोस्त 4:9-18

समापन 4:19-22

24ज प्रारंभिक कलीसिया

पौलूस के जीवन के दौरान, जो शिष्य यीशु के साथ थे, उन्होंने भी यीशु के लिए सेवा करने में यात्रा की और प्रचार किया। उनमें से बहुतों ने किताबें लिखीं। अधिकतर तो शहीद हुए।

पतरस और पौलूस दोनों रोम में सम्राट नीरो के अधीन उत्पीड़न के दौरान लगभग 66 ईस्वी में शहीद हो गए थे। पौलूस का सिर काट दिया गया था। पतरस को उसके अनुरोध पर उल्टा सलीब चढ़ाया गया था, क्योंकि उसने महसूस किया कि वह अपने प्रभु के समान मरने के योग्य नहीं था।

इन्द्रिआस "आदमखोरों की भूमि" में गया, जो अब सोवियत संघ है। वहां के मसीही दावा करते हैं कि वह सबसे पहले उनकी भूमि पर सुसमाचार लाया था। उसने एशिया माइनर, वर्तमान तुर्की और यूनान में भी प्रचार किया, ऐसा कहा जाता है कि उसे यहीं पर सलीब चढ़ाया गया था।

"संदेह करने वाला" थोमा शायद सीरिया के पूर्व क्षेत्र में सबसे अधिक सक्रिय था। इतिहास के अनुसार उसने पूर्व में भारत तक में उपदेश दिया, जहां प्राचीन मार्थोमा मसीही उसे अपने संस्थापक के रूप में मानते हैं। उनका कहना/दावा है कि चार सैनिकों के भाले से छेदे जाने पर पर उसकी वहीं मौत हो गई थी।

फिलिप के पास संभवतः उत्तरी अफ्रीका में कार्थेज में और फिर एशिया माइनर में एक शक्तिशाली सेवकाई थी, जहाँ उसकी सेवकाई से एक रोमी राज्यपाल की पत्नी का मन परिवर्तन हो गया था। इसकी जवाबी कार्रवाई में, गवर्नर ने फिलिप को गिरफ्तार कर लिया और क्रूरता से उसे मौत के घाट उतार दिया था।

मत्ती चुंगी लेनेवाला और सुसमाचार का लेखक, फारस और इथियोपिया में सेवकाई करता था। कुछ सबसे पुरानी रिपोर्टों का कहना है कि वह शहीद नहीं हुआ था, जबकि अन्य का कहना है कि इथियोपिया में उसकी हत्या कर दी गई थी।

बार्थोलोमई ने इतिहास के अनुसार व्यापक मिशनरी यात्राएं की थीं: जिनमें थोमा के साथ भारत में, फिर अर्मेनिया वापस, और इथियोपिया और दक्षिणी अरब भी शामिल है। सुसमाचार के लिए वह एक शहीद के रूप में कैसे मरा, इसके विभिन्न विवरण हैं।

अल्फ़ियस का पुत्र याकूब, यह नए नियम में संदर्भित कम से कम तीन याकूब नाम के व्यक्तियों में से एक है। इसमें कुछ भ्रम है कि यह कौन सा याकूब है, लेकिन इस याकूब को सीरिया में सेवकाई करने के लिए माना जाता है। यहूदी इतिहासकार जोसीफस बताता है कि उसे पत्थर मार कर मार डाला गया था।

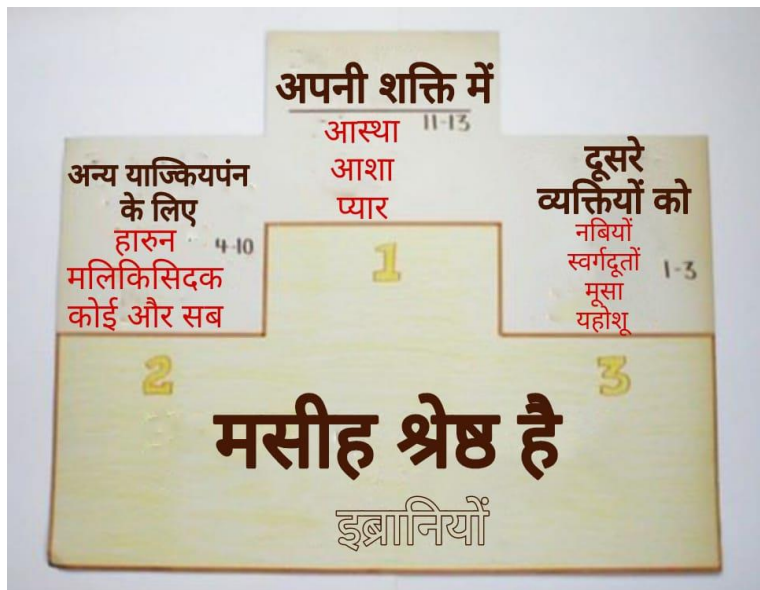
शमौन जोशीला, कहानी इस प्रकार से बताई जाती है, की उसने फारस में सेवा की और सूर्य देवता को बलिदान देने से इनकार करने के बाद मारा गया।

मत्तियास प्रेरित था जिसे यहूदा इस्करयोति के स्थान पर चुना गया था। इतिहास के अनुसार उसे इन्द्रिआस के साथ सीरिया में भेजा गया था और जलाकर मार दिया था।

यहुन्ना मंडली में से एकमात्र है जिसके बारे में आमतौर पर सोचा जाता है कि उसकी वृद्धावस्था से स्वाभाविक मौत हुई है। वह इफिसुस क्षेत्र में कलीसिया का अगुवा था और कहा जाता है कि वह अपने घर में यीशु की माँ मरियम की देखभाल करता था। 90 ईस्वी में डोमिनियन के उत्पीड़न के दौरान,

उसे पटमोस द्वीप में निर्वासित कर दिया गया था। वहाँ उसे नए नियम की अंतिम पुस्तक - प्रकाशितवाक्य लिखने का श्रेय दिया जाता है। एक प्रारंभिक लातिनी इतिहास का कहना है कि रोम में उबलते हुए तेल में डाले जाने के बाद वह सुरक्षित बच निकला था।

**इब्रानियों:
मसीह श्रेष्ठ है**



शीर्षक: प्राप्तकर्ता हिब्रू ईसाई हैं

लेखक: अज्ञात (पौलूस, बरनबास, तीमुथियुस, प्रिसिला, आदि?)

लेखन की तिथि: 65 ईस्वी

लेखन का स्थान: अज्ञात

प्राप्तकर्ता: यहूदी विश्वासी

प्रमुख आयत: क्योंकि उसने किसी जगह सातवें दिन के बारे में इन शब्दों में कहा है: "और सातवें दिन परमेश्वर ने अपने सारे काम से विश्राम किया।" 4:4

प्रमुख शब्द: "शाश्वत" (13 बार); "आकाश" (13); "बेहतर" (12); "पूर्णता" (11); "भागीदार" (7); "विश्वास" (31)

उद्देश्य: यहूदी विश्वासियों को प्रोत्साहित करना कि वे यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहें और उत्पीड़न में कमजोर ना पड़े कि उद्धार के लिए फिर यहूदी धर्म में वापस जाएं।

विषय: मसीह सभी चीज़ों से श्रेष्ठ है (पुराने नियम, यहूदी धर्म, स्वर्गदूतों सहित)

पहली शताब्दी में मसीही धर्म में परिवर्तित होना निश्चित रूप से "आपके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक" हो सकता है। आप की अस्वीकृति, आप का उत्पीड़न और यहां तक कि आप के लिए क्रूर मौत भी इसका नतीजा थी। यदि आप एक यहूदी विश्वासी थे तो यह विशेष रूप से कठिन था क्योंकि आपका परिवार और मित्र आप के विरोध में खड़े होंगे। यहूदी धर्म में वापस लौटने के लिए आपकी पूरी समर्थन प्रणाली

आप पर जबरदस्त दबाव डालेगी। आप यहूदी धर्म को छोड़ने से अपनी नौकरी, अपना परिवार, अपनी बचत, अपनी विरासत और अपनी आशा खो जाती है। इस अतिरिक्त दबाव के कारण, बहुत से यहूदी विश्वासी जिन्होंने यीशु में अपना विश्वास मसीहा के रूप में रखा था, बाद में पीछे हट गए और यहूदी धर्म में वापस चले गए। यह पुस्तक उन्हें यह दिखाने के लिए लिखी गई थी कि यीशु ही एकमात्र मार्ग है और वह यहूदी धर्म में हर चीज़ से श्रेष्ठ है। यह निसंदेह उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक पे एक टिप्पणी है जिसमें दिखाया गया है कि कैसे यीशु ने उसमें लिखे सभी कानूनों और प्रथाओं को पूरा किया और उनका स्थान ले लिया। पुराना नियम केवल एक छाया है, यीशु इसकी वास्तविकता है।

I. मसीह के व्यक्ति की श्रेष्ठता (1:1 - 4:16) राजशाही रूप से निर्मित किये गए शुरुआती लेख में लेखक अपने पाठकों को यीशु की सर्वोच्च महानता से परिचित कराता है। किसी पत्र लिखने के आम तरीके से हट कर लेखक सीधे अपने विषय पर आ जाता है। यीशु पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं (1:1-4) से बड़ा है क्योंकि वह सभी चीज़ों का निर्माता है और पालनहार वाला है, जो परमेश्वर की व्यक्त छवि और स्वर्ग में पिता के पास विराजमान है। लेखक आगे दिखाता है कि यीशु स्वर्गदूतों से भी बड़ा है (1:5-2:18)। वह श्रेष्ठ है क्योंकि वह ईश्वर है और क्योंकि उसने ने ही मुक्ति प्रदान की है। यीशु एक मनुष्य के रूप में मानवीय पाप के लिए मरा और इस प्रकार उसने सबसे शक्तिशाली स्वर्गदूत, लूसिफर को पराजित किया। स्वर्गदूतों से कमतर होकर, मसीह ने मनुष्यों को स्वर्गदूतों से आत्मिक रूप से श्रेष्ठता में ऊपर उठाया।

यीशु मूसा (3:1-6) से भी श्रेष्ठ है, जो यहूदियों के लिए पुराने नियम का सबसे महान व्यक्ति है। मूसा परमेश्वर के भवन में सेवक था परन्तु यीशु उस भवन का निर्माता था। इसके अतिरिक्त, यीशु यहोशू से भी बड़ा है (3:7 - 4:16)। हो सकता है कि यहोशू यहूदियों को वाद के देश में लाया हो, लेकिन वह भी उन्हें स्थायी विजय या शांति की ओर नहीं ला सका।

II. मसीह के याजकपद की श्रेष्ठता (4:14 - 9:39) सबसे पहले लेखक दिखाता है कि यीशु हारून के याजकपद से श्रेष्ठ है (4:14 - 6:20)। यहूदी महायाजक वर्ष में केवल एक दिन परमेश्वर की उपस्थिति में होता था, यीशु निरन्तर वहाँ होता है। उसकी पहुँच असीमित है। यहूदी याजकों की तरह लड़ने के लिए उसका अपना कोई पाप नहीं है। वे सब अपने लिए और दूसरों के लिए बलिदान चढ़ाते हैं, यीशु ने आपने आप को, सभी के लिए एक पाप रहित बलिदान के रूप में, पेश किया और इससे यहूदी याजकों द्वारा किसी भी बलिदान की आवश्यकता ही समाप्त हो गई।

यीशु मलिकिसिदक के याजकपद से भी श्रेष्ठ है (7:1-8:13)। वह एक याजक और राजा के रूप में था, यहूदी याजक कभी भी राजे नहीं होते थे। यहूदी याजक 30 वर्ष की आयु से लेकर उनकी मृत्यु तक केवल याजक थे, मलिकिसिदक का याजकपद शाश्वत था, जिसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं था। इस प्रकार यीशु सभी याजकों से श्रेष्ठ है (9:1 - 10:39)। उसकी कुरबानी एक बार की भेंट है जो हमेशा के लिए सभी पापों और दोषों को पूरी तरह से हटा देती है। उसका काम खत्म हो गया है। वह परमेश्वर की उपस्थिति में बैठा है। यहूदी याजकों की तुलना उससे बिल्कुल नहीं कर सकते।

III. मसीह की शक्ति की श्रेष्ठता (11:1 - 13:19) यीशु अविश्वास पर जय पाता है (11:1-40)। विश्वास रखने वालों के उदाहरण अध्याय 11 में सूचीबद्ध हैं। यह उनका विश्वास था जो उनके लिए परमेश्वर की स्वीकृति लाया था, न कि उनका पुराने नियम की प्रणाली को बनाए रखना। सभी को उनके विश्वास के

लिए पुरस्कृत किया गया था, और इसलिए लेखक चाहता है कि उसके पाठकों को भी उनके विश्वास के लिए पुरस्कृत किया जाए।

यीशु के पीछे चलने से निराशा पर विजय प्राप्त होती है (12:1-29)। वह उन्हें चेतावनी देता है की इसोऊ की तरह मा बने, और संकट के समय पर शारीरिक राहत के एक पल के लिए अपने भविष्य के आध्यात्मिक आशीर्वाद को बेचने वाले ना बन जाओ । जब वे बाद में अपनी गलती को देखेंगे तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

अंत में वह दिखाता है कि कैसे यीशु प्रेमहीनता पर विजय प्राप्त करता है (13:1-19)। वह कहता है कि यीशु अपने अनुयायियों को एक दूसरे के साथ प्रेम से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

पूरी किताब में बीच-बीच में उन्हें वापस न जाने के लिए 5 चेतावनियां दी गई हैं। कुछ लोग इनका उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि उद्धार खो सकता है, लेकिन यह वह संदर्भ नहीं है जिसमें वे लिखी गई हैं। वे यहूदियों को लिखे गए हैं जिन्होंने महसूस किया है कि यीशु ही मसीहा हैं, लेकिन दबाव में आकर उन्होंने यहूदी धर्म में वापस जाने का फैसला कर लिया है। इससे पहले कि वे यीशु के बारे में जानते, जब वे अपनी अज्ञानता में थे, तब तक उनका यहूदी धर्म में होना बिलकुल ठीक था और परमेश्वर ने उन्हें उस बात के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जो वे नहीं जानते थे। अब जब वे जानते हैं, हालांकि, वे उस पर कार्य करने के लिए जिम्मेदार हैं और वे अब अपनी अज्ञानता में वापस नहीं जा सकते। यीशू सर्वुच है। क्या आपके जीवन में ऐसा कुछ है जो उससे ऊपर हो सकता है ?

अंत में वह दिखाता है कि कैसे यीशु प्रेमहीनता पर विजय प्राप्त करता है (13:1-19)। वह कहता है कि यीशु अपने अनुयायियों को एक दूसरे के साथ प्रेम से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

इब्रानियों की रूपरेखा

I. मसीह के व्यक्तित्व की श्रेष्ठता 1:1-4:13

क- भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ 1:1-4

ख- स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ 1:5-2:18

1. उसके ईश्वरीय व्यक्तित्व में 1:5-14

2. उसकी संसार बचाने की घोषणा में 2:1-4

चेतावनी 1: सत्य से मत भटको

3. उसके मुक्ति देने के प्रयोजन में 2:5-18

ग- मूसा से श्रेष्ठ 3:1-6

घ- यहोशू से श्रेष्ठ 3:7-4:13

चेतावनी 2: अपने हृदय को कठोर मत बनाइए

1. अविश्वास की तबाही 3:7-19

2. अविश्वास के परिणाम 4:1-10

3. अविश्वास का इलाज 4:11-13

II. मसीह के याजकपद की श्रेष्ठता 4:14-10:39

क- हारून के याजकपद से श्रेष्ठ 4:14-6:20

चेतावनी 3: मसीह से पीछे न हटें

ख- मलिकिसिदक के याजकपद से श्रेष्ठ 7:1-8:13

1. मलिकिसिदक का चित्र 7:1-3

2. मलिकिसिदक की प्रधानता 7:4-8:13

ग- सभ याजक पदों से श्रेष्ठ 9:1-10:39

1. सांसारिक याजकपद 9:1-10

2. मसीह का याजकपद 9:11-14

3. मसीह की भविष्यद्वाणियों की पूर्णता 9:15-10:39

चेतावनी 4: मसीह का तिरस्कार न करें

III. मसीह की शक्ति की श्रेष्ठता 11:1-13:19

क- विश्वासयोग्यता से श्रेष्ठ 11:1-40

1. विश्वास का विवरण 11:1

2. विश्वास का उदाहरण 11:2-40

ख- निराशा से श्रेष्ठ 12:1-29

1. विवादित बातें 12:1-2



2. जीवन के अनुशासन 12:3-22

3. जीवन की दिशा 12:12-17

4. जीवन के परिवाह 12:18-24

5. जीवन का कर्तव्य 12:25-29

चेतावनी 5: मसीह को अस्वीकार न करें

ग- प्रेमहीनता से श्रेष्ठ 13:1-19

1. सामाजिक कर्तव्यों के संबंध में 13:1-5

2. आध्यात्मिक कर्तव्यों के संबंध में 13:6-19

समापन आशीर्वाद 13:20-25

यहून्ना :

सहभाग्यता



शीर्षक : लेखक के नाम पर

लेखक: यहुन्ना

लेखन की तिथि: लगभग 90 ई.

लेखन का स्थान: इफिसुस

प्राप्तकर्ता: हर जगह के विश्वासी

मुख्य आयत : जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है उसके पास जीवन भी नहीं है। मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है, कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।

5:12-13

प्रमुख शब्द: "प्यार" (45 बार); "पता है " (35); "दुनिया/संसार " (23); "जीवन" (15); "रोशनी/प्रकाश " (6)

उद्देश्य:

सुसमाचार	1 यहुन्ना
विश्वास जगाने के लिए लिखा गया (20:31)	उस विश्वास के बारे में निश्चितता स्थापित करने के लिए लिखा गया (5:13)
ऐतिहासिक रूप से अच्छी खबर	अनुभवात्मक रूप से अच्छी खबर

विषय: परमेश्वर के साथ और अन्य लोगों के साथ संगति कैसे करें, और यह कि तुम जानते हो कि तुम्हारे पास उद्धार का आश्वासन है। पतरस, पौलूस, तिमोथीस और हजारों अन्य लोगों का कत्ल करने वाले उत्पीड़न के 25 साल पूरे हो गए हैं। यह 90 ईस्वी का समय है। यहून्ना एकमात्र शिष्य है जो शहीद नहीं हुआ। वह अभी भी इफिसुस में रहता है जहाँ उसने मरियम की इतने वर्षों तक देखभाल करता था, जैसा कि यीशु ने उससे करने को कहा था। वह किसी एक विशेष स्थान के लिए नहीं, पर सामान्य रूप से विश्वासियों यह को पत्र लिखता है। उसके पास कुछ ऐसा था जो वह सबसे कहना चाहता था, इसलिए उसने एक पत्र लिखा जिसकी नकल की जाएगी और हर जगह फैल जाएगी।

सुसमाचार (मत्ती, मरकुस, लूका और यहून्ना) को चश्मदीनों के मर जाने के बाद भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक दस्तावेज के रूप में रखे जाने के लिए लिखा गया है। उन्हें परिचालित किया गया था ताकि सभ लोग सच्चाई को जान सकें और झूठे शिक्षकों द्वारा गुमराह न हो जाएँ। यहून्ना ने अपना सुसमाचार दूसरों के द्वारा लिखे गए सुसमाचार के 2 या इससे अधिक वर्षों के बाद लिखा था। उसने अपने पाठकों को यह दिखाने के लिए लिखा कि कैसे मसीह में अनंत जीवन पाया जा सकता है (20:31)। अब वह उन्हें यह बताने के लिए फिर से लिख रहा है कि वे कैसे जान सकते हैं कि उनके पास अनंत जीवन है और इसका आनंद अब लें। वह उन्हें बताता है कि यह मसीह में विश्वास, आज्ञाकारिता और प्रेम लाने से मिलता है। झूठे शिक्षकों ने इन 3 पर हमला किया था इसलिए यहून्ना इनका बचाव करता है और उन्हें समझाता है। यहून्ना कहता है, कि परमेश्वर के साथ संगति है और फिर मनुष्य के साथ संगति ही कुंजी है। झूठे शिक्षक आपनी ज्ञान-गथा लगाने वाले लोग थे जिनके जैसों की विरुद्ध पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्नी में लिखा था। वह ज्ञान को सबसे बड़ा गुण बता कर, बाइबल को नकारते थे, कहते थे कि हर भौतिक वस्तु बुरी है, लेकिन हम आध्यात्मिक हैं, इसलिए हमारा शरीर जितना चाहे पाप कर सकता है और इससे हमारी अधिआत्मिक देह प्रभावित नहीं होगी जो वैसे भी एक दिन पुनर्जन्म ले लेगी। इनमें से अधिकांश झूठे विचार 'नए युग' के विश्वास के रूप में फिर से उभर आए हैं।

I. सहभाग्यता की शर्तें (1:5 - 2:2) यहून्ना सहभाग्यता की शर्तों को समझाते हुए शुरू करता है। जब हमारे जीवन में पाप होता है तो हम परमेश्वर के निकट नहीं हो सकते (भले ही गूढ़ज्ञानवादी ऐसा कहते हैं)। पाप रिश्तों को तोड़ देता है - मनुष्य से मनुष्य के और साथ ही परमेश्वर से मनुष्य के रिश्ते को। पूर्ण और निष्पाप होना इसका समाधान नहीं है, क्योंकि ऐसा कभी हो नहीं सकता है। समाधान है पाप को कबूल करना (स्वीकार करना, पाप के बारे में भगवान से सहमत होना) है और उसकी क्षमा को स्वीकार करना।

II. सहभाग्यता में आचरण (2:3-27) यहून्ना, प्रेम का शिष्य जिसे यीशु बहुत प्रेम करता था, कहता है कि यदि वे एक दूसरे से प्रेम नहीं करते तो वे परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते हैं। अगर आप किसी से सच्चा प्यार करते हैं, तो आप उनके बच्चों से भी प्यार करेंगे। यदि आप उनके बच्चों के प्रति दयालु नहीं हैं, तो आप वास्तव में उन्हें प्यार नहीं करते हैं। परमेश्वर और उसके बच्चों के साथ भी ऐसा ही है। यहून्ना जिस प्रेम के बारे में बात कर रहा है वह अगापे प्रेम है - बिना शर्त प्रेम, प्रेम के बावजूद प्रेम। यह वो प्रेम है जो आत्मा का फल है, वह प्रेम जो केवल परमेश्वर से आता है। यह फीलियो लव नहीं है - सशर्त प्यार, किसी को उसके काम के लिए 'पसंद' करना जो वे करते हैं (या नहीं करते हैं)। यहून्ना उन्हें यह भी बताता है कि वे परमेश्वर से और दुनिया से बराबर बराबर प्रेम नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वह बिना किसी सामान्य आधार के दुनिया के विपरीत है। यह है एक या दूसरा - दोनों एक साथ नहीं। यदि आप ईश्वर से प्रेम करते हैं तो आप विश्व व्यवस्था के विरुद्ध जाएंगे। यदि आप विश्व व्यवस्था से प्रेम करते हैं तो आप ईश्वर के

विरुद्ध जाएंगे। यदि आप कहते हैं कि आप ईश्वर से प्रेम करते हैं लेकिन दुनिया के मूल्यों और प्राथमिकताओं के अनुसार जीते हैं, तो आप वास्तव में ईश्वर से प्रेम नहीं करते हैं। आप जिस तरह से रहते हैं, प्यार करने वाला परमेश्वर आप के रहन-सहन के तरीके में दीखता है। हम परमेश्वर और संसार दोनों के साथ सहभाग्यता नहीं कर सकते हैं; यह है एक या दूसरा। जब यहून्ना कहता है कि हम दुनिया से प्यार नहीं कर सकते हैं, तो वह प्रकृति के बारे में बात नहीं करता है, लेकिन वह आत्म-केंद्रित लक्ष्यों और उद्देश्यों, मूल्यों और सिद्धांतों की शैतान-प्रेरित व्यवस्था के बारे में बात करता है।

III. सहभाग्यता की विशेषताएँ (2:28 - 3:24) परमेश्वर के साथ सहभाग्यता की शर्त हमारे जीवन में अंगीकार न किया हुआ पाप नहीं है। सहभाग्यता के आचरण से मतलब है प्रेम में उसकी आज्ञा का पालन करना। उस सहभाग्यता की विशेषता है एक पवित्र, धर्मी जीवन जीना। ऐसा तब ही होगा जब हम प्रेम से उसकी आज्ञा मानेंगे। हमारा जीवन निरन्तर आदतन पाप से चिन्हित नहीं होगा। हम दुनिया के घमंडी, स्वार्थी, भोगविलास यानि के संसारिक प्रथम तरीकों को खारिज कर देंगे और संसार हमें खारिज कर देगा। हमारे पास परमेश्वर और साथी विश्वासियों के लिए एक सच्चा प्रेम होगा जो हमारे जीने और कार्य करने के तरीके में आपने आप ही प्रकट हो जायेगा।

IV. सहभाग्यता की सावधानियाँ (4:1-21) यहून्ना अपने पाठकों को झूठे, झूठ बोलने वाले, धोखा देने वाले शिक्षकों से सावधान रहने की चेतावनी देता है। इन लोगों के साथ उनकी कोई संगति नहीं होनी चाहिए है।

V. सहभाग्यता के परिणाम (5:1-21) यहून्ना अंत में उन्हें याद दिलाता है कि वे एक दूसरे के लिए प्रेम रखें और यीशु पर विश्वास करें कि वह उन्हें संसार पर विजय दिलाएगा। वह उन्हें याद दिलाता है कि यीशु ईश्वर और मनुष्य दोनों एक है जो, कुछ ऐसा है जिसे झूठे शिक्षक दृढ़ता से नकारते हैं (जैसा कि वे आज भी करते हैं)। वह उन्हें अनन्त जीवन का आश्वासन भी देता है, कि उनका उद्धार सुरक्षित और निश्चित है।

1 यहून्ना में आज हमारे लिए कई व्यावहारिक सत्य हैं। यह एक किताब है जो पढ़ने और लागू करने के लिए है। यदि आपने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है, तो सुनिश्चित करें कि आपके जीवन में कोई पाप नहीं है। सुनिश्चित करें कि आप प्रेम में उसकी आज्ञा मानते हैं, और अपने साथी विश्वासियों से प्रेम करके परमेश्वर के प्रति उस प्रेम को दिखाते हैं।

उद्देश्य 1:1-4

I. सहभाग्यता के लिए शर्त (सहभाग्यता) 1:5-2:2

क- मानक के अनुरूप 1:5-7

ख- पाप का अंगीकार 1:8-2:2

II. सहभाग्यता में आचरण (आज्ञाकारिता) 2:3-27

क- हमारे आचरण का चरित्र - नकल 2:3-11

ख- हमारे आचरण की आज्ञा - दूरी 2:12-17

ग- हमारे आचरण के लिए सिधांत - प्रतिज्ञान 2:18-27

III. सहभाग्यता की विशेषताएँ (धार्मिकता) 2:28-3:28

क- हमारी संभावना के संबंध में: पवित्रता 2:28-3:3

ख- हमारी स्थिति के संबंध में: धार्मिकता 3:4-18

ग- हमारी प्रार्थनाओं के संबंध में: उत्तर 3:19-28

IV. सहभाग्यता की सावधानीया (पवित्र आत्मा) 4:1-21

क- झूठ, झूठी आत्माओं के बारे में 4:1-6

ख- एक सच्चे, प्रेमी आत्मा के संबंध में 4:7-21

V. सहभाग्यता के परिणाम (विश्वास) 5:1-21

क- भाइयों के लिए प्यार 5:1-3

ख- संसार पर विजय 5:4-5

ग- मसीह की साख का सत्यापन 5:6-12

घ. अनन्त जीवन का आश्वासन 5:13

ङ- प्रार्थना में मार्गदर्शन 5:14-17

च-आदतन पाप से मुक्ति 5:18-21

2 यहुन्ना :

सच में चलना/बने रहना



शीर्षक: लेखक के नाम पर

लेखक: यहुन्ना

लेखन की तारीख: लगभग 90 ईस्वी

लेखन का स्थान: इफिसुस

प्राप्तकर्ता: मसीही महिला और उसके बच्चे

मुख्य आयत : जो कोई भी आगे दौड़ता है और मसीह के शिक्षण में बना नहीं रखता है, उसके पास ईश्वर नहीं है; जो भी शिक्षण में बना रहता है, उसके पास पिता और पुत्र दोनों हैं। यदि कोई आपके पास आता है और यह शिक्षण नहीं लाता है, तो उसे अपने घर में ना काबूल करें और ना उसको सवीकार करें। 9-10

मुख्य शब्द: "सत्य" (5 बार); "चाल " (3 बार)

उद्देश्य: 1. एक मसीही महिला को उसके बच्चों के बारे में एक अच्छी रिपोर्ट देना ।

2. झूठे शिक्षकों के साथ समझौता करने के संबंध में उसे चेतावनी देना और निर्देश देना। उसे बताया जाता है कि उसको धोखा खाने से कैसे बचना है (v। 9) और धोखा देने वालों से कैसे निपटना है (v। 10-11)।

विषय: धोखेबाजों और झूठे शिक्षकों को सवीकार करने के खिलाफ चेतावनी।

2 यहुन्ना 1 यहुन्ना के समान है, केवल आकार में यह पुस्तक छोटी है। यह 1 यहुन्ना के ठीक बाद लिखा गई थी। यहुन्ना इसे एक मसीही महिला को संबोधित करता है, शायद एक कलीसिया को । उत्पीड़न के उन दिनों में वह उन्हें खतरे से बचा रहा था। मगर वह तुरंत इस विषय पर पहुंच जाता है: कि परमेश्वर के प्रति वफादार रहें और झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों से बचें।

I. बने रहना (4-6) वह उन्हें सच में बने रहने और इसमें बढ़ने के लिए कहता है। परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की उनकी गवाही यहून्ना तक पहुँच गई है और वह इससे प्रोत्साहित होता है। यहून्ना उनके प्यार के लिए भी उनकी सराहना करता है, जो आज्ञाकारिता में उनका मकसद भी है। अगर हम परमेश्वर से प्यार करते हैं तो हम उसकी आज्ञा भी मानेंगे। इसके बिना प्यार कमजोर और अनुशासनहीन है। इसके बिना आज्ञाकारिता ठंडी और यांत्रिक है। दोनों एक साथ बने रहने में यह सुंदरता का वास्तविक संतुलन है। क्या आपके पास प्यार और आज्ञाकारिता है ? आप इन दोनों में से किसमें सबसे मजबूत हैं?

II. सावधानी (7-11) यहून्ना उन्हें ऐसे किसी से जो प्यार में परमेश्वर का पालन नहीं कर रहा है, बचने के लिए चेतावनी देता है। वह विशेष रूप से किसी ऐसे जन के खिलाफ चेतावनी देता है जो मसीह को 100% परमेश्वर और 100% मनुष्य के रूप में नहीं देखता है। वह ऐसा ईश्वर-मनुष्य है, जो हमारे पापों के लिए मरने और फिर से उठने के लिए आया था।

इस बात पर ध्यान दें कि आखिरकार नए नियम की सब किताबें झूठी शिक्षाओं के खिलाफ चेतावनी देती हैं? परमेश्वर इतने सारे झूठे शिक्षकों और शिक्षाओं की अनुमति क्यों देता है - उस समय और इस समय भी ? इस से एक बात तो पक्की है , इसने शिष्यों को सच और स्पष्ट रखने के लिए सच्चाई लिखने के लिए प्रेरित किया (इसलिए हमारे पास आज नया नियम है)। और दूसरा कारण यह है इससे पढ़े लिखे विद्वान वास्तविक सच के एक मात्र अधिकारी होने की हैसियत से पीछे हट जाते हैं। इसने लोगों को एक विकल्प दिया, और जो लोग यीशु को ईश्वर-आदमी के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते थे और उनके लिए जीवन जीने के लिए बहुत सारे विकल्प थे। परमेश्वर हमेशा मनुष्य को चुनाव करने की स्वतंत्रता देता है। वह कभी किसी को कोई काम करने के लिए मजबूर नहीं करता है। एक और कारण यह है कि परमेश्वर झूठे शिक्षकों को अपने विश्वासों की त्रुटि खोज करने के लिए और पश्चात्ताप करने के लिए समय देता है। वह ना तो उनकी स्वतंत्र इच्छा को लागू करने के लिए मजबूर करता है, बल्कि उन्हें दया और क्षमा के लिए आपने पास आने का समय देता है।

यहून्ना अपने पाठकों को चेतावनी देते हुए कहता है कि यदि वे यीशु में की सच्चाई से झूठी शिक्षाओं की ओर मुड़ते हैं तो वे अपना उद्धार नहीं खोते हैं, लेकिन इनाम जरूर खो देंगे। वे उन पुरस्कारों को नहीं खो सकते जो वे पहले से ही उनके लिए रखे हुए हैं, लेकिन भी और पाने में विफल हो सकते हैं और इस तरह उन्हें पुरुस्कृत जीवन की पूर्णता नहीं मिलती।

III. रूको (9-11) यहून्ना वही बात कहता है जो उसने यहून्ना सुसमाचार के 15 अध्याय में वर्षों पहले कही थी -मसीह में रहो/बने रहो। संदेश नहीं बदला है। पालन करना और बने रहना एक ही बात है। मसीह का पालन करने से मतलब है उन लोगों के खिलाफ एक दृढ़ प्रतिक्रिया, जो मसीह का पालन नहीं करते हैं। यदि कोई ऐसा नहीं करता है , तो यहून्ना का कहना है, कि हम किसी भी तरह से उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कुछ भी नहीं करते हैं, जिसमें उनका हमारे घर (9-11) में सवीकार किये जाना भी शामिल है।

उन दिनों में शिक्षक और प्रचारक पैदल यात्रा करते थे और आवास व आतिथ्य भाव के लिए स्थानीय लोगों पर भरोसा करते थे। उनके रहने के लिए कोई होटल या सराय नहीं होते थे। इन लोगों को आतिथ्य भाव प्रदान करना विश्वासियों का कर्तव्य था (3 यहून्ना इस बात के बारे में बहुत कुछ कहता है)। हालाँकि, अगर कोई व्यक्ति ईश्वर और मनुष्य के रूप में यीशु को मानने के लिए विश्वास और कार्यों में पूरी तरह से प्रतिबद्ध नहीं है, तो यहून्ना के अनुसार मुक्ति पाने का एकमात्र तरीका यह है कि उनके साथ कुछ भी

लेना देना ना रखो। यहां तक कि उनके साथ बहस करने के लिए भी उन्हें आमंत्रित न करें। क्यों? यई उनको उनके गलत तरीके से प्रोत्साहित करने के लिए काफी है। अन्य लोग जो आपको उन्हें किसी भी प्रकार से आमंत्रित करते हुए देखेंगे और वे इसे उनके लिए आपकी स्वीकृति मान सकते हैं। यह किसी के लिए भी अपने समय का बुरा क्षण हो सकता है। इसके अलावा, बजाये इसके की अप्प उनको सीधा करके बाहर का रास्ता दिखाए, वह आप के मान में संदेह के बीज बोने का अवसर पा सकते हैं। यह अक्सर हमारा गर्व है जो कहता है कि हम बहुत मजबूत हैं और हम उन्हें गलत दिखाने के लिए पर्याप्त होशियार हैं। आज हम धार्मिक मतभेदों के प्रति काफी सहनशील हैं। जब तक कोई हमें 'ईमानदार' दिखाई देता है, तब तक हम उसके साथ मिले रहते हैं। "हम कौन होते है कि किसी का न्याय करें ?" हमें लगता है कि इस मामले में पौलूस, पतरस, और यीशु स्वयं हमारे साथ बहुत कठोर होंगे। वे इसे पाप से समझौता और पाप कहते होंगे!

हमेशा स्पष्ट रूप से इस बात का पता करें कि कोई व्यक्ति यीशु के इश्वार्तव और उसके खून भहाने के द्वारा मुक्ति के सिधांत पर कितना विश्वास करते हैं । यदि वे इसके चारों ओर केवल नाच करते हैं या अस्पष्ट हैं, तो सावधान हो जाओ ! उन्हें उनकी शर्तों को भी परिभाषित करने के लिए कहें । रोमन कैथोलिक और मॉर्मन समान रूप से 'अनुग्रह के द्वारा विश्वास के माध्यम से उद्धार' के बारे में बात करते हैं, लेकिन हम अपनी शर्तों को अलग तरह से परिभाषित करते हैं। सावधान रहें!!!

2 यहुन्ना की रूपरेखा



अभिवादन 1-3

I. बने रहना 4-6

क- सच में 4

ख- प्यार में 5

II. सावधानी 7-8

क- झूठे शिक्षकों के बारे में 7

ख- झूठे शिक्षण के बारे में 8

III. रूको 9-11

क- उनमें कोई दिलचस्पी 9

ख- उनके साथ कोई भी भागीदारी 10-11 12-13

समापन

3 यहुन्ना :
अतिथि- सत्कार



शीर्षक: लेखक के नाम पर

लेखक: यहून्ना

लेखन की तिथि: लगभग 90 ई.

लेखन का स्थान: इफिसुस

प्राप्तकर्ता: गयुस, यहून्ना का एक विश्वासयोग्य चेला

मुख्य आयत : इसलिए हमें ऐसे पुरुषों का आतिथि सत्कार करना चाहिए ताकि हम सच्चाई के लिए मिलकर काम कर सकें। 8

मुख्या शब्द: "सत्य: (7 बार)

उद्देश्य: यहून्ना ने परमेश्वर के कुछ विश्वासयोग्य सेवकों को उसकी कलीसिया में सेवा करने भेजा था । दियुत्रिफेस नाम के एक अगुवे ने उनकी मेहमाननवाजी करने से इनकार कर दिया और उसने धमकी दे डाली अगर कोई उनकी मेहमाननवाजी करेगा तो उसे कलीसिया से निकाल दिया जाएगा। यहून्ना इसके खिलाफ चेतावनी देता है और कहता है कि वह इस मामले को आकर ठीक करेगा। पर इस समय, गयुस को एक मेहमान सेवक देमेत्रियुस को आतिथी सत्कार देखना जरूरी है।

विषय: सच्चे विश्वासियों को आतिथी सत्कार दिखाने का महत्व।

1 यहून्ना	2 यहून्ना	3 यहून्ना

सहभाग्यता	सत्य पर चलना	अतिथि सत्कार
यीशू जीवन है	यीशू सत्य है	यीशू मार्ग है
परमेश्वर के साथ सहभाग्यता (महत्वपूर्ण है)	विरोधियों के साथ सहभाग्यता (वर्जित है)	अन्य विस्वसियों के साथ सहभाग्यता (जरूरी है)
विश्वास	पाखंड	अतिथि सत्कार
यह बाहर गए (2:19)	यह अंदर आना चाहते हैं (10)	यह उनको बाहर निकलना चाहते हैं जिन्हें अंदर होना चाहिए (10)

क्या आपके घर में अतिथि कक्ष है? यदि आप के घर में है, तो आप ने अपने घर को एक 'अस्पताल' में बदल दिया है। लतीनी भाषा में 'अस्पताल' को 'अतिथि कक्ष' कहा जाता है। हर बार जब आप किसी का अतिथि सत्कार करते हैं, तो तकनीकी रूप से यह ऐसा व्यक्ति होता है जो 'अस्पताल में भर्ती' हो चुका होता है। अब यह शब्द चिकित्सा केंद्रों के लिए उपयोग किया जाता है, लेकिन वास्तव में यह कुछ ऐसा होना चाहिए जो हम सभी को करना चाहिए। अक्सर यह आज एक खोई हुई कला है। हम लोगों को होटल या मोटल में भेज देते हैं और हम उन्हें रेस्तरां में ले जाते हैं।

यहूदियों में, किसी भी यात्री का स्वागत करना, खिलाना, ठहरना और उसकी रक्षा करना जो आपके दरवाजे पर आकर रुक जाता है, यह एक पवित्र कर्तव्य माना जाता था कि । अजनबियों को सम्मानित अतिथि के रूप में माना जाता था। जो पुरुष इस प्रकार एक साथ भोजन करते थे वे एक दूसरे से दोस्ती के सबसे मजबूत बंधन से बंध जाते थे, जो उनके बाद में आने वालों में भी बना रहता था। पहुनाई करना एक धार्मिक कर्तव्य था, जिसकी आज्ञा मूसा की व्यवस्था ने भी दी थी (लैव्यव्यवस्था 19:33-34)। कोई भी अपने घर को केवल अपना अकेला का घर नहीं मानना होता था। घर को हमेशा इसलिए खुला रहना होता था क्योंकि वहां से जाते हुए किसी भी मुसाफर को रहने के लिए जगह की आवश्यकता हो सकती थी।

निकला हुआ डियोट्रेफिस का कलीसिया पर बोल बाला था लेकिन वह एक अतिथि सत्कार करने वाला नहीं था। वह एक ईर्ष्यालु, हर चीज को नियंत्रित करने वाला व्यक्ति था जिसने अपनी कलीसिया में हर ऐसे व्यक्ति को बहिष्कृत करने की धमकी दे दी थी जो कोई यात्रा करने वाले प्रचारकों या शिक्षकों के लिए अतिथि सत्कार करने वाला होगा। देमेत्रियुस के पास 3 यूहन्ना का यह पत्र था। वह एक यात्री उपदेशक था जिसे रहने के लिए स्थान की आवश्यकता होती थी। गयुस एशिया माइनर में एक विश्वासी था और जिसे देमेत्रियुस की पहुनाई करने के लिए निवेदन किया गया था, चाहे दियुत्रिफेस कुछ भी कहे या कुछ भी करे। इस प्रकार 3 यूहन्ना नए नियम की एकमात्र ऐसी पुस्तक है जो निजी और व्यक्तिगत थी। यह यूहन्ना की ओर से गयुस को लिखा गया एक पत्र था, जिसका उद्देश्य यह नहीं था कि कोई और इसको पड़े, इसके लिए बाइबल का हिस्सा बनना तो दूर की बात है। प्रेम और सच्चाई के विषय फिर से हावी हो जाते हैं, जैसा कि यूहन्ना की अन्य पत्रियों, 1 और 2 यूहन्ना में होते थे। 3 यहुन्ना बहुत छोटा सा है, पत्र की तुलना में यह पोस्ट कार्ड की तरह अधिक दिखता है।

1. समृद्धि कंधों पर पहुनाई करने की जिमेदारी डालती है (गायस) 2-8 यहुन्ना, जिसने शायद खुद गयुस के अतिथि सत्कार का आनंद लिया था, ने उसे देमेत्रियुस के लिए समान विचार दिखाने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह उसकी सराहना करता है और उसके आध्यात्मिक विकास में उसे प्रोत्साहित करता है। वह कहता है कि पहुनाई में दिखाया गया यह सारा प्रेम परमेश्वर के लिए आदर और महिमा

दिखाता है। इसके साथ ही, जो किसी दूसरे की परमेश्वर का काम करने में मदद करता है वह उस इनाम में हिस्सेदार हो जाता है जो उसे मिलता है। यह सच है अगर हम अपना समय, प्रतिभा या खजाना परमेश्वर के कार्य में किसी की मदद करने के लिए देते हैं। इसमें मिशनरी और पादरी तो शामिल हैं, लेकिन वे भी शामिल हैं जिनकी हम मदद करते हैं।

II. घमंड पहनाई करने से कतराता है (दीयोट्रिफ़ेस) 9-10 ऐसा लगता है कि यहून्ना ने उसके नियंत्रण और आत्म-केंद्रितता के बारे में पहले से ही दीयोट्रेप्स से संपर्क किया था, लेकिन उसमें कोई बदलाव नहीं हुआ। नेतृत्व का क्षेत्र किसी के लिए भी गर्व और नियंत्रण भावना में होने एक प्रलोभन/परीक्षण हो सकता है। यूहन्ना कहता है कि वह व्यक्तिगत रूप से आकर दियुत्रिफेस की समस्या से निपटेगा, लेकिन अब वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि गयुस की देखभाल की हो जाये।

III. स्तुति अतिथि सत्कार को दर्शाती है (डिमेट्रियस) 11-12 व्यक्ति का आचरण ही स्पष्ट रूप से परमेश्वर के साथ उसके संबंध को दर्शाता है। डिमेट्रियस एक ईश्वरीय व्यक्ति है जिसकी यहून्ना अत्यधिक सिफारश कर सकता है। वह उसे विश्वास दिलाता है कि गयुस एक झूठा शिक्षक नहीं है - शायद यही वह बहाना है जो यात्रा करने वाले पादरियों की पहनाई ना करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यहून्ना कहता है कि ऐसा नहीं है।

तो बाइबल में यह छोटा निजी पत्र रोमियों और प्रकाशितवाक्य जैसी किताबों के साथ क्यों है? क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि हम जानें कि पहनाई करना अब भी बहुत ज़रूरी है। क्या आप यह करते हैं?

3 यहून्ना की रूपरेखा



शुरू 1

I. समृद्धि कंधों पर पहनाई करने की जिमेदारी डालती है 2-8

क- समृद्धि घोषित 2-4

ख-समृद्धि प्रदर्शित 5-8

II. घमंड पहनाई करने से कतराता है 9-10

क- घमंड प्रकट किया गया 9

ख- घमंड फटकारा गया 10

III. स्तुति अतिथि सत्कार दर्शाती है 11-12

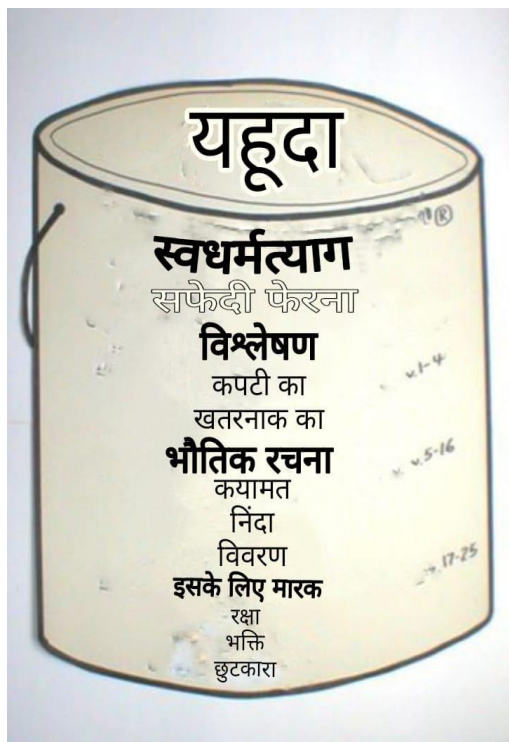
क- स्तुति की कमी 11

ख- स्तुति स्थायी 12

समापन 13-14

यहूदा :

धर्मत्याग (अधर्म)



शीर्षक: लेखक के नाम पर

लेखक: यहूदा, यीशु का आधा- भाई

लेखन की तिथि: 70 ईस्वी

लेखन का स्थान: अज्ञात

प्राप्तकर्ता: हर जगह के विश्वासी

मुख्य आयत : प्रिय मित्रों, हालाँकि मैं आपको उस उद्धार के बारे में लिखने के लिए बहुत उत्सुक था जिसे हम साझा करते हैं, मुझे लगा कि मुझे आपको उस, विश्वास के लिए संघर्ष करने के लिए लिखना और आग्रह करना जरूरी था, जो संतों को सदा के लिए एक बार सौंपा गया था। 3

मुख्य शब्द: "अधर्मी" (6 बार)

उद्देश्य: यहूदा तो उनके "सामान्य उद्धार" के बारे में लिखना चाहता था, लेकिन पवित्र आत्मा ने उसे उन झूठे शिक्षकों के बारे में लिखने के लिए प्रेरित किया जो विश्वासियों में आ रहे थे। उनका स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है, और इस तरह से उनकी कयामत भी है। यहूदा सच्चे विश्वासियों को दिलासा देता है और प्रोत्साहित करता है।

विषय: धर्मत्यागियों और धर्मत्याग के बारे में सब कुछ।

2 पतरस	यहूदा
झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी	झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी
झूठे शिक्षक आएंगे	झूठे शिक्षक आ चुके हैं
झूठे शिक्षकों की काली तस्वीर चित्रित	झूठे शिक्षकों की गहरी काली तस्वीर चित्रित

बाहर से आने वाले हमले स्पष्ट हैं, स्पष्ट रूप से देखे गए प्रयास जो हमें हराने और हमें यीशू के प्रति हमारी विश्वासयोग्य को तोड़ने के प्रयास हैं। भीतर से होने वाले हमले साफ़ साफ़ नज़र आने वाले नहीं होते हैं। वे अधिक चतुर और धोखेबाज होते हैं। आप अनुमान लगायें कि कौन कौन से अधिक प्रभावी हैं? अंदाज़ा लगाइए कि शैतान किन-किन का ज़्यादा इस्तेमाल करता है? उत्पीड़न कलीसिया को मजबूत बनाता है और कलीसिया गुणवत्ता और मात्रा में बढ़ती है। भीतरी झूठा उपदेश कलीसिया को थोड़ा-थोड़ा करके कमजोर करता रहता है, जब तक कि कलीसिया इतनी कमजोर और अप्रभावी नहीं हो जाती।

आज के दिन में भी हम, शैतान की इस असरदार चाल से, अछूते नहीं हैं। इसमें उद्धार के साथ किसी भी रूप में किसी भी प्रकार के कार्य को जोड़ना शामिल है। यह कानूनवाद पर या डर पर आधारित कुछ भी हो सकता है। दूसरी भयानक शिक्षा यह है, कि ईश्वर प्रेम है इसलिए सभी स्वर्ग जाएंगे, किसी की भी निंदा नहीं की जाएगी। फिर ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि जब तक कि आप कुछ खास कार्य नहीं करते हैं आप अपना उद्धार खो सकते हैं, या यह कि शैतान का आज हम पर कोई प्रभाव नहीं है, या फिर यह कि मनुष्य उद्धार के बाद पाप नहीं करता है। अन्य झूठी शिक्षाएँ यह जो कुछ आध्यात्मिक उपहारों वाले लोगों को दूसरों की तुलना में अधिक 'आध्यात्मिक' बना देती हैं, या फिर यह कि जो चंगाई और समृद्धि का 'दावा' करता है उसके पास पर्याप्त 'विश्वास' हैं जो इस दावे का एक आधार है। यह सूची लम्बी होते चली जाती है।

अपनी छोटी पुस्तक (आयत 1-2) के शुरू में, यहूदा पाठकों को आश्चस्त करता है कि उनकी आध्यात्मिक स्थिति हमेशा के लिए सुरक्षित है और दैनिक जीवन के लिए परमेश्वर का असीमित प्रावधान उनके लिए उपलब्ध है। फिर वह धर्मत्याग (विश्वास से मुड़ जाने के संबंध में) की बात करता है।

I. धर्मत्याग का विश्लेषण (3-4) यहूदा अपने पाठकों को सच्चे विश्वास के लिए संघर्ष करने (शाब्दिक रूप से "पीड़ित होने") और हर प्रकार की जालसाजी और धोखाधड़ी से बचने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह कहता है कि वे पिछले दरवाजे से घुस जाते हैं, वे अपने ऊपर झूठी शिक्षाओं का ठप्पा लगाकर परेड नहीं करते हैं। वे भोजन में थोड़ा आर्सेनिक या गैस टैंक में थोड़ी सी चिंगारी की तरह घुस जाते हैं।

II. धर्मत्याग की शारीरिक रचना (5-16) यहूदा पुराने नियम की कई घटनाओं का उल्लेख करता है। वह इस्राएलियों के बारे में बात करता है (आयत 5 - गिनती 13-14); गिराए गए स्वर्गदूतों के बारे में (आयत 6 - 12। पतरस 2:4); सदोम और अमोरा के बारे में (आयत 7 - उत्पत्ति 18-19); कैन के बारे में (आयत 11 - उत्पत्ति 4); बिलाम के बारे में (आयत 11 - गिनती 22-24); कोरह के बारे में (आयत 11 - गिनती 16); हनूक (आयत 14 - उत्पत्ति 5:18-24)। वह इनमें से कई गुजरे हुए धर्मत्यागियों का उदाहरणों के रूप में उपयोग करता है जिनका परमेश्वर ने न्याय किया था। काश यह एक चेतावनी हो! यहूदा कहता है कि वे आत्मिक रूप से अंधे हैं परन्तु आत्मिक बातों के बारे में ऐसे बात करते हैं जैसे कि उनके पास हर बात का एकमात्र और अंतिम उत्तर है।

यहूदा धर्मत्याग को चित्रित करने के लिए प्रकृति से भी नमूनों का उपयोग करता है। वह कहता है कि यह पानी की सतह के नीचे छिपी हुई चट्टानों की तरह है जिसे जहाज़ देखता नहीं है पर जो उसे डुबो देती है। वह कहता है, कि यह उन बादलों की तरह है जो आशाजनक दिखते हैं लेकिन जिनमें पास कोई पानी नहीं होता है। साथ ही यह पतझड़ के पेड़ों की तरह है जिनके पत्ते तो होते हैं लेकिन फल नहीं होते। वह उनकी तुलना समुन्द्र की प्रचंड लहरों से करता है जो बहुत गतिशील तो होती हैं लेकिन हासिल कुछ भी नहीं करती हैं। अंत में वह कहता है कि वे भटकते हुए सितारों की तरह हैं: जो संक्षिप्त होते हैं, लक्ष्यहीन होते हैं और फिर अंधकार से हो जाते हैं। इनके विपरीत यीशु को देखें जो हमारे विश्वास के जहाज़ को नष्ट करने वाली छिपी हुई चट्टानों के बजाय हमारे उद्धार की चट्टान है। यीशु हमेशा के लिए ताज़ा करने के लिए बादलों के साथ आता है, वह अनन्त फल पैदा करने वाला जीवन का वृक्ष है, वह शांत जल के पास ले जाता है, न कि फालतू शोर मचाने वाले समुद्रों के पास। वह दिन की शुरुआत करने वाला चमकीला और सुभह का तारा है।

III. धर्मत्याग को मात देने वाला तर्क (17-23) यहूदा चाहता है कि वे धर्मत्याग के बारे में चेतावनियों को याद रखें जो कि अंतिम दिनों का चिन्ह है, और इस से सावधान रहें। वह उन्हें सच्चाई पर नज़र रखने और आध्यात्मिक रूप से बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। झूठी शिक्षा को मत देने वाला यह सबसे अच्छा तर्क है। वह कहता है कि उन्हें उन लोगों को बचाने की कोशिश करनी चाहिए है जो झूठी शिक्षाओं में गिर जाते हैं, पर बहुत सावधानी से ताकि उन्हें खुद चोट न लगे। यह एक हैमबर्गर या पैटी को पकड़ने जैसा है जो आग के अंगारों में गिरती है। आप इसे जल्दी, धीरे और सावधानी से पकड़ते हैं ताकि आप आग से जले नहीं।

यहूदा की रूपरेखा



शुरू 1-2

I. धर्मत्याग की घोषणा (धर्मत्याग की चेतावनी) 3-4

क- उनका छल 3

ख- उनका खतरा 4

II. धर्मत्याग की शारीरिक रचना (धर्मत्याग का विवरण) 5-16

क- उनकी कयामत 5-7

ख- उनकी निंदा 8-10

ग- उनका विवरण 11-16

III. धर्मत्याग को मत देने वाला तत (विश्वासियों के कर्तव्य) 17-23

क-आपका बचाव पक्ष 17-19

ख- आपकी भक्ति 20-21

ग- आपका छुटकारा 22-23 24-25

समापन

प्रकाशत्वाक्य :
भविष्यवाणी



शीर्षक: पुस्तक का प्रारंभ, "यीशु मसीह का प्रकाशन "

लेखक: यहून्ना

लेखन की तिथि: 96 ई.

लेखन का स्थान: पतमोस द्वीप

प्राप्तकर्ता: एशिया माइनर में सथित 7 कलिसियाएं और उनमें सभी विश्वासी

प्रमुख आयत: इसलिए लिख, कि जो तुमने देखा है, जो वर्तमान में है और जो इसके बाद में होगा। 1:19

प्रमुख शब्द: "मैंने देखा" (49 बार); "स्वर्गदूत " (70); "सात" (59); "मेमना" (29)

उद्देश्य:

सुसमाचार	प्रेरितों के काम और पत्रियाँ	प्रकाशत्वक्य
वर्तमान काल	पूर्व काल	भविष्य काल
मसीह एक भविष्यवक्ता के रूप में	मसीह एक याजक के रूप में	मसीह एक राजा के रूप में
इजराइल को स्थापित करने	कलीसिया को स्थापित करने	ब्रह्मांड को स्थापित करने
मसीही धर्म की नींव	मसीही धर्म की मूल बातें	मसीही धर्म की पूर्ति
परिचय देने को	लागु करने को	प्राप्त करने को

विषय : मानव जाति के लिए भविष्य के क्लेश और उस से संबंधित घटनाओं को प्रकट करना

उत्पत्ति	प्रकाशत्वक्य
स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण	नया आकाश और पृथ्वी

स्वर्ग का खो जाना	परमेश्वर का स्वर्ग वापस मिल जाता है
दुख, पीड़ा का प्रवेश करती है	दुख, दर्द हमेशा के लिए खत्म हो जाते हैं
पहला आदम और उसकी पत्नी	अंतिम आदम और उसकी दुल्हन (कलीसिया)

I. मसीह का व्यक्ति (अतीत) 1:3-20 यूहन्ना पतमोस दीप पर कैद में है। वह बूढ़ा हो चूका है, यीशू के सलीब चढ़ाए जाने के 60 साल बीत जाने के बाद । एक स्वर्गदूत उसे इन बातों को प्रकट करने आता है।

II. मसीह का कब्जा (वर्तमान) 2 - 3 परमेश्वर सबसे पहले एशिया माइनर की सात कलीसियाओं के लिए संदेशों को प्रकट करता है जिनसे यूहन्ना परिचित था। उन्हें उस क्रम में सूचीबद्ध किया गया है जिस क्रम में वे पत्र प्राप्त करेंगे क्योंकि उसने एशिया माइनर में डाक मार्ग का रूट था। पत्र -वाहक, पत्र को एक शहर में पढ़ेगा और फिर अगले शहर में चला जाएगा। इफिसुस (यूहन्ना का गृह नगर), स्मरना, पिरगमम, थुआतीरा, सरदीस, फिलेदिलफिया और लौदीकिया थे। केवल स्मिर्ना और फिलाडेल्फिया को कोई निंदा/ फटकार नहीं मिली। लौदीकिया को छोड़कर सभी को प्रभु से कुछ प्रशंसा मिली थी।

III. मसीह की योजना (भविष्य) 4 - 22 प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अधिकांश भाग आने वाले 7-वर्षों के क्लेश के बारे में है। पहले क्लेश को स्वर्ग के दृष्टिकोण से देखा जाता है, (निर्णय) अध्याय 4-11 । फिर इसे शुरू से अंत तक पृथ्वी के दृष्टिकोण देखा जाता है, (युद्ध) अध्याय 12-19।

सबसे पहले, 7 मुहरों के न्याय को पृथ्वी पर छोड़ा जाता है। ये मसीही -विरोधी द्वारा शांति लाने के साथ शुरू होती हैं, लेकिन जल्द ही युद्ध, परिवार, दुनिया की आबादी के 1/4 के लिए मृत्यु और प्रकृति में जबरदस्त परिवर्तन में बदल जाती हैं। इस दौरान कई विश्वासी शहीद हो जाते हैं। परमेश्वर 12 गोत्रों में से (144,000) प्रत्येक में से 12,000 को विशेष गवाहों और प्रचारकों के रूप में अलग करता है। वे क्लेश की शुरुआत में उद्धार के लिए आते हैं (क्योंकि सभी सच्चे विश्वासीयों का क्लेश से पहले स्वर्गारोहण हो जाता है)।

इसके बाद 7 तुरही न्याय की हैं जो पृथ्वी की वनस्पति, समुन्द्र और ताजे पानी और सूर्य, चंद्रमा और सितारों को प्रभावित करती हैं। टिड्डी-जैसे राक्षस उन सभी को सताते हैं जो उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर नहीं मुड़े होते हैं। इस क्लेश के बीच में परमेश्वर 2 विशेष गवाहों को खड़ा करता है जो चमत्कार करेंगे और जिन्हें मारा नहीं जा सकता। मनुष्य के लिए परमेश्वर के पास हमेशा उसके गवाह होते हैं।

शैतान के पास परमेश्वर का विरोध करने और दुनिया पर राज करने के लिए उसकी नकली त्रिमूर्ति होगी, जिसको वह हमेशा से रखना चाहता है । शैतान परमेश्वर की नकल करता है, जो इस सब के पीछे की शक्ति है। मसीह का विरोधी मसीह की नकल करेगा। वह शांति लाएगा और खुद की आराधना कराने के लिए स्थापित करेगा, फिर शैतान की शक्ति से अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की नकल करेगा और उन सभी विश्वासियों को मार डालेगा जिनको वह संभवतः मार सकता है। झूठा भविष्यद्वक्ता, मसीह विरोधी का सहायक, अधर्मी कलीसिया का नेतृत्व करता है जब तक कि वह नष्ट न हो जाए। वह ऐसे किसी भी व्यक्ति को मार डालेगा जो मसीही-विरोधी को परमेश्वर के रूप में पहचान देने के लिए 666 को नहीं पहनता है।

सात कटोरों का न्याय यीशु को अस्वीकार करने के लिए मनुष्य पर परमेश्वर के न्याय को पूरा करता है। यह अर-मगिदोन के युद्ध के साथ समाप्त होता है, जब यीशु स्वर्ग की सेनाओं (हमें) के साथ वापस आता है और अपने अधिकार के प्रति कमजोर मनुष्य के सभी प्रतिरोधों को पूरी तरह से और तुरंत नष्ट कर देता है। इस क्लेश के बाद एक हजार वर्ष की अवधि आती है जिसे सहस्राब्दी कहा जाता है (प्रकाशितवाक्य 20)। यीशु भविष्यवाणी के अनुसार दाऊद के सिंहासन पर से पृथ्वी पर शासन करेगा और सभी अदन वाटिका की स्थितियों में लौट आएंगे। शैतान द्वारा एक अंतिम विद्रोह होगा जिस के बाद, उसे उसके राक्षसों के साथ और जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार नहीं किया है हमेशा के लिए नरक में भेज दिया जाता है, परमेश्वर एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी बनाएगा (प्रकाशितवाक्य 21-22)। वहाँ हम उसके साथ अनंत काल तक निवास करेंगे। क्या आप तैयार हैं? मुझे ऐसा होने की आशा है !

प्रकाशितवाक्य की रूपरेखा



शुरू 1:1-3

I. मसीह का व्यक्ति (अतीत) 1

क- दर्शन की परिस्थितियाँ 1:4-11

ख- विजन की सामग्री 1:12-16

ग- दर्शन के परिणाम 1:17-20

II. मसीह का कब्ज़ा (वर्तमान) 2-3

क- इफिसुस को पत्र 2:1-7

ख- स्मरना को पत्र 2:8-11

ग- पिरगमम को पत्र 2:12-17

घ- थुआतीरा को पत्र 2:18-19

ङ-सरदीस को पत्र 3:1-6

च- फिलाडेल्फिया को पत्र 3:7-13

छ- लौदीकिया को पत्र 3:14-22

III. मसीह की योजना (भविष्य) 4-22

क- क्लेश 4-19

1. न्याय के रूप में (स्वर्ग) 4-11

क- स्वर्ग में दृश्य 4-5

ख- न्याय की मुहरें, 144,000 6-7

ग- न्याय की तुरिहें, दो गवाह 8-11

2. युद्ध के रूप में (पृथ्वी) 12-19

क- शामिल व्यक्ति 12-14

ख- न्याय के कटोरे 15-16

ग- बाबेल का गिराया जाना 17-18

घ- आर-मेगदोन

ख- सहस्राब्दी 20

1. मसीह शासन करता है 20:1-10

2. मसीह राज करता है 20:11-15

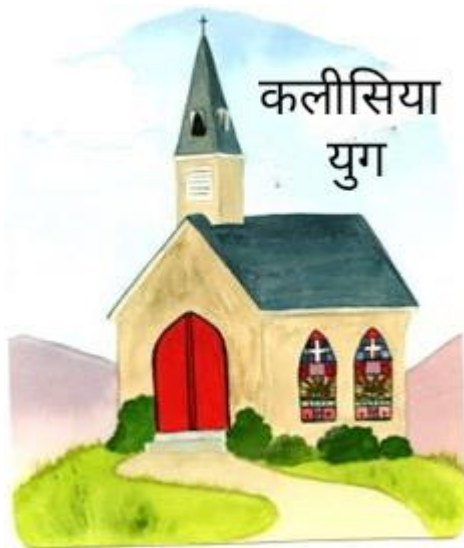
ख- अनंत काल 21-22

1. नया आकाश और पृथ्वी 21:1

2. नया यरूशलेम 21:2-22:5

अंतिम संदेश 22:6-21

बाइबिल अवलोकन 25 कलीसिया युग



मुख्य घटनाएँ: इसे नष्ट करने के सभी प्रयासों के बावजूद कलीसिया का विश्वव्यापी प्रसार ।

मुख्य लोग: नाम लेने के लिए बहुत हैं

बाइबिल की पुस्तकें: कोई नहीं

बाइबिल वचन: मत्ती 16:18-19 मैं तुझ से कहता हूँ, कि तू पतरस है, और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

समय: पुनरुत्थान से लेकर आज तक

इस समय की विश्व घटनाएँ: पिछले 2,000 वर्षों का सारा इतिहास

भौगोलिक स्थान: दुनिया भर में

बाइबिल अवलोकन में हमारी वर्तमान समय अवधि को कलीसिया युग कहा जाता है। यह यीशु के पुनरुत्थान, व्यवस्था के अंत और पित्तुकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने के साथ के साथ शुरू हुआ था (प्रेरितों के काम 2)। यह स्वर्गरोहण के साथ समाप्त होगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। यह समय दानियेल भविष्यवक्ता के 69वें और 70वें सप्ताह के बीच का समय है (दानियेल 9:24-27; रोमियों 11)। यह वह समय है जब यीशु "अपनी कलीसिया" का निर्माण कर रहा है जैसा कि उसने वादा किया था (मत्ती 16:18) और यह सिलसला लगभग 2,000 वर्षों से चल रहा है।

विश्वव्यापी कलीसिया - यूनानी शब्द 'एक्लिसिया' है, जिसका अर्थ है "एक बुलाया हुआ समूह।" इसका उपयोग स्थानीय सभा या लोगों के एकठ के लिए किया जाता था। नए नियम में यह शब्द उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने पुनरुत्थान से लेकर ह स्वर्गरोहण के समय तक की अवधि के दौरान यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया होगा। जैसा कि इस तरह से उपयोग किया जाता है, कलीसिया में वे सभी शामिल हैं जो यीशु पर आपना उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं (यूहन्ना 1:12; प्रेरितों के काम 9:31)। इसे मसीह की देह भी कहा जाता है जिसका वह खुद सिर है (इफिसियों 1:22-23; 1 कुरिन्थियों 12:13-14)। एक अन्य शब्द है "मसीह की दुल्हन" (इफिसियों 5:25-26; प्रकाशतवाक्य 21:9; यूहन्ना 3:29) क्योंकि हमारे लिए उसका प्रेम और अनंत काल तक के लिए उसकी प्रतिबद्धता है। यह शब्द स्वर्ग में यीशु के साथ हमारे अनंत प्रेम संबंध की बात करते हैं। इस समय के दौरान सभी विश्वासी, चाहे उनकी उम्र, लिंग, राष्ट्रीयता, संस्कृति या पृष्ठभूमि कुछ भी क्यों न हों, यीशु में एक हैं और

एक दूसरे के बराबर हैं (गलतियों 3:28; प्रेरितों के काम 15:14-18)। प्रवेश केवल यीशु में उद्धार के द्वारा है, स्वर्ग का कोई दूसरा मार्ग नहीं है (यूहन्ना 14:6 प्रेरितों के काम 4:12)।

इस समयावधि को अनुग्रह का युग भी कहा जाता है क्योंकि यीशु व्यवस्था को पूरा करने के लिए (मत्ती 5:17) और इसे अनुग्रह के साथ बदलने आया था (यूहन्ना 1:17; इफिसियों 2:8-10)। हम कानून के अधीन नहीं बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं। परमेश्वर इस समय के दौरान प्रत्येक विश्वासी में अपने पवित्र आत्मा के साथ स्थाई रूप से वास करता है (यूहन्ना 14:16) जबकि पुराने नियम में देखा गया है कि पवित्र आत्मा कुछ विशेष लोगों पर आवश्यकता के अनुसार थोड़े समय के लिए ही आता था (1 शमूएल 16:14)।

यहूदी जो कलीसिया काल के दौरान उद्धार के लिए यीशु के पास आते हैं वे भी मसीह की देह का हिस्सा हैं (गलतियों 3:28)। लोगों के तीन समूह हैं: कलीसिया युग के विश्वासी, अन्यजाति और यहूदी। इजराइल राष्ट्र कलीसिया से भिन्न है, कलीसिया परमेश्वर के चुने हुए लोग इजराइल का नया रूप नहीं है (1 कुरिन्थियों 10:32)। इजराइल राष्ट्र के लिए परमेश्वर के वादे अभी पूरे नहीं हुए हैं, लेकिन एक दिन पूरे हो जायेंगे (यहेजकेल 34; 37; 45; यिर्मयाह 30; 33; मत्ती 19:28; प्रकाशतवाक्य 19)।

कलीसिया में हमारे साथ यीशु के संबंध का वर्णन बाइबल में निम्नलिखित तरीकों से किया गया है: (1) चरवाहा और भेड़ (यूहन्ना 10); (2) दाखलता और डालियाँ (यूहन्ना 15); (3) बुनियाद का पत्थर और भवन के पत्थर (1 कुरिन्थियों 3:9; इफिसियों 2:19-22; 1 पतरस 2:5); (4) महायाजक और याजकों का राज्य (इब्रानियों 5:1-10; 6:13-8:6; 1 पतरस 2:5-9; प्रकाशतवाक्य 1:6); (5) सिर और अनेक अंगों वाला शरीर (1 कुरिन्थियों 12:12-13,27; इफिसियों 4:4); (6) अंतिम आदम और नई सृष्टि (1 कुरिन्थियों 15:22,45; 2 कुरिन्थियों 5:17); (7) दूल्हा और दुल्हन (यूहन्ना 3:29; 2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 5:25-33; प्रकाशितवाक्य 19:7-8)।

स्थानीय कलीसिया - फिर भी, बाइबल स्थानीय कलीसिया ("जमा होना, इकट्ठा होना") के साथ-साथ विश्वव्यापी कलीसिया के बारे में भी बात करती है। सब स्थानीय कलीसिया एक विश्वव्यापी कलीसिया का हिस्सा हैं। जबकि ऐसा प्रतीत होता है कि कलीसिया के बीच जरूरत से ज्यादा कई गुट और विभाजन हैं, कोई भी यह समझ सकता है कि लोगों के साथ आई हर प्रकार की व्यक्तिगत जरूरतों, पृष्ठभूमि और प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के स्थानीय कलीसिया समूह होना आवश्यक हैं।

स्थानीय कलीसिया क्या है? मूल रूप से यह विश्वासियों का एक समूह है, केवल दुसरे रूप से यह एक इमारत या पंथ को दर्शाता है। किसी ने कहा है कि चर्च (ईमारत) पापियों का अस्पताल है, संतों का प्रदर्शन भवन नहीं। चर्च (ईमारत) केवल कुछ चुनिंदा लोगों को बचाने के लिए कोई जहाज़ नहीं है या फिर स्वर्ग के तट पर असहाय यात्रियों को ले जाने के लिए नौका नहीं है। यह कोई अनंतकाल जीवन बीमा कंपनी नहीं है, न ही यह कोई सामाजिक समूह है जो कुछ खास लोगों का स्वागत करता है और बाकी सभी को बाहर कर देता है। बल्कि, चर्च (कलीसिया) पाप से नष्ट हुई और नाश होती आत्माओं के बचाव के लिए एक जीवनरक्षक नौका है। यह एक ऐसा परिवार है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति से प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेम और सेवा की उम्मीद की जाती है। यह (कलीसिया) पृथ्वी पर यीशु मसीह का प्रतिनिधि है, 'देह' है, जो उसकी आत्मा को जाहिर करती है और उसकी इच्छा से नियंत्रित होती है। स्थानीय कलीसिया का उद्देश्य दो प्रकार का है। इसका काम है, उन लोगों के पास जाना है जो इससे बाहर हैं और उनके साथ उद्धार की योजना को साझा करना है। इसका काम है यीशु की खुशखबरी को खोए हुए और विनाशी संसार में

ले जाना है। उदारण के लिए मनो जैसे एक भिखारी दूसरे भिखारी को बता रहा है कि रोटी कहां मिलेगी। इस समय अवधि के दौरान मसीही लोगों को आराधना, शिक्षा, संगति, आपसी समर्थन और सुसमाचार प्रचार के लिए "कलीसिया" नामक स्थानीय समूहों में इकट्ठा होना है (प्रेरितों के काम 2:42; गलातियों 6:2; मत्ती 28:18-20)।

कलीसिया का काम अपने सदस्यों की जरूरतों को भी पूरा करना होता है। शरीर के प्रत्येक अंग को स्वस्थ तरीके से कार्य करने के लिए शरीर के किसी साथी अंग की जरूरत होती है। यह, शिक्षण (ईश्वर का मनुष्य से संवाद करना), आराधना (मनुष्य का ईश्वर से संवाद करना) और संगति (मनुष्य का मनुष्य से संवाद करना) के बीच एक संतुलन बनाता है। यह सभी अवश्य उपस्थित होने चाहिए। हालांकि, परमेश्वर के वचन का सीखना और इसका सीखना (परमेश्वर से सुनना) पहले स्थान पे आना चाहिए (प्रेरितों के काम 2:42)।

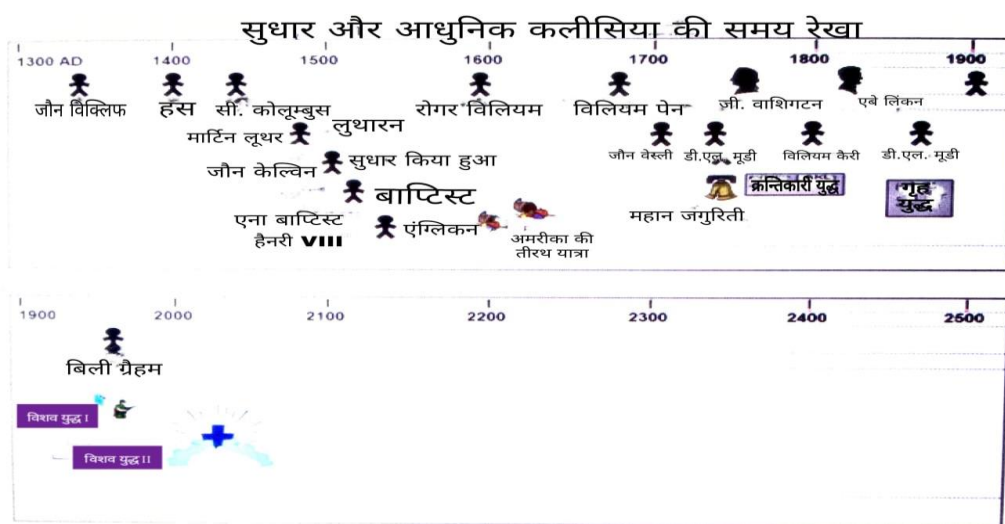
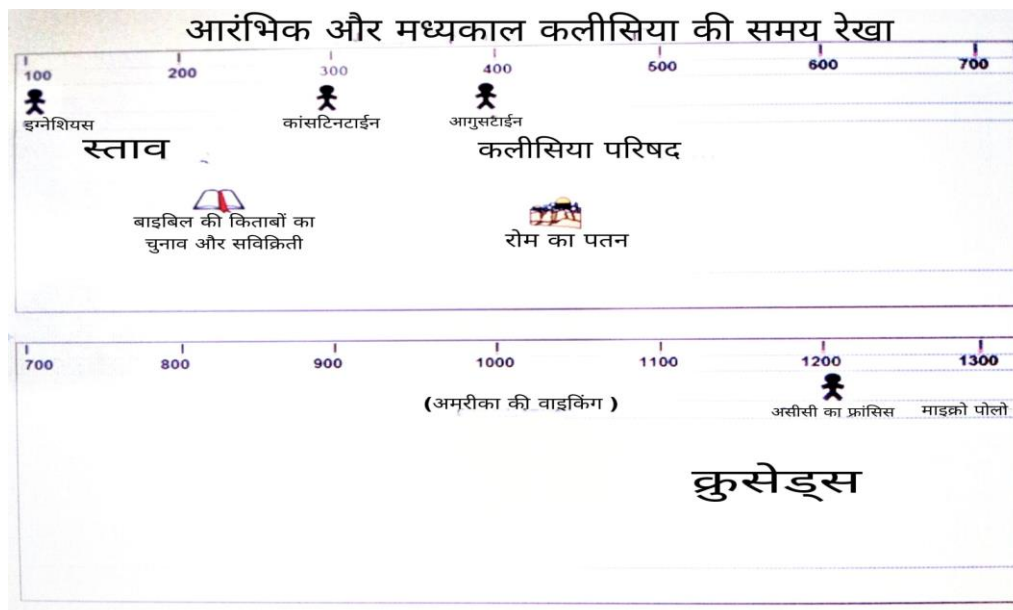
मानव शरीर की अनुरूपता का पालन करते हुए, कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति को उद्धार मिलने के समय मसीह की देह में दूसरों के लिए उपयोग किए जाने वाले एक विशेष उपहार मिश्रण के साथ उपहारित किया जाता है (1 कुरिन्थियों 12)। ये उपहार एक दूसरे के लिए एक साथ उपयोग किए जाने होते हैं (1 कुरिन्थियों 12, 14), यीशु में एक दूसरे को प्रोत्साहित करना, मदद करना और उनका निर्माण करने के लिए। कलीसिया को इसी तरह कार्य करना होता है।

पवित्र आत्मा कलीसिया के लिए शक्ति का स्रोत है, जिसे यीशु ने स्वर्ग पर चढ़ने के बाद भेजा था। वह परमेश्वर के लिए कार्य करने हेतु आवश्यक ज्ञान, शक्ति, समर्थ, उपहार, मार्गदर्शन, दिशा-निर्देश और अनुग्रह देता है।

कलीसिया की शासक प्रणाली के बारे में बाइबल कोई सख्त आदेश नहीं देती है। आध्यात्मिक अगुवा (एल्डर/पास्टर/बिशप) और शारीरिक अगुवा (उपयाजक) होते थे जो जिम्मेदारी विभाजित करते थे। इससे अधिक के रूप में, यदि एक बिशप कई कलीसियाओं पर शासन करता है, तो स्थानीय कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति का समान अधिकार होता है, या यदि यह कहीं काम या अधिक होता है, तो हम नहीं जानते। इतिहास में सभी प्रकार की चर्च की शासक प्रणालियाँ दर्ज किया गया है। यह कोई एकमात्र बाइबिल निरपेक्ष नहीं है। हालांकि आध्यात्मिक और फिर शारीरिक जरूरतों को पूरा करना भी आवश्यक है।

यीशु अपनी कलीसिया के साथ बहुत सक्रिय हैं, जो कि उसकी देह है। सिर होने की हैसियत में वह, जो कुछ होता है उसका, निर्देशन और मार्गदर्शन करता है (इफिसियों 1:22-23; 1 कुरिन्थियों 12:13-14)। वह विश्वासियों को आत्मिक वरदान देता है ताकि वे अपने स्थानीय कलीसियाओं में एक दूसरे की सेवा कर सकें (1 कुरिन्थियों 12:4-11; रोमियों 12:3-8; इफिसियों 4:8-11)। इसके अतिरिक्त, वह पिता के साथ हमारे लिए विनती करता है (यूहन्ना 17:1-26; इब्रानियों 7:25; रोमियों 8:34)। वह हमारा अधिवक्ता भी है, जिसका अर्थ है कि जब हम पाप करते हैं तो वह हमारा बचाव पक्ष के वकील की भूमिका, यह कहते हुए, निभाता है कि हमारे पापों का भुगतान कर दिया गया है (1 यूहन्ना 2:1-2; इब्रानियों 9:24; प्रकाशितवाक्य 12:10)। वह हमारे स्वर्गीय घर के निर्माण में भी व्यस्त है (यूहन्ना 14:1-3)।

जैसे एक दूल्हा अपनी दुल्हन को प्राप्त करने की आशा के साथ आगे देखता है, वैसे ही मसीह आने वाले दिन की प्रतीक्षा करता है जब वह अपनी दुल्हन को प्राप्त करने के लिए बादलों पर लौटेगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। इस समय पर प्रत्येक शत्रु पराजित होगा (भजन संहिता 2:7-9; यशायाह 63:1-6; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10; प्रकाशितवाक्य 19:15; इब्रानियों 10:13)। इसके साथ ही कलीसिया का युग कहो या अनुग्रह का युग यह समाप्त हो जाएगा। परमेश्वर के लोगों को संसार से उठा लिया जाएगा और स्वर्ग में प्रभु के साथ ले जाया जाएगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; 1 कुरिन्थियों 15:51-57; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1; प्रकाशितवाक्य 3:10)। परमेश्वर हमसे आग्रह करता है कि तब तक हम उसके प्रति अपने प्रेम और सेवा में विश्वासयोग्य बने रहें (1 कुरिन्थियों 15:58)।



बाइबिल अवलोकन

स्वर्गरोहण



मुख्य घटनाएँ: सभी विश्वासी यीशु के साथ रहने के लिए स्वर्ग तक उठा लिए जाते हैं

मुख्य लोग: सब विश्वासी

बाइबल आयत: 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18 क्योंकि प्रभु, ऊंचे शब्द से, आप स्वर्ग से उतरेगा, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर का नरसिंघा फूँका जाएगा, और जो मसीह में मर गए हैं, वे पहिले जी उठेंगे। 17- उसके बाद हम जो अब तक जीवित और उस समय जीवित होंगे, उसके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, ताकि हवा में प्रभु से मिलें। और इस तरह हम हमेशा के लिए प्रभु के साथ होंगे।

समय: भविष्य में कभी अज्ञात।

इस समय की विश्व घटनाएँ: अज्ञात

भौगोलिक स्थिति: दुनिया भर में

परमेश्वर के भविष्यसूचक कार्यक्रम की अगली घटना स्वर्गरोहण है - तुरही बजेगी, यीशु आकाश में दिखाई देगा, और सलीब कार्य से लेकर वर्तमान तक के हर व्यक्ति जिसने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया होगा, उसे स्वर्ग में ले जाया जाएगा। यदि वे पहले ही मर चुके हैं, तो उनके शरीरों को आत्मा में शामिल करने के लिए उनके शरीरों को स्वर्ग में ले जाया जाएगा जो मृत्यु के तुरंत बाद वहां चले गए थे (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। वर्तमान कलीसियाई युग, दानियेल 9 के 69वें और 70वें सप्ताह के बीच का विराम उस समय समाप्त होगा जब यीशु अपने लोगों को अपने साथ स्वर्ग ले जाने के लिए वापस आएगा। इसी घटना को स्वर्गरोहण कहा जाता है, और यह परमेश्वर के भविष्यवाणी कैलेंडर में की अगली घटना है। यह घटना केवल उन लोगों से संबंधित है जो कलीसिया में हैं, मसीह की देह, जो यीशु के समय से लेकर स्वर्गरोहित होने तक सभी विश्वासियों (यहूदी या अन्यजातियों) से बना है। वे आयतें जो इसकी

भविष्यवाणी करते हैं, यूहन्ना 14:1-3; प्रेरितों के काम 1:9-11; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 और 1 कुरिन्थियों 15:54।

स्वर्गरोहण का समय क्लेश से पहले होगा - यह ना उसके दौरान या उसके बाद का नहीं! मसीहियों को क्लेश से नहीं गुजरना पड़ेगा क्योंकि यह न्याय का समय है, और विश्वासी परमेश्वर के न्याय के अधीन नहीं हैं (रोमियों 8:1; प्रकाशितवाक्य 3:10; 1 थिस्सलुनीकियों 5:9)। परमेश्वर ने लूत को सदोम और अमोरा में न्याय से सुरक्षित रखा, नूह को जलप्रलय के दौरान न्याय से सुरक्षित रखा, राहाब को यरीहो के विनाश के समय सुरक्षित रखा, और यहूदियों को मिस्र में चार से लेकर दस तक की विपत्तियों में बचाए रखा। हम आने वाले क्रोध से बचाए जाएंगे (1 थिस्सलुनीकियों 1:10)।

साथ ही, बाइबल यह भी बताती है कि स्वर्गरोहण "लगभग ऐसे घटना है " - जिस से पहले कुछ भी होने की आवश्यकता नहीं है। यह भविष्य की अगली घटना है (2 पतरस 3:10; याकूब 5:8; फिलिप्पियों 3:20)। स्वर्गरोहण को "धन्य आशा" कहा जाता है (तीतुस 2:13)। अगर हमें क्लेश के एक हिस्से से भी गुजरना पड़ता है तो यह सच नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा चला जाएगा जब क्लेश के आरम्भ में ही मसीह विरोधी अपना कार्य आरम्भ करेगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:3, 5-9)। पवित्र आत्मा परमेश्वर के सभी लोगों में वास करता है, इसलिए यदि वह चला गया, तो हम भी चले जाएंगे। अंत में, क्लेशकाल के दौरान पृथ्वी पर कलीसिया के होने का कोई उल्लेख नहीं है।

कलीसिया को, प्रकाशितवाक्य 1-3 में 17 बार संदर्भित किया गया है, लेकिन अध्याय 4-18 से जो पृथ्वी पर क्लेश की बात करते हैं, उसमें इसका एक बार भी उल्लेख नहीं किया गया है।

हम हमेशा यह प्रश्न पूछते हैं कि स्वर्गरोहण कब होगा। दुर्भाग्य से, कोई नहीं जानता, लेकिन कई संकेत हमें इसके सामान्य समय में होने के बारे में बताते हैं। पहले आगमन के बारे में सैकड़ों भविष्यवाणियाँ थीं। यीशु ने इजराइल के शासकों को उसके पहले आगमन के चिन्हों को न पहचानने के लिए फटकारा (शिमोन और हन्ना जानते थे - लूका 2)। जिस तरह दूसरे आगमन की कई भविष्यवाणियाँ दर्ज हैं। परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग जानें कि यीशु पहली बार कब आता था, और वह चाहता है कि हम जानें कि वह वापस कब आ रहा है (मत्ती 16:3)।

यीशु की वापसी की सही तारीख तो अज्ञात है (1 थिस्सलुनीकियों 5:1-3; दानियेल 12:4) इसलिए हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए (मत्ती 24:42-44)। हम दिन या घड़ी को नहीं जानते (प्रेरितों के काम 1:7; मत्ती 24:36) लेकिन 'ऋतु' को - सामान्य समय को जानते हैं। जैसे कि ऐसी कोई घटना नहीं है जो स्वर्गरोहण से पहले घटित होनी है, यदि हम क्लेश की शुरुआत में पृथ्वी पर की स्थितियों को देखते हैं, जो स्वर्गरोहण के बाद आती हैं और उनकी तुलना आज की स्थितियों से करते हैं, तो हम देख सकते हैं कि समय बहुत निकट हो सकता है।

स्वयं यीशु ने कई 'संकेत' दिए थे कि जब क्लेश निकट होगा उस समय क्या हो रहा होगा। उसने इनकी तुलना प्रसाव की पीड़ा से की (मत्ती 24:8)। वे छोटी छोटी से शुरू होती हैं और धीरे-धीरे बढ़ती हैं और जन्म तक पहुंचाती हैं। उसकी अनुसार, 'जन्म' क्लेश के अंत में पृथ्वी पर उसकी वापसी को दर्शाता है। ये भविष्यवाणियाँ यीशु द्वारा पहाड़ी उपदेश (मत्ती 24-25) में दी गई हैं। शुरुआती संकेत जो वह देता है

(मत्ती 24:4-14) उस में धोखे, युद्ध, अकाल, महामारी, भूकंप, विश्वासियों के लिए शहादत, झूठे भविष्यद्वक्ता, अधर्म, प्रेम की कमी और विश्व सुसमाचार प्रचार शामिल हैं।

क्लेश के सात मुख्य पाप दिखाते हैं कि आज हम उनके कितने करीब हैं (प्रकाशितवाक्य 9:20-21)। ये हैं परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह, दुष्टात्माओं की उपासना, मूर्तिपूजा, हत्या, टोना-टोटका (नशीली दवाओं के उपयोग सहित), यौन अनैतिकता और चोरी।

पौलुस की अन्तिम दिनों के चिह्नों की सूची यह भी दिखाती है कि हम कितने इसके निकट हैं (2 तीमुथियुस 3:1-7)। वह कहता है कि लोग स्वार्थी ("स्वयं के प्रेमी"), लालची और अभिलाषी ("पैसे के प्रेमी"), डींग मारने वाले, निंदक, माता-पिता के प्रति अवज्ञाकारी, विद्रोही, नाशुके, अपवित्र, बिना स्वाभाविक प्रेम के, शांति भंग करने वाले और झूठे आरोप लगाने वाले होंगे, असंयमी, उग्र, तिरस्कार करने वाले, विश्वासघाती, लापरवाह, अभिमानी, सुख-भोगी और उनके पास ईश्वर की शक्ति नहीं होगी।

यीशु अंतिम दिनों का वर्णन "नूह के दिनों" के समान होने के रूप में करता है, जब वह वापस आता है (लूका 17:26-30; उत्पत्ति 6:1-9)। लोग जल्द ही आने वाले न्याय को न समझते हुए अपने दैनिक जीवन को पाप में जारी रहेंगे। यौन विकृति होगी, उनके विचार लगातार बुराई की ओर मुड़े रहेंगे, और वे आने वाले न्याय के परिणामों से बेपरवाह होंगे।

पतरस का अन्तिम दिनों का चिन्ह यह है कि लोग यीशु के वापस आने का मजाक बनाएंगे (1 पतरस 3:3-7)। वे परमेश्वर का सृष्टिकर्ता के रूप में भी मजाक उड़ाएंगे। वे मनुष्य के पतन, नूह के दिनों में बाढ़, यीशु के जीवन और उसके दुसरे आगमन से इनकार करेंगे।

यदि परमेश्वर ने हमें अपनी वापसी का सही समय बताया होता, तो लोग अंतिम समय तक उसके साथ सही व्यवहार करना बंद कर देते, और शैतान उसकी नक़ल करने और भ्रम पैदा करने के लिए वह सब कुछ करता जो वह कर सकता था। इसलिए परमेश्वर इसे गुप्त रखता है, लेकिन हमें यह जानने के लिए पर्याप्त जानकारी देता है कि यह किसी भी समय हो सकता है, और यह बहुत जल्द हो सकता है! जब तक वह न आए तब तक हम क्या करें? ऐसे जियो जैसे यह आज ही हो सकता है।

स्वर्गारोहण का नमूना उस समय के दौरान (जब यह लिखा गया) इज़राइल में किसी दुल्हन के लिए आने वाले उसके दूल्हे के आने का चित्र है। यीशु के दिनों में लोगों ने स्वर्गारोहण की बात को स्पष्ट रूप से समझ लिया होगा, क्योंकि जब भी किसी की शादी होती थी तो ऐसा होता ही था। पूरा कार्यक्रम की शुरुआत, दूल्हा द्वारा दुल्हन के घर जाने, दुल्हन से वादा और प्रतिबद्धता करने और दुल्हन की कीमत चुकाने के साथ होती थी ताकि यह साबित हो जाये कि वह उसकी हो सके। यह चित्र दर्शाता है कि यीशु स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर पता है, हमारा उद्धारकर्ता होने का वादा करता है और सलीब पर हमारे पापों की कीमत चुकाता है ताकि यह साबित हो कि हम उसके हो सके। यदि पिता सोचता कि यह काफी है तो वह दुल्हन की कीमत को स्वीकार कर लेता, जैसे परमेश्वर ने हमारे लिए सलीब पर यीशु के काम को स्वीकार कर उसे वापस जीवित कर दिया।

फिर यह दुल्हन पर निर्भर करता है कि वह दूल्हे द्वारा दी गई दाखरस का प्याला लेकर और पीकर उसके प्रस्ताव को स्वीकार करती है। यह हम में से प्रत्येक पर निर्भर है कि हम यीशु के उद्धार के उपहार को

स्वीकार करते हैं और इसे व्यक्तिगत रूप से ग्रहण करते हैं। ऐसा करने से यहूदी विवाह को कानूनी तौर पर एक अटूट बंधन के रूप में मुहरबंद कर दिया जाता था। जब हम यीशु के उद्धार के उपहार को स्वीकार करते हैं, हम उसके हैं, और हमारा उद्धार खोया नहीं जा सकता। यह भी, स्वर्ग में कानूनी रूप से बाध्यकारी मुहरबंद कर दिया जाता है।

भले ही यह जोड़ा कानूनी रूप से विवाहित है, फिर भी दूल्हा अपनी दुल्हन के लिए घर बनाने के काम को करने के लिए अकेले ही घर लौटता है जबकि दुल्हन अपने पिता के घर पर रहती है और दूल्हे के आने के लिए खुद को तैयार करती रहती है। यीशु स्वर्ग पर चढ़ गया और अपनी दुल्हन, कलीसिया को यहाँ पृथ्वी पर छोड़ गया जहाँ हमें उसकी वापसी के लिए आपने आप को तैयार करना है। जब पिता को सही समय पता चलेगा, तो वह अपने बेटे से कहेगा कि जाओ अपनी दुल्हन को ले आओ। बेटा अपने दोस्तों को इकट्ठा करता और आपने आने की घोषणा करते हुए तुरही की आवाज के साथ दुल्हन के घर पहुँचता। ठीक उसी तरह, एक दिन परमेश्वर पिता अपने पुत्र यीशु से कहेगा कि उसके लिए अपनी दुल्हन को पाने का सही समय आ गया है। यीशु और स्वर्गदूत तुरहियाँ बजाते हुए हमारे पास आएंगे। यही स्वर्गरोहण है।

फिलिस्तीन में दुल्हन को फिर दूल्हे के घर ले जाता जहाँ सात दिनों तक शादी का जश्न मनाया जाता। वे फिर अपना सारा जीवन दूल्हे के घर में एक साथ बिताते। इसलिए, यीशु के, हमारे लिए आने के ठीक बाद, हमारे पास भी सात साल का उत्सव आनंद होगा जिसे मेमे का विवाह भोज कहा जाता है। तब हम भी, उसके साथ स्वर्ग में उसकी दुल्हन के रूप में अनंत काल व्यतीत करेंगे।

स्वर्गरोहण की प्रतिज्ञा यूहन्ना 14:1-3 में की गई है। यीशु ने ये शब्द अपनी गिरफ्तारी और सलीब पर चढ़ने से एक रात पहले कहे थे। वह अपने शिष्यों को दिलासा और प्रोत्साहन दे रहा है। वर्तमान समस्याओं को देखने के बजाय उन्हें अपने गौरवशाली भविष्य की ओर देखना है।

उन दिनों में जब एक युवक कानूनी रूप से अपनी दुल्हन से शादी कर लेता था, तो वह उसे वहीं छोड़ देता था जहाँ वह रहती थी और अपने घर में रहने के लिए कमरा बनाने के लिए जाता था। ये उसके परिवार के घर का हिस्सा होता। प्रत्येक परिवार का अपना कमरा होता और सभी केंद्रीय प्रांगण में एक साथ रहने की जगह में रहते करते। नया यरुशलम कहलाने वाला यह स्थान प्रत्येक तरफ से 1,500 मील या 2,500 किलोमीटर छद्म होगा। यह 100 अरब की गिनती के लोगों को ठहराने के लिए काफी बड़ा होगा। हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि यह कितना शानदार होगा! इस खूबसूरत ब्रह्मांड को बनाने में यीशु को छह दिन ही लगे। कल्पना कीजिए कि 2,000+ साल की तैयारी से वह क्या क्या रचता होगा!

यीशु कहता है कि वह अब हमारे उसके साथ रहने के लिए एक जगह तैयार कर रहा है, और वह हमारे लिए वापस आने का वादा करता है - वह निश्चित रूप से इसकी गारंटी देता है (यूहन्ना 14:3)। जिन स्वर्गदूतों ने यीशु के स्वर्गरोहण के समय चेलों से बात की थी, उन्होंने भी यही प्रतिज्ञा की थी। "यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा" (प्रेरितों के काम 1:11)। वह वापस आएगा, और जैसा वह गया था वैसा ही होगा। यह स्पष्ट रूप में देका जाने वाली घटना, वास्तविक और भौतिक होगा। यही मे स्वर्गरोहण है, परमेश्वर के कार्यक्रम की अगली घटना।

शुरुआती मसीहीयों ने इन वादों को संजोया था और उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब यीशु उनके लिए वापस आएगा, लेकिन वह तुरंत नहीं आया। समय निकल गया। कुछ विश्वासी उत्पीड़न, उम्र या बीमारी से मर गए। जो जीवित थे वे सोचने लगे कि जब यीशु लौटेगा तो उनका क्या होगा। पौलूस ने उस सवाल का जवाब दिया।

स्वर्गरोहण की योजना को पौलूस ने 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 में प्रस्तुत किया है। स्वर्गरोहण शब्द का बाइबिल में कभी भी उल्लेख नहीं किया गया है। यह एक लातीनी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'पकड़ना', या 'छीनना'। यह हिस्सा स्पष्ट रूप से उस घटना का वर्णन करता है। पौलूस कहता है कि जब यीशु हमें स्वर्गरोहित करने के लिए वापस आएगा तो वह उन्हें भी अपने साथ लाएगा जो "सो गए" हैं। यह शरीर की नींद को संदर्भित करता है, क्योंकि आत्मा मृत्यु पर तुरंत स्वर्ग में चली जाती है (लूका 23:43; फिलिप्पियों 1:23; 2 कुरिन्थियों 5:8)। परमेश्वर विश्वासियों को एक अस्थायी शरीर देता है, जब वे मर जाते हैं, उस समय तक जब तक वह वापस नहीं आता। फिर उनके पार्थिव शरीर को वापस जीवन में लाया जाएगा और उनके पुनरुत्थान के बाद यीशु के शरीर की तरह एक अनन्त शरीर में बदल दिया जाएगा। ठीक उसी समय, विश्वासी जो अभी भी जीवित हैं बिना मरे अपने अनन्त शरीरों में बदल दिए जाएंगे, और दोनों समूहों को आकाश में यीशु से मिलने के लिए ऊपर ले जाया जाएगा।

इस घटना के दौरान तीन तेज आवाजें सुनाई देगी। एक ज़ोरदार से सेना प्रकार की आज्ञा सी होगी, ठीक वैसी ही, जैसी कि जब यीशु ने लाजर को कब्र से बाहर बुलाया था (यूहन्ना 11:43)। यह दूल्हा होगा जो अपनी दुल्हन को बुला रहा होगा जब पिता अंत में कहता है कि वह उसे उस घर में ला सकता है जिसकी वह तैयारी कर रहा था। दूसरी, उसके आगमन की घोषणा करने वाली तुरहीयां की होगी, जैसे दूल्हे के मित्र दुल्हन को यह बताने के लिए आवाज करते हैं कि दूल्हा रस्ते में हैं। तीसरा, वहाँ पर मीकाईल प्रधान स्वर्गदूत और स्वर्गदूतों की आवाज़ खुशी और विजय की सी होगी क्योंकि वे हमें स्वर्ग में ले जाते हैं और शैतान व उसके राक्षसों को नष्ट करने के लिए आखरी महायुद्ध शुरू करते हैं।

स्वर्गरोहण की गति - हमारी पलक झपकने से भी तेज होगी (1 कुरिन्थियों 15:51-53)। स्वर्गरोहण की यह घटनाएँ पलक झपकते ही घटित होंगी। फिर कोई चेतावनी नहीं होगी, तुरही बजने के बाद तैयार होने के लिए, पाप कबूल करने के लिए, यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के लिए कोई समय नहीं होगा। इससे पहले कि हमें पता चले कि यह क्या हो रहा है, यह खत्म हो जाएगा। तुरंत हमारे शरीर, चाहे जीवित हों या मृत, यीशु के पुनरुत्थान शरीर की तरह अनन्त शरीर में बदल दिए जाएंगे। यह वैसा ही होगा जैसा एलिय्याह और एलीशा के साथ हुआ था (उत्पत्ति 5:24; इब्रानियों 11:5; 2 राजा 2:1, 11)।

स्वर्गरोहण और दूसरा आगमन अलग-अलग घटनाएँ हैं। यह स्वर्गरोहण यीशु के महिमा भरे दुसरे आगमन के समान नहीं है। स्वर्गरोहण परमेश्वर के कार्यक्रम की अगली घटना है जिसकी हमें तलाश करनी चाहिए। यीशु सभी सच्चे विश्वासियों को अपने साथ रहने के लिए स्वर्ग में ले जाने के लिए हवा में प्रकट होगा। दूसरा आगमन स्वर्गरोहण के सात साल बाद होगा जब यीशु पृथ्वी पर पाप को समाप्त करने और अपने राज्य की स्थापना करने के लिए वापस आएगा। (इस बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी शमोयर द्वारा लिखित "बाइबिल की भविष्यवाणी" देखें।)

बाइबिल अवलोकन 27 क्लेश और मिलेनियम



मुख्य घटनाएं: क्लेश (7 वर्ष), हजार वर्ष का राज्य और फिर अनंत काल

मुख्य लोग: परमेश्वर, यीशु, पवित्र आत्मा, स्वर्गदूत, सभी विश्वासी लोग

बाइबल आयत: प्रकाशितवाक्य 21: 1-4 तब मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी गायब हो गए , और अब कोई समुन्द्र न था। मैंने पवित्र नगरी, नया यरूशलेम देखा, जो परमेश्वर के स्वर्ग से नीचे उतर रही थी, जिसको ऐसा सजाया गया था जैसे अपने पति के लिए खूबसूरती के कपड़े पहने एक दुल्हन हो। और मैंने सिंहासन से एक तेज आवाज सुनी, यह कहते हुए, "अब परमेश्वर का आवास पुरुषों के साथ है, और वह उनके साथ रहेगा। वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके साथ होगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से हर आंसू पोंछेगा। वहां इसके आगे कोई मृत्यु या शोक या रोना या दर्द नहीं होगा, क्योंकि पुरानी सब बातें खत्म हो गयी। "

समय: स्वर्गरोहण के तुरंत बाद।

भौगोलिक स्थान: दुनिया भर में

स्वर्गरोहण के तुरंत बाद, कलीसिया अपने दूल्हे, यीशु के साथ विवाह में होगी , मेमने के विवाह के विह्व भोज में (प्रकाशितवाक्य 4: 4; 5: 6, 8, 14; 19: 9)। यहाँ हमें पृथ्वी पर वफादारी की सेवा के लिए पुरस्कार दिया जाएगा और भविष्य की सेवा का कार्य सौंपा जाएगा (1 कुरिन्थियों 3: 12-15; मत्ती 27:19; यहून्ना 19:13; रोमियों 14:10)

जब विश्वासियों को स्वर्गरोहण कर लिया गया होगा और वे स्वर्ग में आपने दूल्हे, यीशु के साथ जश्न मना रहे होंगे, उस समय पृथ्वी पर क्लेश चल रहा होगा। यह दानिएल का 70 वां सप्ताह है (दानिएल 9: 24-27)। यह दुनिया भर में विनाश की भविष्यवाणी का समय है (यहेजकेल 38: 19-23; 39: 9, 25-29; प्रकाशितवाक्य 6-19)। अनुग्रह का समय खत्म हो जाएगा, और व्यवस्था पुनः प्रभावी होगी, जैसे कि पुराने नियम के समय में थी। यह पाप और अविश्वासियों पर परमेश्वर के क्रोध का दिन है। जब उसने यशायाह 61: 1-3 को पढ़ा, तो यीशु "हमारे परमेश्वर के क्रोध के दिन" को पढ़ने से पहले रुक गया क्योंकि यह इस बात का हिस्सा नहीं था कि वह पहली बार क्यों आया (लूका 4: 16-21), लेकिन यह वही है जो धरती पर होगा जब हम स्वर्गरोहण हो चुके होंगे। शैतान दुनिया पर शासन करेगा। जब कलीसिया को स्वर्गरोहण किया जाता है, तो शैतान को पता चलेगा कि उसका समय कम रह गया है। उसके पास हमला करने के लिए परमेश्वर के लोग, कलीसिया (मसीह की दुल्हन) तो अब नहीं हैं, इसलिए वह परमेश्वर के लोगों, यहूदियों पर हमला करने के लिए अपना ध्यान केंद्रित करेगा। यहूदियों और अन्यजातियों पर जो इस दौरान विश्वासी बनेंगे, उन पर विशेष रूप से कठोर हमला किया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 12: 7-9)। शैतान इजराइल को नष्ट करने के लिए सब कुछ जो वह कर सकता है करेगा (प्रकाशितवाक्य 12: 13-17)। वह दुनिया पर शासन करेगा, कुछ ऐसा जो वह करने की कोशिश कर रहा है जब से उसे स्वर्ग से बाहर फेंका गया था। वह मसीही -विरोधी के अंदर वास करेगा और उसके माध्यम से दुनिया पर शासन करेगा।

मसीह -विरोधी एक गैर -यहूदी होगा (प्रकाशितवाक्य 13:1) और 'रोम' से आएगा (दानियेल 7:7-8; 9:25)। यह भूमि क्षेत्र और उन देशों को संदर्भित करता है जो रोम से प्रभावित हुए हैं, (जैसे यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका)।

झूठा भविष्यद्वक्ता शैतान की नकली त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति है (प्रकाशितवाक्य 16:13)। शैतान परमेश्वर पिता की नकल करता है, मसीह -विरोधी परमेश्वर पुत्र (मसीह) की नकल करता है और झूठा भविष्यद्वक्ता परमेश्वर पवित्र आत्मा की नकल करता है। वह एक यहूदी होगा (प्रकाशितवाक्य 13:11) जो विधर्मी कलीसिया का सिर है और जो सच्ची कलीसिया के स्वर्गरोहण हो जाने के बाद बनती है। जो लोग 'धार्मिक' हैं, लेकिन उन्होंने यीशु को अपना उद्धारकर्ता कभी स्वीकार नहीं किया है, वे इस 'कलीसिया' का निर्माण करते हुए पीछे रह जाएंगे (1 तीमथियुस 4:1-2)।

सुसमाचार के प्रचारक जो सभी के साथ परमेश्वर के उद्धार के संदेश को साझा करेंगे, वे नए विश्वासी होंगे, जो स्वर्गरोहण के बाद (या शायद इसके द्वारा) बचाए गए होंगे। सभी सच्चे विश्वासियों को स्वर्गरोहण के समय, पवित्र आत्मा और उसके नियंत्रण प्रभाव के साथ उठा लिया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:5-9)। इसलिए परमेश्वर अपने वचन को पूरे संसार में ले जाने के लिए दूसरों को अलग करेगा। एलियाह, एलीशा या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह 144,000 यहूदी प्रचारक होंगे। वे स्वर्गरोहण के बाद उद्धार के लिए यीशु की ओर मुड़ेंगे और परमेश्वर के लिए अलग किए जाएंगे। वे सारी पृथ्वी पर प्रचार करेंगे (प्रकाशितवाक्य 7:1-8; 14:1-5)। उन पर पवित्र आत्मा की मुहर होगी, इसलिये वे मारे नहीं जा सकते (योएल 2:28-32)। यह उस घटना की अंतिम पूर्ति के रूप में होगा जिसका पन्तेकुस्त के दिन पर चित्रित किया गया था (प्रेरितों के काम 2)। क्लेश के दबावों के कारण बहुत से यहूदी और अन्यजाति उद्धार के लिए परमेश्वर के पास आएंगे। यह क्लेश के मुख्य उद्देश्यों में से एक है - इजराइल को परमेश्वर की ओर मोड़ना (जकर्याह 12:10; होशे 3:4-5; रोमियों 11:25-39; प्रकाशितवाक्य 7:9)। सुसमाचार के यह प्रचारक पूरी पृथ्वी पर जाएंगे और परमेश्वर के वचन का प्रचार करेंगे।

क्लेश की शुरुआत मसीह विरोधी द्वारा इजराइल के साथ सात साल की वाचा बाँधने के साथ होगी, उन्हें शांति और बिना हथियार रहने पर भी सुरक्षा का आश्वासन दिया जायेगा (दानियेल 9:27)। यह उन्हें किसी पर हमला करने के लिए कमजोर बना देगा। यह स्वर्गरोहण के तुरंत बाद होगा है, जब मसीह - विरोधी पहली बार सत्ता में आता है। याद रखें, उसे स्वर्गरोहण के बाद तक नहीं पहचाना जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)। वह जीवित व्यक्ति होगा लेकिन इस स्थिति और शक्ति में दिखाई नहीं देगा जो उसके पास स्वर्गरोहण के बाद तक मसीह- विरोधी के रूप में होगी।

मसीह -विरोधी दुनिया को धोखा देकर सत्ता में आएगा। उसका एक ऐसा 'झूठ' है जिस पर पीछे रह गए लोग विश्वास करेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 2:9-12)। यह झूठ क्या होगा, यह कोई नहीं जानता, लेकिन उसकी व्याख्या यह हो सकती है कि सभी के साथ क्या हुआ, उनका स्वर्गरोहण। हो सकता वह यह भी कह दे कि बुरे लोगों को उठा लिया गया और अच्छे लोगों को छोड़ दिया गया (जैसा कि नूह के दिनों में था)। हो सकता वह यह भी कहे कि वे तो अंतरिक्ष हमलावरों (अज्ञात उड़ने वाले यंत्र) द्वारा उठाए गए थे या फिर स्वर्गरोहण के लिए कुछ 'वैज्ञानिक' स्पष्टीकरण दे डाले। सब कुछ होने के बावजूद, परमेश्वर अभी भी सब कुछ पर अपना संप्रभुता का नियंत्रण बनाए रहेगा, जैसा कि अय्यूब 1, 2 में है जहाँ शैतान को मनुष्य के साथ कुछ भी करने से पहले परमेश्वर से अनुमति लेनी पड़ी थी (प्रकाशितवाक्य 13:7; 6:11; दानियेल 7:25) .

क्लेश का पहला आधा -भाग दुनिया में शांति और स्थिरता लाने की कोशिश कर रहे मसीह -विरोधी द्वारा चित्रित किया जाएगा। परन्तु वास्तव में यह परमेश्वर के लिए अविश्वास पर न्याय करने का समय होगा। आने वाले ये सभी न्याय एक पुस्तक में लपेटे हुए हैं, और केवल यीशु ही इन्हें खोल सकता है और परमेश्वर के न्याय को पूरा कर सकता है (प्रकाशितवाक्य 5:1-14)। उसके द्वारा पुस्तक खोलने से न्याय की पहली लड़ी - मुहरबंद न्याय (प्रकाशितवाक्य 6:1-17; 8:1-2) जारी होती है।

इस समय के दौरान, हर जगह सभी लोगों को एकजुट करने के लिए मसीह -विरोधी बाबेल को नई विश्व राजधानी बना देगा। इसकी तुलना बाबेल की मीनार से की जा सकती है जिसके माध्यम से निमरोद अपने समय में दुनिया को एकजुट करने की कोशिश करता था। यह झूठी धार्मिक व्यवस्था (प्रकाशितवाक्य 17) के साथ-साथ विश्व राजनीतिक केंद्र (प्रकाशितवाक्य 18) का केंद्र-स्थान भी होगा।

मसीह -विरोधी द्वारा किये गए शांति के वादे के बावजूद उत्तर और उसके सहयोगी (रूस और अरब राष्ट्र) फिलिस्तीन पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़ेंगे। वे फिलिस्तीन की आर्थिकशक्ति और प्रणाली पर अपना कब्जा करने के लिए ऐसा करेंगे (यहेजकेल 38:1-11, 15-23; योएल 2:2-21; यशायाह 10:12; 30:31-33; 31:8-9)। दक्षिण (मिस्र) इजराइल के विरुद्ध आक्रमण का नेतृत्व करेगा (दानियेल 11:40)। बिना-हथियार की अवस्था में होने के कारण इजराइल बहुत कमजोर होगा। अरबों ने संधियों और शांति शिखर सम्मेलनों के माध्यम से वे सभी रियायतें प्राप्त कर ली होंगी, जिससे इजरायल कमजोर हो गया होगा। जब उन्हें शांतिपूर्ण तरीकों से और कुछ नहीं मिलेगा, तो वे युद्ध का उपयोग करेंगे। पश्चिम, मसीह विरोधी के अधीन होते हुए, विरोध करेगा लेकिन यह उन्हें रोक नहीं पाएगा (यहेजकेल 38:1-23)। परमेश्वर ठीक उसी समय और अलौकिक रूप से उत्तर और उसके सहयोगियों को नष्ट कर देगा जैसे उसने सदोम और अमोरा को नष्ट कर दिया था। सभी हथियारों को जलाने में सात वर्ष लगेंगे (यहेजकेल 39:1-4, 9-12)। यह दुनिया की शक्तियों के संतुलन को बिगाड़ देगा और मसीह विरोधी को निर्विवाद विश्व शासक के रूप में छोड़ देगा।

क्लेश के मध्यकाल तक, तीसरा मंदिर फिर से बनाया जाएगा और यरूशलेम में चट्टान के गुम्बद के स्थान पर क्रियाशील होगा (मत्ती 24:15; दानियेल 9:27; 11:31; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-4; प्रकाशितवाक्य 11:1-2)। यह स्वर्गरोहण से पहले या बाद में बनाया जा सकता था, लेकिन यह क्लेश के मध्यकाल तक पूरी तरह से क्रियाशील होगा। चट्टान के गुम्बद का क्या होगा, जो अरबों के लिए एक पवित्र स्थान है? यहूदी इस पर कैसे कब्जा करेंगे? शायद इस मुद्दे को सुलझाने से इजराइल को मसीह-विरोधी पर भरोसा हो जायेगा। उत्तर (रूस) के नष्ट होने के बाद अरब बहुत कमजोर हो जाएंगे। अरबों के लिए एक विशेषाधिकार के रूप में मसीह-विरोधी चट्टान के गुम्बद को नए बाबेल में स्थानांतरित कर सकता है। हालाँकि वह ऐसा ही करेगा, इससे यहूदी उस पर और भरोसा करेंगे, यह उनकी एक ऐसी गलती होगी जिसके लिए वे जल्द ही पछताएंगे।

क्लेश का पहला भाग युद्ध और उसके परिणामों से भरा होगा: अकाल और मृत्यु। बड़े भूकंप पृथ्वी को हिला देंगे और हर पहाड़ और द्वीप को हिला देंगे। फिर भी, आने वाले समय की तुलना में पहले साढ़े तीन साल शांतिपूर्ण और समृद्ध महसूस होंगे। वास्तव में नरक की विपत्ति इन सब के बीच में शुरू होकर अंत तक जारी रहेगी।

क्लेश के मध्य में बहुत से बदलाव आएंगे जैसे कि पृथ्वी पर हर किसी के लिए, विश्वासियों और अविश्वासियों के लिए हालतें बहुत बदतर हो जाती हैं (मत्ती 24:20-22; प्रकाशितवाक्य 6:17; 7:14; 11:1-3)। यह यहूदियों के लिए विशेष रूप से बुरा समय होगा। इसलिए इसे "याकूब के संकट का समय" भी कहा जाता है (यिर्मयाह 30:7)। यह स्पैनिश धर्म न्यायक जॉच और एडॉल्फ हिटलर द्वारा किये गए सर्व-नाश से कहीं अधिक भयानक होगा (व्यवस्थाविवरण 32:35; ओबद्याह 1:12-14)।

पुराने नियम में इस समय को "यहोवाह का दिन" कहा गया है। इसमें वह समय भी शामिल है जब यीशु वापस आता है और इजराइल का राज्य पुनर्स्थापित करता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:2-3; योएल 1:15; 2:1, 11, 31; 3:14; आमोस 5:18-20; ओबद्याह 15; सपन्याह 1:7-8, 14, 18; 2:2-3; 14:1; मलाकी 4:5)।

यह समय कब आएगा यह जानने के लिए यीशु ने कुछ विशिष्ट संकेत दिए हैं। प्रसव की वह पीड़ा जिसके साथ वह उनकी तुलना करता है, इस समय- बिंदु तक पहुँच चुकी होगी: परमेश्वर के मंदिर की अपवित्रता, यहूदियों का फिर से इकट्ठा होना और विश्वव्यापी धोखा (मत्ती 24:15-26)। इस समय के दौरान, सबसे बुरे राक्षस, जो अब जंजीरों में बँधे हुए हैं, पृथ्वी पर लोगों को पीड़ा देने के लिए छोड़े जाएँगे (2 पतरस 2:4; प्रकाशितवाक्य 12:7-9)। शैतान स्वयं वैशी दरिंदे जैसा हो जाएगा, यह जानते हुए कि उसका अंत निकट है। मसीह-विरोधी इजराइल के साथ अपनी वाचा तोड़ देगा और उन्हें परमेश्वर की आराधना करने से मना करेगा (दानियेल 9:27; 12:11)। वह मंदिर में पूजा करने के लिए अपना सवरूप स्थापित करेगा और हर किसी को उसकी ओर केवल उसकी पूजा करने को विवश करेगा (दानियेल 11:36-39; प्रकाशितवाक्य 13:14-15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:4)। वे सभी जो विश्वासी नहीं हैं वे उसको परमेश्वर के रूप में पूजेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 2:11)। जो कोई भी उसकी आराधना नहीं करता और 666 का चिह्न लेकर उसे नहीं दिखाता है वह मारा जाएगा (प्रकाशितवाक्य 13:7, 18)।

भले ही ये दिन कितने भयानक होंगे, फिर भी परमेश्वर उन लोगों को क्षमा प्रदान करेगा जो उसकी ओर मुड़ते हैं। वह दो विशेष गवाहों के द्वारा अपनी सामर्थ्य दिखाएगा जो क्लेश के मध्यकाल के दौरान साढ़े तीन दिन पहले, परमेश्वर द्वारा अलग किए गए हैं। ये दोनों मनुष्य मूसा और एलिय्याह के समान ही होंगे। उन्हें नुकसान नहीं किया जा सकेगा पर वे उन सभी को मार डालेंगे जो उन्हें नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेंगे। वे चमत्कार करेंगे और भयानक अकाल और विपत्तियाँ लाएँगे (प्रकाशितवाक्य 11:1-13)।

क्लेश का दूसरा भाग पहले भाग से कहीं अधिक बुरा होगा।

मुहरबंद निर्णयों के बाद यीशु द्वारा खोले गए पत्र से न्याय की तुरही निकलेगी। ये पिछले साढ़े तीन वर्षों तक फैली रहेंगी (प्रकाशितवाक्य 8:7-9:19; 11:15-9)। क्लेश के अंतिम वर्ष (प्रकाशितवाक्य 16:2-21) के दौरान तुरही के न्याय के तुरंत बाद कटोरे का न्याय होगा, जो हर-मगिदोन की लड़ाई के साथ समाप्त होगा।

परमेश्वर द्वारा उत्तर को पराजित करने और संसार की शक्तियों के संतुलन के बिगाड़ देने के साथ, मसीह-विरोधी के साथ मिलकर पश्चिम (दानियेल 7:7-8) फिलिस्तीन में प्रवेश करेगा और फिलिस्तीन पर अपना अधिकार स्थापित कर लेगा (दानियेल 11:36-42)। मसीह-विरोधी राष्ट्रों का एक गठबंधन स्थापित करेगा (प्रकाशितवाक्य 13:7; 17:13; भजन संहिता 2:1-3)। वे पूर्व की ओर से आक्रमण होने के

शक्क में पहाड़ों को आपना गढ़ बना लेंगे (जकर्याह 12:2-3; 14:1-3)। क्योंकि उत्तर रास्ते से बाहर है, पूर्व (200 मिलियन लोगों की सेना के साथ) अपने लिए फ़िलिस्तीन की चाहत करेगा (प्रकाशितवाक्य 9:14-16)। यह सब आर्मागिडन की लड़ाई के लिए मैदान तैयार करता है।

क्लेश का अंत यीशु द्वारा आपने दूसरे आगमन के बारे की गयी भविष्यवाणी में प्रसव की पीड़ा की पूर्ति है। यह इसको संकेत कर रहे हैं कि यह निकट है, जिसमें सूर्य और चंद्रमा का अंधेरा हो जाना, तारों का गिरना, आकाश का हिलना और मसीह की महिमा का दिखाई देना शामिल होगा (मत्ती 24:27-31)।

इस समय, सब कुछ उतना ही खराब हो जाएगा जितना यह कभी होगा सकता है - अंत आखिर निकट है। इस प्रकार, इसे यहोवा का महान और भयानक दिन कहा जाता है (योएल 2:31; मलाकी 4:5)। दो गवाहों को मार डाला जाएगा और वे साढ़े तीन दिनों के लिए यरूशलेम की गलियों में मृत पड़े रहेंगे, जहां सभी उन्हें देखेंगे, फिर वे चमत्कारिक रूप से वापस जीवन में आ जाएंगे और स्वर्ग में चले जाए जाएंगे (प्रकाशितवाक्य 11:7-12)। अन्तिम तुरही और कटोरे का न्याय इसी समय के दौरान चल रहा होगा (प्रकाशितवाक्य 11:15-19; 16:17-21)।

इसके बाद आर्मागिडन का युद्ध होता है। यह तब है जब दुनिया की सभी सेनाएं एक-दूसरे से लड़ने के लिए तैयार बैठी होंगी। यीशु अपने उन लोगों के साथ प्रकट होगा जो उसके और उसके दूतों के साथ स्वर्ग में रह रहें हैं। वह तुरंत और पूरी तरह से उन सभी को नष्ट कर देगा जो उसका विरोध करते करेंगे (योएल 3:2; 3:11-16; दानियेल 11:40-45; जकर्याह 12:1-9; 14:1-5; यशायाह 33:10; 34:2) -4; यिर्मयाह 25:27-33)। बहुत राष्ट्र मगिदो के शहर से, दक्षिण में यहोशापात की घाटी से होते हुए (यहेजकेल 38:9; प्रकाशितवाक्य 16:16) (योएल 3:2), और स्वयं यरूशलेम में (जकर्याह 12:2; 14:1-3) एकत्र होंगे, फिर एदोम तक (यशायाह 34:1-6; 63:1) - 200 मील लंबे क्षेत्र में। जब यीशु वापस आता है वह इन सेनाओं को पूरी तरह से नष्ट कर देगा (प्रकाशितवाक्य 11:5; 19:11-20; भजन 2:2; जकर्याह 12:1-9; 14:1-4; यशायाह 33:1 से 34:17; 63:1-6; 66:1-6; यिर्मयाह 25:27-33; दानियेल 11:45)। इस हार के साथ, 'अन्यजातियों का समय' समाप्त हो जाता है। यह बाबेल की बंधुआई से शुरू होकर उस समय को चिन्हित करता है जब अन्यजातियों ने यरूशलेम में शासन कर लिया था (लूका 21:24)। अब यीशु अपना उचित सिंहासन ग्रहण करेगा, और यहूदी बहाल हो जाएंगे। यह उसका दूसरा आगमन है।

दूसरा आगमन, जिसे महिमा-भरा प्रकट होना भी कहा जाता है, और जिसकी बाइबल में 318 बार भविष्यवाणी की गई है (तीतुस 2:13; आदि)। यीशु स्वयं स्वर्ग से लौटेगा, और हम उसके साथ रहेंगे (दानियेल 7:13-15; मत्ती 26:62-65)। उसके मुँह से निकला हुआ एक ही शब्द दुनिया भर की सभी इकट्ठी हुई सेनाओं को नष्ट कर देगा, जिससे हर-मगिदोन का युद्ध समाप्त हो जाएगा (प्रकाशितवाक्य 19:11-20)। प्रत्येक आँख यीशु की वापसी को देखेगी (जकर्याह 14:3-5; प्रेरितों के काम 1:9-11; दानियेल 7:13-15)। यहूदी तब इस बात पर विलाप करेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि उन्होंने अपने मसीहा को अस्वीकार कर दिया है (जकर्याह 12:10-14)।

यीशु जैतून पहाड़ पर उतरेगा (जकर्याह 14:5; प्रकाशितवाक्य 14:1) जहाँ 144,000 उसके लौटने की प्रतीक्षा में इकट्ठे होंगे (प्रकाशितवाक्य 14:1)। फिर वह पूर्वी फाटक से यरूशलेम में प्रवेश करेगा (यहेजकेल 43:1-4)। यह वही स्थान है जहाँ से यहेजकेल के दिनों में परमेश्वर की महिमा पृथ्वी से चली गई थी (यहेजकेल 10:18-19; 11:22-24)। पृथ्वी पर यीशु के समय के दौरान, परमेश्वर की महिमा उसमें

वास करती थी (यूहन्ना 1:1-14; मत्ती 17:1-3; मरकुस 9:2)। अब परमेश्वर की महिमा मसीहियों में वास करती है, क्योंकि उसका आत्मा हम में वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19; 2 कुरिन्थियों 6:16)।

हज़ार साल का समय, जिसे हजार वर्ष का राज्य भी कहा जाता है, सृष्टि के बाद से जो कुछ हुआ है, उसकी चर्म सीमा है। अगर यहूदियों ने यीशु को अपने मसीहा के रूप में स्वीकार कर लिया होता जब वह पहली बार आया था तो 2,000 साल पहले यही होता। पृथ्वी अदन की वाटिका की स्थिति में वापस



आ जाएगी (मत्ती 13:31-33)।

कई पवित्र शास्त्र उस दौरान की स्थितियों के बारे में बताते हैं। मसीह अपने सिंहासन पर राज्य करेगा (जकर्याह 14:9)। वह नबी है (पुराना नियम - अतीत); याजक है (नया नियम - वर्तमान) और राजा होगा (मिलेनियम - भविष्य)। येरुशलम दुनिया का केंद्र होगा (जकर्याह 8:3; 3:14-17)। मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाएगा और भूमि को बसाया जाएगा (यहेजकेल 40-48)। इजराइल ऊंचा किया जाएगा (यशायाह 62:1-12) और उसके पास एक नया हृदय होगा (यिर्मयाह 31:33-37; 32:37-41; यहेजकेल 36:24-28)। हर कोई मसीह की आराधना करेगा (यशायाह 12:1-6; 26:1-19; 35:10; आमोस 9:11-12)।

विश्वासी मसीह के साथ शासन करेंगे (प्रकाशितवाक्य 3:21; 5:9-10; 11:15-18; 15:3-4; 19:16; 20:4-6)। यहूदी अंततः आपने देश में सुरक्षित रहेंगे (यहेजकेल 20:33-38)। यहूदी और गैर-यहूदी विश्वासी जो शहीद नहीं हुए थे, पृथ्वी पर शरीरक जीवन में एक हजार वर्ष तक जीवित रहेंगे (मत्ती 25:31-46)। इससे अब्राहाम और उसके वंशजों को दी गई प्रतिज्ञा पूरी होगी (2 शमूएल 7:8-17)। वे विवाह करेंगे और सही परिस्थितियों में बच्चे पैदा करेंगे, जैसे कि आदम और हव्वा करते, अगर उन्होंने पाप नहीं किया होता तो।

हजार वर्ष समय के दौरान पृथ्वी पर जीवित रहने वालों के लिए जीवन का आधार पहाड़ी उपदेश होगा (मत्ती 5-7)। हर जगह पर धार्मिकता प्रबल होगी (यशायाह 11:1-5; यिर्मयाह 33:15-16; यहेजकेल 34:23-24)। हर जगह विश्राम, शांति और आनंद होगा (यशायाह 11:10; 25:1-12; 54:11-14; यिर्मयाह 23:5-6; 31:10-14; यहेजकेल 34:11-15; जकर्याह 8:3-6)। भूमि अशीशत और फलवन्त होगी (भजन संहिता 72:16; यशायाह 27:6; 35:1-2, 7-9; 55:12-13; यहेजकेल 34:11-15, 26-27; 36:30-38; योएल 3:17-21; आमोस 9:13-15; जकर्याह 8:12)। जानवर मनुष्यों से नहीं डरेंगे (यशायाह 11:6-8; यहेजकेल 34:25)।

पीड़ा और मृत्यु खत्म हो जाएगी (यशायाह 65:20, 22; 11:9; 60:18; यिर्मयाह 23:5-6)। हजार वर्ष के राज्य के दौरान की स्थितियों के बारे में मुख्य अंश यहेजकेल 40:1-4; योएल 3:17-21; यशायाह 11:7; 65:25)।

कुछ मामूली बदलावों के साथ, चीजें अनंत अवस्था में परिवर्तित हो जाएंगी (2 पतरस 3:13)। अब समय नहीं रहेगा। ऐसा नहीं है कि अनंत काल अंतहीन समय है; पर मतलब यह है कि इस समय पर समय जैसी कोई चीज ही नहीं है, इसलिए इसका कोई अंत नहीं हो सकता। राज्य के अंत में पृथ्वी पर जीवित रहने वाले विश्वासियों को पुनरुत्थान के शरीर प्राप्त होंगे, जैसा कि राज्य के युग के विश्वासियों को मिलेगा जो राज्य के दौरान मर गए थे (प्रकाशितवाक्य 21:24)। एक अनन्तकाल नगरी होगी, नया यरूशलेम (यूहन्ना 14:1-3; प्रकाशितवाक्य 21:1-2, 9-27)। यह चंद्रमा के आकार के बराबर होगी।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अंत दिखाता है कि अदन में जो कुछ खो गया था वह वापस प्राप्त कर लिया गया था। बाइबिल की शुरुआत और बाइबिल के अंत के बीच घनिष्ठ संबंध है। पतन के परिणाम (पाप और अभिशाप) चले गए हैं। यहाँ से आगे जीवन निस्संदेह रूप से सिद्ध होगा (प्रकाशितवाक्य 21:1 से 22:20)। कुछ चीजें ऐसी हैं जो अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में नहीं होंगी (प्रकाशितवाक्य 21-22)। अब फिर समुन्द्र नहीं होगा (21:1), और आंसू नहीं होंगे, मृत्यु, दुःख, रोना या दर्द नहीं होगा (21:4), पापी नहीं होंगे (21:8), और भय नहीं होगा (21:12), और सूरज नहीं होगा ना चंद्रमा (21:23), रात नहीं होगी (21:25), पाप या बुराई नहीं होगी (21:27), और कोई बीमारी या चोट नहीं होगी (22:2) और ना कोई और श्राप होगा (22:3), और कुछ बातें ऐसी हैं जो अनन्तकाल के लिये स्वर्ग में रहेंगी (प्रकाशितवाक्य 21-22)। इनमें से हैं परमेश्वर के साथ अनंत संगति (21:3, 7, 22), अनंत नवीनता (21:5), जीवन का अंतहीन जल (21:6; 22:1), अकल्पनीय सुंदरता (21:11, 21), विश्वासयोग्य सुरक्षा (21:12), विश्वासियों के बीच की अटूट एकता (21:12, 14), असीमित पवित्रता (21:16), अद्वितीय आकार (21:16), असीमित संपत्ति (21:18-21), असीमित प्रकाश (21:23; 22:5), अप्रतिबंधित पहुंच (21:25), जीवन के वृक्ष का कभी न खत्म होने वाला फल (22:2), परमेश्वर की निरंतर सेवा (22:3) और अपने सिंहासन पर यीशु का कभी न खत्म होने वाला शासन (22:5)।

स्वर्ग विश्राम का स्थान होगा (इब्रानियों 4:1-11; प्रकाशितवाक्य 14:13), पूर्ण ज्ञान (1 कुरिन्थियों 13:12), पवित्रता (इब्रानियों 12:14; इफिसियों 2:21), आनंद (1 थिस्सलुनीकियों 2: 19; यहूदा 24), महिमा (2 कुरिन्थियों 4:17) और आराधना (प्रकाशितवाक्य 7:9-12; 19:10)। यह अनंतकाल तक जारी रहेगा (यूहन्ना 6:51, 58; 1 पतरस 1:25; 2 पतरस 3:18; 2 यूहन्ना 2; इब्रानियों 13:8; प्रकाशितवाक्य 1:8; 22:13)।

(इस बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी शमोयर द्वारा लिखित "बाइबिल की भविष्यवाणी" देखें।)

दैनिक जीवन पर प्रभाव - अभी आने वाली इन बातों को देखकर, हमें यह सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित होना चाहिए कि हमने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है और सुनिश्चित करें कि वह हमारे जीवन का प्रभु है। हम इन चीजों में आराम और प्रोत्साहन पा सकते हैं क्योंकि हम याद करते हैं कि यह जीवन और इसमें का सब कुछ अस्थायी है। इससे, हमें अपने जीवन के हर पल को यीशु के लिए जीने में मदद मिलनी चाहिए।

प्रभु के आगमन और उनके सामने हमारे प्रकट होने के इस सत्य और हमारे दैनिक जीवन जीने के बीच कितना अद्भुत व्यावहारिक संबंध है! "जो कोई उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।"

निष्कर्ष

जैसा कि बाइबल में हमारे सामने प्रकट किया गया है, हमने अनंतकाल अतीत से लेकर भविष्य के अनंतकाल तक के इतिहास के ढांचे को देखा है। पुरे इतिहास को समय अवधियों में विभजित करके हम प्रत्येक भाग को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और देख सकते हैं कि यह इससे पहले के और इसके बाद के लोगों के साथ कैसे संबंधित है।



हमने पुराने नियम की बुनियाद मतलब, यीशु के समय तक की घटनाओं को देखा है। फिर हमने यीशु के जीवन की संरचना, या ढाँचे को देखा, और अंत में पुरे नए नियम को देखा है, जो, वो सब कुछ जिसे यीशु पूरा करने के लिए आया था, उसे आगे बढ़ाता है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक आपको परमेश्वर के वचन को पढ़ने के लिए प्रेरित करती है और इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए प्रेरित करते हैं जैसे आप इसका प्रतिदिन अध्ययन करते हैं। बाइबल किसी इतिहास के ढांचे से बढ़कर है, यह हमारा आध्यात्मिक पोषण भी है। आप जो सीखते हैं वह न केवल आपकी आत्मक भूख तृप्त करेगा बल्कि कुछ ऐसा है जिसे आप अनंत काल तक अपने साथ रख सकेंगे (यशायाह 40:8; 1 पतरस 1:25)। काशकि परमेश्वर आपको भरपूर आशीष दे जब आप उसके वचन का अध्ययन करना जारी रखते हैं।

समापन टिप्पणियाँ

मैंने इस पुस्तक को लिखने का सौभाग्य प्राप्त किया और इससे प्रसन्न हूँ। इसे पढ़ने के लिए मैं आप का धन्यवाद करता हूँ। मैं आपसे मिला हर सुझाव/ टिप्पणी पसंद करूँगा। यदि आपके पास इस पुस्तक को बेहतर बनाने के लिए कोई सुझाव हो, मेरे लिए कोई प्रश्न हो या प्रार्थना के लिए अनुरोध है, तो कृपया मुझे लिखें। मेरे साथ jerry@schmoyer.net पर संपर्क किया जा सकता है। धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दें, जब आप उसकी सेवा करते हैं। उसके वापस आने की बाट जोते रहो। उसका आना किसी भी क्षण हो सकता है!

जेरी शमोयर

SP/01.042023

